दरिया-ग्रन्थावली

[द्वितीय ग्रन्थ]

[१ दरियासागर, २ ग्यानरतन, ३ ग्यानसरोदै,
४ भक्तिहेतु, ५. ब्रह्मविवेक, ६ ग्यानमूल]

सम्पादक
डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
एम्० ए० (हिन्दी संस्कृत दर्शन), पी-एच्० डी०, ए० आर० ई० (लन्दन)
आचार्य, जगजीवन कॉलेज, आरा; भूतपूर्व शोध-शिक्षा-निदेशक (बिहार)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

विक्रमाब्द २०१८, शकाब्द १८८३, खृष्टाब्द १९६१

सजिल्द मूल्य ६.५०

मुद्रक
घनश्याम प्रेस
पटना

वक्तव्य

दरिया-ग्रन्थावली का यह दूसरा ग्रन्थ (खण्ड) सुधीजनों के समक्ष प्रस्तुत है। इसका प्रथम ग्रन्थ सन् १९५४ ई० में ही परिषद् से प्रकाशित किया था। वह प्रथम ग्रन्थ डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा अपनी पी-एच्० डी० की उपाधि के लिए तैयार किया गया 'महानिबन्ध' था। वह महानिबन्ध अँगरेजी में लिखा गया था, जिसका हिन्दी-अनुवाद परिषद् ने मुद्रित कराया था। उसके बाद यह दूसरा ग्रन्थ दरियादास की छह पोथियों की संशोधित सम्पादित तथा पाठालोचित प्रतियों का संग्रह है, जो ग्रन्थाकार आपके सम्मुख प्रस्तुत है। डॉ० शास्त्री ने बड़े परिश्रम और अन्वेषणपूर्वक इन छह पोथियों का विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों से मिलाकर पाठों का संशोधन-सम्पादन किया है। इनमें दरियादास-लिखित 'दरियासागर' 'ज्ञानरतन' 'ज्ञानस्वरोदय' 'भक्तिहेतु' 'ब्रह्मविवेक' और 'ज्ञानमूल'—ये छह पोथियाँ सम्मिलित हैं। अभी दरियादास-कृत १४ ग्रन्थ और हैं जिनके पाठभेद-सहित संशोधित-सम्पादित संस्करण के प्रकाशन की हमारी योजना है।

डॉ० शास्त्री ने अपने महानिबन्ध की रचना के लिए दरियादास की पोथियों के अन्वेषण और अनुसन्धान में जो अथक श्रम किया था, उसका थोड़ा विवरण प्रथम ग्रन्थ की भूमिका में उन्होंने स्वयं दिया है। यों तो, डॉ० शास्त्री सन्त-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् हैं, परन्तु दरिया-साहित्य के तो एकमात्र विशेषज्ञ हैं। हमें आशा है डॉ० शास्त्री-जैसे दरिया-साहित्य-विशेषज्ञ के द्वारा सम्पादित-संशोधित दरिया-ग्रन्थावली के इस दूसरे खण्ड का भी सुधीजनों में विशेष आदर होगा।

चैत्र, कृष्ण नवमी २०१८ विक्रमाब्द

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'
संचालक

दो शब्द

दरिया-ग्रन्थावली के द्वितीय खण्ड के प्रकाशन के निमित्त मैं बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् के सुयोग्य संचालक, संत-साहित्य के विश्रुत एवं मर्मज्ञ विद्वान् डॉ॰ भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' का अत्यन्त अनुगृहीत हूँ। परिषद् के प्रकाशनाधिकारी श्री नृपनाथ मेहता तथा प्रकाशन-सहायक श्रीहवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' ने प्रकाशन में जो तत्परता दिखाई है, तदर्थ मैं उनका आभारी हूँ। श्रीरामनारायण शास्त्री, श्री श्रीरंजन सूरिदेव एवं श्रीरामेश्वर शर्मा 'नयन' ने पाण्डुलिपि तैयार करने, प्रूफ संशोधित करने तथा सम्पादन करने में बहुमूल्य योग दिया है, तदर्थ मैं उनका ऋणी हूँ। इनके अतिरिक्त मैं उन सभी संतों, विद्वानों और साहित्य-प्रेम के सहधर्मियों के प्रति भी नतमस्तक हूँ, जिनसे मुझे इस पुस्तक के लेखन में महत्त्वपूर्ण सहयोग मिला है।

सन्तकवि दरिया के बीस ग्रन्थ प्राप्त हैं, जिनके विवरण ग्रन्थावली के प्रथम खण्ड में दिये जा चुके हैं। वे हैं—यज्ञसमाधि; अमरसार; भक्तिहेतु; ब्रह्मचैतन्य; ब्रह्मविवेक; दरियानामा; दरियासागर; गणेशगोष्ठी; ज्ञानदीपक; ज्ञानमूल; ज्ञानरतन; ज्ञानस्वरोदय; कालचरित्र; मूर्त्तिउखाड़; निर्भयज्ञान; प्रेममूला; शब्द; सहस्रानी; विवेकसागर और अग्रज्ञान। इनमें दरियासागर, ज्ञानरतन, ज्ञानस्वरोदय, भक्तिहेतु, ब्रह्मविवेक और ज्ञानमूल—इन छह का समावेश प्रस्तुत द्वितीय खण्ड में किया गया है। जिन प्रतियों के आधार पर मूल पाठ तथा पाठ-टिप्पणियाँ तैयार की गई हैं उनकी संक्षिप्त तालिका प्राक्कथन में दी गई है।

सन्तकवि दरिया बिहार के कबीर माने गए हैं। वे निर्गुणधारा के संतों और कवियों में अन्यतम एवं गौरवान्वित स्थान के अधिकारी हैं। परिषद् ने दरिया-ग्रन्थावली के प्रकाशन द्वारा संत-साहित्य को सम्मान दान दी है और अनुसंधित्सुओं के लिए धार्मिक साहित्य का विस्तृत एवं उर्वर पथ बनाया है।

चैत्र कृष्ण नवमी
३. २. १९६८

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

पूर्वपीठिका

१ परिचय

सन्तकवि दरिया 'बिहार के कबीर' माने गये हैं। उनका जन्म सं० १७३१ वि० में और निधन सं० १८३७ वि० में हुआ था। अतएव उनके धार्मिक तथा साहित्यिक जीवन की प्रगति विक्रमीय अठारहवीं शती के अन्तिम दो चरणों और उन्नीसवीं शती के प्रथम चरण में हुई। इस महान् संतकवि ने अबतक की सूचनाओं के अनुसार, बीस काव्य-ग्रन्थों का निर्माण किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि दरिया साहब स्वयं लिखते नहीं थे, अपितु दिव्यानुभूति के आवेश में पदों और छन्दों का अनायास गेय रूप में निर्माण करते जाते थे। उनके साथ जो शिष्य-मण्डली रहती थी, उन्हीं में से कुछ उनकी वाणियों को लिपिबद्ध करते जाते थे। स्वयम् दरियासाहब और उनके शिष्यों की दृष्टि में संतकवि दरिया सत्पुरुष (ईश्वर) के 'शाहजादा' अथवा 'फरजन्द' थे। वे उसी प्रकार आध्यात्मिक जगत् के सम्राट् या शाहंशाह थे जिस तरह भौतिक दृष्टि से राजे-महाराजे हुआ करते हैं। उनका मुख्य सिंहासन (तख्त या गद्दी) धरकंधा (जिला शाहाबाद) था। इसके अतिरिक्त अनेकानेक अन्य स्थानों में भी गद्दियाँ स्थापित थीं और उनके अधिकारी महन्त मानों दरियासाहब के आज्ञानुवर्ती 'सूबेदार' या 'मनसबदार' थे। कई स्थानों में दरियासाहब ने अपने प्रमुख शिष्यों और उनके अधिकृत पदों की चर्चा की है। उदाहरणतः सुरतीदास को दीवान, ममिदास को लेखक, दलदास को लेखाधिकृत (कानूनगोय) और कमीदास को अंगरक्षक (पहरेदार) बनाया गया है।

ग्रन्थावली का प्रथम खण्ड अनुशीलनात्मक है जो परिषद् द्वारा सन् १९५४ ई० में प्रकाशित हुआ था। उसमें दरिया-रचित बीस ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है, जिनके नाम इस प्रकार हैं— अग्रज्ञान, अमरसार, भक्तिहेतु, ब्रह्मचैतन्य, ब्रह्मविवेक, दरियानामा, दरियासागर, गणेशगोष्ठी, ज्ञानदीपक, ज्ञानमूल, ज्ञानरत्न, ज्ञानस्वरोदय, कालचरित्र, मूर्तिउखाड़, निर्भयज्ञान, प्रेममूला, शब्द या बीजक, सहसरानी, विवेकसागर और यज्ञसमाधि। प्रथम खण्ड में इन ग्रन्थों के कुछ उद्धरण-मात्र दिये गये थे, जिनका सम्बन्ध प्रतिपाद्य विषय के विभिन्न स्थलों से था और जो संकेत के रूप में आवश्यक थे। दरिया-ग्रन्थावली के प्रकाशन की योजना की कार्यान्विति के लिए यह आवश्यक था कि सभी ग्रन्थ अलग मूल एवं अविकल रूप में प्रकाशित किये जायँ। फलतः, ग्रन्थावली का दूसरा खण्ड साहित्य जगत् के सम्मुख प्रस्तुत है, जिसमें यथानिर्दिष्ट छह ग्रन्थ अलग मूल रूप में सम्पादित करके प्रकाशित किये गये हैं— दरियासागर, ज्ञानरत्न, ज्ञानस्वरोदय, भक्तिहेतु, ब्रह्मविवेक और ज्ञानमूल। आशा है शेष ग्रन्थ भी शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में संत-साहित्य के अनुसंधाताओं की ओर से मूल ग्रन्थों की माँग की जाती रही है। ग्रन्थावली के इस द्वितीय खण्ड का प्रकाशन उन अनुसंधाताओं के लिए हर्ष एवं सन्तोष का विषय होगा।

उपर्युक्त जिन छह ग्रन्थों को इस खण्ड में सम्मिलित किया गया है, उनमें से प्रत्येक की एक से अधिक हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हुई थीं, और कुछ के मुद्रित संस्करण भी सुलभ थे। इनमें से किसी एक प्रति अथवा संस्करण को आधार मानकर ग्रन्थ का मुख्य पाठ निर्धारित किया गया है; शेष प्रतियों अथवा संस्करणों में जो पाठान्तर अथवा उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं, उनकी चर्चा अथवा संकेत पाद-टिप्पणियों में किया गया है। मुख्य पाठ और पाद-टिप्पणियों में ऐसी प्रचुर सामग्री मिलेगी, जिसके आधार पर पाठ की प्रामाणिकता अथवा उपादेयता के सम्बन्ध में अधिकाधिक शोध-कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। यहाँ एक तालिका दी जा रही है, जिसमें उपर्युक्त छह ग्रन्थों और उनकी विभिन्न प्रतियों का विवरणात्मक परिचय है।

क्रम सं	ग्रन्थ-नाम	संस्करण या प्रति	लिपिकाल	लिपिकार	मूल प्राप्ति-स्थान	विवरण
१	दरियासागर	(क)	आषाढ़, कृष्ण १२६६ फ = १९१६ वि	गुरुप्रसन्नदास	महंथ रघुवीरदास, धरकंधा शाहाबाद	
		(ख)	१२९१ फ = १९४१ वि	गिरधारीदास	,,	
		(ग)		धुनसार	,,	
		(घ)	१८८५ वि०	अमरावदास	,,	
		(ङ)		लालधारीदास	,,	
२	ज्ञानरतन	(क)		लालधारीदास	,,	
		(ख)			,,	
		(ग)	आषाढ़ शु० ५ १२१६ फ = १८६६ वि		,,	
		(घ)	१८३४ वि	प्रताप फकीर	श्रीमन्नूलाल पुस्तकालय गया के श्रीरघुवीरदास से प्राप्त	

क्रम-सं०	ग्रन्थ-नाम	संस्करण या प्रति	लिपिकाल	लिपिकार	मूल प्राप्ति-स्थान	विवरण
	ज्ञानसरोदै (ज्ञानस्वरोदय)	(क)	२६ सावन, १२६६ फ० १९१६ वि०		महंत ध्रुवदास धरकन्धा शाखाकार	
		(ख)	,,		,,	
	भक्तिहेतु	(क)	,,		,,	
		(ख)	१८९२ वि०	पीताम्बरदास	,,	
		(ग)	१९३७ वि०	हीरादास	,,	
		(घ	१८९५ वि०	उमरावदास	,,	
		(ङ)	,,	,,	,,	
	ब्रह्मविवेक	(क)	१२६६ फ० = १९१६ वि०		,,	
		(ख)	१२८६ फ० = १९३६ वि०	हीरादास	,,	
		(ग)	,,	आत्मपरीदास	,,	
		(घ)	,,	,,	,,	
	ज्ञानमूल	(क)	१२९१ फ० = १९४१ वि	हीरादास	,,	
		(ख)	कार्तिक कृष्ण ११ १९६४ वि०	ब्रजलदास फकीर	,, ,,	
		(ग)	१८९९ वि०	प्रताप फकीर	,,	

निम्नलिखित तालिका से इस ग्रन्थावली में समाविष्ट पुस्तकों के तुलनात्मक आकार तथा उनमें व्यवहृत पदों की विविधता और संख्या का बोध होगा—

क्र० सं०	ग्रन्थ	दोहा या साखी	सोरठा	चौपाई	छन्द	पदों की पूरी संख्या
१	दरियासागर	६५	१६	११४७	१६	१२७४
२	ज्ञानरत्न	१२५	२१	१८७१	४७	२ ६६
३	ज्ञानसरोदै	४१	५	३६६	—	३८७
४	भक्तिहेतु	४२	—	४०८	—	६२०
५	ब्रह्मविवेक	३६	—	५१५	—	५५१
६	ज्ञानमूल	६१	—	४२७	—	४७

यद्यपि स्वामी दरिया के सिद्धान्तों, ग्रन्थगत विशेषताओं और भाषा के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण प्रथम अनुशीलनात्मक खण्ड में दिया जा चुका है, तथापि इन विषयों का उपर्युक्त छह ग्रन्थों के परिप्रकाश में संक्षिप्त प्रतिपादन इसलिए आवश्यक है कि इस खण्ड के अध्ययनकर्ता को भजन अध्ययन की [illegible] ध्यान में सुगमता हो।

हमने दरिया-ग्रन्थावली के प्रथम खण्ड में संतमत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि संतमत के प्रवर्तक कबीर साहेब जिस काल और वातावरण में रहे, उनमें प्रचलित प्रायः सभी धार्मिक और दार्शनिक विचारधाराओं से वे प्रभावित हुए। उदाहरणतः उन्होंने उपनिषदों से अद्वैतवाद, शंकर से मायावाद, वैष्णव आचार्यों से भक्ति, अहिंसा और प्रपत्ति के सिद्धान्त, तान्त्रिक बौद्धों, वज्रयानी सिद्धों और नाथपंथी योगियों से हठयोग, रहस्यवाद तथा आडम्बर पर कर्मकाण्ड के विरुद्ध पैनी उक्तियाँ, सगुण भक्तों और सूफी संतों से माधुर्यमय भक्तिभाव, इस्लाम से एकेश्वरवाद की प्रखर भावना—इन महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का संचय करके उन सबके मेल से, आचार, ज्ञान एवं आस्तिकता का ऐसा विविध और सात्त्विक समन्वय प्रस्तुत किया, जिसे संतमत—निर्गुणमत की सामान्य उपाधि मिली। व्यावहारिक दृष्टि से इस मत का लक्ष्य था हिन्दुओं और मुसलमानों, छोटों और बड़ों सबमें सार्वभौम प्रेम और मित्रता का प्रचार; क्योंकि ये सभी एक ही भगवान् के पुत्र हैं चाहे उसे राम कहो या रहिमान।[1] जो यह अभ्युक्ति कबीर के सम्बन्ध में है, वही समान्यतः संतप्रवर दरिया के सम्बन्ध में भी लागू है। स्वयं दरिया ने कबीर के व्यक्तित्व और उनकी विचारधारा का महत्त्व स्वीकार किया है और स्थान-स्थान पर कबीर की प्रशंसा की है। वे अपने शिष्यों से कहते हैं कि—

साहि कहाँ आ कहहिं कबीरा।[2]

वस्तुतः, वे यह घोषित करते हैं कि कबीरदास के पद हीरे के समान बहुमूल्य हैं और वे उन्हीं बातों को जनता के सामने रख रहे हैं जिन्हें कबीर ने प्रस्तुत किया था।[3] एक अन्य प्रसंग में उन्होंने कबीर का बहुमूल्य ज्ञान रत्न का उल्लेख किया है और उसी प्रसंग में उनके शिष्य धर्मदास की भी प्रशंसा की है।[4] संत दरिया के अनुसार सत्पुरुष (ईश्वर) इस विश्व का विधाता है। किन्तु, 'निरंजन' ने ऐसा मायाजाल रचा है कि उसमें जीवात्मा बँधकर सन्मार्ग से विचलित हो जाते हैं। यद्यपि बड़े-बड़े पण्डित और ऋषि-मुनि इस जाल में बँधे तथापि कबीर एक ऐसे संत थे जो इस संसार में शरीर धारण करके भी सत्य एक के मार्ग के अनुयायी बने रहे।[5]

अनेक ग्रन्थों में संत दरिया ने अपने को सत्पुरुष का पुत्र[6] या 'परमानन्द' बताया है। उन्होंने यह लिखा है कि सत्युग में सत्पुरुष के पुत्र का नाम सुकृत था वे ही त्रेता में [illegible] नाम से अवतीर्ण

---

२ दरिया सागर (पृ० ७१)

३ साहु कहाँ आ कहहिं कबीरा।
दरियादास पद पाया हीरा ॥—दरियासागर (पृ० ८)

४ सार शब्द गह पाय कबीरा।
पूरन मत्र गुरु गहिर गंभीरा ॥
धर्मदास [illegible] दरियारा।
भीर दास विचरन करि न्यारा ॥—ज्ञानमूल (पृ० १८०)

५ काल दई [illegible] मेद मारी।
हारे पंडित [illegible] पुरारी ॥—दरियासागर (पृ० १७)
काया धरि [illegible] न्यारा।
सत्य लोक [illegible] गुजारा ॥—दरियासागर (पृ० ४१)

६ ब्रह्मविवेक (पृ० १००)

हुए और द्वापर में मुनीन्द्र नाम से। कलियुग में वे कबीर के नाम से संसार में आये।[७] इसी कलियुग में उनका दुबारा अवतरण हुआ दरिया के रूप में।[८] स्वयं सत्पुरुष ने अनेक बार दरिया को दर्शन दिया और कहा कि दरियादास [illegible] अंश हमारा।[९] सत्पुरुष ने उन्हें अपना 'शब्दवाहक'[१०] घोषित किया और छत्र तथा मोहर सौंपते[११] हुए इस लोक के तख्त पर बिठाया और इसकी 'बादशाही' (बादशाही) का उत्तरदायित्व दिया। स्पष्ट है कि यह बादशाही धार्मिक जगत् की बादशाही (बादशाहीरीत) थी। दरिया को सत्पुरुष के दर्शन देने का मुख्य उद्देश्य था उनकी रक्षा करना। सत्पुरुष ने उनके कारण ही 'छपलोक' की गद्दी और सुख-सामग्री त्याग कर विभिन्न द्वीपों को पार करते [illegible] जम्बुद्वीप में पदार्पण किया।[१२] इस प्रकार के वर्णनों से यह प्रतीत होता है कि सत्पुरुष और दरिया के परस्पर सम्बन्ध की भावनाओं के पीछे जहाँ ईसाइयत और इस्लाम का अवतारवाद या पैगम्बरवाद का पुत्रवाद्य सिद्धान्त था वहाँ साथ ही-साथ हिन्दुओं का अवतारवाद भी प्रेरणा दे रहा था। गीता में कृष्ण ने जिन अवतार लेने के जो भी कारण बताये हैं, अर्थात् सज्जनों की रक्षा, दुष्टों का विनाश, धर्म की प्रतिष्ठा आदि वे सभी दरिया के मानस-पटल पर अंकित थे।[१३]

जैसी श्रद्धा-भक्ति दरिया की कबीर के प्रति थी वैसी ही अन्य महान् संतों के प्रति थी जिन्हें वह निर्गुण संप्रदाय की भाव-धारा का प्रतिनिधि मानते हैं। इनमें उन्होंने अपने पूर्ववर्ती साधकों तथा योगियों की चर्चा आदर के साथ की है।[१४] नामदेव, रामानन्द आदि नामों का भी उन्होंने यत्र-तत्र उल्लेख किया है।[१५]

---

७ इस समस्त प्रसंग का विस्तृत विवरण ज्ञानदीपक नामक ग्रन्थ में मिलता है। स्फुट चर्चाएं अनेक ग्रन्थों में मिलती हैं। उदाहरणतः 'ब्रह्मविवेक' में—

प्रथमहिं सतयुग में चलि आये
सुकृत नाम तहाँ कहाये
करुणामय के रूप धरि, मुनीन्द्र आये कहाइयाँ

... ...

कलयुग कबीर कासी रहाना, नाम संतापुन पंथ चलाना
सत सुकृत धरया सरीरा।
निरमल ज्ञान कथि कहेवो कबीरा।—ब्रह्मविवेक (पृ० २११)

८ फिर कलउ मैं धरा सरीरा।
अगम ज्ञान आगम हंस हीरा॥
सत नाम कीन्ह विचारा।
दरिया नाम ए पंथ सुधारा॥

९ भक्तिहेतु (पृ० २०८)

१० कही दुनद शब्दवहारा।
कहहु कहादी शीश बरदारा॥—भक्तिहेतु (पृ० २१०)

११ भक्ति-हेतु (पृ० २ ९, साखी १९)

१२. छपलोक है महल हमारा जम्बुदीप बपुधारी।
तुम कारन यहाँ आइया बीचे बचन विचारी॥—ज्ञानमूल (पृ० २०१) आदि।

१३ परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥—गीता

१४ भयो नाथ रहे गोरख जागी।
भक्त भेद भूर सब आगी॥—ज्ञानरतन (पृ० २ २)

१५ नामदेव चलि आये वेष, पुन्य कबीर ज्ञान गुन जैसे।
[illegible] ज्ञान मन बहु जाना सतगुरु [illegible] विरमे पहचाना॥—ज्ञानरतन (पृ० ११२)

कबीर आदि सन्तों की वाणियों का संकेत करते हुए सन्तकवि दरिया ने स्थल-स्थल कवि या कवि कर्म के आदर्शों की ओर भी इंगित किया है। वे ऐसे कवियों की रचनाओं को काव्य की संज्ञा देने को तैयार नहीं थे, जो अपनी कविता के द्वारा शब्दों का सहज चयन करके माया का प्रपंच रचाते हैं। जैसे तुलसीदास ने राम-कथा शून्य कविता को निरर्थक बताया है, वैसे ही दरिया ने भी ऐसी कविता की निन्दा की है, जिसके द्वारा निर्मल नाम के प्रेम का आस्वादन नहीं होता।[16] केवल वेदों और पुराणों के पद लेने से पाण्डित्य अथवा कवित्व सम्पन्न हो जाय, यह सम्भव नहीं। कवि के लिए ज्ञान और माया का ठीक-ठीक विवेचन आवश्यक है। अनेकानेक कवि माया के गीत गाते आये हैं वे थक गये किन्तु भव-सागर पार करने की आशा नहीं पा सके।[17]

२ सिद्धान्त

सन्तकवि दरिया के दर्शन को सामान्यतः शब्दावतार का नाम दिया जाता है, उन्होंने 'दौन मत'[18] का उल्लेख अनेक प्रसंगों में किया है। वे परम्परा के अनुरूप के विरोधी थे अतः उनका सिद्धान्त अद्वैत हुआ, किन्तु साथ ही-साथ उनका ब्रह्म भक्तिगम्य है, अतः वह दौन शांकर अद्वैत से भिन्न है। यद्यपि रामानन्द, माधव, निम्बार्क आदि वैष्णव आचार्यों का ब्रह्म भी भक्तिगम्य है, परन्तु वह देवी-देवताओं अथवा मानव के रूप में पृथ्वी पर अवतार धारण करता है जो दरिया को स्वीकार्य नहीं है। अतः दरिया का शब्दावतार शंकराचार्य के अद्वैतवाद और वैष्णवाचार्यों के भक्तिविशिष्ट अद्वैतवाद, दोनों से भिन्न होते हुए भी उनसे अनेक बिन्दुओं में समानता रखता है। उसमें इस्लाम और ईसाइयत के उस एकेश्वरवाद का भी पुट है, जिसमें ईश्वर एक है और मुहम्मद या ईसा उसके पुत्र के रूप में मर्त्यलोक के प्राणियों का उद्धार करते हैं। जैसा बताया जा चुका है दरिया ने अपने को सत्पुरुष ईश्वर' का 'अंश' 'शब्दावतार' या 'परमानन्द' घोषित किया था।

दरिया के सिद्धान्त को 'निर्गुणमत' कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने अथवा उनके पूर्ववर्ती कबीर आदि सन्तों ने ईश्वर को निर्गुण या त्रिगुणातीत कहा है। भारतीय दर्शन के अनुसार समस्त सृष्टि के मूल में तीन गुण हैं—सत्व, रजस् और तमस्। प्रकृति जो त्रिगुणात्मिका है सृष्टि का उपादान है। किन्तु पुरुष अथवा सत्पुरुष (ब्रह्म) इन तीनों गुणों वाली प्रकृति का नियामक होते हुए भी उनसे निर्लिप्त है अतः निर्गुण है।[19] सगुण और निर्गुण दोनों की विवेचना करते हुए दरिया ने सगुण का खंडन

---

१६ निर्मल नाम प्रेम नहिं जाना।
कलि में कथा बहुत विधि ठाना॥
कवि का सार करि बहुत बनाई।
माया भेद ज्ञान नहिं पाई॥—ज्ञानरत्न (पृ० २२)

१७ करि सागर करि बहुत बखाना।
पद छन्द सबै विविध प्रमाना॥
....
थाके कवि सब कहि कहि बानी।
मिले न भवजल पार की सानी॥—ज्ञानरत्न (पृ० १५१)

१८ अंगीकृत मत विज्ञान मत सदृश्यपान निर्मल।—दरियासागर (पृ० ११२)

१९ आपु निर्गुन गुन रहित अनूपा।

और निर्गुण का मंडन किया है। बहुत लम्बे प्रसंगों में उन्होंने राम कृष्ण, शिव पार्वती आदि देवी-देवताओं के पौराणिक कथानकों की चर्चा की है, उनपर तीखे व्यंग्य किये हैं और उनके उपासकों की निन्दा की है। सगुण भगवान् को मानना उन्हें बन्धन में डालना है; उनकी सर्वशक्तिमत्ता सर्वव्यापकता आदि विशेषताओं का निराकरण करना है।[10] निर्गुण सगुण नहीं हो सकता और सगुण निर्गुण नहीं हो सकता। संदेशतः सत्पुरुष अथवा परब्रह्म निर्गुण है, और सभी अन्य देव सगुण हैं। उनमें तात्त्विक भेद है।[11] भारत में ब्रह्मा विष्णु, महेश को भगवान् मानकर, पूजा होती है, किन्तु दरिया के अनुसार इन देवताओं ने भी सत्पुरुष को नहीं पहचाना है।[12] एक प्रसंग में निर्गुण के चार स्तरों का प्रतिपादन किया गया है—सोऽहं, पवन, निराकार और अचल।[13] ऐसा प्रतीत होता है कि इन विशेषणों के द्वारा ब्रह्म की उत्तरोत्तर सूक्ष्मता की ओर संकेत है। परमब्रह्म निराकार से भी परे है। निराकार ब्रह्म तो सक्रिय ब्रह्म भी है, किन्तु अचल अथवा परमब्रह्म अक्षर ज्योतिस्वरूप है, योगियों द्वारा दिव्यदृष्टि-मात्र मात्र है।[14] ब्रह्म की सूक्ष्मता के प्रतिपादन की दृष्टि से उसे कहीं-कहीं सगुण और निर्गुण दोनों

---

१० सरगुन निरगुन करो बिचारा।
करो निरनेर भेद निरुवारा॥
निरगुन सोइ जिनसे नहिं भाई।
अजर अमर देह सुखदाई॥
सरगुन सो बन्धन में लागा।
छुटा बिराग ज्ञान सब भागा॥—दरियासागर (पृ० १८)

११ सर्गुन निर्गुन कर यह फंद बंधा।
सतगुर मत बिरला जन पता॥
निर्गुन नाम है पुर्ष निनार।
सगुन सकल जिव करो बिचारा॥—ज्ञानरतन (पृ० १८)

१२ ब्रह्मा चकित भए लीनिक वेदा।
हद बिसद नहिं जानहिं भेदा॥
तीनहुँ सब पुर्न नहि जाना।
धन्य भाग सत पंथ पहचाना॥—ज्ञानरतन (पृ० १११)

१३ एक निर्गुन सोहता है भाई।
ज्योति जब पुरुष बनाई॥
दोसरा निर्गुन पवन कहावै।
वह अगम कोइ अन्त ना पावै॥—भक्तिहेतु (पृ० ३५)

१४ एक निर्गुन सोहता है भाई।
ज्योतीजन पुरुषो बनाई॥
दोसर निर्गुन पवन कहावै।
वह अगम काहू अन्त न पावै॥
तीसर निर्गुन है निराकारा॥
जाके मत सकल संसारा॥
चौथा निर्गुन अचल है भाई॥
जहाँ पवना जाति जाई॥—भक्तिहेतु (पृ० ३५)

से पर बताया गया है। उपनिषदों में जो ब्रह्म के 'परात्परत्व' की भावना व्यक्त की गई है उसका स्पष्ट प्रभाव [illegible] पंक्तियों में लक्षित होता है।[२५] शंकराचार्य ने ब्रह्म की परिभाषा देते हुए उसे सत् और असत् दोनों के कारण 'अनिर्वचनीय' माना है। निर्गुणत्व और सगुणत्व दोनों से पर ब्रह्म की कल्पना शंकराचार्य के उपर्युक्त 'अनिर्वचनीय' कल्पना से मिलती-जुलती है। इस प्रकार की कल्पना से सत्पुरुष की अनुपमता व्यक्त होती है।[२६] दरिया-सम्प्रदाय के ग्रन्थों में परमात्मा को द्योतित करने के लिए सत्पुरुष के साथ एक और शब्द बाहुल्य से मिलता है, और वह है—'बेगम'। इस फारसी शब्द का तात्पर्य हुआ—गमनोल इसीलिए, 'बेगमपति' शब्द का भी प्रयोग सत्पुरुष के विशेषण के रूप में हुआ है।[२७]

जिस निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप का संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है, उसकी प्राप्ति के लिए प्रेम अथवा श्रद्धा, भक्ति और ज्ञान इन तीनों की आवश्यकता है। बिना प्रेम की भक्ति नहीं हो सकती और बिना भक्ति के ज्ञान नहीं हो सकता।[२८] जिस तरह गोस्वामी तुलसीदास ने ज्ञान और भक्ति दोनों के समन्वय की इच्छा प्रतिपादित की है, उसी प्रकार दरिया ने भी दोनों का समान महत्त्व बतलाया है।[२९] भक्ति के साथ नाम-स्मरण भी सम्मिलित है। दरिया ने सतनाम के जपने और उच्चारण करने का उपदेश दिया है। दरिया-पन्थ के साधु-महात्मा जब एक दूसरे से मिलते हैं तब 'प्रणाम' अथवा 'नमस्ते' के स्थान पर 'सतनाम' कहकर अभिवादन करते हैं।[३०] यहाँ संक्षेप में दरिया ने जिस विशिष्ट अर्थ में अपने ग्रन्थों में ज्ञान शब्द का प्रयोग किया उसका संक्षिप्त निदर्शन अपेक्षित है।

सामान्यतः ज्ञान का तात्पर्य शास्त्रीय पाण्डित्य से है। किन्तु सन्तमत में शास्त्रीय पाण्डित्य का कोई भी महत्त्व नहीं है। कबीर ने प्रारम्भ में ही कहा था कि 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पण्डित भया न कोय।' यही नहीं कि सन्त-मत के अनुयायियों के लिए वेद-शास्त्रों का निरा ज्ञान निरर्थक है, अपितु इष्ट-प्राप्ति में वह

---

२५. निरगुन सरगुन दोनों से न्यारा।
सत्त रूप होय विमल सुधारा॥—दरियासागर (पृ० १०१)

२६ परम अनुपम मूरति सुरेसे।—दरियासागर (पृ० १०१)

२७ बेगमपति किछु बरनि न जाई।
ज्ञानी कथि कथि अन्त ना पाई॥—भक्तिहेतु (पृ० २११)

२८. बिना प्रेम नहिं भक्ति बिसेखा।
होय प्रेम जह गुरगमि पेखा॥

— — —

प्रेम प्रीति नहिं गाँठि लगावै।
करै भक्ति बिनु प्रेम सो पावै॥—भक्तिहेतु (पृ० २१२)

२९ ज्ञान भक्ति बिनु सार है सुनो सन्त चित लाय।
भिन्न भिन्न बिलगाय कै मत अनूप दरसाय॥—भक्तिहेतु (पृ० २००)

अथवा

निरमल ज्ञान बिचारहु भक्ति करहु लव लाय।
पद परम सतगुरु सेवा, आवागमन नसाय॥—भक्तिहेतु (पृ० २२१)

३० प्रीति करो सतनाम से, सेवि सकल धर्म भाय।
मिथ्या धर्म जग जानु है, फिरि पग पैसो जाय॥—भक्तिहेतु (पृ० २८०)

और निर्गुण का मंडन किया है। बहुत अपने प्रसंगों में उन्होंने राम, कृष्ण, शिव पार्वती आदि देवी-देवताओं के पौराणिक कथानकों की चर्चा की है उनपर तीखे व्यंग्य किये हैं और उनके उपासकों की निन्दा की है। सगुण भगवान् को मानना उन्हें बन्धन में डालना है, उनकी सर्वशक्तिमत्ता सर्वव्यापकता आदि विशेषताओं का निराकरण करना है।[९] निर्गुण सगुण नहीं हो सकता और सगुण निर्गुण नहीं हो सकता। संक्षेपतः सत्पुरुष अथवा परब्रह्म निर्गुण है, और शेष अन्य जीव सगुण हैं। उनमें तात्त्विक भेद है।[१०] भारत में ब्रह्मा विष्णु, महेश को भगवान् मानकर, पूजा होती है, किन्तु दरिया के अनुसार इन देवताओं ने भी सत्पुरुष को नहीं पहचाना है।[११] एक प्रसंग में निर्गुण के चार स्तरों का प्रतिपादन किया गया है—बोलता, पवन, निराकार और चवथा।[१२] ऐसा प्रतीत होता है कि इस विश्लेषण के द्वारा ब्रह्म की उत्तरोत्तर सूक्ष्मता की ओर संकेत है। परमब्रह्म निराकार से भी परे है। निराकार ब्रह्म तो सक्रिय भी है, किन्तु अचल अथवा परमब्रह्म अक्षर अव्यक्तिरूप है, योगियों द्वारा विश्वदृष्टि-गम्य मात्र है।[१३] ब्रह्म की सूक्ष्मता के प्रतिपादन की दृष्टि से उसे कहीं-कहीं सगुण और निर्गुण दोनों

---

९ सरगुन निरगुन करो विचारा।
करो विवेक भेद निरधारा॥
निरगुन सोइ जिनसे कहिं भाई।
अजर अमर वह पुरुषराई॥
सरगुन सो बन्धन में लागा।
पुरुष विराग लाग सब जागा॥—दरियासागर (पृ. १८)

१० सगुन निगुन कर यह फल लेखा।
सतगुरु मत विरला जन देखा॥
निगुन नाम है पुरुष निनार।
सगुन मडल तिन करो विचार॥—ज्ञानस्वरोदय (पृ. १८)

११ त्रादि पंडित मग डोगिउ रूपा।
हद निग्रह कहि लावई छपा॥
तीनहुँ अस पुरुष नहिं जाना।
अन्ध भाग सब पंथ भुलाना॥—ज्ञानरतन (पृ० १०१)

१२ एक निगुन बोलता है भाई।
ज्ञानी जन पूछो चरचाई॥
दोसरा निगुन पवन कहावै।
वह अगम कोइ अन्त ना पावै॥—भक्तिहेतु (पृ० १०५)

१३ एक निगुन बोलता है भाई।
ज्ञानीजन पूछो चरचाई॥
दोसर निगुन पवन कहावै।
वह अगम कोइ अन्त न पावै॥
तीसर निगुन ■ निराकारा॥
जाके भव गरुप मन्मारा॥
चवथा निगुन अचल है भाई॥
जहवाँ पसरा ज्ञानि जाई॥—भक्तिहेतु (पृ० १०५)

से परे बताया गया है। उपनिषदों में जो ब्रह्म के 'परात्परत्व' की भावना व्यक्त की गई है उसका स्पष्ट प्रभाव इन स्थलों में लक्षित होता है।[२५] शंकराचार्य ने ब्रह्म की परिभाषा करते हुए उसे सत् और असत् दोनों के कारण 'अनिर्वचनीय' माना है। निर्गुणत्व और सगुणत्व दोनों से परे ब्रह्म की कल्पना शंकराचार्य के उपर्युक्त 'अनिर्वचनीय' कल्पना से मिलती-जुलती है। इस प्रकार की कल्पना से सत्पुरुष की अनुपमता व्यक्त होती है।[२६] दरिया-सम्प्रदाय के ग्रंथों में परमात्मा को द्योतित करने के लिए सत्पुरुष के साथ एक और शब्द बाहुल्य से मिलता है, और वह है—'बेचगू'। इस फारसी शब्द का तात्पर्य हुआ—अनमोल। इसीलिए, 'बेचूनमति' शब्द का भी प्रयोग सत्पुरुष के विशेषण के रूप में हुआ है।[२७]

जिस निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप का संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है उसकी प्राप्ति के लिए प्रेम अथवा श्रद्धा, भक्ति और ज्ञान इन तीनों की आवश्यकता है। बिना प्रेम की भक्ति नहीं हो सकती और बिना भक्ति के ज्ञान नहीं हो सकता।[२८] जिस तरह गोस्वामी तुलसीदास ने ज्ञान और भक्ति दोनों के समन्वय की इच्छा प्रतिपादित की है, उसी प्रकार दरिया ने भी दोनों का समान महत्त्व बतलाया है।[२९] भक्ति के साथ नाम-स्मरण भी सम्मिलित है। दरिया ने 'सतनाम' के जपने और उच्चारण करने का उपदेश दिया है। दरिया-पंथ के साधु-महात्मा जब एक दूसरे से मिलते हैं, तब 'प्रणाम' अथवा 'नमस्ते' के स्थान पर 'सतनाम' कहकर अभिवादन करते हैं।[१] यहाँ सन्तकवि दरिया ने जिस विशिष्ट अर्थ में अपने ग्रन्थों में ज्ञान शब्द का प्रयोग किया उसका संक्षिप्त निदर्शन अपेक्षित है।

सामान्यतः ज्ञान का तात्पर्य शास्त्रीय पांडित्य से है। किन्तु सन्तमत में शास्त्रीय पाण्डित्य का कोई भी महत्त्व नहीं है। कबीर ने प्रारम्भ में ही कहा था कि 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पण्डित भया न कोय।' यही नहीं कि सन्त-मत के अनुयायियों के लिए वेद-शास्त्रों का निरा ज्ञान निरर्थक है, अपितु ब्रह्म-प्राप्ति में वह

---

२५. निरगुन सरगुन दोनों से न्यारा।
सत्त रूप सोए विमल सुधारा॥—दरियासागर (पृ० १०१)

२६ वस्तु अनुपम सुरति सुरेसे।—दरियासागर (पृ० १०१)

२७ बेचूनमति किछु बरनि न जाई।
ज्ञानी कथि कथि अन्त ना पाई॥—भक्तिहेतु (पृ० २११)

२८. बिना प्रेम नहिं भक्ति विवेका।
होय प्रेम यह गुरगमि एका॥

....

प्रेम प्रीति नहिं जोंग लगावै।
करे भक्ति बिनु प्रेम सो पावै॥—भक्तिहेतु (पृ० २१२)

२९ ज्ञान भक्ति बिनु सार है सुनो सजन चित लाए।
बिनि बिनि विज्ञान यह ब्रह्म अनूप देखाए॥—भक्तिहेतु (पृ० २०३)

अथवा

निरमल ज्ञान विचारहु, भक्ति करहु चित लाए।
मन धरम सतगुर सेवा, आवागमन मेटाए॥—भक्तिहेतु (पृ० २०१)

३० प्रीति करो सतनाम स, सेवि सकल मर्म भाव।
मिथ्या जन्म जग जानु है, फिरि एक ऐसो भाव॥—भक्तिहेतु (पृ० २८०)

बाधक भी है। पाश्चात्य दार्शनिक बर्गसाँ (Bergson) ने तर्क-चैतन्य (Intelligence) और अन्तरनुभूति (Intention) का विश्लेषण करते हुए अन्तरनुभूति को तर्क-चैतन्य से ऊँचा बतलाया है। इसका कारण है कि तर्क सदा द्विपक्षिक होता है, वह पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष की द्विविधा से अपने को मुक्त नहीं कर सकता। किन्तु अन्तरनुभूति तर्क के परे की अवस्था है, जिसमें साधक को सतत साधना, तपस्या एवं अभ्यास के बल से 'दिव्यदृष्टि' की अलौकिक शक्ति अर्जित होती है। यह मानो सूर्य के समान आत्मप्रकाशित है। उसमें द्विविधा और सन्देह का अवकाश नहीं है। सन्तों का ज्ञान वस्तुतः यही दिव्यदृष्टि अथवा अन्तरनुभूति है। इसका सम्बन्ध हृदय से है, न कि मस्तिष्क से। सन्त दरिया ने भेद (रहस्य) और वेद का अन्तर प्रतिपादित करते हुए कहा है कि जो भेद जानना चाहे उसके लिए उचित है कि वेद भूल जाय।[११] वेद के पण्डितों और मौलवियों की ओर संकेत करते हुए दरिया ने कहा है कि वेद और कुरान के फन्दे में इन लोगों ने समस्त प्राणियों को फँसा रखा है, कर्मकाण्ड के नाम पर ये सभी जजमानों और जीवों को धोखा देते हैं और द्रव्य-अर्जन करके अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं।[१२]

अनेक ग्रन्थों को पढ़कर पण्डित हो जाना सुगम है किन्तु सत्य अनुभूति जन्य ज्ञान प्राप्त करना न केवल दुस्साध्य है बल्कि कष्ट-साध्य भी। सत्य ज्ञान का मार्ग पर चलना मानो तलवार की धार पर चलना है। इसमें अत्यन्त अधिक संयम-नियम की आवश्यकता है।[१३] संत दरिया के बीस ग्रन्थों में छह के नाम में ज्ञान शब्द है—ब्रह्मज्ञान, ज्ञानदीपक, ज्ञानमूल, ज्ञानरतन, ज्ञानस्वरोदय और निर्भयज्ञान। इससे स्पष्ट है कि दिव्य दृष्टि द्वारा सत्य ज्ञान की प्राप्ति और सत्पुरुष से साक्षात्कार दरिया की ज्ञान-धारा का केन्द्र-बिन्दु है। ज्ञान के अतिरिक्त भक्ति, प्रेम और विवेक को भी उन्होंने अभीष्ट महत्त्व दिया है। सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि साधक अथवा सन्त के हृदय में पहले प्रेम के 'ढाई अक्षर' का समावेश होना चाहिए। प्रेम के उत्स से भक्ति का मानसरोवर उमड़ेगा और उसमें विवेक के कमल खिलेंगे। इन्हीं कमलों में ज्ञान के उस मकरन्द की सृष्टि होगी जिसके मादक सौरभ से मन-मधुप परमानन्द में विभोर हो परम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे।

सत्पुरुष त्रिगुणातीत है, किन्तु सृष्टि त्रिगुण-मिश्रित है। इस सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई, इसके सम्बन्ध में दरिया ने अनेक ग्रन्थों में विस्तृत विवरण दिये हैं। उपनिषदों में यह बताया गया है कि सृष्टि के पूर्व एकमात्र सत् अथवा अद्वैत ब्रह्म था। उसके हृदय में एकत्व से बहुत्व में परिणत होने की इच्छा हुई (तदैक्षत बहु स्याम् प्रजायेयेति)। सृष्टि के पूर्व में एकमात्र ब्रह्म या ईश्वर की स्थिति और उसके मन में सृष्टि-रचना की इच्छा की भावना प्रायः सभी धर्मग्रन्थों में किसी-न-किसी रूप में विद्यमान है। दरिया ने कल्पना की है कि इस त्रिगुणात्मिका सृष्टि के पहले एकमात्र सत्पुरुष परमानन्द में मग्न अमरलोक में था

---

११ पोथी पढ़ना गीता गावहु।
भेद नहीं तब बेद भुलावहु॥—दरियासागर (पृ० ७०)

१२ बेद कितेब दुइ फंद पसारा।
तहि फंदा महँ जीव बेचारा॥
धोखा देई जीव सब हारा।
करम धरोहर बेद ओ आगा॥—ब्रह्मविवेक (पृ० १७५)

१३ ज्ञान के पंथ परा पर न कोई।
धार कृपान त्रिगुन अति होई॥
अगम अपार पार किमि पावै।—ज्ञानरतन (पृ० १९८)

ब्रह्मलोक में विराज रहा था। उस समय कर्त्ता और क्रियमाण का भेद नहीं था, उस समय वेद-शास्त्र नहीं थे; पृथ्वी नहीं थी; आकाश नहीं था; महेश गणेश, सूर्य चन्द्र, तारे नहीं थे; इन्द्र आदि देवता नहीं थे; दया, धर्म, यज्ञ योग, जप आदि कर्म-कलाप नहीं थे; न तो उत्पत्ति का प्रश्न था न प्रलय का। तीनों गुण अपनी साम्यावस्था में थे। इसी स्थिति में सत्पुरुष के चित्त में चैतन्य का स्पन्दन हुआ और उन्होंने सृष्टि की उत्पत्ति करनी चाही।[१४] इसी प्रसंग में उन्होंने एक पुरुष और एक नारी को जन्म दिया। यह पुरुष निरंजन अथवा मन नाम से मशहूर हुआ और नारी माया अथवा कामिनी के नाम से विख्यात हुई। समस्त सुख-दुःखमय विश्व इन्हीं मन और माया के संयोग से प्रपंचित हुआ। जिन्हें हम त्रिदेव कहते हैं और भगवान् के रूप में जिनकी उपासना करते हैं, वे ब्रह्मा और ब्रह्माणी लक्ष्मी पार्वती आदि उनकी पत्नियाँ मन रूप निरंजन और माया रूप कामिनी के परस्पर प्रसंग के ही परिणाम हैं।[१५] निरंजन को कहीं-कहीं काल भी कहा गया है; क्योंकि वह बड़े-बड़े शक्तिशालियों का भी गर्व चूर्ण कर देता है।[१६] राम, कृष्ण, शिव आदि जो विषय-वासना में लिप्त हुए और अनेकानेक संकट सहे, उसके मूल में है मन और माया का परस्पर मिलन।[१७] कामिनी के साथ-साथ कनक भी माया का प्रबल प्रतीक है। सांसारिक जन इन दोनों के चक्र में उलझकर घूमते रहते हैं।[१८] कामिनी और कंचन के क्षणिक लोभ में हम भविष्य में आनेवाली भयंकर विपत्तियों को उसी तरह भूल जाते हैं, जिस तरह वधिक के यहाँ बँधा हुआ बकरा प्रेम से घास-दाना खाता है और यह नहीं जानता कि कुछ ही क्षणों में निर्दयता से उसकी हत्या कर दी जायगी।[१९] भ्रम में पड़ा हुआ मनुष्य हाँडी में उबलते हुए चावल के समान दग्ध होता रहता है और उसमें से गरम-गरम भाप निकलती रहती है, जो उसे कामातुर बनाये रहती है।[२०]

---

१४ जब किछु उतपति काम कों, तिन चेतनि चित दीन्ह।
नारि पुरुष एक रंग में, दुई किन्हु इच्छा कीन्ह ॥—दरियासागर (पृ० ११)
मायारूप कामिनि जो कीन्हा, धरमपुरुष रुचि ता के दीन्हा।
वैरन रूप निरंजन भयेउ, रोम-रोम सागर गुन भयेउ ॥—दरियासागर (पृ० ११)
१५. तब कामिनि से भो परसंगा, उपजे सकल मार पतंगा।
तेहि महं तीन देव तब भयऊ, ब्रह्मा विष्णु महेसर कहऊ ॥—दरियासागर (पृ० ११)
१६ मन की महिमा काल है, करत करावै अगिनि।
पौरु मिलावै गरद में, रावन की भइ हानि ॥—दरियासागर (पृ० ७८)
१७ बेद कितेब उपाय भरमाई।

देव संकट जोग मन काही।
उपजि बिनसि देह मन पाही ॥—दरियासागर (पृ० ७८)
१८ ए दो चक्र भ्रमित लोका।
कामिनि कनक महा यह धोखा ॥—दरियासागर (पृ० १०४)
१९ जैसे चीक चारों अभिलासा।
बहुत जतन कै कीन्ह मेहमाना ॥
स्वारथ स्वाद जानि कै मारी।
यहि विधि काल करै रखवारी ॥—दरियासागर (पृ० १०६)
२०. जैसे हँडिया चावल राँधै।
आगि लाग्या सर्व करि सीझै ॥
भाप भाँप बार जो डारै।
कामिनि संग काम जस जारै ॥—ब्रह्मविवेक (पृ० १०५)

क्रोध लोभ मद मोह आदि सभी विकार मन और माया के संग से उपजते हैं। सिंह और उसका अपनी प्रतिमा देखकर उससे लड़ना, कुत्ते का शीशे के मकान में भूँक-भूँककर मरना, मृग का अपनी नाभि में उपस्थित कस्तूरी की खोज में भटकना, पतंग का दीपक का चक्कर काटते-काटते उसमें जल जाना, भौंरे का कमल के संपुट में बँधना, सुग्गे का सेमल के फूल को लाल फल समझकर चोंच मारना, आदि सहस्रों दृष्टान्त जो भारतीय कवियों ने माया के निदर्शन में दिये हैं, उन्हें संत दरिया ने भी प्रयुक्त किया है। जिस तरह शराब बेचनेवाली 'कलवारी' लोगों को पिलाकर मन्मत्त कर देती है, उसी तरह माया ने भी जीव को कर रखा है।[४१] माया-संयुक्त मन अनादि काल से अपना नाच दिखाये है, और समस्त काल तक सुर, नर मुनियों को नाच नचाता रहेगा।[४२] मन की अतिशायी प्रबलता को घोषित करने के लिए ही कहीं-कहीं दरिया ने 'मन परमेसर मन है राजा' जैसी पंक्तियाँ लिखी हैं। मन और माया को वश करना और उनके जाल से अपने को मुक्त करना यह संत जीवन का चरम लक्ष्य है।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योग-साधन आवश्यक है। दरिया के अनुसार योग दो प्रकार का होता है—(क) पिपीलक योग और (ख) विहंगम योग। दूसरे शब्दों में पिपीलक योग को हठयोग भी कहते हैं। संक्षेप में इस योग की प्रक्रिया यह है कि मूलाधार-स्थित कुण्डलिनी को जागरित किया जाय जिसमें वह सुषुम्णा-मार्ग से ऊपर उठकर शेष पाँच चक्रों (स्वाधिष्ठान मणिपुर, अनाहत विशुद्ध और आज्ञा) का भेदन करते हुए सहस्रदल कमल में विलीन हो जाय। तांत्रिकों के अनुसार कुण्डलिनी प्रकृति का प्रतीक है और सहस्रदल कमल ईश्वर या ब्रह्म का। कुण्डलिनी का सहस्रदल कमल में विलयन मानो प्रकृति के बन्धन से मुक्त होकर आत्मा का परमात्मा में विलीन होना है, जिसे मोक्ष या निर्वाण कहते हैं। हठयोग के सम्बन्ध में आसन प्राणायाम मुद्रा आदि ऐसी प्रक्रियाएँ हैं, जिनका प्रयोग आवश्यक है।[४३] इन प्रक्रियाओं का सम्बन्ध बहुत कुछ शरीर के नियंत्रण से है। अतः इनसे परमानन्द की जो प्राप्ति होती है, वह स्थायी नहीं रहती। इसके विपरीत विहंगम, योग का सम्बन्ध शरीर के निम्न भाग से न होकर गगन से ऊपर ब्रह्माण्ड भाग से है। इसके अनुसार आत्मा की सुरति (अन्तर्दृष्टि) नेत्र के अष्टदल-कमल-स्थित सूचीद्वार अथवा 'अमरपद' होकर ब्रह्मांड में प्रवेश करती है; फिर वह इंगला पिंगला और सुषुम्णा की त्रिवेणी में मज्जन करते हुए सहस्रदल कमल से होकर बंकनाल के द्वारा चढ़ती हुई 'भँवर-गुफा' में प्रविष्ट होती है, जिसमें अनहद नाद गुंजायमान रहता है और अनेक रंग-के दिव्यमान रहते हैं तथा अनुपम सुगन्धि छाई रहती है। इसकी प्राप्ति योगी को दिव्य दृष्टि द्वारा होती है। भँवर-गुफा से भी ऊपर वह अवर्णनीय लोक है जहाँ निराकार सत्पुरुष विराजमान रहता है, इसे दरिया ने 'अगम लोक' 'अमरापुर' अमर नगरी आदि नाम दिये हैं। उन्होंने पिपीलक योग या हठयोग को उत्तम स्थान इसलिए नहीं दिया है कि इसकी सिद्धि उसी प्रकार क्षणिक होती है, जिस तरह एक चींटी पेड़ के ऊपर चढ़कर मधुर फल का तभी तक आस्वादन करती है, जबतक पदस्खलन नहीं होता; क्योंकि शक्ति क्षीण ही जिससे होकर वह पेड़ से नीचे उतर जाती है। इसके

---

४१ यह संसार माया कलवारी।
    भर मतवार भरम करि डारी॥—ज्ञानसरोदै (पृ० २५०)

४२ नट मन आदि अन्त नचि चाही।
    नर मन सुर मुनि नाच नचाही॥—दरियासागर (पृ० ११३)

४३ इन क्रियाओं का विस्तृत विवरण दरिया-ग्रन्थावली, प्रथम खंड के प्रथम परिच्छेद में लिए।

निरीह जिस तरह से एक पक्षी आकाश में उड़ता रहता है और मनचाहा फल के फलों का आस्वादन कर फिर आकाश में उड़ जाता है और उसके आस्वादन की निरंतरता में कोई व्यवधान नहीं होता उसी तरह 'सुरति योग' 'शब्द योग' अथवा 'विहंगम योग' का साधक निरंतर परमानन्द का आस्वादन करता है।[४४] विहंगम योग के सम्बन्ध में निरति, सुरति, सूर्य, चन्द्र, इंगला, पिंगला, सुषुम्णा त्रिवेणी; षट्चक्र अष्टदल कमल; नव द्वार; दशम द्वार; पंचतत्व; माया त्रिगुण; चार अवस्था (जाग्रत, स्वप्न सुषुप्ति तुरीय) तीन गुण आदि ऐसे पारिभाषिक शब्द हैं जिनका व्यावहारिक ज्ञान अपेक्षित है।[४५] ज्ञानस्वरोदै नामक ग्रन्थ में इड़ा, पिंगला आदि तीनों स्वरों पर आधृत एक विस्तृत प्रक्रिया-विधान का विवरण है जिसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि स्वर की सिद्धि और ठीक-ठीक पहचान से संतजन सब तरह की भविष्यवाणी करने में समर्थ होते हैं। योगी के लिए मरने के बाद मोक्ष की प्राप्ति हो, यह बात नहीं है। उसे तो इसी जीवन में सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के द्वारा मुक्ति मिल सकती है। इसी बात का संकेत करते हुए दरिया ने कहा है कि मरना मो पहिले मरि रहहू।

जिस योग की पद्धति की संक्षिप्त चर्चा की गई, स्पष्ट है, वह अत्यन्त सूक्ष्म है और उसमें प्रवेश करने के लिए अनुभवी साधक अथवा 'सद्गुरु' की आवश्यकता है। यही कारण है कि 'सतगुरु' और 'शब्द' की स्थापना में अनिवार्यिनी महत्ता है।[४६] सन्त गुरु के लिए दीक्षित शिष्य को सर्वस्व समर्पित कर

---

४४. करम जोग जग कीनी चढ़ई,
चढ़ि पिपीलक फरि मय पढ़ई।
कीड़ंगम चढ़ि गयेउ अकासा
बैठि गगन चढ़ि वस्तु समासा।—दरियासागर (पृ० १०३)

४५. सार पवन की कौतुक मंथ, कीजै ध्यान विचारि।
छूटो चक्र अष्टदल कँवल करम काल सम मारि॥—दरियासागर (पृ० ७३)

पुनः,

चारि अवस्था तीन गुन, पाँच तत्तु है सार।
प्रेम सत्त तुरि जानिके, सबै भ्रम निवारि॥—दरियासागर (पृ० १०८)

पुनः

काया परचवे मूल जब पावै सतगुरु मिले तब सब्द लखावै।
—दरियासागर (पृ० ७३)

पुनः

तन सरवर मन देखु विचारि
तामें सलिता तीन सुधारि।—दरियासागर (पृ० १०८)

४६. बिनु सतगुरु को भेद बतावै।
गुपत यह मारग दिखावै॥—भक्तिहेतु (पृ० २८२)

पुनः

बिना शब्द नहिं होय उजियारा।
बिन सतगुरु नहिं उतरे पारा॥—दरियासागर (पृ० ७३)

पुनः

सतगुरु ज्ञान दीपक जब जैसे,
वस्तु अनुराग सुरति सुरमे।—दरियासागर (पृ० १०१)

देना चाहिए, क्योंकि गुरु साक्षात् परमेश्वर है।[४७] गुरु इस भव-सिन्धु में डूबती हुई नौका पर आकर व्यक्ति के लिए कर्णधार के समान है।[४८] इस सम्बन्ध में हमें स्मरण रखना चाहिए कि सद्गुरु के लिए किसी जातिविशेष का होना आवश्यक नहीं है। गुरु पूछिए तो गुरु के सम्बन्ध में जो जाति-पाँति की खोज करता है वह पाप का भागी बनता है।[४९] सद्गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान सूचित करने की दृष्टि से दरिया ने अपने निर्गुण मत को सतगुरु मत भी कहा है। अन्यत्र 'संतमत' 'सतपुरुष मत' आदि का भी उल्लेख है।[५०]

३ आचार-व्यवहार

दरिया-पंथ में आचार-व्यवहार के कुछ सिद्धान्तों का कठोर पालन आवश्यक है। इनमें मुख्य हैं—सत्यचारिता और निष्कपटता, अहिंसा, मद्यादि परिहार, इन्द्रिय-निरोध, निरहंकारता, स्वस्मारोपित निर्धनता और जाति-पाँति के भेद-भाव का परित्याग। पण्डितों द्वारा देवी को बकरे आदि की बलि चढ़ाना दरिया की दृष्टि में अत्यन्त अधम्य है। जितना पाप यजमान को लगता है, उतना ही पाप पुरोहित को भी लगता है।[५१] वे यह भी कहते हैं कि बकरे की बलि चढ़ाना अथवा गाय या सूअर की बलि चढ़ाना जिसे हिन्दू या मुसलमान क्रमशः पाप मानते हैं सिद्धान्ततः समान है।[५२] कहीं-कहीं तो दरिया ने पाखंडी ब्राह्मणों और वैष्णवों पर बड़े ही तीखे व्यंग्य कसे हैं। वे एक स्थल पर कहते हैं कि स्वयं तो ब्राह्मण और वैष्णव बना हुआ है, किन्तु घर में माता भवानि (शाक्त की) रखे हुए है, जो भयंकर

---

४७ गुरु कहे सायर सीखिए,
तन मन अरपयो सीस।
गुरु दिखो गुरु देव है
गुरु साहब जगदीश॥—ज्ञानमूल (पृ १८०)

४८ भवमें] त्रिविध विकार बल आदिक कुटिल नाथ।
गुरु सतगुरु कनहरिया त्यागि थामे हाथ॥—दरियासागर (पृ० १८)

पुनः

दरिया मन बस अगम है सतगुरु करो सहाय।
सागर हंसा पार कै जाय करा सुखराय॥—दरियासागर (पृ० ४९)

४९ सतगुरु जाति-पाँति नहिं कीजै।
जाति न्यारे नहिं पावत रीजै॥—दरियासागर (पृ ४९)

५० सतगुरु कहे मुक्त निवासा।—ज्ञानरतन (पृ० ११०)

५१ आपा दास ब्राह्मण कहै राता।
शाह वैष्णव करे जा पाता॥—दरियासागर (पृ० ४१)

५२ मानु एक पूजा नहिं हाई।—दरियासागर (पृ० ४१)

पुनः

कोप हिरनि कोप गाय जो खाई।
कोड एक पूजा नहिं भाई॥—दरिया सागर (पृ० ४१)

मांसाहारिणी है।[५२] उसके स्पर्श-दोष से वह कैसे बच सकता है। हिंसा के साथ-साथ मद्यादि-सेवन भी वर्जनीय है।[५३] यदि हिंसा प्रिय है, तो मनुष्य को ज्ञान-रूपी खड्ग लेकर काम-क्रोध आदि अनिष्टकारी शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध छेड़ देना चाहिए और उनका विनाश कर देना चाहिए। पाँच और पचीस अर्थात् पञ्चतत्त्व और उसके प्रपञ्च पर विजय प्राप्त कर लेनी चाहिए।[५४] इसी प्रकार यदि मद्यपान से प्रेम है तो सतनाम रूपी अमल मद का पान करना चाहिए और उसमें मस्त रहना चाहिए। संतों की मधुशाला में सद्गुरु 'साकी' है, जो प्रेम का प्याला भर-भरकर भक्तजन को पिलाता रहता है।[५५] जाति-पाँति के नाम पर अथवा हिन्दू, मुसल्मान आदि सम्प्रदाय के नाम पर जो भेद-भाव है, उसका तीव्र विरोध दरिया ने किया था। वे कहते हैं कि जब 'एक जोतिनि सभे उतपाता', तब फिर हिन्दू अथवा तुर्क ब्राह्मण अथवा शूद्र आदि कल्पित भेद-भाव क्यों? सम्प्रदाय, जाति-पाँति आदि कर्मकाण्ड के नाम पर अनेक अनर्थ हो रहे हैं, उन्हें उन्होंने 'भरम टटेरी' या 'पाखंड' बताया है और यह घोषित किया है कि पाखंड स प्रभु मिलै न काहू। कर्मकाण्ड और पाखंड के अन्दर निर्गुण ब्रह्म को सगुण मानकर उसकी मूर्तियाँ बनाकर पूजना भैरव भूत आदि को मानना, मरे हुए पितरों को तृप्त करने के लिए पिण्ड देना रंग-बिरंगे भेष से बाह्य दृश्य मात्रों को प्रभावित कर दिखलाना बिना आचरण को सुधारे रोजा-नमाज, तीर्थ व्रत आदि में समय नष्ट करना—सभी सम्मिलित हैं। उनका विचार है कि आजकल सभी भटक रहे हैं, चाहे हिन्दू हों या मुसल्मान।[५६]

४. काव्योत्कर्ष

संतकवि दरिया के संक्षिप्त परिचय को पूर्णता प्रदान करने के लिए उनकी रचनाओं, काव्यगत विशेषताओं, भाषा एवं शैली का मूल्यांकन अपेक्षित है। इसका कुछ विस्तृत विवरण दरिया-ग्रन्थावली के प्रथम खण्ड में दिया गया है। हम यहाँ पिष्ट-पेषण नहीं करना चाहते।

---

५२ अपने बकरा बिस्मी दोई।
घर में साकट भेदी सोई॥
मांसु ग्याय संग सूते जाई।
ताके मुख चुम्बन गहि लाई॥
५३ मति कछु भूल पिये जनि ताके।—ज्ञानसरोदै (पृ० १५१)
पुनः
पिये सराब भूल करि खाई,
भाखति भवि बहु लेई जाई।—ज्ञानसरोदै (पृ० १५१)
५४ श्याम खड्ग हिकर गहो
कामादिक सब मारि।
पाँच पचीसहि जीति कै
करम भरम सब झारि॥—ज्ञानसरोदै (पृ० १५२)
५५ पियहु नाम मद अमल करारा।
रहहु मस्त कायहि मतवारा॥—ज्ञानसरोदै (पृ० १५२)
पुनश्च
साकी सतगुरु प्रेम पियाला।
जो लेहि लायक तेहि तन ढाला।—ज्ञानसरोदै (पृ० १५६)
५६ हिन्दू तुरुक दुनों भुलाना।
दुनों कारि बिकारि भिमाना—दरियासागर (पृ० ८१)

भाषा-विज्ञान-सम्बन्धी अनुसन्धान के लिए तो दरिया-ग्रन्थावली में अनन्त सामग्री भरी पड़ी है। यद्यपि उनके ग्रन्थों की मुख्य भाषा अवधी कही जा सकती है, जैसी कि 'रामचरितमानस' में है, तथापि उसमें ब्रजभाषा, खड़ी बोली राजस्थानी मैथिली, मगही भोजपुरी आदि अनेकानेक भाषाओं अथवा बोलियों की विशेषताएँ यत्र-तत्र-सर्वत्र मिलती हैं। भोजपुरी का पुट तो बहुत अधिक है और यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि संत दरिया शाहाबाद (जो भोजपुरी का गढ़ है) में आविर्भूत हुए थे। उनकी रचनाओं में ऐसे शब्द और मुहावरे भरे पड़े हैं, जो भोजपुरी की विशिष्ट सम्पत्ति कहे जा सकते हैं। निदर्शन-निमित्त कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जा रही हैं—

जो जी परे कलेठ में, पलके टाग घुमाए।

× × ×

अधिक लंगूर कपासा भारी।
नर के पाग रांड की सारी॥

× × ×

आगि लगाए दीन दुहुकारी।

× × ×

मुह बिरावहिं चें चें तारी।

× × ×

बिखा घोर पानी घट भारी।
घोर उजार मचल भी पारी॥

× × ×

जो मन एक कहहिं नहीं समुझा।
अगाड़ी रावन राम ही अमुझा॥

× × ×

कुम्भकरण जागे नहिं जीया।

× × ×

माया मन ही भ्रमे भवावे।
छीन पकड़ि के पीव ओंड़ावे॥

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि काव्य के व्यापक आदर्श का पालन शृंगार का गहन विमर्श कथा-वस्तु और काव्य-वस्तु का व्यवस्थित प्रतिपादन रस-सन्निवेश, चरित्र-चित्रण दृश्यों अथवा परिस्थितियों का जीवन्त वर्णन कल्पना का उत्कर्ष भाषा का सौष्ठव और रचना की आकर्षक शैली—सभी दृष्टियों से सन्त कवि दरिया न केवल संत-साहित्य में, अपितु समस्त हिन्दी-साहित्य में श्रेष्ठ एवं वरेण्य पद के अधिकारी हैं।

विषय-सूची

दरिया-ग्रन्थावली

[द्वितीय ग्रन्थ]

सतनाम

ग्रंथ दरियासागर भाखल दरियासाहब
सतगुर बंदीछोर हंसउबारन मुक्तिदाता नाम निसान सही[1]

साखी

ग्रंथ दरियासागर, मुक्ति भेद निजुसार ।[2]
जो जन सब्द बिबेकिया, सो जन उतरहिं पार ॥१॥[3]

चौपाई[4]

प्रथमहिं सतपद कीन्ह बखाना । परम प्रीति सहि स्तुती समाना ॥१॥[5]
सतपद अनभौ कीन्ह अनुसारा । लोक बेद त्यागेउ सम भागा ॥२॥[6]
लोक बेद इंह हम सम जानी । केवल नाम निरंतर भानी ॥३॥[7]
गरब गुमान काम अग त्यागा । प्रेम रचित निजु हिरदय लागा ॥४॥
बद बिधी महिं बरउ बखाना । छप लोक साहब मसयाना ॥५॥[8]

---

१ (ख) सतनाम सत सुकृत दरिया साहेब सत बरग नाम निसान ग्रंथ दरिया सागर सत सुकृत सही । (ग) खण्डित । (घ) सतनाम सुकृत दरिया साहब, हंस उबारन मुक्ति दाता नाम दरिया धाम भाखल सही । (ङ) बैराग्य साहब सुकृत दरिया साहब ग्रंथ दरिया सागर भाखल ॥

२. (घ) खण्डित (प्रारम्भ से सोरठा सं० १ तक) । (ङ) निजुसार = निजुसारर ।

३ (घ) बिबेकिया = बिबेकिया । (ग) उतरहिं = उतरे ।

४ (ग) (घ) (ङ) अपठित । (घ) खंडित ।

५. (ग) (घ) प्रथमहिं = प्रथमे । (ग) खंडित । (ङ) कीन्ह = कीन्हा । (ग) सहि = सेती ।

६ (ङ) अनभौ = अनोभो । (ङ) कीन्ह = कीन्ह । (ग) त्यागेउ = त्यागे । (ङ) त्यागेउ = त्यागेवो ।

७ (ग) (घ), (ङ) इंह = यह ।

८ (ग) (घ) (ङ) महिं = माहि । (ख) बरउ = करी । (घ) बरउ = करेउ । (ङ) बरउ = करेउ । (ख) साहब = साहेब ।

साखी

तीनि लोक के ऊपरै, (तहां) अभ लोक विस्तार ।[१]
सत सुक्रित कबिरा पावै, पहुंचे जाए करार ॥२॥[२]

चौपाई

क्रिपावंत क्रिपा अब कीन्हा । दयासिंधु सुखसागर दीन्हा ॥६॥[३]
मैं सामरथ नहिं पूरा ग्याना । सत साहेब सब्द निरवाना ॥७॥[४]
अनंतलोचन सम ग्यानी होई । अगम पुरुष कहि सकै न कोई ॥८॥[५]
सतारि जुग जिन्हि नस में राखा । कछु कहे बरनी (सकै) कोइ भाखा ॥९॥[६]
को कबिता पद पावै ऐसा । नाम सरूप कछु बरनी कथा ॥१०॥
उन्ह कर रूप कहा नहिं जाई । मन में सकुच लग कछु भाई ॥११॥[७]
नव लख करि जाके है माथा । आदि अन्त सुकीरतहिं साथा ॥१२॥[८]
सकल रूप महिमा उजियारा । प्रती रहा समदिस्टि पसारा ॥१३॥[९]
करि नहिं सको तिलक के बरना । लछमी चरित्र भई जेहि सरना ॥१४॥[१०]
(इंह) लोचन तेज कहा नहिं जाई । तनिक दिस्टि सम पाप कटाई ॥१५॥[११]
तनिक उंकार जोति के कीन्हा । तीनी लोक जोति रचि लीन्हा ॥१६॥
ताके कवि का करो बखाना । एक नाम निजु हिरदै आना ॥१७॥[१२]

---

१ (क) (ख), (ग) ऊपरै = ऊपरे ।
२ (ख) पहुंचै = पहुंचे ।
३ (ग) क्रिपावंत = दीक्षित है ।
४ (घ) सामरथ = सामर्थ । (क) (ख) (ग)—नहिं = नाहि । (ग) पूरा = पूरों ।
(घ) साहेब = साहब ।
५ (क) (ख) (ग) पुरुष = रूप । (क) (ख) (ग) न = ना । (ग) सकै = सके ।
६ (ग) सतारि जुग सएन सुख राखा । (ख) (ग) सतर जुग सएन सुखराखा ।
(घ) कोइ = को ।
७ (क) (ख), (ग) नहिं = नाहि । (ख) (ग) लगै = लागे ।
८ (ग) जाके = जाके । (ख) सुकितहिं = सुकितहि । (ख) सुकितहिं = सुकित है ।
(ग) सुकितहि = सुकित रही ।
९ (क) बरत रहा सम दिस्टि पसारा । (ग) बरनि रही सम द्रिस्टि पसारा ।
१० (क) करि सको निल के बरना । (घ) (ग) करि नाहि सके तिलक के बरना ।
(ग) लछमनि चरित भया जेहि सर्नां । (ख) लछमनि चरित्र भए जेहि सर्नां ।
(ग) लछमनि चरित्र भए जेहि सर्नां ।
११ (क), (ख), (ग) नहिं = नाहि ।
१२ (ग) ताके = ताको ।

अनंत - नाम सकल बौराना । माया फंद सभ रहे भुलाना ॥१८॥[1]

साखी

एक सो अनंत भयो, सो फुटि डार बिस्तार ।[2]
अंतहु फेरी एक है, ताहि खोजु निजु सार ॥३॥[3]

चौपाई

जो तिहि ब्रह्मा बिस्नु प्रतिपाला । जोति रूप धरि रहे गोपाला ॥१९॥[4]
पुर्न ना होहि आपु अवतारा । जोति गहे सभ करु उपकारा ॥२०॥[5]
जोति रूप जगत सभ धरई । जहां तहां दुस्टन्हि सभ दलई ॥२१॥[6]

साखी

जोतिहि ब्रह्मा बिस्नु हहीं, संकर जोगी ध्यान ।[7]
सतपुर्न छप लोक हहीं, ताको सबन्ह जहान ॥४॥

चौपाई

रामे जोति अउरि नहिं कोई । छिन्न रूप धरै पुनि सोई ॥२२॥[8]
ब्रह्मा बिस्नु जोति अवतारा । पुर्न नाम खोए रग करारा ॥२३॥[9]
छप लोक सहि हम चलि आई । साहब कहा सब्द समुझाई ॥२४॥[10]
दीन्ह बचन सब्द का दागी । जगत माह भयो अनुरागी ॥२५॥[11]
गरभ वास जब दीन्ह अवतारा । जनम भया देखा संसारा ॥२६॥[12]

---

१ (क) बौराना = बउराना । (क) रहे = रहैं । (घ) भुलाना = भुलना ।
२. (घ) (घ), (क) एक सो अनंत भयो ।
३ (ग) अंतहु फेरि = अंतहु मे फीर । –
४ (ख) बिस्नु = बिस । (ग) रहे = रहा ।
५. (घ), (घ), (ग) गहे = गाहे ।
६ (घ) दुस्टन्हि = दुष्टन्ह ।
(घ) दलइ = दलइइ ।
७ (घ) बिस्नु = बिसन ।
८ (घ) चौपाइ नं० २२ से २३ तक १८ और १९ पृष्ठों के बीच में है । रामहि जो अवर नाहि कोई । (घ) (क) रामे = रामै । (घ), (ग) अउरि = अवरि । (घ) (क) नहिं = नाहि । (घ) धरै = धरए । (क) धरै = धर । (घ) पुनि = फुनि ।
९. (घ) बिस्नु = बिसन । (घ) जोति = जोत ।
१० (ख) (क) साहब = साहेब ।
११ (घ), दीन्ह = दीन्हो । (ख) भयो = भो ।
१२. (घ), (घ) (ग) गरभ = गरभ । (ग) (क) संसारा = संसारा ।

कछु दिन बालक रूप चलि गयऊ । किछु दिन सब्द संधी महं रहेऊ ॥२७॥[1]
किछु दिन माया मोह बिसतारा । किछु दिन ममिता सभै हमारा ॥२८॥[2]
किछु दिन बीते भो सब ग्याना । क्रिपा कीन्ह सत साहब आना ॥२९॥[3]
कीन्ह क्रिपा अति सीतलि बानी । प्रेम भगति सत सुमिरन ठानी ॥३०॥[4]
भयो प्रेम निरसंक बिचारा । गुर गमि ग्यान नाम निजु सारा ॥३१॥
तनिक सरुप न कीन्ह पसुसारा । अतै तेज सम लोक उजियारा ॥३२॥[5]
कहां लहि कहौं कहा नहि जाई । ग्यानदिस्टि मन देखु लगाई ॥३३॥[6]

छन्द

कोटि कामिनि चौर ढारहिं, कोटि किस्न ध्यावहीं ।[7]
कोटि ब्रह्मा बेद भनत, अनंत बाजा बाजहीं ॥[8]
जोतिमंडल कोटि कलसा, हिरन्म की परगासहीं ।[9]
भलक भालरि लागु चहुं ओर मोति मनि छबि छाजहीं ॥१॥[10]

सोरठा

सोभा अगम अपार, हंस बंसगुन पावहीं ।
कोइ ग्यानी करै बिचार, प्रेम तंतु जाके बसै ॥१॥[11]

चौपाई[12]

जम जालिम जग करै बेगारा । पाखंड धर्म करै संसारा ॥३४॥[13]
जब निजु भेद पाव जन कोई । ताहि देखि भगा जम रोई ॥३५॥[14]

---

१ (ग) (घ) (च) कछु = किछु । (क) (ख) (ग) गयऊ = गैउ । (च) रहेऊ = रहेउ ।
२ (क) सभै = सभ ।
३ (क) (ख) भो = भयो । (ग) भो = भया ।
४ (घ) सीतल = सीतलि ।
५ (क) (ख) (ग) अतै = अते ।
६ (ख) लहि = लै । (ग) लगाइ = लागइ ।
७ (ग) (घ) चौर = चवर । (ङ) चौर = चवर । ध्यारहीं = संभवतः ध्यावहीं ।
८ (ग) बाजा = बजा ।
९ (ग) (घ) (ङ) की = को । हिरंम्म = हिरण्य (सोना) ।
१० (ङ) चहुं = चहु ।
११ (ग) करै = करही । (ख) (ग)—करै = करे । (ग) (घ) (ङ) बसै = बसे ।
१२ (ख) (ग) (घ) (ङ) पाठाभाव ।
१३ (ग) (घ) करै = करि । (ग) बेगारा = बिगारा । (घ) धरम = धर्म । (क), (ग) करै संसारा = कर संसारा । (ख) करै संसारा = करै सनसारा ।
१४ (ख) रोई = रोवे ।

चौदह चौकी जम कै होई । बिनु सतगुर नहिं पहुचै कोई ॥३६॥[१]
चौदह मंत्र भेद जो पावै । जाए छपलोक बहुरि नहिं आवै ॥३७॥[२]
तामें सार सब्द है एका । ताहि जानहु निजु काया बिसोका ॥३८॥[३]
काया परचै निजु कहो बुझाई । गुर गमि ग्यान बुझो चितलाई ॥३९॥[४]
अस्टदल कंवल रंग है सोई । मध्य बीच तेहि बोलता होई ॥४०॥[५]
अपनस ताहां बैठे आई । तिन भरि चौकी बैलसी भाई ॥४१॥[६]
दल चक्र ताहां मनि उजियारा । झलकर झरै ताहां जोति निजु सारा ॥४२॥[७]
दल चक्र ताहां परचै पाव । मूल चक्र दिढ़ आसन लाव ॥४३॥[८]
पांच तत्तु तहां देखु बिसेखा । पल पल करहिं अनूपम भेखा ॥४४॥
तामें निरति सुरति की खानी । तामें निरतु माया की खानी ॥४५॥
पचिस प्रकिति तहं निरति कराई । दसो दिसा रहै चोए जाई ॥४६॥[९]
मूल सब्द मनि मानिक देखा । निरति करै तहां लाल बिसेखा ॥४७॥[१०]
पचिस प्रकिति के भेद कहि दीजै । होए गुर ग्यान बुझि एह लीजै ॥४८॥[११]
पचीस के एह कथा सुनाई । तामें सार पवन है भाई ॥४९॥[१२]
इंगला पिंगला सुखमन नारी । सार पवन तहं कर पुकारी ॥५०॥[१३]
चोहि पवन घटचक्रमहि फेरा । होए गुर ग्यान बुझै एह भेदा ॥५१॥[१४]
ता त्रिकुटी महं रहा समाई । तहवां काल सकै नहिं जाई ॥५२॥[१५]

---

१ (घ) चौकी = चउकी । (ख), (ग), (घ) (ङ) कै = के । (ख), (ग), (घ), (ङ) नहिं = नाहि । (ख), (ग), (ङ) पहुचै = पहुचे ।

२ (ङ) मंत्र = मंतर । (ख) जो = जौ । (घ) जो = जैसो । (ख), (घ), (ङ) नहिं = नाहि ।

३ (ख) सब्द = सबद । (ग) जानहु निजुकाया = जानहु काया ।

४ (ग) परचै = परचे । (ग) निजु = निज । (ख) (ग) (घ) (ङ) कहो = कहो ।

५ (ग) (ङ) कवल = कमल । (ग) (घ) (ङ) मध्य = मधि ।

६ (घ) बैठ = बइठ । (घ) चौकी = चउकी ।

७ (ग) दल = दलो । (ग) झरै = झरे । (ख) निजुसारा = मनुसारा ।

८ (ख), (ग) दल = दलो । (ख) चक्र = चक्कर । (ङ) चक्र = चक्कर । (ग) परचै = परचे ।

९ (ग) (ख) निरति = निर्ति । (ग) (घ) (ख) दिसा = द्वार ।

१० (ग) निरति = सुरत । (ग), (घ), (ङ) करै = करे ।

११ (ख) दीजै = दीजे । (ख) लीजै = लीजे । (ग) बुझि = समुझि ।

१२ (घ) (ङ) है = है ।

१३ (ख) पिंगला = पिंगल । (ख) (ग) (घ), (ख) सुखमन = सुखमनि । (ग) कर = कर ।

१४ (ख) (ङ) चोहि = चाहि । (ग) बुझै = बुझे । (ख) बुझै = बुझि ।

१५ (ख), (ग), (घ) महं = मे । (ख), (ग), (घ) (ङ)—नहिं = नाहि । (ग)—सकै = सके ।

अजब। जपै सूर चंद ग्यानी । दरिया गगन बरीसै पानी ॥५३॥[1]
अम्रित बुंद तहां झरि आवै । पीयत हंसा अमरपद पावै ॥५४॥[2]

साखी

अमी तत्तु पर अम्रित पिवै, देखो सुरति लगाए ।[3]
कहत सुनत महिं बनि आवै जो गति काहु लखाए ॥५॥[4]

चौपाई

नाम धान जब हिरदै लागा । निझरि निरंतर सुरति जागा ॥५५॥[5]
कोटि तिरथ तहां जल परगासा । कोटि इन्दु मेघ घन वासा ॥५६॥[6]
कोटिन्हि तेज जोति परगासा । कोटिन्हि पंडित वेद नेवासा ॥५७॥[7]

छन्द

कोटि ग्यानी ग्यान गावहीं सब्द बिना नहिं पावहीं ।[8]
सब्द सजीवन मूल ऐनक अजपा बरस देखावहीं ॥
सत्त सब्द संतोख धरि धरि प्रेम मंगल गावहीं ।[9]
मिलहिं सतगुर सब्द पावहिं फिनि ना भवजल आवहीं ॥२॥[10]

सोरठा

ग्यान रतन की खानि, मनि मनिक दीपक बर ।[11]
सब्द सजीवनि जानि, अमरपुर अम्रित पीवहीं ॥२॥[12]

चौपाई

एत पवन जब गगन समाई । पीयत प्रेम अमर होए जाई ॥ ५८ ॥[13]

---

१ (ख) (ग) जपै = जपे । (ख) बरीसै = बरिसिनो । (ग) बरीसै = बरीसे ।
२ (ख) अम्रित = अमिरित । (ख) (ग) (घ) (ङ)—पीयत हंस अमर पद पावै ।
३ (घ) अम्रित = आमित ।
४ (ख) (घ) (ङ) महिं = माहिं । (ख), (ग), (घ) (ङ) जो = सो ।
५. (ख), (घ), (ङ) हिरदै = हिरदैए । (ख), (ग), (घ), (ङ) निझरि = निझरि ।
६ (ख) तहां = जहां । (ग), (घ) (ङ) कोटि = कोटिन्ह ।
७ (ख) वेदनवासा = वेद पर नवासा ।
८ (ग) ग्यानी ग्यान = ग्यानी ग्यान ग्यान । (ख) (ग), (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।
९ (घ) सत = सत्य ।
१० (ङ) सब्द = सबद । (ग), (घ), (ङ) फिनि = फिरि । (ग) फिनि = बहुरी ।
(ग) भव = भवो ।
११ (ख) (ग), (घ) (ङ) बर = बरे ।
१२. (ख), (घ), (ङ) पीवहीं = पीवै । (ग) पीवही = पीव ।
१३ (ग) एत = हित । (ङ) ...

सत साहब दरियहिं समुझाई । जाए छपलोक बहुरि नहिं आई ॥ ५९ ॥[1]
प्रेम पियाला पिवै जन कोई । बिना सीस का चीन्है सोई ॥ ६० ॥[2]
सकल जिवन कहँ खाए चोराई । जिन्ह नहिं नाम परम पद पाई ॥ ६१ ॥[3]

साखी

प्रेम प्रीति लगाए कै, सत्त सब्द अधार ।[4]
सत्त बिना नहिं बाचिहौं, नर कोटिन्हि करै बेपार ॥ ६ ॥[5]

चौपाई

सत सब्द बिचारै जो कोई । अभय लोक सिधारै सोई ॥ ६२ ॥[6]
अभय निसान धुनी तहँ होई । अजर अमर पद पावै सोई ॥ ६३ ॥[7]
कहन सुनन किमि करि बनि आवै । सतनाम निजु परचै पावै ॥ ६४ ॥[8]
सीखै निरखि भेद निजु सारा । समुझि परै तब उतरै पारा ॥ ६५ ॥[9]
कंचन डाहि पावक महँ जाई । ऐसो तन कहँ डाहहु भाई ॥ ६६ ॥[10]
ज्यों हीरा घन सहै घनेरा । होए हिरंमर बहुरि न फेरा ॥ ६७ ॥[11]

---

१ (घ) सत = सत्य । (ख), (घ), (ङ) दरियहि = दरियहिं । (ख), (ग), (घ) (ङ) नहि = नाहिं ।

२. (ख), (घ), (ङ) पियाला = पियाला । (ग) पियाला = प्याला । (ख) पिवै = पिए । (ग) पिवै = पीवै । (घ) चीन्है = चीन्हे ।

३ (ग) (घ), (ङ) जीवन = जीवन्ह । (ख) परम = प्रेम । (ख) (ग) (घ) (ङ) जिन्ह = जिन्हि ।

४ (ङ) प्रीति = पीरीति । (ग) लगाएकै = लगाइकै । (ख) (ग), (घ) सत्त = सत ।

५. (घ) बिना नहि = बिनाहि । (ख) (ग), (घ) (ङ) बाचिहौं = बाचिहो । (ख) (ग), (घ), (ङ) कोटिन्हि = कोटिन्ह । (घ), (ङ) करै = करो । (ख) (ग), (घ), (ङ) बेपार = बैपार ।

६ (ख), (ङ) सतै = सत । (घ), (ङ) बिचारै जो कोई = बिचारे कोई । (ख), (ङ) बिचारै जो कोइ = बिचारे कोई । (ख), (घ) (ङ) अभय = अभै । (ग) अभय = अभे । (ख) (ग) सिधारै = सिधारे । (ख) सोई = कोई ।

७ (ख) (ग) (घ) (ङ) तहँ = तहाँ । (ग) पावै = पावे ।

८ (घ) करि = कर । (ग) परचै = परचे ।

९ (ख) (ग) परै = परे । (ख), (ग) उतरै = उतरे ।

१० (घ), (ग) डाहै = डाहे । (ख) ऐसे तन के डाहहु भाई । (ग), (घ) (ङ) ऐसो = ऐसे ।

११ (ङ) ज्यों = ज्यौं । (ग), (ङ) ज्यों = जैसों । (ख) सहै = सहए । (ग) (घ), (ङ) टरे = मरे । (ख) (घ) (ङ) न = ना ।

गहै मूल तब निरमल बानी । दरिया दिल बिच सुरति समानी ॥ ६८ ॥[1]
पारस सब्द कहा समुझाई । सतगुर मिलै तब देहि देखाई ॥ ६९ ॥[2]
सतगुर सो जो सत्त बतावै । हंस बोधि छपलोक पठावै ॥ ७० ॥[3]
घर घर ग्यान कथै बिसतारा । सो नहिं पहुंचै लोक हमारा ॥ ७१ ॥[4]
एक नाम प्रेम सो गावै । संत साधु का दरसन पावै ॥ ७२ ॥[5]
पावै दरसन मुक्ति का मेवा । सुजस निरखि करै नितु सेवा ॥ ७३ ॥[6]

साखी

सुमति चिन्है सो बावरा, कुमति चिन्है सो पूर ।[7]
चिन्है बिना जग जात है, जड़ मूरख ज्यों कूर ॥७॥[8]

चौपाई

आपे सांच सांच है सोई । झूठा भा जग जात बिगोई ॥७४॥[9]
सत्त पुर्ष महिमा उजियारा । कोटिन्हि सूरज सिर पर बारा ॥७५॥[10]
कोटिन्हि कामिनि निरति कराई । कोटिन्हि हीरा सेज बिछाई ॥७६॥[11]
ताहि साहब के चरन मनावौं । भेद निरखि नितु निरगुन गावौं ॥७७॥[12]
जब छूटै यह जग के भटका । जम जगाति सम तब फटका ॥७८॥[13]

---

१ (ख) (ग) घ, (ङ) गहै = गहे । (ख) समानी = समाना ।
२ (क) सब्द = सबद । (ख), (ग) सतगुर मिलहित यहि देखाई । (घ) सतगुर मिलै दे देहि देखाई । (ङ) सतगुर मिलै ही तै देहि देखाइ ।
३ (ग) सो = सोइ । (ख) छपलोक = छपक ।
४ (ग) कथै = कथे । (घ) पहुंचै = पहूचे ।
५ (ङ) प्रेम = परेम । (ख) (ग) (घ) (ङ) सो = सय । (ग) का = के ।
६ (ग) पावै = पावे । (ङ) मुक्ति = मुकति । (ख) मेवा = मवे । (ग) (घ) (ङ) मेवा = मया । (ग) करै = करे । (ख) सेवा = सेवै ।
७ (ग) चिन्है = चिन्हे । (ख) बावरा = बावोर । (ख) कुमति = कुमत । (ग) चिन्है = चिन्हे ।
८ (ग) चिन्है = चिन्हे । (ख) (ग) (घ) (ङ) जड़ = जड़ । (ख) मूरख = मुरुख ।
(ग) मूरख = मूर्ष ।
९ (घ) (ङ) आपे = आपै । (ख), (ग) (घ) (ङ) भा = भया ।
१० (ङ) पुर्ष = पुरुष । (ख) (ग) सूरज = सूर्ज ।
११ (ख), (ग) (घ) (ङ) कोटिन्हि = कोटिन्ह । (ग) निरति = नृत्य ।
(ख) (ग) (घ) (ङ) कोटिन्हि = कोटिन्ह ।
१२ (ख) साहब = साहेब । (ख) (ग) (घ) मनावौं = मनावो । (ग) निरगुन = पद गुन ।
१३ (ख) (ग) (ङ) छूटै = छुटे । (ग), (घ) के = की । (ख) सभे होए फटका ।
(ग) सभे हैं फटका । (ग) (ङ) सभै फटका ।

कैसे हंसा पहुंचै जाई । जम अगाति दुर्ग है भाई ॥७९॥[1]
जम अगाति दुर्ग बटपारा । मारि जीव सब करै अहारा ॥८०॥[2]
चौदह मंत्र बान संधाना । मारहु जम के पद निर्वाना ॥८१॥[3]
चौदह मंत्र भेद बिस्तारा । एक सब्द ते हंस उबारा ॥८२॥[4]
कामिनि कनक फंद जमजाला । चौदह चिन्है करम का कासा ॥८३॥[5]
सीख सब्द तुह करो बिचारा । लोक वेद त्यागो सभ भारा ॥८४॥[6]
त्यागहु संसै जमकर दंदा । समुझि परी सब भव जल फंदा ॥८५॥[7]

साखी

दरिया सब्द बिचारिए, तीनि लोक ते न्यार ।[8]
गुर ते भरम जनि राखहु, मिलहिं सब्द मिलु सार ॥८॥[9]

चौपाई

सतगुर जानि के बंदहु पाऊ । भरम त्यागि तब हिरदै लाऊ ॥८६॥[10]
सतगुर से सुझि परे उह देसा । प्रेम सुखी जब पाउ संदेसा ॥८७॥[11]
आदि अंत जौ पूछे भाई । छपलोक कहीं समुझाई ॥८८॥[12]
राह देखाए दीन्ह करु ग्याना । जम के मान मरदि घर ध्याना ॥८९॥[13]
द्वार पताल खोज असमाना । ताहि पुर्ष के करौं बखाना ॥९०॥[14]

---

१ (प) पहुंचै = पहुचे । (ख) दुर्ग = दुरुग । (ग) दुर्ग = दुरग ।
२. (ख) बटपारा = बटबपारा । (ख), (ग), (घ) (ङ) सब = सभ । (ख), (ग) करै = करे ।
३ (ख) मंत्र = मंतर । (ख) संधाना = समधाना । (ङ) जमके = जम ।
४ (घ) ते = से ।
५. (ख) (घ) चिन्है = चिन्हि । (ङ) चिन्है = चिन्हि ।
६ (ग) तुह = तुम ।
७ (घ) पंक्ति अपठित । (ङ) त्यागहु = तेयागहु । (ङ) कर = के । (ख) (घ), (ङ) परी = परिही । (घ) भव = भयो । (घ) भव = भौ ।
८ (ङ) सब्द = सबद । (ग) बिचारिए = बिचारिय ।
९ (ख) (ग), (घ) (ङ) ते = से । (ख) (घ) (घ), (ङ) मिलहिं = मीलिहि ।
१० (ख) जानिके = जानिकै । (ङ) हिरदै = हिरदैया ।
११ (ख) (घ) (ङ) परे = परै । (ग) उह = वोह ।
१२. (ग) जौ = जो । (घ) जौ = जैसे । (ख) (घ) (ङ) पूछे = पूछै । (ख) (घ), (घ) (ङ) कहौं = कहो ।
१३ (ग) देखाए = देखा । (ख) मान = मानि ।
१४ (ख), (ग)—द्वार = दार । (ख) पुर्ष = पुरुष । (ख), (घ), (ङ) के = कै । (ख), (ग) (घ), (ङ) करौं = करों । (ङ) अतिरिक्त पाठ—सतनाम ।

आदि अंत सतपुरुष अमाना । ब्रम्ह एक है सभ घट जाना ॥११॥[1]
तीनि लोक जम दारुन अहई । चौथा लोक पुरुष एक रहई ॥१२॥[2]
अजर अमर हंसा तंह होई । अम्रित अहरि चाखै सभ कोई ॥१३॥[3]
सो सुख [सुख महि बात बखानी । बूझै सो जो निरमल ग्यानी ॥१४॥[4]
सत्त लोक सत्त का बंधा । बिनु सतगुर जस जड़मति अंधा ॥१५॥[5]

छन्द

सेत मंडल सेत चहुं ओर सेत छत्र बिराजहीं ।[6]
सेत तख्त पर आपु बैठे हंस चंवर डोलावहीं ॥[7]
प्रेम अनंद सुगंध सुंदर प्रेम मंगल गावहीं ।[8]
परिमल अगर गुलाब की अहरि हंस सो सुख पावहीं ॥३॥[9]

सोरठा

अति शोभा सुख सार, प्रेम पंथ मोरे हित है ।[10]
कोइ ग्यानी करै बिचार, अटल अमर सुख हंस है ॥३॥[11]

चौपाई

सतगुर आनु सत्त सुख बानी । सब्द सांच बिरला केहु मानी ॥१६॥
बिनती करौं दुनो कर जोरी । सत साहब ध्यान की डोरी ॥१७॥[12]

---

१ (क) सतपुरुष = सतपुरुख । (क) अमाना = अमना ।
२. (घ) दारुन = दारुन । (ख), (घ) चौथा = चौथ । (क) पुरुष = पुरुख ।
(ख) (ग) एक = घोए । (घ) एक = कोए ।
३ (ख) (ग) (घ) (ङ) हंसा = हंस । (ख) (घ) (ग) (ङ) तंह = तहां । (ख) होई = रहई । (ख), (ग) चाखै = चाखे ।
४ (ख), (ग) (घ) (ङ) महि = माहि (क) बूझै = बुझी । (ग) बूझै = बुझ ।
५. (ग) (घ) सतलोक = सत्यलोक । (ख) सत्त = सत्ता । (ग) सत्त = सत्ता ।
(घ) सत्त = सत्य । (क) सत्त = सत्य । (ख) (ग) (घ) (ङ) जड़मति = जड़मति ।
६ (ग) चहुं = चोहु । (क) चहुं = चहु । (ख) (ग) ओर = ओर । (ङ) ओर = और ।
(ङ) छत्र = छत्तर ।
७ (क) तख्त = तखत । (ग) (घ) चंवर = चौर ।
८ (ग) प्रेम = प्रम । (ख) (ग) (घ) अनंद = आनंद । (ख) गावहीं = गावोहीं ।
९ (ख) पावहीं = पावोहीं ।
१० (ख) मोरे हित है = मनो रहित है । (घ) मोरे हित है = मनो रहित है । (घ) मोरे हित है = मन रहित है । (क) मोरे हित है = मो रहित है ।
११ (ख) करै = करए । (ग) करै = करे । (ख) सुख = सुख ।
१२ (ग) बिनती = बिनति । (ख) (ग) (घ) (ङ) करौं = करो । (घ) दुनो = दोउ ।
(ख) साहब = साहेब । (ग) साहब = साहब है ।

मनहिं म माला प्रमरस भीन्हा । सुरति चीन्हि सब्द सौ लीन्हा ॥९८॥[1]
सांच सब्द बूझो सो लाई । हंस बोधि छपलोक पठाई ॥९९॥[2]
बूझो दिल मनि या तन खोमी । सत लोक सत नहिं डोली ॥१००॥[3]
यह कुल करम छाडि सभ देहू । सतगुर चरन सब्द तब लेहू ॥१०१॥[4]
अम्रित प्रेम पियहु सुहु दासा । तन छूटे छपलोक में बासा ॥१०२॥[5]
जब धाजीपर पहुंचे जाई । मांग मोहर देउ देखाई ॥१०३॥[6]
सतगुर देखि रहे सकुचाई । गावहिं मंगल कामिनि आई ॥१०४॥[7]
बहुत अनंद सुख भयो बिलासा । जग मरन मेटा भव त्रासा ॥१०५॥[8]
कोटि कला तहं देखो जाई । चलत फिरत सुख बहुत सोहाई ॥१०६॥[9]
हंस रूप देखि रहा लोभाई । अम्रित बन रहा छबि छाई ॥१०७॥
अति अनंद सुख बरनि न जाई । अमरपुर अम्रित रस पाई ॥१०८॥[10]
कोटिन्हि कामिनि मंगल गावै । हीरा मानिक सेज बिछावै ॥१०९॥[11]
चंवर डोलावहिं बहुबिधि भांती । सभ हंसा बैठहिं एक पांती ॥११०॥[12]

---

१ (ग) मनहिं = मनह । (ख), (ग), (घ) भीन्हा = भीना । (ङ) सब्द = सबद । (ख), (ग), (घ) (ङ) लीन्हा = लीना ।

२. (ङ) सब्द = सबद । (ख) (ग) (घ) सौ = सब । (ङ) सो = दिल ।

३ (ख), (ग) (घ), (ङ) या तन = आपन । (ग) सत = सत्य । (ख), (ग) (घ) (ङ) सत = सत्या । (ख), (ग), (घ), (ङ) नहिं = नाहिं ।

४ (ख) (ग), (घ) करम = कर्म । (ख) (ग) (घ), (ङ) छाडि = छोडि । (ख) तब = सब ।

५. (ख) सुहु = सुम । (ख) छपलोक = छपलोकमे । (घ) छपलोक = छपलोकेवासा । (ख) (ग) (ङ) में = मे ।

६ (ख) देउ = देही । (ग) देउ = देहु ।

७ स्वीकृत पाठ में 'सतगुर' के बाद 'सुधा' है । (ख), (ग) (ङ) सुधा = दया । (घ) सुधा = (घ), ताता । (घ) रहे = रहा ।

८. (ग), (घ) अनंद = आनंद । (ख) भयो = भैऐ । (घ) भयो = भयो । (ङ) भया = भो । (ख) (ग), (घ), (ङ) बिलासा = बेलासा । (ख) मेटा = मेटे । (घ) भव = भो । (ग) भव = भयो । (ङ) त्रासा = तरासा ।

९ (ख) कला = कासा । (ख) (ग) (घ), (ङ) देखो = देखा ।

१० (ग) (घ) अनंद = आनंद । (ख) (ङ) न = ना ।

११ (ख) (ग) (ङ) कामिनि = कोटिन्ह । (ख) गावै = गवै । (ख) मानिक = मानक ।

१२ (घ) चंवर = चौर । (ख), (ग), (ङ) बैठहिं = बैठ । (ग) बैठहिं = बइठ ।

साखी

अगम पंथ की सेहरी नहिं बूझै बिरला कोए ।[1]
सत साहब सामरथ हैं, दरिया सब्द बिलाए ॥६॥[2]

चौपाई[3]

मैं निरखि लेहु सो निजु सारा । चांदी जार हुआ टकसारा ॥१११॥[4]
खोटा कांजि दूरि करि दीन्हा । असल ग्यान निजु परखी लीन्हा ॥११२॥[5]
साहब परखी दीन्ह देखाई । सब्द भेद निजु कहीं बुझाई ॥११३॥[6]
सत गुर गुर की राह निनारा । मिलै सब्द पावै निजु सारा ॥११४॥[7]
चौगुन चारि जो कीन्ह निमेरा । जो जम बूझै सो पहुँचु सबेरा ॥११५॥[8]
तीनि लोक जम जालिम घेरा । मुनि पंडित भी जम के चेरा ॥११६॥[9]
सत पुरुस सतलोकहिं डेरा । गाया कबीर करहिं जग केरा ॥११७॥[10]
अमैलोक जहँ भय नहिं होई । अम्रित अम पिव सम कोई ॥११८॥[11]
जाहि लोक तहि हम चलि आई । ताहि लोक बिरला जन जाई ॥११९॥[12]
ग्यान कथी जनि भूलै कोई । सब्द बिचार करहिं नर सोई ॥१२०॥[13]

---

१ (क) नहैं = है । (ग) नहैं = भेद । (घ) नहीं = इह । (ग) बुझै = बुझे । (ख) बिरला = बीला । (ग) बिरला = बिरिला । (ङ) बूझै = बुझ्झ ।
२ (ख) साहब = साहिब । (क) सामरथ = समर्थ । (घ) सामरथ = सामर्थ । (ख) (घ), (घ) (ङ) बिलाए = बिलोए ।
३ (ख) (ग), (घ) (ङ) में अप्राप्त ।
४ (ङ) लेहु सो = लेहु । (क) (ग) (ङ) जार = जरि ।
५ (घ) करि = कै । (ङ) दीन्हा = दीनहा । (ख) (ग) (घ), (ङ) परखी = परखे ।
६ (ख) साहब = साहेब । (क) (ख) परखी = पर्खी । (घ) परखी = परखे । (ख) (ग), (घ) (ङ) कहीं = कहा ।
७ (ख), (घ) (ङ) राह = रहनी । (ख) निनारा = न्यारा । (ख) (घ), (ङ) मिलै = मिलै । (ख) सारा = सीरा ।
८ (घ) बुझै = बुझ । (ग) सबेरा = ढेबेरा ।
९ (घ) अतिरिक्त पाठ—सत्त पुरुष सत्तलोकहि डरी । (ख) भी = भय । (ग) भी = भयो ।
(घ) भी = भयो ।
१० (घ) कथ = मारथ । (घ), (ङ) पुरुस = पुरुष ।
११ (ख) अमै लोकम जहां भै नाहि होई । (ग) अभय लोक जहं भै नाहि होई । (घ), (ङ)
अभै लोक जहां भै नाहि होई । (घ) सम = सोम ।
१२ (ख) (ङ) चलि = चलै । (ख) बिरला = बिरिला । (घ) बिरला = बिर्ला ।
१३ (ख) भूलै = भुलाऐ । (ग) भूलै = भूलै । (घ) बिचार = बिचारि । (ग) करहिं = करहु ।

मोहि से पूछहु ग्यान करारा । भारी ग्रंथ कहौं बिस्तारा ॥१२१॥[1]
तीनि लोक बद यह कहई । चौथा लोक पुर्व होए रहई ॥१२२॥[2]
अजर अमर लोक बिस्तारा । ई सम करि तम कीन्ह पसारा ॥१२३॥[3]
हरि भगतिन्हि भगताई कीन्हा । तिरगुन फंद तेहु नहिं चीन्हा ॥१२४॥[4]
तिरगुन से है कोए गुन न्यारा । अजर अमर सत्त करतारा ॥१२५॥[5]
हंस बंस तहं पहुंचे भाई । अजर अमर तहवां होए जाई ॥१२६॥[6]
सत्त सब्द जो करै बिबेका । आदि अंत काया महं देखा ॥१२७॥[7]
सत सब्द बूझो चित लाई । सो हंसा निरमल होए जाई ॥१२८॥[8]
अमर लोक महं पहुंचहि दासा । देखहि अबिगति अजब तमासा ॥१२९॥
सतगुर मरमहि मानु सुभागा । निरमल होए मल कबहि न लागा ॥१३०॥[9]
गरब गुमान भूले सभ ग्यानी । बिद्या बद पढ़ि मरम न जानी ॥१३१॥[10]
मोटा मन के फिरे गंवारा । जौं मन मिलै मिलै करतारा ॥१३२॥[11]
पानी पवनहु से मन तेजा । जहवां कहो तहवां मन भेजा ॥१३३॥[12]
सो मन मिलेऊ दरिया दासा । सब्द देखि मेटि जम त्रासा ॥१३४॥[13]

---

१ (ग) भारि भारि कै हो बिस्तारा ।
२ (घ) चौथा = चौथ । (ङ) पुर्व = पुरुब । (घ) होए = होए ।
३ (ख) अमर = अम । (ख) (घ) इह सम कीतम कीन्ह पसारा । (ग) येह सब हरम कीन्ह पसारा । (ङ) ह सम कीतम कीन्ह पसारा ।
४ (ख) भगतिन्हि = भगतन्ह । (ग) भगतिन्हि = भक्तन्हि । (घ) भगतिन्हि = भगन्हि ।
५ (ग) (घ) कोए = कह । (ग) अमर सत्त = अमर है सत्त ।
६ (ख) (ग), (घ) (ङ) भाई = भाई । (ख), (ङ) तहवां = तहां । (ग) सत सब्द जो माने भाई ।
७ (ख) (घ) करै = करे । (ख) (ग), (घ) (ङ) बिबेका = बिबेका ।
८ (ख) (घ) बुझो = बुझै । (ग) बुझो = बुझ । (ङ) बुझो = बुझो । (ग) होए = हो ।
९ (ख), (ङ) म = मा ।
१० (ख) (ग) (घ), (ङ) गरब = गर्व । (ख), (घ) (ङ) भूले = भूले । (ङ) बिद्या = बिरद्या । (ख) (ङ) म = मा ।
११ (घ) (ङ) के = कै । (घ) फिरे = फिरहिं । (ङ) फिरे = फिरै । (ख) मिलै मिलै = मिले मिले । (ग) मिलै मिलै = मिलै मिलै । (ङ) मिलै मिलै = मिलै ।
१२ (ख) पवन = पौन । (ख), (ङ) से = सै । (ख) (ग), (घ) जहवां = जहां । (ग) तहवां = तहां ।
१३ (ख) मेटि = मेटै । (ङ) मेटि = मेट । (ख) (घ) (ङ) जमत्रासा = जम कै त्रासा । (घ) जमत्रासा = जम कर त्रासा ।

तीनि लोक तीनि गुन फैलाई । चौथा लोक निरगुन से पाई ॥१३५॥[1]
तीनि लोक तो बेद बखाना । चौथा लोक के मरम न जाना ॥१३६॥[2]

छन्द

कोटि कंचन दान दे कोइ कोटि कथा पुरानन ।[3]
कोटि तीरथ जो पगु फिरै तो न सुझै गुर ग्यानन ॥[4]
अनंत नाम सभ कहत है एक नाम परमानन ।[5]
एक नाम खोए पुन्न ना है ताहि खोजु निजु धामन ॥४॥[6]

सोरठा

एक से अनंत भयो, सो फूटि डार बिस्तार ।[7]
अंतहू फिरि एक है, ताहि खोजु निजु सार ॥५॥[8]

चौपाई

जो तिहि ब्रम्हा बिस्नु प्रतिपाला । जोति रूप धरि रहे गोपाला ॥१३७॥[9]
पुन्न पुन्न ना होंहि भवतारा । गहै जोति करै उजिआरा ॥१३८॥[10]
उह तो सत्त पुर्ख मस्ताना । चौथा लोक जहं भय नहिं जाना ॥१३९॥[11]
राम नाम जग सभ कोइ जाना । बिस्नु रूप सो ब्रम्ह बखाना ॥१४०॥[12]

---

१ (ख) तीनिगुन = त्रिगुन । (ग) चौथा = चौथ । (ग), (घ) से पाई = से पाई ।
२. (ख) तो = त । (ग) तो = तौ । (ख) (ग) (घ) (ङ) के = की ।
३ (क) कोटि = कोटिन्ह । (ख) (ग) (ङ) कोइ = हर । (घ) कोटि = कोटिन्ह । (च) कोटि = कोटिन्ह ।
४ (ख) कोटि = कोटिन्ह । (ग) जो = जबो । (घ) जो = जौ । (ग) फिरै = फिरे । (घ) फिरै = परै । (ग) तो = तबो । (ख) (ङ) न = ना । (ख) (ग) सुझै = सुझे । (घ) ग्यानन = ग्यान ।
५. (ग) सभ = सब । (ख) (ग) परमानन = प्रमान ।
६ (ङ) पुन्न ना है = पुन्न ना ।
७ (ख) (ग) (घ) (ङ) से = सो । (ख) (ग) भयो = भयो । (घ) भयो = भौ । (ङ) भयो = भयो । (ख) (ग) (ङ) डार = डारि । (घ) डार = डाल ।
८ (ख) (ग) फिरि = फेरि ।
९ (ख) बिस्नु = बिस्न । (ग) बिस्नु = बिस्न । (ख) (ग) रहे = रहा । (घ) (ङ) रहे = रहै ।
१० (ख) पुन्न ना होहि जोती उजिआरा । (ग) (घ) (ङ) ना = नाहि । (ग) (ङ) भवतारा = भौतारा । (ग) (घ) (ङ) गहै = गाहे । (घ) करै = करे ।
११ (ख) तो = तौ । (ग) पुर्ख = पुरुष । (ख) (घ) चौथा = चौथ । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।
१२. (ग) जग = सब । (घ) (ङ) बिस्न = बिस्नु ।

आप आए माया घर कीन्हा । उपजै बिनसै तन होए भीन्हा ॥१४१॥[1]
पुरुष पुरान कहो निजु मना । उन्हीं के मुख रसना है नएना ॥१४२॥[2]
उन्हके हाथ पाँव बिस्तारा । उनहीं होहिं जोति अवतारा ॥१४३॥[3]
जोति रूप अगरत सम धरई । कबहिं मा नारी पुर्ख अवतरई ॥१४४॥[4]
ब्रम्हा बिस्नु जोति अवतारा । पुर्ख पुरान धोए रंग करारा ॥१४५॥[5]

साखी

तीनि अंश है जोति से, ब्रम्हा बिस्नु महेस ।[6]
आदि ब्रम्ह धोए पुर्ख हहीं, ताको सुनो संदेस ॥१०॥[7]

चौपाई

सत नाम निजु प्रेम लगावै । सार सब्द सो परगट पावै ॥१४६॥[8]
अमरलोक सतगुर की बानी । आवागवन मेटै सो प्रानी ॥१४७॥[9]
तहवाँ आए बसो सुरु दासा । छोड़हु संसै जम के त्रासा ॥१४८॥[10]
सुफल महातम ध्यान सुरंगा । अलि पंकज मन होत तरंगा ॥१४९॥
चढ़हु तुरंग ध्यान की डोरी । प्रेम रंग सब्द निजु बोरी ॥१५०॥[11]
सुनहु ध्यान गति कंठ उचारा । निरगुन की गति अगम अपारा ॥१५१॥[12]
ताके खोज करहु तुम ग्यानी । निरभै सब्द सुरति रहु ठानी ॥१५२॥[13]

---

१ (ग) कीन्हा = कीना । (ख) (ग) उपजे = उपजै । (ख), (घ) भीन्हा = भीना ।
२. (ग) पुरुष = पुरुख ।
३ (क) उन्हके = उन्हके । (ख) (ग) (घ) (ङ) उनही = उनहिं । (ग) अवतारा = औतारा ।
४ (क) रूप = सरूप । (ख), (घ) सम = मद । (ग) सम = छोम । (ख), (ग), (घ), (ङ) कबहिं मा नारि = कबहीं नारि (ङ) पुर्ख = पुरुख ।
५ (ख) (ग) बिस्नु = बिस्न । (ग) अवतारा = औतारा । (ङ) धोए = धोए ।
६ (ख) बिस्नु = बिसन । (ग) बिस्नु = बिस्न ।
७ (ग) हहीं = है । (ख), (ग) (घ) सुनो = सुनहु ।
८ (ङ) सब्द = सबद ।
९ (ग) अभै = अभे । (ख) प्रानी = प्राना । (ङ) प्रानी = परानी ।
१० (ख) सुरु = सुम । स्वीकृत पाठ में द्वितीय चरण के आरम्भ में 'दद' अधिक है ।
११ (ङ) सब्द = सबद ।
१२. (ख) (घ) उचारा = उचारी । (ख) (ग), (घ) (ङ) निरगुन = निर्गुन ।
१३ (घ) (ङ) तुम = तुर । (ग) निरभै = निरभे ।

अगम गमी कछु तुम दासा । त्यागहु संसै जम के पासा ॥१५३॥[1]
मनके पद सम जगत भुलाना । मन चीन्है सो चतुर सुजाना ॥१५४॥[2]
मन चीन्हें बिनु पार न पावै । देह धरि फेरु भव जल आवै ॥१५५॥[3]
अगम छोड़ि सब्द नहिं लागे । कहै दरिया प्रेमरस पागे ॥१५६॥[4]
मन के चीन्हि रागै एक ठाईं । जरा मरन कबहीं नहिं पाई ॥१५७॥[5]
मन कर्ता सब काम सवारै । मनहीं स फिरि नरक महं डारै ॥१५८॥[6]
मनहीं तीरथ सपन करावै । मनहीं मन की पूजा कहावै ॥१५९॥[7]
मनहीं मारि मनहिं में आवै । मनहीं चीन्हिके जग समुझावै ॥१६०॥[8]
मनके सनक सनन्दन लागे । मनहीं के जागी सब जागे ॥१६१॥[9]
मनहीं बेद कितेब पुराना । मनहीं खट दरसन जग जाना ॥१६२॥[10]
नोपा मन्ती मनहिं बुझावै । मूल भक्ति बिरला कोई पावै ॥१६३॥[11]
जब लगि मूल सब्द नहिं पावै । तब लगि हंसलोक नहिं आवै ॥१६४॥[12]

---

१ (ख), (ग) तुम = तुइ । (छ) तुम = तुमह । (च) त्यागहु = मेट त्यागहु । (छ) त्यागहु = तेयागहु । (ग) संसै = संसे । (ख) (घ) जम के = जम के । (घ) जम के = जमकर ।
२ (छ) मनके = मनक । (ग) सम = सब । (ग) चीन्है = चीन्हे । (ग) (घ) सो = सोई ।
३ (ख), (ग) (घ) (छ) मन चिन्हल बिनु पार न पावै । (ख) देह = देहि । (ग) (घ) फेरु = फेरि । (छ) फेरु = फिरा । (ख) भव = भौ । (ग) भव = भवी ।
४ (छ) अगम = अगर । (ग) (घ) (घ) (छ) लागे = लागैं । (ट) कहे = कहै ।
५ मनके = मनहे । (घ) रागै = रागे । (ख) (ग) (घ), (छ) नहिं = नाहिं ।
६ (ख) (घ) मनही होइ नरक महं डारे । (ग) मन मेह फिर नरक महं डारे । (छ) मनही में फिरि नरक महं डारै ।
७ (ग) मनहीं = मनई । (ग) कहावै = कियावै । (घ) मनहीं = मनह । (ख) (छ) मनही = मनहे । (घ), (ख) मनही = मनके ।
८ (ग) मनहीं = मनइ । (घ) मनहिं = मन । (ग) (घ) (छ) चीन्हिके = चीन्हि के ।
९ (छ) मनके = मनहे । (ग) (ग) (घ) लागे = लागै । (ग), (घ) (ख) (छ) जागे = जागे ।
१० (ग) मनहीं = मनइ ।
११ (ख) (घ) (छ) नोपा = नरपा । (ग) नोपा = नरोपा । (ग) मनहिं = मनइ ।
१२ (छ) पावै = पावै । (ख) (ग) (घ), (छ) नहिं = नाहिं । (ख), (ग) तब = तबे । (ख), (ग), (घ) (छ) नहिं = नाहिं ।

साखी

अष्टदल कमल भँवर तहँ देखहु सब्द बिचारि ।[1]
कहै दरिया चित चेतहु, देखहु भरम सब डारि ॥११॥[2]

चौपाई

मूल सब्द धुनि होत झंकोरा । सुरति बाँधि राखै एक ठौरा ॥१६५॥[3]
सुरति डोरि चेती चित लाई । मूल सब्द के एहि उपाई ॥१६६॥[4]
सूर चंद जब एक घर आवै । तबहीं डोरी लै बिलमावै ॥१६७॥[5]
मूल सब्द धुनि होत उचारा । तहवाँ जाइ करो पैठारा ॥१६८॥[6]
अष्ट कँवल के ऊपर मूला । सहस कँवल तहवाँ रहु फूला ॥१६९॥[7]
परिमल भ्रमर बास तहँ आवै । हंसा पियत बहुत सुख पावै ॥१७०॥
होए दास सतगुर के पासा । सेवा भक्ति प्रेम परगासा ॥१७१॥[8]
मैं तो साहब तुम कहँ जाना । मेरो मन तुम्ह सै मनमाना ॥१७२॥[9]
भरम छूट सो करहु उपाई । जेहि से हंस छपलोकहिं जाई ॥१७३॥[10]
सुरति लगाए के करो सँभारा । कुल करम छाड़ो बेवहारा ॥१७४॥[11]
जो सन सब्दहिं करो बिचारा । सोइ हंस भवसिंधु उबारा ॥१७५॥[12]

---

१ (ग), (ङ) कँवल = कमल । (ग) देखहु = देखो । स्वीकृत पाठ में साखी के पूर्वार्ध के अन्त में 'गु बै' है ।
२. (घ) (ङ) देखहु = देहु । (ङ) (प) भरम = भर्म ।
३ (प) बाँधि = साधि । (ख), (ग), (घ) (ङ) राखै = राखो । (ग) ठौरा = ठवोरा । (घ) ठौरा = ठवरा । (ङ) ठौरा = ठवारा ।
४ (ख) (ग) (ङ) चेती = चेतो । (घ) चेती = चेतहु । (ख) (ग), (घ) (ङ) के = की ।
५ (ख), (ग) (घ), (ङ) चंद जब एक = चंद एक । (ख) (ग) लै = ले । (घ) लै = लई ।
६ (ख), (ग), (घ), (ङ) जाइ = जाए ।
७ (ग) कँवल = कमल । (ख) सहस = सहसर । (ख) रहु = रहे ।
८ (ख), (ग) (घ) होए = होऐ । (ख) के = क । (ङ) के = की । (ङ) प्रेम = परम ।
९ (ख) साहब = साहेब । (ख) मैं = मो । (ख) तुम कहँ = तुम्ह कह । (ग) तुम कहँ = तुम ही । (घ) तुम कहँ = तुम्ह ही । (ङ) तुम कहँ = तुहै कहँ । (ख) (घ) तुम्ह सै = तुमह से । (ग) तुम्ह सै = तुम से । (ङ) मेरो = मरो । (ङ) तुम्ह सै = तुमह से ।
१० (ख) (घ) भरम = भम । (ग) छूट = छुट । (घ) सो = से । (ग) (ख), (घ) (ङ) जेहि से = जहि से । (ख) (ङ) हंस = हंसा ।
११ (ख) (घ) सँभारा = सम्हारा । (ग) (घ) करम = कम । (ख), (ङ) छाड़ो = छोड़ो । (ख) बेवहारा = बेहवारा । (ङ) बेवहारा = बेवहारा ।
१२ (ख) जो = जौ । (ख) (ग) करो = कर । (ङ) करो = करै । (ङ) हंस = हंसा । (ख) भव = भौ । (ग) भव = भवो । (ग) सिंधु = सिंधु ।

अकह बात कहा नहिं जाई । अगम गमी तहँ सुरति समाई ॥१७६॥[1]

छन्द

आगे मारग मौन अति है सब्द सुरति विचारहीं ।[2]
अजर जोति अनूप बानी देखि तहँ सुख पावहीं ॥[3]
अगम गमी तहँ अति झलामलि तहुँ मन ठहरावहीं ।[4]
सत सुकृत के सिरहि पगु है अभ्रितफल तहँ चाखहीं ॥५॥[5]

सोरठा

अजरा जोति बराए मूल सब्द निजु सार है ।
गहो सुरति चित लाए कहे दरिया भवरहित है ॥५॥[6]

चौपाई[7]

अगम सुरति अगहु चितलाई । सुरति कंवल रहु सुरति समाई ॥१७७॥[8]
चकमक चित धुमुकि अब लागै । निरमल जोति अभिन तहँ जागै ॥१७८॥[9]
गहिर ध्यान निजु करै विचारा । झलकै पदुम होए उजियारा ॥१७९॥[10]
अगम कथा बहुत हम कहिया । यरति अाकास रविनिहि अब कहिया ॥१८०॥[11]
जग में भाग कहीं सत नामा । प्रेम जुगुति बिरला जन रामा ॥१८१॥[12]
बीरा देह देह हुत सुकुताई । मूल सब्द बिरला केहु पाई ॥१८२॥[13]
यह बीरा पाए सत का गहई । सो हंसा भवसागर तरई ॥१८३॥[14]

---

१ (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
२. (ङ) सब्द = सबद ।
३ (ख) (ग) (घ), (ङ) तहँ = तहाँ ।
४ (ग) मेंदुमन = मेंघमन ।
५. (ख) सत सुकृतक सीरि पगु है । (ग) (घ) (ङ) सत सुकृत की सीरि पग है ।
६ (ग) (घ) भव = भौ ।
७ (ख), (ग) (घ) चाउपाई ।
८. (ख) अगहु = अगो । (ग) (घ) कंवल = कमल ।
९. (ग) (ग) (घ) धुमुकि = धुमुकि । (ङ) धुमुक = धुमुकि । (घ) लागै = लागे । (ख), (ग) (घ) अभिन = प्रेम ।
१० (ख) करै = करे । (घ) करै = करो । (ग) (घ) झलकै झलके ।
११ (ख) (ग) (घ), (ङ) बहुत = बहुत । (घ) अब = अब ।
१२. (ख), (घ) कहीं = कहेला । (ग) कहीं = कहो । (ङ) कहीं = कहो । (ख) जुगुति = भगति । (घ) जुगुति = युक्ति ।
१३ (ग), (घ) देह देह = देह तब । (ग) केहु = को ।
१४ (ख) को = केरो । (ख) भव = भौ । (ग) भव = भवा ।

निजु गहि सुरति लगावहु भाई । सोहं ठीका माह समाई ॥१८४॥[1]
ठीका आगे हूँगा मूला । प्रेम सब्द अहवां असफूला ॥१८५॥
सेत धजा निसि दिन फहराई । अम्रित झरि तह बहुत सोहाई ॥१८६॥[2]
हीरा मानिक कहै परगासा । संखनि मनी रहै चहुँ पासा ॥१८७॥[3]
ऐसा निजु है लोक निवासा । झर गुलाब मुल अम्रित बासा ॥१८८॥[4]
अमी तत्तु सुरति लौ लावै । सहजहि लोक पयाना पावै ॥१८९॥[5]
सीतल सब्द निजु प्रेम बढ़ावै । यह सत साधु की सेवा भावै ॥१९०॥[6]
धीर साधु कीन्हें चित लाई । ताहि से प्रेम कहब कछु भाई ॥१९१॥[7]
गूंगा गहिरा ध्यान विचारा । दीवि द्रिस्टि का करो अनुसारा ॥१९२॥[8]

साखी

ध्यान द्रिस्टि दीपक बरै, कहा जो मानु हमार ।[9]
दरिया गुर दरिया कहै, समुझि देखु एक बार ॥१२॥[10]

चौपाई

तीनी जुग जब जात ओराई । तेहि पीछे कलजुग चलि आई ॥१९३॥
तब मुक्ति कह आनि बोलाई । साहब वचन कहा समुझाई ॥१९४॥
कहे पुरुष सुनो हो दासा । जिव सम विनसै जम कै त्रासा ॥१९५॥
कहै पुरुष सुनो चित लाई । जीव बाचे के कवनि उपाई ॥१९६॥[11]

---

१ (ख) (ग) (घ) (ङ) सोहं = सोहम ।
२ (ख) (घ), (ङ) निसि दिन = निशदिन । (ग) फहराई = फराई ।
३ (ख) (ग) (घ), (ङ) मानिक कहै = मानिक है । (ख) (ग) (घ) (ङ) संखनि = संखनिह । (ग) रहै = रहे । (ख) चहुँ पासा = चहुँपास ।
४ (ख), (ग) (घ) ऐसा = ऐसो । (ख) (ग) (घ) (ङ) निवासा = नवासा । (ख) (ग) झरै = झर ।
५ (ख) अमी संत सुरति लौ लावै । (ग) अमी तत्तु सुरति लावो लावै । (घ) अमी तत्तु सुरति लव लावै । (ङ) अमीत तत्तु सुरति लो लावे । (ग), (घ) सहजहि = सहजे । (ख) पयाना = पैयाना । (ङ) पयाना = पैयाना ।
६ (ख), (ग), (घ) (ङ) की = का ।
७ (ख) (ग) (घ) (ङ) साधु = साधू । (ग) कीन्हें = किन्हे । (ङ) कीन्ह = किन्हें । (ख) (घ) साधु = सिधु ।
८ (ग) दीवि = दिव्य । (घ) का करो = करो ।
९ (ग) बरै = बरे । (घ) बरै = बरै । (घ) कहा = कहल ।
१० (घ) (ङ) देखु = देखो ।
११ (ख) (ग) (घ) कहै = कहे । (ङ) पुरुष = पुरुख । (ग) (ग) (घ) (ङ) कै = की । (ख) कवनि = कौन ।

मध्य जुग जब होहिं बिस्तारा । सम जीवन महँ करहिं प्रहारा ॥१९७॥[१]
पहिले बिनसहिं भ्रिगु के माया । धर्म छोड़ि तब बिनसहिं काया ॥१९८॥[२]
बिनसहिं तप जो धरै सरीरा । बिनसहिं जोगा जो बड़ बीरा ॥१९९॥[३]
कहे पुरुष सुनो चित लाई । जीव बाचे मैं कहनि उपाई ॥२००॥[४]
सत्य पुरुष मैं नहीं बुझाई । जग रछ्या होए एहि उपाई ॥२०१॥[५]
मत हमार वहाँ चलि जाई । जीव बाचे के एहि उपाई ॥२०२॥[६]
मुक्तिन जाल मेटु पगतारा । हंस बोधि सतलोक सिधारा ॥२०३॥[७]
सेहु मुक्ति गुरु सत मैं बानी । सत नाम होवै जमपुर हानी ॥२०४॥[८]
कठिन काल दल भरिमारा । सत्त सब्द संतोष बिचारा ॥२०५॥[९]
ग्यान गमी जेहि होवै प्रानी । कबहिं न होवै जमपुर हानी ॥२०६॥[१०]
जेहि मोहि जाना तेहि मैं जाना । ताहि संत के करो बखाना ॥२०७॥[११]
सत्त सब्द जिन्हि केवल जाना । सबै लोक सो संत समाना ॥२०८॥[१२]

---

१ (ग) (म) मध्य जुग जब होए बिस्तारा । (घ) मध्य जुग होवहिं बिस्तारा । (ङ) मध्य जुग जब होइहि बिस्तारा । (ख) सब जीवन के करिहै प्रहारा । (म) सब जीवन्ह केह करिहि प्रहारा । (च) सब जीवन्ह केह करिहि प्रहारा । (छ) सब जीवन्ह तह करिहि प्रहारा ।

२ (क) पहिले = पहिले । (ख) बिनसहिं = बिनसै । (ग) (घ) (ङ) बिनसहिं = बिनसिहि । (म) भ्रिगु = मृत्यु । स्वीकृत पाठ में 'भ्रिगु' के बाद 'लोक' है । (ख) के = की । (ग), (घ) (ङ) धरम = धर्म । (ग) छाड़ि = छूटी । (घ), (च) (छ) छोड़ि = छुटिहै ।

३ (क) बिनसहिं = बिनसी । (म), (ङ) बिनसहिं = बिनसिहि । (ग) (म) धरै = धरे । (ग) बिनसहिं = बिनसे । (म) (ङ) बिनसहिं = बिनसिहि । (घ) (ग) (च), (छ) जो बड़ = बड़ बड़ ।

४ त्रुटि ।

५ (ग) (म) (च), (छ) नहीं = नहों । (ख) मैं = मन । (च) रछ्या = रच्छा ।

६ (ख) हमार = हमारा । (ग) मत हमार वहँ समुझाई ।

७ (ख) मुक्तिन = मुक्ति ।

८ (म) गुरु = गुण । (ख), (च) मैं = मै । (ग) (घ), (घ) (ङ) सतनाम = सतना । (म) हानी = हानि ।

९ (ङ) कठिन = कठिन ।

१० (म) होवै = होवे । (ङ) होवै = होवे । (म) होवै = होवे ।

११ (ग) (घ) (ङ) जेहि = जे । (ग) (म) (ङ) जाना = जान । (ख) जाना = जानी । (ङ) के = कै । (ग), (म) (घ) (ङ) करो = करौ ।

१२ (म) सबै = सबै । (ङ) संत = संत ।

सोइ रहिहै हमार पासा । सत पिवहिं अम्रित रस बासा ॥२०९॥[1]
ताहि रासे में बहुत उपाई । अमर होए बिनसै नहिं पाई ॥२१०॥[2]
कहै पुरुष बिरला केहु जाना । मुक्ति पंथ संतन्हि पहचाना ॥२११॥[3]
अम्रित नाम निजु करै बिचारा । अमर लोक सो करै पैसारा ॥२१२॥[4]
जो सपने निन्दा नहिं कीन्हा । ध्यान लगाए रहै लौलीन्हा ॥२१३॥[5]
जिया जन्तु तक जिव जाना । एकै ब्रम्ह सभन्हि पहचाना ॥२१४॥[6]
आतमध्यान करहिं नहिं कीन्हा । आतम पूजि रहै लौलीन्हा ॥२१५॥[7]
निसि बासर जो ध्यान लगाई । सतनाम दूजा नहिं गाई ॥२१६॥[8]

साखी

सतनाम निजु सार है अमरलोक के जाए ।[9]
कहै दरिया सतगुरु मिलै, संसै सकल मेटाए ॥१३॥[10]

चौपाई

सतनाम है निरगुन अपारा । ताको काम ना करै अहारा ॥२१७॥[11]
इन्द्र लोक इन्द्र सोए रहहीं । तिन्हहुं के काम बिगुरचन करहीं ॥२१८॥[12]

---

१ (ग) (घ) (च) (छ) रहिहै = रहिहे । (छ) हमारे = हमरे । (ग) संत = सतत । (घ) पिवहिं = पीवै । (च) पिवहि = पीवै ।
२. (घ) (छ) रासे = रासो । (ख) (ग) (घ) (ट) के = की । (ख), (ग) (घ) (छ) बिनसे नहि पाइ = बिनसै नहिं पाई ।
३ (घ) (ग), (च) कहै = कहे । (छ) पुरु = पुरुष । (च) मुक्ति = मुक्ति । (छ) संतन्हि = संतन्ह ।
४ (ग) करै = करे । (ट) सो कर = सो करै । (ग) (घ) पैसारा = पैठारा । (ग) पैसारा = पइसारा ।
५ (घ) जो सपन = जो सप । (घ) (छ) जो सपन = जो सपनै । (ग) (ग) (घ) रहै = रहे । (छ) रहै = रहो । (ग) (घ), (छ) लौ = लय । (ग) लौ = लयो ।
६ (घ) जीव = जिव । (घ) (छ) एक = एकै । (ग) सभन्हि = सभ । (ग) सभन्हि = सबनि । (घ) सभन्हि = सबै ।
७ (घ) करहिं = करै । (ग) (घ) (छ) नहि = नहिं । (घ) (ग) रहै = रहे । (घ) लौ = लया । (छ) लौ = लय ।
८ (घ) (ग), (घ) (छ) निसि = निसु । (ग) (ग), (घ) (छ) नहि = नहिं ।
९ (छ) के = कै ।
१० (ग) (घ) (घ) (छ) कहै = कहे । (घ) (ग) (घ) मिलै = मिलन । (ग) (घ) संसै = संसे ।
११ (ग) (ग) (घ), (छ) ताको = ताके । (घ) ना = न । (ग) करै = कर ।
१२. (ग) (घ) तिन्हहुं = तीन्हु । (ग) (ग), (घ) (छ) बिगुरचन = बिगुरचनि ।

ब्रह्मलोक ब्रह्मा अरुझाना । तिन्हहु के काल करै पिसिमाना ॥२१९॥[1]
एक निरंजन सभहिं भुलावै । बिन चीन्हे कोइ मुक्ति न पावै ॥२२०॥[2]
मूठि मारजनि जानै कोई । सब्द बिचार करहिं नर सोई ॥२२१॥[3]
मिरतु अप परसी जब करई । नाम निरंतर ते जग तरई ॥२२२॥[4]
छपलोक से हम चलि आए । सार सब्द गहे सुख पाए ॥२२३॥[5]
जो निंदा सहिहै संसारा । सोई गहिहै सब्द हमारा ॥२२४॥[6]
सहै निन्दा निरमल होए अंगा । काल प्रचंड अपने होए भंगा ॥२२५॥[7]
सार बिंदु दुखो बंस हमारा । सत्त गहै सो उतरै पारा ॥२२६॥[8]
माया तेजि सब्द लौ लावै । ताके माथ जगत सभ नावै ॥२२७॥[9]
भरम चलावै एहि संसारा । सोई निजु है बंस हमारा ॥२२८॥[10]

साखी

जो जिव फंदे नारि सो, सो नहिं बंस हमार ।[11]
बंस रागि नारि जो त्यागे सो उतरै भव पार ॥[12]
माया भरो है बंस भी जो बूझै निजु सार ।[13]
जैसो भावै तैसो परखै भरम चली संसार ॥[14]

---

१ (ख) (ग) करै = करे । (घ) करै = धरै । (च) करै = करहि ।
२ (ख) बिन = बिनु । (ग) चीन्हे बिना कोइ मुक्ति न पावै । (घ), (च) बिन = बिना ।
३ (ख) (ग) जानै = जाने । (ग) (घ) करहि = करहु ।
४ (ग) मिरतु = मिरतु । (ग) (घ) परसी = परसे ।
५ (ख) से = में । (ग) (घ) से = सहि । (च) से = सेहि । (ख) (ग) (घ) (च) आए = आइ । (ख) (ग) (घ) (ङ) पाए = पाई ।
६ (ग) (घ) सहिहै = सहिहै । (ग) (घ) (च) संसारा = सबसारा । (ग) (घ) गहिहै = गहिहै ।
७ (ग), (घ) (च) सहै = सहे । (ग) प्रचंड = परचंड । (च) अपने = अपनी ।
८ (ग) (ग) (घ), (ङ) बिंदु = बिंद । (ख) (घ) दुखे = दोष । (ग) दुखो = दोइ । (ग) (ग) (घ) (ङ) बंस = बंस । (ग) (घ) गहै = गहे । (च) सो = सोइ । (ग) (ग) (घ) उतरै = उतर ।
९ (ग) लौ = लागो । (घ) (च) लौ = लय । (घ) ताके = ताकै । (घ) जगत = जग ।
१० (ग) चलावै = चलाते । (ग) संसारा = सबसारा । (ङ) है = एह ।
११ (ग) फंदे = फंदै । (ख) सो = मैं । (घ) सो = से । (ख), (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
१२ (घ) जो = जैसो । (ङ) त्यागे = तयागे । (ग) (घ) (ङ) उतरै = उतर । (घ) उतरै भव जस पार । (ग) भव = भौ । (ग) भव = भवी ।
१३ (ग) भी = क । (ग) जो गहै निजुसार । (ग) जो गहै सब्द निजुसार । (घ) जो गहै निजुसार । (च) जो बूझै निजुसार ।
१४ (ग) भावै = भाव । (ग) परखै = परख । (ग) (ग) चली = चले । (ग) संसार = सबसार ।

माला टोपी भेख नहिं, नहिं सोना सिंगार।[1]
सदा भाव सतसंग है, जो कोइ गहै करार ॥१४॥[2]

चौपाई

धन जीवन ताको हुए ग्याना। पूर्ण पुरान जिन्ह सुमरन ठाना ॥२२९॥[3]
कोई संत होइ निर्मल बानी। नीर छीर बिबरन करि मानी ॥२३०॥[4]
हंस दसा निरमल सुख पावै। रहै अलेप ध्यान लौ लावै ॥२३१॥[5]
मीन पंथ साधु गहु ग्यानी। ऐसी मन की प्रीतम जानी ॥२३२॥[6]
पावन बात करै पहचानी। पूरन पद है निर्मल बानी ॥२३३॥[7]
पावै भेद सब्द निजु सारा। छपलोक के गहै सुधारा ॥२३४॥[8]
सतगुर ग्यान जबे होए जाई। दरसन दरसि संधि मिटि जाई ॥२३५॥[9]

साखी

मेटि सर्व सत सब्द से, जो गुर मिल करार।[10]
सतगुरु बिना पार नहीं, भरमि रहा संसार ॥१५॥[11]

चौपाई

सतगुर सत सब्द भरिपूरा। निरमल सरीर मेटेउ सब पीरा ॥२३६॥[12]

---

१ (ग) (घ) (ङ) नहीं = नाहीं। (ख) (ग) (घ), (ङ) नहिं = नाहिं।
२ (घ) जो = जौ। (ख), (ग) गहै = गहे।
३ (क) (घ) धन = धन्य। (घ) धन्य जीवन है ताको ग्याना। (ख) (ग) (घ) (ङ) हुए = है। (ख) (ग) (घ), (ङ) जिन्ह = जिन्हि। (ख), (ग) (घ) (ङ) सुमरन = सुमिरन।
४ (घ) होइ = होहि। (ग) (ङ) होइ = होए। (ङ) होइ = कोइ संत होवहि निर्बानी।
५ (ख) रहै अलेख ध्यान लौ लावै। (ग) रह = रहै। (घ) रहै अलेप ध्यान लव लावै।
६ (ख) (ग) (घ), (ङ) प्रीतम = प्रतिमा।
७ (ख) (ग) करै = करे। (ग) निरमल = निरगुन।
८ (क) पावै = पाय। (ग) पावै = पावे। (ख) के = की। (घ) क = के। (घ) (ङ)
९ (ङ) जबे = जवे। होए = हो। (ग) (घ) संधि = संधि। (ग) (ग) (घ) (ङ) मिटि = मिटि।
१० (क) मेटि = मेट। (ग) सर्व = सर्वे। (घ) मेटे सर्व सब्द से। (ग) (क) (घ) से = सै। (क) (घ), (ङ) जो = जौ। (घ) जो = जगी। (ख) (ग) मिल = मिला।
११ (घ) (ङ) नहीं = नाहीं। (ग) संसार = संसार।
१२ (क) मेटेउ = मेटा। (ग) मेटेउ = मेट। (घ) मेटेउ = मेटै।

मरम राग निकट नहिं आवै। जाए छपलोक अमितफल पावै ॥२३७॥[१]
ऐसन गुरु जो मीत पाई। तब हंसा छपलोक के जाई ॥२३८॥[२]
जाए छपलोक जहं पुरुष अमाना। अछै बिरिछ जहं सेत निशाना ॥२३९॥[३]
काया परख मूल जब पावै। अविगति जोति द्रिस्टि में आवै ॥२४०॥[४]
हीरा एक त्रिकुटि महं होई। हीरा ध्यान धरहु नर सोई ॥२४१॥[५]
हीरा मथै एक केर बिस्तारा। जोगी ध्यान जो करै बिचारा ॥२४२॥[६]
ताला कुंजी गहि लागु केवारा। चोर न हंस ध्यान रखवारा ॥२४३॥[७]
ताको गहिए ध्यान गंभीरा। त्रिकुटि मध्य जो परखै हीरा ॥२४४॥[८]
ताको लाग महं जगत भुलाना। जाके गगन मंडल असथाना ॥२४५॥[९]
सार सब्द नहिं नर दृढ़ाना। सोहि जोगी नहिं ध्यान समाना ॥२४६॥[१०]
मवन साम्हि जो बैठे कोई। कसे जगत बुझै नर सोई ॥२४७॥[११]
सार सब्द का करो पुकारा। राह बताए करो निरुआरा ॥२४८॥[१२]
ताको साथ सबद है ध्याना। जाके चाल ना कोप समाना ॥२४९॥[१३]
पंडित कोप कीन्ह बिस्तारा। चिन्हहु ते हरि रहे निनारा ॥२५०॥[१४]

---

१ (ग) (घ) (ङ) मरम = धर्म। (ख) मरम = परम। (ख) (ग) (घ), (ङ) नहिं = नाहिं। (ग) अमित = बासी।
२ (घ) ऐसन = ऐसा। (ङ) ऐसन = अइसन।
३ (ख) पुरुष अमाना = पुरुष पुराना।
४ (ग) (ङ) परखै = परखे।
५ (ङ) ध्यान = धकान।
६ (ख) (घ) मथै एक = मथिक। (ग) (ङ) मथै एक = मथि एक। (ख) (ग) (घ) (ङ) केर = केव। (घ) जो = जौ। (ख) (ग) करै = कर।
७ (ग) (घ) ताला कुंजी लागु कपाट। (ग) ना = न।
८ (ङ) गहिए = गहिये। (ग) (घ) मध्य = मघ। (ङ) मध्य = मधे। (ख) मध्य = मध। (ग) परखै = परख।
९ (ग) (घ) ताको = ताके। (ख) (घ) (ङ) महं = रह। (ग) मंडल = मगन।
१० (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं। (ग) करै = कर। (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नहिं।
११ (ग) मवन = मवोन। (घ) मवन = मौन। (ग) (घ) (ङ) साम्हि = साधि। (ख) बैठे = बइठे। (ग) जगत = जग। (ख) (ग) बुझै = बुझ।
१२ (ग) करो = कर। (ग) (घ) (ङ) करो = करो।
१३ (ग) (ग), (घ) ताको सबद साथ है। (ङ) जाके = जाके।
१४ (ख) (ग) (ङ) चिन्हहु = टीन्हु। (घ) चिन्हहु = चिन्हहु। (घ) (ङ) रहे = रहै।

जाति पाँति किछु गरब न करिए । सतनाम निजु हिरदै धरिए ॥२५१॥[1]

साखी

सतनाम निजु सार है, हंसा करो बिचार ।
जौं दरिया गुरु गहिर है, (तो) मिले सब्द निजु सार ॥१६॥[2]

चौपाई

सतगुरु चरन प्रेम रस माता । सींचेउ द्रुम सुगंध सुपाता ॥२५२॥[3]
हौं सेवक जुग जुग सोहारा । क्रिपा करहु जनि लावहु बारा ॥२५३॥[4]
हुकुम बचन तब सिर पर लीन्हा । भगति भाव तब हिरदै कीन्हा ॥२५४॥[5]

छन्द

सुन साज संतनि काज नाहीं तबा ओही नंदनं ।[6]
मैं मागु काजु नगाज गरवहि, बसी (जैसन) निज पुर जैसनं ॥[7]
भाव बानी तजु तै जब प्रगट रंग सतनामही ।[8]
बैकटि काह न लागु ताही, मार चोर न पावही ॥६॥[9]

सोरठा

धारे मुनि बर लोए सार सब्द मझार मैं ।[10]
(चोट) मऊहि करे बिलाए, ध्यान रतन जबहीं मिलै ॥६॥[11]

१ (ग) निजु = बसु । (ख), (ग), (घ), (ङ) हिरदै = हिदै ।
२ (घ), (ङ) जौं = जबी । (ख), (ङ) तौं = तो । (ग) तौं = तबो । (ग) मिले = मिलिहि ।
(घ) (ङ) निजु = मिले ।
३ (घ) (ङ) चरन = चम । (ख), (ग) (ङ) सींचउ = सींचेतो । (घ), सींचेउ = सींच्यो ।
(ङ) द्रुम = द्रुम ।
४ (ग), (घ), (ङ) हौं = हो ।
५ (ख) सिर पर लीन्हा = सिर लीन्हा । (ग) भगति = भक्ति । (ग) (ग) (घ) (ङ) हिरदै = हिदै ।
६ (ख) (ग), (घ) तेगो = तजु ।
७ (घ) मै = मौ । (ङ) नगाज = नर राज । (ग) (घ) नरराज = नराज । (ग) गरवहि = प्रभु । (ग) गरवहि = गर्भहि । (घ) गरवहि = प्रभ मैं । (ङ) गरवहि = प्रभ ।
(ङ) बस सैन निज पुर लेहनं । (ग) [illegible] निज पुर जैसनं । (घ) [illegible] निजु पुर जसनं ।
(ङ) [illegible] निजु पुर जैसनं ।
८ (ङ) सतनामी = सतनामनि । (ग) (ङ) सतनामी = सतनिदमी ।
९ (ङ) बैकटि काह ना लागु । (ग) बैकटि काह ना लागु ताहिय । (घ) बैकटि काह ना लागु नहि । (ङ) बैकटि काह ना लागु ताहि । (ख) (घ), (ङ) न = ना ।
१० (ङ) [illegible] — [illegible] । (ग) [illegible] = [illegible] ।
११ (ग) चोट लागी करे बिखट । (ग) करे = कर । (ग) (ग) (घ (ङ) मिले = मिले ।

चौपाई

मन के फंद परा संसारा । जाल मीन ज्यों करै महारा ॥२५५॥[१]
ऐसे काल सकल जिव मारै । उपजनि बिनसनि नर कहँ डारै ॥२५६॥[२]
करम छोड़ि करता क जान । तबहीं लोक पयाना ठान ॥२५७॥[३]
पावै भेद तब मन के राखै । निरगुन निरखि निरंतर साखै ॥२५८॥[४]
साधै जोग जो निरमल बानी । आतम देव निरंजन जानी ॥२५९॥[५]
मनसा मालिनि मन के चीन्हा । होय ध्यान प्रेम गति भीन्हा ॥२६०॥[६]
आतमदेव पूजहु तुम्ह भाई । जा जग पाती तोरहु जाई ॥२६१॥[७]
पखल पुजै निरगुन नहिं पाई । आतम जीव घात इन्ह लाई ॥२६२॥[८]
आतम दरस ध्यान जो जान । तबहीं लोक पयाना ठान ॥२६३॥[९]

साखी

परमातम के पूजते निरमल नाम अधार ।[१०]
पंडित पखल पूजते भटके जमके द्वार ॥१७॥[११]

चौपाई

तन धरवर मन देवु बिचारी । तहवाँ खोज आतम बनवारी ॥२६४॥[१२]

१ (क) (ग) (घ) (ङ) महारा = मनकी । (ख) (ग) (घ), (ङ) ज्यों करै = जीव करै ।
२ (ग) ऐसे = ऐसो । (ग) मारै = मार । (ख) उपजनि = उपजम । (ख) बिनसनि = बिनसन । (ख) (ग) (घ) नरकहँ = नरकहि । (ङ) नरकहँ = नरकै ।
३ (ख) (घ) (ङ) करम = कीतम । (ग) करम = करब । (ख), (ग) जानै = जाने । (ग) (घ) पयाना = पयाना । (ङ) पयाना = पैयाना । (क) (ग) ठानै = ठान ।
४ (घ) (ङ) पावै = पावे । (ख) राखै = राख । (ग) निरंतर = निरंत ।
५ (ग) (घ) (घ) साधै = साध । (घ) (ङ) निरमल = निर्मलि । (ग) आतम = आत्म ।
६ (ख) (ग) (घ) (ङ) के = कंद । (ख) भीन्हा = भींहा ।
७ (क) आतम = आत्म । (ग) (घ) (ङ) तुम्ह = तुह । (ग), (ग) (घ) तोरहु = तुरहु । (ङ) तोरहु = पूजहु ।
८ (ख) (घ) (घ) पखल पुजै = पानि पुर । (ङ) पखल पूजै = पानि पुजै । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ख) (ग) आतम देव घात इन्ह लाइ । (घ), (ङ) आतम जीव घात इन्ह लाई ।
९ (ख) (ग) जो = जब । (ग) (ग) पयाना = पयाना ।
१० (ग) परमातम = परमात्म ।
११ (ग) पखल = पंथ । (ग) भटके = भटक । (ङ) भटके = भटके ।
१२ (ग) तहवाँ = तहाँ । (ग) (घ) खोज = खोजु । (घ) खोज = खुजु । (ङ) खोज = खोजो ।

ताहि खोजत सुर नर मुनि हारे । अधिक फेर डार बिस्तारे ॥२६५॥[1]
दरियादास कहा जो भाई । ताहि खोजो निरमल होय आई ॥२६६॥[2]
ताहि खोजो भेद निजु सारा । मूल छोड़ि जनि गहहू डारा ॥२६७॥[3]
दरिया अथ जल अगम अपारा । सत साहब सब्द निजु सारा ॥२६८॥[4]
बोलहिं सतगुर ग्यान गंभीरा । गुरु गमि ग्यान जपहिं निजु हीरा ॥२६९॥[5]
जाय छपलोक सुरति लौलीन्हा । पुरुष पुरान नाम गहि चीन्हा ॥२७०॥[6]
कर जोरि हंसा करहिं सुख चैना । पुरुष पुरान बोलहिं निजु बैना ॥२७१॥[7]
धनत फिरत पुनि बहुत सोहाई । ऐसे एक कल्प बिति जाई ॥२७२॥[8]
तख्त एक तहं अजब बनाई । (छबि) निरखत हंसा रहा लोभाई ॥२७३॥[9]
तैसन रूप कहा नहिं जाई । करि करि जोति रहा छबि छाई ॥२७४॥[10]
अभै निसान पुनि ताहां होई । अजर अमर पद पावै सोई ॥२७५॥[11]

साखी

जोतिमहल रवि कोटि हैं, को करि सकै बखान ।[12]
दरिया परखहिं बिचारिए, अगह रूप को ग्यान ॥१८॥[13]

चौपाई

निरगुन का गति अलख लखाई । जाके घत सामरथ सहाई ॥२७६॥[14]
सोनत सब्द साधु की बानी । दरिया न्नि बिच सुरति समानी ॥२७७॥[15]

---

१ (ग) खोजत = खोज । (घ) (ङ) हारे = हारै । (ङ) फेर = फेड़ । (ग) डार = डाड़ । (ङ) डार = डारह ।
२ (ग) दरियादास = दरिया अथा दास ।
३ (ग) खोजो = खोजहु । (घ) खोजो = खोजी । (घ) जनि = जन । (ग) गहहु = गहु ।
४ (ख) अथ = अ । (ग) अथ = अथो । (घ), (ङ) साहब = साहेब ।
५ (ख) (ग) जपहिं = जपहु ।
६ (ग) लौ = लै । (ग) (घ) छप = छप । (ङ) लौ = लो । (ङ) पुरुष = पुरुष ।
७ (ग), (ग) (घ) (ङ) हंसा = हंस । (ङ) पुरुष = पुरुष । (ग) बोलहिं = बोलै ।
८ (ख) (ग), पुनि = पुनि । (घ) पुनि = तिनि ।
९ (ग) (ङ) तख्त = तखत । (ग) (ग) (घ) (ङ) तहं = तहाँ । (ख) (ग) (घ), (ङ) हंसा = हंस ।
१० (ग) (घ) (ङ) करि = करि ।
११ (ग) अभै = अभ । (ग) पावै = पावै ।
१२ (घ) को करि सकै बखान ।
१३ (घ) (ङ) बिचारिए = बिचारिये ।
१४ (ग) अलख लखाई = अलखाई । (ग) सामरथ = समरथ ।
१५ (घ) समानी = समानी ।

जब सतगुरु से परचै पाई । भवजल के सब संसै मिटाई ॥२७८॥[1]
बोलहिं सतगुरु ज्ञान गंभीरा । दरिया समुझि लेहु तुम धीरा ॥२७९॥[2]
जो जो हंसा बोधो जाई । सो सो हंसा पहुँचै भाई ॥२८०॥[3]

साखी

दरिया भवजल अगम है सतगुरु करो जहाज ।[4]
तेहि पर हंसा चढ़ि कै, जाय करो सुखराज ॥[5]
पहुँचि हंसा सत सब्द से सतगुरु मिले जो मीत ।[6]
कहैं दरिया भव अगम तजी बसे चरन महं चीत ॥१९॥[7]

चौपाई

सतनाम विचारै कोई । अजर अमर पद पावै सोई ॥२८१॥[8]
तब अच्छर धुनि कहु भाई । निहअच्छर भगति अभ पद पाई ॥२८२॥[9]
निहअच्छर जानु जंत्र मे बीणा । सब्द क बान जस भी नीचा ॥२८३॥[10]
निहअच्छर पहिम करो विचारा । देखो सब निज सुरति सोहारा ॥२८४॥[11]
कामिनि भा मीसै बीमन ग्याना । कामिनि करै सो जमपुर जाना ॥२८५॥[12]
काढ़ि तेजि दीनन गहु धीरा । तब मिलहहीं अनूपम हीरा ॥२८६॥[13]

१ (ग) परचै = परच । (क) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवौ । (ग) संसै = संसे ।
२ (ख) (घ) (ङ) तुम = तुर ।
३ (ङ) बोधो = बोधे । (क) (ग) पहुँचै = पहुँच ।
४ (ग) (ग) (घ) साखी में १९ वीं दो पंक्तियाँ नहीं हैं । (ङ) भव = भव ।
५ (ङ) चढ़िके = चढ़िके ।
६ (क) पहुँचै = पहुँचै । (ग) (ग) (ख) (ङ) त = है । (ग) मिले = मिला । (घ) (ङ) मिन = मिले ।
७ (ख) (ग) कहै = कहै । (ग) (ख) भव = भौ । (ग) (घ) तेजि = तेजै । (क) (घ) (ङ) को = को ।
८ (ग) विचारै = विचार । (ग) पावै = पावे ।
९ (ग) (ग) धुनि = धुन । (ख) धुनि = धुनि । (ख) (घ) (ङ) भक्ति = भगति ।
१० (ग) (घ) (ङ) निहअच्छर = निअच्छर । (ग) निहअच्छर = निहर । (ख) (ग) (घ) (ङ) जंत्र = जंत्र । (ग) (ग) (घ) मे = से । (ग) (ग) (घ) (ङ) बीणा = बीना । (ख) सब्द = सब्दद । (ग) (ग) बान = बान । (ख) जस = जसै । (ग) भी = भयो । (घ) भा = भव । (ङ) भा = भौ ।
११ (क) (ग) (ख) (ङ) निहअच्छर = निअच्छर । (ग) देखो = देख । (घ) देखो = देखी ।
१२ (ग) (ग) (ख) (ङ) कामिनि मा मिलै निर्मल ज्ञाना । (ग) करै = कर ।
१३ (ग) मिलहहीं = मिलिहैं । (ग) (घ) (ङ) मिलिनहहीं = मिलिनहिं ।

तब छूटहि मन को बिस्तारा । तब पइहों सत निजु सारा ॥२८७॥[1]
ए बड नहिं होए बड़ाई । पत्थल पूजि जो तिलक बनाई ॥२८८॥[2]
सम घट करम भउग नहिं दूजा । आतमदेव की निरमल पूजा ॥२८९॥[3]
सतनाम है निरमल बानी । ताको खोजहु पंडित ग्यानी ॥२९०॥[4]

साखी

मेरे कहे नहिं मानहु पंडित, ए नहिं होत प्रनाम ।[5]
जोग जुगुति जह लखहू हंस कहा बिस्राम ॥२०॥[6]

चौपाई

जाहि खोजत सुर नर मुनि हारे । खोजहु पंडित बचन बिचारे ॥२९१॥[7]
बचन कठोर बोलहु जनि बना । ए नहिं मिलिहहि पुरुष प्रमाना ॥२९२॥[8]
सीतल सब्द जो करहु बखाना । सार सब्द तहि मिलिहि निसाना ॥२९३॥[9]
बाम्हिहि जन्म गया सठ लोगा । प्रन को बान बिना न मोरा ॥२९४॥[10]
पढ़ि पढ़ि पोथी माया अभिमानी । जगत भउरि सम मिथ्या बखानी ॥२९५॥[11]

---

१ (ग) (ग) (घ) (ङ) तब = जब । (ख) छूटहि = छुटि । (ग), (घ) (ङ) छूटहि = छुटइहि । (ख) पइहों = पैहो । (घ) (ङ) पइहों = पैहो सद । (ग) पइहों = पइहो सद ।

२ (ख) (ग) (घ) ए बड़ = ए बड़ । (ङ) ए बड़ = एह बड़ । (ख), (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ङ) जो = जा ।

३ (ग) (ग) (घ), (ङ) करम = करम । (ख) (घ) (ङ) भउग = भवरि । (ग) भउग = भारि । (ख), (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ग) (ग) (घ) की = क । (ङ) की = कै ।

४ (घ) निरमल = निरमलि । (ग) (ग) (घ) ताको = त क ।

५ (घ) (ङ) मेरे = मेरे । (ङ) कहे = कहे । (ग) (ग), (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ग) मानहु पंडित = मानहु । सर्व इन पाठ में पंडित के बाद ए नहिं है । (ग), (ग) (घ), (ङ) ए नहिं = ए नाहि ।

६ (ग) (घ) जह लखहु = जहाँ न लखाहु । (ग) जेहि लखहु = जहाँ मे लखाहु । (ङ) जेह लखहु = जहाँ लख हु ।

७ (घ) (ङ) हारे = हारे । (ङ) बिचारे = बिचारे ।

८ (ग) बने = नाहि । (ग) (ग) (घ) (ङ) नहि = नहि ।

९ (घ) जो = जवो । (ग) तहि = तह ।

१० (ग) प्रन क बान बिना न मोरा । (ग) (ङ) प्रन की बान बिन तै भागा । (ङ) बिना = बिन है ।

११ (ग) माया = मी । (घ) माया = मै । (घ) बखानी = मरे । (ङ) बखानी = मरे । (ग) बखानी = छुडि । (ग) (घ) (ङ) भउरि = भवरि । (ग) भउरि = भरि ।

साखी

कोठा महल अटारिया, सुनै स्रवन बहु राग।[1]
सतगुरु सब्द चिन्हे बिना, ज्यों पंछिन्ह महं काग ॥२१॥[2]

चौपाई[3]

जौं न जानहु छपलोक मे मरमा। हंस ना पहुंचै एहि खटकरमा ॥२९६॥[4]
भाग सब्द जब निरता साधै। तब सतगुरु मिलु आपु सम्भाव ॥२९७॥[5]
दरिया कहै सब्द निरबाना। मउरि कहीं नहि पद समाना ॥२९८॥[6]
बेदे अरुझि रहा संसारा। फिरि फिरि होए गर्भ दुवारा ॥२९९॥[7]
चारि बरन सिव होन होइहैं। जोइनि संकट चौरासी जइहैं ॥३००॥[8]

साखी

चौरासी के भवन में कल्प कोटि बहि जाहिं।[9]
ध्यान बिना नहिं बाचिहैं, फिरि फिरि भटका खाहिं ॥२२॥[10]

चौपाई

सतनाम निजु भगे निबेरा। जौं चाहो छपलोकहि डेरा ॥३०१॥[11]

---

१ (च) सुनै = सुनो। (ग) सुनै = सुनैको। (घ) सुनै = सुने।
२ (ग) चिन्हे = चिन्हे। (ङ) (ग) ज्यों = जैसो। (ख), (ग), (घ) महं = मे।
३ (ग) (ख) (घ) (च) अपठित।
४ (घ) जौं = जैसो। (च) जौं = जो (ङ) (ग), (घ) न = नाहि। (च) न = ना। (घ) के = कर। (च के = कै। (ख) (ग) (घ) (च) मरमा = मर्मा। (ख) ना पहुंचै = ना पहुंची। (ग) ना पहुंचै = न पहुंचिहि। (घ) (च) ना पहुंचै = ना पहुंचहिं। (ख) (ग) (घ (च) करमा = कर्मा।
५ (ग) जब = जे। (ख) (ग) मिलु = आपु।
६ (ग) (ग) (घ) कहै = कहहि। (च) कहै = कहे। (ग) (घ) (च) मउरि = अपरि। (ग) ऊपरि = ऊपरि। (च) (ग) (घ (च) कहीं = कहो। (ग) (घ) (घ) (च) नहि = न हि।
७ (ग) (ग (च) बे = बद। घ) बेद = बेदे। (ग) (घ) संसारा = भवसागरा। (ग) फिरि फिरि = फिरि फेरि। (घ) (च) होए = होहि। (ङ) गरभ = गरभ। (ख) गरभ = गर्भ। (ग) (घ) गरभ = गर्भ।
८ (ग), (ग) (घ) (च) होन = होए। (ग) जो जइहैं = पावसार। (ग) जोइनि = जोनि। (घ) (च) संकट = संकट। (घ) जइहैं = जइहै।
९ ग) भवन = भवन। (ग) (घ) जाहिं = जाए।
१० (ग) (घ) (च) नहि = न हि। (ग) (ग) (ग) बाचिहैं = बाचिहो। (ख) (ग) फिरि फिरि = फेरि फेरि। (ग) (घ) खाहिं = खाए।
११ (ग) जौं = जो। (घ) जौं = जैं। (च) जौं = जो। (च) चाहो = चाहे। (ग) (घ) छपलोकहि = छपलोकै।

सत्त सब्द नहिं मानहिं बानी । अति असपापि रहा सम ग्यानी ॥२०२॥[1]
जाति पुरुष की कामिनि अहई । बिना पुरुष कामिनि नहिं सहई ॥२०३॥[2]
एकर अर्थ सुनावो कही । पुरुष बिना कामिनि नहिं लही ॥२०४॥[3]
कामिनि भगति सबै जग जाना । पुरुष ग्यान निरलेप बखाना ॥२०५॥[4]
ग्यानी गहु कछु नाव न माया । जो जन बूझै सो होय सनाया ॥२०६॥[5]
सरब ग्यान बखानो ताही । एकर अर्थ सुनावहु मोही ॥२०७॥[6]
बंक नाल कउन घर बासा । कउन पवन आसी परगासा ॥२०८॥[7]
छवो चक्र के कहिए भेदा । पञ्चम पवन के करहु निखेदा ॥२०९॥[8]
सात पवन के कहिए भेवा । कउन पवन घट थापहि देवा ॥२१०॥[9]
अष्टदल कंवल ल्या है भीना । तामें कवन सुरति लौ लीन्हा ॥२११॥[10]
कहवां बालक प्रान पसारा । कउन सब्द ले हंस उबारा ॥२१२॥[11]
एकर भेद कहा तुम भाई । कह [illegible] जोग दिखाई ॥२१३॥[12]

---

१ (क), (ग), (ङ), नहिं = नाहि । (घ) रहा = रहै (च) रहा = रहै । (घ) सम = सब ।
२. (ख) (ग) (घ), (ङ) नहिं = नाहि । (ङ) कामिनि = कामिना ।
३ (ख) (ग) (घ), (ङ) अर्थ = अरथ । (ख) सुनावो = सुनावहु । (ग) कही = कहिदा ।
(घ) कही = कहहु । (ख), (ग), पुरुष बिना = बिना पुरुष । (ख), (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ख) लही = लहिआ । (ग), (घ) लही = लहहु ।
४ (घ) कामिनि = कामिन । (ख) (घ) (ङ) सभ = सब ।
५. (ख) (घ) (घ) (ङ) ग्यानी = ग्यान । (ग) क = को । (ङ) क = क । (ग), (घ) (ङ) नाव = नावै । (ख) नाव = न नावै । (घ), (ङ) न = ना । (ख) (ग) बूझै = बूझ । (घ) सो होए = होए ।
६ (घ), (ङ) सरब = सब्द ।
७ (ख) कउन = कौन । (ग), (घ) कउने = कवने । (ङ) कउने = कवने । (ग), (घ) (घ) (ङ) कउन = कवन । (ख), (ग), (घ), (ङ) परगासा = परगासा ।
८ (ख), (ङ) छवो = छव । ([illegible]), (घ) (ङ) कहिए = कहिदे । (ग) (घ) (घ) (ङ) निखेदा = निरखदा ।
९ (ग) कहिए = कहिए । (ख) (घ), (घ) (ङ) कउन = कवन ।
१० (घ) कंवल = कमल । (घ) (ङ) भीना = भीना । (ख) (ग), (घ), (ङ) लौ = लव ।
(ख) (घ) लीन्हा = लीना ।
११ (ग), (घ) कहवां = कहां । (ङ) कहवां = कहवास । (ग) (ग), (घ), (ङ) बालक = [illegible] । (ग) (घ), (घ), (ङ) प्रान = प्रेम । (ख), (ग) (घ) कउन = कवन ।
(ङ) कउन = कवना ।
१२ (घ) तुम = तुम्ह । (ङ) तुम = तुमहि । (ङ) कह = कहे ।

एकर भेद नाहि तुम जाना । पंडित पढ़ि का बद पुराना ॥२१४॥
एकर भेद पूछहु तुम मोहा । एकर भय सुनावौं तोही ॥२१५॥[2]

साखी

कवन धरा बोए हंस है कवन धरा बोए नाम ।[3]
कवना धरा बोए जोति है कवन सुरति निजु धाम ॥[4]
अघ धरा बोए हंस है मन सुखुमाधनि नाम ।[5]
अक्षर अनूपम जोति है कवन सुरति निजु धाम ॥२३॥[6]

चौपाई

पंडित नाम भजहु नहिं चीन्हा । सुरति लगाए रहो ना मीन्हा ॥२१६॥[7]
चिन्हहु पंडित सब्द निरबाना । निरगुन नाहि चिन्हहु अग्याना ॥२१७॥[8]
मूल बाक सिंधु हीरा खानी । अक्षरल कंचन रहु निरबानी ॥२१८॥[9]
छपलोक सत बोए ग्यानी । अनंत जोति जहं निरंजन बानी ॥२१९॥
मुक्ति पराग्य सतगुरु नाता । जानि बिराग प्रेमरस माता ॥२२०॥[10]
काया मध द्रिष्टि असथाना । आगम निगम खबरि जो जाना ॥२२१॥[11]
ताको जोगी जगत बखाना । जाके गगनमंडल असथाना ॥२२२॥[12]
मनहिं मैं माता प्रेमरस मोहा । पंडित सो जो सब्दहि चीन्हा ॥२२३॥[13]

---

१ (ख) (ग) तुम = तुम्ह ।
२. (ख) पूछहु = पूछौ । (ग) तुम = तुम्ह । (घ) (ङ) तुम = तुह । (ख) एकर भय सुन तोही = [illegible] । (ग) सुनावौं = सुनावहु । (घ), (ङ) सुनावौं = सुनावो ।
३ (ग) (ङ) धरा = धर । (घ) धरा = धर ।
४ (ख) (ग) (घ) (ङ) कवना = कवन । (ग) धरा = धर । (घ) धरा बोए = धरा ।
५. (ख) बोए = बोइ । (ख) (ग) (घ) (ङ) मन = मनि ।
६ (ग) अक्षर = अमल ।
७ (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नहि । (ख) (ङ) मीन्हा = मना ।
८. (ग) अग्याना = [illegible] । (घ) [illegible] = [illegible] । (ङ) [illegible] = [illegible] ।
९. (ख) हीरा = हीरी । (ग) (घ) (ङ) रहु निरबानी = रहु निर्मल बानी ।
१० (घ) बोए = बाए । (ख) [illegible] ।
११ (घ) मुक्ति = मुकुति । (ख) (ग) (घ) (ङ) बिराग = बिराग ।
१२ [illegible] (ख) आगम = आगम । (घ) निगम = निगम के । (ङ) [illegible] ।
[illegible] १२२ तक ।
[illegible] । (घ) [illegible] ।
। (ग) मीन्हा ।

सतगुर बिना करहिं जिव हानी । कहै दरिया तजु चतुर सेयानी ॥३२४॥[1]
सतगुर की गति अगम अपारा । खोजि देखहु सब्द निजु सारा ॥३२५॥[2]

साखी

ग्यान संपूरन प्रेम रस, बिवरन करो बिचारि ।[3]
हंस बस मुक्त पावही भवजल जाहि न हारि ॥२४॥[4]

चौपाई

एक घाट के पावहिं भेदा । तबहीं करहि सब्द निरेखा ॥३२६॥[5]
निरंजन चीन्हि करहिं सुर चैना । बिनु चीन्हें नहिं सीतल बैना ॥३२७॥[6]
चिन्हहु बेद कहो ते पाया । भारी चिन्हहु प्रेम पद पाया ॥३२८॥[7]
कहं त जोति निरंजन गाई । जो राखा तहि चिन्हहु भाई ॥३२९॥[8]
समुझि परिहि सब्द निजु सारा । मिलै ग्यान हाल निस्तारा ॥३३०॥[9]
मूढ़ कहन कै सभ हितकारी । सांच कहे नर पारै गारी ॥३३१॥[10]

साखी

जहां सांच तहं आपु है निसि दिन होहि सहाए ।[11]
पत पत मनहिं मिलाइए, मीठा बोल बिचाए ॥२५॥[12]

---

१ (ग), (घ) करहिं = करिहि ।
२ (ख) देखहु = देखहु ।
३ (घ) बिचारि = बिचार ।
४ (ग), (घ) भव = भौ । (घ) भव = भवो । (ख), (ङ) न = ना । (घ) हारि = हार ।
५ (ग) घाट = घाटे । (ग) के = का । (ग), (घ) पावहि = पावै । (ग) करहि = करहिं ।
(ग) करहि = करिहि । (ङ) निरखा = निरेखा ।
६ (ग) निरंजन चीन्हे सुरचैना । (ग) निरंजन चिन्हि करिहि सुरचैना । (घ) निरंजन चिन्हि करै सुरचैना । (घ) चीन्हे = चीन्हे । (ख) (ग) (घ), (ङ) नहिं = नाहिं ।
७ (ग) चिन्हहु = चिन्हेहु । (घ) प्रेम पद पाया = दरपन्था ।
८ (ग) (ग) (घ) (ङ) कहं = कहां । (ग) (घ) जो = जे ।
९ (ग), (ग) मिलै = मिलु ।
१० (ख), (ग) मूढ़ कहन सभ हितकारी । (घ) मूढ़ कहन सभ हितकारी । (ङ) मूढ़ कहन कै सभे हितकारी । (ग) सांच कहत नर परे गारी । (ग) (ख) सांच कहत नर पारहि गारी । (ख) सांच कहत नर परै गारी ।
११ (घ) आपु = आप ।
१२ (ख) मिलाइए = बोलाइए । (ग), (ग) (ख), (ङ) मीठा = मीठो ।

चौपाई

बेद कहि थके ग्रन्ह बिचारा। नहीं मिलै तब सिरजनिहारा ॥३३२॥[1]
जोगी जोग करत सभ हारे। भउरि कतेको तनके जारे ॥३३३॥[2]
तपै भउरि सन्यासी हारे। मुंडित मुंडित करैं बिचारे ॥३३४॥[3]
जंगम जोगी रहे सभ हारी। एक नाम निजु सदा पुकारी ॥३३५॥[4]
सो माया मा चिन्है गंवारा। फिरि फिरि होए गरभ अवतारा ॥३३६॥[5]
भक्ति बिहूना सो नर प्रानी। सूनी मसक रहै बिनु पानी ॥३३७॥[6]
ताको जीव न जम है सांचा। सतनाम प्रभ निजु नाचा ॥३३८॥[7]

साखी

कनक कामिनि के फंद में मलची मन लपटाए।
कलपि कलपि जिव जरन लगी मिथ्या जन्म गंवाए ॥२६॥[8]

चौपाई

भूले फिरहिं माया लपटाना। संत साधु नहि गुर गमि ग्याना ॥३३९॥[9]
पटत मूल सम आत मोराई। सांच सब्द नहि हिरदै लाई ॥३४०॥[10]
करम कागत सम आत मोराई। जब जमदूत निकट चलि आई ॥३४१॥[11]

---

१ (ख) (ग) (घ) (ङ) थके = थाके। (ख) नाहि मिलिहै सिर्जनिहारा। (ग), (घ) नाहि मिलै सिर्जनिहारा। (ङ) नाहि मिलै सिरिजनिहारा।
२. (ङ) हारे = हारा। (ख) भउरि = भवर। (घ) भउरि = भौरि। (घ) (ङ) भउरि = भवरि। (ङ) जारे = जारा।
३ (ख), (घ) तपै = तपे। (ख), (घ) भउरि = भवर। (घ) भउरि = भौर। (ङ) भउरि = ऐसरी। (ङ) हारे = हारै। (ख) (ग) करैं = करे। (ङ) करैं = को करै। (ङ) बिचारे = बिचारै।
४ (ङ) रहे = रहै।
५ (ख) (ग) माया = मयाही। (घ) (ङ) माया = मया। (ख) (ग) चिन्है = चिन्हे। (ख) फिरि फिरि = फेरि फेरि। (ग) होए = होहि। (ग (घ) (ङ) गरभ = गर्भ। (घ) अवतारा = औतारा।
६ (ग) बिहूना = बिहीना। (ख) सूनी = सूनी। (ख) (ग), (घ) रहै = रहे।
७ (घ) है = है।
८ (ख) जीव जरन लगै = जीव जर है। (ग) (ङ) जीव जरन लगै = जीव जरन लागे। (घ) जीव जरन लगै = जीव जरत है। (घ) मिथ्या = मिथा।
९ (घ) (ङ) भूले = भूले। (ख) (ग), (घ), (ङ) नहि = नाहि।
१० (ख) (ग) (घ) मोराइ = मोराई। (ख), (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि।
११ (ग) (घ) कागत = कागद। (घ) कागत = कागर। (ङ) कागत = कागज। (ख) (ग), (घ) मोराइ = मोराइ।

सूखे जस पुरइनि भो छीन्हा । सुन घट पै घट नहि चीन्हा ॥३४२॥[1]
हंस अनुमान फिर दसो दीसा । जबहिं तुम भेजा जगदीसा ॥३४३॥[2]
सुन नहि निरखे सन क सैना । ढरि ढरि नीर परत मति नैना ॥३४४॥[3]
सै जगदीस नगर महं डारा । जम सबको करै पुकारा ॥३४५॥[4]

साखी

मातु पिता सुत बंधवा सब मिलि करै पुकार ।[5]
एकल हंस चलि जात है कोउ नहि संग लोहार ॥२७॥[6]

चौपाई

आगे पीछे बहुत सुनाना । जिन्हि नहि सब्द हमारो माना ॥३४६॥[7]
पान परवाना हमने पाया । सुनि गहनि सम सब्द समाया ॥३४७॥[8]
जो जो चढ़े हमारी साखी । जिन मुद्रा छपलोक ली आही ॥३४८॥[9]
सत सब्द हम सार निमरा । गुड जान सो जम के चेरा ॥३४९॥[10]

साखी

सब्द हमारा मानिहीं, छाड़हु मन विस्तार ।[11]
सत सुकित के चीन्हये, उतरहु भव जल पार ॥२८॥[12]

---

१ (ख) (ग) सूखे = सुखन । (घ) सूखे = सूखा । (ङ) सूखे = सूखी । (ग) भौ = भयो । (ग), (घ) छीन्हा = छीन । (ख) (ग) घटे = घटे । (घ) पै = पर । (ख) (ग) (घ), (ङ) नहि = नहिं ।
२ (ख) (ग) (घ) दिसे = दिस । (ग) भजस पर हम ।
३ (ख) (ग) (घ) (ङ) नहि = नहिं । (ग) (ग) (घ) निरखे = निरखै ।
४ (ख) (ग) (घ) सै = से । (ग) करै = कर । (ङ) करै = करहि ।
५ (ख) (ग) करै = कर ।
६ (ख) एकल = एकलि । (ङ) एकल = एकला । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि ।
७ (ख), (ग) बहुत = बहुते । (ग) (घ) बहु = बहु । (ङ) पीछे = पीछे । (ख) (ग), (घ) (ङ) नहि = नहिं ।
८ (ख) (घ) (घ) (ङ) हमारो = हमारो । (ग) गहनि = गहनि मे । (घ) (ङ) गहनि सम सब्द = गहनि सब्द ।
९ (ख) (ख) चढ़ = चढ़े । (ख) (ग) मै = मे ।
१० (ख) (घ) (घ) जाने = जान । (ङ) जमके = जमक ।
११ (ग) (घ) (ङ) (ङ) मानिहौ = मानहु । (ख) मानिहौ = मानिहौ । इसीलिए बहु मे मानिहौ का बहु अर्थ है । (ख) छाड़हु = छोड़हु ।
१२ (ख) भव = भौ । (ग) भव = भो ।

चौपाई

निरखै नाम जो करै बखाना । मिलै प्रेमपद श्रीमुख ध्याना ॥३५०॥[1]
करनी करि करि गए भुलाई । भेद न पावन्हि नाम सहाई ॥३५१॥[2]
रहह संसारि नाम सो लाई । नाम बिना नहिं सिद्धि कहाई ॥३५२॥[3]
नाम निरमल कै करी निखेरा । सत्त सब्द पावै निगु भेरा ॥३५३॥[4]
सोइ सत खोजो चित लाई । जीवनिमुक्ति जो जिन्द कहाई ॥३५४॥[5]

साखी

जिंदा जीवहिं जगत में देखो सब्द बिचारि ।[6]
अजर अकाल घोए अमर इहाँ बचन कहा निरुआरि ॥२९॥[7]

चौपाई

घोए निरगुन सरगुन ते भीन्हा । जाके प्रान पिंड सम चीन्हा ॥३५५॥[8]
जाके हाथ पाव मुख बानी । बोलहिं प्रम सुधारस बानी ॥३५६॥[9]
तीनि गुन ते रहित अमाना । प्रान पिंड जग उदित निसाना ॥३५७॥[10]
मरै ना जीव जिन्दा सोई । अछै बिरछ गति जानै कोई ॥३५८॥[11]

साखी

अछै बिरछ घोए पुरुष इहीं जिन्दा अचर अमान ।[12]
मुनिवर थाके पंडित, बेद कथहिं अनुमान ॥३०॥[13]

---

१ (ख) जो = यो । (घ) यो = वैसो । (ग) (ङ) करै = करे । (ख), (ग) (घ) मिलै = मिलै ।
२ (ग) गए = गई । (ख) (घ) (ङ) न = ना । (ग) भेद पावन्ह नाम सहाई । (ख) (घ) पावन्हि = पावन्ह ।
३ (ख) (ग) (घ) (ङ) रह हय = रसह । (ख) (ग), (घ) (ङ) मारी = संमारी । (घ) यो = वैसो । (घ) (ङ) सो = सब । (ख) (ग) (घ), (ङ) नहिं = नाहि । (ख) (ग) (घ) (ङ) सिद्ध = सिध ।
४ (ग), (घ) कै = के । (ख) करि = करी । (घ) करि = कर । (ग) पावै = पावहि ।
५ (ग) जीवनि = जीव । (ङ) मुक्ति = मुकुति ।
६ (घ) सबद = सब्द ।
७ (ख) (ङ) घोए = थोए । (ग) इहाँ = है ।
८ (ङ) घोए = थोए । (ख) निरगुन = निर्गु । (ङ) जाके = जाकै ।
९ (ङ) जाके = जाकै । (ख) (ग) (घ) बानी = सानी ।
१० (घ) निसाना = अमाना ।
११ (घ) मरै जीवै नहि जीव है सोई । (घ) अछै = अचै । (ख) जानै = जाने ।
१२ (ग) अछै = अछे । (घ) घोए = थोए । (ङ) पुरुष = पुरुख ।
१३ (ख) (ग) (घ) पंडित = पंडिता ।

चौपाई

सो निरगुन कथि कहै सनाथा। जाके हाथ पांव नहिं माथा ॥२५९॥[1]
निराकार अपार बिहूना। रूप रेख ना वहँ नमूना ॥२६०॥[2]
भूले पंडित भरम ना जाना। सो कर्ता नहिं गुन नाना ॥२६१॥[3]
नाना रंग वोर्नहि बहु बानी। परख भेष त्रिटप मन ठानी ॥२६२॥[4]

साखी

जैसे लता दुर्भ में पर्दक्षि रहा बहु भांति।[5]
सतगुरु मन ना जाहीं, अपनी अपनी जाति ॥३१॥[6]

चौपाई

गुन ब्रह्म जीव महं सेरा। अनोन्न ब्रह्म आपही पेखा ॥२६३॥[7]
भूला नर गम मूल गवांई। मूल बिना ग्यान यह पाई ॥२६४॥[8]
जीव ब्रह्म का कहौं उपाई। खोजि जीव ब्रह्म मिलि जाई ॥२६५॥[9]
घट परचै जब करै निरेरा। गुरु गमि ग्यान पाव निजु भेरा ॥२६६॥[10]
धुवै प्रम मुग अम्रित लाई। पीवत प्रेम हुसा सुग पाइ ॥२६७॥[11]
गावी धूप आपु लै आई। मानमदेव की पूजा लाई ॥२६८॥

---

१ (ग), (घ) कहै = कह। (ग) कहै = कह। (ख) जाके = जाके। (ग) (म) (घ) नहिं = नाहिं।
(ग) (घ) निराकार = निरंकार। (ख) रूपरेख ना = रूप ना रेखा ना। (ग) कहँ = रह। (ग) कहँ = कहै।
३ (ख) भूले = भूलि। (ख) (ग) (घ), (ट) नहिं = नाहि। (ग) गुने = गुनहि। (ग) (घ) (ख) गुनै = गुनै।
४ (घ) (ट) परख = परखै। (ग) (ग) (घ) मन = मना।
५ (ट) दुर्भ = दुरभ।
६ (घ) (ग) (घ) (ट) ना = नाहि। (ख) अपनी अपनी = आपनी आपनी।
७ (घ) सो निर्गुन कथि कहो समथा। (ग) सेरा = सेरी। (ट) कहो = कहउन।
(ग) आपहि = अपुहि। (ग) पेखा = पेखै।
८ (म) भूला = भूल। (ग) (ग) (घ) (ट) कहँ = कहाँ।
९ (ग) (ग) (घ) (ट) कहौं = कहो। (ग) खोजि = खोज। (ग) (घ) (ट) खोजि = खोजो।
१० (ग) (घ) परचै = परचे। (ख), (ग) करै = कर। (ग) पावै = पावे।
११ (ग) (ग) (ख) (ट) धुवै = धुवे। (ग) (ग) (घ) (ट) पीवत = पीवत। (ग) (ग) (घ) (ख) देना = देन।

आतमदेव निरंजन राई । बाहर भीतर आपु समाई ॥३६९॥[1]
मूल फूल भँवरा लपटाई । पीवत सुधा मगन होए जाई ॥३७०॥[2]
पचीसो तारि तहँ ताल सुनाई । नाचहिं हंसा कौतुक देखाई ॥३७१॥[3]
नवो मिलि एक रूप देखाई । पाँचो मिलि गुर पूरा पाई ॥३७२॥[4]
ऐसो सतगुर की बलि जाई । आदि अंत सब दहि देखाई ॥३७३॥

साखी

सतगुर ग्यान दीपक बरै जो मन होखे थीर ।[5]
कहै दरिया संसै मिटै, हरै सकल तम पीर ॥३२॥[6]

चौपाई

कहै दरिया जिन्हि केवल जाना । सोई जन साहब पहचाना ॥३७४॥[7]
सत पुर्ष की यह प्रभुताई । जाहि पाप जन निजु पुर जाई ॥३७५॥[8]
जब निजु ग्यान गमी करि पेखै । अविगति जोति द्रिस्टि महँ देखै ॥३७६॥
अनहद की धुनि करै विचारा । अन्ह द्रिस्टि होए उजियारा ॥३७७॥
यह जो कोइ गुर ग्यानी बूझै । सब्द अनाहद आपुहि सूझै ॥३७८॥[9]
पंडित सो जो मनहिं बुझावै । मनहीं मन कै पूजा बढ़ावै ॥३७९॥[10]
घट में ललिता घटहिं में मुन्द्रा । घटहिं में पाति फूल एक सुन्द्रा ॥३८०॥[11]
सुरति अनूप जहँ नभ झरोखा । कँवल मास सो पवन सुरेखा ॥३८१॥[12]

१ (घ) समाई = समाई ।
२ (क) भँवरा = भौरा । (घ) सुधा = सुधारस ।
३ (ग) (ग) (ङ) तारि तहँ ताल = तारिताल । (ग) (घ) (ङ) हंसा = हंस । (ङ) कौतुक = कउतुक । (ग) (ङ) कउतुक = कउतुक ।
४ (ग) (घ) नव = नवो । (ख) गुर पूरा = पूरागुरु ।
५ (ग) (घ) (ङ) बरै = बरे । (क) दीपक बरै = दीपबरै । (ग) (घ) जो = जौ । (क) थी = थीरो । (ख) (ग) (घ) (ङ) होखे = होखै ।
६ (ख) (ग) (ङ) मिटै = मेटै । (घ) मिटै = मेटै । (ख) (ग) हरै = हरे ।
७ (ग) कहै = कह । (ख) (ङ) साहब = साहेब । (घ) पहचाना = परिचाना ।
८ (क) पुर्ष = पुरुष । (ख) (घ) निजु = निज । (ग) अनहद = अंमद ।
९ (ख), (घ) यह जो = जो । (ङ) यह जो = इह जो । (ङ) आपुहि = आपु ।
१० (ख) (ग) मनहिं = मनके । (घ) मनहिं = मनका ।
११ (क) (घ) (ङ) घटहि मे ललिता घटहि मे मुन्द्रा । (घ) घटह मे ललिता घटह में मुन्द्रा । (ग) घटहिं = घटह ।
१२ (घ) सुरति = सुरति । (ग) कँवल = कमल । (क) (घ) सो = से । (घ) सो = ते । (ङ) सुरेखा = सुरेखा ।

धुन धुन होवै अनहद बानी। दमि सरूप भवन रहु ठानी ॥३८२॥[1]
गुरु ग्यानी जो होवे कोई। सतनाम निजु पावे सोई ॥३८३॥[2]
सब्द पास दीढ करि धरई। जाए छपलोक नरक नहि परई ॥३८४॥[3]

साखी

छपलोक सोए सत हही जिवा कहा बुझाए।[4]
धोखा धंधा छेजि के, सहर अमरपुर जाए ॥३३॥

चौपाई

मरे कहे जो माने न कोई। आवत जात बहुत दुख होई ॥३८५॥[5]
दुख दारुन है जम जजाला। सतगुर सब्द करै प्रतिपाला ॥३८६॥[6]
जिन्हि जिन्हि माना सब्द निजु सारा। भीषि द्रिस्टि भई उजियारा ॥३८७॥[7]
सत सब्द सीस जो पावै। वीरा देद तब दरस देखावै ॥३८८॥[8]
जनम जनम के पाप कटाई। जाए छपलोक बहुरि नहि आई ॥३८९॥[9]
पचीस प्रक्रिति अरु तीनू नारी। पांच ततु है आममयारी ॥३९०॥[10]
जोग जाग जुगुति परवाना। जोगी सो जो करै बखाना ॥३९१॥[11]
अमन परा जहां उपजै ग्याना। अमन परा जहां हंस असथाना ॥३९२॥[12]
अमन परा जहां पीव पानी। अमन परा जहां सुरती समानी ॥३९३॥[13]
कहां पचीस प्रक्रिति के केरा। कहवां पांचो भुत निमरा ॥३९४॥[14]

---

1 (ब) होवै = होवत।
2. (प) को = जसो। (ट) जो = पो। (ग) (ग), (घ) (ठ) होवत = होवै। (ग) (ग) (घ)
(ब) पावे = पावै।
3 (ठ) पार = पर।
4 (ग) मत = मर्जे।
5 (प) मर = मरै। (ग) कहे = कहा। (ट) कहे = कहु। (प) (ट) माम = मावै।
6 (ग) है = कहे। (घ), (ग) करै = कर।
7 (ध) माना = मान। (प) दीठि = द्रिस्ट।
8. (ग) जा = सब। (ग) जो = जसो। (प) को = जसो। (ट) जो = जो। (ग) दरस =
नाम।
9 (प) (ठ) के = है। (ग) आइ = आवै।
10 (प) (प) तब = दो। (ठ) तब = दो। (ग) (ग) तीनू = तीमिऊ।
11 (ग) (प) सुजुगुति = सुजति। (प) सुजुगुति = सुकि। (ग) करै = कर।
12 (ड) परा = परा। (प) (ग) उपजै = उपज।
13 (ग) ३९३ का अपठित। (ग) पीवै = पीव।
14 (ग) (प) कहां = करवा। (ग) (प) (ड) के = है। (ग) दोष = ...

पाप पुन्य भोग कहाँ करई। कवन घरा जहाँ सुनि रहई ॥३९५॥[1]
उनमुनि मूल कँवल रहु फूला। उपजै प्रेम होए असथूला ॥३९६॥[2]
गुप्तचरज में प्रान समाना। त्रिकुटी सून्य पवन असथाना ॥३९७॥[3]
भ्रमी तत्तु तहाँ पीवै पानी। कँवल नाल तहाँ सुरति समानी ॥३९८॥[4]
इन्द्री काम भोग एह करई। नासा बास आपु सभ हरई ॥३९९॥[5]
आलस निद्रा कबहिं न राता। काम विद कबहीं नहिं पाता ॥४००॥[6]

साखी

जोगी सो जो जोग महं मातल माते भेद विचारि।[7]
पाँच तत्तु अपने बस करै दुमति सभ दुरि डारि ॥३४॥[8]

चौपाई

घर में आवै सिरजनिहारा। अमर होए पावै करतारा ॥४०१॥[9]
ऐसन जोगी होवै कोई। गोरख सुख खोए गनिए सोई ॥४०२॥[10]
जब लगि जोग तब से सुख पावै। काया पतन बहुत दुख पावै ॥४०३॥[11]

---

१ (ग) (च) घरा = घर।
२ (ख) (च) रहु = रहु। (घ) कँवल = कमल। (ख) (ग) उपजै = उपजे।
३ (ख) (च) गुप्त = गुप्त। (ख) (ग) (घ) (च) चरज = चरज। (च) त्रिकुटी = त्रिकुटी। (ख) (घ) (च) सून्य = सुन।
४ (ग) भ्रमी = धर्मिय। (च) कँवल = कमल। (ख) नाल = नाल। (ख) सुरति = सुर। (ग) (घ) सुरति = सुरति।
५ (ख) इन्द्री = इंद्रिया। (ख) (च) एह = इह। (ख) हरई = रहई।
६ (ख) (ग) (घ), (च) अतिरिक्त पाठ —जो जोगी इह जग में रावै। पवन साधि जो मन के भावै॥ आलस निद्रा बसि सभ करई। लोग सँताप आपु सभ हरई॥
७ (ख) महँ = मा। (ग) (घ) (च) नहिं = नाहि। (ख), (ग) (घ), (च) जोगी — जोगिया। (ग) जोग मह मातल। (घ) जोगहि मातल। (च) जोगहि मात। (ख) (ग) (घ) (च) माते = माते। (ङ) 'महं' नहीं है।
८ (ख) (घ) अपने = आपने। (च) अपन = अपनी। (ग) (घ) बस करै = बसि कर। (च) बस करै = बसि करै। (ख) (ग) (च) दुर्मति = दुरमति।
९ (ख) (ग), (घ) सिरजनि = सिर्जनि।
१० (घ) (च) ऐसन = ऐसन। (ख) (ग) (घ) (ङ) होवै = होवै। (घ) (च) सुख खोए = सुखि खोए। (ख) (घ) सुख = सुखि।
११ (ख) जब = जो। (ग) जब = जबी। (ख) लगि = लागि। (घ) लगि = ले। (ख) तब = तो। (ग) तब = तबो। (ख) से = तासी। (च) से = से। (ग) (च) पावै = मावै। (ङ) बहुत = बहुते।

ग्यान मत है सम से भीन्हा । पुरुष नाम निजु हिरदे चीन्हा ॥४०४॥[1]
जंगम जोगी जटाधारी । नाम नजानहि दोजख भारी ॥४०५॥[2]
भगति ग्यान जो जानहिं कोई । प्रेम रुचित तब हिरदे होई ॥४०६॥[3]
मनमथ मनहर करै बिचारा । मुक्ति परै भव उतरै पारा ॥४०७॥[4]
मुक्ति तीनि लोक से न्यारा । पुरुष पुरान निजु प्रेम अपारा ॥४०८॥[5]
मर्म सार जहाँ भव के नासा । जुग जुग अमर करै बिलासा ॥४०९॥[6]
सुरति साधि चमनि जब ठानै । पहुँचै सो जो मर्म के जानै ॥४१०॥[7]
मूल सब्द तहाँ से पहुँचावै । जो कोइ सतगुरु होए लखावै ॥४११॥[8]
सपन अगम ना ना कछु होई । पहुँचै आए सबरा सोई ॥४१२॥[9]
अमर लोक जहाँ भय नहि होई । अम्रित प्रेम पिव सम कोई ॥४१३॥[10]
दीबि द्रिस्टि ग्यान तो लावै । आए छपलोक बहुरि नहि आवै ॥४१४॥[11]
भव बूड़त अंमर होए जाई । सतगुरु सब्द प्रेम पद पाई ॥४१५॥[12]
ताको घर सदा उजियारा । अमर पावै निर्जानिहारा ॥४१६॥[13]

---

१ (ग) ग्यान = ग्यानी । (च) पुर्ख = पुरुष ।

२ (ख) (ग) (घ) (च) दोजग = दोजख ।

३ (ख) भगति = भक्ति । (ग), (च) जो = जौ । (घ) जो = जैसे । (ख), (ग), (घ) जानहिं = जान । (च) जानहिं = जानै ।

४ (ख) मनमथ = मनमथा । (ग), (च) मनमथ = मनमौ । (ग) करै = कर । (घ) करै = परे ।

५. (ख) मुर्क्ति = मुक्त । (ग) मुर्क्ति = मुक्ति । (ग) लोकते न्यारा = लोक न्यारा । (च) है = है ।
(ख) (च) पुर्ख = पुरुष ।

६ (घ) मर्मे = मर्म । (ए) के = कै । (ग) करै = कर । (ख), (घ) (च) अंमर = अमर ।
(ग) करै = करे । (ग) (च), (ए) विलासा = बेलासा ।

७ (ग) (च) जब = जो । (घ) जब = जौ । (ख), (ग), (घ) पहुँचै = पहुँच । (ए) मम के = ममहै ।

८ (ग) (घ) (च) से = सै । (ए) तहाँ से = ताभे ।

९ (च) सपन = सपने । (ग) (ग) (घ) पहुँचै = पहुँच ।

१० (ख) (ग), (घ) (ए) नहि = नाहि । (ख) अम्रित = अम्रित । (ग) पिवै = पिवहि ।

११ (ग) (च), (ए) दीबि = दिबि । (ग) दीबि = दिब्य । (ग) (ए) तो = तब । (ग), (घ), (ए) नहि = नाहि ।

१२. (ग) (च) (ए) भव = भी । (ग) भव = भवो । (ख) पद = पद ।

१३ (घ) घर = घर । (ग) पावै = पावहि ।

अम्रित बचन समझि जो बोलै । प्रेम जुगति कबहीं नहिं डोलै ॥४१७॥[1]
झूठ कहै नर दुर्मति सोई । सच कहै अम्रित रस होई ॥४१८॥[2]

साखी

सच सब्द एह बूझिकै दुर्मति घालै धोए ।[3]
कहै दरिया घट निर्मल मैला कबहिं न होए ॥३५॥

चौपाई

पावै परम पद जग उजियारा । सुरति बोधि करै अनुसारा ॥४१९॥[4]
निजु पुर पहुंचै बिसम न होई । जौं मन चीन्हि के पावै कोई ॥४२०॥[5]
पांच पचीस अपने बसि होई । क्रोध मोह त्रिसना सभ खोई ॥४२१॥[6]
ऐसन जोगी जोग पसारा । ताको घट सदा उजियारा ॥४२२॥[7]
होवै जोग्य न नाम बसि आवै । जनम जनम ऐसे जहंडावै ॥४२३॥[8]
भगति ग्यान का करो बिचारा । सहज मुक्ति भवसिंधु उबारा ॥४२४॥[9]
मन के घार चीन्हि चित लाई । कसि कमान ग्यान पर आई ॥४२५॥[10]
तीनि लोक भव बेद पसारा । तामें चीन्हो ग्यान बिचारा ॥४२६॥[11]
तामें सतगुर सभ तें न्यारा । चौथा लोक ताको पैसारा ॥४२७॥[12]

---

१ (ख) (घ) बोलै = बोले । (ङ) बोलै = बोला । (ग) जुगति = जुक्ति । (ङ) जुगति = जुगुति । (ख) (ग) डोलै = डोले । (ङ) डोलै = डोला ।

२ (ख) (ग) (घ) (ङ) कहै = कहे । (ख), (ग), (ङ) दुर्मति = दुरमति । (ख) सच = सत्य । (ग) सच = सत्य । (ग) (घ) कहै = कहे ।

३ (ग) सच = सतो । (ख) एह = इह । (ख) (ग) (घ) बूझिकै = बूझिके । (ख) (ग) (ङ) दुर्मति = दुरमति । (ग) (घ) घालै = घाले ।

४ (क) परम = प्राण । (ख) (घ) (ङ) परम = प्रेम । (ख) (ग) (घ) (ङ) बोधि = बाधि । (ग), (घ) करै = करे ।

५. (ख) (ग) (घ) पहुंचै = पहुंचे । (ख) (घ) बिसम = बैसम । (ख) जौं मन चीन्हिके पावै कोई = क्रोध मोह त्रिस्ना सभ खोई । (ग) जौं = जवों ।

६ (ख) पांच पचीस अपने बसि होई = ऐसन जोगी जोग पसारा । (घ) त्रिसना = ट्रिस्ना । (ङ) त्रिसना = ट्रिस्ना ।

७ (घ) घट = घर । (ङ) घट = घठ ।

८ (ख) (ग) (घ), (ङ) जोग्य = जोग । (ख) (ग) नाम = नामम । (घ) नाम = नमम । (ङ) ऐसे = अइसे ।

९ (ग) भगति = भक्ति । (ग) भव = भवो । (ख) भव = भ ।

१० (ख) ४२५ संख्यक चौपाइ अपठित । (ग), (घ), (ङ) चिन्हि = चिन्हो ।

११ (ख) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवो ।

१२ (ङ) न्यारा = नैन्यारा । (ख) (घ) चौथा = चौथ । (ख) पैसारा = पएसारा । (ग) पैस्यारा = पइसारा ।

निरखै अजर अमर होए जाई। बहुरि न एहु जग भटका खाई ॥४२८॥[1]
अमर लोक महँ अमित पीव। मुक्ति महातम जुग जुग जीव ॥४२९॥[2]
अंतर जोगी भवन में बासा। प्रेम पुरुष जहाँ भय के नासा ॥४३०॥[3]
जुग जुग रहै पुरुष के पासा। अविगति देखै अजब तमासा ॥४३१॥[4]
सतगुरु सब्द मानु सत सोई। जन्म मरन के दुर्मति खोई ॥४३२॥[5]

छन्द

जीवन मुक्ति जन रहित हैं भवसिंधु पार उतारही।[6]
जन जानि भजु सत नाम कै सुगम पन्थ पावहीं॥[7]
दनुजदावन ध्यान को गहि प्रीतिपथ सो पावहीं।[8]
हरहि मतिमन्द अगम जीवन संत सो गुन गावहीं ॥७॥[9]

सोरठा

परमातम परमानन्द पिया पद सुरति लगाइए।[10]
जो सारद को छंद, जगजीवन गुन ध्यान है ॥७॥[11]

चौपाई

जब लगि प्रेम जुगति नहिं होई। तब लौ ध्यान कथ मर सोई ॥४३३॥[12]

---

१ (ख) (ग) (घ) एहु = इहा। (ङ) एहु = इह।
२ (घ) मुक्ति = मुकुति।
३ (ग) भवन = भरोस। (ग) प्रेम = परम।
४ (घ) के = है। (ङ) के = कए। (ग) अविगति = अविगत। (ग) देखै = देखहि।
५ (घ) मानु = मानहु। (घ) (ङ) के = है। (ख) (ग), (ङ) दुर्मति = दुरमति।
(ग) खोई = खई।
६ (ख), (घ) जीवन = जीवमी। (घ) मुक्ति = मुकुति। (ख) (घ) (ङ) भव = भौ।
(घ) भौ = भवो। (ग) सिंधु = सिन्धु।
७ (ग) जानी = जानु। (ङ) के = है। (ग) पावही = पावही।
८ (ङ) दावन = दावन। (ग) को = क। (ग) सो = ही। (ग)
(ग) सो पावही = सोहावही।
९ (ग) (ग), (घ) (ङ) मत = मति।
१० (ख) (घ) (ङ) लगाइए = लगावही।
११ (घ) को = केर। (ग) (घ) जो = जैसो। (घ) ध्यान है = ध्यानी।
१२ (ग) (घ) जब = जौ। (ग) जब = जैसो। (ङ) प्रेम = प्रीति। (ख) जुगति = जुगत। (ग) जुगती = जुक्ति। (ङ) जुगति = जुगुति। (ग) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नहि। (ख) कथै = कथे।

सतगुर सीतल सब्द समाई। अमी प्रेम रस सहजे पाई ॥४३४॥[१]
जलि पंकज ज्यों रहे सोभाई। बिलगि बिहरि फिरि हिलिमिलि जाई ॥४३५॥[२]
ज्यों चंदा चित दीन्ह चकोरा। ऐसी प्रीति करै नहिं मोरा ॥४३६॥[३]
भूलि भूलि सम जाहिं नसाई। ग्यान बिना नहिं दीख देखाई ॥४३७॥[४]
सोइ गुर निरखै चित महं भावै। जो जन जियतहिं मुक्ति बतावै ॥४३८॥[५]
तन छूटे फिरि परहिं अंदेसा। कैसे सूझहिं मुक्ति संदेसा ॥४३९॥[६]
राह छेकि जम करहिं अहारा। देह धरै भरमे संसारा ॥४४०॥[७]
तन छूटे पुनि कहां समाई। कहु कैसे नाम भजन सो भाई ॥४४१॥[८]
जियतहिं सत पद जो मन लाई। तन छूटे सत सब्द समाई ॥४४२॥[९]
भगति बिना जम दारुन अहई। बिना ग्यान कहु कैसे लहई ॥४४३॥[१०]
भरमि भरमि फिरि भवजल आवै। मन नहिं थिर तब कवन बचावै ॥४४४॥[११]
एके चोर सकल जिव मार। कहे दरिया सो परवस डार ॥४४५॥[१२]

---

१ (क) समाई = समोई। (ख) अमी = अमित। (ग) अमी = अमिय। (घ) अमी = आमी। (ख) प्रेमरस = प्रेरस। (ख) (ग) सहजे = सहजहिं। (घ) सहजे = सहजै।
२. (ख) ज्यों = जो। (ग) (घ) (ङ) ज्यों = जैसो। (ख) (ग) रहे = रहा। (ङ) रहै = रहै। (ख) बिलगि बिहरि फेरि सौ मिलि जाई।
३ (ख) ज्यों = जो। (ग) (घ) ज्यों = जैसो। (ङ) ज्यों = जसो। (ख), (ग) चंदा = चंदहि। (घ) (ङ) चंदा = चंद। (ग) (घ) करै = करे। (ख) (ग) (घ), (ङ) नहिं = नाहिं।
४ (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं।
५. (ग) गुर = गुरु।
६ (ग) छूटे = छूट। (ख) फिरि = फेरि। (ख) परहिं = परी। (ग) (घ) परहिं = परिहि। (ख) अंदेसा = अनेसा। (ख) सूझहिं = सूझै। (ग) सूझहिं = सुझिहि। (घ) (ङ) सूझहिं = सुझिहिं।
७ (ख) करहिं = करी। (ग), (घ), (ङ) करहिं = करिहि। (ख) (ग) धरै = धरी। (ख), (घ) भरमे = भरमी। (ग) भरमे = भरमहि। (ङ) भरमे = भरमहि। (ख) संसारा = सबसारा।
८ (ग) (ङ) छूटे = छूटे। (ख) पुनि = पु। (ग), (घ), (ङ) सो = सब।
९. (ख) सतपद जो मनलाई = सतपद मन लाई।
१० (ग) भगति = भक्ति। (ग) कहु = कह।
११ (ग) फिरि = फेरि। (ख), (घ) भव = भौ। (ग) भव = भवो। (ख) मन नाहिं थिर कहु कौन बचावै। (ग) मन नाहिं थिर तो कवन बचावै। (घ) मन नाहिं थिर त कवन बचावै।
१२. (क) (ख) एके = एकै। (ग) कहे = कहै। (घ) सो = सोइ। (ङ) सो = सै।

मूल घट पुनि सम रस जाई। सतगुर सुरति लगावहु भाई ॥४४६॥[1]
राम एक अहहें सम कोई। सम मिलि चलिहैं सत्तस जोई ॥४४७॥[2]
अहहें पंडित वेद पढ़ंता। वह घरी फिरि भरमि भ्रमना ॥४४८॥[3]
सतपद बिना सकल सभ जाई। भगति महातम गुन नहिं गाई ॥४४९॥[4]
तीनि लोक एक डोरि से बंधा। छिद न सूझै पसु का अंधा ॥४५०॥[5]
छूट डोरि चेतनि जब होई। एक नाम निज पावै सोई ॥४५१॥[6]
पाव वस्तु अनूपम बानी। पूरन पद उपज जहं ग्यानी ॥४५२॥[7]
जब लगि दृष्टि एह नहिं आव। दरसित काल संघ मह धाव ॥४५३॥[8]
जब सतगुर सत सब्द समाई। दुरमति काल निकट नहिं जाई ॥४५४॥[9]
कोटि तिरथ साधुन्हि के पाना। भगति भाव किलिविस सब हरना ॥४५५॥[10]
साधु निकट सत्र तिरथ कहाव। भूला भरमि के जग भरमावै ॥४५६॥[11]
भरमि रहा नर नाम विहूना। पलपल होत मूल मह छीना ॥४५७॥[12]
जीव सक्ति सम जीव कहाना। आतमराम नहीं पहचाना ॥४५८॥[13]

साखी

आतम दास ग्यान निजु, कबहि ना होवै भीन।[14]
सतगुर चरन समाइए रहो प्रम लौ लीन ॥३६॥[15]

---

१ (ग) घटे = घट। (ग) (घ) (ङ) पुनि = फिरि।
२ (ग) अहहें = आही। (ग), (घ), (ङ) अहहें = आवहि। (ग) अहहें = अहै।
३ (ग) अहहें = अहहहि। (ङ) अहहें = जैहे। (ङ) पढ़ंता = पढ़ंतावा। (ङ) फिरि = फेर।
(ग) (ङ भरमि = भामिही।
४ (ग) भ्रमनि = भमत। (ग), (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि।
५ (घ) छिदे = छिद्र। (ग) (घ) (ङ) न = ना।
६ (ग) (ग), छुटे = छुट।
७ (ग) पावै = पवैव। (ख) (ङ) वस्तु = वस्तु। (घ) पूरन पद जहां उपजे ग्यानी।
८ (ग) जब = रहो। (ग) लगि = लागि। (ग), (ग), (घ) (ङ) नहिं = नाहि। (ग) दृष्टि = दृष्टि।
९ (ङ) समाइ = समाइै। (ङ) जाइ = जाइै।
१० (ग) (घ) कोटि तीरथ साधु के चरना। (ग) कोटिन्ह तीरथ साधुन्ह के चरना। (ङ) कोटिन्ह तीरथ साधुन्ह के चरना। (ग) भगति = भक्ति। (ग) (ग), (घ) (ङ) सब = सभ।
११ (ङ) के = कै।
१२ (ग) बिहूना = बिहीना। (ग) होवै = होत।
१३ (ग) (ग) (घ) (ङ) आतमराम ना चिन्हहु कहना।
१४ (ग), (ग, (ङ) दास = दासी। (ग) ना = न।
१५ (ग), (घ) (ङ) रहै चरन सत लीन ॥

चौपाई

जोग जुगति तजि भोग सम करई। नाम बिना नर नरकहिं परई ॥४५९॥[१]
भाजु सुमिरहु साहब धनी। एक नाम बिनु हिरम्भ प्रानी ॥४६०॥[२]
खग मीन दूनो पथ भारी। मन के ससै देखु बिचारी ॥४६१॥[३]
आवत जात जो मन के चिन्हई। सुभ ध्यान भगति किछु करई ॥४६२॥[४]
कलह के काम सभै मिटि आव। जो घट में किछु परचै पाव ॥४६३॥[५]
इह दिढ़मति करि सीख अपना। कहे दरिया सत सुनु बचना ॥४६४॥[६]
इह अच्छर महँ निअच्छर पावै। ध्यान भगति जब दिढ़ता लावै ॥४६५॥[७]
पल पल रहै चरन लौ लाई। सत साहब सामथ सहाई ॥४६६॥[८]
भगतबछल संतन्ह सुखदाई। काटि पाप जन निजु पुर जाई ॥४६७॥[९]
निरभै नाम तन होहि सहाई। सुमिरत नाम सुधासम पाई ॥४६८॥[१०]
तुह नाम गति अलख लखाई। ताते रहो चरन चित लाई ॥४६९॥[११]
तुह नाम गति अगम अपारा। केते अधम तरे अधिकारा ॥४७०॥[१२]
दीन देयाल सदा निरपाना। तुह सुमरत दुख दन्द मेटाना ॥४७१॥[१३]

---

१ (घ) जुगती = जुक्ति।
२ (ख) भाजु = भजहि। (ग) (घ), (ङ) भाजु = भजहु।
३ (ग) खग सो मीन दोउ पंथ भारी। (घ) खग अरु मीन। (ग) (घ), (ङ) ससै = संसै।
४ (ङ) जो = जौ। (ङ) मनके = मनकै। (ग) भगति = किछु। (घ) भक्ति = कछु।
(ख) पदान्तर कलह के काम कछु मह आई।
५ (घ) (ङ) कलह के काम = कलह काम। (ग), (घ), (ङ) मिटि = मेटि। (ख) जब घट में कछु परचै पाई। (ग) जो घट में परचै कछु पावै। (घ), (ङ) जो घट मे परचै कछु पावै।
६ (घ) इह = येह। (ख) (घ) दिढ़मति = दिढ़मत। (घ) सुनु = सुनहु।
७ (घ) इह = एह। (ख), (ग) (घ), (ङ) महँ = माह। (ग) भगति = भक्ति।
(ख) (घ), (घ), (ङ) जब = तब।
८ (घ) रहै = रहे। (ख) (घ), (ङ) लौ = लव। (ग) लौ = लयो। (ख) साहब = साहेब।
(ग), (ङ) समर्थ = सामरथ।
९ (ग) भगत = भक्त। (ख), (घ) जन = नर। (ख), (घ) निजु = निज।
१० (ख) तन = तब।
११ (ख) तुह = तुम। (ङ) ताते = तातै।
१२ (ग) तुह = तुम। (घ) (ङ) तरे = तरै।
१३ (ग) (घ) दीनदेयाल = दीनदयाल। (ङ) दीनदेयाल = दीनदीयाल। (ख) तुम सुमिरे दुख दंद मेटाना। (ग) तुह = तुम। (घ) तुम सुमरे दुख दंद मेटाना। (ङ) तुम सुमिरे दुख दंद मेटाना।

सुन्न घट पुनि सब रस जाई । सतगुर सुरति समावहु भाई ॥४४६॥[1]
रव रस जहँ सब कोई । सब मिलि चलहिं सत्तम सोई ॥४४७॥[2]
जहँ पंडित बेद पढ़ंता । देह धरी फिरि भरमि भरंता ॥४४८॥[3]
सतपद बिना सकल सब जाई । भगति महानाम गुन नहिं गाई ॥४४९॥[4]
तीनि भाव रजु डोरि से बंधा । हिरद न सूझ चहु का अंधा ॥४५०॥[5]
छूटै डोरि चेतनि जब होई । एक नाम निजु पाव सोई ॥४५१॥[6]
पाव बस्तु अनूपम बानी । पुरन पद उपज जहं ज्ञानी ॥४५२॥[7]
जब लगि द्रिष्टि एक नहिं आवै । त्रसित काल संग महं धावै ॥४५३॥[8]
जब सतगुर सत सब्द समाई । दुरमति काल निकट नहिं आई ॥४५४॥[9]
कोटि तिरथ साधुन्हि के पासा । भगति भाव बिलसि बिग सब हरना ॥४५५॥[10]
साधु निकट सब तिरथ कहाव । मूरा भरमि के जग भरमावै ॥४५६॥[11]
भरमि रहा नर नाम बिहूना । धनधन छाडि मूल महं छीना ॥४५७॥[12]
सीव सक्ति सब जीव कहाना । आतमराम नहीं पहिचाना ॥४५८॥[13]

साखी

आतम दास ग्यान बिनु कबहिं ना होवै मीत ।[14]
सतगुर चरन समाइए, रहो प्रभ सो लीन ॥२६॥[15]

---

१ (घ) घटे = घडे । (ग) (घ), (ङ) पुनि = फिरि ।
२ (क) जहँ = जहाँ । (ग), (घ), (ङ) जहँ = जहहि । (ख) जहह = जहँ ।
३ (घ) जहँ = जहहि । (ङ) जहँ = बैठे । (ङ) पढ़ंता = पढ़ंताता । (ख) फिरि = पर ।
(ग) (ङ), भरमि = भरमिही ।
४ (ख) भगति = भगत । (ख) (ग), (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
५ (घ) हिरदै = हिरद । (ख), (ग) (ग) न = ना ।
६ (ख), (ग), छूटै = छुटै ।
७ (ख) पावै = पावइ । (ख), (ङ) बस्तु = बस्तु । (घ) पूरन पद जहाँ उपजै ग्यानी ।
८ (घ) जब = जबी । (ख) लगि = लगि । (ख), (ग), (घ) (ङ) नहिं = नहि । (ग) संगे = संगे ।
९ (ङ) समाइ = समाये । (ख) आइ = आवै ।
१० (ग), (घ) कोटि तीरथ साधु के चरना । (ग), कोटिन्ह तीरथ साधुन्ह के चरना । (ङ) कोटिन्ह तीरथ साधुन्ह के चरना । (ग) भगति = भक्ति । (ग) (ग), (घ) (ङ) सब = सम ।
११ (ङ) के = कै ।
१२ (घ) बिहूना = बिहीना । (ख) होवै = होय ।
१३ (ग) (ग) (घ) (ङ) आतमराम ना चिन्हहु अपना ।
१४ (ग) (घ), (ङ) दास = दासी । (ग) ना = न ।
१५ (ग), (घ), (ङ) रहे नाम सो लीन ॥

चौपाई

सुमिरु ध्यान सतगुर चित लाई । का भूलहु एही दुनिआई ॥४७७॥[1]
काम क्रोध मद तेजहु भाई । काम न आव एह चतुराई ॥४७८॥[2]
एक नाम निजु साहब गाई । काटहि फद पाप सब जाई ॥४७९॥[3]
सुमिरहु सुख संपति बिसराई । दिना चारि का रंग सहाई ॥४८०॥[4]
जोग जाप जग जीवन प्रानी । कंज पुंज में सुरति समानी ॥४८१॥[5]
निरमल है मन कबहिं ना आव । स सतलोक तुरतहिं धाव ॥४८२॥[6]
बिहिति बिहिति गुन जो जन गावै । ध्यान प्रतीति प्रेम रस पाव ॥४८३॥[7]
एक नाम छत्र सिर साजै । अनहद धुनी ध्यान तहं गाजै ॥४८४॥[8]
जब संसै भव के बिसरावै । तब निजु नाम प्रेम पद पावै ॥४८५॥[9]
गुर गमि ध्यान प्रेम लौ लावै । ताते संपति सभ बिसरावै ॥४८६॥
जानहु झूठ सत्त एह नामा । जन्म जाम बेमर्थ बेकामा ॥४८७॥[10]
सतगुर सब्द सत्त परवाना । तासि संत कर निरमल ग्याना ॥४८८॥[11]
माया रूप जनि फिरहु भुलाना । अतहु फिरी परिहि पछताना ॥४८९॥[12]
जम के फांस फंद बड़ भारी । किरिया करम बद मत डारी ॥४९०॥[13]

---

१ (ख) (घ) सुमिरु = सुमिरहु । (ख) मूलहु एही = मूलहु इस । (घ) मूलहु एही = मूलहु इह ।
२ (ग) मद काम क्रोध । (ख) एह = इह । (घ) एह = एहि ।
३ (ख) एक = यक । (ग) (घ) (ङ) एक = ऐक । (घ) साहब = साहेब ।
४ (घ) (ग) (घ) (ङ) दिना = दिन ।
५ (ङ) जीवन = जीवनी ।
६ (घ) निरमल है मन = निर्मल मन है । (ङ) कबहिं ना आवै = कबही आवै । (ख) है = हे । (ग) है = होई । (ङ) सुरति मिलावै ।
७ (ख) ४८३ संख्यक चौपाई अपठित । (घ) प्रतीति = परतीति ।
८ (ङ) छत्र = छत्तर । (घ), (घ), (घ) (ङ) तहं = तहां ।
९ (ख) (ग) संसै = संसे । (ग) भव के = भयो जो । (ग) प्रेम = पर्म । (ङ) प्रेम = परेम ।
१० (ख), (ग), (घ) (ङ) लौ = लव । (घ) (ङ) सभ संपति हद सभ बिसरावै ।
११ (ख) (ग), (घ) (ङ) जानहु मठ एह सतनामा । (ख) (घ) (ङ) बे मरथ बेका मा । (ङ) बेमारथ बेकामा ।
१२ (ङ) सतगुर सब्द सत्त परवाना । (ग) कर = के । (घ), (ङ) कर = केर ।
१३ (घ) (घ) (ट) फिरि = फेरि । (ग) परिहि = पारहि ।
१४ (ख) (ग) (घ), (ङ) जम फांस । (ख) (ग), (घ) (ङ) किरिया = क्रिया ।

महीं धरनीधर दीन दयाला। भगति हेतु सन्त प्रतिपाला॥४७२॥[1]

छन्द

जग जीवन जन्म सुफल ताहि को भगति पद अनुरागही।[2]
भय भरम करम बिसारि कै सतनाम जो गुन गावही॥[3]
दृढ़ दम निश्चय बिचारि कै बिरला जो जन जानहीं।[4]
धरि धरन ध्यान समाधि करि गुरु ज्ञान बिना नहिं पावही॥८॥[5]

सोरठा

मूल सब्द निजु सार, भाव भजन बिन बाहरा।[6]
दया दीपक उजियार, पा छोड़ि अन्त ना जानिए॥८॥[7]

चौपाई

एक नाम बिनु काम न होई। नर जानत नर जन्म बिगोई॥४७३॥[8]
सो मनहीन ध्यान नहिं चीन्हा। सतगुरु चरन प्रेम नहिं कीन्हा॥४७४॥[9]
करन निरम नाम रहाई[10]। भजन भक्ति कारन मन जाई॥४७५॥[11]
गारुड़ ध्यान धरै चित लाई। रूप अनूप जानि छबि छाई॥४७६॥[12]

साखी

मन पवन पर पल है दसहूं ध्यान बिचारि।[12]
राधि साधि एक मग मिलाय उतरि जाय भौ पार॥१७॥[13]

---

१ (ग) (घ) धन देयाला = दीन दयाला। (ग) भगति = भक्ति।
२ (ग) भगति = पद भगति। (घ) भगति = इह भगति।
३ (ग) (घ) भय = भौ। (ग) (ङ) भय = भै। (ख) (घ) (ङ) भरम = भम। (ग) (घ)
(ङ) करम = कर्म।
४ (ग) (ग) (घ), (ङ) बृढ़ि = दृढ़ि। (ङ) बिचारिकै = बिचारिकै। (ग) (घ) बिरला जन
धरइ ज्ञान ही।
५ (ग) समाधि = साधि। (घ) समाधि = समाधि।
६ (ङ) बिन बाहर = बिन्हरा।
७ (घ) छाडि = छाड़। (ग) छाडि = छोरि। (घ) छाडि = छूटा। (ङ) अन्ती = अन्ति।
८ (ग) (ग) एक = ऐक।
९ (ग) सो = सो। (ख) (घ) (ङ) नहि = नहिं (घ) कीन्हा = कीन्ह।
१० ख्याति पद में 'करन न करन निर' है (ग) निरमै = निर्भै। (ग) अनपरहा = आनपरहा।
(ग) (ग) (घ) (ङ) भजन = भंजन। (घ) (ङ) भक्ति = भक्ती। (घ) ( ) कारन = कारन।
११ ख्याति पद में का व पहले और है। (ग) ओ = जा। (ख) ओ = जो।
(ग) गारुड = गारुड। (ग) धरै = धरि है। (ग) लाई = लोलाई।
१२ (ग) (घ) पवन = पवना। (ग) पल है = पल ही। (ग) पल है = पल। (ङ)
(ङ) पेल है = पेले। (ग) दसहू = दसौ।
१३ (ग) (घ) (ङ) एक = ऐक। (ग) (ग) मा = भा। (घ) (ङ) भा = भव।

एक नाम अधरि नहिं भाई । अनि भूलो धंधा लपटाई ॥५०२॥[1]
धार पताल खोर असमाना । ब्रम्हादिक सो खोजहिं जहाना ॥५०३॥[2]
आदि अंत मध्य काया बिराजै । अविगति नाम छत्र सिर छाजै ॥५०४॥[3]
एह खोजे तव मोह कहु पावै । बिना केवट को नाव चलावै ॥५०५॥[4]
दरिया कहै सुनो संसारा । निरखै नाहि त भूलहु गवारा ॥५०६॥[5]
आदि अत एक होए आवै । घरि घरि भेख जगत सब गावै ॥५०७॥[6]
आदि अंत के मरम न पाई । देखत जग भूला दुनियाई ॥५०८॥[7]
भरमे मगु मति भर्म भुलाना । बसि माया संग भया देवाना ॥५०९॥[8]
अंतकाल जब आए तुलाना । मुख से बचन भूला सम भ्याना ॥५१०॥[9]
धन धाम सो माया बिराना । जब जम पकरि के खैंचल प्राना ॥५११॥[10]

छन्द

भगति भाव मनूप दिढ़ता ध्याम जो गुन गावहीं ।[11]
सार सब्द प्रतीति करि करि मूल निगम लखावहीं ॥[12]

---

१ (ख), (घ) (ङ) अधरि = अधरि । (ग) अधरि = औरि । (ख) भूले = भूलहु ।
२. (ख) (घ), (ङ) धार = धारह । (ग) धार = धारे ।
३ (ख) (ग), (घ) (ङ) मध्य = मधि ।
४ (घ) एह = इह । (घ) खोजे = खोजै । (घ) मोह = सह । (ङ) कहु = के । (ग) केवट = केवोट ।
५. (ख) दरिया = दरी (चौ० सं० ५ ६ से आगे की चौपाइयाँ पृ ८ के बाद है) । (ङ) कहै = कहै । (ग) (घ), (ङ) संसारा = ससारा । (ख), (घ) त = तो । (ङ) त = तब ।
६ (ख) एक = एक ।
७ (ख) (ग) (घ), (ङ) के = की । (ख) (घ) जग = जगत । (ग) जग = जक ।
८. (ख) (ग) भरमै = भरमे । (क) भरमै मोह गहै मति भुलाना । (ख) भरमे मगु है मति भुलाना । (घ) भरमे मगु ममिता लपटाना । (ङ) भरमे मगु माया मति भुलाना । (ख) बसि माया संग भया देवाना = मुख से बचन भूल सम भ्याना । (ङ) संग = सम । (घ) भया = भै । (घ) (ङ) भया = भए ।
९ (ख) ५१० संख्यक चौपाइ का पाठाभाव है ।
१० (ख) (घ) धन = धन्य । (ग) माया = माया । (ङ) के = कै । (ख) खैंचल = खैचल । (ग) खैंचल = खीचहीं । (घ) खैंचल = खीचल । (ङ) खैंचल = खीचहै ।
११ (ख) भगति भाव = भाव भक्ति । (ख) दिढ़ता = दिढ़त ।
१२. (ग) सार = सत । (घ) प्रतीति = परतीत ।

तीनि लोक सम कहीं पुकारी । पढ़ गीता सम बेद बिचारी ॥४९१॥[1]
भगतहु कारन जगत भिखारी । प्रेम रचित नहिं छिन बिसारी ॥४९२॥

साखी

कहैं दरिया एक नाम है मिरथा है संसार ।[2]
प्रेम भगति जब ऊपजै, उतरि जाए भव पार ॥३८॥[3]

चौपाई

भाव भगति जो हिरदा लाव । हीरा नाम सो परगट पाव ॥४९३॥[4]
भूले फिरहिं बिना गुर ग्यानी । सत सब्द नहिं पावहि प्रानी ॥४९४॥[5]
सुनहु संत सब्द निजु सारा । दयानिधी भवसधु उबारा ॥४९५॥[6]
भगतवछल संतन्ह सुखदाई । जनके दुख मेट प्रभुताई ॥४९६॥[7]
भगति हेतु प्रगट होए जाई । जब सुमिरै निज प्रेम लगाई ॥४९७॥[8]
जग महिमा गति अपरमपारा । नाम ना भूलै करो बिचारा ॥४९८॥[9]
जनके दुख प्रापु दुख पाव । संकट होए तब जाए छोड़ाव ॥४९९॥[10]
कहां कहां नहिं भए सहाई । जिन्हि जिन्हि भगति प्रेम सो लाई ॥५००॥[11]
हिरदै प्रेम पिरम दिखाई । भगतहु होए एक फिरि आई ॥५०१॥[12]

---

१ (क) (ख) (घ) कहीं = कहे । (ग) पढ़ गीता बेद बिचारी । (ग) पढ़ गीता सम करम बिचारी । (घ) पढ़ गीता हद बेद बिचारी । (ड) पढ़ै गीता हद बेद बिचारी ।
२ (क) कहै = कहै । (ख) एक = यक । (घ) मिरथा = मिथ्या ।
३ (क) (ग) उपजै = उपजे । (ग) जाए = जाहि । (ग) भव = भौ ।
४ (ख) (घ) जो = जब । (ग) जो = जबी । (ड) जो = जौ । (ग), (ग), (घ) (ड) सो = सो । (ख) पावै = पा पावै ।
५ (घ) (ड) भूले = भूलै । (घ) (ड) नहिं = ना । (ग) (ग) नहिं = नाहि ।
६ (ख) भव = भौ । (ग) भव = भरी । (ग) सधु = सिंधु ।
७ (घ) मगन = मक्त । (ड) जनक = जन के । (ख) (घ) मेट = मेटै ।
८ (ड) हेतु = हेतु । (ग) भगती = भक्ति । (ड) सुमिर = सुमिरै । (ख) (ग) (क) प्रेम = ध्यान ।
९ (ख) (ग) (घ) (ड) महि = महिमा । (ग) (घ) भूलै = भूलै । (ग) करो = कर ।
१० (ख) प्रापु = प्रप । (ख) (ग) संकट = संकट । (घ) संकट होए तब प्रापु छोड़ावै । (ड) संकट होए तब जाए छोड़ावै ।
११ (क) भए = भै । (घ) (ड) सो = सर ।
१२ (ग) प्रेम = होत । (घ) प्रेम = होए । (घ) (ड) प्रेम = रस । (ग), (ग) फिरि = फिरि ।

भरम छूटै एक नाम सहाई । अउरि कुगति का करहु उपाई ॥५२०॥[1]
राह करहु जो पहुँचि सबेरा । अगम पंथ तह जाहु सबेरा ॥५२१॥[2]
करु स्वारथ केहु छेंकै न पावै । ध्यान डोरि पर चढ़ि के धावै ॥५२२॥[3]
खरचि लेहु किछु संग सहाई । बिलम न होए पहुँचै तहँ जाई ॥५२३॥[4]

साखी

जाके पूँजी नाम है, कबहिं ना होवै हानि ।[5]
नाम बिहूना मानवा, जमके हाथ बिकान ॥३६॥[6]

चौपाई

सो सामर्थ के कहौं उपाई । सतनाम चढ़े गुन गाई ॥५२४॥[7]
ना सूझै तब देत देखाई । संत सेवा सतगुर पद पाई ॥५२५॥[8]
एक कोस जात्रा चलि जाई । गाठी संमर बांधु बनाई ॥५२६॥[9]
इह तौ अपरमपार है जाना । गाठि संमारी लेहु सुजाना ॥५२७॥[10]
जानत नर त्रिहुलोक सुख पाई । ताते भूलि रहा दुनियाई ॥५२८॥[11]
आगे सुखसागर बहुतेरा । जो मन करै ध्यान निजु फेरा ॥५२९॥[12]

---

१ (ख), (ग) (ङ) छूटै = छूटे । (ख) (ङ) अउरी = अवरि । (घ), (ङ) अउरि = औरि । (घ) (ङ) कुगति = कुगति । (ग) कुगति = कुकि ।
२ (ङ) जो = जो । (ख) (ग) (घ) पहुँचि = पहुँचु । (ख) सबेरा = सबेरा । (ख) तहँ = जहाँ । (ख), (ग), (घ) (ङ) सबेरा = बसेरा ।
३ (ख) करहु समार केउ छेंके ना पावै । (ग) कर समार केव छेंके न पावे । (घ) कर समार केव छेंके न पावै । (ङ) कर संमहर केउ छेंके ना पावै । (ख) पर = चढ़ ।
४ (ख), (घ) खरचि = खरच । (घ) खरचि = खर्च । (ख) (घ), (ङ) (ङ) किछु = कछु । (ख), (ग) (घ) (ङ) बिलम ना होए तहाँ पहुँचै जाइ ।
५. (ख) (घ) (ङ) जाके = जाकी । (ग) जाके = जाके ।
६ (घ) बिहूना = बिहीना । (ख) हाथ = ह । (घ) बिकान = बिकानि ।
७ (ख) (ग) (घ) (ङ) के = की । (ख), (घ), (घ) (ङ) कहौं = कहो ।
८ (ख) ५१५ संख्यक चौपाई अपठित । (ग), (ङ) सतगुर = संतगुर ।
९ (ख) (ङ) जात्रा = जतरा । (ख), (घ) संमर = सामरि । (ग) गाठी समर लेहु सुनाई (ङ) संमर = समर ।
१० (ख) (ग) इह = एह । (ख) तौ = ते । (ग) तौ = तभी । (ङ) तौ = तब । (ख) (ग) (ङ) संमारि = समर । (घ) संमारि = सामरि ।
११ (ङ) निजु = निरखु ।
१२. (ख) (घ), (ङ) जो मन करै = जो मन करी ।

प्रेम प्रीति लगाए निश्चै बहुरि ना भवजल आवहीं ।[1]
काया सोधु कपाट अजपा मधं में भक्ति पावहीं ॥६॥[2]

सोरठा

अलि मंदिल में बास, बारिज वारि के ऊपरे ।[3]
सुनेवो भंज सुबास, निर्मनि प्रेम मन पद में ॥६॥[4]

चौपाई

जब उनमुनी प्रेम परगासा । खुलै कंज पुंज निजु बासा ॥५१२॥[5]
मधुकर राज बास सुख पावै । लपटि ध्यानि सुपट खुलि धावै ॥५१३॥[6]
सो पद पंकज दिल में लागा । प्रेम प्रीति मन भौ बएरागा ॥५१४॥[7]
भौ संसै भव जाल भोराई । प्रेम प्रीति नाम निजु पाई ॥५१५॥[8]
मन के संसै जे निरुआरी । अभै लोक तारन पएसारी ॥५१६॥[9]
पुरुष नाम निश्चै तब पावै । सपन कबहिं ना इह जग आवै ॥५१७॥[10]
सतगुर आगे सुरग बहुतेरा । सतपद का जो करै निबेरा ॥५१८॥[11]
हिरदै ध्यान नाम लो लावै । बिमल चरन पद पंकज पावै ॥५१९॥[12]

---

१ (म) भा = भ । (ग) भव = भवो । (घ) भव = भौ ।
२ (घ) मधं = मधर । (म) (घ) (ङ) मधं = मध्य । (ग) (ग) (घ) आवहीं = आवहीं । (ङ) आवहीं = पावहीं ।
३ (ख), (ग) (घ) (ङ) वारि = वारी । (ग) (ख) (घ) (ङ) ऊपरे = ऊपरे ।
४ (घ) सुनेवो = सुन्न । (ग) (ग) (घ) (ङ) पद = पद्म ।
५. (घ) (ङ) उनमुनी = उनमुनी । (घ) परगासा = परगास । (ङ) परगासा = परगासा ।
(ख), (ग) खुलै = खुले । (घ) पुंज = पुंज ।
६ (घ) राज = राजा ।
७ (ग) भौ = भए । (म) भा = भयो । (ग) (घ) बएरागा = बैराग ।
८ (घ) (ग), (घ) (ङ) भौ = भय । (ग) संसै = संसै । (घ) भव = भवा । (ङ) प्रीति = प्रीति ।
९. (घ) (ग), (घ) (ङ) मनकी कहै । (ग) जे = जो । (घ), (ग), (घ), (ङ) निरुआरी = निरुआरा । (ग) अभै = अभय । (ख) (घ), (ङ) पएसारी = पैसारा । (ग) पएसारी = पसारा ।
१० (ङ) पुर्ष = पुरुष । (ङ) सपन = सपने । (ग) (ख) (घ) इह = इहा ।
११ (ग) सतगुर आगे सुरग । (ग) जो = जब । (घ) जो = जरो । (ङ) जो = जो । (घ) (घ) करै = करे ।
१२. (ख), (ग) (घ), (ङ) लो = लव ।

सो मन निरमल निरखै रंगा । उपजै ग्यान साधु के संगा ॥५३८॥[1]
एक नाम प्रेम सुख चैना । करै भगति चोखे सत मना ॥५३९॥[2]
सोइ करो हंसा सुख पावा । नहिं तो फिरि काल भरमावै ॥५४०॥[3]
जाहिं जम क्रिया जग माहीं । सतगुर चरन सुधा सम नाहीं ॥५४१॥[4]
सब घट व्यापिक एकै रामा । सरग पताल बसै सब धामा ॥५४२॥[5]
एकै ब्रह्म सकल घट सोई । ताहि चिन्हहु सतसंगति होई ॥५४३॥[6]
तिन्ह यह रचा सकल जहाना । आदि अंत सत परवाना ॥५४४॥[7]
कीट पतंग सबन्हि में व्यापै । इह सब चिन्है ग्यान निधु आपै ॥५४५॥[8]

साखी

मरकट नग नहिं चीन्हहीं, नगन फिरै बन मांझ ।[9]
नाम बिमुख नर बिकल है बरु जननी होए बांझ ॥४२॥[10]

चौपाई

जो नग लाल नाम महिं चीन्हा । मरकट मुठि अपनहिं जिव दीन्हा ॥५४६॥[11]
सो सठ रतनंठ मति का हीना । साधु संगति नहिं चिन्है बिहूना ॥५४७॥[12]

---

१ (ख) सो मन निरखै निर्मल रंगा । (क) (घ) उपजै = उपजे । (ख), (ग) कै = के ।
२ (ग) करै = करे । (ख), (ग) चोखै = चोखे ।
३ (ख) हंसा = हंस । (क) (ग), (घ) (ङ) नहिं तो = नाहिं तो । (ख) (घ) फिरी = फेरि । (ङ) फिरी = फेरि । (ग) (ङ) काल = कालि ।
४ (ख) जाहिं = जाह । (ङ) जम्म = जम । (क) क्रिया = मिरता । (ग), (घ) क्रिया = मिथ्या ।
५. (घ) एकै = एकहि । (क) (ङ) एकै = एकै । (ख) (ग) सरंग = सरग । (घ), (ङ) सरंग = सर्ग ।
६ (घ) (ङ) एकै = एकै । (ख) (ग) (ङ) संगति = संगति ।
७ (ख) तिन्ह यह रचा = तिन्हि इह रचा । (ग) तिन्ह यह रचा = तिन्हि तिन्हि रचा ।
८. (ख) सबन्हि में व्यापै = सबहि व्यापे । (घ) सबन्हि में व्यापै = सबमें । (ङ) सबन्हि में व्यापै = सबमह । (क), (ग) व्यापै = व्यापे । (क) इह = एह । (ख) चिन्है = चिन्ही । (घ) चिन्है = चिन्हे । (क) (ङ) चिन्है = चिन्हहु । (ख), (ग) (घ) (ङ) आपै = आपे ।
९. (ख) (ग) (ङ) नहिं = नाहि । (घ) नहिं = ना । (ख) (घ), फिरै = फिरे । (ग) (ङ) फिरै = फिरहि ।
१० (ख), (घ) (ङ) बिमुख = बेमुख । (ख) (घ) (ङ) बरु = बहु । (घ) बरु = बेवो । (घ) होए = हो ।
११ (ख) जो = जब । (ग), (ङ) जो = जौ । (ख), (ग) (घ) महिं = माहि । (ख) (ग) अपनहिं = आपन । (घ) अपनहिं = अपने । (ङ) अपनहिं = आपन ।
१२. (ख) संगति = संगति । (घ), (ङ) संगति = संगति । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (घ) बिहूना = बीना । (घ) बिहूना = बेहूना ।

मन की दौर आपु बुझि आवै । तब घट में किछु परचै पावै ॥५३०॥[1]
मनहिं में करता धरता अहई । मन एह राह बिगारन चहई ॥५३१॥[2]
जौं मन ग्यान कैद करि आवै । तब मन साँचा सतगुर पावै ॥५३२॥[3]

साखी

कहै दरिया मन कैद करु, जो चाहो सतनाम ।[4]
करम काटि भर निजु पुर, जाए बसो निजु धाम ॥४०॥[5]

चौपाई

मनहिं चलावै मनहिं फिरावै । मनहीं तीरथ बरत करावै ॥५३३॥[6]
जौं मन ग्यान कसौटी लावै । तब मन ग्यान नाम निजु पावै ॥५३४॥[7]
मनहीं मन मथार कराय । मनहीं मन की पूजा चढ़ाव ॥५३५॥[8]
जौं मन मूरति आपु लगावै । तब जोगी सोए सिद्ध कहावै ॥५३६॥[9]

साखी

मनके जीते जीतिया, मन हारे भौ हानि ।[10]
मनहिं कोलाए ग्यान करु, तब सुरत उपजै आनि ॥४१॥[11]

चौपाई

कहै दरिया मन रहमत फौरै । ऐसे चोर सकल जिव घेरै ॥५३७॥[12]

---

१ स्वीकृत पाठ में 'मन' के पहले 'जो' है। (ख) (घ), (ङ) जो मनकी दवर बुझि आवै । (ग) जबो मनकी दौर बुझि आवै । (क) तब घट में परचै किछु पावै । (ग) (घ) (ङ) तब घट में परचै कछु पावै ।
२. (ग) मनहिं = मनइ । (ग) एह = इयह । (घ), (ङ) एह = इह ।
३ (ग) जौं = जो । (ख) (ग) (घ), (ङ) साँचा = साच ।
४ (ग) जो = जबो । (घ), (ङ) जो = जा ।
५ (ग) (घ), (ङ) करम = कम ।
६ (ग) मनहिं = मनइ । मनहिं = मनइ । (ग) मनहिं = मनइ । (घ) बरत = बर्त ।
७ (ग) जा = जो । (ख) (ग) (घ) (ङ) कसौटी = कसवटी ।
८ (ग) मनहिं = मनइ । (ग) मनहिं = मनइ । (ख), (घ) मन की = मनके । (घ) मन की = मनका । (ङ) मन की = मनके ।
९ (ङ) जौं = जो । (ग) सोए सिद्ध = सोइ सीधा ।
१० (ग) मनके जीते = मन जीत । (ख) (ग) (घ) मन हारे = मनके हारे । (ङ) मन हारे = मनके हारे । (ग) भौ = भयो । (ङ) भौ = भए ।
११ (ग) मनहिं कोलाए = मही सिसोर । (ग) मनहिं कोलाए = मनइ सिमोऐ । (घ) मनहिं कोलाए = मनही सिमोए । स्वीकृत पाठ में 'तब सुरत उपजै' के बदले 'उपजी' है । (ख), (ग) (घ) उपजै = उपज ।
१२ (ङ) कहै = कह । (ग) घेरै = घिर । (ग) (घ), (ङ) घेरै = घरे ।

जेहि पूजे से देवता होई । पूजै तेहि आन नहिं कोई ॥५६३॥[1]
सोगता पूजे सभ संसै मेटाई । तब हंसा छपलोक समाई ॥५६४॥[2]
जाए छपलोक बहुरि नहिं अवना । जन्म जुग सुखसागर पवना ॥५६५॥[3]
मूल तहवां करिहैं बहुतेरा । बहुरि ना करिहै इह जग फेरा ॥५६६॥[4]
निजु गहि नाम प्रेम लौ लावै । दास होए सब जग समुझावै ॥५६७॥[5]
तबहीं ग्यानी साँच कहावै । जो करता के भेद बतावै ॥५६८॥[6]
मन ग्यान एक रंग मिलावै । तब मन ग्यान नाम एक पावै ॥५६९॥[7]
सतगुर सब्द प्रेम निजु सारा । संत साधु मिलि करो विचारा ॥५७०॥

छन्द

गहु गहिर ग्यान विचार ते सत सब्द में धुनि लावहीं ।[8]
इह जान दे बहु बात बकवा सब्द नहिं चिह्न पावहीं ॥[9]
तहं अगम है दरियाव जिसमें सब्द कोइ कोइ पावहीं ।[10]
तहं कंवल फूले भंवर भूले जोति अति छवि छावहीं ॥१०॥[11]

सोरठा

दूजा दोविधा डारि एक नाम संसार में ।[12]
भवजल जाहि न हारि, जिस्नै नाम विचारिए ॥१०॥[13]

---

१ (ख), (ग) पूजे = पूजै । (छ) जहि पूजे तेहि आनु नाहि कोई । (ग) जे पूजे तेहि आनं नाहि कोई ।
२ (ग) पूजे = पूजे । (ग) संसै = संसे ।
३ (ख) नाहि = ना । (ख), (ङ) जन्म = जनम ।
४ (ख) (घ) (ङ) करिहैं = करिहै । (ख), (घ) (ङ) करिहै = करिहैं । (ख) (ग) (घ) (ङ) इह = इहा ।
५ (क) निजु नाम । (ख) (घ) (ङ) (च) लौ = लव ।
६ (ङ) जो = जो । (ङ) के = कै ।
७ (ग) एक = यक । (घ) एक = निजु ।
८ (ग) ते = तै ।
९ (ग) (घ) इह = यह ।
१० (ख) (ग) (घ) (ङ) सब्द = भेद ।
११ (ग) कंवल = कमल । (घ) (ङ) फूले = फूलेवा । (घ), (ङ) भूले = भूलवो ।
१२. (ग) नाम = नामहि ।
१३ (ग) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवो । (ख) विचारिए = विचारिहे । (ङ) विचारिए = विचारिए ।

सत नाम निजु इह जग तारै । सोइ नाम गति काहे बिसारै ॥५४८॥[1]
परम गुरु थोए पुरुष समाना । अनंत जुग ताको असथाना ॥५४९॥[2]
जानहु तेहि सत परवाना । महि मंडल धरती असथाना ॥५५०॥[3]
है सरवग्य समन्हि तैं न्यारा । जीवन मुक्ति है जिन्द करारा ॥५५१॥[4]
जाबर आदि अत बिसतारा । अवनि पताल महि मडल तारा ॥५५२॥[5]
आतमदेव मन की पूजा । आतम छोड़ि देव नहिं दूजा ॥५५३॥[6]
पढ़ि पढ़ि पंडित बेद बखाना । पत्थल पूजत फिरत भुलाना ॥५५४॥[7]
मूरति हिरदै करो बखाना । तब गुम होइ बहु अमर ग्याना ॥५५५॥[8]
जेहि कारन सठ तीरथ जाई । रतन पदारथ इह वहि पाई ॥५५६॥[9]
पढ़ि पंडित का बद बखाना । सो घट घट नहिं खोजै ग्याना ॥५५७॥
मन की मथनि करु निज ग्याना । ढूंढ़ि रहो एक गुप्त समाना ॥५५८॥[10]
देस धावहु का धंधा भाई । निरखि होए तबहि निजु पाई ॥५५९॥[11]
निरखै ग्रन्थ सत है सारा । निरखै उतारहिं भव जल पारा ॥५६०॥[12]
निरखै तेहि मिलहीं करतारा । निरखै भगति प्रेम निजु सारा ॥५६१॥[13]
आतम दरस दिसै जेहि प्रानी । कबहिं ना होवे भवजल हानी ॥५६२॥[14]

१ (क) (ख), (घ) इह = इमा । (ख) (ग) तारै = तारे । (ङ) काहे = कहै । (ख) (ग) बिसारै = बिसार ।
२ (ख), (ग) पर्मगुर आए पुर्ष समाना । (घ) प्रथमहि आए पुरुष समाना । (ङ) प्रथमहि आए पुरुष समाना ।
३ (ख), (ङ) असथाना = असथाना ।
४ (ख) (घ), (ङ) सरवग्य = सर्वज्ञ । (ख) समन्हि = सन्हि । (घ) (ङ) समन्हि = समन्ह । (ख) (ङ) तैं = त । (ख) (ङ) जीवन = जीवनि । (घ), (ङ) मुक्ति = मुक्ति ।
५. (ङ) जाबर = जाबरि । (ग) अवनि = भौनि ।
६ (ख) (ग) (घ) (ङ) की = का । (ख) (ग), (घ) (ङ) महि = माहि ।
७ (घ), (ङ) फिरत = फिरहि ।
८ (ख) हिरदै = हृ[illegible] । (ग) (ङ) गुम = गुह । (घ) तब गुह होइ बहु मिमत ग्याना ।
९ (ख) (ग) (घ) इहवहि = इहई ।
१० (ख), (ग) (घ), (ङ) नहिं = नहि । (ख), (ग) खोजै = खोज ।
११ (ख) (ङ) गुप = गुउन ।
१२. (ख) देस धावहु धांधा भाइ । (ग) धावहु = ध्यावहु ।
१३ (ख) निरखै ग्रन्थ सत है सारा । (ग) (घ) निरखै ग्रन्थ सत करतारा । (ङ) निरखै ग्रन्थ है करतारा । (ग) निरखै भवा जल उतरहि पारा । (ङ) उतरहि = उतरैही ।
१४ (ग), (ग) (ङ) मिलहीं = मिलहि । (ग) भगति = भक्ति ।
१५ (ग) दिसै = दिसे । (ख) जेहि = तहि । (घ) भव = भवो ।

जेहि पूजै से देवता होई । पूजै तेहि जान नहिं कोई ॥५६३॥[1]
भोलवा पूजै सब संसै मेटाई । तब सुवा छपलोक समाई ॥५६४॥[2]
जाए छपलोक बहुरि नहिं अवना । जन्म जुग सुखसागर पवना ॥५६५॥[3]
मूल सहुंवा करिहैं बहुतेरा । बहुरि ना करिहैं इह जग फेरा ॥५६६॥[4]
निजु गहि नाम प्रेम लौ लावै । दास होए सब जग समुझावै ॥५६७॥[5]
तबही ग्यानी सोच कहावै । जो करता के भेद बतावै ॥५६८॥[6]
मन ग्यान एक रंग मिलावै । तब मन ग्यान नाम एक पावै ॥५६९॥[7]
सतगुर सब्द प्रेम निजु सारा । संत साधु मिलि करो विचारा ॥५७०॥

छन्द

गहु गहिर ग्यान बिचार ते सत सब्द में पुनि लावहीं ।[8]
इह जान दे बहु बात बकता सब्द नहिं दिढ़ पावहीं ॥[9]
तहं अगम है दरियाव दिलमें सब्द कोइ कोइ पावहीं ।[10]
तहं कंवल फूले भंवर भूले जोति अति छवि छावहीं ॥१०॥[11]

सोरठा

दूजा दोविधा डारि एक नाम संसार में ।[12]
भवजल जाहि न हारि, निज्मे नाम बिचारिए ॥१०॥[13]

---

१ (ख), (ग) पूजै = पूजे । (ख) जेहि पूजै तेहि जानु नाहि कोई । (घ) जे पूजै तेहि जान नहिं कोई ।
२. (ग) पूजै = पूजै । (ग) संसै = संसै ।
३ (ख) नहिं = ना । (ख), (ङ) जन्म = जनम । (ग), (घ) (च) करिहैं = करिहैं । (घ), (घ) (घ)
४ (ख) (ग) (घ) करिहैं = करिहै ।
(ङ) इह = इया ।
५ (क) निजु नाम । (ख) (घ) (च), (ङ) लौ = लव ।
६ (ङ) जो = जी । (ठ) के = कै ।
७ (ख) एक = यक । (ख) एक = मिल ।
८ (ग) ते = से ।
९ (ख) (घ) इह = एह ।
१० (घ) (ग) (घ) (ठ) सब्द = भेद ।
११ (ग) कंवल = कमल । (ख) (ठ) फूले = फूलेवा । (घ), (ङ) भूले = भूलेवो ।
१२. (घ) नाम = नामहि ।
१३ (ग) (घ) भव = भौ । (घ) भव = भवो । (ग) बिचारिए = बिचारिके । (ङ) बिचारिए = बिचारि ।

चौपाई

जीवन मुक्ति है एक बेवहारा । ताहि सुमिरै जिव होए उवारा ॥२७१॥[1]
प्रेम भगति जिन्हि केवल आना । ओनिर्मङ्गन महँ माकर प्राना ॥२७२॥[2]
सतनाम जपहु बेवहारा । बिना नाम पसुभा अवतारा ॥२७३॥[3]
एक नाम जो हिरदै लावे । जनम जनम के पाप नसावै ॥२७४॥[4]
सतनाम सभ ते अधिकारा । पूजहु देव का करहु विचारा ॥२७५॥[5]

साखी

सतनाम अम्रित नहिं पानेउ नहिं पाएउ पैसार ।[6]
कहे दरिया जग भरमेउ, एक नाम बिनु संसार ॥४३॥[7]

चौपाई

सतगुर ध्यान रहो लौ लाई । मेटहिं जरा जिव जम नहिं खाई ॥२७६॥[8]
जनम जनम के प्राछित जाव । निरकेवल होए छपलोक सिधाव ॥२७७॥[9]
करहु ध्यान सतगुर के सेवा । राकन मही का पूजहु भेवा ॥२७८॥
निहतत्तु छोड़ि जो तत्तु बिचारी । सो हंसा छपलोक सिधारी ॥२७९॥[10]
गूंगा होए अम्रित सो पाव । आपु चखी फिरि औरि चखाव ॥२८०॥[11]

---

१ (क) (ग) मुक्ति है = मुक्ति । (ख) (घ) ताहि = ता । (क), (ग) (घ) सुमिरै = सुमिरे ।
२ (क) (ग) (ङ) भगति = भक्ति । (घ) (ङ) महँ = मे ।
३ (क) भान = देर । (ग) अवतारा = अवतारा ।
४ (क) (ग) (घ) जो = जौ । (ग) (ङ) के = कै । (घ) के = का ।
५ (घ) (घ) ते = तें ।
६ (क) ईन नाम अमी नहि पायौ । (ग) ईन नाम अम्रित नहि पाए । (घ), (ङ) ईन नाम अम्रित नाहि पायजो । (क) नाहि पावै पैसार । (ग) नाहि पावै पदसार । (घ) (ङ) नहि पए परसार ।
७ (क) (घ), (घ) (ङ) भरमेउ = भरमेउ । (क) नाम बिना सब सारा । (ग) नाम बिना संसार ।
८ (घ) (घ) (ङ) लौ = लव । (ग), (ग) मेटहि = मेटहिं । (क) जीव = जी ।
९ (घ) के = कै । (ग) (ग) (घ) (ङ) सिधावै = समावै ।
१० (क) निहतत्तु = निहतत्त । (ग) (घ) (ङ) बिचारी = बिचारै । (ग) (ग) (ग) (ङ) सिधारी = सिधारै ।
११ (क) चखी = चखी । (ग), (ङ) फिरि = परि । (ङ) (घ) (ङ) औरि = अवरि । (क) चखावै = चखावै ।

जेहि पूजै से देवता होई । पूजै तेहि आन नहिं कोई ॥५६३॥[1]
बोलता पूजै सब संसै मेटाई । सब हंसा छपलोक समाई ॥५६४॥[2]
जाए छपलोक बहुरि नहिं आवना । जन्म जूग सुखसागर रहना ॥५६५॥[3]
सुख तहंवा कन्हिं बहुतेरा । बहुरि ना करिहै इह जग फेरा ॥५६६॥[4]
निजु गहि नाम प्रेम लौ लाव । दास होए तब जम समुझाव ॥५६७॥[5]
तबहीं ग्यानी सोच बहाव । जो करता के भेद बताव ॥५६८॥[6]
मन ग्यान एक रंग मिलाव । तब मन ग्यान नाम एक पावे ॥५६९॥[7]
सतगुर सब्द प्रेम निजु सारा । संत साधु मिलि करो बिचारा ॥५७०॥

छन्द

गहु गहिर ग्यान बिचार से सत सब्द में धुनि लावहीं ।[8]
इह ज्ञान दे बहु बात बकता सब्द नहिं दिढ़ लावहीं ॥[9]
तहं अगम है दरियाव जिसमें सब्द कोइ कोइ पावहीं ।[10]
तहं कंवल फूले भंवर भूले जोति अति छबि छावहीं ॥१०॥[11]

सोरठा

दूजा दोबिधा डारि, एक नाम संसार में ।[12]
भवजल जाहि न हारि निसी नाम बिचारिए ॥१०॥[13]

---

१ (ख), (ग) पूजै = पूजे । (ख) जेहि पूजे तेहि जानु नाहि कोई । (घ) जे पूजे तेहि आन नाहि कोई ।
२ (ग) पूजै = पूजे । (ग) संसै = संसे ।
३ (ख) नाहि = ना । (ख), (ङ) जन्म = जनम ।
४ (ख) (ग) (घ) करिहै = करिहे । (ख), (ग) (घ) करिहै = करिहैं । (ख) (ग) (घ) (ङ) इह = इमा ।
५ (क) निहु नाम । (ख) (ग) (घ) (ङ) लौ = लय ।
६ (ङ) जो = जौ । (ख) के = कै ।
७ (ख) एक = एक । (ख) एक = मिल ।
८ (घ) से = तै ।
९ (ख) (घ) इह = यह ।
१० (ख) (ग) (घ) (ङ) सब्द = भेद ।
११ (घ) कंवल = कमल । (घ) (ङ) फूले = फूलेवा । (घ), (ङ) भूले = भूलवो ।
१२ (घ) नाम = नामहि ।
१३ (ग) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवो । (ग) बिचारिए = बिचारिके । (ङ) बिचारिए = बिचारि ।

चौपाई

जीवन मुक्ति है एक बेवहारा । ताहि सुमिरै जिव होए उबारा ॥५७१॥[1]
प्रेम भगति जिन्हि केवल आना । जोतिर्मंडल मह मानह प्राना ॥५७२॥[2]
सतनाम जपहु बेवहारा । बिना नाम दमुधा अधनारा ॥५७३॥[3]
एक नाम जो हिरदै लावै । जनम जनम के पाप नसावै ॥५७४॥[4]
सतनाम सभ से अधिकारा । पूछहु देव का करहु बिचारा ॥५७५॥[5]

साखी

सतनाम अमित नहिं पाओउ, नहिं पाएउ पैसार ।[6]
कहे दरिया जग भरमेउ, एक नाम बिनु संसार ॥४३॥[7]

चौपाई

सतगुर ध्यान रहो लौ लाई । भेटहि जग जिव अस नहिं गाई ॥५७६॥[8]
जनम जनम के प्राछित जाव । निरकेवल होए छपलोक सिधाव ॥५७७॥[9]
करहु ध्यान सतगुर के सेवा । सकल मही का पूजहु देवा ॥५७८॥
निहतत्तु छोडि का तत्तु बिचारी । सो हंसा छपलोक सिधारी ॥५७९॥[10]
गूंगा होए अमित सो पावै । मानु मनै फिरि मौनि समावै ॥५८०॥[11]

---

१ (ख) (ग) मुक्ति है = मुक्ति । (ख) (घ) ताहि = ता । (ख), (ग) (घ) सुमिरै = सुमिर ।
२ (ख), (ग) (घ) भगति = भक्ति । (घ) (ङ) मंह = मे ।
३ (ख) नाम = देह । (घ) अधनारा = अधोतारा ।
४ (ख) (ग) (घ) जो = जो । (घ) (ङ) के = के । (घ) के = स
५ (ग) (घ) से = सें ।
६ (ख) हंस नाम पामी नहि पासी । (घ) हंस नाम अमित नहि पाया । (घ), (ङ) हंस नाम अमित नाहि पायेयो । (ख) नाहि पावे पैसार । (ग) नहि नहि पैसार । (घ), (ङ) नाहि पाए पैसार ।
७ (ख) (ग), (घ) (ङ) भरमेउ = भरमाया । (ख) एक बिन संसारा । (ग) नाम बिना संसार ।
८ (ग) (घ), (ङ) लौ = लाय । (ग) (ग) भेटहि = भेटहि । (ग) गाई = गई ।
९ (घ) के = के । (ग) (ग), (घ) (ङ) सिधावै = समावै ।
१० (ख) बिचारी = बिचार । (ग) (घ) (ङ) बिचारी = बिचारे । (ग) (ङ) सिधारी = सिधारे ।
११ (ङ) पावै = पावै । (ग), (ङ) फिरि = फेरि । (ङ) (घ) (ग) समावै = समावै । समावै = समावै ।

जेहि पूजै से देवता होई । पूजै तेहि जाने नहिं कोई ॥५६३॥[1]
दोसता पूजै सभ संसै मेटाई । तब हंसा छपलोक समाई ॥५६४॥[2]
जाए छपलोक बहुरि नहिं अवना । जम जूग सुखसागर पवना ॥५६५॥[3]
पुरुष तहवां करिहै बहुतेरा । बहुरि ना करिहैं इह जग फेरा ॥५६६॥[4]
निजु गहि नाम प्रेम लौ लावै । दास होए तब जग समुझावै ॥५६७॥[5]
तबहीं ग्यानी सोच कहावै । जो करता के भेद बतावै ॥५६८॥[6]
मन ग्यान एक रंग मिलावै । तब मन ग्यान नाम एक पावै ॥५६९॥[7]
सतगुर सब्द प्रेम निजु सारा । संत साधु मिलि करो विचारा ॥५७०॥

छन्द

गहु गहिर ग्यान विचार ते सत सब्द में धुनि लावहीं ।[8]
इह ज्ञान दे बहु बात बकता सब्द नहिं दिढ़ पावहीं ॥[9]
तहं अगम है दरियाव दिलमें सब्द कोइ कोइ पावहीं ।[10]
तहं कंवल फूले भवर भूले जोति अति छवि छावहीं ॥१०॥[11]

सोरठा

दूजा दोविधा डारि, एक नाम संसार में ।[12]
भवजल जाहि न हारि, निज्वै नाम बिचारिए ॥१०॥[13]

---

१ (ख), (ग) पूजै = पूजे । (ख) जेहि पूजे तेहि जानु नाहिं कोई । (ग) जे पूजे तेहि जाने नाहिं कोई ।
२ (ग) पूजे = पूजे । (ग) संसै = संसे ।
३ (ख) नाहिं = ना । (ख), (ग) जम्म = जनम ।
४ (ख) (ग) (घ) करिहैं = करिहै । (ख), (ग) (घ) करिहैं = करिहैं । (ख), (ग) (घ) (ङ) इह = इना ।
५ (क) निजु नाम । (ख) (ग), (घ) (ङ) लौ = लय ।
६ (ङ) जो = जो । (ग) क = है ।
७ (ख) एक = बक । (घ) एक = मिल ।
८ (घ) ते = है ।
९ (ख) (ग) इह = एह ।
१० (ख) (ग) (घ) (ङ) भवर = भेद ।
११ (घ) कंवल = कमल । (घ) (ङ) फूले = फूलेवा । (घ), (ङ) भूले = भूलेवो ।
१२ (घ) नाम = नामहिं ।
१३ (घ) (ङ) भव = भौ । (ग) भव = सवो । (घ) बिचारिए = बिचारिहे । (ङ) बिचारिए = बिचारि ।

चौपाई

जीवन मुक्ति है एक वेवहारा । ताहि सुमिरि जिव होए उबारा ॥२७१॥[1]
प्रेम भगति जिन्हि केवल जाना । जोतिमंडल महं ताकर थाना ॥२७२॥[2]
सतनाम जपहु वेवहारा । बिना नाम पसुआ भवभारा ॥२७३॥[3]
एक नाम जो हिरदै सावै । जनम जनम के पाप कटावै ॥२७४॥[4]
सतनाम सभ ते अधिकारा । पूजहु देव का करहु बिचारा ॥२७५॥[5]

साखी

सतनाम अमिन नहिं पाएउ नहिं पाएउ पैसार ।[6]
कहै दरिया जग भरमेउ, एक नाम बिनु संसार ॥४३॥[7]

चौपाई

सतगुर ध्यान रहा लौ लाई । मेटहिं जरा जिव जम नहिं खाई ॥२७६॥[8]
जनम जनम के प्रासित जावै । निरकेवल होए छपलोक सिधावैं ॥२७७॥[9]
करहु ध्यान सतगुर के सेवा । सकल गही का पूजहु देवा ॥२७८॥
निहतत्तु छोड़ि जो तत्तु बिचारी । सो हंसा छपलोक सिधारी ॥२७९॥[10]
मूमा होए अभिउ सो पावै । आपु चलै फिरि औरि चलावै ॥२८०॥[11]

---

१ (ख), (ग) मुक्ति है = मुक्ति । (ख), (ग) ताहि = ता । (ख), (घ) (च) सुमिरै = सुमिरे ।
२ (ख), (ग), (ङ) भगति = भक्ति । (घ) (ङ) महं = मे ।
३ (ख) नाम = नेह । (घ) भवतारा = भवोवारा ।
४ (ख), (ग) (च) जो = जौ । (ग) (ङ) के = कै । (घ) के = का ।
५ (ग) (घ) ते = तें ।
६ (ख) हंस नाम धर्मा नहि पावै । (ग) हंस नाम अमिन नहि पाए । (ख), (ङ) हंस नाम अमिन नाहि पावेगो । (ख) नाहि पावै पैसार । (घ) नाहि पावै पारस्तर । (ए), (ङ) नाहि पए पसार ।
७ (ख) (ग), (घ) (च) भरमेउ = भटकसी । (ख) नाम बिना संसारा । (ग) नाम बिना संसार ।
८ (घ), (घ), (ङ) लौ = लव । (ख), (ग) मेटहि = मेटिहि । (ख) जीव = जी ।
९ (च) के = कै । (ग) (ग), (घ), (ङ) सिधावै = समावै ।
१० (ख) सिधारी = सिधार । (ग) (घ) (ङ) सिधारी = सिधारे । (ख), (घ) (च) (ङ) सिधारी = सिधारे ।
११ (ङ) चलै = चलै । (ग), (घ) फिरि = फेरि । (ग) (घ), (ङ) औरि = अवरि । (ङ) चलावै = चलावै ।

तिरगुन त मोए रंग है भीन्हा । भजर अमान सतपुर्सहि चीन्हा ॥६०१॥[1]
सत सुक्रित का बीरा पाव । सो हंसा सतलोकहिं जाव ॥६०२॥[2]
अमी तत्त पिय निजु ग्यानी । कबहिं ना होवै भवजल हानी ॥६०३॥[3]

साखी

नेम अचार खटकरम नहीं, नहीं पात को पान ।[4]
चोला पंन्न ठहर नहीं, मीठा देव निशान ॥४७॥[5]

चौपाई

मीठा है परसाद हमारा । समुझि सिह कोइ ग्यान करारा ॥६०४॥[6]
पहिले मुख में प्रेम लगावै । तब पीछे ल हाथ उठावै ॥६०५॥[7]
जो दाफा जन होए हमारा । ताहि देव परसाद विचारा ॥६०६॥[8]
देव परवाना सत की बानी । चरना-अम्रित लेव मानी ॥६०७॥[9]
जोग जुगति निजु गहवै बानी । ताको काल करै नहिं हानी ॥६०८॥[10]
अदब अदाब सलाम जो करई । एके हाथ से सिर पर धरई ॥६०९॥[11]

---

१ (ख) (ग) (घ) (ङ) तिरगुन = तिगुन । (घ) (ङ) सतपुर्सहिं = सतपुरुषहि ।
२ (ख) (घ) लोकहिं जावै = लोकहि जाव । (घ) लोकहिं जाय = लोक सिधावै ।
३ (ख) (ङ) पिये = पीये । (ग) (घ) पिये = पीवै । (ख) ग्यानी = ग्याता । (ङ) ग्यानी = ग्याता । (ख) आगम दरस माया बिलगाता । (ग) (घ) (ङ) आगम दरस माया बिलगानी ।
४ (ख) (ग) (घ) (ङ) करम = कर्म । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहीं = नाही । (ख) (ग), (घ) (ङ) नहीं = नाही ।
५ (ग) (घ) (ङ) नहीं = नाही ।
६ (ग) सिहै = सोहि । (ग) (घ) सिहै = सिहे । (ङ) २७४ संख्यक चौपाई की अर्द्धाली अप्राप्त है ।
७ (ग) पीछे ले = पाछे ले । (ग) पीछे ल = पाछे ल । (ङ) पीछे ल = पीछै ले । (घ) लं = ल ।
८ (घ) दाफा = दफा । (घ) हमारा = तुम्हारा ।
९ (ग) (घ) (ङ) की = क । (घ) की = के । (घ) चरना = चरन । (घ) चरना = चर्ना । (घ) अम्रित = आम्रित ।
१० (घ) जुगति = जुक्ति । (घ) (ङ) जुगति = जुगुति । (ग) गहवै = गहवै । (ख) गहव = गहवे । (घ) गहव = गहेव । (ङ) गहव = गहैवै । (ग) (घ) (घ) (ङ) ताको = ताके । (ग) (ग) करै = कर । (ग) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
११ (ख) (ग) (घ) (ङ) एके = एक । (ग) (घ) (घ) से = सं । (ङ) हाथ से = हाथ ।

हिंदु तुरुक हम एकै आना । जो एह मानै सब्द निसाना ॥६१०॥[1]
सभै जीव साहब कर भइई । बूझि बिचारि ग्यान एह कहई ॥६११॥[2]
जो दाया मह भाव जानी । तास अगम मह जनि मानी ॥६१२॥[3]
मन पानी सभे के होई । हिंदु तुरुक दूजा नहिं कोई[5] ॥६१३॥[4]
करि मुरीद सत सब्द दिढ़ाव । कलिमा बूझि बिचारि पढ़ाव ॥६१४॥[5]

साखी

किताब कोरान हम समुझि के, राखा सब्द प्रमान ।[6]
मुख कलिमा नहीं कहिए अलफ दपु निसान ॥४८॥[7]

चौपाई

अलफ निसान कहै दरवेसा । जो जानै सो कहै सन्देसा ॥६१५॥[8]
मिस्किवास मैं रहा समाई । बलि बमलि ठाक तहं भाई ॥६१६॥[9]
नूर जहूर दीदम है साफा । दरस दीदार अमान सभ माफा ॥६१७॥[10]

साखी

जसे फूल जो तील मैं, बास जो रहा समाए ।
ऐसो सब्द सजीवनी, सभ घट सुरति रिगाए ॥४६॥[11]

चौपाई

पैर पीस तेल असमाना । सब्द बिन्हु सहसे बिलगाना ॥६१८॥[12]

---

१ (ग) (घ) तुरक = तुर्क । (घ) (ङ) एह = एहै । (घ) (ङ) एक = एह । (घ) सब्द = सत ।
२ (ग) (घ) (घ) (ङ) गम = रम । (ग) (घ) एह = इह ।
३ (घ) दाया = दया । (ग) तास = तासो । (ग) (घ) (ङ) भाव = भाइ ।
४ (ग) मन = मनय । (ग) (घ) सभे के = सभ एक । (घ) (ङ) सभे के = सभ एक । (ग) (घ) तुरक = तुर्क । (ङ) तुरक = तुरुक । (ग) (घ) (घ) (ङ) नहिं = नहि ।
५ (ग) (घ) मुरीद = मोरीद ।
६ (ङ) कोरान = कान । (ग) (घ) (घ) (ङ) समुझि के = बुझाइ ।
७ (ग) (घ) (घ) (ङ) नहीं = नाहीं ।
८ (ङ) निसान = नासान । (ग) केसा = कसा । (घ) केसा = दसा । (ग) (घ) (ङ) जान = मन । (ग) (घ) कहै = कह ।
९ (घ) मिस्कि = मिस्कि । (ग) रहा = रहै । (ग) (घ), (घ) (ङ) बमलि = बमलि ।
१० (ग) (घ) (ङ) मन = मन ।
११ (ग) (घ) (घ) (ङ) तासा = तम । (ग) (घ) रगोरगी = रगारग ।
१२ (ग) (घ) पर = पर । (ङ) (ङ) पर = पेर । (ग) (घ) (ङ) सब्द बिन्हु सहु बिलगाना ।
(घ) सब्द बिन्हु सहस बिलगाना ।

चौपा लोक सतगुर की बानी । साम सोजहु पंडित ग्यानी ॥६३९॥[1]
भेद निरखि लेहु सो ततुसारा । काया कोट बडा बिसतारा ॥६४०॥[2]

छन्द

ग्यान गमी बिचार निर्मल सुरति मूल प्रकासहीं ।[3]
तहां पदुमपत्र भर्ष झलकै जोति प्रति छबि छावही ॥[4]
तहां हंस बंस बसि मानसरवर, चुग सो मन भावहीं ।[5]
कहे दरिया दरस सतगुर, ग्यान को गुन गावहीं ॥११॥[6]

सोरठा

भवजल अगम अपार, नाम बिना नहिं पावहीं ।[7]
सो का नाम अधार जो चाहो भव तरन कहं ॥१०॥[8]

चौपाई

तीनि लोक जम जाल पसारा । बिना भेद नहिं उतर पारा ॥६४१॥[9]
गुरु सब्द जो पावै कोई । ताहि देखि भगा जम रोई ॥६४२॥[10]
होए चेतनि कव मनि उजियारा । सब्द सिंघासन चला असवारा ॥६४३॥[11]

साखी

बारह मंडल नवखंड प्रिथी, तामें सब्द निसार ।[12]
उलटि पवन षटचक्रहिं फेरै देखहु काया बिचार ॥५२॥[13]

---

१ (ग) (घ) चौपा = चौथ । (घ) (ङ) की = क ।
२ (ङ) कोट = कोड ।
३ (ग) सुरति = सुर्ति । (ग) (घ) (च) (ङ) प्रकासहीं = प्रगासहीं ।
४ (ग) तहां पदुमपत्र मे भवर झलकै । (घ) पदुमपत्र तहा भरम झलकै । (ङ) पदुमपत्र तहा भर्व झलक ।
५ (ग) सरवर = सरोवर । (ग) (ग) (ङ) चुग = चुगत । (च) चुग = चुगती ।
६ (ङ) दरस = दर्स ।
७ (ग) भव = भौ । (ग) भव = भवो । (ग) (ग) (घ) पावही = पावहिं ।
८ (ग) सौका = सौका । (ग) सौका = सतोका । (घ) (ग) नाम = नाम । (घ) चाहो = चाहे । (ग) चाहो = चाहे । (ग) भव = भौ । (ग) भव = भवो । (ङ) तरन कहं = तरन ।
९ (ग) नहिं = ना । (ग) (ग) उतरे = उतरे ।
१० (ग) (घ) गुरु = गोर । (ङ) गुरु = गुरुन । (ग) जो = जे । (घ) जो = जेर । (ङ) जो = जी ।
११ (ग) (घ) (ग) (ङ) सिंघासन = सिंघासन । (ग) (घ) असवारा = सवारा ।
१२ (ग) (घ) (घ) (ङ) प्रिथी = प्रिथिमी ।
१३ (ग) पवन = पौन । सौका प्रति में "षटचक्रहिं" है । (ग) फेरै = फेर । (ङ) फेरै = फिरै ।

हिंदु तुरुक हम एकै जाना । जो एह मानै सब्द निसाना ॥६१०॥[1]
सभ जीव साहब कर अहई । बूझि विचारि ग्यान एह कहई ॥६११॥[2]
जो दाफा महं पाव जानी । दास मरम केहु जनि मानी ॥६१२॥[3]
मन पानी सभे के होई । हिंदु तुरुक दूजा नहि कोई ॥६१३॥[4]
करि मुरीद सत सब्द दिढ़ाव । कलिमा बूझि विचारि पढ़ाव ॥६१४॥[5]

साखी

किताब कारान हम समुझि के राखा सब्द समान ।[6]
सुन कलिमा नहीं कहिए अलफ देनु निसान ॥४८॥[7]

चौपाई

अलफ निसान देख दरवसा । जो आन सो कहीं सन्देसा ॥६१५॥[8]
मिस्तिवास में रहा समाई । कलि थमेसि हाथ तहं पाई ॥६१६॥[9]
नूर जहूर दीदम है साफा । दरस दीदार कतल सभ पापा ॥६१७॥[10]

साखी

जसे फूल जो तील में, बास जो रहा समाए ।
ऐसो सब्द सजीवनी, सभ घट सुरति दिढ़ाए ॥४९॥[11]

चौपाई

पेर तीस देख असगाना । सब्द चिन्ह मासे बिलगाना ॥६१८॥[12]

---

१ (ग) (म) तुरुक = तुर्क । (घ) (ट) एक = एक । (घ) (ट) एह = एह । (घ) सब्द = सत ।
२ (ग) (ग) (घ) (ट) सभ = सम । (ग) (घ) एह = एह ।
३ (ग) दास = दसा । (ग) जाग = जागे । (ग) (घ) (ट) जाग = जागे ।
४ (ग) मन = मन्द । (ग) (ग) सभे क = सभ एक । (घ) (ट) सभे क = सभ एक । (ग) (म) तुरुक = तुर्क । (ट) तुरुक = तुरुक । (ग) (ग) (घ) (ट) नहि = नहि ।
५ (ग) (घ) मुरीद = मोरीद ।
६ (ट) कारान = कारा । (ग) (ग) (घ) (ट) समुझि क = बुझि क ।
७ (ग) (ग) (घ) (ट) नहीं = नहीं ।
८ (ट) निसान = मासान । (ग) दस = दस । (ग) दस = दसा । (ग) (घ) (ट) मन = मन । (ग) (ग) कहि = कहे ।
९ (घ) मिस्ति = मिस्ति । (ग) रहा = रह । (ग) (ग) (घ) (ट) पानि = बानी ।
१० (ग) (घ) (ट) रूप = रूप ।
११ (ग) (ग) (घ) (ट) तील = तिल । (ग) (घ) दिढ़ाए = गावाए ।
१२ (ग) (ग) पेर = पेर । (घ) (ट) पेर = पेरी । (ग) (ग) (ट) सब्द चिन्ह तासु बिलगाना ।
(ट) सब्द चिन्ह अरम बिलगाना ।

बोए अनहद लागे जब ताला । सूर चढ़ाए चंद मनिमाला ॥६५१॥[1]
झिनमिन अंतर बाज माला । पिवै प्रेम होए मतवाला ॥६५२॥[2]
अजपा के एह भेव बताई । पाव तत्त तहं परगट पाई ॥६५३॥[3]
तंतु पाए निहतत्तु में जाई । तंतु में तंतु रहा छवि छाई ॥६५४॥[4]
तंतु किआरी जोत किसाना । ततुहिं गहे सब्द निरवाना ॥६५५॥[5]
बिना तंतु नहिं सब्द समोई । कह दरिया समुझै जन कोई ॥६५६॥[6]
सत्त नाम पच्छे महिं पाई । सुर नर मुनि सब फसे भुलाई ॥६५७॥[7]

साखी

सत गुर साहब सांच है, देखो सब्द बिचार ।[8]
डोरी गहै सब्द की तन मन डारो वारि ॥५५॥[9]

चौपाई

सतगुर आगे तन मन दीजै । प्रेम प्रीति रस कबहिं न छीजै ॥६५८॥[10]
मन की ममिता सब बुरि कारा । परखि लेहु सब्द निजु सारा ॥६५९॥[11]
सब्द एक में कहाँ बुझाई । जौं लोह पंडित बूझो भाई ॥६६०॥[12]
मूल विहंगम डोरी माई । रवि ससि पवन जो सुरति समाई ॥६६१॥[13]

---

१ (ग) बोए = बोइ । (घ) बोए = ब्योए । (ग) (क) अब लागे ताला । (घ) जन लागी ताला । (क) चंद = चंदर ।
२ (ग) हद = एह । (क) झीनी । (ख) झीन झीन । (ख) (ग) बाजै = बाजे । (ग) पीवै = पीए । (ग) प्रेम = प्रेम प्रेम । (घ) पीव प्रेम होए मस्त मतवाला ।
३ (ट) के = क । (ग) (घ) (ट) एह = इह ।
४ (ठ) में जाई = म जाई ।
५ (ग) (घ) (ङ) किआरी = किआरी । (ग) (ग) जोत = जोते । (ग) (घ) ततुहिं = ततु । (ग) (ग) (घ) गहे = गहे । (ग) निरवाना = निरबाना ।
६ (ग) बिना = बिन । (ग) (ग) (घ) (ट) नहिं = नाहि । (ग) (ग) (घ) (क) कहै = कह । (ग) समुझै जन कोई । (घ) समुझै जन सोई ।
७ (ग) पच्छ = पच्छ । (ग) (ग) (घ) (क) महिं = माहि । (ख) (क) फसे = फसे ।
८ (ग) (ग) (घ) (क) बिचार = बिचारि ।
९ (ग) (ग) (घ) (ट) गहै = गहो । (ग) (ग) (घ) (क) डारौ = डारो ।
१० (ट) आगे = आग । (ट) न = ना ।
११ (ठ) परखि = पारखि ।
१२ (ट) मण । (ग) (ग) (घ) (क) मैं । (ग) (घ) (घ) (क) कहौं = कहौं । (ग) (घ) (घ) (ठ) लोह = लुह । (ग) बूझो = बुझहु ।
१३ (ग) डोरी = डोरीय । (ग) (घ) (ङ) सुरति = सुन । (ग) सुरति = सुरत ।

चौपाई

पारि अंवल जो परसै भाई । भोग किए पुनि सम रस आई ॥६४४॥[1]
इस पद्र के भेद है सारा । जो बूझै सतगुर के प्यारा ॥६४५॥[2]
सतगुर बिना होहि ना पारा । भटक गुरु पाखंड पसारा ॥६४६॥[3]
गुरु सोई जो सीप बुझाव । सीप सोई साहब सो लावै ॥६४७॥[4]
बहुता गुरु करहीं गुरवाई । सब्द बिना उन्हि भेद न पाई ॥६४८॥[5]
छत्र पार धनु दह दमामा । धर्म निसान पाए सुखधामा ॥६४९॥[6]

साखी

धर्म निसान बजावहू, परखहु सब्द निजुसार ॥[7]
जमर मान मरदिहैं, सिन्दा मत कम्नार ॥५३॥[8]
कूप खोह सगहिए बूझ लीना लप ॥[9]
कायर कादर बिचनि चले, मिला न वचन अमोल ॥५४॥[10]

चौपाई

बिनु गुर वचन सब त्रय शाला । बिनु पगु निगनि जगन मैं डोला ॥६५०॥[11]

---

१ (घ) अंवल = अमल । (ग) जो = जा । (घ) जो = जो । (ग) (ङ) परसु = परसे । (घ), (ङ) पुनि = तिनि ।
२ (ग) इस = इसो । (ग) के = का । (घ) के = के । (घ) [illegible] । (ग) (ग) (घ) (ङ) के = का । (ख) [illegible] (ग) (घ) (घ) (ङ) [illegible] ।
३ (ग) (घ) (घ) (ङ) ना = नहि । (ग) (ग) (घ) (ङ) [illegible] । (ग) पखंड [illegible] ।
४ (ग) (घ) (घ) [illegible] ।
५ (ग) (ग) (घ) (ङ) बहुता = बहुत । (घ) गुरवाई = गुरवाई । (ग) (ङ) (ङ) न = ना ।
६ (ङ) [illegible] । (ग) [illegible] ।
७ (ग) [illegible] । (ङ) [illegible] निजसार । (ग) [illegible] (घ) परखहु [illegible] निजसार ।
८ (ग) (घ) (ङ) मरदिहैं = मरदिहि । ( ) [illegible] । (ग) [illegible] [illegible] ।
९ (क) [illegible] । (ग) [illegible] । (घ) बूझ = [illegible] । (ङ) [illegible] । (ग) (ग) [illegible] । (घ) [illegible] । (ङ) [illegible] ।
१० (घ) (ङ) [illegible] । (ग) [illegible] । (ङ) [illegible] ।
११ (ङ) [illegible] । (ग) (ङ) [illegible] । (ग) [illegible] । (ङ) (ङ) मैं = म

पारस परस मोती होई । मानसरोवर अउरि ना कोई ॥६७२॥[१]
अउरि सीप बहुते जग अहई । बिनु पारस मोती नहिं लहई ॥६७३॥[२]
सतगुर मिलै तो ब्रम्ह पुनीता । सास्तर ग्यान पढ़ा निजु गीता ॥६७४॥[३]
भव संसै मैं कबहिं न भटकै । जौं जल कंवल कबहि ना अटकै ॥६७५॥[४]
हठ निग्रह करि भूले जोगी । आसन बांधि ठवन रस भोगी ॥६७६॥[५]
तन साधत फिरि भए असाधी । पांच पचीस कहु कसे बांधी ॥६७७॥[६]
सूछम ग्यान निजु करा बिचारा । मूल बिहंगम निरमल सारा ॥६७८॥[७]
जसे पपिहा बुंद असमाना । मेघ निरखि कै उलटि समाना ॥६७९॥[८]
सत सब्द का करहु बखाना । जौं तरकस कसि तीर कमाना ॥६८०॥[९]
सब्द बिलोए लेवे चौगाना । सोई संत है निरमल ग्याना ॥६८१॥[१०]

साखी

सतगुर सब्द एहु सांच है, जोबहु निरमल ग्यान ।[११]
जौं हीरा घन सहै लोह की, अमर होए निदान ॥१७॥[१२]

चौपाई

इह घन बुंद बात बहुतेरे । साधु असाधु कुमति सम फेरे ॥६८२॥[१३]
सुमति सोइ तहं संत बिराजा । कुमति पांच तहं मन भौ राजा ॥६८३॥

---

१ (ग) पारस परसे मोतिय होवै । (ख) मानसरोवर अवर ना कोई । (घ) मानसरोवर और न कोई । (च) मानसरोवरि अवरि ना कोइ । (छ) मान सरवर अवरि ना कोई ।
२ (ख) (घ) (छ) अवरि = अवरि । (ग) अउरि = आरि । (च) बिनु = बिना । (ख) (ग) (घ) (छ) नहिं = नाहि । (ख) लहइ = लहई ।
३ (ख) (ग) मिलै = मिले । (ख) (घ) (छ) तो = तब ।
४ (ख) भौ सागर में कबही भटकै । (ग) भव = भवो (घ) मैं = मंह । (ख) जौं = जैस । (ग) जौं = जैसो । (छ) जौं = जो । (ग) (छ) कंवल = कमल । (घ) (छ) ना = नाहि । (ग) अटक = अटके । (घ) (छ) अटकै = हटकै ।
५ (ग) (घ) भूले = भूल ।
६ (ख) (ग) (घ) फिरि = फेरि । (ग) (घ) (छ) भए = भया ।
७ (ख) (ग) (घ) (छ) सूछम = सुछुम ।
८ (ख) (छ) असमाना = समाना । (ग) (ग) (घ) (छ) कै = के ।
९ (ख) (ग) जौं = जो । (घ) जौं = ज्यों । (ग) (ग) (छ) तरकस = तर्कस ।
१० (ग) लेवे = लेहु । (ग) लेवै = लेवो । (घ) (छ) ले = लेहु । (ख) है = हए ।
११ (घ) (छ) एह = इह । (ग) सांच है = साचाहे ।
१२ (घ) जौं = ज्यों । (छ) जौं = जो । (ग) (ग) (घ) सहै = सहे ।
१३ (ग) (ख) इह = एह । (ग) (ग) (घ) (छ) बहुतर = बहुतरा । (ख) (ग) (घ), (छ) फेरै = फेरा ।

सतगुर सब्द सबहि लखि पावै । मूल फूल फलित मूल पावै ॥६६२॥[1]
होए निरखि सत सुरति दमावै । मार नाम तत प्रगट पावै ॥६६३॥[2]
गगन मंडल बिच सुरति संचारी । इंगला पिंगला सुखमन नारी ॥६६४॥[3]
साधहु सब्द जीव जग सुहुना । पाप पुन्य मतरही नहीं लगना ॥६६५॥[4]
ऐसी जुगति जो जाने कोई । कह दरिया निज जोगी सोई ॥६६६॥[5]

साखी

दरिया सब्द बिचारिया अन्तर मन निरवान ।[6]
सो सत सब्द ना पाइआ काहे कथ गुर ग्यान ॥५६॥[7]

चौपाई

परखहु सत सब्द यह बानी । कर बिबेक सा निरमल ग्यानी ॥६६७॥[8]
बिनु परखे नहिं मूल मेटाई । पारिख जन जोत नाम समाई ॥६६८॥[9]
सबहिं सतु बिचारहु माई । पानी पत्र जस हंस बिलगाई ॥६६९॥[10]
संगित जल पर भीतर रहई । बिलगन बगन हमि कर गहई ॥६७०॥[11]
हंस दसा सुनि सुर पावै । काग कुबुद्धि निकट नहिं आवै ॥६७१॥[12]

---

१ (ग) (घ) (ङ) फुल = फूल ।
२ (ग) निरखि = [illegible] । (घ) निरखि = निरखि ।
३ (घ) (ङ) सुरति = सुरति । (ग) (ग) (ङ) सुरति = सुरति ।
४ (ग) (ग) (घ) (ङ) [illegible] = [illegible] । (ग) [illegible] = है । (घ) सुखमन = सुखमन । (ङ) सुखमन = सुखमन । (ग) [illegible] = सुखमनि ।
५ (ग) [illegible] । (घ) जो = जो । (ग) (ग) [illegible] । (ग) [illegible] = कहै ।
६ (घ) (ङ) [illegible] = [illegible] । (ग) (घ) ( ) [illegible] = [illegible] ।
७ (ग) (घ) (ङ) [illegible] । (ग) [illegible] । (ग) [illegible] । (ग) [illegible] । (घ) [illegible] (ग) (ग) [illegible] ।
८ (ङ) [illegible] । (घ) (ङ) [illegible] । (ग) (ग) [illegible] । (ग) (ग) (घ) (ङ) [illegible] । निरमल = निरमल ।
९ (ग) [illegible] । (ङ) [illegible] । (घ) (ङ) [illegible] । (ग) (ग) [illegible] = [illegible] ।
१० (ग) (ङ) (ङ) [illegible] ।
११ (ग) (घ) [illegible] । (ङ) [illegible] । (ग) (ङ) (घ) (ङ) [illegible] । (ग) [illegible] । (घ) ( ) [illegible] ।
१२ (ग) (ङ) [illegible] । (घ) (ङ) [illegible] । (ग) (ङ) (घ) ( ) [illegible] ।

पारस परस मोती होई । मानसरोवर ... बिचारा ॥७१३॥[1]
भउरि सीप बहुते जग महई । बिनु पारस ... के बाटा ॥७१४॥[2]
सतगुर मिलै तो भ्रम्ह पुनीता । सास्तर ग्या... र हे बिरोगी ॥७१५॥[3]
भव संस में कबहिं न भटक । जो जल ... मुनि बनि बाई ॥७१६॥[4]
हठ निग्रह करि भूले जोगी । आसन वा... ेर न पावै ॥७१७॥[5]
तन साधल फिरि भए असाधी । पांच प... यम बाला ॥७१८॥[6]
सुच्छुम ग्यान निजु करो बिचारा । मूल बि... पुर के दासा ॥७१९॥[7]
जसे पपिहा बुंद असमाना । भेद नि... बिचारै सोई ॥७२०॥[8]
सत्त सब्द का करहु बखाना । जौ तन... यम की पीरा ॥७२१॥[9]
सब्द बिलोए लेवै चौगाना । सोई

साखी

सतगुर सब्द एह सांच है, सो ... फेरा साए ।
जौ हीरा धन छह छोड़ की, ... जन्म गँवाए ॥६१॥[10]

चौपाई

इह धन बुंद खात बहुतेरे । ... करहुं निमेरा ॥७२२॥[11]
सुमति सोइ तह संत बिराजा ।

---

१ (म) पारस परसे मोतिन होई । (ग) ... ग्यान । (घ) जौ गुर
कोई । (घ) मानसरोवरि अवरि ना ... (घ) मिलै = मिलै ।
२ (ख) (घ) (ङ) भउरि = अवरि । ...
(ख) (ङ) महिं = माहिं । (ख) ...
३ (ख) (ग) मिलै = मिलै । (ग) ...
४ (ग) जौ सागर में कबहीं भटक ।
(ग) जौं = जैसे । (ङ) जौं = जा...
(ग) भटक = भटके । (घ) (ङ)
५ (ग) (घ) मूल = मूल ।
६ (ग) (म) (घ) फिरि = फेरि ।
७ (ख) (म) (घ) (ङ) सुच्छुम ...
८ (घ) (ङ) असमाना = समा...
९ (ग) (ग) जौं = जसो । (घ ...
१० (ग) सेम = सत्त । (घ) ...
११ (घ) (ङ) एह = इह । (...
१२ (घ) जौं = ज्यौं । (ङ)
१३ (ग) (ग) इह = एह ।
(ङ) फेरे = फेरा ।

जौं मन दस्यो तनु त्रिसाग्नि । पाप बोधं तन सब सुखाग्नि ॥६८४॥[1]
पचीस बोधं सब की डोरी । मुकुम सदा गम्य सब जागी ॥६८५॥[2]
ध्यान की डोरी प्रेम रस पीजै । गुरु गमि ध्यान समझि कर लीज ॥६८६॥[3]
होय प्रेम तब सुरति समाना । निहअक्षर स्रुति मात्र है ध्याना ॥६८७॥[4]
द्वादस चले पवन परवाना । आसन जान भा चिन्हे ठिकाना ॥६८८॥[5]
मन पवन में एके संगा । ध्यान त्रिसाग्नि बुन्द एक रंगा ॥६८९॥[6]
एक मन इहक समाना । तन महँ निरख होय निनारा ॥६९०॥[7]
मन का रंग बुन्द जनि काई । निरमम होए निरन्तर भाई ॥६९१॥[8]
एह मन काल ज जाल जहाना । सो मन बाँन्हि हाग्नहु निजु ध्याना ॥६९२॥[9]

साखी

एह मन काजी इह मन पाजी, इह मन करता इह दरवेस ।[10]
इह मन पाँडे इह मन पंडित, एह मन दुनिया एह नरेस ॥५८॥[11]

---

१ (ग) जौं = ज्यों । (ग) दस्यो = दस्य । (घ) (ङ) मस्या = कस्य । (ग) (ग) पाप = बाप ।
२ (ख) (घ) (ङ) सब की = सपुर्दी । (ग) सब की = संपिर्दी । (ग) गम्य = गम । (ग) गम्य = गाम ।
३ (ख) (घ), (ङ) ध्यान की डोरी = ध्यान डोरी । (घ), (ङ) समुझि कर लीज = बुझि और लीज ।
४ (ग) सुरति = सुरति । (ख) (ग) (घ) (ङ) निहअक्षर = निअक्षर ।
५ (ख) (ग) चले = चल । (ख) (ग) भा = भो । (ग) चिन्हे = चिन्ह । (ख) (ग) (घ) (ङ) ठिकाना = ठेकाना ।
६ (ख) (ग) मन पवन के = मन पवना के । (घ) (ङ) मन पवन के = मन पवना का । (घ) एक संगा = एक रंगा । (घ) (ङ) एक संगा = एक संगा । (ख) बुन्द एक रंगा । (ग) बुन्द एह रंगा । (घ) (ङ) बुन्द एह रंगा ।
७ (ख) एक = एक । (घ) (ङ) एक = एक । (ख) (ग) इहक = इहक । (घ) (ङ) समाना = समाना । (ख) (ग) (घ) (ङ) होय = होय ।
८ (घ) (ङ) मनक = मनक । (ख) (ग) बुन्द = बुन्द । (ख) (ग) (घ) (ङ) जनि = जन ।
९ (घ) (ङ) एह = इह । (ख) मनकाल = मनकाल । (ख) होम्यहु = होम । (ग) हम्यहु = होम । (ङ) हम्यहु = हम्यहु ।
१० (ख) (ग) एह = इह । (ग) इह = एह । (ख) (ग) एह मन करता दरवेस । (ग) एह मन करता एह दरवेस । (ङ) एह मन करता एह मन दरवेस ।
११ (ग) इह = एह । (घ) पाँडे = पाँडे । (ख) (घ) (ङ) दुनिया नरेस ।

जो गुर ग्यानी मिलै निजुसारा । ग्यान गमी का करै विचारा ॥७१३॥[1]
तीनि लोक है मन कर ठाटा । मनहिं विसंभर रोकै बाटा ॥७१४॥[2]
ऐसो जीवन जियै जो जोगी । सब्द नाम तन रहै वियोगी ॥७१५॥[3]
मुवै ना जीवै आवै नहिं जाई । सम घट पावै पुनि पुनि लाई ॥७१६॥[4]
दसे कोइ नहिं सभे भोरावै । मुनि ग्यानी कोइ भद न पावै ॥७१७॥[5]
बड़े जोगी जोग विधाना । उन्हहु के बंधि मारै जम थाना ॥७१८॥[6]
कोइ नहिं बाचे जम क फांसा । जो नहिं होए सतगुर के दासा ॥७१९॥[7]
सतगुर के गति पावै कोई । जाए छपलोक सिधारै सोई ॥७२०॥[8]
गहै प्रेम होए निरमल सरीरा । मेटि जाए सभ जम की पीरा ॥७२१॥[9]

साखी

सुमिरहु सत नाम गति, प्रेम प्रीति चित लाए ।
बिना नाम नहिं बाचिहौ जिया जन्म गँवाए ॥६१॥[10]

चौपाई

सुमिरहु सांझ सकार सवेरा । ग्यान गुर गति करहु निमेरा ॥७२२॥[11]

---

१ (ख) जो गुर ग्यानी = जो गुर ग्यान । (ग) जो गुर ग्यानी = जो गुर ग्यान । (घ) जौ गुर ग्यानी = जो गुर ग्यान । (ङ) जो गुर ग्यानी = जौ गुर ग्यान । (ख), (घ) मिलै = मिलै । (ख) (ग) करै = करे ।

२ (घ) मनहिं = मनहु । (ख) (घ) (ङ) रोकै = रोके ।

३ (ख) (घ) (ङ) ऐसो = ऐसन । (ङ) जीवन = जीवनी । (ख) जीवै जो जोगी = जोवै जो जोगी । (घ) (ङ) जीव ना जोगी = जीवै जोगी । (ग) (घ) रहै = रहे ।

४ (ख) (ङ) मुवै = मुवै । (ग) आव नहिं जाई = आवै जाई । (ख) (घ) आव = आवै ।

५ (ग) (घ) (ङ) सभे = सेरन । (ग) (घ) (ङ) सम = सम । (ग) (घ) (ङ) न = ना ।

६ (घ) बड़े = बड़े । (ङ) जोग विधाना = जोग का विधाना । (ङ) उन्हहु = उन्हक । (घ) (ख) बंधि = बांधि । (ख) (ग) (घ) मारै = मारे ।

७ (ग) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ख) (ङ) बाचे = बाचे । (घ) (ङ) जम के = जमरा । (ग) (घ) (ङ) जो = जौ । (ग) जो = जो । (घ) नहिं = न । (ख) (घ), (ङ) नहिं = ना ।

८. (घ) के = की । (ङ) क = क । (ग) (ग) सिधारै = सिधारे ।

९ (ग) (ग) गहै = गहे । (ग) जाए = जाहि । (ग) (ग) की = के । (घ) (ङ) की = कै । (ग) पीरा = पारा ।

१० (ग) बिना नामहिं बाचिहो । (ग) (घ) (घ) जिया = जिय्या ।

११ (ङ) सांझ = सांझ ।

भवजल जल है अगम अपारा । कवन केवट गहिहैं करुआरा ॥७२३॥[1]
जो अबहीं करि सेतु निमेरा । ग्यान गुरु गति गहो सवेरा ॥७२४॥[2]
जौं लै गहु सतगुरु की बानी । लाँघि सको तब भवजल पानी ॥७२५॥[3]
बिना सब्द नहिं होए उजियारा । बिनु सतगुर नहिं उतरहिं पारा ॥७२६॥[4]
काया परचै मूल पद पावै । सतगुर मिलै सब सब्द समावै ॥७२७॥[5]
कवन सब्द हंसलोकहिं जाई । कवन सब्द से परचै पाई ॥७२८॥[6]
कवन तंतु लै सुरति समाई । कैसे प्रेम पुवै मूल लाई ॥७२९॥[7]
कवन पवन गरजै ब्रह्मंडा । कवन काल राए कहं खंडा ॥७३०॥[8]

साखी

सार पवन औ चौदह मत्र गोवै ग्यान बिचारि ।[9]
दसो चक्र अस्टदल कवल, परम धाम सभ जारि ॥६२॥[10]

चौपाइ

एक पवन सार निजु बानी । सोइ भेद निरखो तुम्ह ग्यानी ॥७३१॥[11]
निरखि सुरति में भावै आई । जानै जोतिहिं जाति समाई ॥७३२॥[12]

---

१ (ख) ६६३ संख्यक चौपाई का पाठ नहीं है । (ग) भव = भवो । (घ) भव = भौ । (ग) (घ), (ङ) कउन = कवन । (ग) (घ) गहिहैं = गहिहै ।
२ (ग) जो = जवों । (ङ) सेतु = सतु । (ख) गहो सवेरा = करहु निमेरा ।
३ (ख) जब सेवहु सतगुर क बानी । (ग) जबा लिहो सतगुर की बानी । (घ) जौ सबहु सतगुर क बानी । (ख) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवा ।
४ (ख), (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (घ) (ङ) उजियारा = उजारा । (ख) (ग) (घ) नहिं = नाहि । (ख) उतरहिं = उतरै ।
५ (ग) परचै = परचे । (ग) मिलै = मिलि । (ख) तब = तौ । (ग) तब = तो ।
६ (घ) जाई = जाव । (ग) से = सो । (ग), (घ) परचै = परचा ।
७ (ख) कवन = कौन । (ख) (ग), (घ) लै = ल । (ख), (घ) (ङ) पुवै = पुए । (ग) पुए = भए ।
८ (ख), (ग) गरजै = गरजा । (घ) गरजै = गर्जा । (ग) राए कहं खंडा = राए कर दंडा । (घ) राए = राई ।
९ (ख) पवन = पौन । (ख) (ङ) औ = अव । (ग) गोवै = गिया ।
१० (ख) (घ) (ङ) दसो = दस । (ग) (घ) (ङ) कँवल = कमल । (ग) (ङ) परम = पर । (ग) (घ) परमधाम गम जारि ।
११ (घ) एक = ऐ । (ख) (ङ) निरखो = निरखौं ।
१२ (ख) मे = मैं । (घ) जोतिहिं = जोति ।

दुइ कर पवन सूर औ चंदा । चढ़ै गगन सम घर मनि फंदा ॥७३३॥[1]
धमै नाम निजु जाल खोई । पिवै प्रेम सुधारस सोई ॥७३४॥[2]
इगला पिंगला सुखमन फेरै । लाए कपाट गगन गहि घेरै ॥७३५॥[3]
छव चक्र निजु करै निबेरा । सो जोगी घर पहुँचु सबेरा ॥७३६॥[4]
सत सब्द जो करै बखाना । सेत धजा निस दिन फहराना ॥७३७॥[5]
सातें मनमथ देखु बिचारी । आठ कंवल घर भीतर बारी ॥७३८॥[6]
नवो नाटिका करहु निबेरा । पिवै प्रेम मसविर घर डेरा ॥७३९॥[7]
दसए द्वार रंधन कव बंदा । जहं कामिनि निति करै अनंदा ॥७४०॥[8]
इग्यारहवें ध्यान छव सिर धरई । पुर्स होए जग मैं अवतरई ॥७४१॥[9]
बरहव भीतर बाहर धावै । पांचो तत्तु का पन्थ पावै ॥७४२॥[10]
तेरहवें तीनि गुन ते न्यारा । सत पुरुष निजु ध्यान विचारा ॥७४३॥[11]
चौदहवें आवागवन ना होई । निकट सिंगासन पहुंचै सोई ॥७४४॥[12]

---

१ (ख) (ङ) कर = करि । (ख) (घ) (ङ) औ = अरु । (ख) (ग) चढ़ै = चढ़े ।
२ (घ) कमै = कमे । (ग) (ग) जाग = जाल । (ख) पिवै = पीवै । (ङ) पिवै = पीवै । (ख), (घ) (ङ) खोई = खोई ।
३ (ख) (ङ) इगला = ऐंगला । (ख) पिंगला = पैंगला । (ग) (घ) (ख) (ङ) सुखमनि फेरै । (ङ) घरै = घरै । (ख) (घ) (घ) ।
४ (घ) छव = छवो । (ङ) चक्र = चक्र । (ग) करै = करो । (ग) (ङ) करै = करे । (ङ) सबेरा = हेवेरा ।
५ (ग) जो = निजु । (ख) जो = जोवे । (ग) (ग) कर = करे ।
६ (ग) (ग) ध्यान = मर्म । (ग) (ख) (ङ) अनमत = अनमौ । (ग) मनमथ = मनमो । (ग) आठ कंवल = अस्ट कमल ।
७ (ख) नवो = नव । (ग) नवो = न्वो । (ग) पिव = पीवै ।
८ (घ) द्वार = द्वा । (ङ) द्वार = द्वौर । (घ) (घ) रंधन = रंध । (ग) रंधन = रंद । (ख (ग) (घ) (ङ) जहं = जहां । (घ) (ख) कामिनि = काम । (ख) निति = नित । (ग), (घ) करै = करे ।
९ (ग) (ग) इग्यारहवें = इगारहवें । (घ) इग्यारहवें = इग्यर्हव । (ए) इग्यारहवें = इगरवें । (घ) (ङ) पुर्स = पुरुष ।
१० (ग) (घ) बरहवें बाहर भीतर धाव । (ग) (घ) (ख) (ङ) पांचो = पांच । (ख) का = कहां । (ग) पन्थ = पन्थ ।
११ (ग) (घ) (ख) (ङ) तेरहवें = तेरहवें । (ग) (ङ) पुर्स = पुरुष ।
१२ (ग) (घ) (ङ) चौदहवें = चौदहव । (ग) आवागवन = आवागमन । (ग) ना = न । (ग), (ङ) सिंगासन = सिंहासन । (घ) पहुंचै = पहुंच ।

भवजल जल है अगम अपारा । कउन कपट गहिहैं करुआरा ॥७२३॥[1]
जौं अबहीं करि लेहु निमेरा । ग्यान गुरू गनि गहा सबेरा ॥७२४॥[2]
जौं से यहु सतगुरु की बानी । साधि सका नव भवजल पानी ॥७२५॥[3]
बिना सब्द नहिं होए उजियारा । बिनु सतगुरु नहिं उतरहिं पारा ॥७२६॥[4]
काया परखै मूल जब पावै । सतगुरु मिलै तब सब्द लखावै ॥७२७॥[5]
पवन सुरत छपलोकहि आई । पवन सुरत मे परखै पाई ॥७२८॥[6]
पवन तनु से सुरति समाई । कैसे प्रेम चुवै सुख लाई ॥७२९॥[7]
पवन पवन गरजै अहुरा । पवन कान गाए बहु भरा ॥७३०॥[8]

साखी

सार पवन भौ भाग्ह भवा, रौजे ग्यान बिचारि ।[9]
इवा चक्र अस्टदल कवल, करम काटे सम जारि ॥६२॥[10]

चौपाई

एक पवन सार निजु बानी । सोइ भेद निरखो तुम्ह ग्यानी ॥७३१॥[11]
निरति सुरति में आवै आई । जानै जातिहि जाति समाई ॥७३२॥[12]

---

१ (ख) ६६३ संख्यक चौपाई का पाठ नहीं है । (ग) भव = भवो । (घ) भव = भौ । (ग) (घ) (ङ) कपट = कवन । (ग) (घ) गहिहैं = गहिहे ।
२ (ग) जौं = जबों । (ङ) लेहु = लहु । (ग) गहो सबेरा = करहु निमरा ।
३ (ख) जब लखहु सतगुरु क बानी । (ग) सदा सिखो सतगुरु की बानी । (घ) जौं लखहु सतगुरु क बानी । (ग) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवा ।
४ (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं । (घ) (ङ) उजियारा = उजारा । (ख) (ग) (घ) नहिं = नाहिं । (ख) उतरहिं = उतर ।
५ (ग) परखै = परख । (ग) मिलै = मिलै । (ख) तब = तौ । (ग) तब = तो ।
६ (ग) आइ = आव । (ग) मे = भो । (ग) (घ) परख = परख ।
७ (ग) पवन = पौन । (ख) (ग) (घ) म = ल । (ग) (घ) (ङ) सुख = सुर । (ग) मुख = मन ।
८ (ग) (ग) गरज = गरजे । (घ) गरज = गज । (ग) गाए बहु दीना = राए कर देना । (घ) राए = गइ ।
९ (ख) पवन = पौन । (ग) (ङ) भौ = भय । (ङ) रौजै = लिया ।
१० (ग) (घ) (ङ) इवा = इडा । (ग) (घ) (ङ) कंवल = कमल । (ग), (ङ) करम = कर । (ग) (घ) कालकरम सब जारि ।
११ (ग) एक = ए । (घ) (ङ) निरखो = निरखों ।
१२ (ग) में = म । (घ) जातिहिं = जोति ।

माहिं पचीस पवन तुम चीन्हा । प्रकिरति गति बिवरन नहिं कीन्हा ॥७५६॥[1]

साखी

इह एको नहिं जानहु कैसे होए निस्तार ।[2]
मन ममिता मद त्यागहु, मिलहिं सब्द निजुसार ॥६४॥[3]

चौपाई

मूल गंवाए तुम जाहु गवारा । पकरि पेड़ तब पकरहु डारा ॥७५७॥[4]
भूलहिं आदि अंत मैं सोई । मरन काल तब चलै बिगोई ॥७५८॥[5]
काम क्रोध लोभ बड़ भारी । पंडित बेद कीन्ह बिस्तारी ॥७५९॥[6]
क्रोध नस्ट भए मुनि ग्यानी । क्रोधे कीन्ह मूल मैं हानी ॥७६०॥[7]
क्रोधे रावन छन मैं गएऊ । लंक बिभीखन पल महं भएऊ ॥७६१॥[8]
क्रोधे जादौ गए नसाई । छपन कोटि जस परिमिन्हि माईं ॥७६२॥[9]
क्रोधे गन गंधर्ब सम गएऊ । पंडित पढ़िके क्रोधे भएऊ ॥७६३॥[10]
लोक बेद सहि जमपुर बासी । भगति भाव ब्रम्हन सम भासी ॥७६४॥[11]
मुक्ती द्वार जंम मे मारी । नौ ग्रह साप ठगउरी डारी ॥७६५॥[12]

---

१ (ग) तुम = तुह । (ख) (घ) (ङ) तुम = तुम्ह । (ख) प्रकिरति = परकित । (ग) नहिं = ना ।

२ स्रोहस्तपद में यसे के पहले पंक्ति है । (ख), (ग) इइ = एह । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।

३ (ख) मद त्यागहु = मद मभहु त्यागहु । (ग) मद त्यागहु = मद भभहु त्यागेहु । (ख) मिलहिं = मिलि । (घ) मिलहिं = मिल ।

४ (ग) तुम = तुह । (घ) (ङ) तुम = तुम्ह । (ग) पकरहु = पकरेहु । (घ) अस्पष्ट । (ङ) तम = मन ।

५ (ग) (घ) (ङ) (ङ) मैं = लहि । (ख) (ग) चलै = चले ।

६ (ङ) क्रोध = कोरोध । (ङ) किन्ह = किन्ह ।

७ (ग) भए = भ । (ख) (घ) मैं = मह ।

८ (ख) (घ) (ङ) (ङ) बिभीखन = अभीखन । (ख) (घ) (ङ) भएऊ = भऊ ।

९ चौपाई संख्या ७६१ और ७६२ अप्राप्त । (ङ) क्रोधे = कोरोधे । (ग) जादा = जादो । (घ (ङ) माई = जादु । (ङ) कोटि = कोर । (ग) परमिन्हि = पर्सीन्ह । (घ) परम्भिन्हि = पर्सम्हि । (ङ) परमिन्हि = परिम्भिन्ह ।

१० (ङ) क्रोध = कोरोधे । (घ) (घ) गंधर्ब = गंधर्ब । (ङ) गंधर्ब = घघरप । (ङ) गएऊ = गेऊ । (ग) क्रोध भएऊ = क्रोध समएऊ । (घ) (ङ) क्रोधे भएऊ = क्रोध समऊ ।

११ (ग) बेद = बेद बेद । (घ) (ङ) सहि = सम । (ख), (घ) ब्रम्हन = ब्राम्हन । (ग) (ङ) ब्रम्हन = ब्रह्म ।

१२ (घ) (ङ) मुक्ति = मुकुति । (ख) द्वार = घार । (ङ) द्वार = द्वीर । (ख) (घ) मारी = मारा । (घ) मी = मरा । (घ) मी = मग । (ङ) मी = मार । (ग) साप = सार । (ग) (घ) (ङ) ठगउरी = ठगौरी । (ग) (ग) डारी = डारा ।

महि मंडल सन राह बनाई । दीप दीप सुगंध सोहाई ॥७४५॥[1]
चंद सुरुज तहं मनि उजियारा । नहीं उगहिं गगन का तारा ॥७४६॥[2]
मद्धे त्रिश्व सुख सुंदर सोई । अजर अमर बैठे सब कोई ॥७४७॥[3]
तीनि लोक नस्ट जब सोई । ऐसा भेद कहीं सब कोई ॥७४८॥[4]
सब एह जीव कहां रहि आई । सोइ अगह मोहि देहु दखाई ॥७४९॥[5]
सोधो पंडित मानो भाई । पढ़ि पढ़ि गीता अरथ सुनाई ॥७५०॥[6]
सब छोड़हु जग की चतुराई । अंतकाल फिरि जम वै खाई ॥७५१॥[7]

साखी

पंडित पढ़ि जनि भूलै कोई सोधु सुमति के भेव ।[8]
गीता ग्यान विचारहु, परहु जम के सेव ॥६३॥[9]

चौपाई

नाहीं दिलसागर तुह देखा । नाहीं करि लेहु वचन विसेखा ॥७५२॥[10]
नाहीं प्रीति पिया से लाई । नाहीं ग्यान गुरु गमि पाई ॥७५३॥[11]
नाहीं जीव जुक्ति को ध्याना । नाहीं आतम चिन्हहु अपाना ॥७५४॥[12]
नाहीं पांच तत्तु तुम साधा । नाहीं नवो नाटिका राधा ॥७५५॥[13]

---

१ (घ) (ङ) राह = रहा ।
२ (ख) चंद = चांद । (ग) (घ) सुरुज = सूर्ज । (छ) (ग) (घ) (ङ) तहं = तहां । (ख) (घ) (घ) (ङ) नहीं = नाहीं । (ग) उगहिं = उगे । (ख) का = की ।
३ (ख) मद्धे = मध्ये । (ग) त्रिश्व = ध्रुव । (ङ) त्रिश्व = त्रिरिख । (ख) (ग) बैठे = बइठे ।
४ (ख) (ङ) ऐसा = ऐसो । (ख) (ग) (घ) कहीं = कहे ।
५ (ख) (घ) (ङ) एह = इह । (ख) (ङ) जीव कहां = जी कहा ।
६ (ङ) अरथ = अर्थ । (ग) (घ) (ङ) पढ़ि पढ़ि गीता अरथ सुनाई = सब छोड़ो एह जग की चतुराई । (ग) (घ) (ङ) सुनाई = सुनाई ।
७ (घ) (घ) (ङ) सब छोड़हु जग की चतुराई = पढ़ि पढ़ि गीता अरथ सुनाई । (घ) (ङ) सब छोड़हु = सब छाड़ो । (ख) फिरि = फेरि । (ग) वै = धर । (घ) (ख) (ग)
८ (छ) भूल = भूलि । (ग) (घ) भूलै कोई = भूलमी । (ङ) भूल कोई = भूलहु । (ख) (ग) (घ) (ङ) सुमति = सुमति । (ख) (घ) (ङ) के = का ।
९ ख प्रति में गीताग्यान के पहले अस्तर है । (छ) के = का । (ङ) के = क ।
१० (छ) (घ) तुह = तुम । (ख) नाहिं करि लेहु = नाहिंतो करिलहु । (घ) वचन = वच्न ।
११ (ङ) प्रीति = पीरीति । (ख) (ग) ग्यान गुरु = ग्यान गुम गुर । (ङ) ग्यान गुरु = ग्यान न गुर ।
१२ (ग) (ङ) जुक्ति = जुक्ति । (ग) आतम = आत्म । (ग) (ग) (घ) ।
१३ (घ) तुम = तुर । (घ) (ङ) तुम = तुम्ह । (ख) नवो = नव । (घ) नाटिका राधा = नाटिका तुम राधा ।

सो माया रावन घर गएऊ । बुधि बल ग्यान सभे बसि भएऊ ॥७७५॥[1]
छन महं रावन भए बिधंसा । कुल नहिं राखा एको बंसा ॥७७६॥[2]

साखी

मन की ममिता काल है, करन करावै जानि ।[3]
श्रौर मिलाव गरद में रावन की भइ हानि ॥६६॥[4]

चौपाई

जिन्हि ब्रम्हा कहि बेद सुनाई । ताके अंत ब्रम्हो नहिं पाई ॥७७७॥[5]
कोटिन्हि ब्रम्हा गए भसाई । कोटिन्हि इन्द्र भए चलि जाई ॥७७८॥[6]
केते त्रिगुन जगत भरमाई । गोप सखा संग गाय चराई ॥७७९॥[7]
मुख मुरली लिए आपु बजाई । बिंद्राबन बसि तान सुनाई ॥७८०॥[8]
केते कंस बध उन्हि कीन्हा । कइक बार कुबरिहिं मन दीन्हा ॥७८१॥[9]
केते संकर जोग सभ करहीं । उपजी बिनसी देह सम धरहीं ॥७८२॥[10]

साखी

कहैं दरिया सुनु पंडित, इह करता के भेव ।[11]
पपस फूल काहे पूजहु सुमरन करु गुरुदेव ॥६७॥[12]

---

१ (ख) (ङ) गएऊ = गऊ । (घ) (ङ) सभे = सभ । (ख) (ग) (घ) (ङ) भएऊ = भैऊ ।
२ (ख),(ङ) महं = मे । एकौ = ना । (ख),(ङ) राखा = राखिन । (ग) (घ) राखा = राखिन्ह ।
३ (क) (ख) (ङ) करम = कर्म ।
४ (क) (ग) (घ) (ङ) औ = अरु । (ख) (ङ) मिलाव = मिलायो । (घ) (ङ) गरद = गर्द ।
(घ) में = मो ।
५ (ङ) जिन्हि = जिनहीं । (क) (ग) कहि = कह । (क) (ग) (घ) (ङ) ताके = ताको ।
(घ) ब्रम्हो = ब्रम्हे । (ग) (ग) (ख) (ङ) नहिं = नाहिं ।
६ (ग) (ग) कोटिन्हि = कोटिन्ह । (ङ) ब्रम्हा = बरह्मा । (ग) (घ) कोटिन्हि = कोटिन्ह ।
(ङ) कोटिन्हि = कोटिना ।
७ (ङ) त्रिगुन = तिगुन ।
८ (क) आपु बजाई = आप बज आई । (ङ) बिंद्राबन = बिरदाबन । (ग) ७९ संख्यक
चौपाई की अर्द्धाली अप्राप्त ।
९ (ग) (ग) (ख) (ङ) बध = बंधन । (क) (ङ) कइक बार = कइपार । (ग) कइक बार =
कइउपार (ख) कइक बार = कउपार । (ग) कुबरिहिं = कुबरी ।
१० (ग) बिनसी = बनसी ।
११ (घ) पंडित = पंडी । (ग) (घ) के = का । (ख) (ङ) के = कर ।
१२ (ङ) काहे = काहे । (घ) सुमिरन = सुमिर । (घ) गुरुदेव = गुरुदेव । (ख) (ङ) गुरुदेव =
गुरुदेउ ।

पढ़ि पाखंड पयस की पूजा । आतमदेव भजहि ना दूजा ॥३६६॥[1]

साखी

तब तोहि आनौं पंडित, मुक्ति कहाँ देहु भाए ।[2]
इस लोक की बातें कहहु तब मोर मन पतिआए ॥६५॥[3]

चौपाई

पोथी पत्रा गीता गावहु । भेद नाहिं सब वेद भुलावहु ॥३६७॥[4]
मस्तक पाप अपन सिर लीजै । अपनी मुक्ति कहाँ तुम कीजै ॥३६८॥[5]
कोटिन्हि ब्रम्हा खोजत भुलाना । इसलोक नहि सुरति समाना ॥३६९॥[6]
सुरति चिन्हे बिनु भए दिवाना । मन परखे बिनु आपु भुलाना ॥३७०॥[7]
तुलसी ठाकुर मंत्र सिखावै । राम ठाकुर से जग भरमावै ॥३७१॥[8]
माया पद परखै सब कोई । तिरसै कहु खोजै नहि सोई ॥३७२॥[9]
ए माया बलि छलो बनाई । माया मे जग पचि पचि जाई ॥३७३॥[10]
माया ते सकल बस कीन्हा । माया की सीता नहिं चीन्हा ॥३७४॥[11]

(ख) (ग), (घ) (ङ) की = का । (ख) सब = राम । (घ) भजहि = भजि । (ख) (ग) (घ), (ङ) ना = नाहि ।

२. (ख), (ग) (घ), (ङ) आनौं = आनो ।

३ (ग) कहहु = कहो । (घ) कहहु = कहु । (घ) मोर = मोरो ।

४ (ग) (ङ) पत्रा = पतरा । (ग) गीता गावहु = गीता सब गावहु । (घ) भेद नाहि तो भेद भुलावहु ।

५ (ख) मस्तक = मस्तके । (ख) (ग) (घ) (ङ) अपने = आपन । (ख) (ग) अपनी = आपन । (घ) मुक्ति = मुकुति । (ग) (घ) (ङ) तुम = तुम्ह ।

६ (ख) (ग) (घ) कोटिन्हि = कोटिन्ह । (ङ) कोटिन्हि = कोटिन्ह । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि । (ग) सुरति = सुर्ति ।

७ (ग) सुरति = सुर्ति । (ग) चिन्हे = चिन्हे । (ख) भए = भई । (ग) भए = भे । (ख) (घ) (ङ), (ङ) दिवाना = दिवाना । (ग) (घ) परखे = परखे । (ख) आपु = आप ।

८ (ख) (ग) (घ) (ङ) ठाकुर = ठाकर । (ख) सिखावै = सुनावै । (ङ) सिखावै = सिखावे ।

९ (ख) माया = मया । (ग) (घ) (ङ) परखै = परखे । (ख) तिरसै = तिरसइ । (घ) तिरसै = तिरसे । (ख) (ग) कहु = कह । (ख) खोजै = खोज । (ग) (घ) (ङ) खोजै = खोजे । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि ।

१० (ग) (घ) ए = यह । (घ) (ङ) ए = एह । (ख) से = स । (ग) (घ) (ङ) स = सो ।

११ (ख) (ग) (घ) (ङ) बस = बसि । (ग) (ग) (घ) की = क । (ङ) की = क । (ख) (ग) (घ), (ङ) नहि = नाहि ।

घरि घरि रहे जोति की आसा । सो नर जइहें जम के त्रासा ॥७९२॥[1]
पुर्व पुरान जिन्हि हंस उबारा । ताको लोग ना करहिं गवारा ॥७९३॥[2]
भटका मिट ना भूल मेटाई । ऊंच नीच कहि गए असाई ॥७९४॥[3]
गुर गमि ग्यान गमी नहि कीन्हा । नाहिं गुरु सतगुर कछु चीन्हा ॥७९५॥[4]
सोइ कहीं जो कहहिं कबीरा । दरियादास पद पावो हीरा ॥७९६॥[5]
साहब परचै दीन्ह देखाई । तात लोक कहा समुझाई ॥७९७॥[6]
मूळ बात जनि जानै कोई । सब्द बिचार करहिं नर लोई ॥७९८॥[7]
जम जगाति बड़ा उतपाता । करै अचानक जीव कहं घाता ॥७९९॥[8]
मातु पिता कोइ संग न लागा । मुखला पुर्स नारि जिव त्यागा ॥८००॥[9]
नाही माया रोइ बिचारी । जइहें ब्रम्हा मरि मरि धारी ॥८०१॥[10]
मुखला कुरमा नरक के बेही । मन्द मुख लाए मासु सभ लेही ॥८०२॥[11]
छोटि जाति के करम बिधाना । मउरि जाएक नरक समाना ॥८०३॥[12]

---

१ (क) (ग) रहे = रहै । (ख) (ग) (घ) की = के । (घ) की = के । (ख) (ग) (घ) जइहें = जन्हे । (घ) (ङ) जम के = जमक । (ङ) त्रासा = तरासा ।

२ (ग) (क) पुर्व = पुरुब । (ख) जिन्हि = जिन्ह । (ग) ताको = ताके । (ग) ना = न ।

३ (ग) भटका = भटकन । (ख) मिट = मिटे । (ग) मिट = मिरे । (घ) (ङ) मिटै = मट । (ख) (ग) (घ) (ङ) भूल = मूल । (ख) (ग) (घ) (ङ) मेटाइ = मेटाई ।

४ (ग) (घ) (ङ) (च) नहिं = नाहि । (ख) (ग) (घ) (ङ) गुरु = गुर । (ख) (ग) (घ) (ङ) सतगुरु = सतगुर ।

५ (ख) (ग) (घ) (ङ) कहीं = कहा । (ख) पावो = पावहु । (ग) पावो = पावहु । (ङ) पावो = पाएबो ।

६ (ग) साहब = साहेब । (ग) (घ) परच = परचै । (क) (ग) (घ) (ङ) तात = तात ।

७ (घ) मूळ = मूरी । (क) (ग) (घ) जान = जान ।

८ (ख) जगाति = जगातिक । (ख) (ग) (घ) बड़ा = बड़ । (ग) (घ) कर = करे । (क) (ग) कहं = क । (घ) कहं = क ।

९ (घ) नारी = नारीय । (ग) (घ) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (घ) रोइ = रोइहि । (ङ) रोइ = रोइ । (ग) (घ) (घ) (ङ) बिचारी = बेचारी ।

१० (ग) जइहें = जइह । (घ) जइहें = जवहीं । (क) (घ) (घ) ब्रम्ह = ब्रम्हा । (ङ) ब्रम्हा = बुम्हा ।

११ (ग) (ग) कुरमा = पुरमा । (ङ) सभ = सब ।

१२, (क) जाति के = जातक । (घ) जाति क = जातक । (ग) करम = कम । (ङ) (च) (छ) मउरि = मउरि । (ग) मउरि = भरि । (घ) नरक = नर्क ।

चौपाई

पंडित नाम कुपथ विचारा । सत्त नाम है प्रेम पसारा ॥७८३॥[1]
सत सारथि करि सीझै अपना । जनम जनम के मेटु कलपना ॥७८४॥[2]
ताहि खोजो जो खोजहि कबीरा । बैठि निरंतर सीझै बीरा ॥७८५॥[3]
जनम जनम के धोखा मिटि जाई । जाए छपलोक बहुरि नहिं आई ॥७८६॥[4]
केते ब्रम्हा जाहि नसाई । इंद्र केतको विनसहि आइ ॥७८७॥[5]
जाहुहि सेस सहस्र मुख बखना । तीनि लोक की ईहै रचना ॥७८८॥[6]
चलिहैं संकर जोग बिसारी । चलिहैं किस्न ग्वाल मुरारी ॥७८९॥[7]
जहँ जोगी जति सम कोई । तीनि लोक काम बसि होई ॥७९०॥[8]

साखी

कहै दरिया सुनु पंडित, देखो सब्द विचारि ।[9]
जो जइहैं अमै लोक महं, साहब सुरति समारि ॥६८॥[10]

चौपाई

बूड़त सुर नर मुनि सब हारे । आदि अंत नहिं कहै बेचारे ॥७९१॥[11]

---

१ (ख) है = एह । (ङ) प्रेम = पैरेम ।
२ (ख) (घ) अपना = अपाना । (ग), (घ) जनम जनम = जन्म-जन्म । (ङ) जनम जनम = जनमे जन्म । (घ) (ङ) के = क ।
३, (ग) निरंतर = निरंत ।
४ (ख) के = क (ङ) के = क । (ख) (ग) (घ), (ङ) मिटि जाइ = मटि जाई । (ख) (घ), (ङ) नहि = नाहि ।
५ (ख) जाहि = जाए । (ङ) इंद्र = इन्दर ।
६ (ग) (घ) केतेको = केतेके । (ग) जाहहिं = जाहें । (ख) (ग) (घ), (ङ) की = का । (ख) (घ) ईहै = इहे । (ग) ईहै = इहेहे ।
७ (ख) (ग) चलि हैं = चलिहे । (ख), (ङ) चलि हैं = चलिहे । (घ) (ङ) किस्न = किसुन । (ग) ग्वाल = जो ग्वाल ।
८ (ग), (घ) जहँ = जहें । (ङ) जहँ = जहदे ।
९ (ख) कहै दरिया सुनो महथा पंडित । (ग) पंडित = पंडिता ।
१० संक्षिप्त पाठ में जइहैं के पहले जो नर पाठ है । (ख) नर = जन । (ग) (घ) जइहैं = जाही । (ग) जइहैं = जाइ । (ङ) जइहैं = जइही । (ग) (ङ) अमलोक = अमेलोक ।
११ (ग) (घ) (ङ) हारे = हारै । (ग) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ग) अंत = अंत । (-) कहै = कहे । (ख) बेचारे = बिचारे । (ग) (घ) बेचारे = बिचारै । (ङ) बचारे = बचारै

भवन माहीं बिना दीपक नाम मनि बिसरावही ।[1]
कहै दरिया दाग दिल में समझि मन लपटावहीं ॥११॥[2]

सोरठा

अंधियारे दीपक दीजिए तब होवै परकास ।[3]
ग्यान समुझि कर लीजिए उतरि जाए भवपार ॥११॥[4]

चौपाई

मानुष जन्म है सुफल अनंदा । जो जन परै ना जम के फंदा ॥८१२॥[5]
कहत सुनत सब जाइ नसाई । मन परचै बिनु मूल गवाई ॥८१३॥[6]
नाम बिना नर जीवन कहावै । जो नहिं गुर गमि ग्यान समावै ॥८१४॥[7]
संत सोइ शीतल सत बानी । अखिल प्रेम पिव जाए ग्यानी ॥८१५॥[8]
मस्तक मुकुटा जाके होई । मलयागिर बड़ाव सोई ॥८१६॥[9]
ताके पारस सिर मूल लागा । मैं नहिं मिटत रहै वह लागा ॥८१७॥[10]
बिनु मुकुटा मस्तक है हीना । सो नर ऐसा सत गुर चीन्हा ॥८१८॥[11]
अष्टंग सोइ जाके मनि उजियारा । जाके तेज दीपक भव टारा ॥८१९॥[12]
रहै समीप सोए सनमुख सोई । उलटि फिरै सब कछुआ होई ॥८२०॥[13]

---

१ (ख) भवन = भौन । (ग) भवन = भवोन । (छ) (ज) (च) (ज) मारि = मारि ।
२ (ख) (ग) (च) दाग = दगा । (छ) लपटावहिं = पछतावहीं ।
३ (ग) अंधियारे = अंधियारहिं । (घ) अंधियारे = अंधियार । (घ) (ङ) दीजिए = दीजिये । (ख) (ग) (च) (ङ) परकास = परकाश ।
४ (च) (ङ) लीजिए = लीजिये । (ग) (च) भव = भौ । (ग) भव = भवो ।
५ (ङ) जो जन = जोजन । (ग) (ग) परै = परे । (घ) (ङ) ना = हू । (ङ) के = कै ।
६ (ग) (घ), (ङ) जाइ = जाय । (ग) जाइ = जाहि । (ग) (ग) (घ) परचै = परचे ।
७ (ग) जो = जब । (ग) जो = जो । (घ) (ग) जो = जौ ।
८ (ङ) जोए = जोय ।
९ (घ) मुकुटा = मुकुट । (ग) (घ) जाके = जाकह । (ङ) जाके = जाक । (घ) मस्त = मस्तक ।
१० (ख) ताके = ताके । (ग) (घ) सिर = सीं । (ङ) सिर = सिरी । (ग) मै = मन । (ग) (घ) रहै = रह । (छ) रह = रहे ।
११ (ग) बिनु = बिन । (ग) मुकुटा = मुकुट । (ङ) ऐसा = ऐसे ।
१२ (ग) (घ) भव टारा = भटारा । (घ) (ङ) भवटारा = भौ टारा ।
१३ (ग) (घ) रहै = रहे । (ङ) सोए = आए । (ग) (घ) (ग) उलटि = उलटि । (ग) उलटि = उलटि । (ग) (घ) (घ) फिरै = फिरे ।

बधे जीव मछरी सम लाही । मुगला पितर नरक का जाही ॥८०४॥[1]
मारहि हिरनी ससी बगेरा । मारि मारि सब खेलहि अहेरा ॥८०५॥[2]
मासु एक दूजा नहिं होई । समुझी सब अरपै नहिं कोई ॥८०६॥[3]
माया पाप ब्रम्हन कहे राता । राह दखाए करै बिसघाता ॥८०७॥[4]
हिंदू तुरुक दुनो भुलाना । दुनो बादि बिबादि बिलाना ॥८०८॥[5]
बोए हिरनी बोए गाए जो खाई । सोहू एक दूजा नहिं भाई ॥८०९॥[6]
ब्रम्हन से बिसवक मैं साजा । कल्प कोटि लौ होए अकाजा ॥८१०॥[7]
मोलना दोजख मार में जावै । अजरिल जबर तेहि बहुत सतावै ॥८११॥[8]

छन्द

भरमि सब भवसागरे गुन ग्यान गमि नहिं पावहीं ।[9]
पढ़ि वेद किताब पुरान को गति दरस दया नहिं भावहीं ॥[10]

---

१ (ग) बध बध जीव मछम लाही । (ग) बध बध जीव मछ सब लाही । (घ) (ङ) बधे = बध । (ख) (ग) (घ) (ङ) को = के ।

२ (ग), (ग) (ङ) हिरनी = हरिनि । (घ) हिरनी = हरनी । (ख) खेलहिं = खेलहु ।

३ (घ) एक = यक । (ग) (ख) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं । (ग) (ग) अरपै = अरपे । (घ) अरपै = अरपे ।

४ (ख) (ग), (ङ) माया पाप ब्राम्हन क राता । (ङ) मैया पाप ब्रम्हन नहिं हरता । (घ) = कर = करे । (ग) पाठ संशोधन किया गया है ।

५ (ख) हिंदू तुरुक मोह दुनो भुलाना । (ग) हिंदू तुर्क दुनो भुलाना । (घ) हिंदु तुरुक इमि दुनो भुलाना । (ङ) हिंदु तुरुक इमि दुओ भुलाना । (ख) (ग) दुनो बादिहि बादि बिलाना । (घ), (ङ) दुनो बादिहि बादि बिलाना ।

६ (ख), (ग) हिरनी = हरिनी । (घ) (ङ) हिरनी = हरनी । (ग) (ङ) बोए = बोए । (घ), (ङ) बोए = बोए । (ख), (ग) सोहू = सोहुआ । (ङ) सोहू = सहु । (ख), (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।

७ (ख) (ग) (घ) (ङ) ब्रम्हन = ब्राम्हन । (ग), (घ) (ङ) से = सो । (ख) बिसवक = बिसवक । (घ) (ङ) बिसवक = बिसोध । (घ) बिसवक = जो बिसोध । (ग) (घ) कै = क । (घ) मैं = मे । (ग) (घ) (ङ) मैं = सहि । (ख) (ग) (घ) (ङ) होए = होय ।

८ (ग), (घ), (घ) (ङ) दोजख = दोजख ।

९ (ग), (ख) (घ) (ङ) भव = भरमि । (ग) भव सागर = भौ सागर । (घ) भव सागर = भौ सागरे । (ग) (ग) गुन = गुर । (ग) (ख) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।

१० (ग), (ङ) दरस = दर्स । (घ) भावहीं = भावही ।

कहत फिरै हम बड़ा कुलीना । घरवा मैं तुरकिनि नहिं चीन्हा ॥८३०॥[1]
झूठ कहै सब झूठ सुनावै । औगुन कोम अनेक भावै ॥८३१॥[2]

साखी

साँचो पंडित मानवा, सत सीस आसीस ।[3]
सत नहीं स्वारथ तके सोई बड़ा वकील ॥७०॥[4]

चौपाई

सत धरती है सत अकासा । सत्ते भगति प्रेम परगासा ॥८३२॥[5]
ताको सत नर करै बखाना । चपल छोड़ि समुझ जो ग्याना ॥८३३॥[6]
ना कछु बाम ना कछु दाई । ताके पुत्र मिलै का भाई ॥८३४॥[7]
जो कोइ पंडित होय ग्यानी । भेद समुझि से निरमल बानी ॥८३५॥[8]
मेरे कहे जो मानहु प्रानी । सत सब्द नहिं होवै हानी ॥८३६॥[9]
भ्रम मोह जहं भय नहिं आनी । होय हिरा तब निरमल बानी ॥८३७॥[10]

---

१ (ख) फिरै = फिर । (ग) फिर = फिरे । (घ) (ङ) फिरै = फिरहिं । (छ) (ग) बड़ा = बड़े । (ग), (ङ) कुलीना = कुलीनहा । (छ), (ग) (घ) (ङ) घरवा मैं = घर मैं । (छ) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ग) (ङ) चीन्हा = चीन्हा ।

२ (छ) (ख) (घ) झूठ = झूठे । (ग) सुनावै = सुनावै । (छ) (ख) (ङ) औ = मन । (ग) औ = मनो ।

३ साँचो = साच । (छ) मानवो = मानहु । (ग) मानवो = मानो । (ख) मानवा = मानेवे । (घ) सत = सत्ये । (ङ) सत = सतोमा । (छ) (ग) (ख) आसीस = असीस ।

४ (छ) सत नहीं स्वारथ ताके । (घ) सत बड़ा नाहिं स्वारथ ताके । (घ) सत नहीं ताके स्वारथ । (ङ) सत नहीं ताके स्वारथ । (छ) (ग) (ख) (ङ) वकील = वकील ।

५ (ग) (ख) सत्ते धरती है । (घ) सत धरती है । (ङ) सत्तं धरती । स्वीकृत पाठ में सत्ते 'सर्वांग' का पदांश है' है । (घ) नर = पुरुष । (घ) भगति = भक्ति । (ख) करै = करे । (घ) (ख) (ङ) = कर = करो ।

६ (छ) समुझ = समुझे । (ख) समुझै = जो समुझे । (घ) जो = जेन ।

७ (ग) न किछु बाम ना कछु दाई । (ख) ना = नै । (घ) ना कछु बोलै जो कछु । (ङ) ना कछु बामै ना दुज दाई । (ङ) कछु ताके पुत्र मिल का दाई । (छ) (घ) कछु ताके पुत्र मिल का भाई । (घ) (ङ) कछु तोहि पुत्र का मिलै भाई ।

८ (ग) से = सेहु । (ङ) स = मे ।

९ (ङ) कहे = कह । (ग) जो = जब । (ख) जो = जो । (ग) (ग) (ङ) (ख) नहिं = नाहि ।

१० (ग) जहं = हा । (ग), (घ) (घ) (ङ) भय = भ । (घ) नहिं आनी = नाहि हो आनी । (ग) बानी = भाना ।

संत सोइ मनि मस्तक मूसा । ग्यान रतन कबहीं नहि मूसा ॥८२१॥[1]

साखी

दरिया भगत कहाए सोई, जाके मनि उजियार ।[2]
भउरि भग्म से भठि मुए, निरभै नाहि गँवार ॥६६॥[3]

चौपाई

पत्थर नाम कहाव सोई । जो परसै सो कंचन होई ॥८२२॥[4]
भउरि परसै सम सील बखाना । ताको कबिजन करै बखाना ॥८२३॥[5]
सतगुर सब्द बचन जेहि लागा । सो जन संत है सुरति सुभागा ॥८२४॥[6]
नारी सोइ जो नर मैं बोलै । पिय की सेवा बचन नहिं डोलै ॥८२५॥[7]
भउरि कसेको बचन गनाव । ताको सेवा कबिजन लाव ॥८२६॥[8]
सकल जीव कहूं कहै बुझाई । पंडित के घर सोध न पाई ॥८२७॥[9]
अपन ब्रम्हन बिस्नो होई । घर में साकट मेहरि सोई ॥८२८॥[10]
मासु खाए संग पूतै जाई । ताके मुख सु बन गहि खाई ॥८२९॥[11]

---

१ (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
२. (ग) भगत = भक्त ।
३. (क) स्वीकृत पाठ में 'भठि' की जगह 'भटि मरि' है ।(ख) भवरि भरमि भकि मुव । (ग) भौंरि भरमि से भटि मरि मुये । (घ) भौंरि भर्मि भ्रम मठि मरि मुए । (ङ) भवरि भर्मि भ्रम गरि मुए । (ग) निरभ = निरभे । (घ) (ङ) निरभ = निर्भै ।
४ (ग) (घ) परस = परसे ।
५ (ग) भउरि = भवर । (ग) भउरि = भौरि । (घ) (ङ) भउरि = भवरि । (ग) (घ) परस = परसे । (ङ) परस = पर्सै । (घ) (ङ) ताको = ताके । (ख) (घ) करै = करे । (घ) (ङ) कर = करो ।
६ (ग) (ग) (घ) (ङ) सुरति = सुमति ।
७ (ख) पिया के बचन कबहिं ना डोल । (ग) (घ) (ङ) की = के । (ग), (घ) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
८ (ग) (ङ) भउरि = भवरि । (ग) (घ) भउरि = भौंरि । (घ) (ङ) कसेको = केसेको ।
९ (घ) (ङ) जीव = जीवन्ह । (ख), (ग) (घ) कहू = कहे । (ख) न = ना । (घ) न = ने । (घ) (ङ) न = न ।
१० (ख) अपन = आपन । (ङ) अपन = अपन । (ग) (घ) (घ) ब्रम्हन = ब्राम्हन । (ङ) ब्रम्हन = ब्रहमन । (घ) (ङ) बिस्नो = बिसुनो । (ग) मेहरि = मेहर । (घ) घर में मेहरि साकट सोइ ।
११ (ग) (घ) (घ) (ङ) पूत = पूते । (ग) (घ) (ङ) ताके = ताके । (ख), (ग) (घ) (ङ) सु बन = सु गन ।

क्रोध मोह त्रिसना नहिं होई । पंडित नाम सदा है सोई ॥८४६॥[1]
संध्या गाएत्री जाप जिन्हि जाना । भेद निरखि जिन्हि निर्गुन ठाना ॥८४७॥[2]
सरगुन रूप बिरला जन पावै । निरगुन नाम सहज सो गावै ॥८४८॥[3]
पूरन पंडित कहावै सोई । अठारह गुन ब्रह्मन के होई ॥८४९॥[4]
अठारह बरन के राजा सोई । ब्रह्म चिन्है बिनु जात बिगोई ॥८५०॥[5]
नौगुन सुतरा जोरि सुधारा । गांठि तीनि मोहकर्म कै डारा ॥८५१॥[6]
काम क्रोध मोह मद भारी । बोलहिं पंडित बचन बिचारी ॥८५२॥[7]
पंडित सन्दे करु निरुआरा । का तुह अपहु कवन पद सारा ॥८५३॥[8]
कहिं पर हंसा होहि असवारा । कसे उतरहिं भव जल पारा ॥८५४॥[9]
सतगुर जानि पांति महि लीजै । जाति खोजै तेहि पातक दीजै ॥८५५॥[10]
कहौं सब्द सुनो मतवानी । सतगुर बिना करिहैं जम हानी ॥८५६॥[11]

साखी

दरिया भवजल अगम है, सतगुर करो जहाज ।[12]
तापर हंसा चढ़ि कै जाए करो सुखराज ॥७२॥[13]

---

१ (ग) (घ) (ङ) त्रिसना = त्रिश्ना । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
२ (ख) (घ) (ङ) गाएत्री = गायत्री । (ग) गाएत्री = गाए । (ख) (ग) जाप जग्य ।
(ङ) जाप = जपनहु । (ख) (घ) निर्गुन = निर्मल । (ख) (ग) (घ) (ङ) ठाना = स्थाना ।
३ (ग) रूप = स्वरूप । (ख) (ग) (घ) (ङ) सहज = सो सहज । (ख) (ग) (घ) (ङ) सो गावै = सरावै ।
४ (घ) के = कह ।
५ (ख) अठारह बरन के = अगारह के । (घ) के = का । (ङ) के = के । (ग) चिन्है = चिन्है ।
६ (घ) (ङ) नौ गुन = नवगुन । (ख) (ग) (घ) (ङ) सुतरा जोरि = सुत संजोरी ।
(ख) (ग) कै = कै ।
७ (ख) मद = मद ।
८ (ग) सन्दे = सन्द । (घ) (ङ) सन्दे = सन्द । (ख) (ग) (घ) (ङ) करु = करहु ।
(ख) (ग) (घ) (ङ) तुह = तुम । (ङ) निरुआरा = निरुआरी ।
९ (ग) (ङ) हंसा = हंस । (घ) (ङ) होहि = होवहि । (घ) कसे = कसे । (ग) (घ)
(ङ) उतरहिं = उतरहि । (ख) भव = भौ । (घ) भव = भवो ।
१० (ग), (ग), (घ), (ङ) महि = माहि । (घ) खोजै = खोजै । (ख) (ग) (ङ) पातक = पातका ।
११ (ग) (ग) (घ) (ङ) कहौं = कहो । (ग) सुनो = सुनहु । (ख) करिहैं = करही ।
(ग) (घ) (ङ) करिहि । (घ) जम हानी = जीवहानी ।
१२ (ग) (ग) भव = भौ ।
१३ (घ) (ङ) तापर = ताहि पर । (ग), (ग) (ङ) हंसा चढ़ि कै = हंस चढ़ाय ।

सब्दे सारै सब्द उबारै । सब्दे चढ़ि छपलोक सिधारै ॥८३८॥[1]
सब्दै घोर हंस असवारा । सब्दै चाबुक ज्ञान करारा ॥८३९॥[2]
सब्दे पठै मांझ मंझारा । सब्द पीवै प्रेम प्रचारा ॥८४०॥[3]
कहै दरिया जिन्हि सब्द निनारा । ताको हंसा पहुंचु सवेरा ॥८४१॥[4]

साखी

सब्द सरासन बान है, सत्ते सब्द निसान ।[5]
कहै दरिया नर बाचिया, सतगुर की पहचान ॥७१॥

चौपाई

हीरा सोई जग में लहई । छोटी बड़ी बात सम कहई ॥८४२॥[6]
जैसो राजा रंक कहावै । एक रंग दुजा नहिं भावै ॥८४३॥[7]
दूजा दोविधा जे नहिं होई । भगत नाम कहावै सोई ॥८४४॥[8]
ब्रम्हन सोइ जो ब्रम्हहि चीन्हा । ध्यान लगाए रहै लौ लीन्हा ॥८४५॥[9]

---

१ स्वीकृत पाठ में 'सब्द सारै' के पूर्व ईह है । (ग) एह = एह । (ग) (घ) सब्द = सब्दे । (ङ) सब्द = सब्द । (ख) (ग) सारै = तारे (ग) (ङ) सब्द = सब्द । (ङ) सब्द = सब्द । (घ) (ग) उबार = उबारे । (ङ) सब्दै = सब्द । (ङ) सब्द = सब्द । (ग) सिधारै = सिधारे ।
२. स्वीकृत पाठ में 'सब्द घोर' तथा 'सब्द चाबुक' के पूर्व ईह है । (ख) ईह सब्द = एह शब्द । (ग) एह सब्द = सब्द । (घ) ईह सब्द = सब्द । (ङ) ईह सब्द = इह सब्द । (ख) (ग) घोर = घोड़ा । (घ) (ङ) घोर = घाग । (ग) (घ) एह = एह । (घ) इहसब्द = सब्द । (ख) (ग) (घ) (ङ) चाबुक = चाबुक ।
३. स्वीकृत पाठ में सब्द पठै तथा सब्द पीव के पूर्व ईह है । (ख) (ग) ईह = एह । (घ) ईह सब्द = सब्द । (ङ) ईह सब्द = इह सब्द । (ग) पठ = पग । (घ) पठ = पठ । (घ) पठ = पठै । (ख) (ग) ईह = एह । (घ) ईह सब्द = सब्द । (ङ) ईह सब्द = इह सब्द । (ख) पीव = पीव । (ग) (घ) पीव = पीवे । (ङ) पीव = पाम ।
४ (ङ) कहै = कहै । स्वीकृत पाठ में 'ताको हंसा' के पूर्व ईह है । (ख) (ग) ईह = एह । (ङ) हंसा = हंस ।
५ (ग) सब्द = इह सब्द । (ङ) (ग) सरासन = सरासन । (ङ) सत्ते = सत ।
६ स्वीकृत पाठ में 'हीरा सोइ तथा छोटी बड़ी' के पूर्व ईह है । (ख) (ग) ईह = एह । (ग) जग = जग । (ख) लहई = लहइ । (ग) लहई = लहिहै । (घ) (ङ) लहई = लहइ । (ग) (घ) ईह = एह । (ख) (घ), (ङ) कहई = कहइ । (ग) कहई = कहिहै ।
७ स्वीकृत पाठ में 'जैसो राजा' के पूर्व ईह है । (ख) (ग) ईह = एह । (ग) जैसो = जैस । (घ) (ङ) जैसो = जैसा । (घ) (ङ) एक = एक । (ग) (घ) (ङ) (ङ) नहिं = नाहि ।
८ (ग) (घ) (ङ) (ङ) जे = जेहि । (घ) भगत = भक्त ।
९ (ख) (ग) (घ) (ङ) सोइ = सो । (ख) (ग) (घ) (ङ) ब्रम्हन = ब्रम्हाणी । (ग) (ग) रहै = रहे । (ख) (ग) (घ) (ङ) लौ = लव ।

क्रोध मोह त्रिसना नहिं होई । पंडित नाम सदा है सोई ॥८४६॥[1]
संध्या गाएत्री जाप जिन्हि जाना । भेद निरखि जिन्हि निगु न ठाना ॥८४७॥[2]
सरगुन रूप बिरला जन पावै । निरगुन नाम सहज सो लावै ॥८४८॥[3]
पूरन पंडित कहाव सोई । अठारह गुन ब्रम्हन के होई ॥८४९॥[4]
अठारह बरन के राजा सोई । ब्रम्ह चिन्है बिनु जात बिगोई ॥८५०॥[5]
नौगुन सूतरा जोरि सुधारा । गाठि तीनि मोहकर्म के डारा ॥८५१॥[6]
काम क्रोध मोह मद भारी । बोलहु पंडित बचन बिचारी ॥८५२॥[7]
पंडित सब्दे कर निरुआरा । का तुह जपहु कवन पद सारा ॥८५३॥[8]
कहि पर हंसा होहि असवारा । कसे उतरहि भव जल पारा ॥८५४॥[9]
सतगुर जाति पांति नहिं खोज । जाति खोज तेहि पातक बोज ॥८५५॥[10]
कहीं सब्द सुनो सतबानी । सतगुर बिना करिहैं जम हानी ॥८५६॥[11]

साखी

दरिया भवजल अगम है, सतगुर करो जहाज ।[12]
तापर हंसा चढ़ि कै जाए करो सुखराज ॥७२॥[13]

---

१ (ख) (घ) (ङ) त्रिसना = त्रिगुना । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
२. (ख) (घ) (ङ) गाएत्री = गायत्री । (ग) गाएत्री = गावे । (ख) (ग) जाप = जपन । (ङ) जाप = जपन्ह । (ख) (घ) निगु न = निर्मल । (ख) (घ) (च) (ङ) ठाना = ध्याना ।
३ (ग) रूप = स्वरूप । (ख) (ग) (घ) (ङ) सहज = सो सहज । (ख) (ग) (घ) (ङ) सो लाव = सलाव ।
४ (घ) के = केंह ।
५ (ख) अठारह बरन के = अठारह के । (घ) के = का । (ङ) के = के । (ग) चिन्है = चिन्हे ।
६ (घ) (ङ) नौ गुन = नवगुन । (ख) (ग) (घ) (ङ) सुतरा जोरि = सुत संजोरी । (ख) (ग) के = के ।
७ (ख) मद = मद ।
८ (ग) सब्दे = सब्द । (घ) (ङ) सब्द = सब्दै । (ख) (ग) (घ) (ङ) कर = करहु । (ख) (ग) (घ) (ङ) तुह = तुम । (ङ) असवारा = असवारी ।
९ (ग) (ङ) हंसा = हंस । (ग) (घ) होहि = होवहि । (घ) कसे = कहसे । (ग) (ङ), (ङ) उतरहि = उतरहि । (ख) भव = भौ । (ग) भव = भवो ।
१० (ख) (ग), (घ), (ङ) नहिं = नाहि । (घ) खोज = खोजे । (ख) (ग) (ङ) पातक = पातका ।
११ (ख) (ग) (घ) (ङ) कहीं = कहो । (ग) सुनो = सुनहु । (ख) करिहैं = करही । (ग) (घ) (ङ) करिहि । (घ) जम हानी = जीवहानी ।
१२. (ग) (ग) अगम = था ।
१३ (घ) (ङ) तापर = ताहि पर । (ग), (ग) (ङ) हंसा चढ़ि = हंस चढ़ाय ।

छिरिकि सुगंध हंस सिर डारी । बोलहिं मंगल बहुत सुठारी ॥८७०॥[1]

साखी

सुधा अगर परिमल की झरिहैं छिरिकहिं बहुत सुठारि ।[2]
दया दरस दीदार में मिटा कल्पना झारि ॥७१॥[3]

चौपाइ

पुरुष एक सबहिं तें न्यारी । संतन्हि महिमा सदा बखानी ॥८७१॥[4]
ताहि सुमिरे हंसा सुख पावै । कबहिं न एहु जग भटका खावै ॥८७२॥[5]
सब्द विचार करै नर सोई । अमर लोक पहुँचै सोई ॥८७३॥[6]
सब्द विवेकी भगत कहावै । बिनु सब्दे पथ में भरमावै ॥८७४॥[7]

साखी

सब्द सरासन बान है, गहो चरन चित लाए ।[8]
गुरु के सब्द विचारिए, दुरमति सकल मेटाए ॥७४॥[9]

चौपाइ

सतगुर सब्द प्रेम रस पीजै । काम कुबुधि दूरि सब कीजै ॥८७५॥
सब्द निरगुन नाह हमारा । ताके खोजहु ध्यान करारा ॥८७६॥[10]
घर माँझ सब नहिं बनाई । सपने निरगुन नाह न पाई ॥८७७॥[11]
सत पुरुष जाए बिमल बिरोगा । प्रेम प्रीति छीजै नहिं जोगा ॥८७८॥[12]

---

१ (म) छिरिकि = छिरकि । (ख) (म) (घ) (छ) सुठारी = सुठारी ।
२ (ख) (म) (ङ) (छ) सुधा = सोधा । (ख) (म) छिरिकहिं = छिरकहिं । (घ) सुठारि = सुठारि ।
३ (छ) दीदार में = दीदार बिन में । (ग) (छ) दीदार में = दीदारि में । (ख) (ग) (घ) (छ) मिटा = मेटा ।
४ पुरुष = पुरुष । (ग) सबहिं तें = सबहिं से । (घ) (छ) संतन्हि = संतन्ह ।
५ (ङ) सुमिरे = सुमिरै । (ख) (घ) (ङ) न = ना । (ग) (ख) (घ) (छ) एहु = इहु ।
६ (ख) करै = करही । (म) करै = करे । (ग) अमरलोक = अमरलोक मह । (ग) (घ), (ङ) अमरलोक = अमरलोक मह । (ग) (ग) (घ) पहुँचै = पहुँचै ।
७ (ग) भगत = भक्त । (ग) भरम = भरम । (घ) भरम = गर्व । (छ) भरम = भ्रान्ति ।
८ (ग) गहो = गह ।
९ (ग) (ग) (घ) (छ) गुरु = गुर । (ग) (घ) विचारिए = विचारिऐ । (ग) विचारिए = विचारिअ । (छ) विचारिए = विचारिआ ।
१० (घ), (ङ) सब्द = सब्द ।
११ (ग) (ग) (घ) सब = सब । (ग) सपने = सपने । (ग) (ग), (ग) न = ना ।
१२ (ङ) पुरुष = पुरुष । (घ) जाए = जाए । (ग) छीजै = छीजे । (ग) नहिं = ना । (ग) (ग), (ङ) नहिं = नहिं ।

मनसा मालिनि आपु देखाव । कामदेव तहँ मंगल गाव ॥८७९॥[1]
आश्रम देव की परसै बानी । सिष्यहि परम सुख बहुत बखानी ॥८८०॥[2]
सतगुर अम्मा सुख बहुतेरा । सतपद मा जो करै निभेरा ॥८८१॥[3]
बूझहु पंडित सत की बानी । निरखि निरंतर निरगुन ठानी ॥८८२॥[4]
पंडित से गुन होत जनऊ । जो करता के जानै भेऊ ॥८८३॥[5]
वो निरगुन गुन सूझै बिसतारा । पंडित तेजिहैं भ्रम के भारा ॥८८४॥[6]

साखी

सास्तर गीता भागवत, पढ़ि पाव नहिं मूल ।[7]
प्रेम प्रीति निरखै लगै तब पाव मसथूल ॥७५॥[8]

चौपाई

निरखै नाम प्रेम लौ लावै । सो हंसा छपलोक सिधावै ॥८८५॥[9]
जाहिं लोक बहुरि नहि अवना । जन्म जन्म के मेट कल्पना ॥८८६॥[10]
ऐसे बूझहु पंडित भाई । मग लेहु सतनाम सहाई ॥८८७॥[11]
काया अंदर ब्रह्म निजु वासा । ताहि चिन्हहु प्रेम परगासा ॥८८८॥[12]
कहीं बानी सुनहु सुजाना । बिना भेद हम नहिं जाना ॥८८९॥[13]

---

१ (घ) मालिनि = मालिन । (ङ) देखावै = देखाई । (ग) गावै = गाई ।
२ (ख) (ग) (घ) परस = परसे । (ग) (ग) (घ) (ङ) परम = प्रेम ।
३ (ख) (घ) अम्मा = आग । (ङ) अमरा = आगे । (ग) जो = जब । (घ) (ङ) जो = जौं ।
(ग) कर = कर । (ङ) निभेरा = निभरा ।
४ (ख) पंडित = सतगुर । (ग) निरगुन = निर्गुन ।
५ (ग) (घ) स = से । (ग) (घ) (ङ) होत = होए । (ग) जो = जब । (घ) (ङ) जो = जौं ।
(ग) (ङ) के = कर । (घ) (ङ) जानै = जान । (ङ) भेउ = भऊ ।
६ (ग) औ = वो । (ग) (ग) (घ) (ङ) औ निरगुन सूझ बिसतारा । (घ) क = क ।
(ङ) के = का ।
७ (क) पढ़ि के पाव । (ग) पढ़ि पव । (ग) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।
८ (क) मौलिक पाठ में 'निरखै' के बदले 'जब' है । (ग) (ग) (ङ) लग = लाग । (घ) हम = लाग । (ङ) पव = पाव ।
९ (ग) लौ = लावे । (घ) (ङ) लौ = लव ।
१० (ग) जाहिं = जाही । (ग), (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि । (ख) मटे = मेटे ।
(घ) (ङ) मेट = मति । (ग) जन्म जुग जुग सागर पवना ।
११ (ग), (ग) (ङ) लेहु = लेहौ ।
१२ (ङ) काया अंदर है (ग) काया अंदर । (ङ) काया अगर है ।
१३ (ग) (ग) (घ) (ङ) कहीं = कहो ।

सुनहु पंडित हंस के सारी । झूठ बात कहुँ जो बाती ॥८६०॥[1]
ब्रम्ह फूटि ग्रस भो तीनी । उस पुर्स ब्रम्ह सम ले भीनी ॥८६१॥[2]
प्रतिबिंबु घट परगट भई । पुर्स तेज इमि करि जग सहई ॥८६२॥[3]
समझु ग्यान एह काया बिलोई । अपने आपु में आए समाई ॥८६३॥[4]
सुरति संमस कहीं निजु बानी । सुखमनि घाट करो पहचानी ॥८६४॥[5]
झरि गगन घन बरिस अमानी । दरिया दिल बिच सुरति समानी ॥८६५॥[6]
निरख सुरति ग्यान रस सानी । पिय प्रेम तहं निरमल बानी ॥८६६॥[7]

साखी

अतना ग्यान भगति कर भेष, दिल सागर मन लाए ।[8]
पंडित आरहु बानी होवै, काल कबहिं नहि खाए ॥७६॥[9]

चौपाई

धन वोए पंडित धन वोए ग्यानी । धन वोए संत जिन्हि पद पहचानी ॥८६७॥[10]
धन वोए जागी जुगुता मुकुता । पाप पुन्य कबहीं नहिं भगता ॥८६८॥[11]
धन वोए सील जो कर बिचारा । धन सतगुर को देखनिहारा ॥८६९॥[12]

---

१ (घ), (ङ) हंस के = हंस क । (ग) झूठ = सत्य । (घ) झूठ = सत । (ग), (घ), (ङ) कहुँ = कहे ।
२ (ग) भौ = भय । (घ) भौ = भया । (ङ) भौ = भो । (ग) (ग) (घ) (ङ) तीनि = तीना । (ग) (ङ) पुर्स = पुरुष । (ग) (ग) (घ) (ङ) भीनी = भीना ।
३ (ग) प्रतिबिंबु = परतमम्बु । प्रतिबिंबु = परतिबिंबु । (घ) प्रतिबिंबु = प्रतिबिम्बु । (ग) पुरुष तेज जग इमि कर भाई । (घ) पुरुष तेज जग इमिकर भाई ।
४ (ग), (घ) ग्यान = ग्यानी । (घ) एह = एहु । (ग) अपने = आपनी । (ङ) अपने = अपना । (ग), (घ) (घ) (ङ) समाई = समाई ।
५ (ग) सुरति संमस = सुरति समस । (ग) सुरति संमस = सुर्ति समसल । (ग) सुखमनि = सुखमन ।
६ (ग) (घ) बरिसे = बरिसे । (ग) सुरति = सुर्ति ।
७ (घ) पिय = पिव । (घ) (ग) पिय = पिए । (घ) (ङ) निरमल = निरमलि ।
८ (ग) अतना = एतना । (ग) कर = का ।
९ (ग) होवै = होवै । (ग) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि ।
१० (ग) (घ) धन = धन्य । (ग) वोए = व । (घ) (ङ) वोए = वोए । (घ), (ङ) वोए = वोए । (ग), (घ) धन = धन्य । (ङ) वोए = वोए ।
११ (ग) (ग) धन = धन्य । (घ) (ङ) वोए = वोए । (ग) जुगुता = जुक्त । (घ) मुकुता = मुक्ता । (ग) (ङ) नहिं = ना । (ग), (घ) (ङ) भुगता = भुगुता । (ग) भुगता = भुगत ।
१२ (ग) (ग) कर = करे । (ग), (घ) (घ) धन = धन्य ।

मनसा मालिनि आपु देखाव । कामदेव तहँ मंगल गाव ॥८७९॥[१]
आतम देव की दरसै बानी । सिचहिं परम सुख बहुत बखानी ॥८८०॥[२]
सतगुर मम्मा सुख बहुतरा । मतपद का जो करै निमेरा ॥८८१॥[३]
बूझहु पंडित सत की बानी । निरखि निरतर निरगुन ठानी ॥८८२॥[४]
पंडित सें गुन होत जनऊ । जो करना न जान भेऊ ॥८८३॥[५]
जौं निरगुन गुन सुझै बिसतारा । पंडित तेजिहैं भव के भारा ॥८८४॥[६]

साखी

सास्तर गीता भागवत, पढ़ि पाव नहिं मूल ।[७]
प्रेम प्रीति निरखै लगै तव पाव असफूल ॥७५॥[८]

चौपाई

निरखै नाम प्रेम लौ लावै । सो हंसा छपलोक सिधावै ॥८८५॥[९]
जाइहिं लोक बहुरि नहिं अवना । जनम जनम के मेट कल्पना ॥८८६॥[१०]
ऐसे बूझहु पंडित भाई । संग मेहु सतनाम सहाई ॥८८७॥[११]
काया मंदर अम्हू निजु बासा । ताहि चिन्हहु प्रेम परगासा ॥८८८॥[१२]
कहीं बानी सुनहु सुजाना । बिना प्रेम हंस नहिं बासा ॥८८९॥[१३]

---

१ (घ) मालिनि = मालिन । (ग) देखाव = दरसाई । (ख) गावै = गाइ ।
२ (ख) (ग) (च) दरस = दरसे । (घ) (ग) (च), (ट) परम = प्रेम ।
३ (ख) (च) मम्मा = भाग । (च) भरा = भागे । (ख) का = जब । (घ) (ङ) जो = जौं । (घ) करै = करे । (च) निमेरा = निमरा ।
४ (घ) पंडित = सतगुर । (ग) निरगुन = निगुन ।
५ (ग) (घ) सें = से । (ख) (घ) (च) होत = होए । (ख) जो = जब । (च) (ट) जो = जौं । (च) (ङ) के = कर । (घ) (च) जान = जान । (ङ) भेउ = भऊ ।
६ (घ) जा = जो । (ख) (घ) (घ) (ट) जौं निरगुन सूझै बिस्तारा । (घ) कै = के । (ए) के = का ।
७ (ख) पढ़ि के पाव । (ग) पढ़ि पद । (ख) (ग) (च) (च) नहिं = नाहि ।
८ (क) स्वीकृत पाठ में 'निरख' के पहले 'जब' है । (ख) (ग) (ङ) लग = लाग । (च) तब = सार्गं । (च) पव = पाव ।
९ (ग) लौं = लाओ । (घ), (ट) लौं = लव ।
१० (घ) जाइहिं = जाही । (ग) (ग) (घ) (ट) नहिं = नाहि । (ग) मटै = मट । (च) (च) मेट = मटि । (ग) जन्म गुण सुख सागर पचना ।
११ (ग), (घ) (घ) भ्म = भ्मो ।
१२ (क) काया मंदर है (घ) काया मंदर । (ट) काया अमर है ।
१३ (ख), (ग) (घ) (ए) कहीं = कहो ।

कहेउ भेद हंस निजु ध्याना । जाते हंस सब करहिं पयाना ॥९११॥[1]
कही सतपद ईमन मत मा । दूरि आप जनि करहु रटना ॥९१२॥[2]
अगसठ तिरथ महँ सरीरा । तामें बसै अनूपम हीरा ॥९१३॥[3]
जब हीरा हारमर पाव । तब हंसा सतलोक समावै ॥९१४॥[4]
सतगुर ध्यान सुनो सतबानी । तजहु पंडित पग कसे मानी ॥९१५॥[5]
गहु प्रेम संतन्हि से जाई । दरसन प्रेम छिपा नहिं माई ॥९१६॥[6]

साखी

साखी सकल संसार में, संतो करहु बिचार ।[7]
नाम नौका ध्यान केवट लेइ उतारै पार ॥७८॥[8]

चौपाई

बानी एक घट घट में समानी । एहि बानी को मरम न जानी ॥९१७॥[9]
अगम आगी है बहुतेरा । जा न करै घट भीतर डेरा ॥९१८॥[10]
ध्यान गमी नहिं करै बिचारा । निरगुन सरगुन नहिं निरुआरा ॥९१९॥[11]
जो जप जीवहिं मग्न पचासा । जो नहिं मन सतगुर के पासा ॥९२०॥[12]
कल्पकोटि भवचक्र में परई । कष्ट कल्पना बहु दुख सहई ॥९२१॥[13]

---

१ (क) कहेउ = कहेनो । (ख) (ङ) पयाना = पैयाना ।
२ (क) कही सतपद ईमन मत मा । (ग) (घ) कहो सतपद इमन मत मा । (ङ) कहे सतपद इमि मन मत मा । (क) (ग) (घ) (ङ) दूरि आप करहु जनि रटना ।
३ (क) (ग) (घ) अगसठ = अरसठि । (क) (ग) (घ) महँ = मधे । (ग) (ज) बसै = बसु ।
४ (घ) (ङ) जब = जबहीं ।
५ (क) (ग) (घ) कैसे मानी = कैसे मानी ।
६ (ङ) प्रेम = पेरेम । (क) संतन्हि = सन्तन । (ग) (घ) (ङ) संतन्हि = संतन्ह । (क), (ग) छिपा = छिपता ।
७ (ङ) करहु = करोहु ।
८ (क), (ग) (घ) (ङ) नौका = नवका । (क) (ग) (घ) (ङ) उतारै = उतारो ।
९ (क) (ग) (घ) (ङ) को = का । (घ) मरम = मर्म । (ग), (ङ) न = ना ।
१० (क) है = हए । (ग) जा = जग । (क) (ग) करै = करे ।
११ (क) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।
१२ (क) जो = जग । (ग) (ङ) जो = जौ । (ग) जीवहिं = जीव । (ज) जो = जब । (क) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं । (घ) के पासा = कै पासा । (ङ) के पासा = के पास ।
१३ (क) (ङ) (ज) भवचक्र = भवचक । (ग) भवचक्र = भवाचक्र ।

मन पोए नारि पिया रगराती । सोइ सुहागिनि कुल नहिं जाती ॥९००॥[1]
मसंडित ब्रम्ह पंडित सो ग्यानी । मनके रंग बुमझु निजु ग्यानी ॥९०१॥[2]
जो करता के भेद बतावै । सीम होए तब जग समुझाए ॥९०२॥[3]
ब्रम्हन वेद पढ़ै का पावै । जीव मारि मासु मुख लावै ॥९०३॥[4]
साकर वास मानै संसारा । कसे सेई उतरहिं पारा ॥९०४॥[5]
मासु मछरी ब्राम्हन जो खाई । अंतकाल फेरि जम घर आई ॥९०५॥[6]
सो नहिं बाचै कवनि टराई । परैं नरक चौरासी जाई ॥९०६॥[7]

साखी

सतनाम अम्रित नहिं पिवैं, कसे होए उबार ।[8]
कहे दरिया जग भरमें, एक नाम बिना संसार ॥७७॥[9]

चौपाइ

निरखि नाम निजु पंडित कहावै । तब अपने गुन जग समुझावै ॥९०७॥[10]
पंडित बारह बानी सोई । कबहिं न जमपुर जात बिगोई ॥९०८॥[11]
सपने कबहिं न या जग आवैं । सतगुर ग्यान नाम निजु पावै ॥९०९॥[12]
छपलोक की बातें कहेऊ । केवल हंस हिरमर रहेऊ ॥९१०॥[13]

---

१ (ख) (ग) मन = मन्म । (घ) (ङ) धोए = धोए । (ङ) नहिं = ना ।
२. (घ) सो = सोइ । (ग) (घ) मनके रंग बुमझु निजु बानी । (ख) मनक रंग बुमझु निजुबानी ।
३ (घ) के = क । (ख) (ग) (घ) (ङ) समुझाए = समुझाव ।
४ (ख) वेद = मप । (घ) मासु = मसु ।
५ (ङ) साकर = साकरि । (ख) (घ) मान = माने । (घ) (ङ) संसार = समसारा । (ख) (ङ) कसे = कहे ।
६ (ग) मछरी = मछ ।
७ (ख) (घ) सो नहिं बाच = मा नाहि बाच । (ग) सो नहिं बाच = सो नाहि बाचहि ।
(ख) (ग) (घ) (ङ) परैं = परे ।
८ (ख) पिव = पावं । (ग) पिव = पावो । (घ), (ङ) पिवै = पाए । (ख) (घ) (ङ) कसे होए उबार = कसे के होए उबार ।
९ (ख) भरम = भरमे । (ग) भरमैं = भरमेवो । (ख) (ग) (घ) (ङ) एकनाम = नाम । (ङ) संसार = समसार ।
१० (ग) (घ) (ङ) निरखि = निरिख । (ख) अपन = आपन । (ख) (ग), (घ), (ङ) समझाव = समुझाव ।
११ (ख) (ग) (ङ) न = ना । (घ) कबहि न इमा जम जात बिगाइ ।
१२ (ङ) ग्यान = ग्यान । (ङ) या = यह ।
१३ (ङ) रहेऊ = रहेऊ ।

कहे दरिया सो संत सुजाना । यह भेद बिरला कोइ माना ॥१३४॥[१]

साखी

गगन गुफा महं बैठि के, देखो सब्द अमान ॥[२]
छूटि जाए जग संसै, जम के मरदो मान ॥७९॥[३]

चौपाई

सब्द धरती सब्द अकासा । सब्दे भगति प्रेम परकासा ॥१३५॥[४]
सब्दे रचा सकल संसारा । सब्द बंधन लोक बिस्तारा ॥१३६॥[५]
चौथा लोक सब्द की बानी । सब्द समुंदर बोधम ग्यानी ॥१३७॥[६]
सब्द बिना नहिं होवै पारा । सब्दे पंडित करो बिचारा ॥१३८॥[७]
उंकार भेद जगत फैलाई । मूल भेद बिरला कोइ पाई ॥१३९॥[८]
मूल भेद सब्द निजु सारा । करनी कथा ग्यान बिस्तारा ॥१४०॥[९]

साखी

मूल सब्द निजु सार है, कहनी कथा अपार ।[१०]
सील सांति मन राखि कै उतरि जाए भव पार ॥८०॥[११]

चौपाई

शून्य शून्य सब करै पुकारा । शून्य ना होवहि हंस उबारा ॥१४१॥[१२]

---

१ (ग), (घ) सो = सोई । (ख) (घ) (ङ) यह = इह ।
२ (ग) गुफा = मोह । (ग), (घ) (ङ) गुफा = गोफ । (ग) (घ) बैठिके = पैठिके । (ङ) बैठिके = पइठिके । (ङ) बैठिके = पैठिके ।
३ (ग) मैं = सैं । (ङ) अमान = अमर । (घ) मरदो = मरद ।
४ (घ) सब्दे = सर्दे । (ङ) सब्द = सबद । (घ) सब्दे = सर्दे । (ग) भगति = भक्ति । (क) (ग) (घ) (ङ) परकासा = परगासा ।
५ (घ) सब्द = सर्दे । (ख) (ग) (घ) (ङ) रचा = रचल । (घ) बंधन = बांधल ।
६ (घ) चौथा = चौथ । सब्द = सबद । (ङ) समुंदर बोधम = समुदर बो बोधम ।
७ (ग) नहिं होवै = होवै नाहिं । (ग) नहिं होवै = होय नाहिं । (घ) सब्द = सब्द । (ङ) सब्द = सब्द ।
८ (ग) उंकार = उँकार । (ग) जगत = जक्त । (ग) फैलाई = फैलाइ । (ख) भेद = भेद ।
९ (घ) मूल भेद सब्द निजु सारा = करनी कथा ग्यान बिस्तारा । (घ) करनी कथा ग्यान बिस्तारा = मूल भेद सब्द निजु सारा ।
१० (ग) कहनी = करनी ।
११ (ग) (ग) (घ) राखिकै = राखिके । (ग) भव = भौ । (ग) भव = भयो ।
१२ (ग) शून्य शून्य = सुन सुन । (ग), (घ) करै = करे । (ग), (घ) होवहिं = होवइ ।

नहिं पावै छपलोक के बासा । फिरि फिरि करहिं जम की आसा ॥९२२॥[1]
रूप कामिनि से रहो निनारा । मनसा कामिनि करो बिचारा ॥९२३॥[2]
जब होवै सतगुर के दासा । तब सम छुटिहैं जम के त्रासा ॥९२४॥[3]
सो जोगी जग साथ कहावै । जो करता के भेद बतावै ॥९२५॥[4]
मन थिर होए तो भगति बिढ़ावै । सार सब्द का परखै पावै ॥९२६॥[5]
प्रद्युमन काम करौ नर आई । पेड़ पसरि तब डार देखाई ॥९२७॥[6]
प्रेम नक्ष हंसा बैठावै । अपन निरति तब सुरति समावै ॥९२८॥[7]
अस्टम्प त्रिगधि बिमल बिरोगा । छव चक्र मनि भुकुमा जागा ॥९२९॥[8]
निभच्छर निरखि प्रेम पद पावै । छुटि जाए तिमिरि गगन झरि लावै ॥९३०॥[9]
प्रेम पंथ महं पैठे सोई । तामें संसै आव बिगोई ॥९३१॥[10]
सीस उतारि दछिना जो देवै । का हमको तुम्ह का कहि लेव ॥९३२॥[11]
अक्षर भेद कहुं सम आई । अच्छर माह निहच्छर पाई ॥९३३॥[12]

---

१ (ग) पावै = पावे । (ग) (ङ) पावै = पाएहु । (ख) फिरि फिरि = फेरि फेरि । (घ) करहिं = करिहो । (ख) (घ) (ङ) जम की आसा = जम के आसा ।

२ (घ) से = सो । (ग) कामिनि = कामिन ।

३ (ग) (घ), (ङ) के दासा = के बासा । (ख) तब सम छूटी जमे के त्रासा । (ग) (घ), (ङ) छुटिहैं = छुटिहि ।

४ (ग) कहावै = कहैव । (ख) जो = जस । (ग) जो = यों । (घ) के = के । (ङ) के = का ।

५ (क) रसीदन पाठ में 'मन' के पूर्व जौं है । (ख) जौं = जब । (ग) जौं मनथिर = मन थिर । (ख) (घ), (ङ) (ङ) होए तो भगति = होए भगति । (ग) परखै = परख ।

६ करौ = करे । (ख) (घ), (ङ) डार = डारह । (ग) डार = दार ।

७ (ग) (घ), हंसा बैठावै = हंस बइठावा । (ग) हंसा बइठव = हंस बइठावा । (ङ) हंसा बइठव = हंसा बइठावा । (ख) अपन = आप । (ग) अपन = आपे । (ख) (घ) (ष) (ङ) समावै = समाया ।

८ (क), (ग) (घ) (ङ) त्रिगधि = त्रिगन्धि । (घ) छव = छवा ।

९ (ग) (ग), (घ) (ङ) निभच्छर = निमच्छर । (ख) (घ) (ङ) तिमिरि = थिमिरि । (घ) तिमिरि = तिमिर ।

१० (ङ) महं = महि । (ख) (ग) पद = पदर । (ङ) पैठ = पइठे । (ख) (ग) (घ) तामें = तैम । (ङ) तामें = तैसेए । (ग) संसै = संसे ।

११ (घ) उतारि दछिना = उतारि जो दछिना । (ङ) का = काहा । (घ) लेव = ल्याव । (ङ) लेव = लाव ।

१२ (ग), (घ), (ङ) (ङ) अक्षर = आगर । (घ), (ङ) सम आई = समुझाई ।

घोर घोराए सबै जिव साथ । घार माहि जिन्हि तब सुख पावै ॥१५०॥[1]
आप निरंजन सकल पसारा । फंद दव करम रचि डारा ॥१५१॥[2]
इह तिनलोक निरंजन गाई । चौदह चौकी जम बसाई ॥१५२॥[3]
एको हंसा ना हुरनहि पारा । कीन्हहि भसम भरै जनि छारा ॥१५३॥[4]
काया कबीर कीन्ह पैसारा । सत लोक के राह सुधारा ॥१५४॥[5]

साखी

हार जम सतनाम से, हाथ जड़ा दीन्हो डारि ।[6]
अमरलोक को जाईहि, सत ना मारहि हारि ॥८२॥[7]

चौपाई

कवन दस हुल चलि जाई । मोक्ष जस सो अगम गोसाई ॥१५५॥[8]
कहा जगाती भव पग धारा । कवन जुगति से दीजै बीरा ॥१५६॥[9]
जोग जुगति भेद पहचानी । उपजै प्रेम भगति निजु ग्यानी ॥१५७॥[10]
होत हीरा तब निर्मल बानी । भगति निर्मर हिरदै ठानी ॥१५८॥[11]
सब्द बिचारि ग्यान कर धीरा । सत सुकित का भेवै बीरा ॥१५९॥[12]
देव परवाना सत की बानी । करना अमित सेव मानी ॥१६०॥[13]

---

१ (घ) सभ = सभै । (ख) घार जिन्हि तबही सुख पाव । (ग) घोरहि जिन्हि तबहि सुख पाव । (ङ) (च) घारहि जिन्हि तब सुख पाव ।
२ (ग), (ग) आप = आपु ।
३ (ग), (घ), (ङ) (च) तिनलोक = तिनिलोक । (ग) बसाई = बसाई । (ग) बैसाइ = बसाई ।
४ (ग) एको हंस होहि नाहि पारा । (घ) ना = न । (ङ) ना = नाहि । (ग), (ग) कर = करै ।
५ (घ) (च) पसारा = पइसारा । (ङ) (छ) के = कै ।
६ (घ), (छ) हारे = हारै । (ग) सतनाम = सतना ।
७ (ग) को जाइ हैं = को जाइ हो । (घ) (ङ) को जाईहि = कह जाई । (छ) को जाइ हैं = कह जाइहा । (ङ) ना = न ।
८ (ग) सो = सो । (घ) (छ) ना = ना । (घ) मन = मनो । (ग) कवन = कवनि ।
९ (ङ) (च) कवन = कवनि । (ग) जुगति = जुक्ति । (ङ) जुगति = जुगुति । (ग) (ङ) (छ) से = के । (घ) दीजै = दव ।
१० (घ) जुगति = जुक्ति । (ग) (ग) उपजै = उपज । (ग) भगति = भक्ति । (ग) (घ) ग्यानी = ठानी ।
११ (ग) होत = सत होए । (च) निरमल = निरम । (ग) भगति = भक्ति । (ग) हिरदै = हिरदैव ।
१२ (ग) (घ) (ङ) (च) धीरा = धीरा । (घ) दव = देव ।
१३ (ग) की = कह । (ग) की = के । (घ) (छ) की = के । (छ) अमित = अमित ।

सुन्य नो धरती सुन्य नो पानी । सुन्य कहहिं नहिं देखि अयानी ॥६४२॥[1]
सम महँ देखिय सब्द का पूरा । जिन्है बिना जम दत हैं सूरा ॥६४३॥[2]
मुक्ति पदारथ खोय गँवारा । समुझि सेहु भेद निजुसारा ॥६४४॥[3]
करनी काम सकल संसारा । करनी कथहिं काम विस्तारा ॥६४५॥[4]
करनी काम कामिनि के साथा । बिनु चीन्हे नहिं होहिं सनाथा ॥६४६॥[5]

साखी

अभय लोक वोए अमर है, हंसा करहिं कलोल ।[6]
सीतल सब्द उचारहीं, मो हीरा अनमोल ॥[7]
भर्म लोक वोए अचल है, अजर जोति बराए ॥[8]
साहब सत सामर्थ है, दरिया कहा बुझाए ॥९१॥[9]

चौपाई

भौसेंधु त्रिविधि विकार जलमारी । सतनाम निजु सब्द विचारी ॥६४७॥[10]
काया कबीर जगत महँ भारी । हारे पंडित वेद पुकारी ॥६४८॥[11]
बदे अरुझि रहा संसारा । त्रितक अध पर लै तब हारा ॥६४९॥[12]

---

१ (ख) (ग) (ङ) सुन्य = सुन । (ख) (ङ) नो = ना । (ग), (घ) नो = न । (ख) (घ) (ङ) सुन्य = सुन । (ख), (ङ) नो = ना । (ग) (घ) नो = न । (ख) (घ) (ङ) सुन्य = सुन । (ख) (ग) (घ) (ङ) = कहहिं । (ख) (ग) (घ), (ङ) नहिं = नाहिं । (ख) (ङ) देखि = देखिए । (ग) देखि = देखिय । (घ) देखि = देखिए । (ख) (ग) (घ) (ङ) अयानी = अयानी ।
२ (ख), (घ) देखिय = देखिए । (ङ) देखिय = देखिअ । (ग) का = क । (ग) जिन्है = जिन्हे । (ख) हैं = हुए ।
३ खोए = खोय ।
४ (घ) (ङ) संसारा = समसारा । (ङ) कथहिं = कथिहि ।
५ (ङ) के = क । (ग) बिनु = बिना । (ख) (घ) (ङ) चिन्हे = चिन्हैं । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।
६ (घ) अमर है = अचल है । (ग) अमर है = अचल । (ङ) अमर है = अमल है । सीहित पा में 'हंसा' के पहले आई है । (घ) हंसा = हंस ।
७ सीहित पाठ में 'सीतल' शब्द के पूर्व आई है । (घ) (ङ) उचारहीं = उचार हैं । (घ) मो = भयो ।
८ (घ) भर्म = अमर । सीहित पाठ में अजर के पूर्व 'आई है ।
९ (घ) कहा = कहे । (ङ) कहा = कहैं ।
१० (ख) भव सेंधु विकार त्रिविधि जल भारी । (ग) भौ सिंधु विकार त्रिविधि जल भारी ।
११ (ग) जगत = जग । (घ) (ङ) हारे = हार ।
१२ त्रितक = त्रिगिरि । (ख) लै तब = ल तर । (ग) ल तर = स तर ।

जाहाँ देस ताहाँ आतमदरसी । मन मो दीसल कीन्हसि अरसी ॥१६६॥[1]
जहाँ देखि तहाँ नाम अनूपा । मन मो दरसन दरस सरूपा ॥१६७॥[2]
जोए निरगुन गुन रहित समसूमा । मधे छत्र मनि मंगल सूमा ॥१६८॥[3]
काटे करम कपट नहिं राखे । उर अंतर सुख नामे भाखे ॥१६९॥[4]

साखी

मी सेंधु विविधि विकार जस बोहित सुमिरन साथ ।[5]
गुर सतगुर कनहरिया, खेवनि वाके हाथ ॥८१॥[6]

चौपाई

तब नहिं करते कीरतम कीन्हा । तब नहिं निगम नेति अस चीन्हा ॥१७०॥[7]
तब नहिं होत न सेस महेसू । तब नहिं सुरसरि आदि गनेसू ॥१७१॥[8]
तब नहिं विमलनि इन्द्र प्रकासू । तब नहिं उडिगन गगन नेवासू ॥१७२॥[9]
तब नहिं दया धरम परसंगा । तब नहिं उतपति तब नहिं भंगा ॥१७३॥[10]
तब नहिं जग्य जोग नहिं जापा । तब नहिं कुमती तब नहिं पापा ॥१७४॥[11]

---

१ (ख) जाहाँ = जेहो । (ग) देस = दरिस । (घ) मन मोर मोरा दीसल अरसी । (च) मन मोरा दीस की अरसी । (छ) मन मोरामन किन्हासि अर्सी । (ज) मन मे दासल किन्हासि अर्सी । स्वीकृत पाठ में 'दीसल (दीख पड़ा) रखा गया है।
२. (ख) देखि = देखिअ । (ग) देखि = जग । (ख) (ग) (घ) (ङ) मन मो = मामो । (छ) दरस = रूपा ।
३ (घ) (ङ) जोए = जोए । (घ) (ङ) छत्र = छित्र ।
४ (ग) (घ) काट = काटे । (घ) करम = कर्म । (ग) नाम = नामहि । (घ) (ङ) नामे = नामी ।
५ (ग) मी = मन । (ग) मी = मनो । (ग) विकार = बेकार ।
६ (ग) (घ) (ङ) (ट) कनहरिया = कर कनहरी । (छ) खेवनि = खेवनि ।
७ (घ) तब = तबा । (ग) (घ) (ट) नहिं = नाहि । (घ) करते = करता । (ङ) कहत = कहै । (ग) (ग) (ङ) (ठ) नहिं = नाहि ।
८ (ग) निगम = निगम । (ग), (घ), (घ) (ठ) नहिं = नाहि ।
९ (ग), (घ) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ग) इन्द्र = नाहि । (ग) (घ) इन्द्र = इंदु । प्रकासू = प्रकासू । (ग) (घ), (घ) (ठ) नहिं = नाहि ।
१० (ग) (ग) (ङ), (ट) नहिं = नाहि ।
११ (ग) (ग) (घ) (ट) नहिं = नाहि । (घ) (ट) जग्य = जग । (ग) जोग = जोग्य । (ग) (घ) कुमती = कुमति । (घ) कुमती = कुबुधि । (ट) कुमती = कुबुध । (ग) (ग) (घ) (ट) नहिं = नहि ।

सार सब्द चीन्हव मन माहीं । सत लोक सब्द पहुचाई ॥६६१॥[1]
अति सुख सागर कहा न जाई । जा आन अम्रित फल पाई ॥६६२॥[2]

छन्द

सोभा सुंदर प्रेम मंगल गगन में झरि लावहीं ।[3]
ससि झलाझलि जोति निरमलि ध्यान को गुन गावहीं ॥[4]
अजर अमर हंस बंस तहाँ मोती मनि चित चुगहीं ।[5]
जरा मरन ते रहित अमर बहुरि ना भवजल आवहीं ॥१२॥[6]

सोरठा

सतगुर ध्यान बिचारि, हंस रहित अमरपुर ।[7]
भगति करै नर नारि, दयानन्द सम द्रिस्टि है ॥[8]
दिल दरिया दरसन देखिए, अंजन कर गुर ध्यान ।[9]
अगम निगम गति कठ है, बिमल चरन चित ध्यान ॥१२॥[10]

चौपाई

ध्यान बिराग बिबेक बिचारा । सहज सुरति भवसिंधु उतारा ॥६६३॥[11]
अलख दरस ध्यान जब होई । व्यापिक ब्रम्ह देखै सत सोई ॥६६४॥[12]
प्रतिबिंबु घट परगट माहीं । इमि करि ब्रम्ह ध्यान मत कहीं ॥६६५॥[13]

---

१ (ख), (ग) (घ), (ङ) मन = चित ।
२ (ख) (घ) (ङ) न = ना । (ख) (ग) आनै = आवे । (घ) अम्रित = इह अम्रित । (ङ) अम्रित = अमिरित ।
३ (घ) (ङ) सुंदर = सुंदर ।
४ (ख) (ग) निरमलि = निर्मल ।
५ (ख) (ग) (घ) (ङ) चुगहीं = चुगहीं ।
६ (ग) अमर = अमरपुर । (ख) भव = भौ । (ग) भव = भवो ।
७ (घ) हंसै = हंसि । (ङ) रहित = रही ।
८ (ग) भगति = भक्ति । (ख) कर = करे । (घ) कर = करहि ।
९ (ख) (ग) दरसन = दरपन । (घ) देखिए = देखिय ।
१० (घ) चरन = चर्न ।
११ सुरति = सुर्ति । (ख) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवो । (ग) (घ) (ङ) सिंधु = सिंधु ।
१२ (ग) दरस = दर्स ।
१३ (ख) प्रतिबिंबु = प्रतिबिंबु । (ग) प्रतिबिंबु = परति बिम्बु । (घ) प्रतिबिंबु = प्रतिबिंबु ।
(ङ) प्रतिबिंबु = परतिबिंबु ।

साखी

निगम चारि उतपति भयो चतुरानन मुख बैन ।[1]
उपरेउ सब्द अनाहद, मँझधार मन ऐन ॥८३॥[2]

चौपाई

निराकार नहिं अहै अकारा । सोइ बिरंचि अस कीन्ह बिचारा ॥१८५॥[3]
नहिं मुख स्रवन नएन नहिं नाता । असके कहेउ बिरंचि बिधाता ॥१८६॥[4]
नहिं दुख सुख नहिं ब्यापिक माया । अहै बिदेह परम नहिं काया ॥१८७॥[5]
बिनु पगु चलै सुन बिनु काना । बिनु करि निरति बेद करि जाना ॥१८८॥[6]
बिनु चछु देख सत्य पताला । बिनु पुरुष परगट है कासा ॥१८९॥[7]
कहै बिरंचि बद अस भाखा । मूल डार पत्र नहिं साखा ॥१९०॥[8]
अइसन ध्यान भ्रमित सब लोका । सेंधु बिकार परा बड़ सोका ॥१९१॥[9]
बिनु पद चल बहुत दुख पावै । बिनु देखै कहु केहि गोहरावै ॥१९२॥[10]
बिनु परचै अइसन परनामा । बिनु अपु धरे बसै केहि धामा ॥१९३॥[11]

साखी

निराकार आकार रहित है कहेउ सो भेद अभेद ।[12]
टूटो फूटो नएम बोए, बिरह बिराग न छेद ॥८४॥[13]

---

१ (ख) (ग), (घ) (ङ) उतपति = उतपत्ति । (घ) भयो = भए । (ग) (ङ) भयो = भयो । सीहरन पाठ में दूसरी अर्धाली के आरंभ में सो अधिक है ।

२. (ख) उपरेउ = उपरे । (ङ) उपरेउ = उपरउ । (घ) मन = मन ।

३. (ख) (ग) (घ) (ङ) निराकार = निरंकार । (ग) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि । (ख) (ग) (घ) कइ = कहु ।

४ (ग) (घ) नएन = नैन । (ख) (घ) (ङ) असके = असकै । (ख) कहेउ = कहेवो ।

५ (ग) (ग) ब्यापिक = ब्यापित । (ख) (ग) (घ) अहै = अहै ।

६ (ग) बिनु पगु चल सुन नाहि कामा । (ग) चलै = चलइ । (ग) सुनै = सुन । (ख) (ग) (घ) करि = कर । (ख) करि = कर । (ग) करि = कइ ।

७ (ग) बिनु चछु देख सत्य पताला । (ग) बिनु चछु देखै सो सर्ग पताला । (घ) सत्य = सत ।

८ (ग), (घ), (ङ) कहै = कहै । (ख) मूल ना डार पत्र नाहि साखा । (ग) मूल ना डार पत्र नाहि साखा । (घ) (ङ) मूल डाल्ह पत्र नाहि साखा ।

९ (ग) (ग) अइसन = ऐसन । (ग) भी = भयो । (घ) भी = भए । (ङ) बड़ = बड़ा ।

१० (ग) (ग) कहु = कहु । (ग) कहु = केम । सीहरन पाठ में दूसरी अर्धाली के आरंभ में भी अधिक है ।

११ (ग) परचै = परचै । (ग) अइसन = ऐसन । (ख) (ग) (घ) (ङ) अपु = अपु । (ग) धर = धरे । (ग) बसै = बसै ।

१२. (ख) रहित है = रहित । (ग) कहेउ = कहेवो । (ङ) कहेउ = कहउ ।

१३. (ग) टूट फूटै उर नम बाए । (ग) टूटो फूटो उर नैम बोए । (घ), (ङ) टूटो फूटो नएमउ बोए । (ग) (ङ) न = ना । (ग) न = मे ।

साखी

अब किछु उतपति करन चहै, चित चेतनि चित कीन्ह ।[1]
नारि पुर्स रस रंग मैं, इह किछु इच्छा कीन्ह ॥८२॥[2]

चौपाई

माया रूप कामिनि जो कीन्हा । अस्टमुखी छवि छेकै लीन्हा ॥१७५॥[3]
देखत रूप निरंजन अंजेउ । सोम छोम सादर सुख सजेउ ॥१७६॥[4]
देखत पल भरि रहा न गएऊ । नन प्रेम सुख बहुते भएऊ ॥१७७॥[5]
जब कामिनि से भौ परसंगा । उपजे मनमथ भाव अनंगा ॥१७८॥[6]
तेहि महं तीनि देव तब भएऊ । ब्रम्हा बिस्नु महेसर कहेऊ ॥१७९॥[7]
तेहु तीनि भाग तब कीन्हा । कन्या तीनि सतीछन दीन्हा ॥१८०॥[8]
माया चरित्र को चित चलाव । मरमि मोह तिनि देव भुलावै ॥१८१॥
आपु निरछर जोति होए जागी । सेवा करहिं भोग रस लागी ॥१८२॥[9]
ब्रम्हा को ब्रम्हाइनि जानी । बिस्नु की बिस्नाइनि रानी ॥१८३॥[10]
संकर के देवी संग भएऊ । त्रिबिधि ग्यान तीनि मिलि ठएऊ ॥१८४॥[11]

---

१ (ग) किछु = कछु । (ख) (ग) (घ) (ङ) उतपति करन = उतपनि कर । (ख) चहै = न चह । (घ) चहै = न चाहै । (च) चहै = न चाहे । (ङ) चहै = न चाही । (ख) चित चेतनि चिन्ह । (ग) चित = चिता ।

२. (क) इह = एह । (ग) किछु = कछु । (ख) (ग) इच्छा = इच्छा ।

३ (ग) (ङ) छेकै = छेके ।

४ (क) देखत = देखी । (ख) सोम छोम सुख सुन्दर संजेऊ । (ग) (घ) सजेऊ = संजेऊ ।

५ (ख) (च) (ङ) न = ना । (ख) (ग) (ङ) नैन = नयन । (ङ) प्रेम = पेरेम । (ङ) बहुते = बहुतै ।

६ (ख) भौ = भव । (ग) उपजे = उपजेउ । (ग) अनंगा = नंगा ।

७ (ख) महं = मे । (ख) (ग) बिस्नु = बिस्न । (ङ) कहेउ = कहेऊ ।

८ (ख) सतीछन = तिर्छन । (ग) सतीछन = दहि तछन । (घ) (ङ) सतीछन = तछन ।

९. (ख) आपु = आप ।

१० (ख) इमि = इह । (ग) इमि = इहि । (ख) (घ) बिस्नू = बिस्न । (घ) (ङ) बिस्नू = बिसुन । (ख) की = क । (घ) (ङ) बिस्ना = बिसुना । (ख) इमि = इन्ह । (घ) रानी = मानी । (ङ) रानी = मानी ।

११ (ग) संकर के संग देवी भएऊ । (ख) (ग) तीनि = तीनिउ । (ख) (ग) (घ), (ङ) ठएऊ = ठैऊ ।

मैं कुमुदिनि तुह पूरन चंदा । मैं मलीन करु परम अनंदा ॥१००७॥[1]
मैं चकोर तुह द्रिस्टि अनूपा । चुग अमरस चसक सरूपा ॥१००८॥[2]

छन्द

भ्रम तेजि भरम बिकार जग के संत सदा गुन गावहीं ।[3]
कंज पुंज रस मोद मधुकर सर सरोज पर धावहीं ।[4]
सो सपटि लागु ध्यानि छन मैं अमित छबि सहं छावहीं ।[5]
दरस दरिया परसु चरने चह चकोर पद पावहीं ॥१३॥

सोरठा

पद पंकज कह ध्यान मनि लागे दीपक कहा ।[6]
सुनहु संत सुजान, सुखद सदा हमि करि सहा ॥१३॥[7]

चौपाई

जेहि नहि बिमल चरन चित लाना । मरकट ह्वएके मरमि निदाना ॥१००९॥[8]
सुनत सवन संतन नहिं माना । होए भूमय बिदित करहिं समाना ॥१०१०॥[9]
लोचन ललचि नाम नहिं पेखा । मैन बिहून किमी कै लेखा ॥१०११॥[10]
मधि हेतु सुनिए जो प्रानी । मिलै बिमल रस अमित खानी ॥१०१२॥[11]
संत दरस पग पावन करई । चिंतामनि चिंता सब हरई ॥१०१३॥[12]

---

१ (ग) कुमुदिनि = कुमनी ।
२. (घ) तुह = तुम । (ग) तुह = तुव । (ङ) द्रिस्टि = दिरिस्टि । (घ) (ङ) चुगै = चुगेवो ।
३. (घ) (ग) (घ) (ङ) भ्रमतें = भ्रमसे । (घ) जग = जगे ।
४ (ग) सर सरोज पर धावहीं = सरोज पद क धावहीं । (ङ) सर सरोज पर धावहीं = सरोज पर धावहीं ।
५ (म) सपटि = लपटि ।
६ (ङ) अतिरिक्त पाठ मनमाम गनमाम ।
७ (घ) हमि = हम । (ग) करि = कर ।
८ (ग) जेहि नाहि = जिह नाही । (घ) (घ) (ङ) जेहि नाहि = जिन्हि नाही । (ख) मरमि = मरमुहि । (घ) मरमि = मरमु ।
९. (घ) सवन = नरन । (ग) करहीं = करिहो । (म) करहीं = करिहहि । (घ) (ङ) करहीं = करिहि । (ग) समाना = समान । (म) समाना = पाना । (ख) (ट) समाना = समाना ।
१० (म) बिहून = बिहिन ।
११ (ग) (घ) (घ) सुनिए = सुमिरै । (ठ) सुनिए = सुमिरै । (ग) जो = जा । (ङ) प्रानी = प्रानी ।
(ग) मिलै = मिलै ।
१२ (ङ) टीका पाठ में चौपाई की दोनों अर्द्धालियों के पहले क्रमशः 'जो और 'से हैं । (ग) (ट) जी = जो । (घ) जो = जैसो । (ग), (घ), (ट) पे = पग ।

चौपाई

शब्द संपूरन सर्व विराजै । अपने छत्र अउरि सिर छाजै ॥९९४॥[1]
दयासिंधु सुख सर्व सरूपा । बसैं निरंतर सुर नर भूपा ॥९९५॥[2]
सुनैं स्रवन मुख अमित थामी । तीनि लोक मह अंतरजामी ॥९९६॥[3]
मल रहित मनोहर सुन्दरताई । अछै असोग सुख संतत गाई ॥९९७॥[4]
विमल बिरोग बोए अगम निकेता । बोए पर पिता पिता मनि हेता ॥९९८॥[5]
निमि लोचन बेहि जन पर लागा । सेंधु सुखै सहमै पगु पागा ॥९९९॥[6]
जीवन मुक्ति जिद जग मूला । मातु पिता नहिं माया अकुला ॥१०००॥[7]
निगुन सरगुन दूनो ते न्यारा । सत्त रूप बोए विमल सुधारा ॥१००१॥[8]
एह पद निजु बूझै सोई । हिरदै अंकुर ग्यान जब होई ॥१००२॥
सतगुर ग्यान दीपक जब लेसे । वस्तु अनूपम सुरति सुरेसे ॥१००३॥
पाँच तंतु तन सुन्दर देखा । निजु गहि प्रेम प्रीति सतरेखा ॥१००४॥[11]
मोहि से कहन कहेउ जग माहीं । तदपि कहा बिनु रहा न जाहीं ॥१००५॥[12]
जे नर एक सुह निरगुन निरंता । होंहि सनाथ सुमिरहिं सम संता ॥१००६॥[13]

---

१ (क) सीहल पाठ में 'शब्द' के पूर्व 'बोए' है। (ख) (घ) (ङ) अउरि = अवरि। (ग) अउरि = औरि।
२ (ग) सेंधु = सिंधु। (ख) सर्व = सब्द। (ग) बस = बसे।
३ (ख) (घ) मुख = मुखे।
४ (ग) मह = महे। (ख) संतत = संतह।
५ (क) सीहल पाठ में 'पर' के पहले 'बोए' है। (घ) (ङ) बोए = ओए। (ख) (ङ) बोए = ओए।
६ सीहल पाठ में 'लोचन' के पूर्व 'रिसि' है। (ख) (ग) (घ) (ङ) निमि (रिसि) = निर्मिलि। (घ) भौं = मन। (घ) मौं = मना। (क) सीहल पाठ में सेंधु के पहले 'भौं' है। (ग) सेंधु = सिंधु। (ख), (घ) सुखै = सुख। (ख) सहमै = सजे। (ग) सहज = सहजेहि।
७ (क) सीहल पाठ में जीवन के पहले 'बोए' है। (घ) (ङ) बोए = ओए। (घ) (घ) जीवन = जीवनि।
८ निरगुन = निगु। (ग) (ग) दूनो = दुनहु। (ख), (ग) (ङ) रूप = सरूप। (ङ) बोए = ओए।
९ (ख) एह भेद का समुझे सोई। (घ) एह पद निर्य बुझ होय। (घ) एह भेद बुझै निजु सोई। (ङ) एह भेद निजु बुझ सोय। (ख) हिरदैमा अंकुर ज्ञान जब होय। (ग) हिरदै = हिर्दै। (घ) हिरद = हिर्दमा। (ङ) हिरद = हिरदमा।
१० (ख) (घ) लेसे = लसे। (घ) (ङ) नग = सत्य। (ग) वस्तु अनूपम सुरसे दीसै। (घ) वस्तु = वास। (ङ) वस्तु = वासर। (घ), (ङ) सुरेसे = सुरस।
११ (क) सीहल पाठ में 'पाँच' के पूर्व 'एह' है। (ग) एह = एक।
१२ (ग) कहेउ = कहेसो। (घ) कहन = कहेसो। (ग), (ङ) तदपि = तर्पि। (ग) कहा = कहो।
१३ (ग) (ग) (घ) (ङ) जन नायक सुह निगुन निरंता। (घ), (ङ) होहि = मोहि। (घ) सुमिरहिं = सुमिरि।

चंद सूर दुइ करै बेसासा । उदै अस्त फेरि होहि प्रकासा ॥१०२६॥[1]
इंगला चन्द्रवाहिनी कहिमा । पिंगला भानु प्रकासित महिमा ॥१०२७॥[2]

साखी

चारि अवस्था तीनि गुन, पाँच तत्तु है सार ।
प्रेम तेल तुरि बारिक, भए ब्रम्ह उजियार ॥८६॥[3]

चौपाई

ए गोए चक्र मरमित सोका । कामिनि कनक महा बड़ सोका ॥१०२८॥[4]
उभै त्यागि सामर्थ है दूजा । ताको चरन कंवल की पूजा ॥१०२९॥[5]
तेजि कन्दर्प कामिनि नहि साथा । सुमरि नाम नितु होहि सनाथा ॥१०३०॥[6]
सो अन सामथ सदा सहाई । मुक्ति समीप सत्त फल पाई ॥१०३१॥[7]
परचै नाम भजै अम्हंका । छनुक दावन पाप सब लंका ॥१०३२॥[8]
नाम प्रताप जुग जुग चलि आव । सकल संत गुन महिमा गावै ॥१०३३॥[9]
संत रहनि भी बारिज बारी । सदा सुखी निरलेप बिचारी ॥१०३४॥[10]
जलकुकरी जल महं जो रहई । पानी पर कबहीं नहिं सहई ॥१०३५॥[11]
दधी मथ घित बाहर आवै । फेरि छीर नहि उलटि समावै ॥१०३६॥[12]

---

१ (ग) दुइ = दोउ । (ग) दुइ = दोए । (घ) बेसासा = बिसासा । (घ) फेरि = फिरि । (ख) (ग) (घ) (ङ) प्रकासा = परकासा ।
२ (ग) (घ) इंगला = दोए इंगला । (ग) (घ) (च) (ङ) चन्द्रवाहिनी = चन्द्रवही । (ग), (घ) (च) भानु = भान । (ग) (घ) (च) (ङ) प्रकासित = परगासित ।
३ (ङ) प्रेम तेल = प्रेम तत्तु सु । (ग) (घ) (च) बारिकै = बरी । (ङ) बारिक = बारी ।
४ (ग) गोए = गो । (ग) कामिनि चक्र = कामिनि है सोका । (घ) मरमित सोका = मरमित तीनि सोका । (च) मरमित सोका = मरमित गम सोका ।
५ (घ) कंवल = कमल । (ग) (घ) (च) (ङ) की = का ।
६ (ग) (घ) (च) (ङ) नहि = नाहि । (ग) (घ) (ङ) सुमरि = सुमिरि । (च) सुमरि = सुमिर ।
७ (घ) मुक्ति = मुकुति । (घ) समीप = समीप ।
८ (ङ) मौलिक पाठ में 'परचै' के पूर्व 'गोए' है । (घ) (च) गोए = गोए । (ग) (घ) परचै = परचे ।
९ (ङ) मौलिक पाठ में 'नाम' के पूर्व 'गम' है । (ग) (घ) (गम) सकल = सकल ।
१० (घ) भी = भरी । (ङ) निरलेप = निरलेपा ।
११ (ग) (घ) (ङ) कुकरी = कुकरही । (घ) कुकरी = कुकरि । (ग) (घ) (च) (ङ) महं = मंह । (ग) (घ) (च) (छ) नहिं = नाहि ।

सुनै स्रवन अभिअंतर राखै । लोचन सलखि नाम रस चाखै ॥१०१४॥[1]
रसना रसि बसि अमित पीवै । या जग माह सोइ जन जीवै ॥१०१५॥[2]
सतगुर ग्यानहिं लोचन सोधै । हरै सबै कलि मल अघ मोचै ॥१०१६॥[3]
समुझि सुमिरु गुन साहब नीका । सब से सरस भला मनि टीका ॥१०१७॥[4]
ज्यों तरनी जल जहा तराई । नाम सुमिरु जस बोहित पाई ॥१०१८॥[5]

साखी

पदुम प्रगास मधुप पद पावन, लगैउ चरन चित मोर ।[6]
बिलसि बिहरि फिरि बसहि कंज पर, फलि मनि कर तन भोर ॥८५॥[7]

चौपाई

करम जोग जम जीतै चहई । चढ़ि पपीलक फेरि मग गहई ॥१०१९॥[8]
बिहंगम चढ़ि गएउ अकासा । बैठि गगन चढ़ि देखु तमासा ॥१०२०॥[9]
माहामुद्रा उनमुनि पेखा । अनवन भांति मोति तहं देखै ॥१०२१॥[10]
घट चमकी बरिसै घन पानी । परिमल अमवास रस सानी ॥१०२२॥[11]
इगला पिंगला सुखमन घाटा । बंकनाल रस पीवै बाटा ॥१०२३॥[12]
सोड़स दल कंवल बिगसाना । लपटि लगे मधुकर ललचाना ॥१०२४॥[13]
सरिता तीनि संगम तह भएऊ । बारि बिमारि अम्रित रस पएऊ ॥१०२५॥[14]

---

1 (ख) (ग) (घ) सुन = सुन । (ङ) राखै = राखे ।
2 (ङ) जीवै = जीवैं ।
3 (ख) (घ) ग्यानहि = ज्ञान । (घ) ग्यानहि = ग्याना । (ङ) ग्यानहिं = ग्यान । (ख) सबै = सकल । (ग) सबै = सबे । (ख) (ग), (घ) (ङ) कलिमल = कलिमलि ।
4 (ङ) सुमिरु = सुमरु । (ङ) समुझि = समुझ । (ख) (घ) भला = भल ।
5 (ग) ज्यौं = ज्यों । (ङ) ज्यौं = जो । (ख) (ग) जहां = जाइ ।
6 (ख) (ग) (घ) प्रगास = प्रकास । (ख) (ङ) लगैउ = लागयो । (घ) (ङ) लगैयो = लगैयो ।
7 (ङ) तन = तना ।
8 (ङ) जोग = जम । (ग) जीतै = जीते । (ग) फेरि = फिरि । (ख) (ङ) मग = मौ । (घ) मग = मगो । (ङ) मग = मगा ।
9 (ख) (ग) गएउ = गयो । (ख) बैठि = बैठि । (घ) चढ़ि = चढ़ी ।
10 मुद्रा = मुदरा । (घ) (ङ) उनमुनि = उनमुनि । (ख) (ग) (घ) अनवन = अनबनि ।
11 (ख) चमकि की बरिस घनपानि । (ग) (घ) (ङ) घटा चमकि बरिस घनपानि ।
12 (ख) सीहल पाठ में बंकनाल का पहला 'बं' है । (ख) (ग) (घ) (ङ) सुखमन = सुखमनि ।
13 (ख) (ङ) कंवल = कमल । (ङ) लगे = लाग ।
14 (ख) (ग) (घ) (ङ) सरिता = सरिता । (ग) (घ) (घ) (ङ) भएऊ = भऊ । (ग) (घ) (ङ) बिमारी = बेमारि । (घ) बिमारी = बमारि । (ख) (ग) (घ) (ङ) पएऊ = पेऊ ।

जैसे चीक प्रगयो प्रतिपासा । बहुत जतन कै कीन्ह नेहासा ॥१०४६॥[1]
स्वारथ स्वाद जानि कै मारी । एहि बिधि काल करै रखवारी ॥१०५०॥[2]
सतगुर सब्द जानु परमीना । पाए परमपद होहु प्रबीना ॥१०५१॥[3]
भौ संसै सब जात भोराई । सकल सिस्टि जेहि माह समाई ॥१०५२॥[4]
सतगुर सतनाम सो लीना । मनमोदिक के मद सो छीना ॥१०५३॥[5]
नाम पिऊखन अम्रित चाखै । उर अंतर मुख हिरदै राखै ॥१०५४॥[6]

साखी

जब सतगुर पद पाइयाँ मेटि भव भरम उदास ।[7]
मोह सागर सब सुखिया, मेटि तम तेज प्रकास ॥८८॥[8]

छन्द

हंस बस गति मान सरवर चुगत चित मोती धनी ।[9]
पै पाए बिमल बरत न बिसरेउ संचित बस अम्रित चुनी ॥[10]
मन देखु बिचारि सब सोम सालव सुमिर नाम निरगुन धनी ।[11]
कहे दरिया दरस सतगुर कंज पुज अम्रित सनी ॥१४॥

सोरठा

पद पंकज कर ध्यान बिसै बिकार सब परिहरो ।[12]
दूजा कोइ नहि प्रान, सब सब्द जाके बसै ॥१४॥[13]

---

१ (ख) (ङ) प्रगयो = प्रगसा । (घ) जतन = जत । (ख) (घ) कै = के । (ख), (ग), (ङ) नेहासा = निहासा ।
२ (घ) (ग) क = के । (ङ) मारी = मारे । (घ) (ग) करै = करे ।
३ (ग) पाए = पाये ।
४ (घ) भौ = भय । (ग) भौ = भयो । (ङ) जात = जहाँ । (ग) (ग), (घ) भोराई = भोराई ।
(ङ) सिस्टि = सिरिष्टि ।
५ (ग) (ङ) (छ) सो = सत । (ग) सो = सचे । (घ) सो = सब । (घ) सो = सदो ।
६ (ग) नाम पिऊखन = नाम पिरीति । (ख) न = ना ।
७ (ख) पाइयाँ = पाइये । (घ) पाइयाँ = पायन । (घ) (छ) भव = भौ । (घ) भव = भयो ।
(ख) (ग) (घ) (ङ) भरम = भर्म ।
८ (ख) (ग) (घ) (छ) सब = सम । (ग) मेटि = मिटा ।
९ (ख) सरवर = सरोवर ।
१० (ख) (घ) (घ) बरत न = बरत । (ग) (ग) (घ) (ङ) बिसरेउ = बिसरेउ । (ख) (ग), (घ) (छ) चुनी = चुनी ।
११ (ग) (ग) (घ) (ङ) देखु = देखि । (ग) सब सोम = सोम । (ङ) सब सोम = सब सो ।
१२ (ग) (घ) (ङ) बिकार = बिकार ।
१३ (ग) जाके = जाके । (ङ) जाके = जाइ ।

फूल बास तिल भया फुलेसा । बहुरि तील तेल महि मैसा ॥१०३७॥[1]
इमि करि सत पर्सत गुन सहई । भव निकलंक नाम गुन गहई ॥१०३८॥[2]
अवघट घाट सर्व सोइ संता । सो जन जानु सदा गुनवंता ॥१०३९॥[3]
अजपा जाप अनाहद नादा । तेजि भव भरम सो बाति बिवादा ॥१०४०॥[4]
अम्रित बुंद तहं झरै निरवंसा । ऐन अजोर मगन मन बंसा ॥१०४१॥[5]

साखी

मनि मानिक दीपक बरै, उनमुनि गगन प्रकास ।[6]
मनमोदिक मन तेजिकै, बरा मग्न जम त्रास ॥८७॥[7]

चौपाई

मुख सारद नारद मुनि गावै । सो सतगुर पद प्रगट देखावै ॥१०४२॥[8]
सेस सहस्र मुख बोले बानी । सतगुर महिमा तेहु बखानी ॥१०४३॥[9]
संत साधु मिलि करै बखाना । केवल निरभै नाम धमाना ॥१०४४॥[10]
माया चिन्है संत है सोई । ग्यानि भगति का करै बिमोई ॥१०४५॥[11]
जो माया जग करै बिनासा । भवचक्र परै भरमि के त्रासा ॥१०४६॥[12]
आवै जाए जगत करि अपना । ज्यों किसान खेती का जतना ॥१०४७॥[13]
जब चाहै तब लावै निनावै । जोति बोइ के फेरि उपजावै ॥१०४८॥[14]

---

१ (ख) फूल बास तिल = फूल बास से तिल ।
२ (ख) सहइ = सहै । (ग) (ङ) भव = भौ । (घ) भव = भयो । (ख) गहई = गहइ ।
३ (ग) सर्व = सबै । (ग) सोई = सो । (ग) जानु = जानि ।
४ (ग) भव = भयो । (ङ) भव = भा ।
५ (ख) (ग) झरै = झरे ।
६ (ख (ग) बरै = बरे । (घ), (ङ) उनमुनि = उनमुनि ।
७ (ख) (ग) (घ) (ङ) तजिकै = तेजिकै । (क) संशोधित पाठ में "बरा मग्न" के पूर्व मेट्यो है ।
(ग) (ग) मेट्यो = मेगा । (ङ) मेट्यो = मटे ।
८ (ग) मुख = मुख । (ग) बखानै = पावै ।
९ (ग) (ङ) बोले = बोलै ।
१० (ग) (ग) करै = करे ।
११ (ग) चिन्है = चिन्हे । (ख), (ग) (घ) (ङ) ग्यानि = ग्यान । (ग) भगति = भक्ति ।
(ग) (ग) करै = करै ।
१२ (ख) (ग) करै करे । (ग) भव = भा । (ग) भव = भयो । (ख) (ग) परै = परे ।
(ग) (घ), (ङ) के = कै ।
१३ (ग) करि = करे । (ग) अपना = अपाना । (ङ) ज्यों = ज्यो ।
१४ (घ), (ग) लाइ निनाव = लावनिनाव । (ख) बोइ के = बोए क ।

चौपाई

मन सरवर मम देखु बिचारी । तामें सरिता तीनि सुधारी ॥१०६६॥[1]
तामें नाम सरवर महई । हंस बंस कौतुक तहं करई ॥१०६७॥[2]
चुगै मोती निरमल नीका । झलकि बरै मनि मस्तक टीका ॥१०६८॥[3]
हंस बंस गुन ग्यान गंभीरा । नीर छीर बिबरन करु धीरा ॥१०६९॥[4]
काग कपूत करम बहु हीना । भये सुबास मीन सुख लीना ॥१०७०॥[5]
हंस कौतुक देखि भए मलीना । निरमल संतमत पावत से भीना ॥१०७१॥[6]

साखी

जब लगि दया न ऊपजै, सम बुध नाहिं प्रतीत ।[7]
तब लगि भगति ना प्रेम पद, सुमिरन सोक बिनु रूत ॥९०॥[8]

चौपाई

सरगुन निरगुन करो बिचारा । करो निबेर बेद निरुआरा ॥१०७२॥[9]
निरगुन सोइ बिनसै नहिं भाई । अजर अमर देह सुखदाई ॥१०७३॥[10]
सरगुन सो संयम में आया । मुनि बिराग जोग सम पाया ॥१०७४॥[11]
ओं अकार ते प्रगट है माया । सोइ मंत्र बर त्रिगुन कहाया ॥१०७५॥[12]

---

१ (ट) सरवर = सरोवर । (ग) (ग) (घ) (ङ) सरिता = सरिता । (घ) तीनि = तीनिहु ।
२ (ट) तामें = ओ तामें । (ग) (ग) सरवर = सरोवर । (घ) सरवर = सरोवर । (ख) कौतुक = कौतक । (घ) कौतुक = कौतु । (घ) कौतुक = कउतुक । (ङ) कौतुक = कोतुक ।
३ (ट) (ग) चुगै = चुगहि । (ग) (घ) बरै = बरे ।
४ (घ) गंभीरा = गम्हीरा ।
५ (ट) (ग) बहु = बहे । (ग) (घ) (ङ) लीना = लीन्हा ।
६ (ट) कौतुक = कउतुक । (ग) भए = भे । (ङ) मलीना = मलीन्हा । (ट) पावत से भीना = पाव से भीना । (घ) (घ) पावत से भीना = पाव भीना । (ङ) पावत से भीना = पाव भीन्हा ।
७ (घ) जब = जबी । (ट) (ङ) लगि = लागी । (ख) (घ) ऊपजै = ऊपजे ।
८ (घ) ना = नहि । (ग) (घ) सुमिरन = सुमिर । (घ) सुमिरनसोक = सुमिरन सो ।
९ (ट) निरगुन (सग) करो = निरगुन का । (ग) निरगुन (सग) करो = निरगुन करो । (ग) बेद निरुआरा = बेद निरुआरा ।
१० (ग) (ग) सोइ = है । (ग) बिनसै = बिनसे । (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।
११ (ङ) बिराग = बिरोग ।
१२ (ग) ओं अकार = ओ उकार । (ग) ओं अकार = ओंकार । (घ) (ङ) ओं अकार = ओ उकार । (घ) ते = से । (ङ) ओं अकार ते प्रगट = ओउकार परगट । (ग) है = सह । (ङ) त्रिगुन = त्रिगुन ।

चौपाई

राम जोति जग सम केहु जानी । झिलरूप कंवला सग रानी ॥१०५५॥[1]
रोग दोख सुख भोग बिलासा । करुना काम याम भ्रिह् बासा ॥१०५६॥[2]
जेहि माया सुर नर मुनि नाचा । बपु धरनी केहु नाहीं बाचा ॥१०५७॥[3]
देह धरी सभ खोजहि पंथा । माया मधमाह किमि होहि सनाथा ॥१०५८॥[4]
बुड़त भव में उबि उबि जावैं । जेहि नहि सतगुर ग्यान समावैं ॥१०५९॥[5]
कवि धरती करनी पद पवना । रहनि त्रिसोक रोग दुख दवना ॥१०६०॥[6]
चिन्है बिना कवि बहुत भुलाना । ग्यान बिराग बिबेक ना जाना ॥१०६१॥[7]
स्वारथ स्वाद सभी केहु माना । माया रूप सो ब्रम्ह बखाना ॥१०६२॥[8]
मन मारल सिव संकर जोगी । मन राखल इन्द्रीजित भोगी ॥१०६३॥[9]
झिलि राम मनहीं को रंगा । मन ते उतपति मनते भंगा ॥१०६४॥[10]
मनहीं चीन्हि प्रेमपद पावैं । मनते जोगी जग समुझावैं ॥१०६५॥[11]

साखी

दधिसुत से भक्ति पायो, रविसुत भाव न वास ।[12]
मला मार ब्रम्हड के, पूरन प्रेम प्रकास ॥८६॥[13]

---

१ (घ) पंक्ति-व्यत्यय : झिलरूप कंवला संग रानी । राम जोति जग सम केहु जानी ॥ (ङ) झिलि = झिलुन । (ग) कंवला = कमला ।
२ (ग) दोख = दोष । (ख) बिलासा = बैलासा । (ग) बिलासा = बेलासा । (ख) याम = यान । (ङ) भ्रिह् = भिरिहि ।
३ (घ) जेहि माया = जो माया । (ग) जेहि माया = जे मए । बपु = बपु । (ख) (ग) धरनी = धरनी धरि । (ख) नाहीं = ना । (ग) नाहीं = न ।
४ (घ) खोजहि = खोजथि । (ङ) खोजहि = खोजथ ।
५ (ख) बुड़त = बूड़े । (घ) (ग) (घ) उबि उबि = उभि चुभी । (ङ) उबि उबि = उभि उभि । (ग) जेहि = जे ।
६ (ख) (ग) पवना = पावन । (ङ) पवना = पावना । (घ) (ङ) त्रिलोक = त्रिलोच । (घ) (ग) दवना = दावन । (ङ) दवना = दावना ।
७ (ग) चिन्है = चिन्हे ।
८ (ग) (ग) सभी = सभे । (घ) ब्रम्ह = बरह्म । (ङ) बखाना = बखना ।
९. (घ) (ग) (ङ) मारल = मरल । (ङ) मारल = मरल । (घ) (ग) इन्द्रीजित = इन्द्राजित ।
१० (ग) झिलि राम हरि मनहि को रंगा । (घ) झिलि राम मनहि को रंगा ॥
११ (ग) मनहीं = मनहि । (घ) चीन्हि = चीन्हि चीन्हि । (ख) समुझावै = मुझावै । (ए) से = सो ।
१२ (ग) पायो = पव । (ग), (घ) पायो = पयो । (ङ) पायो = पयो ।
१३ (ग) (ग) मला = मले । (ग) ब्रम्हड के = ब्रम्हड कह । (घ) ब्रम्हड के = ब्रम्हड के । (घ) (ग) (ङ) प्रकास = परगास ।

चौपाई

जोए त्रिगुन ते रहित अमाना । ग्यान गमी बिरले पहिचाना ॥१०८९॥[1]
जरै मरै नहिं आवै जावै । प्रान पिंड सतपुर्ष कहावै ॥१०९०॥[2]
सतगुर प्रेम पिछान पावै । ग्यान रतन मनि सो जन गावै ॥१०९१॥[3]
परसंवित ब्रम्ह पंडित जन ग्याता । दोइ ब्रम्ह पंडित जन ग्याता ॥१०९२॥[4]
तथा ग्यान इमि स्वारथ अहई । ब्रम्ह ग्यान निरुपम कहई ॥१०९३॥[5]
मनसो ग्यान बिरला जन जाना । माया की गति नहिं पहिचाना ॥१०९४॥[6]
उग्र ग्यान अस जन के होई । सती रहित अमरपुर सोई ॥१०९५॥[7]

साखी

सतन ग्यान चित में बसै संध्यासन करु नेम ।[8]
कहै सुन हिय में बसै दरिया दरसन प्रेम ॥९२॥[9]

चौपाई

बिनु देखे सुख दारुन पाव । बिना ग्यान मौचक मैं भाव ॥१०९६॥[10]
बिनु परखे जम सासन करई । सहै दुख बुधि बल सब हरई ॥१०९७॥[11]
संत निकट बिनु निपट दुखारी । मरकट मूठ भ्रम जाल पसारी ॥१०९८॥[12]
निकट फंद नहिं चीन्है कोई । ज्यों सिंगी मद बाँवर होई ॥१०९९॥[13]
अकरम की कसि काम बिछाला । निकट बसै सुझै नहिं जम जाला ॥११००॥[14]

---

१ (ख) (ङ) जोए = ओए ।
२ (ख) जरै मरै = जरे मरे । (ङ) सत पुर्ष = सत पुरुष । (ग) कहावै = कहावे ।
३ प्रेम = पेरेम । (ग) पाव = पाग । (घ) रतन = रतनि । (ख) जन गावै = तन गावे ।
४ (ख) परसंवित ब्रम्ह पंडित जन ग्याता = परसंवित ब्रम्ह जीव परग्याता । (घ) (ङ) दोइ ब्रम्ह पंडित जन ग्याता = दोउ ब्रम्ह जीव परग्याता ।
५ (ग) इमि = तम ।
६ (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहिं ।
७ (घ) जन = मन ।
८ (ङ) बसै = बसे ।
९ (ख) (ग) कहै सुनै = कहे सुने । (ग) (घ) (ङ) हिय = हिया ।
१० (घ) मौचक = मचक । (ङ) अद्ध करता अचरिज ।
११ (ग) सहै = सहे ।
१२ (घ) निकट = सदा । (ग) (घ) (ङ) मुठ = मुठि ।
१३ (ख) (घ), (ङ) नहिं चीन्है = चीन्है नाहिं । (ङ) ज्यों = जो । (घ) ज्यों = जैसे । (ङ) ज्यों = जस । (ख), (घ) (ङ) सिंगी मद = सिंग मद से ।
१४ (ख) (घ) (ङ) अकरम की कसि = अमरधाम कसि । (ग) निकट बसै सुझै नाहिं जम जाला । (घ) (ङ) निकट बसै सुझिनहिं जमजाला ।

हतेउ कंस जिन्हि बाम बिसाला । बलिहि बाँधि जिन्ह दीन्ह पताला ॥१०७६॥[1]
सो माया जग जिन्हि ना कोई । अगम अथाह भेद मति सोई ॥१०७७॥[2]
आपै आए बिसंभर देवा । जो जन जानि बिचारै भेवा ॥१०७८॥[3]
सो लीला उन्हि रची बनाई । गोप सखा संग गाए चराई ॥१०७९॥[4]
जो भगतै धाए भगवाना । ब्रम्ह ग्यान भेद मत जाना ॥१०८०॥[5]
पारबती के अब भौ ग्याना । महादेव के पूछेउ आना ॥१०८१॥[6]
धारी ब्रम्ह भई भगवाना । कहहु भेद कहो निजु ग्याना ॥१०८२॥[7]
बोध करी इमि कहि समुझाई । संकर बहुबिधि कथा सुनाई ॥१०८३॥[8]
आदी कोटि जग परगट भई । जोगी मुनि ग्यानी सब कहई ॥१०८४॥[9]
इंह चरित्र बिरला पहिचाना । सुनु देवी निजु ग्यान बखाना ॥१०८५॥[10]
जगदेवहि असथिर तब कीन्हा । आदि ब्रम्ह राम कहि दीन्हा ॥१०८६॥[11]
माया चरित्र मोह भगवाना । मुनि पंडित सब ग्यान बखाना ॥१०८७॥[12]
जब सतगुर पद परसै पावै । माया चरित्र सहजै बिसरावै ॥१०८८॥[13]

साखी

महिपति सुरपति कामरिपु, सारद औ सुकदेव ।[14]
कहुव बिवेक जुग कल्प लहीं, ग्यान बिराग बिभेव ॥६१॥[15]

---

१ (ख) हतेउ = हता । (ग) हतेउ = हत्यो । (घ) हतेउ = हत्यो । (ङ) हतेउ = हतेो ।
२. (ग) जिन्हे = जिन्हे । (ख), (ग) (घ) (ङ) भेदमति = भेदमत ।
३ (ग) बिचार = बिचारे ।
४ (ख) रची = रचा ।
५. (ख) (ग) (घ), (ङ) भगत = भगते ।
६ (ग) भौ = भयो । (ख) (ग) के = का । (ख), (ग) (घ) पूछेउ = पूछेयो । (ङ) पूछेउ = पूछ्यो ।
७ (ख), (ग), (घ) भाइ = भये ।
८ (ग) इमि = अति ।
९ (ङ) आदी = आदी ।
१० (ख) (ग) (घ) (ङ) बिरला = बिरले । (ख) निजु = निज ।
११ (ख) (ग) (घ) (ङ) जगदेवहि = जगदसी । (ख) असथिर = असथित । (ख) तब = त ।
१२ (ग) चरित्र = चरित ।
१३ (ग) परस = परस । (ख) (ग) (घ) सहजै = सहजे ।
१४ (ग) साखी-संख्या ६१ से चा० संख्या १७२ तक नागिरत । (घ) और = अरु ।
(ङ) औ = वो ।
१५ (ख) बिवउ = बीत । (घ) बिवउ = बिन्दो । (ङ) बिवउ = बितता । (ख) बिराग = बिरा
(ग) बिभेव = बिभेद । (ङ) बिभेव = बिभेवो ।

बोलत ब्रम्ह दिसै निजु सोई । ज्यो दरपन में प्रतिमा होई ॥११०९॥[1]
दया देखै तब वाके देखै । ब्रम्ह दिखाए द्रिस्टि महं पेखै ॥१११०॥[2]
खोए ना मरै जिव नहिं जाई । जाकर अंस सम ब्रम्ह कहाई ॥११११॥[3]
खोए निरलेप माया नहिं हेवा । इह त्रिगुन बीज खोज ज्यों लेता ॥१११२॥[4]
विमल सरूप सुधारस सानी । पद पहुचानहु निरमल ग्यानी ॥१११३॥[5]

साखी

अखोइत ब्रम्ह बिराग मत ब्रम्ह ग्यान निरलेप ।[6]
जाते जिन्ह उबरि चिन्हावै, धासमदरसी देख ॥९३॥[7]

चौपाई

मन परमेसर मन है राजा । मनहीं तीनि लोक महं छाजा ॥१११४॥[8]
इह मन करता किस्न कहावै । मनहि बिसंभर बिस्व पर भाव ॥१११५॥
मनहीं अनल प्रकास प्रकासा । मनहीं पांच तत्त् का वासा ॥१११६॥[9]
मनहिं समीर वारि घन घेरै । मनहीं छटा गरज घन घेरै ॥१११७॥[11]
मन जनम नव बार गोसाई । मन अनंत रूप कला देखाई ॥१११८॥[12]

---

१ (ख) (ग) (घ) बोलत = बोलता । (ग) दिसै = दिसे । (ख) ज्यो = जैस । (ग) (घ) ज्यों = जैसों ।
२ (ग) दया = दृष्ट । (ख) (ग) देखै = देखे । (ख) (ग) वाके = वाक्य । (ङ) दिखाए = दिखाई । (घ) (ङ) महं = मे ।
३. (ख) खोए = खोए । (ग) ना = नाहि । (ख) (ङ) ना = नाम । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।
४ (ख) खोए = खोए । (ख) इह = एह । (ख) (ग) त्रिगुन है बीज = त्रिगुन बीज । (ग) खोजै = खोज । (घ) बीज खोजै ज्यों = बीज ज्यों ।
५ (क) स्वीकृत पाठ में 'बिमल' के पूर्व 'खोए' है । (घ) (ङ) खोए = खोए ।
६ (घ) (ङ) निरलेप = निर्लेप ।
७ (ग) जिन्है = जिन्हे । (ग) (घ) (ङ) उबरि = उबारि । (ख) (ग) चिन्हावै = चिन्हे ।
८ (घ) (ख) (ङ) परमेसर = परमेस्वर । (ग) मनहीं = मनहि ।
९ (घ) इह = एह । (घ) किस्न = किस्न । (घ) (ङ) किस्न = बिसुन । (घ) मनहीं = मनहि । (ख) (घ) (ङ) बिस्व = बिसु ।
१ (घ) मनहीं = मनहि । (घ) मनहीं = मनहि ।
११ (ग) मनहीं = मनहि । (घ) घेरै = घेरे । (ङ) घेरै = घेरा । (ग) मनहीं = मनहि । (ख), (ङ) गरज = गरजी । (ग), (घ) गरज = गर्जी । (ख) घेरै = फेरे । (ग) (घ) घेरै = फेरे । (ङ) घेरै = फेरा ।
१२ (ख) (ग) (घ) जनम = जनमे । (ङ) जनम = जनमे । (ख) (घ) नव = नवो ।

प्रभित देखि वारुनि कछ पाना । नाम भजन बिनु बिखिधर खाना ॥११०१॥[1]
वाके दया धरम नहिं राता । जम आलिम जिव कछ उतपाता ॥११०२॥[2]

छन्द

जीवन जन्म प्रसाधि नरको नरक नाग जो मही ।[3]
जम कीन्हि बिनि बिचारिके बसि कपट आवे सो मही ॥[4]
जम सासना बसि मुलुक चढ़ि बसि कालके घर जिव दही ॥[5]
कहे दरिया दरस बीना परस काके दुख सही ॥१४॥[6]

सोरठा

सतगुर बचन परवान जो जन चाहै मुक्तिफल ।[7]
सुनो सबन निजु ग्यान, डर मतर जबहीं बसे ॥१५॥[8]

चौपाई

एह मन मांहि मद मसि भावै । एहु मन सुर मुनि नाच नचावै ॥११०३॥[9]
मन चिन्हला बिनु बड दुख पावै । मन चिन्हला बिनु मूल गवावै ॥११०४॥
मन चिन्हहु मन ग्यान संजोगी । मन चिन्हला बिनु बहुत बियोगी ॥११०५॥[11]
मन के लिय बिरंचि मन लागे । मनहीं के जोगी सम आगे ॥११०६॥[12]
मनहीं बेद बिरत सुनावै । मनहीं सट दरसन सम पावै ॥११०७॥[13]
सतगुर भेद बुझहु निजु बानी । जेहि लागे होए निरमल ग्यानी ॥११०८॥[14]

---

१ (ख), (घ) (ङ) वारुनि = वारुन । (ख) बिखिधर = बिखधर ।
२ वाके = जाके ।
३ (ख) नारा जो मही = नारा जो मही । (घ) नर जो मही = नारा जो मही ।
४ (ख) बिनि = बिन । (घ) बिचारिके = बिचारिके ।
५ (घ), (ङ) कालके घर = कालघर ।
६ (ख) (घ) (ङ) काके = काको । (ख) सही = सहे ।
७ (ख) बचन = सुन । (ङ) चाहै = चाह । (घ) (ङ) मुक्ति = मुकुति ।
८ (ख) बसे = बसे ।
९ (ख) (घ) एह = इह । (ख) इह मन सुर नर मुनी नचाव । (घ) इह मन सुर नर मुनिही नचाव । (ङ) एह मन सुर मुनि नाच नचावै ।
१० (ख) चिन्हला = चिन्है ।
११ (ख) (ङ) चिन्हहु = चिन्हु । मन चिन्हहु मन चिन्हु ।
१२ (घ) (ङ) लागे = लागै ।
१३ (घ) मनहीं = मनहिं । (ख) (घ) (ङ) आगे = आगै । (ग) मनहीं = मनह । (ख) पाव = पावै । (ख) पावै = पावै । (घ) (ङ) पावै = पाव ।
१४ (ग) सोवे = सोवै । (ग) निरमल = निर्म...

मंगल मूल है रहमि विसोका । धरमराए दर क्यहिं न रोका ॥११२६॥[1]
अनंत एक महं रहा समाई । सतगुरु ग्यान जबे होए जाई ॥११२७॥[2]

साखी

बारिज बारि के ऊपरे, अलि मदिल में बास ।[3]
दिनमनि प्रम भी पत्र में फूले कंज सुबास ॥६४॥[4]

चौपाई

मातु पिता सुत बंधौ भगिनी । अपने मग में सभ कोइ मंगनी ॥११२८॥[5]
घटत छने छन आन अोराई । हिवै विवेक ग्यान नहिं माई ॥११२९॥[6]
भूले संपति स्वारथ मुढा । परे भवन में अगम अगुढा ॥११३०॥[7]
संत निकट फिरि जाहि दुराई । छन छन माया मोह लपटाई ॥११३१॥[8]
अब का सोचसि मन्हिं भुलाना । ज्यों सेमर सेइ सुगा पछताना ॥११३२॥[9]
तब तोए कहेउ जो सभै एगाना । बंधु माया भो दरब सजाना ॥११३३॥[10]
मरन काल कोइ संग न साजा । अब जम मुसुक दीन्हौ हाथा ॥११३४॥[11]
मातु पिता घरनी घर ठाढ़ी । देखत प्रान लीन्ह की काढ़ी ॥११३५॥[12]
गाड़े धन गहिरे जो गाड़े । छूटे माल जहां तक माड़ ॥११३६॥[13]
नैन भयावन बाहर डेरा । रोवहिं सभ मिलि आंगन घेरा ॥११३७॥[14]

---

१ (ङ) रहमी = रहीमी ।
२ (घ) महं = हम । (ङ) जबे = जबे ।
३. (ङ) के = के । (घ) (ङ) ऊपरे = ऊपरे ।
४ (ग) भी = भो । (ङ) फूले = फूलै ।
५ (ख) मात पिता सुत बांधो भगनी । (घ) बंधौ = बंधु । (घ) (ङ) बंधौ = बंधो । (ख) अपने = आपने । (ग) (घ) मगु = मत ।
६ (ख) (ग) (घ) (ङ) छनेछन = छनछन । (ग) (ङ) अोराई = वोराई । (घ) बिबेक = बिवक ।
७ (घ) (ङ) भूले = भूलै । (घ) परे = परै । (ग) अगम = अगोम । स्वीकृत पाठ में आरंभ में 'सभ' अधिक है ।
८ (ख) (घ) (ङ) फिरि = फेरि । (ख) (घ) (ङ) मिले बास रस फेरि लपटाई ।
९ (ख) अतिरिक्त पाठ—छनछन माया मोह लपाना । (ङ) सुगा = सुगा ।
१० (ख) तब तोए कहेउ = तेसे कहो । (ग) (घ) तब तो कहेयो । (ङ) तब तसो = कहेयो । (ख) माया = माए । (ग) (घ) (ङ) माया = माते ।
११ (ख) (ग) (घ) (ङ) मुसुक = मस्तक । (ख) (ग) (घ) (ङ) दीन्हौ = दीन्हो ।
१२ (ङ) की = को ।
१३ (ख) (ग) (ङ) गाड़े = गाड़े । (ख) (ग) (ङ) माड़ = माड़े ।
१४ (ख) नयन भेआवन । (ग) नयोन भेआवन । (घ) (ङ) नएन भाआवन । (घ) (ङ) रोवहिं = रोवही ।

छन्द

मन मसावै संज मीन ज्यों मन उड़िगन गगन सोहावहीं ।[1]
मन मनस्य मलिस मन भौंर अरविन्द ब्रज पुंज पर भावहीं ॥[2]
मन करम करता काम कामिनि वाम धाम छवि छावहीं ।[3]
मन निसुवासर सोवत सपना सब भूप भनि भावहीं ॥१९॥[4]

सोरठा

मन संसै सागर भयो, बूड़त अगम अथाह ।[5]
सतगुर दया तरनी दियो, उतरि जाए भवपार ॥१९॥[6]

चौपाई

जिन्हि सतपद खोजा चितलाई । निष्ट नाम निमु ध्यान समाई ॥१११९॥[7]
आतम दरस ध्यान जब बूझै । प्रेम मगन होए अपनहि सूझै ॥११२०॥[8]
तप तिलक मनि मुन्द्रा फेरै । अनहद धुनि मुरली तह हेरै ॥११२१॥[9]
अजपा संध्या तरपन करई । गाएत्री ध्यान गमी मति अहई ॥११२२॥[10]
पल पल सुमिरै प्रेम रस पीवै । मनि मुकुता तहवां चित दीवै ॥११२३॥[11]
चंद सूर दोए घरै भएऊ । सरिता तीनि संगम तहं रहेऊ ॥११२४॥[12]
ब्रम्ह पत्र तहवां भरि पीजै । ब्रम्ह दिखाए तहवा सुख जीवै ॥११२५॥[13]

---

१ (ग) मन = मनहुँ । (ङ) मगन = सघन ।
२ (घ) भौंर = भ्वौंर ।
३ (घ) मन करम करता = मन करता । (घ) (ङ) कामिनि = कामी ।
४ (छ) सोवत = सोवउ ।
५. (ग) संसै = ससै । (घ) संसै = संसे । (ख) (घ) भयो = भयो । (घ) भयो = भया । (ङ) भयो = भयौ ।
६ (ख), (घ) दियो = दयो । (ख) (ग) (ङ) भव = भौ ।
७. (ङ) अतिरिक्त पाठ—अगमान । (ख) (ग) (घ) (ङ) चौपाई का पाठाभाव ।
८ (ग) मगन = मंगन भ । (ख) अपनहि = आपनहि । (घ) अपनहि = अपने । (ङ) अपनहि = अपनै ।
९. (ङ) मनि = मन । (ख) (घ) फेरै = फेरे । (ख) (घ) हेरै = हरे । (ङ) हेरै = होरै ।
१० (क) स्वीकृत पाठ में 'अजपा' के पूर्व है दे । (ग) है = एह । (ख) (घ) मनि = मन । (घ) मति = मे ।
११ (ख) (ग) (घ) (ङ) सुमिरै = सुमिरि । (ख) (घ) (ङ) तहवं = तहां ।
१२ (ग) घरै = घरम । (ख) (ग) (घ) (ङ) सरिता = सरिता । (ख) (ग) (घ) (ङ) तहं = तहां । (ङ) रहेऊ = रहेऊ ।
१३ (ख) (ग) (घ) (ङ) ब्रम्ह = ब्रह्म । (ग) (ङ) (ङ) पीजै = पीवै । (ख) तहवां = तहां ।

ग्रन्थ संपूरन दरियासागर इयावयासति लिखल तइयार भैल सावन वदी नौमी रोज समिवार परवान दिन दुपहर उठते साहब जन सो मिनती मोरी छुटल मसर मात्राहीन पढ़व सभ जोरि सकल दरियापंथी साधु मो सीस को सतनाम सतनाम ।

ग्रन्थ लिखावल नरहरदास दरियापंथी बासिंदे मौजे रवई प्रगने बिसतहजारी भारो सानिहाल (?), जो कोई ग्रन्थ चोराव सो जम जगाति के धक्का पावें अंतकाल बिगुरचन होए ।

तारीख—१ सावन, सन् १२६६ साल ?



---

१ (क) ग्रंथ दरिया सागर संपूरन भइल मालूम दरिया साहेब साहेब का मकान सहाबाद मोजपुर परगना दनवारी तपे भीखी तेयार भइल मौजे धरकंधा तख्त चौरा से परवान समुझि लेना तेयार भेल जिले मानपुर परगना मानपुर मौजे सिकंदरपुर मौजीदास हुमारदास का मकान पर तेयार हुआ सम्बत सन १२६० सात सनी नाम बैसाख सुदी पंचमी वार शुकर के दस्खत गिरधारीदास फकीर दरिया साहेब के दस्त में साहेब मथुरादास जी स्वामी गुरु आगे सम संत साधु सेवक से सतनाम को मेरि साएब सेवक से सतनाम ।

(ख) सतनाम गरंथ संपूर्ण दरिया सागर मालूम दरिया साहब दरिया साहब का अस्थान शहाबाद मोजपुर परगने दनवार तपे सिखि मौजे धरकंधा सरकार सो सही समुझि लेना ।

फर्जि लिखते

मोसम पर्वने नाला गढ़ जिले मोजफ्फपुर ।

दस्त व सुरस्त लिखते

दस्त के साहब मोहरदास का शुद्ध सो सहि सुरस्त केसरीदास लिखा सो सहि मास पन्द्र मि तारीख २८ दिन रवि शुक्ल पक्ष जो देखा सो लिखा मम दोस न दीजवे मे सबे सन्त साधुन के पास केसरीदास का सतनाम पहुचे ।

(घ) ग्रंथ संपूरन दरिया सागर इत्यादि वास्ति सम्बत अठारह से १८८२ सनी नाम बैसाख सुदी तेरस १३ वार मंगलवार के ग्रंथ तइयार भइ चौरा पर मकान पर शाहाबाद मोजपुर परगने दनवारी तपे भीखी मौजे धरकंधा तख्त दरिया साहब का मकान थे पर्वांग समुझि लेना दस्खत उमरावदास फकीर शुरूत सुन वे कहिली बिराए मति ग्रंथ लिखि दिया भूल देखि के साध लिखि भाव दैख करते अपने साहब का घर से बेराब होए तो ग्रंथ गुरु का घर मे आवे ये बीच जावेगा मीरदस्त फकीर जो चोर हुए हैं अब होविंगे तो उनसे सो सतनाम भागे दंडित जन से मिनती मोरी हूटत अक्षर लेवें जोरी ।

(च) संपूरन दस्खत रासधारीदास ।

खाट उठाए काय करि लीन्हा । बाहर आए अगिनि को दीन्हा ॥११३८॥[1]
जरि गइ सकल भसम उड़ियानी । बिना पानि सोच कीन्हो ग्यानी ॥११३९॥[2]
फेरि धंधे लपटानी प्रानी । बिसरि गई बोए नाम निसानी ॥११४०॥[3]
सरपहु साधु दया करु प्रानी । ऐसे बूड़े बहुत अभिमानी ॥११४१॥[4]
सतगुर सब्द सीस दह मानी । कहै दरिया करु भगति बखानी ॥११४२॥[5]
भूलि भरम एह मूल गंवाव । ऐसन जन्म कहां फेरि पाव ॥११४३॥[6]
धन संपति हाथी धन जोरा । मरन अंत संग आए न तोरा ॥११४४॥[7]
ईह तन देह अगिनि में जरिहैं । भसम उड़ाए फेरि ना हेरिहैं ॥११४५॥[8]
मातु पिता सुत बंधो नारी । ई सभ यावरि तोहरि बिसारी ॥११४६॥[9]
मेटिहहिं बिसमै होहिं मगंदा । तिस अंकुरि दै करिहैं गंदा ॥११४७॥[10]

साखी

कोठा महल अटारिया, सवन सुनैं बहुराग ।[11]
सतगुर सब्द चिन्हे बिना, ज्यों पंछिन्ह मंह काग ॥१५॥[12]

---

१ (ङ) लीन्हा = लीन्हा ।

२ (ख), (ग), (घ) (ङ) उड़ियानी = उड़ियाना । (ख) (ग), (घ) (ङ) बिना = बिन । (ख), (घ) कीन्हो = कीन्ह को । (ख), (ग), (घ), (ङ) ग्यानी = ग्याना ।

३ (ग) फेरि = फिरि । (ख) धंधे = धनधा । (ग) (ङ) धंधै = धंधे । (ख) प्रानी = प्राना ।

४ (ख) ऐसे = अइसे । (ख) बूड़े = बड़े । (ङ) बूड़े = बूड़त ।

५ (ख), (ग) दह = एह । (ग) भगति = भक्ति ।

६ (ग) भूलि = भूला । (ख) ऐसन = अइसन । (ख) जन्म = म ।

७ (ङ) हाथी = हाथ । (ख) मरणा अंत संग आए ना तोरा । (ग) मरन अन्त संग आए न तोरा ।

८ (ख) ईह = इमा । (ग) ईह = एह । (ख) देह = दाह । (ख) (ग) (घ) न = नाहि ।

९ (घ) ईह = एह । (ख) (घ) (ङ) बंधों = बंधो । (ग) बंधों = बंधु । (ख), (ग) तोहरि = तोहि । (ङ) तोहरि = तोहरी । रवीकृत पाठ में मातु पिता के पहले ईह है ।

१० (ख) मेटिहहिं = मेटिहैं । (ग) मेटिहहिं = मेटिहि । (घ) मेटिहहिं = मेटिहहि । (ग) बिसमै = बिसमे । (ख), (ग) होहिं = होइहि । (ख), (ग) (घ) (ङ) दै = द । (ख), (घ) (ङ) करिहैं = करिहें ।

११ (ख) सुनै सर बन बहु राग । (ग) सुनत सर्बन बहुराग । (घ) सुन सर्बन बहुराग । (ङ) सुनै सर्बन बहुराग ।

१२ (ख), (ग) चिन्हे = चिन्ह । (ग), (ग) ज्यों = जों । (ङ) ज्यों = जैस । (ख), (ग), (घ) (ङ) मंह = मे ।

ग्रन्थ संपूरन दरियासागर ग्यारदवासति लिखल सहयार मीमी रोज सनिवार परवान दिन दुपहर उठले साहब जन सो। अक्षर मायाहीन पद्म सम आदि सकल दरियापंथी साधु सतनाम सतनाम।

ग्रन्थ लिखावल नरहरदास दरियापंथी बासिंदे मौजे रवाई प्र मागे सानिहाल (?), जो कोई ग्रन्थ चोराव तो यम अगाति के कान बिगुरचन होए।

तारीख—१ सावन, सन् १२६६ साल ?



---

१ (क) ग्रंथ दरिया सागर संपूरन भइल माफक दरिया साहेब साहेब का मकान ६ परगना हवकारी तपे मीसी तैयार भइल मौजे धरकंधा तखत चौरा पै मरद तैयार भेल जिले भागलपुर परगना भागलपुर मौजे सिकंदरपुर मौजीदास कु घर तैयार हुआ समत सन ११८ साल सभी मास बैसाख हुरी पंचमी बार। गिरधारीदास फकीर दरिया साहेब के दस्त वै साहेब बखतदास की सामी गुरु साधु सेवक से सतनाम जो कोई सायक सेवसम से सतनाम।

(ख) सतनाम परम संपूर्ण दरिया सागर माफक दरिया साहब दरिया साहब साहाबाद भोजपुर परगने हनवार तपे सिसि मौजे धरकंधा सरकार से छवी छपरा

पर्गने लिखते

मोकाम पर्गने मसा गाह जिले भोजपुर।

दस्त वै सुरत लिखते

दस्त वै साहब मोहरदास का मुरा सो सवि सुरत वैरीदास लिखा सो सवि मास तारीख २८ दिन रवि सुरत पढ़ जो देखा सो लिखा मम दोस न दीजते मे व साहुन के पास वैरीदास का सतनाम प१चे।

(ग) ग्रंथ संपूरन दरिया सागर हमावि वासित समत अठारह सै १८८२ सर्व नाम बैसाख तेरस ११ बार मंगलवार के ग्रंथ तइयार भए चौरा पर मकान पर साहाबाद भोजपुर प हनवारी तपे मीसी मौजे धरकंधा तखत दरिया साहब का मकान मे पर्गान समुझि हे दसखत छमराजदास फकीर सुकवा वस व बहिनी भिराए मति ग्रंथ लिखि दिया भूप देखि ५ साइ लिखि भावन देख परत पावसे साहब का घर है बेरस होए तो ग्रंथ गुरु का घर मे आवे वे बीन जाएगा गीधरस फकीर को भेंट हुए हैं अब होशिंग ही सभे सो सतनाम आगे दक्षिन पन से बिनती भोरी हूटल माफ़र सेव बोरी।

(घ) संपूरन परसराम रामसवारीदास।

ग्यान रतन

ग्यान रतन

विना	बिना
भेप	भेख
निरपी	निरखि
क्रम	कर्म
ब्रह्म ब्रम्म	ब्रह्म, ब्रम्ह
शो	सो
पुरइनी	पुरइनि
षेबो	पॅखो। आदि



ग्रन्थ 'ध्यान रतन' की मूलहस्त लिपि में लिपिकार ने प्राय: 'ज्ञ' की जगह 'ग्य', 'ज्यों' की जगह 'ज्यो' 'ख' की जगह 'ष', 'या' की जगह 'आ', 'ए' की जगह 'ऐ' एवं 'स' की जगह 'श' वर्ण का प्रयोग किया है, 'व' के लिए 'ब' और 'ब' के लिए बिन्दुयुक्त 'व' का प्रयोग किया है।

उसने प्राय: सभी स्वरों पर ह्रस्व इकार के बदले दीर्घ 'ई' का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं ह्रस्व 'इ' के लिए ह्रस्व 'इ' का भी प्रयोग देखा जाता है।

अथवा कहीं-कहीं पर ऊर्ध्व रेफ (पूर्व-रकार) को पर-रकार के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

जैसे—प्र्न = पुर्न। ग्रव = गर्व आदि।

कहीं-कहीं मूल हस्तलिपिकार ने 'न्' के लिए अनुस्वार का प्रयोग किया है, और संयुक्त व्यंजन के पूर्ववर्ती वर्ण पर अनुस्वार का प्रयोग किया है। यदा कदा 'ब' का प्रयोग 'प' के लिए पाया है—देवान = देपान आदि।

मूल हस्तलिपि से प्रतिलिपि में निम्नलिखित रूप से शब्द-परिवर्तन हुआ है—

मूल हस्तलिपि	प्रतिलिपि
पुर्ष	पुर्ख
जींदा	जिदा
साहब	साहब
सुकीत	सुक्रित
दरिया	दरिया
मापत	मासत
उबारन	उबारन
बिमल	विमल
नीमु	निमु
बिबेक	विवक
बिचारि	विचारि
जाऐ	जाए
चौपाइ	चोपाई
मनी	मनि
मस्तक	मस्तक

जीवन कंचित कंचन में लागा ।[1] नाम बिसारि भोग में पागा ॥१०॥[2]

दोहा

टिका मूल निजु नाम है, रखो चरन चित लाए ।[3]
हंस बंस मुकुताइहै, जिन्दा जग में आए ॥२॥[4]

चौपाई

बिमल नाम प्रेम महि चाखे ।[5] कलि में कथा बहुत चित राखे ॥११॥[6]
कवि भास्कर करि बहुत बनाई । माया भेद ब्याम महि पाई ॥१२॥
स्रुति पुरान कथहि मुनि ध्याता । जिवन पदारथ सो भ्रम राता ॥१३॥[7]
कथि विराग मुनि स्वारथ साधी । अपने हाथ आपु पगु बांधी ॥१४॥[8]
परम तत्त्व प्रेम जब चीन्हे । निजु गहि नाम सुरति महं भीन्हे ॥१५॥[9]
दुर्मति दुबिधा कबहि ना भाखे । काम क्रोध अपने मन माखे ॥१६॥
करहुं क्रिपा मोहि सतगुर देयाला । सुनो बचन मोहि होख निहाला ॥१७॥[10]
को है काम क्रोध कर मूला । पाप पुन्य कैसे जग फूला ॥१८॥[11]
के परक्रिती रहे एहि संगा । निगुन तीनि कवन है रंगा ॥१९॥[12]
कवन नाम निजु मुक्ति संयोगा । कवन पवन किन्हि साधे जोगा ॥२०॥[13]

दोहा

बिबरन करो बिचारि कै सुनो स्रवन चित लाए ।[14]
बिगत बिमल निजु नाम है, क्रिस्टो बेद देखाए ॥३॥[15]

---

१ (क) में = महं ।
२ (क) (ख) (ग) भोग में पागा = भोग रस पागा ।
३ (ग) रहो चरन चित लाए = रहे मनलाय लाए ।
४ (क) में = महं ।
५. (क), (ख) बिमल प्रेम नाम नहिं चाखे ।
६ (ख) में = महं ।
७ (ग) स्रुति पुरान कथि मुनिवर ध्याता ।
८ (क), (ख) (ग) तत्त्व = तत्त् ।
९. (ग) सुरति = स्रुति ।
१० (क), (ख) मोहि = मन ।
११ (क), (ख) (ग) कर = कै ।
१२. (ग), (घ) परक्रिती = प्रक्रिति ।
१३ (क), (ग) मुक्ति = मुकुति ।
१४ (क), (ख) (ग) बिमल = बिमिद ।
१५. (क) कर = के । (ग) है ।

सतनाम

सत पुर्ख जिंदा साहब सत सुकित सतगुर दरिया साहब
ग्रन्थ माखल ग्यान रतन अगम ग्यान हंस उबारन[1]

दोहा

ग्यान रतन मनि मंगल, विमल सुधा निजु नाम ।
करो विवेक विचारि के, आए अमरपुर धाम ॥१॥

चौपाई

विमल नाम मनि मस्तक टीका । विना विवेक भेख सम फीका ॥१॥
निरखि नाम निजु प्रेम समेता । काटि कर्म कलि मंगल हेता ॥२॥
पुरन ब्रम्ह पंडित सो ग्याता । निगमेष पुरखनि जेवों पाता ॥३॥[2]
पुर्ख नाम निजु पारस अहई । मन मुकुताहल अग में सहई ॥४॥
विमल नाम निजु प्रेमहि पावे । सुरति धगा महं आण समावे ॥५॥
पुर्ख नाम निजु बिमल विरोगा । ग्यान मुक्ति जन छिजे न जोगा ॥६॥[3]
ग्यान विना दुख दारुन दावे ।[4] तस सिला पर तावन तावे ॥७॥
माया मलीन मन छकि सजोगा ।[5] छूटे न कलि मलि विरह वियोगा ॥८॥
माया मंदिल मानो अग्नि छाया ।[6] मिष नाहि नेति नाम गुन गाया ॥९॥

---

१ (ख)—सत पुर्ष साहब सुकित नाम सतगुर जोगजीत दरिया साहब ग्रन्थ ग्यान रतन मुक्ति के दाता हंस उबारन बंदी छोर । (घ)—ग्रन्थ ग्यान रतन माखल दरिया साहब सतगुर सुकित सर्व उबारन साहब बन्दी छोर पुर्ष पुरान साहब जिन्दा साहब । (च)—ग्रन्थ ग्यान रतन माखल दरिया साहब सतगुर सुकित हंस उबारन मुक्ति के दाता नाम निधान बन्दी छोर दीन बेहाल सरन समर्थ के (इस प्रति में प्रायः ग, घ, द के स्थान में एकमात्र 'ग' का प्रयोग हुआ है । अथवा इसीलिए प्रति में 'दोहा' की जगह सर्वत्र 'समो' का उल्लेख है ।)

२ (घ) पुरन ब्रह्म पंडित सोइ ग्याता ।

३ (ग), (घ) मुक्ति = मुकुति । (ग) मुक्ति । छिजे = छिजै ।

४ (ख) (ग) (घ) ग्यान = नाम । दावे = दाबै ।

५ (ख) मलीन = मलि ।

६ (ग) मंदिल = मंदिर ।

कोइ मद माति भक्ति नहि जाना । कोइ दुखिया दुख बहुत भुलाना ॥३५॥
संत सुजान भक्ति गुर ग्याना । तेहि बिषय रस अंम्रित पाना ॥३६॥[1]
दरिया दर्पन झिलिमिलि समाना । बिमल झलके सत निसाना ॥३७॥
मनि मानिक महिमंडल मूला । संखित प्रेम सहसदल फूला ॥३८॥
दरस दिवाकर कमल में लागा । तम भौ दूरी बिमल रस पागा ॥३९॥[2]

दोहा

काटि भर्म सत सब्द से, मिले महिर गुर ग्यान ।
मरम करम सम नासि के भयो अमरपुर धाम ॥५॥[3]

छन्द

भ्रम जाल काल बिसारि के सत सब्द में धुनि लावहीं ।
गुर ग्यान बिमल बिराग मद यह कुमति कलि बिसरावही ॥१॥
अमर लोक में लोक माही झिलिमिल सोभा पावहीं ।
भव मरम कर्म न ब्यापु कबहीं उदित मंगल गावहीं ॥२॥

सोरठा

करो बिबेक बिचारि, अमर लोक अम्रित पिवो ।
भौ जल आहि न झारि सतगुर दया तरनी दिवो ॥१॥[4]

चौपाई

जेवों भुयंग भग्म में लागा । स्वारथ कारन जोग ज्यो जागा ॥४०॥[5]
उपजी मनि यह निरमल नीका । मनि के आगे दीपक फीका ॥४१॥[6]
कहि मही मनि दीपक कीन्हा । तहि पतंग भोजन भोग लीन्हा ॥४२॥
सर्ग नर्क महि अविगति जाना । भौन भरमि नहि पद पहचाना ॥४३॥[7]
सुरति पुरान कवि पंडित ग्याता । सील संतोख प्रेम नहि राता ॥४४॥
मिला चौगुन बिषय बिकारा ।[8] सत सब्द नहि करे बिचारा ॥४५॥

---

१ स्वीकृत पाठ में पहली चौपाई के आरंभ में [illegible] है । (क) (ग), (घ) बिषय = बिषै ।
२. (ग) (ग) (घ) भौ = तम ।
३ (क) भौ = भयो । (ग) भयो । (घ) भ्यो । (क), (ग), (घ) धाम = धाम ।
४ (ग), (घ) पिवो = पिवे । दिवो = दिवे ।
५. (घ) जेवों = ज्यों । (क) मरम = मर ।
६ (क) (ग), (घ) दीपक = दीपक है ।
७ (ग) (ग) भौन = भवन । (घ) भ्रम ।
८ (ख) (घ) मिला = मिलुना, (घ) मिलुना । (ग), (घ) बिकारा = बेकार ।

चौपाई

आतमघात पाप कर मूला । पर के दिये धरम रहु फूला ॥२१॥[1]
पचीस प्रकिति तन स्वारथ अहई । भाजन भाजन सुख सम लहई ॥२२॥[2]
ब्रह्म रूप यह रज गुन कहिया । रोग सोक सुख स्वारथ लहिया ॥२३॥[3]
बिस्नु रूप यह सत जग लागा । भ्रमत फिरै आतम महिं आगा ॥२४॥[4]
रुद्र रूप जग परलै करई । सोहंकार तमगुन जो धरई ॥२५॥[5]
करसा पवन हिरदै जब आवै । अगिनि सरूप क्रोध तंह आवै ॥२६॥
सरद पवन जब होए अनकूला ।[6] कंदर्प संग रहै समतूला ॥२७॥
निजु अच्छर निजु नाम समोई ।[7] दुर बाती निरमल तंह होई ॥२८॥[8]
पूर पवन जिन्हि साधे जोगा । निरमल ग्यान होए कबहिं न रोगा ॥२९॥

दोहा

ग्यान समीप सुधा सम, देखहु परिमल रंग ।[9]
धम ग्यानि धन अघट है, मन भुजंग होए भंग ॥४॥

चौपाई

मधुकर मालति बास रस पागा । सक्ति सरूप जोग जिमि लागा ॥३०॥[10]
कामिनि कनक जक्त अमजाला ।[11] तन मन धनिउ व्यापेवो सत्ता ॥३१॥[12]
मूरति महलि कर्म तन लागा । काग कपूत भरम जोग आगा ॥३२॥
मुनि हरि कीरति बहुत बनाई । स्वारथ लागि भक्ति बिसराई ॥३३॥[13]
यह त्रिस्टांत त्रिस्टि मंह देखो । ऊंच नीच महि मंडल पेखो ॥३४॥[14]

---

१ (ख) धर्म = धरम । (ग) भ्रम । (घ) धंम ।
२ (ख) सम = रुप । (घ) छम्म ।
३ (ख), (ग) सोक = सोच । (घ) शोष ।
४ (ख), (घ) बिस्नु = बिस्न । (घ) बिसुंन ।
५. (ख) रुद्र = रुद्दर ।
६ (ख), (ग), (घ) अनकूला = अंकूला ।
७ (ख), (ग), (घ) निजु अच्छर = निजच्छर ।
८. (घ) निरमल तंह = तंह निरमल ।
९. (ख), (ग) (घ) समीप = सुधी ।
१० (ख) बास = बा ।
११ (ख), (घ) जक्त = जगत । (घ) कंद ।
१२ (ख) (ग) (घ) मन = मी ।
१३ (ख), (ग) कीरति = कीर्ति । (घ) कीर्ति की ।
१४ (ख), (घ) मंह = में ।

दोहा

उतपति सकल सनेह यह, प्रगट कह्यो सम जानि ।
सुनो संत चित हित दे, लेहु वचन सत मानि ॥७॥

दरिया साहब वचन[1]

सतरि जुग रहु धुंध बेसूना ।[2] तब नहिं होत पाप ना पुना ॥६१॥[3]
तब नहिं राम रमिता जग आए । जाके बेद लोक सब गाए ॥६२॥[4]
तब नहिं होते पवन औ पानी । तब नहिं संग ना जीव भवानी ॥६३॥
तब नहिं होते देवकर पूजा । तब नहिं गर्व ना ग्यान अनकूजा ॥६४॥[5]
तब नहिं कच्छप बाहु सरूपा । राव रंक नहिं अविगत रूपा ॥६५॥
तब नहिं होते फरद न फूला । तब नहिं होते गर्भ अनकूला ॥६६॥
तब नहिं ब्रह्म वेद बिचारी । तब नहिं गंगा रहसि बेचारी ॥६७॥[6]
तब नहिं कान्ह रहे हर चोरी । तब नहिं मुरली मुख मंह मोरी ॥६८॥[7]
तब नहिं चांद सूर्य बिसतारा । तब नहिं महस दसो अवतारा ॥६९॥
आदि अन्त नाहिं कुल कोऊ । नहिं कुल पंडित नहिं कुल दोऊ ॥७०॥[8]
सतरि जुग सयन सुख वासा ।[9] सत्त पुर्स के भवन तमासा ॥७१॥[10]
जुगन्हि जात बहुते उन्हि पाना । सत सुक्रित मिलि किन्हो पसा ॥७२॥

दोहा

सत्त पुर्स निज आपुसे किन्ह माया बिसतार ।
सत्त वचन यह बूझि के, संत करहु निरुवार ॥८॥[11]

---

१ (ख), (ग) (घ) = पाठाभाव ।
२ (ग) (घ) धुंध = धुंत । (घ) = धुन्ध ।
३ (घ) ना = नाहिं ।
४ (घ) सब = सब ।
५ (ख) (ग), (घ) अनकूजा = अंकूजा ।
६ (ग), (घ) बिचारी = बचारी ।
७ (घ) कान्ह = कान्ह ।
८ (ख), (घ) कोऊ = केऊ । दोऊ = देऊ ।
९ (ख) (ग) (घ) सुख = सुख ।
१० (ग) पुर्स = पुरुष ।
११ (घ) यह = ई ।

ममिता पद मन मोदिक पासा । साक्षा सहित मुक्ति इन्द्रि नासा ॥४६॥[1]
तेमि कमल दल कुमुदनि पासा । त्रिखि माला मंह चाहे सुवासा ॥४७॥[2]
ऐसे द्विप नर जाहि भुलाई । सकलो सोभा मोह बनाई ॥४८॥[3]
संत सुबुधि बचन सत भाखा । सील सतोख रोस रचि राखा ॥४६॥
मोह कोह मद्द तिर्गुन फंदा । विषै भवन में चाहे अनन्दा ॥५०॥[4]

दोहा

विस्व भाव रस मांगत, त्यागत सत सनेह ।
चउरासी के भवन में, फिरि फिरि धरिहैं देह ॥६॥[5]

सेवक बचन

मैं सेवक तुम सतगुर दाता । तुमते अवरि कवन बड़ ग्याता ॥५१॥
भाग्नि मंत निजु कथा सुनाई । होहु दयाल भरम सब जाई ॥५२॥
को है राम जाहि जग लागा । बेदबिरिध मुनि पंडित जागा ॥५३॥
को है सिया सकल जग पावे । सो साहब सत भेद बतावे ॥५४॥[6]

दरिया साहब बचन[7]

भलि मति मइ पूछा तुम्ह ग्याना । आदि अंत भाखौं परवाना ॥५५॥[8]
टीका मूल सत मैं यह भाखों । तुम्ह से गोए के काहु के राखों ॥५६॥[9]
कहों कथा जुग-जुग चलि आई । संत सुखद मुल मंगल गाई ॥५७॥[10]
मधे बिम्ब चोए पुरुष अकेला । मुन निरंजन सो संग चेला ॥५८॥
सोरह सुत सब लोक निवासा । सुमित सदा पुरुष के पासा ॥५६॥
सोह सुमित सोई जोगजीता । महिमा अनन्त प्रेम निजु हीता ॥६०॥

---

१ (घ) मन = मनो । (क), (ग) माया = मया ।
२ (घ) मंह = मह ।
३ (ख) (ग) (घ) सकल शोभा यह मोह बनाई ।
४ (ग) मैं = मह । (घ) भवन = भुवन ।
५ (ख) (ग) (घ) चउरासी = चौरासी
६ (ख) (ग) (घ) पावे = पाव । बतावे = बताव ।
७ (ग) दरिया साहब बचन = सतगुरु बचन । (घ) दरिया बचन ।
८ (घ) परवाना = प्रवाना ।
९ (घ) सत = सत्य ।
१० (घ) सुखद = सुख ।

गुरु स मंत्र पुछों मैं जाई । माग्या होय सो करी उपाई ॥८७॥
गए रिखी संकर के पासा । कै परनाम बचन परगासा ॥८८॥
दुइ कर जोरि बचन कहीं स्वामी । सिया बिवाह सुभ मंगल धामी ॥८९॥
की कुम्ह कोइ सकल संवसारा ।[1] की गजकाम सिहु ब्याह बिचारा ॥९०॥[2]
की रिखि मुनि के सरपों जाई । माग्या होए सो करीं उपाई ॥९१॥

दोहा

संकर मन मैं बुझि के, कहा बचन समुझाए ।[3]
धनुख सुमंमर राखियै एहि बिधि ब्याह उपाए ॥१०॥

चौपाई

एहि जग धनुख तुरे जो कोई । सिया बिवाह अवसि के होई ॥९२॥
ए स्वामी मोहि सेवै भारी । को यह चाप चढ़ाएउ तारी ॥९३॥[4]
सीता सती सोई बर बरिहै । यह जग कीति समर जो करिहै ॥९४॥[5]
सत बचन राखहु परतीती । त्रिभुवन नाम सुमंमर मीती ॥९५॥[6]
चले तुरंत जनकपुर आए । पग पवित्र करि धनुख धराए ॥९६॥[7]
मुनि पंडित बहु आनि बोलाई । अग्य आहुति करि मंगल गाई ॥९७॥
धनुख के पूजा कीन्ह बहु भाँती । चंदन अंब पुहुप धव पाती ॥९८॥[8]
निसुदिन सोचत मंत्र बिचारी । बिधि परिपंच कठिन बहु भारी ॥९९॥
गए जनक जहँ भौन निवासा । रानी आए बैठि चहुं पासा ॥१००॥[9]
रानी मिलि के मंत्र बिचारी । परगट करि जग में परचारी ॥१०१॥
तब बंदी के बेगि बोलाई । गुप्त मंत्र सब प्रगट सुनाई ॥१०२॥[10]
जाहु जहँ तहँ कहि समुझाई । सुजस सदा गुन भाट बड़ाई ॥१०३॥

---

१ (क) (घ) संवसारा = संसारा ।
२ (ग), (घ) सिहु = सिही ।
३ (क), (ग) (घ) मैं = मह ।
४ (क), (ख) स्वामी = सामी ।
५. (ख), (ग), (घ) यह = इसा ।
६ (घ) अतिरिक्त—शिव बचन ।
७ (ख), (ग), (घ) जग = जगय ।
८ (ग) बहु = ब ।
९ (क) भौन निवासा = भवन में वासा । (ग), (घ) भवन निवासा ।
१० (ख) गुप्त = गुपुत । (ग)—गुप्त । (घ) गुप्त्य ।

चौपाई

पहिल हुकुम धरती तब कीन्हा ।[1] टारि सुमेर आकन तब दीन्हा ॥७३॥[2]
सो कन्या सत पुरुष ने कीन्हा । जोग भोग रस परगट लीन्हा ॥७४॥
सक्ति के संग निरंजन वासा । तीनि देव मिलि कीन्ह परकासा ॥७५॥[3]
तीनि देव सखा बहु मानी । पथ अनंत किमि कहा बखानी ॥७६॥[4]
सब किछु कन्या कहौं निजु भागे । सुनहु संत निजु प्रेम सुभागे ॥७७॥[5]
मन माया कर ऐसन साजा । सबके राव रंक बड़ राजा ॥७८॥[6]
कहीं जोग कहिं भोग बिलासा । कहीं दान कहिं पुन्य प्रकासा ॥७९॥[7]
कहीं कन्या सब संतन्ह लागी । जाने मोह सकल भ्रम भागी ॥८०॥[8]
कहा राम सिया कर बाता । आदि अंत जो बूझे ज्ञाता ॥८१॥

दोहा

माया जनक सिह आइया, परगट भई तिनि लोक ।[9]
सोभा सकल संसारि क, दिवा सबन्हि क लोक ॥९॥

चौपाई

अति बिचित्र सोभा बहु भांती । पूरन चंद सरद जनु कांती ॥८२॥[10]
निरखेवनि जोति सुंदर कांती ।[11] बिमल सरूप रचा यह भांती ॥८३॥[12]
ताकर कवि किमि करहु बखाना । सकल सरूप माया कर जाना ॥८४॥
रिसि सोचत मन भो बराग । सठव ऊठव सोभत जागा ॥८५॥
करब बिबाह जनक बिधि भांती । की कुल मति राव सिह बाती ॥८६॥

---

१ (ग), (म) (च) पहिल = पहिले ।
२. (घ) (ग) टारि सुमेर तब आकन दीन्हा ।
३ (क), (ग), (घ) परकासा = परगासा ।
४ (क) सखा = साखा ।
५. (च) अतिरिक्त पाठ—'सतगुर देखत कहते हैं' ।
६ (क) (ग) (घ) सब = सम ।
७ (क), (ग), (घ) बिलासा = बैलासा ।
८ (च) कही कथा सबन्हि हित लागी ।
९. (घ) अतिरिक्त पाठ— भागवती भारद्वाज मुनि सो कहत हैं शिव पारबती न कहते हैं'
(क), (घ) सिह = सिही ।
१० (घ) बिचित्र = बीचत्र । (घ) बेचित्र ।
११ स्वीकृत प्रति में 'कांती' के पहले 'कति' पाठ है। (ग), (घ) कांती = छाता।
१२. (क), (ग) यह = नहीं ।

कोइ कोइ भूप निकट होए देखा । टारे ना टरे धनुख कै रेखा ॥११५॥[1]
लिखा बिरंचि जो अंक बनाई । के तेहि मेटि करे अधिकाई ॥११६॥

दोहा

बीस भुजा दस (सीस) रावन, रंगभूमि मैं आए ।
बल पौरुष सम तौलि के सका चला सजाए ॥१२॥

देखहि धनुख भयंकर भारी । बैठि रहे सभ पौरुख हारी ॥११७॥
लज्जित भए माथा करि नीचा । मिह नहि जाहि धनुख नहि खीचा ॥११८॥[2]
देखि बिकल भइ राजकुमारी ।[3] बठे भूप सकल सभ हारी ॥११९॥[4]
सारंग सक्ति भयंकर भारी । टूट न धनुख परहिं जग गारी ॥१२०॥[5]
सिय मुख देखि बिकल भइ रानी । यह प्रन कठिन धनुख गुम मानी ॥१२१॥
आगे कथा अवधपुर गएऊ । राम जन्म जग परगट भएऊ ॥१२२॥
आरति मंगल सभ मिलि गाया । कवि भास्कर करि सब्द सुनाया ॥१२३॥[6]
सहन भंडार लुटावहि भारी । देहि रनिवास अरक्सी सारी ॥१२४॥
बाजन बाजत बहुत सोहाई । नट नागरि सभ नाचु बनाई ॥१२५॥
मन के मनोरथ सभ के पूजा । राम पियार अवरि नहि दूजा ॥१२६॥
चार पुत्र जनमे अति नीका ।[7] सभ गुन लाएक बंस के टीका ॥१२७॥[8]
पैसे मनि मंदिल मैं राजा । देखि हर्स भय चारो साजा ॥१२८॥[9]

दोहा

जग्य पवित्र मुल मंगल आनंद मंदिल भारि ।[10]
हर्ष भए सभ देखि के ब्राम्हन भाट भिखारि ॥१३॥

---

१ (ग) कै = कर ।
२ (घ) मिह = मिही ।
३ (ख) भई = भए ।
४ (ख) बैठे = बइठी ।
५ (ख), (ग) परहि = परिहि, (ग) गारी ।
६ (ख), (ग) (घ) कहि कवि भास्कर सब्द सुनाया ।
७ (ख), (ग) चार = चारु । (घ) चारो ।
८ (ख) बंस के टीका = बंस टीका । (ग) बंस का टीका ।
९ (ख) (ग) चारो = चारु ।
१० (घ) भारि = भरि ।

दोहा

सकल राज जग का कहि, सभ से कहुय पुकारि ।[1]
धनुष तुरे सो बरे जानकी, मिनती मंत्र विचारि ॥११॥

छंद

नृप नृप सब राज रंक सभा सकल प्रचारहीं ।
सुनो स्रवन मही मंडल भूपति बंदी भाट प्रकारहीं ॥३॥
महा कठिन प्रन रोपेवो जनक यह संकर चाप चढ़ावहीं ।
धनुष तुरे सो महावीर भट वेद विदित जग गावहीं ॥४॥

सोरठा

रिखि मुनि बोले विचारि, जो अब में जग राम भस ।
सोई पूर्ण सिया नारि, जनक संसै सभ मेटिहै ॥२॥[2]

चौपाई

कहे भाट सुनु भूप सुजाना । सुनो स्रवन द विदित प्रधाना ॥१०४॥
धनुष तुर सो ब्याहै सीता । राव रंक कोई प्रन जीता ॥१०५॥[3]
सुनिके भूप चले दल साजी । देखि धनुष मुख मगन राजी ॥१०६॥
देस देस के भूपति आए । रंगभूमि जंह धनुष धराए ॥१०७॥
होए कुल हानि निकट नहि जाई । एक एक मंत्र पूछे तंह भाई ॥१०८॥[4]
कोइ ग्यानी नृप बोले विचारी । सुनो सकल मिलि बचन हमारी ॥१०९॥
परम प्रेम सुंदरि सुख सोभा ।[5] केहि नहि कहिए मायाकर सोभा ॥११०॥[6]
केहि नहि भूखन भोग सुख सेज्या । केहि नहि राज काज कुल सज्या ॥१११॥[7]
केहि जग कंदर्प केहि नहि मीना । सभ जग सरिता कंह नहि मीना ॥११२॥[8]
के नहि भोग भाग सुख मांगे । के नहि जोग जुक्ति से जागे ॥११३॥[9]
के नहि पंडित सुबुधि सुजाना । के नहि सिया बर मनमाना ॥११४॥

---

१ (ग) कहुय = कही ।
२ (ग) मेटिहै = छुटिहै ।
३ (क) तुरे = तरि ।
४ (ख) मंत्र = मंत । (क), (ग), (घ) पूछे = पूछहिं ।
५ (घ) केहि नहि प्रम सुन्दर सुख सोभा । (ग) के नाहि प्रेम सुन्दरि सुख सोभा ।
(घ) के नाहि प्रम सुन्दरि भामि सोभा । स्वीकृत पाठ में 'परम' के पहले 'केहि नहिं' है ।
६ (घ) कहिए = कही ।
७ (ग) भोग = भाग । (घ) बरन ।
८ (घ) सभ = जग । (क), (ग) (घ) सरिता = सलीता । (क) मीना = मिथ्या ।
९ (क), (ख), (घ) जागे = जागी ।

संग सखी लिए जनककुमारी । गई तुरंत जहां त्रिपुरारी ॥१५१॥
राव रंक जिप बैठे भारी । राम के देखि तहां पशु झारी ॥१५२॥
जनकत्रिया भौ सखिन्ह समेता । राम के देखि मगन मन हेता ॥१५३॥
नहि संसय सुख सागर नीका ।[१] टूटे धनुख तब सभ थमीका ॥१५४॥
सिया प्रेम प्रीति सिखु हुली । मानो कली कमल की फुली ॥१५५॥
दिनमनि दिन अम्बुज छवि छाया । भिगा माव रस अमिय सोहाया ॥१५६॥[२]
चले राम धनुख पंह कैसे । मानों धीर महाभट जैसे ॥१५७॥
देखत दल सभ भयि मधुराना ।[३] मानो कंपित काल डेराना ॥१५८॥

दोहा

महा कठिन कराल प्रन, रंगभूमि भौ भीर ।[४]
कर गहि चाप चढ़ाइया तानि तोरा रघुबीर ॥१५॥

चौपाई

मधुर मनोहर बाजन बाजा । हरखेवो नगर सिया सी खाजा ॥१५९॥[५]
टूटे धनुख सब्द भौ भारी । परसुराम सुनि लागु गोहारी ॥१६०॥
चले कोपि करि आए तहंवा । राम लखन बैठे रहे जहंवा ॥१६१॥
बोले बचन क्रोध करि तीता । को तारि धनुख के ब्याहे सीता ॥१६२॥
लखन कहा सुनहु हो स्वामी । का तुम्ह कहो गव अतिगामी ॥१६३॥
यह पिनाक तो बहुत पुराना । तेहि तोरे तुम का पछताना ॥१६४॥[६]
भनि सुंदर है बिधि के मूला । सुनी बचन मोहि लागत सूला ॥१६५॥
जौ लरिका करे लरिकाई । बड़ा होए सो करे समाई ॥१६६॥

---

१ (ख) दुख = सिखु ।
२ (ख) (ग) अमिय = अमी ।
३ (ख) सभ = सब ।
४ (ख) महा कठिन कराल प्रन रंगभूमि भव भीर ।
कर गहि चाप चढ़ाइया तानि तोरा रघुबीर ॥
(ग) महा कठिन कराल प्रन रंगभूमि भौ भीर ।
कर गहि चाप चढ़ाए कै तानि तोरा रघुबीर ॥
(घ) महा कठिन कोमल वदन रंगभूमि भौ भीरि ।
कर गहि चाप चढ़ाए कै तानि तुरा रघुबीर ॥
५ (ख), (ग) सिया सी = सियसिर ।
६ (ख) तेहि तोरे का का पछताना । (ग) तेहि तुरे का क्या पछताना । (घ) तेहि तुरे के का पछताना ।

चौपाई

काम समान कि मानुनि भावे । गुन औ ग्यान कि बेदमत जागे ॥१२९॥[1]
करि भोजन सम कुटुम समाजा । मानव मंगल माजन बाजा ॥१३०॥
खेलहिं चारो पुत्र पियारा । एक से एक सोभा अधिकारा ॥१३१॥[2]
जैसे मनि मस्तक के टीका ।[3] रामदरस वैसे सभ नीका ॥१३२॥
बिस्वामित्र दुखित मुनि भारी । मुनि दुख देखि अवध पगु धारी ॥१३३॥
पहुँचि रिखी जहां न्रिप राया । आदर भांति बहुत चित लाया ॥१३४॥
कहे न्रिप रिखि आएसु दीजे ।[4] महा परसाद भोजन फल कीजे ॥१३५॥
क्रिपा समेत दया बहु कीन्हा । भाग हमार अवध पगु दीन्हा ॥१३६॥
तब रिखि ऐसन बोले बिचारी । राम के दीजे भच्छा हमारी ॥१३७॥
रिखी बचन न्रिप लागी कारी ।[5] जैसों भुजग मनि लेत निकारी ॥१३८॥
रानी बिकल दुखित महतारी । करि रोदन पुहुमी पगु धारी ॥१३९॥[6]
अवध बुडे भलो जल मंह सोका । प्रजा दुखित भौ बिपति बियोगा ॥१४०॥
रिखि तब क्रोध कीन्ह परचंडा । मानो काल लिए सिर डंडा ॥१४१॥
रामहिं न्रिप मागे तब दीन्हा । चरन छुइ के मिनती कीन्हा ॥१४२॥
चले तुरग निज्ञ रिखि के साथा ।[7] पिछे लखन आगे रघुनाथा ॥१४३॥
सुरसरि माह मंजन तब कीन्हा । रगरि चंदन सिर तीलक दीन्हा ॥१४४॥
भ्रिगु ताडिका निकट तुलाना । मारयो ह्रिदय ताकि के बाना ॥१४५॥
हरखेवो रिखि मुनि आरति कीन्हा ।[8] आसीरबाद राम कंह दीन्हा ॥१४६॥
बेदबिहित करि बिमल पढाए । रिखि तब चले जनकपुर आए ॥१४७॥
नगर देखि बाटिका गएऊ । उठी प्रात आगे चलि भएऊ ॥१४८॥
सिया सखी संग मइ फुलवारी । पद पंकज देखि ह्रिदय सुखारी ॥१४९॥
सलखि सखी भुरि मदन मयंगी ।[9] ते निरमोनि हुइ निर्मल मंगी ॥१५०॥

---

१ (ख), (ग) (घ) गुन औ ग्यान = गुनी ग्यान ।
२ (घ) अधिकारा = अधिकारी ।
३ (घ) मस्तक के टीका = मंदिर का टीका ।
४ (घ) रिखि = हे रिखि ।
५. (ग), (घ) रिखी बचन = रिखि के बचन ।
६ (ख) (ग) (घ) पगु = तन ।
७ (ख), (ग) (घ) तुरंग = तुरंत ।
८ (घ) मुनि = यति ।
९. (ख) (ग), (घ) सुरि मदन मयंगी = मारि चंदन में भीगी ।

सिया बेलास ग्रंथ प्रस भासे ।[1] गावा राम छत्र सिर राखै ॥१८२॥
सिप नेवता जंह तंह भेजा । लिखि के पाती जंह तंह भेजा ॥१८३॥
कलसा चित्र लिखा बहु भांती ।[2] चौमुख चारि जलाया बाती ॥१८४॥[3]
धूप धूम गावहिं वर नारी । निति होवे सुख मंगल चारी ॥१८५॥[4]
निसु बासर नित बाजन बाजा ।[5] करत अनंद अवध पुर राजा ॥१८६॥
अथमस बहुत बरात बनाया । भोजन भाव करि कुटुम जिमाया ॥१८७॥[6]
समाज राज दुबो सुत समेता ।[7] साज बाज सुख मंगल हेता ॥१८८॥
गज तुरंग रथ सब साजी । सोभा सुगध चहुं ओर छाजी ॥१८९॥
बाजन बाजे सोभु निसाना । अति घमंड चहुं ओर घहराना ॥१९०॥
दस बासल के एक साजा । धनी बरात अनेकन्हि राजा ॥१९१॥
आए जनकपुर निकट तुलाना ।[8] देखे बरात सब सुबुधि सुजाना ॥१९२॥
रिसी राम लखन तहं आए । सोभा समाज सुंदर तहं छाए ॥१९३॥
दसरथ रिसि के चरन मनायो । धन्य भाग मोहि राम भेंटायो ॥१९४॥
रानी सुनि आनंदित भएऊ । अति बेलास सुख मगन गएऊ ॥१९५॥[9]
बदि बाँधि करि कलसा धरेऊ । मोती मांडो बहुबिधि छएऊ ॥१९६॥
भांति भांति मनि खंभ जो ठाढे । मानो कनक काढि कर काढे ॥१९७॥

दोहा

बाजन सकल समाज सब बाजन अति घनघोर ।[10]
नरसिंघा औ तुरही, ताल मृदंग संजोर ॥१७॥

छंद

साज राम के कैसे बरनो सोभा सकल संवारि के ।
लाल हीरा मनि जवाहिर मढ़ेउ अति छबि छाएके ॥२॥[11]

---

१ (ग), (घ) बेलास = बिलास ।
२ (ख) चित्र = चित्री । (घ) चित्र = पत्री ।
३ (ख) (ग) (घ) जलायो = जरावहिं ।
४ (ख), (ग), (घ) सुख = सुखा ।
५ (ख), (ग) (घ) नित = निति ।
६ (घ) जिमाया = जिमावा ।
७ (घ) राज समाज दुबो = सुत समेता ।
८ (घ) तुलाना = नियराना ।
९ (ख) भएऊ = भएऊ । (ग), (घ) भैउ ।
१० (घ) बाजन = बाजत ।
११ (ख) (घ) छाएके = छाएकै ।

क्रोध होए धनुख हाथ कै दीन्हा । गर्व भांजि पुहुमी पर कीन्हा ॥१६७॥
मति होए गज गद मिलि जाई । पुर्न प्रताप राम जस पाई ॥१६८॥
परसुराम तब चले लजाई । मति सकोच होए बदन छपाई ॥१६९॥

दोहा

चली सिर के भान छवि, मति मन मगन सोहाए ।[१]
उदयगीरि रेखा रवि, बिलगि कहा गुन जाए ॥१५॥

चौपाई

रिखि के संग आए रघुनाथा । क्रिपासिन्धु मोहि कीन्ह सनाथा ॥१७०॥
तुम मुनि आए दरस मोहि दीजे ।[२] सिया बिवाह मुल मगल कीजे ॥१७१॥
बिहिति बिमल क लिखा बनाई ।[३] लेक दूत अवधपुर आई ॥१७२॥
पहुंचे दूत अवधपुर जबहीं । पाती न्रिप कह दीन्हो तबहीं ॥१७३॥[४]
पाती बांचत बहुत अनंदा । जस मैं फूलेयो शरद जेवों चंदा ॥१७४॥
राजा उठि भवन में गएऊ । रानिन्ह से निजु कथ सुनएऊ ॥१७५॥[५]
भई आनद कौसिला रानी । ललकत भीन बरखा जनु पानी ॥१७६॥
जैसे गाखी सन की कांड़ी । भेटिगो पिया प्रीति मति बाढ़ी ॥१७७॥
रानी सभै अनंदित भएऊ । बिसरी मनी हाथ जनु भएऊ ॥१७८॥
अवध के लोग सब भया सुखारी । दुख मेटा सुख भौ अधिकारी ॥१७९॥

दोहा

हरख सकल समाज सब, गुरपद पंकज लीन्ह ।[६]
मुनि बसिष्ट के आगे, जना कथा कहि दीन्ह ॥१६॥

चौपाई

न्रिप मुनि मंत्री बैठे पासा । राम बिवाह कीन्ह प्रकासा ॥१८०॥
लिखित बिहिति के लगन सोभासा ।[७] मुदित सुघन मुद मंगल गासा ॥१८१॥[८]

---

१ (ख) (ग), (घ) छपि = छवि ।
२ (ग) (घ) तुम मुनि = तुम्ह मिर । (ख) तुम मुनि ।
३ (ग) बिहित बिमिन कै लाखा बनाइ । (घ) बिहित बिमल कै लिखा बनाइ ।
४ (घ) कह = कै ।
५. (ख) रानिन्ह से भी कथा सुनएऊ । (ग) रानिन्ह स निजु कथा सुनएऊ । (घ) रानिन्ह से नीजु कथा सुनैऊ ।
६ (ग) हरख संग समाज सब । (ग), (घ) हरखेयो संत समाज सब ।
७ (ख) बिहिति बिहिति कै लगन सोभासा ।
८ (ख), (ग) सुर = सुख ।

गुन है पुर्ष नाम निगु हीता । गुन औ निर्गुन प्रेम प्रतीता ॥२१५॥

दोहा

औ गुन ध्यान नाम सत, करो विवेक विचारि ।[1]
कह दरिया सतगुरु मिलें, तरलो लखनिहारि ॥१८॥

चौपाई

आए जनकपुर सब नचाया । माया भेद ध्यान नहिं पाया ॥२१६॥
यह कौतुक माया कर कीन्हा । आगे पगु अवधपुर दीन्हा ॥२१७॥
आए अवधपुर पहुँचे राया । आनंद मंगल सब मिलि गाया ॥२१८॥
राम के देखि सब भया सुखारी ।[2] भेटा कलपना कह दुख भारी ॥२१९॥
परिछन करि तब लीन्ह उतारी । रही निहारि अवध की नारी ॥२२०॥
सिया रूप देखि सब सकुचाई । फेरि मन सब बदन छुपाई ॥२२१॥[3]
रूप रासि है अति सुठि सोभा । नन कमल मनु भंवर लोभा ॥२२२॥
आए भवन में चंचल चतुरी । अति होए प्रेम राम चित चतुरी ॥२२३॥
साइ गिरा गुन सोई सीता । बीचे फिरै कस करे मनीता ॥२२४॥
माया अनंत है अगम अगाधी । निगुन तेज समन्हि कहु बांधी ॥२२५॥
परा भवन में भर्म भुलाना ।[4] लखे सो किमि करि अलख अमाना ॥२२६॥

दोहा

सूरति में मूरति बसे मीरति रही समान ।[5]
दिल दर्पन में देखिए, तामें पद निर्बान ॥१९॥

चौपाई

भिप मुनि मंत्र कीन्ह अस भाऊ । राम तिलक दिजै अनंद बधाऊ ॥२२७॥[6]
भिप कहे सुनहु मुनि ग्याता । राम के तिलक दिल निज बाता ॥२२८॥
अब बिलम किमि करिए कामा । बैठि सिंघासन सो सीरामा ॥२२९॥[7]
आए भिप अर्हुंसा सब रानी । बोले प्रेम मधुर भिनु बानी ॥२३०॥[8]

---

१ (घ) करो = करै ।
२ (घ) भया = भये ।
३ (घ) फेरि बदन सब नैन छुपाई ।
४ (क), (घ) भर्म = भगम ।
५. (ग) (घ) (क) सूरति में सूरति बसे ।
६ (म) अतिरिक्त पाठ—मुनि वसिष्ठ वचन । दशरथ वचन ।
७ (घ) सीरामा = सियाराम ।
८ (क) भिनु = भिज । (ग) (घ) भिनु = रस ।

बसन झलकत केसरी सम अम्र परिमल लाएके ।[1]
धारो पुत्र सुगंध सुंदर हरसि राजा पाएके ॥६॥

सोरठा

चली बरात बिचारि, देखि जनकपुर हरस भो ।
धूप धूप घर नारि, रामरूप सम देखिहीं ॥३॥

चौपाई

परिछन करि आदर सब कीन्हा ।[2] जहाँ तहाँ डेरा करि दीन्हा ॥१६८॥[3]
भोजन प्रकार कीन्ह बहु भाती । जेकर जैसन जह तह जाती ॥१६६॥
माड़ो मंदिल तंह अति सोभा । नारि निहारि प्रेम अति लोभा ॥२००॥
बनिता बनि बनि गावहि गीती । रामरूप देखि अधिके प्रीती ॥२०१॥
सीतहि राम बिवाह करावा । वेद विहिति सुभ मंगल गावा ॥२०२॥[4]
राम सिया संग जंह चित्रसारी । संग सखी भो सासु पियारी ॥२०३॥
कोहबर माह रैनि बिति गएऊ । तम भो दूरि बाहर चलि भएऊ ॥२०४॥
नित नित भाव अधिक तव कीन्हा । प्रेम प्रीति करि आदर कीन्हा ॥२०५॥[5]
दाइज दान बहुत किछु दीन्हा ।[6] आदर करि बिदा तब कीन्हा ॥२०६॥[7]
अति कौतुक है अगम अतीता ।[8] भौन मरमि कोइ चीन्हें ना सीता ॥२०७॥
सब पुत्र है कन्या कुमारी । इह परिपंच विम्सि जग डारी ॥२०८॥
सोई राम निरंजन अहई । यह जग आनि त्रिगुन में बहई ॥२०६॥
यह लीला सतगुर कहि दीन्हा । यद परिपंच आनि हम चीन्हा ॥२१०॥
अति अतीत गुन अगम अथाहा । कहि कवि परे त्रिगुन जलवाहा ॥२११॥
बद समुद्र खारो जल तीता । खाए न पिव देखन कह हीता ॥२१२॥
वेद मथि ध्यान घ्रित काढ़ी । सतगुर महिमा इमि करि बाढ़ी ॥२१३॥
त्रिगुन धार चले नहि तरनी । बिनु गुन ध्यान कहा कवि बरनी ॥२१४॥[9]

---

१ (ख), (घ) लाएके = लायके ।
२. (ग) (घ) परिछन करि तब आदर कीन्हा ।
३ (घ) करि दीन्हा = करि तब दीन्हा ।
४ (ख), (घ) बिहिति = बिहित ।
५ (ख) (ग) कीन्हा = कीन्हा । (घ) आदर अति कीन्हा ।
६ (ध) किछु = बहु ।
७ (ख) (घ) आदर करि तब बिदा कीन्हा ।
८ विशिष्ट पाठ—(ग) सतगुर बचन । (घ) सद्गुरु बचन ।
९ (घ) बिनु गुन ध्यान = बिना ध्यान ।

बोले राजा केकई कंहवां । रानिन्ह संग देखा नहिं तंहवां ॥२४८॥

दोहा

करे कलपना कोह भर, सब मिलि कहा पुकारि ।
कठिन राग बिसमे भई, चले तहंवा नृप हारि ॥२१॥

चौपाई

तब गिरा मति दीन्हो फेरी ।[1] मन्थरहि भई मत्सर की चेरी ॥२४९॥
यह चरित्र केहु नाहीं जाना ।[2] सिया न जाने राव भुपाला ॥२५०॥
यह चरित्र सब करे भवानी । वेद लोक जेहि कहे बखानी ॥२५१॥
असुपति इन्द्र संग मिलि करि राजू ।[3] उतपति परली इन्ह कर साजू ॥२५२॥[4]
कहे राजा सुनु प्रान पियारी । कौन कष्ट उपजा तन भारी ॥२५३॥
राजा प्रेम प्रीति से बोले । मन बोलि तनिको नहिं डोले ॥२५४॥[5]
कर गहि राजे लीन्ह उठाई ।[6] बोली वचन कहा समुझाई ॥२५५॥
हमके वर मांगे तुम्ह दीन्हा ।[7] अब औसर एही प्रन लीन्हा ॥२५६॥[8]
देहु वर कि छोड़हु करारा ।[9] जाते पुरबिल होए निस्तारा ॥२५७॥

केकई वचन

भरत बोलाए तिलक तिन्हे दीजे । सब विधि आनंद मंगल कीजे ॥२५८॥
रामहि बन भरथ कंह राजा । सब विधि पूरन तोहरो काजा ॥२५९॥
नहिं तो प्रान हम देव निकारी । करम अनंद नदी करि डारी ॥२६०॥
रावहि सुनि हिये लागी कारी । परे मोह मुरछी तन भारी ॥२६१॥
राम जाहि बन भाग ना रहई । देखों तिलक ती यह दुख दहई ॥२६२॥[1]

---

१ (क) दीन्हों मति फेरी ।
२ (ग) चरित्र = चरित्र । अतिरिक्त पाठ—सतगुरु वचन ।
३ (ग) (घ) असुपति = असुपति ।
४ (क), (ग) (घ) साजू = साजू । (घ) काजू ।
५ (क) बोली = बो (घ) बोले ।
६ (क) (ग), (घ) गहि = गहि ।
७ (ग) (घ) मांगे तुम्ह = तुम्ह मांगे ।
८ (क) अतिरिक्त पाठ—केकई वचन ।
९ (क) (ग), (घ) वर = वचन ।
१ (ख) (ग), (घ) देखों = देखु ।

प्रेम प्रीति करि ऐसन भाखा । राम के तिलक लगन रचि राखा ॥२३१॥
सभ रानी सुनि भयो अनंदा । फूलि ललनी सरद जनु चंदा ॥२३२॥
सभ के मन में यह ठहराना ।[1] राम के तिलक कीन्ह मनमाना ॥२३३॥

दोहा

तिलक दिये निमु राम कहँ, मिनती कीन्ह प्रकास ।
करि अनंद मुल मंगल, छिरकैवो परिमल वास ॥२०॥[2]

चौपाई

जह रही कैकइ भवन सुख सपना । तंह जाए बोले अस बयना ॥२३४॥
राम के तिलक तुम्है का नीका ।[3] दिन चारि गए होइ बहु फीका ॥२३५॥
सवति तुम्हारि है गर्व गुमानी । किछु दिन गए बोलहिं अभिमानी ॥२३६॥[4]
पुन के राज सीता भौ रानी । दिन दिन तोहरो होइहै पुनि हानी ॥२३७॥
कहे कैकई सुनु चेरिया अभागी ।[5] राम के तिलक हमें निक लागी ॥२३८॥
जहं मंगल तहं बोलसि कुफारी । कैकई बहुत दीन्ह तेहि मारी ॥२३९॥
तब रोए पेखना बहुत पसारी ।[6] नैनन्हि नीर सुरंतहि बारी ॥२४०॥
तुम रानी हम चेरिया तुम्हारी । हमरी बचन लागि तुम्हें खारी ॥२४१॥[7]
भरथ के राज हमें बहुत सोहाई । आवे तोहरो होए अधिकाई ॥२४२॥
तब कैकई मन भए गौ रोसा । कोह भवन में बैठी गोसा ॥२४३॥
अति बिकराल परी तंह तानी । आजु तिलक के करिहों हानी ॥२४४॥[8]
होत प्रात तिलक के साजा । बहुत अनंदित बाजन बाजा ॥२४५॥
पुहुप सुगंध रगरहि अति नीका ।[9] आजु राम के देवे टीका ॥२४६॥[10]
मुनि बसिस्ठ भौ सिखन्ह समेता । राजा रानी मंगल मन हेता ॥२४७॥[11]

---

१ (ख) (ग) (घ) मन = मंत ।
२. (क) परिमल वास = प्रेम हुलास ।
३ (ग) अतिरिक्त पाठ—मन्थरा वचन ।
४ (घ) बोलही = बोली ।
५ (घ) अतिरिक्त पाठ—कैकइ वचन ।
६ (क) पेखना = पखना । अतिरिक्त पाठ—मन्थरा वचन ।
७ (घ) लागि = लागु ।
८ (ख) के करिहों = के करी ।
९ (घ) रगरहिं = रगरी ।
१० (ख) (घ) के = कह ।
११ (ग), (घ) मंगल हेता । (क) मगन निज हेता । अतिरिक्त पाठ—दशरथ वचन ।

राम कहे मुनि सिष पहँ गएऊ । देखि दसा किछु कहत न भएऊ ॥२७७॥
राम कीन्ह तब मुनि के सेवा । आनद अकस सिस्टि सम देवा ॥२७८॥
रानी बिकल दुखित महतारी ।[1] केकइ देस सकल जग भारी ॥२७९॥[2]
मनि महिवरख सो गई कुमाई ।[3] भावी बिपति निकट चलि आई ॥२८०॥
बिधि परपंच परा दुख भारी । रोवहिं कौसिला बहुत दुखारी ॥२८१॥
गए राम कौसिल्या पासा । बिनय कीन्ह करि बचन प्रकासा ॥२८२॥
सीता दासी भई तुम्हारी । सुनु माता तें बचन हमारी ॥२८३॥[4]
हमके बिधि बन लिखा बनाई ।[5] राज भरथ कह दीन्ह बनाई ॥२८४॥
रही मौन मुख मात न भाखा । रही निहारि राम मुख माता ॥२८५॥

दोहा

ठाढ़ भए कर जोरि के कहें त्रिगु बचन बिचारि ।
मात मया मोहि दीजिए चले पंथ पगु धारि ॥२४॥

चौपाई

तब सीता मन बोली बिचारी । राम के संग हम सदा सुखारी ॥२८६॥
हम नाहिं रहब भवन यह पुरी । राम चरन पद पोंछब धुरी ॥२८७॥
अति बिरहन होए बोली बानी । धर्म रुप हमि चाहि भवानी ॥२८८॥
गए राम केकइ रहु जहवां । कीन्ह प्रनाम बचन बोले तहवां ॥२८९॥
ए माता मोहि आग्या दीजे । कोह कलपना कछु नहि कीजे ॥२९०॥[6]
कहें काहे फेरि रहे सकोची । कहे पर बन चाले सोची ॥२९१॥
के प्रनाम चले श्रीरामा । गए तुरत सोमित्रा धामा ॥२९२॥
कर जोरि बिनय कीन्ह भो ठाढ़ी ।[7] उर से प्रेम प्रीति अति बाढ़ी ॥२९३॥
बोल राम सीतल त्रिगु बानी । कीन्हो बोध महा बहु ग्यानी ॥२९४॥
जीवन कंचित कंचन मैं राता ।[8] बोले राम सोमित्रा माता ॥२९५॥

---

१ (क), (ग), (घ) रानी सम भइ बिकल दुखारी ।
२ (क), (ख), (ग) केकइ = केकयी ।
३ (क) (ग) भइ = भवी ।
४ (क) (ख) तें = कह ।
५ (क) हम बैरन बिधि लिखा बनाइ ।
६ (ख), (ग) नहि = जनि ।
७ (क) बिनय = दीन ।
८ (क), (ग) मैं = मह ।

दोहा

रामहिं मोह तन प्रसेवो, परे विकल सन हारि ।[1]
मौ कलपना महल में, रानी रही निहारि ॥२२॥[2]

चौपाई

सम मिलि गए रहे त्रिप जंहवां । बोली वचन प्रीति करि तहवां ॥२६३॥
रामहिं सुधि बुधि एको न सूझे । को यह करे कौन यह बूझे ॥२६४॥
सुमंत मंत्री बोले बिचारी । राजा बिनती सुनो हमारी ॥२६५॥
जन्मपवित्र तिलक के साजा । यह परिपच कस भयो मकाजा ॥२६६॥[3]
मुनि वसिष्ठ पंडित मस माला । सुफल घरी लगन रचि राखा ॥२६७॥[4]
मा राजा तुम कहो समुझाई । सो मैं मुनि से कहा बुझाई ॥२६८॥[5]
मुनि से जाए कहो समुझाई । विधि परिपच जानि नहिं जाई ॥२६९॥
राम के बन भरथ कहु राजा । सम विधि करते कीन्ह मकाजा ॥२७०॥
केकई यह परिपंच जो कीन्हा । तन से प्रान होत मोर भीन्हा ॥२७१॥
मब मो पै किछु कहत न भएऊ ।[6] मब मन राम मवसि के भएऊ ॥२७२॥
गएउ मंत्री जहं त्रिप ग्याता ।[7] बोले जाए वचन बिख्याता ॥२७३॥

दोहा

रामहिं बन यह दीजिए, राज भरथ कह दीन्ह ।
यही वचन त्रिप बोल है, भयो त्र्सा मति हीन ॥२३॥

चौपाई

मुनि वसिष्ठ तब कहब लीन्हा । कस राजा मति भए गौ हीन्हा ॥२७४॥
कहां तिलक कहां बन कहिं दीन्हा । यह परिपच कुमति कै चीन्हा ॥२७५॥
त्रिया मंभ राम महिं नेती । ऐसे राज बुरा दहु केती ॥२७६॥[8]

---

१ (ख), (ग) प्रसेवो = प्रसेव । (घ) प्रसेउ ।
२. (ग) मौ = मया ।
३ (ख) कस = रस ।
४ (ख) (ग), (घ) लगन = तिलक ।
५. (ख) सो मैं मुनि से = सो मुनि से मैं । (ग) अतिरिक्त पाठ—राजा दशरथ वचन ।
६ (घ) मब मोरे किछु कहि नाहि भेऊ ।
७ (ख) (ग) (घ) त्रिप = मुनि ।
८ (ग), (ख) बुरे = बुरे ।

राम के लै मुनि निज पंह गएऊ । देखि दसा किछु कहत न भएऊ ॥२७७॥
राम कीन्ह तब मुनि के भेसा । जानत सकल सिस्टि सभ देसा ॥२७८॥
रानी बिकल दुखित महतारी ।[1] केकइ दत सकल जग गारी ॥२७९॥[2]
मनि महिधरत सो गई मुरझाई ।[3] भावी बिपति निकट चलि धाई ॥२८०॥
बिधि परपंच परा दुख भारी । रोवहिं कौसिला बहुत दुखारी ॥२८१॥
गए राम कौसिल्या पासा । बिनय कीन्ह करि बचन प्रकासा ॥२८२॥
सीता दासी अहै तुम्हारी । सुनु माता तै बचन हमारी ॥२८३॥[4]
हमके बिधि बन लिखा बनाई ।[5] राज भरथ कहं दीन्ह चपाई ॥२८४॥
रही मौन मुख भाउ न बाता । रही निहारि राम मुख माता ॥२८५॥

दोहा

ठाढ़ भए कर जोरि के, कहे मिठु बचन बिचारि ।
मात आग्या मोहि दीजिए, चले पंथ पगु धारि ॥२४॥

चौपाई

तब सीता मन बोली बिचारी । राम के संग हम सदा सुखारी ॥२८६॥
हम नाहिं रहब भवन यह पुरी । राम चरन पर पौंढ़ब धुरी ॥२८७॥
अति बिरहन होए बोली बानी । धर्म रूप प्रभि आदि भवानी ॥२८८॥
गए राम केकइ रह जहंवा । कीन्ह प्रनाम बचन बोले तहंवा ॥२८९॥
ए माता मोहि आग्या दीजे । कोइ कलपना कछु नहिं कीजे ॥२९०॥[6]
कहे चाहे फेरि रहे सकोची । चल पर मन माने सोची ॥२९१॥
के प्रनाम चले सीरामा । गए तुरत सौमित्रा धामा ॥२९२॥
कर जोरि बिनय कीन्ह जो ठाढ़ी ।[7] उर ते प्रेम प्रीति अति बाढ़ी ॥२९३॥
बोले राम सीतल मिठु बानी । कीन्हो बोध महा ब्रह्म ग्यानी ॥२९४॥
जीवन कंपित अंचल में राखा ।[8] बोलें राम सौमित्रा माता ॥२९५॥

---

१ (ख) (ग) (घ) रानी सब मह बिकल दुखारी ।
२ (ख), (ग), (घ) केकइ = केकइहीं ।
३ (क) (ग) गई = गयी ।
४ (ग), (घ) तै = मह ।
५ (घ) हम केवल बिधि लिखा बनाइ ।
६ (क), (ग) नहिं = जनि ।
७ (ख) बिनय = दीन ।
८ (ख) (ग) मैं = मह ।

करि प्रनाम प्रीति[1] प्रति भएऊ । मानस-ग्यान सपूरन रहेऊ ॥२९६॥

दोहा

पुत्र हेतु तुलसी फिरै, लखन राम पदकंज ।
मोह विटप धरि भजेयो, अगम ग्यान गति पुंज ॥२५॥

छंद

अति मोह कोह महु[2] सोक सागर तर्क तरनि न पावहीं ।
त्रिगुन धार इमि तेज परबल वार पार न पावहीं ॥७॥[3]
अवध बूड़े भरमि भवन[4] में उलटि सोर लगावहीं ।
माया मोह मह विविध बन भौ अनंत मन जल छावहीं ॥८॥

सोरठा

रोदन करहिं पुकारि, अवध विकल भौ राम बिनु ।
एक एक पर धारि, कवल[5] सुखा मानो जल बिनु ॥४॥

चौपाई

राम लखन सिया चली सिधारी ।[6] काटेगो मोह फंद सम भारी ॥२९७॥
उलटि दरहिं तौ नगर मनाया । आगे पगु दीन्हा रघुनाथा ॥२९८॥
कछु दुर लोग मगर कर गएऊ । करी प्रनाम विदा तब भएऊ ॥२९९॥
मुनि वसिष्ठ के आसम ठाढ़े । करि प्रनाम प्रीति अति बाढ़े ॥३००॥
गुर पद पंकज हिदय लगाई । करि प्रनाम चले रघुराई ॥३०१॥
आसिर्वाद सुनि बहुते दीन्हा । राम लखन माथ कै लीन्हा ॥३०२॥
चल तुरंत विलंभ ना लाई । राम लखन सीता चलि जाई ॥३०३॥
सीता रैनि दिवस चलि धाई ।[7] पुहुमी सेज्या कीन्ह बनाई ॥३०४॥
कंद मूल सम[8] कीन्ह अहारा । रजनी चलि भौ पथ सुधारा ॥३०५॥
छोड़ा रंथ महल सम साजा । विनु पनहीं को पांव विराजा ॥३०६॥

---

१ (ख) प्रीति = प्रेम ।
२ (ख), (ग) (घ) महु = सब ।
३ (ख) (ग) (घ) त्रिगुन धार तेज परबल वार पार न पावहीं ।
४ (ग) भवन = भव ।
५ (ख) कंवल = कमल ।
६ (ख) (ग) (घ) राम लखन सिया चले सँभारी ।
७ (ख), (ग) (घ) सीता देवस रैनि चलि जाइ ।
८ (ख) (ग), (घ) सम = सब ।

होस प्रात मुख मंजन कीन्हा । करि असनान तिलक सिर दीन्हा ॥३०७॥[1]
सिया राम पद पंकज लीन्हा । चले तुरंत पुहुमी पगु दीन्हा ॥३०८॥

दोहा

आगे राम सिया बीच में, पीछे लछुमन कुमार ।
तीनों प्रान जग विदित हैं, जानत सब संसार ॥२६॥[2]

चौपाई

राम लखन सिया बन के गएऊ । पीछे कथा अवधपुर भएऊ ॥३०९॥
करि विस्तार सब कथा सुनाई । सचन कीन्ह तबही चलि आई ॥३१०॥[3]
तुरें रथ लेओ चलि गएऊ । केहु काहु के मरम ना पएऊ ॥३११॥[4]
करहिं कलपना नर औ नारी । सिया पुहुमी कैसे पगु धारी ॥३१२॥
राम लखन सिया बन भौ जबहीं । दसरथ प्रान त्यागेओ तबही ॥३१३॥
बेगि दूत भरथ पंह गएऊ ।[5] अवध कथा तुरत सुनएऊ ॥३१४॥[6]
चले दूत सुनु भरथ कुमारा । चलहु तुरंत अवध पगु धारा ॥३१५॥
दूत के वदन मलिन मलाना । भरथ सोच हिरदय मंह आना ॥३१६॥[7]
आई अवध निकट नियराई । देखा विकल लोग सब आई ॥३१७॥[8]
सुनि बिरतंतु तंह पहुच तुरंता । जंह बैठी कौसिला माता ॥३१८॥
देखा विकल विपति सब रानी । महा विखाद कलपना सानी ॥३१९॥
गुरु के चरन कीन्ह परनामा । सूना भवन बिना सीरामा ॥३२०॥
तुरंत गए केकइ के पासा । बोले जाए बचन परकासा ॥३२१॥[9]
तुम जीए का किमि जग कामा ।[10] बनहिं पठाएहु सो सीरामा ॥३२२॥[11]

---

१ (क), (ख), (ग) होत प्रात मुख मंजन भएऊ । करि असनान तिलक सिर देएऊ ॥
२. (ख) (ग) तीनो = तीनु ।
३ (ख) (ग) आई = आई ।
४ (ख) केहु काहु मरम न पएऊ । (ग) केहु काहू कर मरम न पएऊ ।
५ (ख) (ग) बेगि = बेगे ।
६ (ख) अवध के कथा तुरंत सुनएऊ ।
७ (ख) (ग), (घ) मंह = बीच ।
८ (ख) देखा = देखी ।
९. (ख) (ग) परकासा = परगासा ।
१० (ख) तुम जीए को का जग कामा । (ग) तुम्ह जीए के कवा जग कामा । (घ) तुम जीए का का जग कामा ।
११ (घ) बनहिं पठाओ सो सियारामा ।

करि प्रनाम प्रीति[1] अति भएऊ । मानस-ग्यान संपूरन रहेऊ ॥२९६॥

दोहा

पुन हेतु तुलसी फिरै, लखन राम पदकंज ।
मोह बिटप धरि भंजेवो, अगम ग्यान गति पुंज ॥२५॥

छंद

अति मोह कोह यह[2] सोक सागर तर्क तरनि न पावहीं ।
त्रिगुन धार इमि तेज परबस वार पार न पावहीं ॥७॥[3]
अघम बूडे भरमि भवन[4] में उलटि छोर लगावहीं ।
माया मोह यह बिबिध बन भौ अनत मन जल छावहीं ॥८॥

सोरठा

रोदन करहिं पुकारि, अधम बिकल भौ राम बिनु ।
एक एक पर धारि, कमल[5] सुखा मातो जल बिनु ॥४॥

चौपाई

राम लखन सिया चली बिचारी ।[6] काटेवो मोह फंद सम भारी ॥२९७॥
उलटि देखहिं तो नगर अनाथा । आगे पगु दीन्हा रघुनाथा ॥२९८॥
किछु दुर लोग नगर कर गएऊ । करी प्रनाम बिदा तब भएऊ ॥२९९॥
मुनि बसिष्ठ के आस्रम ठाढ़े । करि प्रनाम प्रीति अति बाढ़े ॥३००॥
गुर पद पंकज हिृदय लगाई । करि प्रनाम चले रघुराइ ॥३०१॥
आसिर्बाद मुनि बहुते दीन्हा । राम लखन माथ कै लीन्हा ॥३०२॥
चले तुरंत बिलंब ना लाई । राम लखन सीता चलि जाई ॥३०३॥
सीता रैनि दिवस चलि आई ।[7] पुहुमी सेज्या कीन्ह बनाई ॥३०४॥
कंद मूल सम[8] कीन्ह अहारा । रजनी बसि भो पथ सुधारा ॥३०५॥
घोड़ा रथ बहुत सम साजा । बिनु पनहीं को पांव बिराजा ॥३०६॥

---

१ (छ) प्रीति = प्रेम ।
२ (ब), (ग) (घ) यह = सब ।
३ (ब) (ग) (घ) त्रिगुन धार तेज परबस वार पार न पावहीं ।
४ (ग) भवन = भव ।
५ (घ) कंवल = कमल ।
६ (ब) (ग) (घ) राम लखन सिया चले दैभारी ।
७ (ब), (ग) (घ) सीता दिवस रैनि चलि आइ ।
८ (ब) (ग), (घ) सम = फल ।

भारद्वाज मुनि मंदिर जहवां । राम लखन सिय पहुंचे तहवां ॥३३७॥
करि प्रनाम मुनि आसिख दीन्हा । आदर भाँति बहुत बिधि कीन्हा ॥३३८॥[1]
आपन कुसल कह्यो श्रीरामा । पछो मा कुसल अवधपुर धामा ॥३३९॥
कह्यो न्रिप कुसल कोसिला रानी । गदगद बोले बचन म्रिदु बानी ॥३४०॥[2]
पिता बचन हम बन पग लीन्हा ।[3] बिधि कर लिखा सोइ फल लीन्हा ॥३४१॥
दसरथ प्रान त्यागन कीन्हा । अवध अघटि जैस जल बिनु मीना ॥३४२॥
सोचत रिखि मुनि मंत्र बिचारी ।[4] राम लखन सिया जनक कुमारी ॥३४३॥
सीतहिं रतन चंद्र चिमकारी । सकल समाज चंह मुनि की नारी ॥३४४॥
भनि बिचित्र सोभा अधिकारी । धन्य बहु पूर्ब आकरि तुम नारी ॥३४५॥
अति कोमल पुहुमी पगु धारी ।[5] जो बिधि लिखा सो कछु नहिं भारी ॥३४६॥
रचेवो बिरंचि चित्र बहु भांती । सोइ सोहागिनि पिया रंगराती ॥३४७॥
कंद मूल सम मधा मंगाई । कुसुम प्रसाद राम सिया पाई ॥३४८॥
बिक्ति बिक्ति मुनि कथा बिचारी । भक्ति ग्यान सम दूरी भारी ॥३४९॥

दोहा

उठि प्रात सुरसरि तीर मंजन कियो बनाए ।
मुनि पद पंकज गहि कै, आसिख बचन सोहाए ॥२१॥

चौपाई

राम लखन सीता संग सोई । माया रूप जगत सब मोहई ॥३५०॥
जीव सीव बिच सक्ति बिराजै । हीरा मध्य कनक जनु छाजै ॥३५१॥
उभय बीच एक सलिता अहई ।[6] माया रूप छबि इमि कर कहई ॥३५२॥[7]
संसय सागर जात भोराई । जीव सीव एक ठौर देखाई ॥३५३॥
जग जननी जाने सम कोई । सो बसि करै का करि होई ॥३५४॥
सोइ जनक गिह प्रगटे भाई ।[8] भेद रूप कोइ अन्त न पाई ॥३५५॥

---

१ (क), (ग) आदर बहुत भाँति बिधि कीन्हा ।
२ (क), (ग) (घ) गदगद बचन बोले म्रिदु बानी ।
३ (क), (ग) (घ) पिता बचन हम बन पगु दीन्हा ।
४ (ख), (ग) (घ) सोचत रिखि मुनि बहुत बिचारी ।
५ (क), (ग), (घ) कोमल = कोमलि ।
६ (क), (ग) बीच = मधि ।
७ (ख), (घ) माया रूप सो इमि करि कहई ।
८ (ख) (ग), (घ) सोइ जनक गृहि जनमी भाई ।

बैठि रही सब राज सँभारी । तुम सम सहिष्णा जग की नारी ॥३२३॥[1]
मंथरहिं बहुत त्रास दखाई ।[2] लघु बचन मुनि रहा दुराई ॥३२४॥

दोहा

कीन्ह दाह कर्म सब, मुनि पंडित सब लोग ।
बहुरि भवन में बठिके, विरह विचार वियोग ॥२७॥[3]

चौपाई

कीन्हा स्राध दीन नव पूजा । विप्र खिपाए कुटुम सब दूजा ॥३२५॥
वसिस्ठ रिखि मुनि कीन्ह विचारा ।[4] मंत्री सुमंत सकल परिवारा ॥३२६॥
भरथ के दिजै तिलक कर साजा ।[5] करि आनंद अवधपुर राजा ॥३२७॥[6]
जात नग्र दुखित नहिं होई । प्रजा संजन सुखद सब कोई ॥३२८॥[7]
भरथ कहे सुनो मुनि ग्याता ।[8] हमके तिलक ना लिखेबो विधाता ॥३२९॥
यह अपराध परा मोहि छाया । तात संग ना लीन्ह रघुनाथा ॥३३०॥
हमहिं चाहहिं राजा सुख धामा । बन के पठाएवो श्रीरामा ॥३३१॥[9]
यह कुजोग राज ना भावे । विधि कर लिखा सोइ फल पावे ॥३३२॥
हरषहिं लोग केकइ सन साजा । न्रिप के मारि तिलक के साजा ॥३३३॥
राम बिपति सुनि ब्याकुल होवे । जेवों मनि काढ़ि भुजंगम खोवे ॥३३४॥
निकसि प्रान बरु तन के त्यागा ।[10] राज काज यह सब दुख भागा ॥३३५॥

दोहा

मैं किंकर निजु दास हो, त्यागि सकल सुख भोग ।
कहे भरथ मनसा बाचा भए सब राज न जोग ॥२८॥

चौपाई

चाले कथा प्रयागपुर गएऊ । सर्व तीर्थ पद पंकज गहेऊ ॥३३६॥

---

१ (क) (ख) (ग) सम = समान ।
२. (क), (ख) (ग) त्रास = त्रास को ।
३ (क) बैठिके = आइके ।
४ (क) (ख) वसिष्ठ रिषि मुनि मंत्र विचारा । (ग) वसिष्ठ मुनि रिखि मंत्र विचारा ।
५ (ख), (क), (ग) दीजै = कीजै । साजा = साज । राजा = राज ।
६ (क) करि = करहो । (ग) करिही ।
७ (ग) सुखद = सुखित ।
८. (ख) भरथ कहे सुनहु मुनि ग्याता ।
९ (ग) बनहीं पठएहु को सिरि रामा ।
१० (क) निकसा प्रान बरु तन के त्यागी । (ग) निकसी [illegible]

राम लखन बन बिपति बियोगा । बन सोक आए कीन्ह तप जोगा ॥३७२॥
सकल समाज मिलि चली तुरंता । पथ बिसम किमि कारन कंता ॥३७३॥
सीताराम दरस बिनु देखें । भनन्हि नींद पलक नाहि पेखें ॥३७४॥
कहु जनक सुनु प्रिया सुभागी । प्रात उठी चलब पंथ लागी ॥३७५॥
सीता रैनि बिकल अति भएऊ ।[1] रथ बहुल सब साजत भएऊ ॥३७६॥
सन समेत सब करु सोगा ।[2] चले हृदय लेजि बिपति बियोगा ॥३७७॥
एक-एक पग रखा रखवारा । नारी पुरुष मिलि पंथ सुधारा ॥३७८॥
आई अवधि निकट नियराई । कटक जहां तहां बैठी जाई ॥३७९॥
भरथ सत्रुहन सैन समेता । देखा जनक प्रेम निज हेता ॥३८०॥
अंक में भरि भरि मिले बनाई । गदगद सकल सरीर देखाई ॥३८१॥

दोहा

सैना सब करुना अति, प्रेम न रहा छपाए ।[3]
एक एक वचन निहारहिं, मन रहा चल छाए ॥३१॥

चौपाई

रिषि तब मंत्र कहा समुझाई । चली सबै जहां रघुराई ॥३८२॥[4]
भावहिं भवन तो फेरि लिवाई । नहि तो दरस महा फल पाई ॥३८३॥
उठि कै भरथ भवन में गएऊ ।[5] कौसिल्या से अर्थ सुनएऊ ॥३८४॥
औ रानी सब सखिन्ह समेता । सबसे अर्थ कहत निजु हेता ॥३८५॥
सुनत प्रेम निजु हिरदय जागा । बंधु बिरह जनु देखन लागा ॥३८६॥[6]
सब रानी सुनि भई अनंदा । मानो उगेउ सरद जनु चंदा ॥३८७॥
तेहि दिन नैन नींद नहिं आवे । राम भरत निजु हिरदय भावे ॥३८८॥
कब होए प्रात चलब पथ लागी । इमि करि मन नींद सब त्यागी ॥३८९॥
उदित दिवाकर जबही भएऊ । रथ बहुल सब साजत भएऊ ॥३९०॥
सब लोग सुनि भया सनाथा । दरसन जाए देखब रघुनाथा ॥३९१॥
चले सबन्हि मिलि पंथ सुधारी । रामन्हि संग सहेली भारी ॥३९२॥

---

१ (ख), (ग) सीता बिकल रहली अति भएऊ ।
२ (ख) (ग), (घ) सब = सकल ।
३ (ख) सैना = सकल । (ग) सैन ।
४ (ख) (ग) (घ) चलेउ सभी जहवा रघुराई ।
५ (ख) में = मह ।
६ (ख), (ग), (घ) बंधु बिहुन देखन जनु लागा ।

अति कोमल सुंदर छवि छाई ।[1] चली पुहुमि पगु रेप न लाई ॥३५६॥
ताकर कवि किमि करहु बखाना । द्रिस्टि सिस्टि माया परधाना ॥३५७॥
बिटप आए निकट निमगाया । जंह तंह मुनि मदिल छवि छाया ॥३५८॥[2]
देखि दरस मुनि हरखित भएऊ । कीन्ह प्रनाम मुनि आसिख दिएऊ ॥३५९॥
बोले मुनि सुनु राजकुमारा । किमि कारन कानन पगु धारा ॥३६०॥[3]
पिता बचन बन लिखेवो बिधाता । कहे राम सुनो मुनि ग्याता ॥३६१॥
सिद्धि सिद्धि सब कथा सुनाई । जो किछु भयउ बिना प्रभुताई ॥३६२॥
कहो मुनि कहं हम आस्रम कीजै ।[4] बचन तोहार ताहां पै दीजै ॥३६३॥

कुंभज बचन

कुंभज रिखि मुनि बोले बिचारी ।[5] जल थल सकल है द्रिस्टि तुम्हारी ॥३६४॥[6]
कहां तुम नाहिं तहां मैं रहेऊ ।[7] हिरदयकमल मधि बीच रहेऊ ॥३६५॥
राम बिचारि प्रेम रस राता । मुनि है बिमल सदा गुन ग्याता ॥३६६॥[8]
कोल्ह किरात भील सब आए । पत्रकुटी तंह बहुबिधि छाए ॥३६७॥
कंद मूल कोटि कीन्ह मेहमानी । कीन्ह प्रसाद सभ तरह बखानी ॥३६८॥[9]
मुनि सन कथा कहहिं बहु भांती । इमि करि बितेउ दिवस औ राती ॥३६९॥[10]

दोहा

करहिं तपस्या बिटप में, महा कठिन कपलस ।
पुहुमी पत्र बिछावहीं, सीताराम नरेस ॥३०॥

चौपाई

पीछे कथा जनकपुर गएऊ । सोक मोह दुख दारुन भएऊ ॥३७०॥
गए जनक जंह भवन निवासा । रानिन्ह कियो बचन प्रकासा ॥३७१॥

---

१ (ख), (ग), (घ) कोमल = कोमलि ।
२. (ख), (घ) जहां महा मुनि मंदिल छाया । (ग) जहां महा मुनि मंदिल छाया ।
३ (ख) कानन = काननन । (घ) कानह ह ।
४ (ग) कहो मुनि कहां आस्रम कीजे ।
५. (ख), (ग) मुनि = मुनि । (घ) तब ।
६ (ख), (ग), (घ) द्रिस्टि = सृस्टि ।
७ (ख), (घ), कहां तुम नाहि जहां मैं रहेऊ । (ग) कहां नाहि जहां मैं रहेऊ ।
८ (ख) मुनि बिमल महा गुन ग्याता । (ग) मुनि है बिमल महा गुन ग्याता । (घ) रिखि है बिमल महा गुन ग्याता ।
९ (ख), (ग), (घ) तरह = तहु ।
१० (ख) बितेउ = बीता । दिवस = देवस ।

किन्हो विलाप धम गदगद होई । बहुत विलाप करि सिये सोई ॥४१४॥
कौसिल्ला कैकई सोमित्रा रोई । बहुत बिलाप कलपना होई ॥४१५॥[1]
सीयहिं बोध विविध समुझाई । चित होए ग्यान राम पद पाई ॥४१६॥
विधि कर लिखा मेटि किमि जाई ।[2] के तेहि मेटि करे अधिकाई ॥४१७॥
कीन्हो बिवेक ग्यान मति नीका । राम चरन पदपंकज टीका ॥४१८॥
भई तुरंत मातु जंह पीता । मिले हिरदय लए रोदन कीता ॥४१९॥[3]
हमहिं बिरंचि बन लिखा बनाई । सेवन बनखंड कंद मूल खाई ॥४२०॥
सीता सती सदा सग्यानी । बोली प्रेम सुधा रस बानी ॥४२१॥
हमके दुख सुख किछु नाहिं माता । राम चरन पद पंकज राता ॥४२२॥
प्रेम प्रीति फूल लिखा बनाई । ताके धूप कहा अधिकाई ॥४२३॥

दोहा

कहा धूप बांकी बपुरी, लिखा प्रेम का फूल ।
ताहि कराल टाकी दियो लिखेउ बिरंचि बेसूल ॥३३॥[4]

चौपाई

राम दरस सम निति निति करई । चरन कमल पद पंकज गहई ॥४२४॥
बिनय जो कीन्ह दोनों कर जोरी ।[5] चलहु न बहुरि बचन सुनु मोरी ॥४२५॥
धाएहु कानन सम फल नीका । तुम हो राज मंदिल मनि टीका ॥४२६॥
मातु पिता गुर अम्मा पाले । सदा सुखी दुख कबहिं न साले ॥४२७॥
पिता बचन मोहि होए न भाता । बर्ष दुवादस यह प्रन ठाना ॥४२८॥
किछु दिन बीते बिदा तब कीन्हा । राम जोग सम के करि दीन्हा ॥४२९॥[6]
जनक बोले बहुत हितकारी । तुमके सौंपो राजकुमारी ॥४३०॥[7]
राम प्रान मोर सिया दुलारी । विधि परपंच फंद यह डारी ॥४३१॥
मोह छोह माया मद भारी । ग्यान बिना नर सदा दुखारी ॥४३२॥
बिना बिवेक भ्रम जग साजा । कहैं राम सुनो रिखि राजा ॥४३३॥

---

१ (ख) बिलाप = बिलप ।
२. (ख), (घ) बिधिकर लिखा मेटि नाहि जाई ।
३ (ख) मिली हृदय रोदन करि कबिता । (ग) मिली हृदय रोदन करि कीता ।
४ (ख) (घ) लिखेउ = लिखा ।
५. (ख), (ग) (घ) जो कीन्ह = कीन्ह ।
६ (ख) कीन्हा = दीन्हा ।
७. (ख), (ग) (घ) [illegible] देह सौंपेउ राजकुमारी ।

गए प्रयाग जह तिर्थ विराजे । गंगा जमुना सरसुति छाजे ॥३९३॥
सकल समाज मुनि बठे धामा । मुनि से भेंट कीन्ह परनामा ॥३९४॥
मुनि सम कथा कहा बिस्रामा । रजनी एक रहे स्रीरामा ॥३९५॥
करि प्रदच्छिन जो चले सुरंता । सुरसरि तीर जहां एक संता ॥३९६॥
मंजन करहि प्रेम गुर ध्याना ।[१] पाठ पुरान भक्ति भगवाना ॥३९७॥
पाक बनाए कीन्ह एक मना । करि प्रसाद जो चले सुरंता ॥३९८॥
निसु बासर में पहुँचा जाई । निकट बिकट बन जाए सियराई ॥३९९॥
कोल्ह किरात भील सब भाजे । धिप मावत कोई दल साजे ॥४००॥
म्रिग पछी भागे सब भोग । टूटत फूटत बन भएगी सोरा ॥४०१॥
सुना लखन भरथ चलि आए । लखन कोपि कर धनुष चड़ाए ॥४०२॥
हन से समर करब हम आजू । किमि कारन आवहि दल साजू ॥४०३॥
राम कहा लखन तुम ग्याता । भरथ न होहि मोह भ्रम राता ॥४०४॥
भरथ न होहि गव उर गामी । गुर पद पंकज भक्ति निजु स्वामी ॥४०५॥
महि जग माह कौन अस जनमा । राजकाम मद जेहि नाहि भरमा ॥४०६॥
राम कहा मोरी जग कोऊ । भरथ न होहि राजमद सोऊ ॥४०७॥
भरथ परे गहि राम के चरना । उपजा प्रेम भक्ति निजु बरना ॥४०८॥
लखन क्रोध छेमा भए गएऊ । कर से धनुष जमी पर धरेऊ ॥४०९॥[२]
लखन भरथ मिलै बहु भांती । उपजेउ प्रेम मैन बहु राती ॥४१०॥[३]
गुरपद पंकज गहेउ सुभागा । जेयों जल कमल भंवर रस पागा ॥४११॥
जनक मनुगुन मंत्री साथा ।[४] सब से प्रेम कहेउ रघुनाथा ॥४१२॥[५]

दोहा

राम चरन पद पंकज, गहि लीन्हो सिर नाए ।
कटन जहां तहां बैठि के भोजन पाक बनाए ॥३२॥[६]

चौपाइ

सीता गई जहां रनिवासा । सासु चरन पद पंकज पासा ॥४१३॥

---

१ (ख) मंजन करहि परम गुर ग्याना । (ग) मंजन करे परम गुर ग्याना । (घ) मजन करी प्रम गुर ध्याना ।
२ (ख) (ग) (घ) करते धनुख छिती पर धरेऊ ।
३ (ख) (ग) उपजा प्रेम नैम बहु पांती । (घ) उपजे प्रेम नैम मंह पांती ।
४ (ख) (ग) जनक मनु हम मंत्री साथा ।
५ (ख), (ग) (घ) सबसे प्रेम कीन्ह रघुनाथा ।
६ (ख), (ग) (घ) भोजन भाव बनाए ।

धरनी देखि जस पैठे कैसे । महामूढ़ जल कूप परु फँसे ॥४५०॥[1]
केहरि प्रतिमा देखेउ भारी । झपटि परा तन प्रान बिसारी ॥४५१॥
काचु महल में स्वान जो पैठा । भूँकि मवन में प्रतिमा ऐंठा ॥४५२॥
फिटिक सिला गज दसनन्हि मरई । टूटिगो मुह उलटि जिमि परई ॥४५३॥
ऐसे वेद भरम भव रासा । सतगुर ग्यान समुझि निजु भासा ॥४५४॥
गुर पद पंकज मनन मनीपा । नाम बिमल निधि प्रेम सनीपा ॥४५५॥
नाम है नौका चाढ़ि मग देखे ।[2] सतगुर ग्यान प्रेम रस पेखे ॥४५६॥

दोहा

कहँ दरिया निजु ग्यान है बचन सत गुर प्रबीन ।[3]
देखे मर्म बिमल पद बिछि बिछि कर भीन ॥३५॥[4]

सेवक बचन

तुम ग्यानी हो सतगुर दाता । अगम निगम कहेउ निजु बाता ॥४५७॥
जो किछु सुनेउ सबै निक लागा । मेटिगो सम मर्म भौ भागा ॥४५८॥[5]
सुर नर मुनि सम मर्म भुलाना । तुम किमि कर यह पद पहचाना ॥४५९॥

दरिया साहब बचन

सत कहौं लिखि कागज कोरे । सत पुर्स आए सिह मोरे ॥४६०॥
जीवन मुक्ति जिव जग मूला । दसन देखि मिटा जम सूला ॥४६१॥
निजु निजु कथा कहेउ सत बानी । सुफिल कीन्हा सो निमल ग्यानी ॥४६२॥
माया ग्यान औ भक्ति बिरागा । दया कीन्ह प्रेम निजु पागा ॥४६३॥
आदि भवानी कन्या भई । सोई सीता सती यह कहई ॥४६४॥
माया चरित्र चिन्है नाहि कोई । पंडित पढ़ि कै चले बिगोई ॥४६५॥
जंत्र मंत्र मोह मन लागी । ब्रह्मा बिस्नु हारे त्रिपुरारी ॥४६६॥
जाके भेद निरंजन कहई । बार बार अंजन में रहई ॥४६७॥[6]
सोई राम है किस्न कन्हाई । दस औतार धरि जग में आई ॥४६८॥
बूझहु ग्यानी करहु बिबेका । यह तिगुन माया कर रेखा ॥४६९॥

---

१ (ख) (ग) (घ) महा मूढ़ मन कूप पर जैसे ।
२ (ख) (ग) (घ) देखे = देखो । पेखे = पेखो
३ (ख) प्रबीन = प्रमीन ।
४ (ख) (ग), (घ) तजे मर्म बिमल पद पावै । (ख), (घ) बिछिछि बिछित कर भीन ।
५. (घ) छुटिगो सम भरम भव भागा ।
६ (घ) में = मह ।

कबहु न भरत अवधपुर राजू । आनंद मंगल सदा समाजू ॥४३४॥
हम नहिं चाहहिं राज सुख धामा । निस दिन सुमिरों सो सीरामा ॥४३५॥
राम चरन पद पकज टीका । राज काज मोहि लागत फीका ॥४३६॥
कौसिला केकई सोमित्रा रानी । बोले प्रेम बचन म्रिदु बानी ॥४३७॥[1]
कीन्ह प्रनाम मातु सिर नाई । सब से बिनय कीन्ह रघुराई ॥४३८॥
सासु के निकट कीन्ह परनामा । बिरह बिसाद बेखा सीरामा ॥४३९॥
सबसे बोले बिमल म्रिदु बानी ।[2] मोह को दूरि ग्यान मत ठानी ॥४४०॥
गुर से बिनय कीन्ह कर जोरी । सदा बसात भलपमति मोरी ॥४४१॥

दोहा

गुरपद पकज प्रेम रस, गहे चरन सिर नाइ ।
बिदा कीन्ह बहि भांति से, राम लखन समुझाइ ॥३४॥

छंद

चले सो सकल समाज सबन्हि मिलि उलटि उलटि के हेरहीं ।
मति भयउ ब्याकुल बिरह बस में सुधि बुधि सब बिसरावहीं ॥६॥
राम चरन पद पंकज मलकत लोचन ललचि लगावहीं ।
रहि रहि प्रान कठिन तन ब्याकुल फनि मनि जैसो बिसरावहीं ॥१०॥

सोरठा

चले सो पंथ बिचारि, घ्रिग जीवन जग राम बिनु ।
फिर फिर रहे निहारि, कब मिलिहैं मोहि प्रानपति ॥७॥

चौपाई

चले सो बेगि बिसम मन लाई । किछु दिन में निकट नियराई ॥४४२॥[3]
अपने बिह बिह टिके लोगा । भरथ आए कीन्हे तप जोगा ॥४४३॥
पवन रिषी मिह पहुचु तुरंता । निसि दिन भजन करहिं भगवंता ॥४४४॥
इमि करि पाछे बहुत भुलाना । जिन्हि नाहि सतगुर पद पहचाना ॥४४५॥
माया ब्रह्म चिन्हे नहिं कोई । बिना ध्यान माया बसि होई ॥४४६॥
तिगुन माया फंद अनंता । थके सो ब्रह्मा बेद अनंता ॥४४७॥
सिंधु अगम जल मझारि न पावे । बिनु तरनी कोइ पार न पावे ॥४४८॥
ब्रह्म खोजि मुनि भरम भुलाना । मिले ना सतगुर निर्मल ग्याना ॥४४९॥

---

१ (ग), (घ) बोले प्रेम मधुर रस बानी ।
२. (ख) सबसे बोले बचन निज बानी । (ग) सबसे बोलो बिमल रस बानी । (घ) सबसे बोले बिमल म्रिदु बानी ।
३ (ख), (ग) (घ) मन = ना । लाई = लाघा । नियराई = नियराघा ।

दोहा

सत उपदेस यह कहतहिं, बूझहु विवेक विचारि ।[1]
अमरलोक के जाई हो, सकल भ्रम हम जारि ॥१७॥

चौपाई

अति ओंधों गर्व करे नर साँई ।[2] निस्चय गर्व नाश मंह होई ॥४८८॥
संत ग्राहु है कर्म बिनारा । कस्ट नस्ट होए यमके द्वारा ॥४८९॥
आगे कथा दंडक बन गएऊ । राम लखन सीता जंह रहेऊ ॥४९०॥
तपसी एक तपस्या करई ।[3] बोले लखन ताहि के मरई ॥४९१॥
सूपनखा के पुत्र पियारा । प्रान छूटा पृहुमी तन डारा ॥४९२॥
आए लखन जहाँ रघुराई । तपसी मारि बहुत पछताई ॥४९३॥
यह निसिचर लंका मंह रहई । यह मारे कछु पाप ना लहई ॥४९४॥
मारेहु दैत मुक्त परतापू । कबहिं ना व्यापु यहां कर तापू ॥४९५॥[4]
निगम नेति सदा गोहरावे । दैत्यन्ह मारि महाफल पावे ॥४९६॥
रावन बहिन अहै सूपनखा । करि सिंगार बहु छलबल पेखा ॥४९७॥
पंचवट आपन चहुं दिस हेरै । पर्णकुटी मंह फिरि फिरि घेरे ॥४९८॥
तुह तपसी निशु तप जो कीन्हा ।[5] तोहर चरन पद पंकज लीन्हा ॥४९९॥[6]
आपु कर जानि रहव तुम पासा ।[7] तुम दरसन है प्रेम सुबासा ॥५००॥
राम चीन्हा निसिचर नारी । छल बल वचन जो बोले बिचारी ॥५०१॥
पकरि नाक कान धरि काटा । लंकापुर के पकरिसि बाटा ॥५०२॥
रावन आगे कहा पुकारी ।[8] दुइ तपसी है एकै नारी ॥५०३॥
पूछत वचन जो बोले निराटा । कही नाक कान मोर काटा ॥५०४॥
खर दूषन सुनि भागु गोहारी । मारि कटक पृहुमी तन डारी ॥५०५॥[9]

---

१ (क) (ख), (ग) कहतहिं = कहतहो । बूझहु = बूझे ।
२ (क) (ख) (ग) ओंधों = था ।
३ (क) (ख) (ग) तपस्या = तपेस्या ।
४ (क), (ख), (ग) कबहिं ना व्यापि दिया कर पापू ।
५ (क) तुह = तुम । (क) (ख) (ग) निशु = हो ।
६ (क) तोहर = तोहरे । (ग) तुम्ह ।
७ (क) (ख) (ग) तुम = तुह ।
८ (क), (ख) (ग) कहा = पिय ।
९ (क) डारी = डारा ।

दोहा

जिरा जीवहि जगत में, प्रबल खप निदान ।
आदि पुरुष नहि अमर है, देखहु निर्मल ग्यान ॥३६॥[1]

चौपाई

कवि आखर करि बहुत बखाना । पढ़े जक्त मह विदित प्रधाना ॥४७०॥
पंडित पढ़ि पढ़ि बद पुराना । मिले ना छिन मधु छार्धी बखाना ॥४७१॥
हरिहर किति करि पंथ चलाई ।[2] परे भवन मन भम न जाई ॥४७२॥[3]
चीन्ह न ग्यान माया कर रुपा । फिरे फिरग सकल सम भूपा ॥४७३॥
माया अनन्त है विसम विकारा । पर परग सकल तन जारा ॥४७४॥
घाट कवि सम कहि नहि बरनी ।[4] मिल न भव जल सत की तरनी ॥४७५॥
सत बचन प्रेम निगु राना । सुनहु मुनि पंडित जन ग्याता ॥४७६॥
सुर नर माने नाम विहूना । पलटि मुए जथा जल बिनु मीना ॥४७७॥
पाखंड कर्म ग्यान नहि आना । तिर्य वर्त में आए लपटाना ॥४७८॥
मन बांधे अंह तह से जाइ । कष्ट कल्पना बहु दुख पाई ॥४७९॥
निगु न आदि निरंजन ध्यावे ।[5] बहुरि बहुरि भव सागर आवे ॥४८०॥
तप साधे का क्या फल पावे ।[6] तपके साथ रसातल जावे ॥४८१॥
तप से मिले राज की काजा । फिरि फिरि औगुन होत अकाजा ॥४८२॥
मत्या असाधि साधि नहि जाई ।[7] आठो जाम धर्म सो धाई ॥४८३॥
सो ठाकुर तन भए गो छीना । उलटि ध्यान तेहि कियो मलीना ॥४८४॥[8]
पौन भक्ष सो होए भुभगा । करे जोग मत्या के संगा ॥४८५॥
फिरि फिरि जो इनि संकट में परई । आतम ग्यान होए तब तरई ॥४८६॥
एक द्रिष्टि निगु देखु समाना । मिले प्रेम पद सतगुर ग्याना ॥४८७॥

---

१ (क) है = हही ।
२ (क) (ग) (घ) हरिहर = हरी ।
३ (क) मम = मह । (ग), (घ) मे ।
४ (क) बड़े = पावे ।
५ (घ) निरंजन = निरंजा ।
६ (ख) तप के साधे का फल पावे । (ग) तप साध का का फल पावे । (घ) तप साध के का फल पावे ।
७ (ख) (ग) (घ) मत्या असाधि साधि नहि जाइ ।
८ (ख) (ग) (घ) कियो = कीन्ह ।

मन माया कर ऐसन कामा । ता मे परे सजन श्रीरामा ॥५२२॥
तिगुन ताहि तीनि है रंगा । बुधि बिबेक औ काम अनंगा ॥५२३॥
सकलप बिकलप मायी साया । ग्यान बिराग जन बिरला छाया ॥५२४॥
दानव पाखंड भेस जो कीन्हा ।[1] आस्रित बचन सीता कह दीन्हा ॥५२५॥[2]
भिच्छा भोजन हम कंह दीजै ।[3] कंद मूल फल आगे कीजै ॥५२६॥
पगु बाहर औ भीतर करहीं ।[4] रेखा टारि बाहर होए चलहीं ॥५२७॥
रावन राज सभ चाहे बिपसा । ग्रसेउ रूप होए डारिसि फांसा ॥५२८॥
बाहर पांव जबे उन्हि दीन्हा । तब रावन सीता हरि लीन्हा ॥५२९॥
कर धए रथ पर लीन्ह चढ़ाई । चला तुरंत लंकापुर आई ॥५३०॥
सीता राम राम गोहरावा । भक्त जटाई सुनि के धावा ॥५३१॥
चोचन्हि मारि उन्हि कीन्ह लड़ाई । अगिनि बान से पर जरि आई ॥५३२॥
लंकापति लंका के गएऊ ।[5] पलटि राम गिह खोजत भएऊ ॥५३३॥
पत्रकुटी देखा सून बेसूना । बहु भांति खोजि कलपना दूना ॥५३४॥[6]

छन्द

खोजि खोजि तन थकित मन औ सिया संदेस न पावहीं ।
ब्रह्म क सकल सभ बिबिधि जाके कठिन कलपना आवहीं ॥११॥
मोह कोह सम संसय सागर सीस धुनि पछतावहीं ।
रैनि बीतेउ खोजत ऐसे उलटि बासर आवहीं ॥१२॥

सोरठा

खोजेउ बनखंड झारि, मिजि मिजि कर पछतावहीं ।
हरेउ निसिचर नारि दसकंधर सिर काटिहौं ॥६॥

चौपाई

चले प्रात उठि दोनों भाई । खोजत बनखंड जह तहं आई ॥५३५॥
सुग्रिव देखा दुइ तन आवे । बालि के दूत औरि कोइ धावे ॥५३६॥[7]

---

१ (ख) पाखंड = पाखंडी ।
२ (ख) आस्रित = आश्रिय । सीता = सीया ।
३ (ख) कंह = के ।
४ (ख), (ग) (घ) औ = फिरि ।
५ (ख) के = कंह ।
६ (ख) (ग) (घ) बहु बिधि खोजि कलपना पूरा ।
७ (ख) दूत = दैत ।

दोहा

मारा खर दूखन कहँ, महा-महा भट बीर ।
जो संमर भूमि जीतिहैं, राम लखन रनधीर ॥३८॥

चौपाई

फिरि आए जहँ भवन निवासा । राम लखन सिया बैठे पासा ॥५०६॥[1]
तब यह ऐसन कीन्ह उपाई । मरिचै मिरिगा रूप बनाई ॥५०७॥
चंचल चपल रहे नाहिं धीरा । फुलवारी में चहुँ दिस फीरा ॥५०८॥
कनक रूप यह कठिन कठोरा ।[2] देखा राम जो धनुष टकोरा ॥५०९॥[3]
फिरि फिरि रहा अलोप लुकाई ।[4] फिरि फिरि परगट रूप देखाई ॥५१०॥[5]
रामचंद्र चलि गए निराटा । कोह काफ जहां बन के ठाटा ॥५११॥
सिया के मन में संसय होई । प्रति चरित्र लखि सके न कोई ॥५१२॥
यह माया सब प्रभुता करई । मर्म भीति कहुं कैसे टरई ॥५१३॥
सिया बिकल[7] अधि बहुत उदासा । लखन जाहु राम के पासा ॥५१४॥
मिरिगा मारि न फिरे भुआरा । कोह काफ है बिटप बिकारा ॥५१५॥
कहु लखन मोहिं संसय भारी । हमके छोड़ि गए रनचारी ॥५१६॥
इहां रहीं सिया दुख माना । सोचहिं बुधि बिचारहिं ग्याना ॥५१७॥
सत की रेखा घेंचु बनाई । सिया के सौंपि चले सिर नाई ॥५१८॥
सत की रेखा बठि बिचारी । बाहर पांव तनिक नाहिं डारी ॥५१९॥
लछुमन रामचन्द्र के पासा । निसिचर छल बस कीन्ह तमासा ॥५२०॥[6]

दोहा

राज काज मद रावना, भग्नि मति गई भुलाइ ।
सीता सती समुद्र सम, परा लहरि मंह आइ ॥३९॥[7]

चौपाई

तीनि लोक महिमंडल माया । सिया सकल गुन प्रगट देखाया ॥५२१॥[8]

---

१ (ख) (ग), (घ) राम लखन बैठे सिया पासा ।
२. (क) (ख) (घ) यह = है ।
३ (क) जो = तब ।
४ (ख) (ग), (घ) रहा = रहत ।
५ (ख) (ग) (घ) रूप = देत ।
६ (ग) यहां निरचर छल बस कीन्ह तमासा । (घ) यहां निरचर छल कीन्ह तमासा ।
७ (ख) (ग), (घ) मह = में ।
८. (क), (ख) गुन = सब ।

मन माया कर ऐसन कामा । ता मे परे सकल श्रीरामा ॥५२२॥
तिगुन ताहि तीनि है रंगा । बुधि विवेक औ काम अनंगा ॥५२३॥
संकलप विकलप भावी साथा । ध्यान विराग जन विरला हाथा ॥५२४॥
दानव पाखंड भेख जो कीन्हा ।[१] आसित वचन सीता कहं दीन्हा ॥५२५॥[२]
भिच्छा भोजन हम कंह दीजै ।[३] कंद मूल फल आगे कीजै ॥५२६॥
पगु बाहर औ भीतर करहीं ।[४] रखा टारि बाहर होए चलहीं ॥५२७॥
रावन राज सभ चाहे विधंसा । मनसा रूप होए डारिसि फांसा ॥५२८॥
बाहर पाँव जबें उन्हि दीन्हा । तब रावन सीता हरि लीन्हा ॥५२९॥
कर धए रथ पर लीन्ह चढाई । चला तुरंत लंकापुर जाई ॥५३०॥
सीता राम राम गोहरावा । भक्त जटाई सुनि के धावा ॥५३१॥
चोचन्हि मारि उन्हि कीन्ह लड़ाई । अगिनि बान से पर जरि जाई ॥५३२॥
लंकापति लंका के गएऊ ।[५] पलटि राम गिह खोजत भएऊ ॥५३३॥
पत्रकुटी देखा सून बेसूना । चहुं ओर खोजि कल्पना दूना ॥५३४॥[६]

छन्द

खोजि खोजि तन थकित मन औ सिया संदेस न पावहीं ।
ब्रह्म ड खंड सभ बिबिधि बांचे कठिन कलपना आवहीं ॥११॥
मोह छोह सभ संसय सागर सीस धुनि पछतावहीं ।
रैनि बीतेउ सोचत ऐसे उलटि बासर आवहीं ॥१२॥

सोरठा

खोजेउ बनखंड झारि, मिजि मिजि कर पछतावहीं ।
हरेउ निसिचर नारि दसकंधर सिर काटिहों ॥६॥

चौपाई

चले प्रात उठि दोनों भाई । खोजत बनखंड जहं तहं जाई ॥५३५॥
सुग्रिव देखा दुइ जन आवे । बालि के दूत मोरि कोइ जावे ॥५३६॥[७]

---

१ (ख) दानव = दानों ।
२ (ख) आसित = आशिष । सीता = सीआ ।
३ (ख) कंह = के ।
४ (ख), (ग) (घ) औ = फिरि ।
५ (ख) के = कंह ।
६ (ग) (ग) (घ) चहुं दिसि खोजि कलपना दूना ।
७ (ख) दूत = दैत ।

जाहु पवनसुत करहु बिचारा । निरखि नीक होए करहु सुधारा ॥५३७॥[1]
बिप्र रूप मिले हनुमाना । कर जोरि बचन पूछहिं परधाना ॥५३८॥

हनुमान वचन

की तुम देव देवन्हि महं वीरा । अति कोमल पद सुंदर सरीरा ॥५३९॥
कहो बिरतंतु सब कथा सुनाई । बनखंड फिरहु कौनि प्रभुताई ॥५४०॥
महा बिकट बन किमि कर रहहु । कहहु न सत्त बचन जनि गोवहु ॥५४१॥
मैं अधीन हौं तुम गुन लायक । जो कछु पूछो कहो सब लायक ॥५४२॥

राम वचन

नग्र अजोध्या दसरथ राई । ताकर सुत हम दोनों भाई ॥५४३॥
पिता हुकुम हम बन तप कीन्हा । सुनो बिप्र यह बचन प्रवीना ॥५४४॥
हरेउ निसिचर मम प्रिय नारी ।[2] सो हम बन बन खोजत भारी ॥५४५॥

हनुमान वचन

महा मोह मद सदा मस्ताना । अब निस्चय प्रभु पद पहचाना ॥५४६॥
रहेउं अनाथ मोहि कियो सनाथा ।[3] धन धन दरसन तुम रघुनाथा ॥५४७॥[4]
किपा सिंधु हो मैं कपिराई । चरनकंवल पद पंकज पाई ॥५४८॥
अमिय प्रेम सुख सागर भएऊ । प्रबल पाप दुर्मति दुरि गएऊ ॥५४९॥[5]
मैं तुम दास पास निज राता । सितल सुगन्ध सरीर सुगाता ॥५५०॥[6]
अहै सुग्रिव निज दास तोहारा ।[7] ताके कटक मर्कट अधिकारा ॥५५१॥
सीता खोज वह तुरंत लगाई । जंह तंह मर्कट बेगि पठाई ॥५५२॥
चले तुरंत सिन्धु पंथ धाई । जंह गिरि कंदर रहे छाई ॥५५३॥
कहा समोधि सुग्रिव से जाई । घर बठे तुम दरसन पाई ॥५५४॥
दसरथ तनय राम रघुराई । जाके बेद लोक सब गाई ॥५५५॥
फिरि फिरि चरण कंवल पर लोटा । बाढ़ि प्रीति मन भए नौ छोटा ॥५५६॥

---

१ (ख) सुधारा = बिचारा ।
२ (ख) (ग) (घ) हरेउ निसचर मम प्रिय नारी ।
३ (घ) कियो = कियऊ ।
४ (घ) तुम = तुव ।
५ (ख) प्रबल पाप दुर्मति दुरि बहेऊ । (क) प्रबल पाप दुर्मति बहि गएऊ । (घ) प्रबल पाप दुर्मति दुरि बहेऊ ।
६ (घ) सितल सरीर सुगन्ध सुगाता ।
७ (घ) तोहारा = तुम्हारा ।

मन के संसय दूरि सब गएऊ । राम दरस पद पंकज पएऊ ॥५५७॥[1]

दोहा

पानि जोरि कै बिनती, महा दरसन फल पाए ।[2]
अधर्मभंजन अघमोचन, सो प्रभु भए सहाए ॥४०॥[3]

चौपाई

बालि बंधु है निपट मकारा । हरे मम तिया कपट सो दारा ॥५५८॥
कीन्हो समर सम सम साका । जाकी त्रिसु है त्रिभुवन छाया ॥५५९॥
यह निजु कर भागु जो पायो । कोटि कटक तुम संग चलायो ॥५६०॥
गिरि कंदर से बाहर भएऊ । सुनत बचन कोपि कर गएऊ ॥५६१॥
धीर भूमि पर टरत न टारी ।[4] एक से एक जोधा बल भारी ॥५६२॥[5]
फिरि बहु भिरा जुवा भए ठाढ़ा । कठिन कर धर बान सर काढ़ा ॥५६३॥
मारा राम बान उर लागा । मूरछि गिरा बहुरि फिरि जागा ॥५६४॥
धर्म रूप निगम कहे कसे । मारेहु मोहि ब्याधा धर जसे ॥५६५॥

बालि बचन

मैं बरी सुग्रिव हितकारी । कारन कौन मोहि तुम मारी ॥५६६॥

राम बचन

कन्या नारि प्रगट जग कहई । साम बेद ग्यान मत कहई ॥५६७॥
इन्ह से कुमति करे नर कोई ।[6] ताहि हते कछु पाप न होई ॥५६८॥
इतना सुनि तन त्यागि सो माना । सुग्रिव राम चरन लपटाना ॥५६९॥

दोहा

धरेउ चरन पर पंकज मिटेउ सकल तन पीर ।[7]
तुम आए सन बटोरव, कामन्ह टिक्कु रघुबीर ॥४१॥

---

१ (ख) दरस = चरन ।
२. (ख) (ग) (घ) कै = करि । (ख), (ग) दरसन = दरस ।
३ (ख) (ग) (घ) मद = गर्व ।
४ (ख), (ग) (घ) धीर = धरि ।
५. (ग) इक एक जोधा बल भारी । (घ) एक एक जोधा है बल भारी ।
६ (ख) (घ), (च) कै = संग । (ग) नर = न ।
७ (ख), (ग), (घ) मिटेउ = मेटा ।

छन्द

बरसा विविधि प्रकाश पवन अति गजि गजि घहरावहीं।
मोर सोर अति झिंगुर झनकत गिरि चढ़ि गिरा सुनावहीं ॥१३॥
विकट बन तहँ विकट भालु कपि विरह अनल तन लावहीं।
यहि भाँति बीतेउ जानकी बिनु नैन नींद न आवहीं ॥१४॥

सोरठा

भरथ के बड़ी तन पीर, विपति वियोग विकार अति।
दुख दारुन रघुबीर, धिग जीवन संसार महँ ॥७॥[1]

चौपाई

थके सो नीर थीर सब भएऊ। सुमन सुगन्ध छोड़ि घर गएऊ ॥५७०॥[2]
चले पथिक सरद दिन भएऊ। राम लखन गिरि पर चढ़ि गएऊ ॥५७१॥
सुग्रिव पथ निहारहिं नीका।[3] सुनि पवन सुत आगे टीका ॥५७२॥
चले तुरंत तब दोनों भाई। जहँ सुग्रिव कर नग्र सोहाई ॥५७३॥
सुग्रिव देखा आए रघुनाथा। कर जोरि निकट नाए निजु माथा॥५७४॥
आए पवनसुत पायन परई।[4] देखा राम मोद मन भरई ॥५७५॥
सकल कटक मिलि कीन्ह प्रनामा। धन धन दर्सन तब श्रीरामा ॥५७६॥[5]
मंत्री मत्र कीन्ह मत भाऊ। सुनो सबन्हि मिलि बचन प्रभाऊ ॥५७७॥
चली तुरत सब सागर तीरा। सेन समाज सभैं बल बीरा ॥५७८॥
राम लखन सुग्रिव कपिराई। महावीर भट कटक देखाई ॥५७९॥
मत्री कीन्ह जामवत से आई। सो मुनि मर्थ सभैं ठहराई ॥५८०॥[6]
बहादुर जाहु बीर हनुमंता।[7] सिया संदेश ले आउ तुरंता ॥५८१॥
लेहु पान तुम करहु पयाना। दसकंधर के मन्हु माना ॥५८२॥
अग्या करहु सुफल सब काजू। राम चरण सिर ऊपर छाजू ॥५८३॥

---

१ (ख) (ग) (घ) महँ = मति।
२ (ख) (घ) सुमन सुगंध छोड़ि घर गएऊ।
३ (ख) निहारहिं = निहार।
४ (ख) परइ = परऊ।
५. (ख) तब = तुम।
६ (ख) (ग) (घ) मुनि = मिलु।
७ (ख) हनुमंता = हनिमंता। (ग), (घ) हनुमंता = हनिवंता।

महा पौरुष बल तुम महँ होई । वानर बीचि सर्व नाहिं कोई ॥५८४॥
सिया संदेस लै आवहु नीका । सकल कटक महँ बंस के टीका ॥५८५॥

दोहा

राम चरन पद पंकज, गहि कीन्हो सिर नाइ ।
चले प्रगट अति कोपि करि, महाबीर बल पाइ ॥५२॥

चौपाई

अति प्रचंड होए कोपेउ बीरा । कूदि परे तब सागर तीरा ॥५८६॥[1]
रहे निसिचर मगु रखवारी । हना तेहि एक कोस पछारी ॥५८७॥
लसि पृहुमी तन भो बिकरारा । रुधिर चले जैसे नीर के धारा ॥५८८॥[2]
कूदि परा पुनि लंका मझारा । जहँ दसकंधर के रखवारा ॥५८९॥
आगे ग्रिह बिभीखन देखा । राम नाम सुनि स्रवन बिसेखा ॥५९०॥
मिले बिभीखन मगु में आई । हिरदय हरखि महाफल पाई ॥५९१॥[3]

बिभीखन वचन

संत दरस हरि क्रिपा समेता । बड़ा भाग सुख मंगल हेता ॥५९२॥
सुनो पवनसुत बचन हमारा । सगरो लंका दैत पसारा ॥५९३॥
ता बिच संत रहनि किमि रहई ।[4] राम नाम नित्र निस दिन कहई ॥५९४॥
कहे बिभीखन सुनु हनुमंता ।[5] जिनु जिनु अर्थ कहे बिरतंता ॥५९५॥
राम मगन यह सागर तीरा ।[6] महा कटक संग बड़-बड़ बीरा ॥५९६॥[7]
राम संदेस सिया पँह आई ।[8] सिया संदेस तुरंत लै जाई ॥५९७॥[9]
असोक बिच तर सीता अहई । कष्ट कलपना बहु दुख सहई ॥५९८॥
चहुँ ओर चौकी दैत जो गावे । सुनि पवनसुत रोस अति आवे ॥५९९॥
कूदि चढ़ा द्रुम ऊपर कैसे । मानो पंछी बसेरा जैसे ॥६००॥
बहुत कष्ट तन देखा भारी । तुरंतहि दीन्हो अंगुठी डारी ॥६०१॥

---

१ (क), (ख), (घ) तीरा = नीरा ।
२ (क) रुधिर चला जैसे नीरधारा ।
३ (ख) हरखि = हरसि ।
४ (क) राम नाम नित्र निस दिन कहई, ता बिच संत रहनि किमि रहई ।
५ (क), (ग), (घ) बिभीखन = भभीखन ।
६ (ख) (ग) (घ) सागर = सायर ।
७ (क) महा कटक संग बलबीरा ।
८ (क) (घ) पँह आई = पँह आवाई ।
९ (ख) (ग) (घ) सिया संदेस लै तुरतहि आई ।

सीता कर गहि लीन्ह उठाई ।[1] अधिक कष्ट तन व्यापेउ भाई ॥६०२॥
तुरंतहि उतरि निकट चलि भएऊ । करि प्रनाम जिमि माथा नएऊ ॥६०३॥
सुनु माता मैं राम कर बीरा । सिया सुखद भइ सकल सरीरा ॥६०४॥
राम लखन तन बिरह बियोगा । तव संदेस मिटिहैं तन सोगा ॥६०५॥
उतरिहि कटक सबै परचारी । लंकेस्वर के सीस उतारी ॥६०६॥
धरि-धरि दैत सबै सिर दुटिहैं ।[2] सुर नर बंदी तुरंत छुटिहैं ॥६०७॥

दोहा

सुनु माता कह बीरवा, होए कुसल एक साथ ।
करिहैं बिधंस रघुबसमनि, जीति चलहिं रघुनाथ ॥४३॥

चौपाई

पाच फल तब माते दीन्हा । बहुत प्रीति करि भाजन लीन्हा ॥६०८॥
कपि के फल मानो अमिय रहेऊ । रोम रोम सीतल तन भएऊ ॥६०९॥
बोले कपि तब बचन बिचारी । केहि दिस बाग लाउ फल भारी ॥६१०॥

सीता बचन

यहं घोर दैत रह रखवारा । किमि करि तुम करिहि पैसारा ॥६११॥[3]

हनुमान बचन

तुम प्रताप सबै बस सहिहों ।[4] दैतन्हि मारि सबै फल लैहों ॥६१२॥
दैतन्हि धरि-धरि सबै पछारी ।[5] बिछ उपारि सेंधु महं डारी ॥६१३॥
सुरुकि सुरुकि लैहों भरि पेटा । फिरि करिहा मैं तुमसे भेंटा ॥६१४॥
उठा गजि प्रबल अति भारी । सिय देखा जनु सब उभारी ॥६१५॥
पैठा जाइ झपटि अगवाना । पुनि पुनि फल खाइसि मनमाना ॥६१६॥[6]
किछु बिछ तोरि तारि जिमि पारी ।[7] किछु उपारि सेंधु महं डारी ॥६१७॥
धाए दैत रहे रखवारा । मारु मारु के कीन्ह पुकारा ॥६१८॥
धरि चपेटन्हि मारु पछारी । चले पराए टांग धरि फारी ॥६१९॥
करहि सोर जहं रावन बैठा । मर्कट एक बाड़ी महं पैठा ॥६२०॥

---

१ (क), (ग), (घ) सीता = सीते ।
२. (क) टुटि है = कटि है ।
३ (क), (ग), (घ) करहि = करहु ।
४ (क) सहिहौं = सहहौं ।
५. (ख), (ग) दैतन्हि धरि धरि सबै पछारी, दैतन्हि मारि सबै फल खइहौं ।
६ (ख) (ग) (घ) पुनि-पुनि फल खाइसि मनमाना—स्वीकृत पाठ ।
७ (क), (ग) किछु = कछु, तोरि = तर ।

तोरि तोरि फल खाइ सब भारी । ब्रिछ उपारि सेंधु मँह डारी ॥६२१॥
कहे रावन कियो अजगूता ।[1] जियतहिं पकरि ले आवहु दूता ॥६२२॥

दोहा

देखत लघु चंचल बड़ा, पौरुख कहा न जाए ।
जो जो परे लपेट में, पटके टांग घुमाए ॥४४॥

चौपाई

हमसे वीर कौन बड़ भइई । जो प्रभुता बल हमसे कहई ॥६२३॥
सुनतहिं कोप सरीरहिं जागा ।[2] तोरों ताग जनु बिसम न लागा ॥६२४॥
महा फांस तब सब मिलि जोरा । बेगि पकरि के लावहु चोरा ॥६२५॥[3]
छोटा करहिं तब बड़ा होए जाई ।[4] बड़ा करहिं तब निकसि पराई ॥६२६॥
बहु परिपच फंद जब जोरी ।[5] कर गहि बँधि तुरंतहि तोरी ॥६२७॥
राम की त्रिया कछु तुम चोरा । मारब तोहि नाहिं कीन्ह निहोरा ॥६२८॥
बाके फांस दास जनु छोटा । धरि-धरि मारहिं है बड़ मोटा ॥६२९॥
पकरि ले आए रावन आगे ।[6] दसि देखि लरिका सब भागे ॥६३०॥
फल खाएहु कौन बल भारी । किमि करि ब्रिछ तुम कीन्ह उजारी ॥६३१॥[7]
सांच कहो ना तो जीव नहिं बचिहौं । पिब कर डारे घर घर नचिहौं ॥६३२॥[8]
महा प्रबल है आसम भारी । तोरि तोरि फल खाएउ भारी ॥६३३॥
खाएउ फल लागा बड़ मीठा । तोरि तोरि लीन्ह नैनन भरि दीठा ॥६३४॥
माथ ठेका तेहि लीन्ह उपारी ।[9] इमि करि मेंड़ सेंधु मँह डारी ॥६३५॥
दानव वीरि कीन्ह बड़ रारी । तब मैं उलटि चपेटन्ह मारी ॥६३६॥
कहे रावन चंचल है चोरा । बोलत बल नाहिं डर तोरा ॥६३७॥

---

१ (क), (घ) कहै = कहहिं ।
२ (क) (ग), (घ) कियो = किहिसि ।
३ (क) (ग) (घ) सुनता कोप सरीरे जागा ।
४ (क) आवहु = ल्यावहु (ग) ले आवहु ।
५ (ग) (घ), (ङ) करहिं = करै ।
६ (ग) चोरी = चोरा ।
७ (ग) ले आए = ल्याए ।
८ (क), (ग) (घ) डार = डारे ।
९ (ख) (ग) ठेका = ठेकै ।

सीता कर गहि लीन्ह उठाई ।[1] अधिक कस्ट तन व्यापेउ भाई ॥६०२॥
तुरंतहि उतरि निकट चलि भएऊ । करि प्रनाम जिमि माथा नएऊ ॥६०३॥
सुनु माता मैं राम कर बीरा । सिया सुनत भइ सकल सरीरा ॥६०४॥
राम लखन तन बिरह बियोगा । तव संदेस मिटिहैं तन सोगा ॥६०५॥
उतरिहि कटक सभै परधारी । लंकेस्वर के सीस उतारी ॥६०६॥
धरि-धरि दैत सभै सिर टूटिहैं ।[2] सुर नर बंदी तुरत छुटिहैं ॥६०७॥

दोहा

तुह माता धरु धीरजा, होए जुगल एक साथ ।
करिहैं निर्बंस रघुबंसमनि, जीति चलहि रघुनाथ ॥४३॥

चौपाइ

पांच फल तब आगे दीन्हा । बहुत प्रीति करि चाखन लीन्हा ॥६०८॥
कपि के फल मानो अम्रित रहेऊ । रोम रोम सीतल तन भएऊ ॥६०९॥
बोले कपि तब बचन बिचारी । केहि दिस बाग लाउ फल भारी ॥६१०॥

सीता बचन

चहु ओर दैत रहे रखवारा । किमि करि तुम करिहि पैसारा ॥६११॥[3]

हनुमान बचन

तुम प्रताप सभै बन लहिहा ।[4] दैतहि मारि सभै फल लैहों ॥६१२॥
दैतन्हि धरि-धरि सभै पछारी ।[5] ब्रिछ उपारि सेंधु महं डारी ॥६१३॥
सुरुकि सुरुकि लैहों भरि पेटा । फिरि करिहों मैं तुमसे भेंटा ॥६१४॥
उठा गाजि प्रबल अति भारी । सिय देखा जनु लक उजारी ॥६१५॥
पैठा जाइ झपटि बगवाना । चुनि चुनि फल खाइसि मनमाना ॥६१६॥[6]
किछु ब्रिछ तोरि तारि जिमि पारी ।[7] किछु उपारि सेंधु मह डारी ॥६१७॥
धाए दैत रहे रखवारा । मारु मारु के कीन्ह पुकारा ॥६१८॥
धरि चपेटन्हि मारु पछारी । भसे पराए टांग धरि फारी ॥६१९॥
करहि सोर जंहं रावन बैठा । मरकट एक बाड़ी मंहं पैठा ॥६२०॥

---

१ (ख), (ग), (घ) सीता = सीते ।
२ (ख) टूटि है = धरि है ।
३ (ख) (ग), (घ) करिहि = करबु ।
४ (ख) लहिहौं = लहहौं ।
५ (ख), (ग) दैतन्हि धरि धरि सभै पछारी दैतन्हि मारि सबै फल खइहौं ।
६ (ख), (ग) (घ) चुनि-चुनि फल खाइसि मनमाना—स्वीकृत पाठ ।
७ (ख), (ग) किछु = कछु, तोरि = तर ।

सुनहुं माता तजहुं सम सोचा ।[1] राम चरन अघ पातक मोचा ॥६४९॥[2]
हुकुम ना मोहि कीन्ह रघुराई ।[3] तुम कंह लेहि तुरतहि आई ॥६५०॥
रावन गढ गर्व में बिसिहैं ।[4] संमर करि सुर लेत जीतिहैं ॥६५१॥
सुर नर संत सभै मुकुतइहैं ।[5] तुम कहं लेइ अवधपुर जइहैं ॥६५२॥
राजा राम रानी होए सीता । कपि के बचन करहु परतीता ॥६५३॥
राम चरन छुइ बिनती मोरी ।[6] साकब सनिक तन की कोरी ॥६५४॥
मैं तिरिया तन बुधि की थोरी । क्रिपा संभु से मिनती मोरी ॥६५५॥

सीता बचन

मैं दासी तुम त्रिभुवन स्वामी ।[7] सबब्यापिक अंतर्जामी ॥६५६॥
लखन से कहब आसीस हमारी । बोलत बन नैन नीर ढारी ॥६५७॥
तजहुं बिखाद कलपना दूरी । रावन गढ मिलिहि सम धूरी ॥६५८॥
हम कंह माता देहु असीसा ।[8] राम चरन आए नावहुं सीसा ॥६५९॥
करि प्रनाम तव चले तुरंता । कूदि परे सम सागर अंता ॥६६०॥
देखि कटक सम कोई ठाढ़ा ।[9] हरखि पवनसुत महिमा बाढ़ा ॥६६१॥

दोहा

कटक सभै हर्खित भयो, बीर महा पद पाए ।[10]
राम चरन लपटाए के, रहा मन मुसकाय ॥४६॥

चौपाई

राम कहा सुनो कपिराई ।[11] सिया संदेस निसु कथा सुनाई ॥६६२॥
चरण छुइ राम पद लागी । बिरह बिराग सदा अनुरागी ॥६६३॥
त्रिभुवन ठाकुर राम गोसांई । मोहि दासी पर होहिं सहाई ॥६६४॥

---

१ (क) (ग) (घ) सुनहु = सुनु ।
२ (क) (ग) (घ) पातक = पातख ।
३ (क) (ग), (घ) हुकुम ना कीन्ह मोहि रघुराई ।
४ (क) (ग) (घ) में = मह ।
५ (क) सभै = सब ।
६ (ग) अतिरिक्त पाठ—कहे सिया तुम सम गुन लायक, आए तुरंत करो सम सायक ।
७ (क) स्वामी = सामी ।
८ (क) (ग), (घ) कंह = के
९ (ग), (ग) (घ) देखि = देखत ।
१० (ख) कटक सबै हरखित भये महाबीर पद पाए । (ग), (घ) महाबीर पद पाए ।
११ (क) (ग) सुनो = सुनहु ।

दोहा

घोर सोई मारी करै, हरे धौंगि के धाम ।[1]
त्रिया चोर पापी बड़ा, राम विमुख त्रिग काम ॥४५॥

चौपाई

कहे रावन पेचहु भरि कोरे । मारहु जेकरा अस बल जोरे ॥६३८॥
पवन तनय तन रोंआ न टूटे ।[2] खसि खसि दैत पापम मुह टूटे ॥६३९॥
हारि मारि बढे सब जोधा । तन से निकसि गया सब कोधा ॥६४०॥
एक मिसु है निकट हमारी । लंगूर लपटहु कपड़ा फारी ॥६४१॥
तेल लगाए लपेटहु साता । तब तन के होइहैं उतपाता ॥६४२॥[3]
पवित लगूर बढ़ाया भारी ।[4] नग के पाम राह को सारी ॥६४३॥
आगि लगाए दीन्ह हुहुकारे । तड़कि तड़कि उन्हि लंका जारी ॥६४४॥
सगरो लंका लागो धोखा । एक विभीखन के घिह चोखा ॥६४५॥
विभीखन भवन बाचि के आई । तबहुं न मय के मन पतिआई ॥६४६॥
पवनसुत देखि हिरद हर्खो । मानो प्रेम सुधा सम बर्खो ॥६४७॥

छंद

वीर धीर अति कोपि गर्जे लंकपुर घरि जारहा ।[5]
लाए लपेटि लंगूर फेरहिं दैत निकट न आवहीं ॥१५॥[6]
दैत दलि मसि भूत भावे चिहुंकि चिकार मचावहीं ।
कठिन मर्कट निकट ठाढ़े वीर जोर न पावहीं ॥१६॥

सोरठा

जरत सो सब भनाय राम द्रोह रावन कियो ।
सिया से मिलु रघुनाथ, सरन लिय ना आवही ॥८॥[7]

चौपाई

कूदि पर सब सागर मांही ।[8] लंगूर बुझाए सिया पहु जाहीं ॥६४८॥

---

१ (क) (ग) (घ) हर दौरि की धाम ।
२ (घ), (ग) रोंमा = रोंआ ।
३ (घ) होइहैं = होइहि । (घ) उतपाता = उतपात ।
४ (ख) बढ़ाया = बढ़ाइसि । (ग) बढ़ायेसी ।
५ (ख) (ग) (घ) गर्जे = गर्जहि ।
६ (ख), (ग) (घ) लाए = लै लाए ।
७ (ग), (ग), (घ) ना = नाहि ।
८ (ख) (ग) (घ) पर = परा ।

चौपाई

अब तिरिया मुखि बोलहि बिकारी ।[1] मारौं कटक सैन सब झारी ॥६८१॥
इन्ह से मुख मैं किमि कर मोरिहौं ।[2] मारि कटक संघ सब भरिहौं ॥६८२॥
ये दोए तपी अलप अहारी ।[4] बाल कोप के देउं जमि झारी ॥६८३॥
मेघा प्रभु बीर अका भारी । किमि नहि मारेउ दैत सब झारी ॥६८४॥
यह मारे का का पुन नीका ।[5] नट के संग यह सिंह सिंह बीका ॥६८५॥
मगु मैं मगन नाचे बहु भांती । चंचल चोर चतुर है जाती ॥६८६॥

दोहा

कहे रावन सुनु त्रिया तूँ, डर मति मानसि संक ।
सिव सदा घर दिन्हेउ, राम करो गढ़ लंक ॥४८॥

छंद

सिया सुधि खसि के भलो कहा है हरि लीन्हो अपने बल ते ।
सागर बांधि कटक सब निकट बिकट अपावन सब मल ते ॥१७॥
लंका मिथि धूरि पंकज करिहै तोहि मरिहै अपने कर ते ।
दरिया को कहे तिरिया सिखावे तेज बास नहीं परतीअर ते ॥१८॥

दोहा

सुर सब बांधि कियो बसि अपने सिव को बर कैसे हरिहै ।
उन्हको कटक बनी मर्कट की सनमुख हमसो को लरिहै ॥४९॥[6]
यह दोए तपसी तन-मन व्याकुल हमसे संगर को करिहैं ।
दरिया का कहें सियही कपटे कर मार्ग लीन्हो सबही हरिहै ॥२०॥[7]

सोरठा

बोला गर्जि कर कोपि, सिया तब दूरि भई ।
दिया तेज से लोपि, सुर सब डर कंपित भए ॥९॥

सिव बचन

कहे सिव सुनु बचन भवानी । रावन भर्व गरूर अभिमानी ॥६८७॥

---

१ (ख), (ग) (घ) बोलहि = बोलसि ।
२. (ख) (ग) (घ) मोरिहौं = फेरिहौं ।
३ (ख), (ग) (घ) मर्कट मारि पंचक सब भरिहौं ।
४ (ख) तपी = तपसी ।
५. (ख) यह = सोहि । (ग), (घ) सोहि ।
६ (ख) (घ), (ग) हमसे सन्मुख को लरिहै ।
७ (ख) (ग), (घ) लिन्हो = लिए ।

लखन आसीस कहव बहु भांती । बोलत नैन लोर चहुँ पाती ॥६६५॥[1]
विधि विधि सब कथा सुनाई ।[2] गिरिजा धरहु मिलिहैं रघुराई ॥६६६॥
रावन गर्व गद होए जाई । सिया ले चलिहैं त्रिभुवन राई ॥६६७॥
तजहु विसार धरहु मन धीरा ।[3] चरन कंवल सुमिरो रघुबीरा ॥६६८॥
राजा राम सीता तुह रानी । कपि के बचन प्रिया जनि आनी ॥६६९॥
सुनेउ राम सीतल तन भएऊ ।[4] सुखेउ कंवल भंमर रस पएऊ ॥६७०॥[5]
राम लखन सब सैन समेता । सब मिलि मत्र कीन्ह निजु हेता ॥६७१॥
बाधेउ सागर बहु विधि भांती । पाहन काटि डोल दिन राती ॥६७२॥
नल नील वीर सब भारी । पाहन देहिं कटक सब डारी ॥६७३॥
लछुमन लिखा सत्त की रेखा । जल महं उपला सबै कोइ देखा ॥६७४॥[6]
सतपुरुष के जानहिं मर्मा । लखन प्रेम प्रीति निजु धर्मा ॥६७५॥
महां सेतु बांधा सब जोए । रावन गर्व मति मद खोए ॥६७६॥
कहे मदोन्दरी सुनु पिया स्वामी ।[7] का तुम भूले गर्व मतिगामी ॥६७७॥[8]
मिलहुँ सीता ले सागर तीरा ।[9] कोटि गुनाह बकसे रघुबीरा ॥६७८॥
इन्ह से संमर जीते नाहिं कोऊ ।[10] नर नारायण हैं यह दोऊ ॥६७९॥[11]
ग्रिह में लाण्ड सत्ति सरूपा । राम नस्ट होए तोहरो भूपा ॥६८०॥[12]

दोहा

सुनहुँ प्रिया मति मोर तुह, सदा कहा हितकारि ।[13]
सिया सुरत से मिलिए क्रोध मोह सब डारि ॥४७॥

---

१ (क) चहुँ पाती = चहुँ राती ।
२ (ख), (घ) विधि बिहिसि सब कथा सुनाइ । (ग) विधि विधि निजु कथा सुनाइ ।
३ (ख) (घ) (क) तजहुँ कलपना धरु मन धीरा ।
४ (क) (ग) (घ) सुनेउ = सुनिके ।
५ (क), (ग) (घ) सुखेउ = सुखिगो ।
६ (क), (ग) कोइ = केहु ।
७ (क), (घ) स्वामी = सामी ।
८ (ख) भूले = भूलहु ।
९ (क) (ग), (घ) सीता = सीता । सागर = सागर ।
१० (क) इन्ह से = उन्ह से ।
११ (ख), (ग), (घ) यह = दुन ।
१२ (क) (ग) (क) राम नष्ट होइहि तोर भूपा ।
१३ (ग), (घ) (घ) सुनहु पति प्रिया मोर तु ह ।

तुम प्रिया तन सुधि की चोरी । कबे बचन नाहिं मानहु मोरी ॥७०६॥[1]
जब रावन सीता हरि लएऊ ।[2] तब संसय मन तुम कहँ भएऊ ॥७०७॥
संसय सागर अगम गभीरा । बूड़त भी जग पाउ ना तीरा ॥७०८॥
सिया रूप तुम सुरति सवारी ।[3] बोले राम कहाँ दच्छकुमारी ॥७०९॥
कीन्ह प्रनाम दोनो कर जोरी । सिव कहँ छोड़ि कहाँ तुम दौरी ॥७१०॥
तब तुम लाज न बदन छपाई ।[4] चली तुरत हमरे पंह आई ॥७११॥
सुनो सिव कहे भाखि भवानी ।[5] तुम्हरे डर हम सदा डेरानी ॥७१२॥[6]
जस पूछहुं सो सत कछु कहेऊ ।[7] नाहिं तब गोप गुप्त होय रहेऊ ॥७१३॥[8]
हँसिके सिव बोले बड़ प्रीती । जाके गुर गमि सो जग जीती ॥७१४॥
छोड़हुं सकोच सपत सुनु मोरी ।[9] सत बचन मंह किमि कर चोरी ॥७१५॥
पुरुष एक तिरगुन ते न्यारा । जाकर चलपल सिस्टि पसारा ॥७१६॥
बिरह बिकार तन कंपप भइई । सक्ति सोक दुख दारुन दहई ॥७१७॥[10]
बनखंड भरए जोग तप कीन्हा । पिता मोह दुख दारुन दीन्हा ॥७१८॥
तापर नारी निसिचर रहेऊ । अमित कलपना बड़ दुख भएऊ ॥७१९॥
तिरगुन माया भइ समता । उतपति परली सो तम केता ॥७२०॥[11]
यहि तिनि लोक के ठाकुर टीका । इनके पारख है अति नीका ॥७२१॥
जब हम सीता रूप बनाई । बिहिंसि बिहित उन्ह सिया बनाई ॥७२२॥[12]
सीता हंस गमन वह भसई ।[13] हनुके पांव जमी पर धरई ॥७२३॥[14]

---

१ (ख) कबे = कहा ।
२. (ख), (ग) (घ) लएऊ = लिएऊ ।
३ (ख) सिया स्वरूप तुम सुरति सँवारी ।
४ (ख) तब तुम लाज न बदन गोयाई । (ग) तब तुम लाजनि बदन गोयाई । (घ) तब तुँह लाजनि बदन गोयाई ।
५. (ख), (ग) (घ) सुनी सिव सत कहैं भवानी ।
६ (ख), (घ) हम = मैं ।
७ (ख), (ग), (घ) जो पूछेहु सत कछु कहेऊ ।
८ (ख) (ग) (घ) तब = तो ।
९ (ख) (ग), (घ) सपत = साथ ।
१० (घ) सोक = रोग ।
११ (ख) (घ) केता = कैता ।
१२ (ख), (ग) (घ) सिया = कीन्ह ।
१३ (ख), (ग) (घ) वह = पीय ।
१४ (ख) (ग) (घ) जमी = पुहुमी ।

घरि घरि महि सायसि भरि पेटा । सेस नाग कहि गरुर सपेटा ॥६८८॥
सहस्र फनी छिसजा पर भहई । कोटि गरुर तेहि भीतर वहई ॥६८९॥
यह जनि जानहुं छोट सरीरा । अनंत कला है राम रघुवीरा ॥६९०॥
सागर आगर राम क्रिपाला ।[1] भव भर्म भंजन दुस्ट जम जाला ॥६९१॥

उमा वचन

कहे उमा सुनु त्रिभुवन स्वामी । किमि कर वर दीन्हो रजधानी ॥६९२॥
वार वार वह सीस चढ़ाया ।[2] तब लंकापति श्रिप कहाया ॥६९३॥
पाएसि वर भया अभिमानी । आयेसि देव सुर सम जानी ॥६९४॥
सीतहि हरि ले आनेउ लंका । गव गामी भौ हमि करि वंका ॥६९५॥[3]
ताकी त्रिसु निकट नियरानी । गद करिहि वह त्रिभुवन रानी ॥६९६॥[4]
एक सो अनंत सकल महिवर्ता । चर अचर पर त्रिभुवन कर्ता ॥६९७॥
परमातमा है पुर्न पुराना ।[5] भवन भर्मि नहिं पद पहचाना ॥६९८॥[6]
वस कंघर मति भम भुलाना ।[7] आदि ब्रह्म गति भेद न जाना ॥६९९॥[8]
सती कहु सुनो सिव ग्याता ।[9] यह ससय भम हम कहुं राता ॥७००॥
आदि अनादि जाहि कंह कहई । सो त्रिगुन में कैसे रहई ॥७०१॥[10]
दयासिंधु सत कहिए बानी । क्रोध छमा करि अम्रित सानी ॥७०२॥
जब जब पुहुमी होवे भारा । तब-तब लीला धरे अपारा ॥७०३॥
मुए जिए नाहिं ब्रह्म सरूपा ।[11] माया त्रिगुन है अभिगति रूपा ॥७०४॥
बार बार मैं तुमहि बुझाई ।[12] तुम कंह ग्यान चेतना नाहिं भाई ॥७०५॥[13]

---

१ (ख), (ग), (घ) क्रिपाला = रघुबीरा ।
२. (ख) (ग) वह = तेहि ।
३ (ख) गर्व भवा यह हमि करि बंका ।
४ (ख), (ग) (घ) वह = घोर ।
५. (ख) परमातमा = परमात ।
६ (ख) भरमि भरमि नाहि पहचाना ।
७ (ग) (घ) मति = अपमति ।
८ (ख) आदि ब्रह्म नाही पहचाना ।
९ (ख), (ग) सती कहै शम्भु सिव ग्याता । (घ) सति कहै सिव शम्भु वर ग्याता ।
१० (ख), (ग), (घ) रहइ = बहइ ।
११ (ख), (ग) (घ) मुए ना जिए नाहि ब्रह्म सरूपा ।
१२ (ख) (ग) (घ) मैं = हम ।
१३ (ख) (ग), (घ) चेतना = गमी ।

दोहा

कहे सिव सुनु बचन भवानी, गहो अचल निजु ध्यान ।[1]
माया धोखा धंधा जग माहिं, पुर्ब पुरान प्रमान ॥५२॥
बड़ी सरन अब आइए मेटु करम को दाग ।
ताते सेतु बंधन लियो, सभा झटकी पाग ॥५३॥

चौपाई

मानो धरती सम बस सोखा । बार पार सभे मिटिगो धोखा ॥७४४॥
उतरी कटक रही छिछराई । मर्कट बन फल खावहिं धाई ॥७४५॥
राम लखन गिरि पर चढ़ि धीरा । गढ़ सुमेर बहे सीतल समीरा ॥७४६॥
अति सुगंध फल वारि बखाना । करि प्रसाद बस मघवन माना ॥७४७॥
मंत्र मंत्री जामवंत साथा ।[2] राम से बचन पूछा रघुनाथा ॥७४८॥
नल नील वीर हनुमंता ।[3] बाली सुत संग सैन समेता ॥७४९॥
लंकापुर कोठ बीर चलि आई । राम कथा रावन समुझाई ॥७५०॥
सीतहिं संग ले पगु पर परई । लंका राज कल्प भरि करई ॥७५१॥
सुर नर बंद देइ सम झाँखी । राज लंकेस्वर अधिके माँखी ॥७५२॥[4]
आइ कटक पीछे फिरि अइहैं । रावन आगे बात जनइहैं ॥७५३॥
है कोइ बीर धीरा ले जाई । धीरा ले लंकापुर जाई ॥७५४॥[5]
मंत्री मंत्र कहा समुझाई । अंगद बीरहिं आनि बोलाई ॥७५५॥[6]
अंगद बीर धीर बड़ भारी । अरु जवाब सम बात सँवारी ॥७५६॥
उत्तर के उत्तर बिहँ चहि लीन्हा । रावन सनमुख यह बीर टीका ॥७५७॥
रावन त्रासि धिक्कारो अहई । बाली सुत अंगद कहाँ अहई ॥७५८॥
अंगद बीरहिं बेगि बोलाई । गुप्त मंत्र सम प्रगट सुनाई ॥७५९॥
जाहु लंक गढ़ लेहु कर बीरा । तुह सम लायक मति को धीरा ॥७६०॥
सहस्र भुजा बल जा कहँ होई ।[7] तुह पौरुस बल तुले ना कोई ॥७६१॥

---

१ (ख) (ग) (घ) निजु = गुर ।
२ (ख) मंत्र मंत्री है जामवंत साथा । (ग) मंत्र मंत्री जामवंत है साथा ।
३ (ख), (ग), (घ) हनुमंता = हरिवंता ।
४ (ख) मोसी = बासी ।
५ (ख) धीरा लेइ लंकापुर जाई ।
६ (ग), (घ) आनि = बेगि ।
७ (ख) कहँ = कहाँ ।

हम मद मस्त पाव धरि माती ।[1] इमि करि पालि लजा जिमि मोती ॥७२४॥
यह म्रिगनयनी देखत मोही । कमल नैन सीता छवि सोही ॥७२५॥
तव उन्हि देखा ग्यान बिचारी । यह सीता नाहिं सखी हमारी ॥७२६॥
कीन्ह प्रनाम दोनों कर जोरी । दच्छकुमारि बिनति सुनु मोरी ॥७२७॥[2]
तुम जग जननी मातु समाना ।[3] जाहु जहां है सिव भगवाना ॥७२८॥

दोहा

कहै भवानी मर्म नहिं, कहै मर्म कर मूल ।[4]
सत पुर्ष वह अमर है, प्रान पिंड समतूल ॥५१॥

चौपाई

बोले सिव बचन तब नीका । ग्यान बिराग नाम निजु टीका ॥७२९॥
जोग जुक्ति भोग रस त्यागे । मनस प्रकास प्रेम रस पागे ॥७३०॥
जहां ते गमी तहां ते धावे । सत पुर्ष का मर्म ना पावे ॥७३१॥
वेद बेदांत कोइ सतगुर ग्याता । संत असंत बिबिधि मत माता ॥७३२॥
अजपा जप सुन धरि ध्याना । ब्रह्मंड खंड खोजि पद निर्वाना ॥७३३॥
निगम त्रिगुन कहे अबिगत रूपा । अनहद धुनि सत सब्द सरूपा ॥७३४॥
त्रिगुन निरास कर्म नाहिं कोई ।[5] भक्ति सक्ति जग आदर होई ॥७३५॥
ग्यान के मगु पगु धरे न कोई ।[6] धार क्रिपान बिछल अति होई ॥७३६॥
अगम अथाह थाह किमि पावे । इमि करि राम चरन पद गावे ॥७३७॥
सुनु उमा यह सगुन सरूपा । राम नाम पद बिमल अनूपा ॥७३८॥
जोगी जती जग भेख अलेखा । भक्ति भाव राम पद देखा ॥७३९॥
महा महा मुनि पंडित ग्याता । मोह मर्म भौ सब कह राता ॥७४०॥
एह पुग सत सम से भीना । ग्यान प्रगट जय केहु केहु चीन्हा ॥७४१॥
सतगुर मत कहे पुर्ष निनारा । निरलेप है निगुन न्यारा ॥७४२॥
जीव सिव संग सक्ति बिराजे ।[7] ब्यापित ब्रह्म सभे घट छाजे ॥७४३॥

---

१ (क), (घ), (च) हम = यह ।
२ (क), (ग), (घ) दच्छकुमारी [illegible] बिनती जोरी ।
३ (क) (ग) (घ) तुम = तुम्ह ।
४ (क) (घ) (च) पद ग्यान कर मूल ।
५ (क) निगुन निराम कर्म सब कोई ।
६ (क), (घ) (च) ग्यान के मगु पगु धरत न कोइ ।
७ (घ) जीव सीव सक्ति बिराजै ।

प्रसस्त नाम तोर सुन्दर सरीरा । रावन सुत तुह बड़ भट बीरा ॥७८०॥
भवन भिखारी तुह हम कंह जाना ।[1] धरि कै मदौं तोहरो माना ॥७८१॥
प्रसस्त कुमर सब कोपि बीरा । धरि के दाबेउ सकल सरीरा ॥७८२॥
उलटि के अंगद तेहि पछारी । तन मरोरि पुहुमी पर डारी ॥७८३॥
प्रान छूटा तन भौ बिकरारा । रावन आगे परा पुकारा ॥७८४॥

दोहा

महा भुजा बल बीर अति, बोला हांक प्रचारि ।
परा दंक गढ़ लंक मैं कांपि रहे नर नारि ॥५५॥[2]

चौपाई

तुरंतहि चलि पौरि पर गएऊ । मंदोदरी देखत तब भएऊ ॥७८५॥
राम के दूत दुआरे ठाढ़ा । रावन सुनि कोप अति बाढ़ा ॥७८६॥
बोला बचन मंत्री से कहई ।[3] यह कौतुक हम देखन चहई ॥७८७॥
भेजहु दूत तुरंत बोलाई । यह बानर की दोसर आई ॥७८८॥
अंगद तुरत निकट चलि गएऊ ।[4] चारो नजरि बरोबरि भएऊ ॥७८९॥
रावन उठि सिंघासन बैठा । अति मन गर्ब भुजाबल ऐंठा ॥७९०॥[5]
कहसि ना के तुम कहा से आई । आपन धर्म कहसि समुझाई ॥७९१॥
की सना संग परा भुलाई । कारन कौन लंकापुर आई ॥७९२॥
कहसि ना खोय बनचर बानी । नाहि तौ मारि करौं जिवहानी ॥७९३॥
अति गर्ब करि बोलसि तैं तीता । बालि सुत मैं राम के हीता ॥७९४॥

अंगद बचन

रामचन्द्र भेजा तुम पासा । सो निजु बचन करब परकासा ॥७९५॥

रावन बचन

हमसे बालि सदा हितकारी । सो तुम जनमा बड़ बिगारी ॥७९६॥

अंगद बचन

राम चरन पद पंकज मोही । जिनरे सो जो राम के द्रोही ॥७९७॥

रावन बचन

पिता बैर सुत नाहीं माना । तेहि सवार के कौन बखाना ॥७९८॥[6]

---

१ (ख) भवन भिखारी हमै तुम्ह जाना ।
२ (ग) रहे = रहा ।
३ (ख) (ग) बोला = बोली । (घ) बोले ।
४ (ख) तुरंत = तूर ।
५ (ख), (ग), (घ) बल = बप ।
६ (ख) बखाना = ठेकाना ।

पिता बैर जनि मानहु आई । अगिलि जनम धोएस प्रभुताई ॥७६२॥
चलि भो अंगद लीन्हो पाना । लंकापुर को कीन्ह पयाना ॥७६३॥
मैं किंकर सुह्द दासन दासा ।[1] क्रिपासिंधु चरनन तुह्द पासा ॥७६४॥
जैसन कर्म जैसन सो पावे ।[2] मातु पिता काह काम न आवे ॥७६५॥[3]
पवनसुत मगु पूछा जाई ।[4] बनखंड गिरि सभ कहि समुझाई॥७६६॥[5]
मैनाहि गिरि चढ़ि पथ निहारा । दच्छिन दिस है लंक बिचारा ॥७६७॥[6]

दोहा

राम चरन सिर नाए के, रहे दोना कर जोरि ।
सदा दयाल सिर ऊपर, करनी किछु नहिं मोरि ॥५४॥

चौपाई

महा बीर प्रबर भट भारी ।[7] मल्ल जुझार टरत नाहिं टारी ॥७६८॥
अंगद को मन संसय व्यापे । अगुमन पाव दपटि चहुं दापे ॥७६९॥
जौं फिरो होए कुल हानो । नाम हमार जक्त नाहिं जानी ॥७७०॥[8]
रामकाज करिहैं बीर केता । जिन्हि जिन्ह बांधेउ सागर सेता ॥७७१॥
पहुंचे सका कोटि निवासा । बृदि चढ़े सभ मिटिगो त्रासा ॥७७२॥
ऐन झरोखे रहु छपाई ।[9] सोर करहिं मर्कट एक आई ॥७७३॥
दौरि दूत पहुंचे सभ झारी । मुंह बिरावहिं देह-दह तारी ॥७७४॥
अंगद सोर गोसा चढ़ि गएऊ । धरि दामेक नीचे चलि भएउ ॥७७५॥
सो रन भो भयंकर भारी । पांच सात दत चपेटन्हि मारी ॥७७६॥
भागे दूत सब छोड़ पिकारी ।[10] प्रसस्त कु अर तब लागु गोहारी ॥७७७॥
कहो न की तुम के कर दूता ।[11] माएहु लंका बड भजगुवा ॥७७८॥
जौ कछु मांगहुं दवों मंगाई । नाहिं तौ चुपे जाहु पराई ॥७७९॥

---

१ (ख) किह्र = तुह्र ।
२ (ख) कर्म = करनी ।
३ (ग) काम = भय । आवे = आवै ।
४ (ख), (घ) पूछा = पूछ है ।
५. (ख) (ग) (घ) बन खंड गिरि सभ कहि समुझाई । (क) में 'चढ़ि' नहीं है ।
६ (ख) (ग) बिचारा = पसारा ।
७ रवीन्द्र (क) प्रति में 'महा महाबीर' है ।
८ (ख) (ग) (घ) जक्त = जगत ।
९. (ख), (ग) (घ) झरोखे = झरोखा ।
१ (क) तब = सभ । छोड़ = छोरि ।
११ (ख), (ग), (घ) कहो न के तुम्ह का कर दूता ।

सोरठा

बोले राम प्रचारि सुनु मंत्री मति धीर तैं ।
अंगद चरन उपारि, सीता सती सब जाइहैं ॥१०॥

चौपाई

मर्द मस्त मल्ल सब भारी ।[1] लोग एक दुई फिरि पारी ॥८१०॥
दस बीस लागे सौ पचासा । क्योंकि चरन सब भए निरासा ॥८११॥
जंह लहि कटक लंका मंह रहई । सब कोइ चरन उपारन चहई ॥८१२॥
हारि हारि बठे सब भारी ।[2] रावन गर्जि महा बल भारी ॥८१३॥
चला कोपि कर बिचला बीचे । गिरा मदुक पांव पर नीचे ॥८१४॥[3]
अंगद पांव मदुक पर दीन्हा । रावन गव गढ़ करि लीन्हा ॥८१५॥
सीसि मासि के दीन्हो डारी । वालीसुत महिमा अधिकारी ॥८१६॥[4]
चलसि ना गहसि राम के चरना । नाहिं तो काल निकट होए मरना ॥८१७॥[5]

रावन वचन

यह होए तपसी बर बढ़ाया ।[6] दूत भेजि बेसीब कराया ॥८१८॥[7]
अब हम संमर करब प्रचारी । देखिहैं देव लोक सब भारी ॥८१९॥
बालि के सुत तैं पूत कपूता । हम से बर कीन्ह अजगूता ॥८२०॥

अंगद वचन

तैं कपूत किया ठोर रोबे । सकल बंस आनिके खोवे ॥८२१॥
जड़ चठर से का कहि लीजे । राम चरन पद सुमिरन कीजे ॥८२२॥

दोहा

आनंद मंगल प्रेम अति, चला तुरंतहि झारि ।
राम चरन पद पंकज मिनती मंत्र बिचारि ॥५७॥

चौपाई

उठि कटक सब सिर नावा । वालीसुत मन पौरुख पावा ॥८२३॥
राम चरन पद अंगद देखा । रघुकुल कमल भान छबि देखा ॥८२४॥

---

१ (क), (ग), (घ) मस्त = मात ।
२ (क) बैठे = बैठि ।
३ (ख) पाँव पर = पाँव के ।
४ (ख) अधिकारी = बलभारी ।
५ (क) (ग) (घ) होए = भी ।
६ (ग), (घ) यह = बीए । (ग) ए ।
७ अर्थ कुछ अस्पष्ट है । संभवतः पाठदोष है । बेसीब का अर्थ अशिव अथवा अमंगल संभव है । यदि 'बेसी बकराया' पढ़ा जाय, तो संभवतः अर्थ होगा—'और अधिक बौखलाया' ।

अंगद् वचन

शिया घोर पापी अब भई । सोइ लवार भवन भी परई ॥७९९॥

सीतहि भेद चरन पर परई । कनक कोट राज सब करई ॥८००॥
दस सीस धरि छिनिहैं तोरा । ले चसु सीता कहा सुनु मोरा ॥८०१॥[1]
मर्वाहि जाए पांव पर परई ।[2] सका राज कल्प भरि करई ॥८०२॥
बाँधेउ सुर नर मुनि सम भारी ।[3] यह तपसी का कथा गुन भारी ॥८०३॥

दोहा

सिव सहाय सिर ऊपर, महा महा संग बीर ।
कर गहि चरन घुमाए कै, फेंकिहौं सागर तीर ॥४६॥

चौपाई

जौं ते चरन उपारसि मोरा । महा पौरुख बल जनिहौं तोरा ॥८०४॥[4]
चरन रोपि पुहुमी पर धरिहौं । ऊपर चरन ती सीतहि हरिहौं ॥८०५॥
देखिहैं तोर बल पैत समता ।[5] देखिहैं सुर नर रोपिहौं खेता ॥८०६॥
देखिहैं राम भो पुत्र पुराना । ये दोए बीर भड़े मैदाना ॥८०७॥
दखिहैं संभु भो संग भवानी । देखिहैं जस थल पौन भो पानी ॥८०८॥
देखिहैं सीता भो सुभ मनासा । भगद राम भाम निज दासा ॥८०९॥[6]

छंद

रोपेउ चरन यह घोर अब पर प्रगट सभै पुकारही ।[7]
दव देव भो सुर सब लहि बीर धीर बल पावही ॥१९॥
कोटि कोटि सम बीर थोर भिरहिं भूमि पर भावहीं ।
महा कठिन प्रन कनक कोट में राम रहि पछितावहीं ॥२०॥[8]

---

१ (ग), (घ) है चलु सीतहि सुनु कहा हमारा । (ख) ले चसु सीता सुनु कहा हमारा ।
२ (ख) परई = परहु । करई = करहु ।
३ (ख) बाँधेसी देव सुर सम भारी । (ग), (घ) बाँधेसो सुर नर देव सम भारी ।
४ (ख) (ग), (घ) जनिहौं = जनिहो ।
५. (ख), (ग) (घ) देखिहैं = देखिहो ।
६ (ख), (ग) (घ) अतिरिक्त पाठ—देखिहैं रोपब प्रभाव हंकारा, हारि जीति लखिहैं दो धारा ।
७ (ख) अब पर प्रगट = अब प्रगट ।
८ (ख) महा प्रन यह कनक कोट में राम रही पछतारही ।

बीस भुजा बल पोरुख आना ।[1] मुँह टूटा नाहिं मन पतियाना ॥८४१॥
हटिके कटक लागु मुँह कारी ।[2] दुर्ज बंस महिमा बड़ भारी ॥८४२॥
कहे मंदोदरी सुनु पिया मोरा । सिव के बर नाहिं निमही तोरा ॥८४३॥[3]
भसमासुर के बर जो दीन्हा । भए भसम तन खाक मलीना ॥८४४॥
हरिनाक्ष सिव बर जो माता । उदर फारि पुहुमी तन घाता ॥८४५॥
जाहीं उपासिक सिव के अहई ।[4] राम भक्त कहु कोइ न सहई ॥८४६॥[5]
जेहि सिर काले कीन्ह पयाना । बिपरीति बुधी मम भौ ग्याना ॥८४७॥
मनहित हित नाहीं परतीती । कहे मंदोदरी जस सिव जीती ॥८४८॥[6]
अति क्रोध होए अंध तब बोला । सिव के बर जग सदा अमोला ॥८४९॥
हरिनाक्ष बर सहज सरूपा । हम कहु तुम्हें औरि नहिं भूपा ॥८५०॥[7]
हम दस मस्तक आनि चढ़ाया । अब अटल बर लंका पाया ॥८५१॥
हमके तुम सिखावन लागी । तपसी तरफ बात बहुपागी ॥८५२॥
उठा कोपि खग ले हाथा । चाहिके काटौं तोहरो माथा ॥८५३॥
तब मंदोदरी बहुत डराई ।[8] चरन पकरि कै माथा नाई ॥८५४॥
ताहि अवसर बिभीखन आए ।[9] राम बात कछु कथा चलाए ॥८५५॥
सुनि के कोपेउ सकल सरीरा ।[10] लात मारि बिभीखन बीरा ॥८५६॥
उठि बिभीखन सिंह मँह आए । बहुत बिखाद राम गुन गाए ॥८५७॥

दोहा

चले बिभीखन राम पँह, तजी सकल परिवार ।
बहुरि भवन मँह आइके देखब लंक कुमार ॥५९॥

सेवक वचन

सतगुर वचन पूछों मैं तुमसे ।[11] सीता लच्छन कहो निजु हमसे ॥८५८॥

---

१ स्त्रीहरण (क) प्रति में 'बीस' के पहले 'राम' है ।
२ (ख) हटिके = हटिगे । (ख) (ग) (घ) लागु = लागी ।
३ (ख), (ग) (घ) तोरा = मोरा ।
४ (ख) (ग) (घ) जहाँ उपासिक सिव कर अहई ।
५ (ख) (ग) न = नाहिं ।
६ (ख) (घ) जिव = तेहि ।
७ (ख) हमके तुलहि अवरि कोइ भूपा ।
८ (ग) (घ) तब मंदोदरि रही डेराय ।
९ (ख) ताही = तेही । आए = आई । चलाए = चलाई ।
१० (ख) (ग) (घ) कोपेउ = कोपा ।
११ (ख) तुमसे = तुम्हसे ।

सीतल भौ तन माठो अंगा । रोम रोम पच भौ परसंगा ॥८२५॥
रघुपति बोले विमल रस बानी । सुधा समेत प्रेम रस सानी ॥८२६॥
छुछुम कथा सम कहा बखानी । रावन गर्व गर्द मंह सानी ॥८२७॥
तुम प्रताप निसिचर जीता ।[१] रावन मारि ले आयब सीता ॥८२८॥[२]
कहे राम तुम सभ गुन लाएक ।[३] सुर्ज बंस छत्री बड़ लाएक ॥८२९॥
अब मोरे मन भौ परतीती । सुर नर वद छोड़ायब जीती ॥८३०॥
उठी कटक आगे चलि भाई । निजु निजु मत्र कहा समुझाई ॥८३१॥[४]
बनफल मर्कट खावहिं जाई । भरि पेट खाहिं मोंछ फहराई ॥८३२॥
निसदिन सभ के दुआ बिचारा ।[५] कब गए देखब लक पगारा ॥८३३॥[६]

दोहा

अस मनसूबा कटक में, महा महा बलबीर ।[७]
सुर सभ भूमि पर मारिहैं, जा दिन मारहि हीर ॥५८॥

चौपाई

तुम जग जननी चीन्हा न नीके ।[८] जाके हाथ जक्त सभ जीके ॥८३४॥[९]
हरि आनऊ बहुत हरखाएउ ।[१०] अमित तेजि महा बिस पाएउ ॥८३५॥
महामाया यह जोति निरंता । जस थल पवन है फंद अनंता ॥८३६॥[११]
भान कला छवि राहु ग्रासा । छुटि गौ तम तिमिरि सभ नासा ॥८३७॥
दिनमनि दिन परगट होए भाई ।[१२]राहु केतु दहु कहाँ पराई ॥८३८॥
तुम कंह काल कीन्हो ग्रासा ।[१३]बिपरिति बुधी तुम्ह बन मासा ॥८३९॥
जिमि कर राहु सुर्ज कह छेका । इमि करि दैतम्ह अंगद टेका ॥८४०॥

(ख) तुम = तु ह, (घ) तुम्ह । (ख), (ग) (घ) निसिचर = निसाचर
२ (ख) (ग) (घ) आयब = आइब ।
३ (ख) (घ) तुम = तुम्ह ।
४ (ख), (ग) निजु निजु मंत्र कहा समुझाइ । (घ) निजु निजु कथा कहत समुझाइ ।
५ (ख) (ग) (घ) दुआ = एही ।
६ (ख) (ग) गए = हो ।
७ (ख) में = मंह ।
८ (ख), (ग), (घ) ना = नाहि ।
९. (ख) जक्त = समस्त ।
१० (ख) हरखाएउ = हरखायो । पाएउ = पायो ।
११ (ख), (ग) (घ) है = में ।
१२ (ख), (ग) (घ) भाई = भाए । पराई = पराए ।
१३ (ख), (घ) कंह = के ।

दोहा

कहँ दरिया सुनु दासहि, विवरन किया बनाए ।[1]
रहनि गहनि निजु नाम है दोखिया दूरि बहाए ॥६०॥

छंद

गुर गहिर ध्यान निजु नाम यह भव भम सम विसरावहीं ।
मच्छ मेक यह बक मास में पदुम झलामलि भावहीं ॥२१॥
झरत झरि तेह पंग में निमल मोती मनि छबि छावहीं ।
मिले सतगुर सब्द के धुनि दर्स दरिया पावहीं ॥२२॥

सोरठा

ब्रह्म भेद निर्लेप, जब मिले सतगुर दया ।
सम दुख होए छलछेम, पाप पुन्य नहिं व्यापिया ॥११॥[2]

चौपाई

गए विभीखन जंह हनुमाना । मिले प्रेम अति मुखर सुजाना ॥८८२॥[3]
रावन हम कंह दीन्ह निकारी । इमि कारन इहवां पगु धारी ॥८८३॥
क्रिपासिंधु से भेंट करावहु । मिला प्रेम से प्यास मिटावहु ॥८८४॥[4]
कर गहि हनुमंत लीन्ह उठाई ।[5] सनमुख राम विभीखन भाई ॥८८५॥[6]
राम कहा लंकेस्वर राई । तुरतहि राम विभीखन पाई ॥८८६॥
महि विभीखन बासन दासा । लंका निसिचर कोटि निवासा ॥८८७॥[7]
निसदिन भजन करहि भगवंता । सुनो स्रीराम कहे हनुमंता ॥८८८॥
सुमिरन करत रही रघुराई । रावन इन्ह कंह दीन्ह दुराई ॥८८९॥
भक्त भव के कौन है साथा ।[8] अस के बचन बोलेहि रघुनाथा ॥८९०॥[9]
भाव भक्ति जेहि भजन विरागा ।[10] सो जग धन्नी सदा सुहागा ॥८९१॥[11]

---

१ (क) किया = करी । (ख), (ग) किनी ।
२ (ग) होए = होत । (घ) होहि । (ख), (ग) व्यापिया = व्यापही ।
३ (क) मुखर = मुर ।
४ (क) मिला प्यास सम आनि मेटावहु । (ख) (घ) मिला प्रेम सम प्यास मेटावहु ।
५ (क) (ख), (ग) उठाई = लिपटाई ।
६ (क) (घ) भाई = आई ।
७ (क), (घ) निवासा = मेवासा ।
८ (क), (ग) (घ) के = कर ।
९ (क), (घ) इमि करि बचन बोले रघुनाथा । (ग) अस करि बचन बोले रघुनाथा ।
१० (ख), (ग) भाव भजन जेहि भक्ति विराग ।
११ (क), (ख), (ग) सो जन जग में सदा सुभागा ।

माया रूप सुख किमि नाहिं सहई । इन्हके संग सदा सभ बहई ॥८५९॥
सुनो वचन मैं कहौं बिचारी ।[1] समुझि लेहु निजु ग्यान सुधारी ॥८६०॥[2]
प्रथमे जाए जनकपुर रहई ।[3] कीन्ह परिपंच बहुत कछु सहई ॥८६१॥
जनक रिसी सोच बहुत बिचारी । जोग छुटा दुख भए गो भारी ॥८६२॥[4]
झपके चित्र सभै मोह माया । महा महा भूपति लाज गवाया ॥८६३॥
थिप लागे जैसे सेमर सूआ । टूटि गो भनुस उड़ा सभ भूआ ॥८६४॥
इमि करि माया खेल जब छोरी । सीस पटकि बठे मुख मोरी ॥८६५॥
मह सुलच्छन जेहि विह पैठी । दीपक बारि भवन मंह बैठी ॥८६६॥
जंह दीपक तंह किमी भावे । परि पतंग तन प्रान गंवाव ॥८६७॥
महामाया यह सभ जग गावे । अगम अथाह थाह किमि पावे ॥८६८॥
बिनु गुरु ग्यान सत नाहिं नौका । बिनु तरनी भवसागर डौका ॥८६९॥
सप्त पताल तहां वहि आई । खोजत जोजत अंत ना पाई ॥८७०॥
जौं सतगुर मिल कनहरिया । धरि पतवार खेवहिं तव दरिया ॥८७१॥
जीवन मुक्ति बिध गुर ग्याता । सभ बिधि पूरन प्रेम सुपाता ॥८७२॥
टीका मूल नाम निजु देखें । रहनि गहनि मैं थवरि न देखे ॥८७३॥[5]
जमराजा के काह बसाई । निस्चय अचल अमर होए जाई ॥८७४॥[6]
यहि सतपुरुस मानु परतीती । रहनि गहनि चलिहौं जम जीती ॥८७५॥
त्रिगुन सरीर मोह तन व्यापे । पाप पुन्य थपन मन लापे ॥८७६॥
द्रौपति तन है माया सरूपा । पांचो भाइ जुधिस्ठिर भूपा ॥८७७॥
तन्ह संग भीर करहिं नहिं पाइ ।[7] पैठि पतालहिं तनहिं गलाई ॥८७८॥[8]
सो माया रावन ग्रिह आई । महाफांस जम जाल बनाई ॥८७९॥
निकट निपट नियरे भइ जाता ।[9] भय लंका होइहै उतपाता ॥८८०॥
जौ मन धूत करहिं नहिं सम्हुरा । भव तो रावन रामहिं सम्हुरा ॥८८१॥

---

१ (ख) मैं = मन ।
२ (ख), (ग), (घ) सुधारी = सम्भारी ।
३ (ख), (ग), (घ) जनकपुर = जनकमंदिर ।
४ (ख) (ग) (घ) भए = भो । गो भारी = अधिकारी ।
५ (ख) (ग), (घ) रहनि गहनि में थवरि न पेखी ।
६ (घ) निस्चय अमर अमरपुर जाई ।
७ (ग) करहिं = करी ।
८ (ख) बैठि पताल हि तनहि गलाई । (घ) पांचो पत्ते हैं बाल बताइ । दरीपुस्त (क) प्रति में 'पताल' की जगह 'बाल' है ।
९ (ख), (घ) नियरे = नियरा । (घ) तब तो निकट निपट भइ जाता ।

दोहा

तब मोरे परतीति भयो, सही राम कर बीर ।[1]
मनसा बाचा कर्मना, भए अंभन मतिधीर ॥६२॥[2]

चौपाई

धाई कटक बिकट गिरि केता । सूर बीर सब सैन समेता ॥९११॥
राम लखन सुग्रिव कपिराई । बैठे जाए सबै सिर नाई ॥९१२॥[3]
दिवस बीते रैनि चलि आई ।[4] रघुबर द्रिस्टि दच्छिन के जाई ॥९१३॥
गरजत घन अति होत अंदोरा । परत द्रिस्टि मानो प्रबल कठोरा ॥९१४॥
छटा चमकि चहुँ ओर चलि आई ।[5] चपला चमके बहुत देखाई ॥९१५॥[6]
अचरज कौतुक बहुत अनूपा ।[7] रघुबर बोले बिभीखन भूपा ॥९१६॥
होत गई यह अगम अचाता । बिभीखन भक्त कहा सब बाता ॥९१७॥[8]
म्रिदंग ताल सब बाजु अघोरा ।[9] मनि मानिक है छत्र चकोरा ॥९१८॥[10]
चपला चमके होत अंजोरा ।[11] दरिसन छटा चमकि चहुँ ओरा ॥९१९॥
चौका चाँदनी छिन उतंगा । सिंगासन बैठा मस्त मतंगा ॥९२०॥
बीस भुजा दस मस्तक भारी । राम कटक सब करत बिचारी ॥९२१॥
रहे असोच सीस बर टीका । राम कटक सब जानत फीका ॥९२२॥
कोपे राम भयंकर भारी । काढेउ सर कर धनुख बिचारी ॥९२३॥[12]
मारेउ खैंचि बान कर तानी ।[13] गिरा छत्र मटुक भौ हानी ॥९२४॥
दरिसन तरकि रहा छितराई । बहुरि बास राम पँह आई ॥९२५॥

---

१ (क) कर = को ।
२. (क), (ग) (घ) मतिधीर = रघुबीर ।
३ (क) (ग) (घ) बैठे बीर सबै सिर नाई ।
४ (क) (ग), (घ) दिवस बीता रजनी चलि आई ।
५. (क) (ग), (घ) आई = धाई ।
६ (क) चमके = चमकत ।
७ (क) (ग) (घ) बहुत = अजब ।
८ (क) (ग) (घ) सब = सत ।
९ (क) ताल म्रिदंग सब बाजु अघोरा ।
१० (क) मनि = मन ।
११ (ख) होत = होए ।
१२. (ख) धनुख = धानुक ।
१३ (क) मारेसि बान खैंचि कर तानी ।

सो कुल साएक कुल मह नीका । सदा चरन पद पंकज टीका ॥८९२॥
सगुन निगुन निगम जो सोधे । कोटि जनम अघ पातक माधे ॥८९३॥[1]
जेहि कुल भक्ति सोई कुल साएक । जग है नाम सदा माद्दनाएक ॥८९४॥[2]
सतमंत मोहि अतर कैसा । हिदय कमल मम मंमर जैसा ॥८९५॥[3]
मधुकर मानति बास रस पाई ।[4] जौ रसना गुन गाए सुनाई ॥८९६॥
भक्ति बसि भगवंत विराजै । सब निकट सदा सिर छाजै ॥८९७॥
साधुदर्स जग महिमा कैसा । कोटि तीय दान पुन जैसा ॥८९८॥
बरन विबेक न ब्राह्मन छत्री । रघुकुल कमल नाम निजु जंत्री ॥८९९॥[5]
साधु सरस गुन सम नर नीचा । जैसे दिनमनि दिन है ऊचा ॥९००॥[6]

दोहा

स्यव कठिन करनी कठिन, कठिन विवेक विचारि ।[7]
गुरपद पंकज भजन करा यहि विधि हुए उबारि ॥९१॥

चौपाई

सुनो बिभीखन कहे रघुराई । के बीर कैसुस कीन्ह प्रभुताई ॥९०१॥
पवनसुत महा बल भागी । लंका जारि जो विरुद्ध उपागी ॥९०२॥
धरि धरि दहत लपेटन्ह आगा । तब रावन पंह परा पुकारा ॥९०३॥
राम प्रताप धक कछु नाहीं । बोले दैन सभै डर माहीं ॥९०४॥
ऐसन घोर निसंक अमाना । रावन गर्व किया पिसिमाना ॥९०५॥
पैठत नगर भए गौ पाछे । प्रसन्न कुम्भ के भगतहि मारी ॥९०६॥[8]
फिरि आए कह रावन बैठा । देखत गर्वी गर्वे ऐंठा ॥९०७॥[9]
उघर के उत्तर उन्हि दीन्हा ।[10] कहुत बात कछु संक न लीन्हा ॥९०८॥
राना चन्न सभै परचारी । हारे दैत काटि सब भारी ॥९०९॥
रावन गर्सि कोपि कर धावा । गिरि पड़ा तब मस्तक उठावा ॥९१०॥

१ (ख) (ग) (घ) पातक = पातम ।
२. (क) मोह = मुम ।
३ (ख) (ग) (घ) कैसा = कैसा ।
४ (ख), (ग) (घ) बास = बानी ।
५ (ख) (ग), (घ) जंत्री = मुत्री ।
६ (ख) है = पर ।
७ (क) (ग) (घ) विचारि = विचार ।
८. (ग) प्रसन्न = परन्न ।
९. (ख) देखते नहि घर्षी भरम ।
१० सर्वोत्तम (क) प्रति में 'उन्हि दीन्हा' के पहले 'बहुत' है ।

उठि मंदोदरी रावन साथा । करे गुलाल माथ दे हाथा ॥१४०॥[1]
कहे रावन सुनु जिया अभागी । किमि करि हाथ माथ तोर लागी ॥१४१॥
मारि कुम्भकरन इन्ह कर भाऊ । पिया निकट है कौन सुभाऊ ॥१४२॥
कहे मंदोदरी सुनु पिया मोरा ।[2] कहौं वचन जिमु मानु निहोरा ॥१४३॥
राम बान है कठिन कठोरा । तदपि तेज मति करहु मरोरा ॥१४४॥
पामर परे रसातल जाई । घर घरनी पर जात नसाई ॥१४५॥
मारेउ तारिकहिं एकै बाना । प्रान छुटा तन भौ विसिमाना ॥१४६॥
सुमहु चाप चढ़ावन गएऊ । ता दिन बल पौरुष का भएऊ ॥१४७॥[3]
कर गहि तानि तोरा जन्हि कैसे । खेलहिं सिसु संग धनुही जैसे ॥१४८॥
छोड़हु बैर मिलहु लए सीता । निति नए वचन कहौं मैं हीता ॥१४९॥
अस कहि वचन बोला अभिमाना । जिया मंत्र तँह राम बिलाना ॥१५०॥
जिया मंत्र राज कहि टीका । तोर वचन मोहि लागत फीका ॥१५१॥
जिया मंत्र दसरथ मति प्रीती । तज के त्यागेउ तिलक अनीती ॥१५२॥
जिया मंत्र तपसी नहि आना ।[4] मिरगा के पीछे ध्यान भुलाना ॥१५३॥

दोहा

मंदोदरी मन मैं सकुचि के, भवने रही लजाए ।[5]
कहुत सुनत नहिं मनि परे, अमित तेजि बिस जाए ॥६५॥

चौपाई

धाई कटक निकट नियराना । झलकत कंचन विदित अमाना ॥१५४॥
बसि सैन मंह संसय भएऊ । कनक कठिन गढ़ इमि कर रहेऊ ॥१५५॥
राम प्रताप तब गढ़ टूटे ।[6] राम सर बान रावन सिर छूटे ॥१५६॥[7]
घन बहु बीर अंगद हनुमंता । जिन्हि कस कटेउ फंद पतंता ॥१५७॥
किमि गढ़ चढ़िगौ दोनों बीरा । जिमि भूमि देखत कांपु सरीरा ॥१५८॥
कारिउ मान सुदिन दिन रोपउ । राम नाम लिखि घर घर रोपेउ ॥१५९॥

---

१ (ख) गुलाल = गुलाबन ।
२ (ख) जिया = पति ।
३ (ख), (ग), (घ) का = नाहि ।
४ (ख), (ग) (घ) नाहि = तब ।
५ (ख) (ग) (घ) भवन को रही लजाए ।
६ (घ) टूटे = टूटिहै ।
७ (ख) राम सर बान रावन सिर छूटे ।

दोहा

मारा रघुवर बान ते, लका परि गौ दंक ।
लंक बंक गढ़ टूटिहैं, कोइ न रहा निर्संक ॥६३॥[१]

चौपाई

सब मिलि कीन्ह जो मंत्र विचारी । मटुक गिरौं असगुन भौ भारी ॥६२६॥[२]
कोपि बोले अस कहे अनीता ।[३] मटुक गिरे का का भम बीता ॥६२७॥[४]
रही माष सब ग्रिह ग्रिह जाई । रावन रहा मंदोदरी ठाई ॥६२८॥
कनक पलंग पर छिरकु सुगंधा ।[५] सेज बंद मनु मनकत बंधा ॥६२९॥
हीरा लाल मोती मनि लागा । करत बिलास भोग रस पागा ॥६३०॥
अति निसक नींद तन ग्रासा । मदोदरी मन में बहुत उदासा ॥६३१॥
संग सती बोली अजित बानी । रावन गर्ब सदा उरमानी ॥६३२॥[६]
अजहुं न मानत मन परतीती । राम के धनुख बान सर बीती ॥६३३॥

पार्वती वचन

अमल खाए सब के वर देहू । क्रोध भए पीछे पिचि लहू ॥६३४॥
ऐसन वर का दीन्हो वाके । राम से बैर करहुं तुम जाके ॥६३५॥
सुर नर बाधि सभे बसि कीन्हा । भर्म भुलाना मति का हीना ॥६३६॥
अब नहिं रच्छा होए दसकंधर ।[७] भित्त मांगि लीन्हो मति अंधर ॥६३७॥
राम द्रोह किमि भक्त हमारा । कटिहैं माय सर्ग के धारा ॥६३८॥

सिव वचन

दोहा

(कहे) सिव सुनु वचन भवानी, माया गर्ब उतपात ।
जो मम भक्त ना (दास) राम को, भंमि रसातल जात ॥६४॥

चौपाई

रैनि बीति बासर चलि आई । रवि के उगे तिमिर छुटि जाई ॥६३९॥

---

१ (क) (ख) टूटिहैं = टूटिया ।
२ (ख), (ग), (घ) गिरौं = गिरा ।
३ (ग) कोपि बचन अस बोले अनीता । (ग) कोपि बचन अस बोला अनीता । (घ) कोपि बचन अति बोले अनीता ।
४ (ख) का का = केता ।
५ (ख), (घ) छिरकु = छिरकी ।
६ हस्तलिखित पाठ में 'बानी' तथा 'मानी' है ।
७ (ख), (ग), (घ) दसकंधर = दसकंधरा । अंधर = अंधरा ।

फिरि मारहिं फिरि जाहिं पराई । मानो कौतुक खेलहिं मनाई ॥१७६॥[1]
पवनसुत देखहिं सब ठाढ़े ।[2] देखि भुजाबल अधिके बाढ़े ॥१७७॥
अंगद सैन संग सब पासा । चढ़ि गिरि देखहिं अजब तमासा ॥१७८॥
जामवंत जानि भानु सब गर्वे । ठौरहिं ठांव सबै कोइ सर्वे ॥१७९॥
इंद्रजीत बान जब मारा । मानो बिजुली छटा पसारा ॥१८०॥
यहां राम वहां रावन देखै ।[3] महा महाबीर संमर लेखै ॥१८१॥
कोइ धाएल कोइ धमी पर परई । सैन समूह खोज को करई ॥१८२॥
तीन पहर मंडे मैदाना । एक एक बीर करै घमसाना ॥१८३॥
लछन धनुख बान जब धरई । कोटि कटक नीचे होए डरई ॥१८४॥
मेघनाद गढ़ भीतर गएऊ । कोटि कटक डेराबस भएऊ ॥१८५॥[4]
बासर बीते रैनि चलि आई । पवनसुत चौंकि कै आई ॥१८६॥[5]
कहै मंदोदरी तेजु सो भर्मा । राम चरन पर आनहु मर्मा ॥१८७॥
जाहि सुमिरे सब कुमति बिहाई । चारो फल बैठे घिह पाई ॥१८८॥
उन्ह से संमर करै जनि कोई । जमपुर जाए महातम खोई ॥१८९॥[6]
को है बीर करहिं प्रभुताई । रघुबर सैन समेटि चलाई ॥१९०॥
इंद्रजीत के देखिसि मारे ।[7] सैन समेटि बीर भूमि डारे ॥१९१॥

रावन वचन

कुंभकरन जमबे माहिं कीमा । सैन समेटि जामि की बीमा ॥१९२॥
अब मैं धनुख सब कर हाथा । काटि कटक खांवों रघुनाथा ॥१९३॥

मंदोदरी वचन

अबहीं करहुं बहुत पंडिताई । राखहु लाज न बदन गोसाईं ॥१९४॥[8]

---

१ (ख) कौतुक = कौतु । (ग) कजतु ।
२ (ख), (ग) (घ) पवनसुत देखा सब ठाढ़े ।
३ (ग) देखै = देखा । लेखै = लेखा
४ (ख) (ग) कोटि = किनी । (ग) किनी कटक डेरा सब भएऊ ।
५ (ख) पवनसुत आये कि के आई ।
६ (ख) जमपुर जात रसातल खोई ।
७ (ख), (ग) के = कए ।
८ (ख) गोसाईं = गर्वाई ।

तोले सखन निजु बचन विचारी ।[1] सुनु मंत्री तें मंत्र हमारी ॥६६०॥
उत पुर्ख निजु धरिके ध्याना । तब सग डारहुं मदाना ॥६६१॥[2]
माते काम सुफल सम होई ।[3] पुर्ख नाम गुन सदा समोई ॥६६२॥[4]
नाके हम हैं राम गोसाईं । जूगल जग प्रभुता मत पाई ॥६६३॥
लछमन बचन राम कहु नीका । मानो सर्व ग्यान का टीका ॥६६४॥[5]
सिला लखन पाहन दिन्ह डारी । सभ के मन घट भो उजियारी ॥६६५॥
दहिन हरासन बोले कागा । कीन्ह विचार सगुन निक लागा ॥६६६॥[6]
रावन सिर पर काग कराना ।[7] बाकी भ्रित्तु निकट नियराना ॥६६७॥
मुनि के कटक सभै हुरसाना । कन्ध संमर टारख मदाना ॥६६८॥
बानर भालु कूदि सभ ठाड़े । सभ के तन में रोस अति बाड़े ॥६६९॥
सैन समाज देखहिं रघुनाथा । लखन धनुष कसि लीन्हो हाथा ॥६७०॥
रावन मंत्री जो पूछा बोलाई ।[8] अब तो सैन निकट चलि आई ॥६७१॥
प्रचंड कटक लिए सग आपे । मानो भ्रित्तु काल जनु कापे ॥६७२॥
मेघनाद गहि लीन्हो पाना । करि सलाम तब कीन्ह पयाना ॥६७३॥

दोहा

इंद्रजीत तब निकस्या, महा महाबीर साथ ।[9]
सैन सभै खड़बड़ भई, देखहिं लखन रघुनाथ ॥६६॥

चौपाइ

कोटि बान एक बेरि तड़के ।[10] हात मंदोग जिमि बादर कड़के ॥६७४॥
मर्कट पाहन लीन्ह उपारी । मारहिं एक बार देहि डारी ॥६७५॥[11]

---

१ (ख) विचारी = विचारा ।
२ (ख), (ग), (घ) तब = तबही ।
३ (ख) काम = काज ।
४ (ख) (ग), (घ) गुन = निज ।
५ (ख), (ग) का = कर ।
६ (ग), (घ) (ध) कीन्ह विचार सगुन नीक लाया । क' पाठ अस्पष्ट है ।
७ (ख), (घ) कराना = दराना ।
८ (ख) (घ) रावन मंत्री को पूछा बोलाई ।
९ (घ) महा महाबीर सभ साथ ।
१० (ख), (ग) कोटिन्ह बान एक बेरि कड़के । (घ) कोटिन्ह बान एक बेरि तड़के ।
११ (ख), (ग) मारहि एक बार देहि डारी । (क) पाठ में 'मारहि एकबार देहि सभ डारी' है ।

सोरठा

सेल जिहेउ परचारि, महावीर वाके मद्दो ।[1]
सुर नर दखहिं झारि, कठिन मास तनि ध्यापिया ॥१२॥

चौपाई

लखन सुगीव पवनसुत आए ।[2] निरखत अंग घाव नाहिं पाए ॥१००७॥
लछुमन के सब लीन्ह उठाई ।[3] राम चरन पर पहुँचे भाई ॥१००८॥
राम देखा जब लखन कुमारा । बढा बिखाद तन भया बिकारा ॥१००९॥[4]
है कोइ जन जो जुक्ति बतावे । बहुरि प्रान घट भीतर आवे ॥१०१०॥
कहे बिभीखन सुनु रघुराई । सुखसैना मह जुक्ति बताई ॥१०११॥
तब एक लंका मंह टीका । वह सम पारख आनस नीका ॥१०१२॥
कहे बिभीखन मोह तन भएऊ । सक्ति बान तन प्रान न गएऊ ॥१०१३॥
घर ग्रिह सम कही समुझाई । गए पवनसुत बेगि लिआई ॥१०१४॥
आइ कटक मंह दीन्ह जगाई । माया मास तन बात न भाई ॥१०१५॥
राम कहा बिप्र सुनु बाता । कर जनि ताहु महा मुनि ध्याता ॥१०१६॥
सक्ति बान लखन तन लहेऊ । है तन प्रान बिकल मति भएऊ ॥१०१७॥
तब कहे सुनो श्रीरामा । तनिक सजीवन है सभ कामा ॥१०१८॥
धवलागिरि संजीवनि अहई । जो कोइ लाए प्रगट यह कहई ॥१०१९॥
पोथा तंहा संजीवनि मूरी । तब तनके दुख होइहैं दूरी ॥१०२०॥
राम कहा सुनो हनुमाना । तुह अस बीर कौन परमाना ॥१०२१॥
राम काम के सदा हजूरी ।[5] गिरि सम लेउ संजीवनि मूरी ॥१०२२॥
करि प्रणाम बिदा तब भएऊ । पवनगमन ते भागे गएऊ ॥१०२३॥
गए पवनसुत बिलंम न लाई । दैत एक मगु छेकिसि आई ॥१०२४॥
करे समाधि महामुनि जैसे । पाखंड भेख धरे कसि ऐसे ॥१०२५॥
सुंदर भेख बिबिधि कये ध्याना । कर में माला जपे भगवाना ॥१०२६॥
गुर होए सीख सिखावन लागा ।[6] पाखंड मंत्र प्रेम मति पागा ॥१०२७॥[7]

---

१ (क) (ग), (घ) बिहिक = बीता । (घ) नाथिके ।
२. (क), (ग) सगीव = नाग्रीव । (घ) नायिके ।
३ (क), (ग), (घ) लछुमन = लखन ।
४ (क) (ग) (घ) बढा बिखाद तन बिकारा ।
५. (घ) (ग), (घ) राम काज के दास हजूरी ।
६ (क) सीख सिखावन = सीख आवन ।
७ (घ) पाखण्ड मंत्र मन्द मति पागा ।

दोहा

बार बार तैं बोलसि, छोर मन भए गो मर्म ।
सैन सभी धरि काटिहों, जानति हौं तुम मर्म ॥६७॥[1]

चौपाई

इंद्रजीत निकला बल भारी । कोटिन्हि बीर कटक सम झारी ॥९९५॥
एक एक बीर महाबल जोधा । बानन्हि मारि सैन सभ सोधा ॥९९६॥
एक एक पाहन लीन्ह उपारी । फेंकहि कोटि कटक सम झारी ॥९९७॥
फिरि डारहि फिरि जाहि पराई । उलटि उखारि फिरि पहुँचो धाई ॥९९८॥[2]
इंद्रजीत गहि मारा बाना । सक्ति लगा लछुमन तन जाना ॥९९९॥
इंद्रजीत गहि सैन सकेला । जमी पर जामवंत रहा अकेला ॥१०००॥[3]
रन महं मंत्र सिखावन लागे । राम चरन गहि लागु अभागे ॥१००१॥
छोड़ेउ तोहि तन देखउ डीला । लागेउ बचन बाउ अनमीला ॥१००२॥[4]
बहुरि बोलसि पनि मुख मग्याना । बानन्हि मारि करो पिसिमाना ॥१००३॥
रन मंह बीर बोलसि परचारी ।[5] बाम काम सिगार संवारी ॥१००४॥[6]
गर्जि उठा कहा नाहि माना । दुबो बीर मचे मदाना ॥१००५॥
मारा जामवंत मुर्छा आई । उलटि जागि बहुरि फिरि धाई ॥१००६॥

दोहा

सुर सई संग्राम मैं, छत्री सनमुख आए ।
राम क्रिपा सिर ऊपरे सो पगु पीछे न जाए ॥६८॥

छंद

दौरि दपटि सम बीर भूमि पर लरहि सभै प्रचारि के ।[7]
गर्जि बान जमी पर गर्द होत तदपि तेम तंह आए के ॥२३॥
भागहि मर्कट निकट नहि उलटि देखहि सम बाएके ।
बीर धीर सम सैन बाके संमर करहि बनाए के ॥२४॥[8]

---

१ (ख) (ग) तुम = मोरि, (घ) हमारि ।
२ (ख), (ग) पहुंची = पहुचहि ।
३ (घ) जामवंत = जामुवंत ।
४ (घ), (ग) लागेउ = लागेहु ।
५ (ख) (ग), (घ) बीर = सूर ।
६ (ख) सिगार = सागर ।
७ (ख) धीर = बीरहि ।
८ (ख), (ग) (घ) सैन = ऐन । (ख) करहि = करै ।

प्रथम आइ कहहु किमि ताता । महा बिकल होवहिं निजु माता ॥ १०४४ ॥
सीन्ह उठाए सुनो हो ताता । मुख से बोलहु तनिक नहिं बाता ॥ १०४५ ॥[1]

दोहा

करुना करत बिलाप अति, आए पवनसुत वीर ।
सजीवन रगरि पियाइया मेटेउ सकल तन पीर ॥७०॥[2]

चौपाई

लंका के बैद लंका महँ गएऊ ।[3] बहुरि पवनसुत कटकहिं भएऊ ॥१०४६॥
उठे लखन तन भए जो नीका । सकल कटक तिय मनि जौं टीका ॥१०४७॥[4]
सब मिलि कीन्ह जो मंत्र बिचारी । होत प्रात जिमि कुधी पसारी ॥१०४८॥[5]
दसकंधर तहवाँ चलि गएऊ । कुंभकरन जहँ सयन करएऊ ॥१०४९॥[6]
बिबिध भाँति करि तेहि जगाई । उठी क्रोध करि अति अकुलाई ॥१०५०॥
पूछे बचन सुनो हो ताता । कवन लीन तोरे आठो गाता ॥१०५१॥
किमि कारन तुम्ह मोहि जगाई । सो निजु मम कहो समुझाई ॥१०५२॥
तपसी संघर कीन्ह बहु भाँती ।[7] मारेउ कटक कीन्ह उतपाती ॥१०५३॥
जगजननी हरि लाएहु जबहीं ।[8] लंका बिपति परा महँ तबहीं ॥१०५४॥[9]
सिव के बर तुम रहो भरोसा ।[10] यह संकट कहु कैसे मोसा ॥१०५५॥
अब तुम बर राम से कीन्हा । दीनबन्धु करता नहिं चीन्हा ॥१०५६॥
क्षुधावंत मोहि भाउ न बाता । महिषा मद मंगावहु ताता ॥१०५७॥
खाइसि मासु गर्व तन फूला । हमसे वीर कवन यह तूला ॥१०५८॥[11]
एक मद तन काया कलधारी । लगा वचन नहिं धात संभारी ॥१०५९॥[12]

---

१ (घ) मुख से तनिको ना बोलहु बाता ।
२. (ख) पियाइया = खाइया । (ख) (ग) (घ) मेटि सबा तन पीर ।
३ (ख) (ग) (घ) महँ = में ।
४ (घ) मनि जौं = मनि का ।
५. (ख), (ग) (घ) होत प्रात फिर छुधि पसारी ।
६ (ग) (घ) (ख) करएऊ = करीऊ ।
७ (घ) संघर = मारि ।
८ (ख) लाएहु = लावाएहु ।
९. (ख) अतिरिक्त पाठ—तपसी मारि कियो अति धूमहीं । लंका जारि भसम करि तबहीं ॥
१० (ख) (ग), (घ) रहो = रहहु ।
११ (ख) (ग) हम सम वीर कवन जग तूला । (घ) हमसे वीर कौन जग तूला ।
१२. (ख), (ग) लगा = लागा, (घ) लागे ।

पवनसुत तब बूझा बिचारी । है कोइ दत मोह मद हारी ॥१०२८॥[1]
कालनेम सोचहि धरि ठाटा । धरि पटकेउ तब छुटिगी बाटा ॥१०२९॥

दोहा

मारेउ तेहि पछारि के, गिरि से दीन्ह गिराए ।
चले पवनसुत रोस अति, पल में पहुँचा जाए ॥९९॥[2]

चौपाई

तनिक संजीवनि होत सहाई । करगहि गिरि एक लीन्ह उठाई ॥१०३०॥
बिबिधि बन ताहो सुठि भारी ।[3] अति बल भुजा तनिक नहि हारी ॥१०३१॥
रमिता राम चल रग मिलि जाई । जीव सीव माया लपटाई ॥१०३२॥
ब्रह्म अलंकित त्रिगुन सरीरा । माया मोह करुना तन पीरा ॥१०३३॥[4]
माया प्रबल जानहि गुन ग्याता । राम बिकल देखे मुख भ्राता ॥१०३४॥[5]
बिना मोह करुना नाहि होई । आनद मंगल दुख ना समोई ॥१०३५॥
मोह सत्य मिथ्या जनि जाने । सामर्थ के नर दोस न मान ॥१०३६॥[6]
राम सोच तन दुख अति आवे । लखन बिना सीता नहि भावे ॥१०३७॥
रहेउ एक संग भएउ बिछोहा ।[7] हिरदय प्रेम अति लागत मोहा ॥१०३८॥[8]
अर्धराति रहे पंथ निहारी । कपि नहि आए दुखित तन भारी ॥१०३९॥
लीन्ह उठाए लखन नहि जागे । करि बिबेक करुना तन लागे ॥१०४०॥
पिता मोह मोर लखन मेटावा । सखा संग सम दुख बिसरावा ॥१०४१॥[9]
दोसरे हरेउ निसाचर सीता । जो कछु मोर लखम पर बीता ॥१०४२॥
अब मोरे किछु कहि नहि जाई ।[10] महा मोह तन ब्याकुल भाई ॥१०४३॥[11]

---

१ (ख) (ग) मद = भ्रम ।
२. (ख) चले पवन अति रोस करि ।
३ (ख) (ग), (घ) ताहो = तामें ।
४ (ख), (ग), (घ) माया = माया ।
५. (ख) (ग), (घ) मुख = मुख ।
६ (ख), (ग), (घ) दोस = दोष ।
७ (ख), (ग) (घ) भएउ = भया ।
८ (ख) हृदय बिरह तन व्याप मोहा । (ग) हृदय बिरह तन व्यापत मोहा । (घ) हृदय बिपत्ति तन व्यापत मोहा ।
९ (ख), (ग), (घ) सखा संग सम दुख बिसरावा ।
१० (ख) (ग) (घ) किछु = कछु ।
११. (ख), (ग), (घ) भाई = दाई ।

जग्य आरंभ तब कीन्हो जाई ।[1] आहुति होम बहुत विध लाई ॥१०७६॥
बहुविधि कीन्हो जग्य का साजा ।[2] यहि मंह बोले बिभीसन राजा ॥१०७७॥
करहिं जग्य तब जीते न कोई । मारहि कोटि कटक बड़ होई ॥१०७८॥[3]
बोले लछन कोपि कर बानी । राम सपथ करिहों तेहि हानी ॥१०७९॥
गए लछन सब सैन समेता । जहां जग्य जिमि रोपेउ खेता ॥१०८०॥
बानर भालु सब मारहि बनाई । खींचि केस तब लीन्ह उठाई ॥१०८१॥
किरिहसि जुद्ध कोपि कर जागा । जाके तेज कटक सब भागा ॥१०८२॥
फिरि संगर कीन्ह सो बारा । मारा लछन तन भए गौ बारा ॥१०८३॥

दोहा

भुजा फेंका उपारि के, सुलोचना के पास ।
देखत अति बिसमय भई, तन में उपजी त्रास ॥७२॥[4]

चौपाई

तीनि स्याम कीन परिहरई । जाके मारि पिया मोर मरई ॥१०८४॥
कीन्हो भुजा तब करौं उपाई । तब मन धारि पिया संग जाई ॥१०८५॥
तुम पति मोर पत्नी पति जाली ।[5] कर गहि खरी दीन्ह तब आली ॥१०८६॥
तुम पति मोर हो मैं तुह नारी ।[6] लिखो खरी सब मर्म बिचारी ॥१०८७॥
खींचि जमीं पर अंक की रेखा ।[7] इंद्रजीत तब भुजा बिसेखा ॥१०८८॥[8]
कंदर्प कामिनि कबहिं न रीता । भोजन नींद पानि उन्हि जीता ॥१०८९॥
दुआदस बर्ख जोग जो जाना । तीनि वस्तु दिन कबहिं ना आना ॥१०९०॥
दसरथ तनय लछन है नाऊं । मारा मोहि भुजा बल ठाऊं ॥१०९१॥
सनमुख सूर होए रन मंह जूझा ।[9] निस्चय बचन सुलोचना बूझा ॥१०९२॥[10]
रावन आगे बात जनाई । इंद्रजीत रन जूझा जाई ॥१०९३॥

---

१. (ख) जग्य = जपता ।
२ (ख), (ग) (घ) कीन्हो = किन्हो ।
३ (ख) जब = तब ।
४ (ख) (ग) उपजी = उपजा ।
५ (ख), (ग) (घ) तुम = तुह ।
६ (ख), (ग) (घ) तुह पिया मोर हो मैं तुह नारी ।
७ (ख), (ग) (घ) की = कर ।
८ (ख) (घ) तब = जब, (ग) तत ।
९. (ख) (घ) सन्मुख सूरा रन मह जूझा ।
१० (ख), (ग), (घ) सुलोचना = सिच लोचनी ।

सुनो तात मैं कहौं बिचारी । मारों कटक सैन सब भारी ॥१०६०॥
उठा गर्जि करि तबहीं कैसे । मानो कालि घटा है जैसे ॥१०६१॥[1]
सुर सब कंपित भए दुखारी । त्राहि त्राहि भगवान पुकारी ॥१०६२॥
बीरभूमि कहा परधारी । मर्कट पाहन लीन्ह उपारी ॥१०६३॥
मारहिं एक बार सब जाई । धरि धरि फेंकहिं कहि छितराई ॥१०६४॥[2]
लेइ लपेटि मुख मंह नाई । कान नाक दे जाहिं पराई ॥१०६५॥[3]
परे पाहन तन दुख ना ब्यापे ।[4] गर्जे कोपि कटक सब कांपे ॥१०६६॥
नल नील बीर हनुमाना । मारहिं पाहन बज्र समाना ॥१०६७॥
अंगद भालु जामवंत बीरा । करहिं जुधी देखहिं रघुबीरा ॥१०६८॥

दोहा

बानन्हि मारि साहिस किन्हो, खसा धरनी पर जाए ।[5]
धन धन कटक पुकारिया, प्रभुता कही न जाए ॥७१॥[6]

चौपाई

कुम्भकर्न जब रन मैं जूझा ।[7] दसकंधर तपनी बस बूझा ॥१०६९॥
हिरदय सोच मुख बात न आवे ।[8] अति होए गर्व अंत नहिं लावे ॥१०७०॥
इन्द्रजीत तंह लीन्ह बोलाई । करु समर मारो दोनों भाई ॥१०७१॥[9]
बहु दोना मारे कटक बौराई ।[10] सिव के बर सब होत सहाई ॥१०७२॥
निकसा कोपि कीन्ह बड़ जूधी । टारेउ सैन महा बल बूधी ॥१०७३॥[11]
गर्जि बान अति होत अघाता । जिमि पर जुधी होत उतपाता ॥१०७४॥[12]
रावन सैन सघारेउ केता । इन्द्रजीत तब छोड़ा सेता ॥१०७५॥

---

१ (क) (ग), (घ) कालि = काला ।
२. (ख), (ग), (घ) फेंकहिं = फेंकै ।
३ (ख) (ग) (घ) दे = देइ ।
४ (ख) (ग) (घ) ना = नाहि ।
५. (क) साहिस = साही ।
६ (ख) (ग), (घ) कही = कहा ।
७ (ख) (ग) (घ) मैं = मह ।
८ (क) हिरदय सोच मुख बात बनावै । (ग) हृदय सोच तन बात न आवे ।
९. (ख) (ग) (घ) दोनों = दूनौ ।
१० (ख), (ग) (घ) दोनों = दुनो ।
११ (क) पाठ अस्पष्ट है अतः (ग)–(घ) पाठ स्वीकृत किया गया। (ख) टारेउ सैन सबै बल बूधी।
१२. (ख), (घ) जिमि जुधि पर होत उतपात ।

बिनय कीन्ह सुनो रघुनाथा ।[1] इंद्रजीत के दीजिए माथा ॥१११२॥
बोले राम तब बचन बिचारी । चीन्हि के माथा लेहु निकारी ॥१११३॥
मैं पतनी पतिबर्त जो ठाना ।[2] मन बच कर्म औरि नहिं आना ॥१११४॥[3]
बिहसा नैन मुख मुसुकाना । तब पतनी पति लीन्ह अपाना ॥१११५॥[4]
धर औ माथ दीन्ह रघुनाथा । चली तुरंत ससम के साथा ॥१११६॥
धन धन कहेउ प्रेम अति लहेऊ । प्रीति सदा गुन परगट भएऊ ॥१११७॥
साहस प्रेम अगिनि नहिं आना । अति प्रेम जनु चकी बिधाना ॥१११८॥[5]

दोहा

तब रावन बिसमय भए, अब किछु कहा न जाए ।[6]
महिरावन के सुमिरहिं उभय पहर मैं आए ॥७४॥

चौपाई

तेहि सो मंत्र जो कीन्ह बिचारी । अब किछु प्रभुता करो सँभारी ॥१११९॥[7]
हीत प्रीति कर यह बड़ कामा । यह दोनों बाँधि ले आवहु धामा ॥११२०॥[8]
देबी पर सीस आनि चढ़ावहु ।[9] तिरपित होए महाफल पावहु ॥११२१॥[10]
रावन बहुत जो कहा बुझाई । तब उन्हके चित निस्चय आई ॥११२२॥
बाँधि लेउँ सिर काटौं जाई । अस प्रभुता अस कीन्ह बड़ाई ॥११२३॥
सुत बर तुम देहु देखाई ।[11] काटो सात खण्ड तेहि जाई ॥११२४॥
भए बिदा तब चले तुरंता । खोजत खोजत भेंटेउ मंता ॥११२५॥[12]

---

1 (क) बिनय = बिनै । सुनो = सोनो ।
2. मैं = मई ।
3 (क), (ग) (घ) औरि = दूजा ।
4 (क) (ख), (ग) लीन्ह = कीन्ह ।
5 (ग) जनु = जासु । (क) (ख), (घ) बिधाना = बेधाना ।
6 (क) (ख), (घ) भए = भई ।
7 (क), (ख) (घ) किछु = कछु ।
8 (ग) यह दोनों = ए दोनों (ख) ए दो ऊ (घ) ए दुनो ।
9 (ख) (ग), (घ) सीस = सिर ।
10 (ख) (ग) (घ) तिरपित = त्रिपिति । (क) (ग) होए = होहि ।
11 (क) (ग) बर = बएर । (ख), (ग) तुम = तुम्हें, (घ) तुम है ।
12. (ख), (ग), (घ) भेंटेउ = भेटेन्हि ।

मैं आइवि जहवां पति मोरा । बहुत बिनय करि कीन्ह निहोरा ॥१०९४॥
रावन सुनत सोक अति भएऊ । हिरदय दुखित मुख बात न भएऊ ॥१०९५॥
जंह सुत नारी तहां चलि गएऊ । बहुबिधि मातिन्हि वही बुझएऊ ॥१०९६॥
तब द्रिढ़ करि अस बोलेउ बानी ।[1] इंद्रजीत बल भुजा बखानी ॥१०९७॥
ऐसन सुत मोरे ग्रिह जनमा । किहिसि पुत्री आने सभ मरमा ॥१०९८॥
तपसी बांधि ले आएउ ओऊ । हिरदय प्रेम मैंन अति छोऊ ॥१०९९॥
जो कछु करत सभै अति नीका ।[2] बिन दीपक मंदिर है फीका ॥११००॥
बाम काम कौन जग अहई । पिय बिनु जिवै कौन फल लहई ॥११०१॥[3]
दीजे हुकुम जनि बात बढ़ाई । पति परिपंच कहा गुन गाई ॥११०२॥
तब लंकेस्वर बोला बानी । धन्य कहै जग सो मत ठानी ॥११०३॥[4]
चौपहला पर डारि ओहारा ।[5] पांच सात तेहि लागु कहारा ॥११०४॥
त्यागा हित अनहित परवारा । त्यागा कुल सकल परिवारा ॥११०५॥
साहस करि तब चली बिचारी । त्यागेउ लाल रतन सम भारी ॥११०६॥
सभै त्यागि पान सुख दीन्हा । ऐसो भोग जगत मह कीन्हा ॥११०७॥[6]

दोहा

राम लखन सभ सैन संग, यात्रिक रहे निहारि ।[7]
सीतहिं पठायो रावना, रहा भुजा बल हारि ॥७३॥

चौपाई

बोले राम सुनु मंत्री ऐसे । इंद्रजीत कर तिरिया जैसे ॥११०८॥[8]
सनमुख आए कीन्ह प्रनामा । बदन छपाए बोले सीतामा ॥११०९॥
कन्या कौन कहो छवि भाऊ ।[9] किमि कारन तुम हम पंह आऊ ॥१११०॥
त्रिभुवन नाथ मैं सदा मनाया । क्रिपा करहु मैं होहि सनाया ॥११११॥

---

१ (क) (ग) (घ) द्रिढ़ करि = दीरघे । बोलेउ = बोला ।
२. (ख) कछु = किछु । (ख) करि = करत ।
३ (क), (ग) (घ) बिनु पिया जिए कवन फल लहई ।
४ (क) मत = मोती ।
५. (क), (ग), (घ) डारि = डार ।
६ (क), (ग), (घ) देखे = तपसी ।
७ (क) राम लखन संग सैना यात्रिक रहे निहारि । सीतहिं पठायो रावना रहा भुजा बल हारि ।
(ग), (घ) सब यात्री रहे निहारि ।
८ (क) (ग) कर = की । (घ) के ।
९. (क) (ख) कन्या = कहु गया ।

नामदेव कसि जागे ऐसे ।[1] दास कबीर ध्यान मस जैसे ॥११३९॥
मच्छींद्र जागे सम केहु जाना ।[2] सतगुर भेद बिरले पहचाना ॥११४०॥
दोनों जने से चलि भी कैसे ।[3] मानो मोस दास से जैसे ॥११४१॥[4]
पहुँचा ग्रिह मंह पहुठा जाई ।[5] सोई पिया तेंह बात जनाई ॥११४२॥[6]
देखे पिया सु वर बर दोऊ । राजकुमार कोमल है सोऊ ॥११४३॥
परम सुन्दर है अति छवि नीका । इन्ह कह राज सम्पत्न का टीका ॥११४४॥
जतन करहुं जनि मारहुं मोरे । करों विनय सुनु मानु निहोरे ॥११४५॥
नैन नारि मीचे हरे पानी । पर पिया देखि सदा समपानी ॥११४६॥
यह माता तुम सुत करि जानी ।[8] उन्हि से पुर्व किमि करो बखानी ॥११४७॥[9]
इन्ह से बैर करे जनि कोई । जमपुर जाए रसातल सोई ॥११४८॥
मंदोदरी बचन रावन नाहिं माना । इमि करि पिय तुम मर्म भुलाना ॥११४९॥
देवी भुमि बहुत दिन भएऊ । ये दोनों माथ चढ़ावन चहेऊ ॥११५०॥[10]
बाजन बाजु देवी हरखानी । नेवज बनाए थार भरि आनी ॥११५१॥[11]
मुसुक बाँधि बोले अभिमाना । बीचि जग मस करे तेयाना ॥११५२॥[12]
का कर तुम हो को तुम आना ।[13] सुमिरहु ताहि जो इस्ट बखाना ॥११५३॥
इन्हके मारे का फल पैहो । महा कठिन दुख दारुन पैहो ॥११५४॥[14]
कस पिया ते बोलसि अनीती ।[15] इन्ह से तुम से कस कर प्रीती ॥११५५॥
जन्म जन्म को जानहि मर्मा ।[16] कहीं भक्ति कहीं भव में भर्मा ॥११५६॥

---

१ (क) नामदेव कबि जब जागे ऐसे ।
२ (ख) (ग), (घ) मच्छींद्र जागे सर्व जग जाना । (घ) (ङ) दुनो जने से चलि भो कैसे ।
३ (ख) दुनो जने चलहिं भो कएसे । (घ) है = किए ।
४ (ख) कैसे = कएसे । मंह = में । ग्रिह = गिही ।
५. (ख) पहुँचा = पहुँची ।
६ (ख), (ग), (घ) तेंह = तहाँ ।
७ (ख), (ग), (घ) कह = के ।
८ (ख) मोए मातु पिता हम सुत के जाना ।
९ (ख), (ग) (घ) उलाय पुर्व किमि करो बखाना ।
१० (ख), (ग) दोनों = दोऊ ।
११ (घ) नेवज = सेवा ।
१२. (ख) तेयाना = तैयाना ।
१३ (ख) (घ) तुम = तुम्ह, (घ) तुम्है ।
१४ (ख) पैहो = सहिहो ।
१५. (ख), (घ), (ङ) ते = तुमि ।
१६ (ख), (घ) जन्म जन्म = जनम जनम । जानहि = जानै ।

...ीरि बसा फिरि मटका ठाढ़ा ।[1] चहुँ दिसि चौकी है बड़ गाढ़ा ॥११२६॥[2]
...र विचार अति गर्व गुमाना ।[3] आमि लेउ दोनों मनुज समाना ॥११२७॥[4]
राक्षस माया दीन्ह अति भारी ।[5] आयेउ नींद कटक सब भारी ॥११२८॥
...मुनमनि सांपिनि बढ़े विकारा ।[6] जिन्हि यह डसेउ सकल संसारा ॥११२९॥
ध्यान युक्ति चैतन्य जो जाने ।[7] उचित भक्त सो कबहिं न माने ॥११३०॥[8]
जागत सोवत सब्द समाई । मनसा कामिनि पास न आई ॥११३१॥[9]
मन सब महं रहा समाई । बने चैतन्य विलग होए जाई ॥११३२॥[10]

दोहा

महिरावन तब पहुंचा, जहं सोय सकल रघुबीर ।[11]
हनुमंत चौकी चहुं ओर, महा कटक सब भीर ॥७५॥[12]

चौपाई

इमि करि जम जीव जो ठगाई ।[13] परबस परे दया बड़ करई ॥११३३॥
नाम प्रतीति भक्ति जो जाने । अमिउ नाम सुधा सम माने ॥११३४॥
जंह सुधा तह विखि नहिं आई । विमल प्रेम सदा मुसकाई ॥११३५॥
जगत रनि सूते नहिं भोरा । सतगुर बचन करहुं अति भोरा ॥११३६॥[14]
महामोह फंद बड़ भारी । बांधेउ सुरति फांस विष डारी ॥११३७॥
गोरख जागे साधि सरीरा । हनुमंत जागे सोवै रघुबीरा ॥११३८॥[15]

---

१ (क), (ग) बसा = बसे ।
२ (क), (ग), (घ) दिसि = ओर ।
३ (ख) अति = अन्त ।
४ (क) लेउ = लेहु । (ख), (ग) दोनों = दुनो । (घ) दुनो ।
५ (ख), (घ) अति = तब । (घ) राक्षसी माया अति दीन्हों भारी ।
६ (ख) सांपिनि = सांपिन । बढ़े = बढ़ेवो । (क), (ग) (घ) विकारा = बेकारा ।
७ (क) ध्यान चेतनि मिलु युक्ति जब जाने । (घ) ध्यान चेतनि युक्ति जो जाने ।
(घ) ध्यान चैतन्य युक्ति जो जाने ।
८ (क) उचित = उत्तम ।
९ (घ) आई = आईं ।
१० (ख), (ग) चैतन्य = चैतनी । होए = हो ।
११ (क) (ख) (ग) तब = तहां ।
१२ (ख), (घ) हनिवंत चौकी चहुं दिसि ।
१३ (क), (ग) जो = जब, (घ) जई ।
१४ (ख) बचन = सब्द ।
१५ (ख), (ग), (घ) हनुमंत = हनिवंत ।

दोहा

सक्षम कहा सत पुर्ख है, भाकर मैं मिजु दास।
हमर सेवक हनुमान है, रावन मानस भास ॥७७॥[१]

चौपाई

पाएहु मुना यवावहु गासा । कर देवसहतों तोहरे हामा ॥११७१॥[२]
प्रसाद पाए जो भरि पेट भटका । उठा कोपि जमीं पर पटका ॥११७२॥[३]
तुना भुमाइ वहो दए मारी ।[४] मोह मारि पुर्ख कैसे पासा सारी ॥११७३॥[५]
मम धनाय भोग अकुलामा ।[६] धन पवनसुत करे बखाना ॥११७४॥
राम दोहाई तेहि छोड़ि दीन्हा । मारिच पेट बहुत सूल कीन्हा ॥११७५॥[७]
छोड़ि बांध बाहर चलि भाएउ ।[८] देखत कटक सभे मिलि धाएउ ॥११७६॥[९]
खुद खुद चरन कीन्ह परनामा ।[१०] भानंद मंगल पूरन कामा ॥११७७॥
महिरावन के मम तुम राखा ।[११]सोर उपारि मरोरेउ साखा ॥११७८॥[१२]
अब ना कहो कौन प्रभुताई ।[१३]सिया से मिलहु तुरंतहि जाई ॥११७९॥
होइहै सम किछु तुम जो भखिहौ ।[१४]लंका राज बहुरि फिरि भखिहौं ॥११८०॥
कहे दसानन मुख किमि मोरिहौं ।[१५]तपसी दल मेल जनु तोरिहौं ॥११८१॥[१६]
बीस भुजा दस मनुख जो राखा । छुटिहै बान अनेकन्हि साखा ॥११८२॥

---

१ स्वीकृत (क) प्रति में 'काके रावन मानस भास' पाठ है। (ख), (ग), (घ) मोर सेवक हनुमान है रावन मानस भास।
२ (ख) करि देवकैसतो तोहरे हाथा। (ग), (घ) करि देवसाहत तोहरे हाथा।
३ (ग) (घ) (ङ) जमीं = धिमीं।
४ (ख) (ग) (घ) तुना = तवा।
५ (ख) पासा = पसा। (ख), (ग) सारी = डारी।
६ (घ) मम = अवर।
७ (घ) पेट = पेटन। (ग) पेटन्हि।
८ (ख) बांध = बांधन।
९. (ख), (ग), (घ) धाएउ = धाएऊ।
१० (ख) (ग) (घ) कीन्ह = करहि।
११ (ख) के = कए।
१२. (ख), (ग), (घ) मरोरेउ = मरोरिसि।
१३ (ख) कहु = काम। प्रभुताई = परभुताई।
१४ (ख) होइहौ सब कछु जो तुम भखिहो।
१५. (ख) किमि = का। (घ) काहे।
१६ (ख) पूरी पंक्ति का अभाव।

दोहा

दोनों समुझि कर राखिए, न तौ कर मिजि पछताए ।[1]
जहाँ सौ बाँधि ले आएहु, तहाँ देहु पहुँचाए ॥७६॥

चौपाई

उठी कटक तब परा खँभारा । राम रूप नहि लखनकुमारा ॥११५७॥
उठी पवनसुत सुन जो देखा । चहुँ ओर राम लखन कह पेखा ॥११५८॥
चहुँ ओर दौरि लंगुर जो पटके । बोले गजि निमि बादर तड़के ॥११५९॥[2]
दौरि झपटि खोजो चहुँ जाई ।[3] महिरावन की बात जनाई ॥११६०॥
जम कसरि तोरि पहुँचा जाई ।[4] देवी दाबि तंह रहे छपाई ॥११६१॥[5]
तब कहु भेद देवघर में गएऊ ।[6] मय लोग सब देखन धएऊ ॥११६२॥[7]
लंका रावन भया अभीता । भवि होए गय महा रन जीता ॥११६३॥
नारि पुर्ख मिलि बाजी लाई । पासा डार्यहि बहुत बनाई ॥११६४॥
मैं जीतौं तपसी बन बाता । तै जीतसि लंका उतपाता ॥११६५॥
सुमिरौं जो तोहरे कोइ हीता ।[8] मार्ग माथ विलंब बहु बीता ॥११६६॥
अब तो परहुँ संकट महु नीके । बीक हाथ अजेया जौं बीके ॥११६७॥[9]
मर्कट भालु कटक तुम साजा । मारन चहु लंकेस्वर राजा ॥११६८॥
अब तो फँद परेहुं तुम भाई ।[10] करिहों कहाँ कौनि प्रभुताई ॥११६९॥
मैन सुग्रा मुख बात न भावे ।[11] कहो कछु तोहरे जिस भावे ॥११७०॥[12]

---

१ रवीन्द्र (क) प्रति में 'मिजि फेरि पछताए' पाठ है । (ख) (ग), (घ) दोनों = दुनो ।
(ख) कर = कै । तंहा = तांहा (घ) तहवां ।
२ (ख) दौरि = दवरि । (ख), (ग) (घ) तड़के = भड़के ।
३ (ख), (ग) (घ) खोजो = खोजै ।
४ (ख) कसरि = कसर । तोरि = तोर ।
५. (ख), (ग), (घ) तंह = तहाँ । (ग) रहे = रहा ।
६ (ख), (ग), (घ) कहु = कोप ।
७ (क) धाएउ । (ख), (ग) (घ) पाठ रवीन्द्र ।
८ (ख) सुमिरहु जो कोइ है तोर हीता । (ग) सुमिरहु जो तोर है कोइ हीता ।
(घ), सुमिरहु जो तोहरे कोइ हीता ।
९ (ख) (ग) बीक के हाथ अजेया ज्यों बीके । (घ) बीक हाथ अजया जो बीका ।
१० (ख) (ग) अब तो फँद परे तुम भाई ।
११ (ख) मुख = कछु ।
१२. (ख) जिस = जीव ।

अंधकार कछु नजरि न आवे । सूर्ज कला कहुँ जाए छपावे ॥११९६॥
मारा राम हंस सम छूटा । दसकंधर के सिर सब टूटा ॥११९७॥[1]
दस सिस छिनि रावन पत भएऊ ।[2] सुर नर बंध सबै छुटि गएऊ ॥११९८॥
भारथि मंगल सब मिलि गाया । राम प्रताप चहुँ दिसि छाया ॥११९९॥
बुधी बड़ी छन्दबंध बखाना । कवि भास्कर से भेद भमाना ॥१२००॥
बात बढ़ाए कहँउँ कवि केता । भक्ति ग्यान प्रेम सिधु हेता ॥१२०१॥

दोहा

आनंद मंगल सुर नर, रहे सबै हरखाए ।
सीता कली कमल की, विकसि भानु छवि छाए ॥७९॥[3]

चौपाई

कटक टिकाए मनुज सिए साथा । सिय के पास चले रघुनाथा ॥१२०२॥[4]
हिम के ठेल कमल जैसो सूखा ।[5] सीता बदन कमी करि दूखा ॥१२०३॥[6]
मही धरन रज तिलक उँजारी । सर्द सितल तन मन सम बारी ॥१२०४॥[7]
सिया सुफल धरि मिले श्रीरामा । आनंद मंगल पूरन कामा ॥१२०५॥
सजन प्रनाम कीन्ह सिर नाई । दीन्ह असीस भक्ति पद पाई ॥१२०६॥
सिय पति प्रेम प्रिया रघुनाथा । जुगल रहे मिल सिय के साथा ॥१२०७॥[8]
ससि सीतल सर्द अमी अनूपा । जस कमोद कलि विकसि सरूपा ॥१२०८॥[9]
राम नाम मानो अमित भरिया । प्रेम प्रवाह सदा सुख कैसा ॥१२०९॥[10]
सीप सिया तन सदा सनेहा । परे बूंद तब उपजै देहा ॥१२१०॥
सेवाती सरग संजोग बनाया ।[11] सीप संधु मुकुता मनि पाया ॥१२११॥
दसरथ वंश तप कीन्हो हेमा ।[12] जनकसुता विनती अति प्रेमा ॥१२१२॥

---

१ (ख), (ग), (घ) हंस = सम ।
२. (ख) (ग), (घ) सीस = सिर ।
३. स्वीकृत (क) प्रति में 'भानु छवि छवि छाए' पाठ है ।
४ (ख) चले = मिले ।
५ (ख) हिम = हम । (ग), (घ) हेम ।
६ (ख), (ग) सीता = सीया ।
७ (ख) सर्द = सदा ।
८. (घ) के = एक ।
९ (ख) कमोद = कमल ।
१० (ख) प्रवाह = परवाह ।
११ स्वीकृत (क) प्रति में 'सेवाती सर्व संजोग' पाठ है ।
१२. (घ) हेमा = प्रेमा ।

काम ब्याल फंद सम डारौं । काटि कटक दोना के मारौं ॥११८३॥[1]
काटि कटक सम सैन मोराना । तबहुँ न गर्व तेजहुँ अभिमाना ॥११८४॥
नाती पुत्र भ्राता सम गएऊ । हमरे जिये कौन फल सहेऊ ॥११८५॥
अब हम संमर करब अति नीका । मोरे मारे कटक महिं टीका ॥११८६॥[2]

दोहा

पेन्हि सनाह संजोर सम, उठा गर्जि कर कोपि ।
माया भ्रम सम कटक में, चहुँ ओर डारिसि तोपि ॥७८॥

छंद

महाबीर यह बीर बांके बान सरासन छुटिया ।
होत गई यह पहल जमीं पर एक एक सिर टूटिया ॥२५॥
कटक भागे परकि सीस सम झटि सम मिसि जूटिया ।[3]
काल ब्याल सम फंद डारेउ लछन रामहिं लूटिया ॥२६॥

सोरठा

पाहन लीन्ह उपारि, बरि पर्वत सिर डारिया ।
पवन तनय कीन्ह मारि, रावन रोम ना टूटिया ॥१३॥[4]

कहे नारद सुनो खगराया ।[5] बांधेउ नाग फांस धरि काया ॥११८७॥
दौरहुँ बगि छोड़ावहुँ जाई । राम लछन के लेहु मुकुताई ॥११८८॥
चले गरुड़ तब कीन्ह पयाऊ । चलत नाग फांस छुटि जाऊ ॥११८९॥
रावन बल मायम्मो खाई ।[6] छूटे राम लखन दोनों भाई ॥११९०॥
बहुरि कटक सम उठि उठि ठाढ़े । पवनसुत रोस अति बाढ़े ॥११९१॥
द्रुम उपारि घुमावहिं कैसे । परे बज्र सिर ऊपर जैसे ॥११९२॥[7]
रावन गर्जि उठा फिरि भारी । राम कटक कंहु लागी कारी ॥११९३॥[8]
राम धनुख बान जब पींधा । मारा माय परा जिमि नीधा ॥११९४॥
भागा फेरि निसाचर राया । बहुरि किहिसि फिरि प्रगटी माया ॥११९५॥[9]

---

१ (ब) दैनों के = दुनो कए । (ग) (घ) दुनन्हि ।
२ (घ) अतिरिक्त पाठ—रावन बचन ।
३ (ब) (ग) सीस = सिर । (ब) (ग) सम = सबै ।
४ (ब) तनय = तनै । (ग) पवन = पौन ।
५ (घ) सुनो = सुनु । (ब) अतिरिक्त पाठ—नारद बचन ।
६ एडीटेड (क) प्रति में 'मायम्मो' पाठ है । (ब) (ग), (घ) छूटे राम लखन दोनों भाई । रावन बल मायम्मी खाई ।
७ (ग), (घ) बज्र = बजर ।
८ (ब) (ग) (घ) कंहु = मंह ।
९ एडीटेड (क) प्रति में 'फिर भागा' पाठ है । (ब) (ग) प्रगटी = प्रगट ।

सेत बांध तंह कटक सिराये । संभु उवग सहरि तंह छाजे ॥१२३१॥[1]
तंह रामेस्वर थाप बनाई ।[2] परदच्छिन करि चले गोसाईं ॥१२३२॥[3]
कानन्ह भेंटा महामुनि ग्याता ।[4] कीन्ह प्रनाम प्रेम मति राता ॥१२३३॥
चित्रकूट कटक सब आए ।[5] परथम बन जंह राम सोहाए ॥१२३४॥
उठी महामुनि आसिख दीन्हा ।[6] करि प्रनाम प्रीति मति लीन्हा ॥१२३५॥[7]
कोल्ह किरात भील सब आए । राम चरन रज सीस नवाए ॥१२३६॥

दोहा

राम चरन रज प्रीति करि, अति आनन्द गुन गाए ।
धन्य परछन तुम राम पद, संतन्ह सदा सहाए ॥८१॥

चौपाई

रैनि रहे निसु मुनि के साथा । सब विरतंत कहे रघुनाथा ॥१२३७॥[8]
करि प्रनाम आगे पगु दीन्हा । सब मुनि उठि परदच्छिन कीन्हा ॥१२३८॥
आए प्रयाग निकट नियराई ।[9] अति आनंद सो अंग न समाई ॥१२३९॥[10]
सुरसरि सर्व कटक असनाना । सिया राम पद पंकज जाना ॥१२४०॥
चरमुख प्रीति प्रयागपुर आई । भारद्वाज मुनि मंदिल सोहाई ॥१२४१॥[11]
आसिर्वाद मुनि धन्य स्रीरामा । दैत निकंदन पूरन कामा ॥१२४२॥
रैनि रहे विरतंत सुनाया । भारद्वाज मुनि गुन सब गाया ॥१२४३॥
सिया के मिली महामुनि नारी । अति होए मगन प्रेम रस डारी ॥१२४४॥
जनकसुता तुम सदा सयानी ।[12] जहां मति बरे सिया नहिं मानी ॥१२४५॥
राजगुरु मुनि सब दिन भएऊ । भक्ति प्रेम निसु कथा सुनएऊ ॥१२४६॥

---

१ (ख), (ग) (घ) तंह = तहां ।
२ (ख) (ग), (घ) तंह = जहां । (ख) रामेस्वर = रमेसर ।
३ (ख) परदच्छिन करि तब चले गोसाईं ।
४ (ग) (घ) कानन्ह भेंट महा मुनि ग्याता । (ख) कीन्ह भेंट जाहां मुनि ग्याता ।
५ (ख) (ग) चित्रकूट = चित्रकूटी । (ख) आए = आय । (ग) सोहाए = सोहाय ।
६ (ख), (ग) आसिख = आसिख ।
७ (ख) करि परनाम तब प्रीति अति लीन्हा ।
८ (ख), (ग) (घ) कहे = कहा ।
९ (ग) प्रयाग = परयाग । (ग), (घ) प्रयाग = प्रयाग ।
आनन्द = आनन्द । (घ) आनन्द = आनन्द । (घ) आनन्द = आनन्द ।
१० (ख), (ग) (घ) जहां भारद्वाज मुनि मंदिल सोहाईं ।
११ (ख), (ग), (घ) तुम = तुंह ।

सम विधि आनंद पूरन काजा । तिलक दीन्ह बिभीखन राजा ॥१२१३॥
बिभीखन भूप मंदोदरी रानी । कहा बिरंचि बेद मह बानी ॥१२१४॥
संसय सागर सम घट भइई । राज काज मद सम कोइ चढ़ई ॥१२१५॥
सगरे कुल के कीन्हो नासा । तब पाएउ राज बिभीखन पासा ॥१२१६॥[1]
माया प्रबल है फंद अनंता । ग्यान धरि माया बिच तंता ॥१२१७॥[2]
कुल के घात पाप बड़ भइई । मुक्ति छोड़ि भवसागर बहई ॥१२१८॥[3]
मा पतियाउ तो साखी साचा । भक्ति बिबेक ग्यान ते बाचा ॥१२१९॥[4]
क्रिस्न कहा पांडव से बानी ।[5] कुल के घात पाप बड़ मानी ॥१२२०॥
मोर मुक्ति कहो कैसे होई ।[6] जौं लगि प्रेम मुक्ति नहिं सोई ॥१२२१॥[7]

दोहा

संत दरस दिन चाहिए, बेदर्दी बेपीर ।
धन्य सोइ धन्य ग्यान है, मन माया है बीर ॥८०॥

चौपाई

अंगद कपि जामवंत साथा । लखन मंत संग रघुनाथा ॥१२२२॥
कनक कोट से बाहर भएऊ । अति भौ हरख गुन बिधि करि गएऊ ॥१२२३॥
जोजन चारि तहाँ सम टीका । कटक बीच राम मनि टीका ॥१२२४॥[8]
उठी प्रात सभी सिर नाई । बीर धीर सम संत सुहाई ॥१२२५॥
लखन राम सिया बिच सोभा । अति होए हरख राम पद लोभा ॥१२२६॥
मगु में मगन आनंद बिराजे । राम प्रताप सिया सिर छाजे ॥१२२७॥
गढ़ सुमेर छह पहुँचे भाई ।[9] सब मिलि बन फल खावहि जाई ॥१२२८॥
बठि कटक सभै कोइ साथा । सुग्रिव प्रेम प्रिया रघुनाथा ॥१२२९॥[10]
उठी प्रात तब चले तुरता ।[11] सागर बांधि कीन्ह एक अता ॥१२३०॥

---

१ (ख), (ग) घात = काटे । (घ) काटो ।
२ (घ) तंता = मंता ।
३ (ख), (ग), (घ) भइई = परइ ।
४ (ख) ते = मे ।
५. (ख), (घ) क्रिस्न = बिसुन । (ख) पांडव से बानी = देखो से बानी ।
६ (ख) (ग) (घ) होइ = पर्इ ।
७ (ख) (ग) (घ) जौ लगि प्रेम भक्ति नहि कइ ।
८ (ग) कटक बिचारि राम सिसु टीका ।
९ (ख) (ग), (घ) छह = टोहा ।
१० (ख) प्रिया = प्रीति ।
११ (घ) तुरत = बरात ।

सबै बोलाए बोले मिथु बानी । भोग सुगंध सुधा सम सानी ॥१२६६॥

दोहा

तिलक दीजे मिथु राम कहँ, बैठि सिंगासन जाए ।
नाद बेद सब बिमल बोलत, मुनि मिथु कथा सुनाए ॥८३॥[1]

छंद

मोह कोह सब दूरि बिलगेउ आनन्द मंगल गावहीं ।[2]
सखी सुगंध सब रंग सोभा चंदन चर्चित लावहीं ॥२७॥
भूषन बसन अजाब झलकत सुंदर कली सोहावहीं ।[3]
रूप रासि सिया सब सुंदर भवन दीप मनि भासहीं ॥२८॥

सोरठा

भएउ संपूरन सब काज संशय सकल विहाए के ।[4]
अवधपुर में राज, कुल कमल रघुबर बने ॥१४॥

चौपाई

कटक बिदा कीन्ह श्रीरामा । पहुँचि मिथु सब अपने धामा ॥१२६७॥
बालमीक मुनि तुलसी भाखा । राम चरित्र जगत सचि राखा ॥१२६८॥[5]
कहेउ ग्यान मिथु कथा प्रसंगा । भक्ति बिबेक मोह होए भंगा ॥१२६९॥
आदि अंत पूछा सिख भाई । कुसुम कथा मिथु ग्यान सुनाई ॥१२७०॥
भक्ति बिबेक औ ग्यान बिरागा । आतम दरस ग्यान तब जागा ॥१२७१॥[6]
सत बचन मिथु करहि बिबेका । निगम निखेद ग्यान बिच देखा ॥१२७२॥
ग्यान रसिक बिनु मन नहि धीरा ।[7] चंचल इमि करि सकल सरीरा ॥१२७३॥
अस्ट जोग कस्ट करि साधे । उलटि पवन ब्रम्हंडहि बांधे ॥१२७४॥
मेटरि भट नाचे बहुतेरा । काम कठिन तन छोड़े ना डेरा ॥१२७५॥
सर्व व्यापिक सूर नर माता । संचित मोह सुखद तन राता ॥१२७६॥
मोह बिटप उर पट लिए हाथा । भरम मनोरम गनि गुन गाथा ॥१२७७॥
मुक्ति न जोग कुजोगहि राता । जिमि चरिकसि के टूटे न पाता ॥१२७८॥

---

१ (क), (ख), (ग) बुलाए = बोलाए ।
२. (ख) (ग) (घ) बिलगेउ = बिलगैगो ।
३ (क) (ख) (ग) कली सु दर सोहावहीं ।
४ (क) भयो संपूरन सब काज ।
५. (क), (ख), (ग) सचि = रचि ।
६ (ख), (ग) (घ) आतमदरस अनह तब जागा ।
७ (क) रसिक = रस ।

सर्व सोहि जगत मनि जैसे । सोरि भार्जा जग मधु ऐसे ॥१२४७॥[1]
त्रिया सोइ प्रेम प्रिय नीका ।[2] भूसन बसन भक्ति बिनु फीका ॥१२४८॥
पतिबर्ता के गसे ना मोती । सम सखियन मैं झलके जोती ॥१२४९॥[3]
मधु महि बचन मोद मन भरई । सो पतनी पति पायन्ह परई ॥१२५०॥
ललित भक्ति सोइ नैं नीता । सिया प्रेम पद पंकज हीता ॥१२५१॥[4]
जुगल रहे जग धाखर सोऊ ।[5] मुक्ति मांगि अमित फल सोऊ ॥१२५२॥
सोई सिव सोइ सक्ति बखाना । धन्य धन्य जग मैं परधाना ॥१२५३॥[6]

दोहा

राम मुरति तुम्हमैं बसै, तुम मन बसे जो राम ।
सदा जुगल एक साथ है, सब विधि पूरन काम ॥८२॥

चौपाई

तुम सम लाएक किमि मैं कहेऊ । महा मुनि निया ध्यान पर रहेऊ ॥१२५४॥
तुम सम सुघरि सकल गुन हीता ।[7] मुनि पद पंकज सदा पुनीता ॥१२५५॥
करि प्रनाम अवधपुर गएऊ ।[8] नर नारी सब हर्षित भएऊ ॥१२५६॥
कौसिला केकई सुमित्रा माता । कीन्ह प्रनाम प्रेम निजु दाता ॥१२५७॥
आरति सब मिलि मंगल साजा । बहुत मनोरित बाजन बाजा ॥१२५८॥
करहिं निछावरि देहिं सब दाना । पाठ पुरान भक्ति भगवाना ॥१२५९॥
गुरु के चरन परावहुं आंखी । उपजा प्रेम मन बहुं पाखी ॥१२६०॥
मुनि के लेइ मंदिल मैं गएऊ । अग्य पवित्र करि पूजा करेऊ ॥१२६१॥
भोजन करहिं विप्र सब आई ।[9] दछिना दान दीन्ह रघुराई ॥१२६२॥
भरत लखन सतुर्घन साथा । सब मिलि तिलक दीन्ह रघुनाथा ॥१२६३॥
राजा राम सीता भी रानी । सर्वघट बिरसित अमित प्रानी ॥१२६४॥[10]
अवध के लोग सब मुग्रद मनंदा । जल मैं कुमुदिनी पूरन चंदा ॥१२६५॥

---

१ (ख) (ग), (घ) भार्जा = भारजा ।
२. (ख), (ग), (घ) प्रिय = प्रिया ।
३ (ख) (ग), (घ) मै = मैह ।
४ (ख) (ग) (घ) प्रिया = त्रिया ।
५. जग = यह ।
६ स्वीकृत (क) प्रति में 'जग मैं सो प्रधाना' पाठ है ।
७ (क) हीता = म्याता । (ख) (ग), (घ) पाठ स्वीकृत ।
८ (ख) प्रनाम = परनाम ।
९. (ख) विप्र = बिप्र ।
१० (ख), (ग) (घ) प्रानी = पानी ।

दोहा

तब हम अमरापुर मँह, पुहुप पसंग सुखवास ।[1]
अम्रित झरि जहु चालहिं, सुनहु वचन निजुवास ॥८५॥[2]

चौपाई

तब रहे धरती धम औ दाया । तब रहे धुम पप सम छाया ॥१२९७॥[3]
तब रहे वेद विविध जग आनी । तब रहे संग औ सीव भवानी ॥१२९८॥[4]
तब रहे गंगा जमुना नीरा । तब परगट जग बड़ बड़ बीरा ॥१२९९॥
तब रहे गोरख जोगी । भक्त भेष भूप रस भोगी ॥१३००॥
नवो नाथ रहे गोरख जोगी । भक्त भेष भूप रस भोगी ॥१३०१॥
जँह तँह मुनि सब जप तप करई ।[5] जग्य जोग निसु बासर लहई ॥१३०२॥[6]
विविध पूज रहे पथ अनंता ।[6] मता लपटि अरुझे मुनिमंता ॥१३०३॥
सतगुर मत सब जग नहिं रहई । आपन-आपन गुन सभ कहई ॥१३०४॥
चौथ लोक है मुक्ति के मूला । आवागवन मेटे सब सूला ॥१३०५॥[8]
जम कागज फिरि कियो निसंका । भव में भर्म भया निसंका ॥१३०६॥
सामर्थ संत जेहि होहिं सहाई । ऐगुन गुन सभ करहिं भलाई ॥१३०७॥
मँह सक करनि करे नर सोई । बाँह गहे अम्रित फल सोई ॥१३०८॥
त्रिविध ताप तन मेटनिहारा ।[9] दया करहिं भव सेंधु उबारा ॥१३०९॥

दोहा

जग में आए प्रगट भयो, त्रिगुन लीला संवारि ।
कयेउ ध्यान निजु निर्मल, सत्त सब्द निरुमारि ॥८६॥

छन्द

विकि विमल गुर कंज पद मह आनंद मंगल गावहीं ।
मुक्ति महिमा ध्यान की गति तिमिर सकल मेटावहीं ॥२१॥[10]

---

१ (क) (ग), (घ) मँह = में ।
२. (ख), (ग), (घ) सुनहु = सुनो ।
३ (क) धुमं = धुएम । पप = पतर ।
४ (क), (ग) तब रहे सिव औ रंभ भवानी ।
५. (ख) जहाँ तहाँ मुनि जपतप करई ।
६ (क) रहे = है ।
७ (ख) (ग) मुनिमंता = मुनि संता । (क) भया = भयो ।
८. (क), (घ) भव में भ्रम भया निरसंका ।
९ (क) निहारा = निहारा ।
१० (क) तिमिर = त्रिविध (क) (ग) (घ) तिमिरि । यही पाठ स्वीकृत ।

रतन भार्जा मो मम साघा । मोर मगन मन इमि करि नाचा ॥१२७९॥
नैन रूप द्रिस्टि मंह पेख । सक्ती छबि सम व्यापिक देख ॥१२८०॥
सुखमनि मह रतन प्रासेउ जबहीं ।[1] कामिनि रूप मनि छबि धरु तबहीं ॥१२८१॥
कंदर्प धरि के लेत निचोरी । सुख प्रति प्रापित अम्रित थोरी ॥१२८२॥
सतगुर दया द्रिस्टि जब देखे । तब गति ग्यान सुधी तम होव ॥१२८३॥

दोहा

सत गुर चरन सुधा सम, विनय कीन्ह सिर नाए ।
ग्यान गमी निजु भाखिए, सुनो स्रवन चित लाए ॥८४॥

चौपाई

तुम सतगुर हो ग्यान का टीका ।[2] भेख भम मोहि लागत फीका ॥१२८४॥
सतगुर चरन सुधा सम लहो । बिमल चरन पद पंकज पहो ॥१२८५॥[3]
महा महामुनि बिमल पुनीता । बेद बिदित पढ़ि गुर गमि गीता ॥१२८६॥
इन्द्र पुर्स नहिं किमि करि जाना । माया ब्रह्म नाहिं पहचाना ॥१२८७॥
तब तुम जग में रहेहु कि नाहीं । पूछे बिना भर्म नहिं जाहीं ॥१२८८॥
करहुं बिवेक कहों समुझाई ।[4] बिमल प्रेम निजु कथा सुनाई ॥१२८९॥
जो यह देखे सोइ सम जाने । सोई ठाकुर मूल बखाने ॥१२९०॥
तब हम रहेउ पुरुष के पासा । पुहुप दीप जह प्रेम सुबासा ॥१२९१॥
तख्त पास पुहुप की खामी ।[5] तंह रहे बठि सुकित सत ग्यानी ॥१२९२॥[6]
हंसन्ह पास बिनोद बिलासा ।[7] अम्रित झरि जहं बरिसे पासा ॥१२९३॥[8]
बेद पुरान कथा सम कीन्हा । इमि करि पुरुष नाम नहिं चीन्हा ॥१२९४॥
ब्रह्मा बेद बिदित जग जानी । तीनि लोक इमि कथा बखानी ॥१२९५॥[9]
तीर्थ ब्रत जोग तप करई । मुनि मत आपन सुख सम लहई ॥१२९६॥

---

१ (ख) भर्म = भरम ।
२ (ख) (ग), (घ) मह = इहा ।
३ (ख) (ग) (घ) का = के ।
४ (ख) (ग) (घ) पैहो = गएहो ।
५. (घ) कहों = कहा ।
६ (घ) पामी = खीमी ।
७ (ख) (ग) (घ) तहां बैठ रहे सुकित ग्यानी ।
८ (ख) हंसन्ह = हंसन । (घ) हमन्हि ।
९. (ग) (ग) (घ) अम्रित झरि बरिसे बहु भासा ।
१० (ख) तीनि = तीनों ।

इमि कर देखे बदन कर रेखा । अहे विवेह द्रिस्टि मैं पेखा ॥१३२४॥[1]
जो कवि कहेउ सोइ सम साखा । जेवों छबिभानुकिरनि रविराखा ॥१३२५॥
निर्गुन सर्गुन निगम रवि राखा । दुर्म छोड़ि बरने सम साखा ॥१३२६॥[2]
ऐसो माया जक्त रवि राखा ।[3] ब्रम्हा बिस्नु हैं ताकर साखा ॥१३२७॥
कवि कलि कर्म संत जग चीना । पिहू पिहू वक्ता कहीं प्रमीना ॥१३२८॥
दधी मथे घ्रित बाहर आवे । इमि कर सत्त नाम निजु पावे ॥१३२९॥
जौं लगि टीका मूल न पावे । बहुरि बहुरि भव सागर आवे ॥१३३०॥
तिरगुन पाट पठ संभारी । सत्तो नाम निजु तत्तु बिचारी ॥१३३१॥
पारख बिन हीरा बिसरावे । बिनु गुर ग्यान गमी कहाँ पावे ॥१३३२॥[4]
कर गहि लेहि दहि धर्मी कारी ।[5] संग्रह माया बिसय बिभिचारी ॥१३३३॥[6]
जल कुकुर्नन्हि जस ही मैं बासा । किमि करि जाहि सिंधु के पासा ॥१३३४॥
जौं बक काहि कुमूबक हीता ।[7] मच्छ भच्छि भछि गावहि गीता ॥१३३५॥
अहै मराल मति सत सुभागा । मोती मनि चित चु गन लागा ॥१३३६॥[8]

दोहा

हंस बंस मति संत गति सदा सुखी मन सेत ।[9]
कहैं दरिया दल कंवल पर, भौंर भाव निजु हेत ॥८८॥

सेवक वचन[10]

गहर ग्यान भ्रिमि मोह प्रसंगा । सतगुर वचन कहो सतसंगा ॥१३३७॥
सुनत वचन मोहि अति प्रिय लागा । कटिआए तम तिमिर सम भागा ॥१३३८॥[11]

---

१ (क) (ग) (घ) मैं = मह ।
२ (क) (ग) दुर्म = कुसुम ।
३ (क) ऐसो = आदसी । (घ) ऐसी ।
४ (घ) पारख = परख । (क) (ग) बिनु गुर गमी ग्यान कहाँ पावै ।
५ (क) (ग), (घ) धर्मी = भ्रिमी ।
६ (क) संग्रह करै लिये बिचारी ।
७ (क) (ग) जो बक काहि कुमूबक हीता । 'कुमूबक' अस्पष्ट है ।
८ (क) मोति मनि चित चु मन लागा ।
९ स्वीकृत (क) प्रति में प्रस्तुत दोहा इस प्रकार है—जेवों हंस बंस मति संत गति,
जो सदा सुखी मन सेत । कहैं दरिया दल कंवल कला पर, भौंर भाव निजु हेत ।
१० (घ) शुक्रारवाद वचन ।
११ (क) कटि गो तम तिमिरि सब भागा ।

भयरहित भर्म विसाद यह सम तर्क तरनी पावहीं ।
संसय सर्व बिहाए इमि कर भ्रम फंसि कटि जावहीं ॥३०॥[1]

सोरठा

यसे सो भव जस नाव, सतगुर कर कनहरि गहो ।
ग्यान भक्ति निजु भाव, गुरपद पकम मंजन करो ॥१२॥[2]

चौपाई

पहिले भक्ति भाव तब कीन्हा । संत होए ग्यान तब चीन्हा ॥१३०९॥
होवे ग्यान भ्रम यह नासा ।[3] ममिमंडल सुरत सागर बासा ॥१३१०॥
सत पुर्ष निजु भास दिखायो । प्रगट कथा गमि केहु केहु पायो ॥१३११॥[4]
संत मंत ऋषि मुनिवर साईं । मिले न ग्यान माया बसि होई ॥१३१२॥
तीनि लोक महिमंडल माया । इब्रह्म रचि भर्म बनाया ॥१३१३॥
जग में कहेउ मुक्ति का मूला । ग्यान न सूझे सम भव भूला ॥१३१४॥
पहिले भूले बिरंचि बिधाता । जिन्हि यह वेद कथेउ बड़ ग्याता ॥१३१५॥[5]
भूले सब ब्रह्मा कर जाया ।[6] कर्मकांडि जिन्हि जग फैलाया ॥१३१६॥
तीर्थ व्रत कर्म रचि राखा । करि खटकर्म ग्यान नहिं भाखा ॥१३१७॥
जोगी जती भूले सब भाई ।[7] खट दर्सन मिलि पंथ चलाई ॥१३१८॥
काल हिंडोला सब मिलि झूला । भेख धरी पढ़ि पंडित फूला ॥१३१९॥
सतगुर बिना भर्म नहिं छूटे । घरि घरि काल भवन में लूटे ॥१३२०॥[8]
बिमल नाम मल कबहिं न लागे । जो परगट परिमल रंग जागे ॥१३२१॥
मिस्र ने पूछा गुर गमि कहेऊ । आदि अंत परमारथ लहेऊ ॥१३२२॥

दोहा

बूझहु सत सब्द यह, सतगुर अधम प्रवीन ।
करो बिबेक बिचारि के, पुर्न माया त भीन ॥८७॥

चौपाई

पढ़ि पढ़ि कबि देखहिं जसे । मकुर बीच रहै प्रतिमा जैसे ॥१३२३॥

---

१ (ख) (ग) (घ) इमि कर = इमि करि ।
२ (क) (ग) (घ) पंकज = पंक ।
३ (ग) यह = यह । (क) यह । (घ) है ।
४ (ख) दिखायो = दिखायो । (ग) दिखायो । पायो = पाया । (घ) पायो ।
५ (ख) (ग), (घ) जिन्हि यह वेद कथा बड़ ग्याता ।
६ (क) कर = कए । (ग) (घ) को ।
७ (ग) जोगी भूले सब भाई ।
८ (ख), (ग) घरि घरि काल भर्म में लूटे । (घ) भवन में = भर्म मंद ।

इमि कर देखे बदन कर रेखा । महे विदेह द्रिस्टि मैं पेखा ॥१३२४॥[1]
जो कवि कहेउ सोइ सम साखा । जेवों छविभानुकिरनि रबिराखा ॥१३२५॥
निर्गुन सर्गुन निगम रचि राखा । दुर्म छोड़ि बरने सम साखा ॥१३२६॥[2]
ऐसो माया पाछ रचि राखा ।[3] ब्रम्हा बिस्नु हैं साकर साखा ॥१३२७॥
कवि कलि कर्म संत जग बीना । बिह बिह बक्ता कहीं प्रमीना ॥१३२८॥
दधी मथे घित बाहर आवे । इमि कर सत नाम बिनु पावे ॥१३२९॥
जौं लगि टीका मूल न पावे । बहुरि बहुरि भव सागर आवे ॥१३३०॥
तिरगुन घाट पंठ संभारी । सबो नाम बिनु तनु बिकारी ॥१३३१॥
पारस बिन हीरा बिसरावे । बिनु गुर ग्यान गमी कहाँ पावे ॥१३३२॥[4]
कर गहि लेहि वहि अमी झारी ।[5] संग्रह माया बिसय बिभिचारी ॥१३३३॥[6]
जस कुकुरन्हि जस ही मैं बासा । किमि करि आहि सँभु के पासा ॥१३३४॥
जौं बक लाहि कुमुवक हीता ।[7] मच्छ भच्छि भखि गावहि गीता ॥१३३५॥
महै मगास मति संत सुभागा । मोती मनि चित चुगन लागा ॥१३३६॥[8]

दोहा

हंस बंस मति संत गति, सदा सुखी मन सेत ।[9]
कहैं दरिया दल कंवल पर, भौर भाव बिनु हेत ॥८८॥

सेवक बचन[10]

गदर ग्यान तिमिर मोह प्रसंगा । सतगुर बचन कह्यो सतसंगा ॥१३३७॥
सुनत बचन मोहि अति प्रिय लागा । कटिजाए तम तिमिर सम भागा ॥१३३८॥[11]

---

१ (क) (ग) (घ) मैं = मह ।
२ (क) (घ) दुर्म = द्रुहुम ।
३ (क) ऐसो = आइसो । (घ) ऐसी ।
४ (घ) पारस = परस । (क) (घ) बिनु गुर गमी ग्यान कहाँ पावे ।
५ (क), (ग) (घ) अमी = भिमी ।
६ (क) संग्रह करै बिषै बिभचारी ।
७ (क) (ग) जौं बक लाहि कुमुवक हीता । 'कुमुवक' अस्पष्ट है ।
८ (ग) मोति मनि चित चुगन लागा ।
९ हस्तलिप (क) प्रति में प्रस्तुत दोहा इस प्रकार है—जेवों हंस बंस मति संत गति, जो सदा सुखी मन सेत । कहैं दरिया दल कंवल बसा पर, भौर भाव बिनु हेत ।
१० (घ सुखानन्द बचन ।
११ (क) कटि गो तम तिमिरि सब भागा ।

सतगुर बचन[1]

हम कछु संसय कछु नहिं अहई । कोटि कर्म कलि पातक दहई ॥१३३९॥[2]
गरुर ग्यान मोह किमि अहई । परम पुर्ख परमातम अहई ॥१३४०॥[3]
जंह सह गए भर्म भय राता । एक एक बचन कहे सम ग्याता ॥१३४१॥
खेला बहिर गुरू है अंधा । प्रबल माया है सब जग बंधा ॥१३४२॥
गए खगपति जंह नारद अहई । पूछहि बचन, कहो, मर्म दहई ॥१३४३ ।
कहे राम ब्रह्म की माया । सो क्रिपाल मोहि करिए दाया ॥१३४४॥

नारद बचन

बारम्बार इन्ह हमहिं नचाया । सुनो बिहंगपति बचन सुनाया ॥१३४५॥
जब मो पै किछु कहि नहि जाई । सो तुम्हरे तन ब्यापेउ आई ॥१३४६॥[4]
कहैं ब्रम्ह माया बिच रहई । अगम अथाह थाह किमि लहई ॥१३४७॥[5]
बिमल ग्यान ब्रम्हा के पासा । सुनत बचन मिटा मोह त्रासा ॥१३४८॥[6]
तुरंत गए ब्रम्हा के पासा । कीन्ह प्रनाम बचन परगासा ॥१३४९॥

गरुर बचन

इमि कारन हम तुम पंह आई । महा मोह तन अति दुख पाई ॥१३५०॥

ब्रम्हा बचन

राम के बचन हमहि जनि पूछहु । सिव से जाए ग्यान तुम बंचहु ॥१३५१॥

दोहा

महामोह अति ब्यापेउ, बिकल भए खगराए ।
अंधकार सम छाएउ, अब किछु कहा न जाए ॥८९॥[7]

चौपाई

चले गरुर तब बिहग तुरंता ।[8] मारग माह भेंटा सिव संता ॥१३५२॥
करि परदच्छिन बोले बानी ।[9] हिरदय प्रेम प्रीति अति आनी ॥१३५३॥
पूछों बचन छोह कहो स्वामी । करहु दाया मोहि अन्तर्जामी ॥१३५४॥

---

१ (ख) हरिमा बचन । (ग) गुरु बचन । (घ) सत गुरु बचन ।
२. (ख), (ग), (घ) पातक = पावक ।
३ रवीन्द्र प्रति में 'किमि कर कहई' पाठ है ।
४ (ग) तुम्हरे = तोरे । (ग) तुम्हर = तुमरे । (घ) ब्यापेउ = ब्यापे, (ग) ब्यापा ।
५. (ख) (ग) रहई = बाया । लहई = पावा ।
६ (ख) (ग) (घ) मिटा = मिटे ।
७ रवीन्द्र प्रति में 'अंधकार मर्म तम' पाठ है । (ख) छाएउ = छायो । (ग) छाएउ = छायउ ।
८ (ग) (घ) तब = पति ।
९. रवीन्द्र प्रति में 'करि परदच्छिन बोले तब बानी' पाठ है । (ख) तब बानी = मिठा बानी ।

नाग फांस रघुनाथहि बंधा । तव हम जाए ब्याल कोह संघा ॥१३५५॥
अति प्रबाह थाह नहिं लहई । महा मोह तन दारुन दहई ॥१३५६॥[1]
अस कहि सिव बोले प्रिय बानी । मोह भ्रिथ्या नहिंसत हम जानी ॥१३५७॥

सिव बचन

मोह बिकल हमहू तन भएऊ ।[2] दूकुत ग्याता जहं-जहं गएऊ ॥१३५८॥[3]
सात दीप नव खंडहि फीरा । तबहू ना मिटि तन की पीरा ॥१३५९॥[4]
महा मुनेस्वर जग मंह भारी ।[5] महा निरूपनि ग्यान बिचारी ॥१३६०॥
मोह सम तन तो नहिं जाई ।[6] तव मैं दरस काग कर पाई ॥१३६१॥[7]
सुनत बचन प्रिय अति निक लागा ।[8] छूटि गो मोह भर्म तन भागा ॥१३६२॥[9]
कागभुसुंडि महा बड़ ग्याता । उन्हके भरम कबहि नहिं राता ॥१३६३॥
उन्ह सम ग्यान कहहि परसंगा ।[10] उपजहि प्रेम सितल होए अंगा ॥१३६४॥
चले बिहंगपति पंथ जो लागा । अति अपसोच महामर्म जागा ॥१३६५॥[11]
उमा बोलि तुम्ह ते बड़ ग्याता ।[12] पूछन भेजहु जंह निजु ताता ॥१३६६॥
हम नरदेह बहु खगपति राई ।[13] इमिकर ग्यान प्रगट नहिं गाई ॥१३६७॥
तीनि लोक तुम्ह त्रिभुवन ग्यानी । जोग बिराग भक्ति सुभ जानी ॥१३६८॥
इमि कारन हम गुप्त जो राखा । सुनु उमा सत बचन जो भाखा ॥१३६९॥

दोहा

कहै उमा सुनु स्वामी, तुम्ह उन्ह कब भो संग ।[14]
सदा समो हम साथहि, कब भी ग्यान प्रसंग ॥१०।[15]

---

१ (ख) महा मोह दुख दारुन दहई । (ग) महा मोह तन व्याकुल दहई ।
२ (ख) पाठाभाव ।
३ (ख) पूछन ग्याता कहां कहां गएऊ ।
४ (ख) तबहु ना मेटल तन कर पीरा ।
५ (ख) (ग) मंह = मैं ।
६ (ख) (ग), (घ) तन तो = तनिको ।
७ (ख) मैं = हम ।
८ (ख) निक = नियरा । (घ) प्रीति ।
९ (ख) भ.गा = भागी ।
१ (ख) (ग) (घ) उन्ह सम = उ सम ।
११ मर्म = मरम । (ख) अति अपसोच मोह भ्रम जागा ।
१२ (ख) ते = है ।
१३ (ख), (ग) (घ) बहु = बोए ।
१४ (ख) (घ) भो = भव । (घ) अतिरिक्त पाठ—सिव बचन ।
१५ (ख) (घ) समो = समोह । समो = समय, ईमपात ।

सतगुर वचन[1]

हम कहु संसय कछु नहिं अहई । कोटि कर्म कलि पातक दहई ॥१३३९॥[2]
अछर ग्यान मोह किमि कहई । परम पुर्ष परमातम अहई ॥१३४०॥[3]
जँह तंह गए मर्म भव राता । एक एक वचन कहु सम ग्याता ॥१३४१॥
बेसा अहिर गुरु है अंधा । प्रबल माया है सब जग बंधा ॥१३४२॥
भए खगपति जँह नारद अहई । पूछहि वचन, कहो, मर्म दहई ॥१३४३॥
अह राम ब्रह्म की माया । सो क्रिपाल मोहि करिए दाया ॥१३४४॥

नारद वचन

बार-बार इन्ह हमहि नचाया । सुनो बिहगपति वचन सुनाया ॥१३४५॥
अब मो पै किछु कहि नहि आई । सो तुम्हरे तन ब्यापेउ भाई ॥१३४६॥[4]
अहै ब्रम्ह माया बिष रहई । अगम अथाह थाह किमि लहई ॥१३४७॥[5]
बिमल ग्यान ब्रम्हा के पासा । सुनत वचन मिटा मोह त्रासा ॥१३४८॥[6]
तुरंत गए ब्रम्हा के पासा । कीन्ह प्रनाम वचन परकासा ॥१३४९॥

गरुड़ वचन

इमि कारन हम तुम पंह आई । महा मोह तन अति दुख पाई ॥१३५०॥

ब्रम्हा वचन

राम के वचन हमहिं जनि पूछहु । सिव से जाए ग्यान तुम बंधहु ॥१३५१॥

दोहा

महामोह अति ब्यापेउ, बिकल भए खगराए ।
अधकार तम छाएउ, अब किछु कहा न जाए ॥८९॥[7]

चौपाई

चले गरुड़ तब बिहन तुरंता ।[8] मार्ग माह भेंटा सिव संता ॥१३५२॥
करि परदच्छिन बोले बानी ।[9] हिरदय प्रेम प्रीति अति आनी ॥१३५३॥
पूछों वचन छोड़ कहो स्वामी । कहहु दाया मोहि अन्तर्जामी ॥१३५४॥

---

१ (क) दरिया वचन । (ख) गुरु वचन । (ग) सत गुरु वचन ।
२ (क), (ख), (ग) पातक = पावक ।
३ सर्वोदय प्रति में किमि कर कहई पाठ है ।
४ (क) तुम्हरे = तोहरे । (ग) तुम्हरे = तुमरे । (ख) ब्यापेउ = ब्यापे, (ग) ब्यापा ।
५ (ख), (ग) रहई = बासा । लहई = पासा ।
६ (ग) (घ), (ग) मिटा = मटे ।
७ सर्वोदय प्रति में "अंधकार मर्म तम" पाठ है । (क) छाएउ = छायो । (ग) छाएउ = छायमा ।
८ (ग) (घ) तब = पति ।
९ सर्वोदय प्रति में "करि प्रदच्छिन बोले तब बानी" पाठ है । (क) तब बानी = प्रिया बानी ।

कथा बचन

आदि अंत सदा सिव जोगी । पाप पुन्य कर्म नहिं भोगी ।।१३८८।।
इन्ह कर पूजा किमि नहिं साजा । अति क्रोध करि बोले राजा ।।१३८९।।
भूत प्रेत संग किमि गुर ग्यामा । आहि चतुर महा अभिमाना ।।१३९०।।
नगन रहे तन बस्तर हीना ।[1] अहि लपेटि तन बिषि रहु भीना ।।१३९१।।
अनमिल सम है उन्ह कर साजा । बरद बाम जिमि अवक बाजा ।।१३९२।।[2]
सो हमरे ग्रिह किमि कर आएउ । अति आदर करि मान बताएउ ।।१३९३।।[3]
पही अनल में तन तुम्ह त्यागा । जग्य बिध्वंस मुनिसम कोइ भागा ।।१३९४।।
बुध गन आए उपद्रव करहीं । मंदिल माहु अगम्य जो बरही ।।१३९५।।
जारि मारि उन्हि केहु ना बाचा ।[4] गम सम कर्म कीन्ह यह साचा ।।१३९६।।[5]
करुना करत निकट चलि आई । गम सम अर्थ कहा समुझाई ।।१३९७।।
मते अनल तन दहत बनाई ।[6] अति अपमान कहा नहिं जाई ।।१३९८।।[7]
तब हम भवन सबै चलि आरा । जग्य बिध्वंस करि सब के मारा ।।१३९९।।

दोहा

तब मोरे तन मोह भौ, महा कलपना लागि ।
मुनि ग्रिह ग्रिह मैं फिरेउं, बिरह अनल तन लागि ।।९२।।

सिव उवाच

जंह जंह गयो मोह परसंगा ।[8] कितहु न सीतल कीन्ह मोर अंगा।।१४००।।
गएउ मैं बन खंड छिन्न सुमेरा ।[9] अति हैवानगिर ग्रिस्टि में फेरा ।।१४०१।।
नील सैल एक अधिक उतंगा । कहे काग कछु ग्यान प्रसंगा ।।१४०२।।
बहु प्रकार तहां चलि गएऊ । मण्ड मराल तब बचन बुझएऊ ।।१४०३।।[10]
चारि द्रुम सुवर बहु साखा ।[11] खग बैठे कथा मिलु भाखा ।।१४०४।।
जब उन्हि ग्यान कीन्ह परसंगा । तब मैं जाए बैठों एक संगा ।।१४०५।।

---

१ (ख), (ग) हीना = हीन्हा ।
२ (क) में बरद = बार (ख) (ग) (घ) स्वीकृत ।
३ (घ) आएउ = आय । बताएउ = बताए ।
४ (ख) (ग) जारि मारि तुमि कोई नाहि बचा ।
५ (ख) यह = सम ।
६ (ख), (ग) (घ) दहेउ = दहेगी ।
७ (ख), (ग), (घ) अपमान = अभिमान ।
८ (ख) (ग), (घ) जहां जहां गएउ तहां मोह प्रसंगा ।
९ (ग), (घ) (ख) मैं = मो । हैवान = हिमालय (संभवतः) ।
१० (ख) बुझएउ = बुझेउ ।
११ (ख), (ग) चारि = चार ।

चौपाई

प्रथमहिं दच्छ ग्रिह तुम भव जनमा । सो सब जानत हो तुम मरमा ॥१३७०॥[1]
दच्छ ग्रिह कन्या रही कुमारी ।[2] कीन्हो ब्रम्ह बिवाह बिचारी ॥१३७१॥
अति सादर करि सब बोलएऊ । गन गंधर्व मुनि सब मिलि गएऊ ॥१३७२॥
हमके बचन पूछा तुम भाई । इमि करि ग्यान कहा समुझाई ॥१३७३॥[3]
आनंद मगन दच्छ ग्रिह भइई । सुर समाज चली तह कहई ॥१३७४॥[4]
हम कहु नाहिं बोलाइन्हि जानी । बरन हीन सिव कहा बखानी ॥१३७५॥
अति अपमान हमें उन्हें भएऊ ।[5] इमि कारन नहिं तुम बोलएऊ ॥१३७६॥[6]
आसन कही समाधि लगाई ।[7] तब तुम रोदन कीन्ह बिसखाई ॥१३७७॥
छूटा ध्यान ग्यान नहिं रहेऊ । किमि कारन उमा बिलखएऊ ॥१३७८॥
तातु मातु मोहि मिरतक जाना । हित अनहित इमि सब परखाना ॥१३७९॥
कीन्हो जग्य बिबिधि मुनि गएऊ । बिना बोलवलि तुम चलि भएऊ ॥१३८०॥
बहुत भांतिन्ह मैं तुमहिं बुझाया । मम बचन तुम्ह मिथ्या गंवाया ॥१३८१॥
तुम्ह संग द्रुह गन दीन्हों साथा । चली सुरत नाए निज माथा ॥१३८२॥
दच्छ ग्रिह आए जग्य तहं देखा । सादर भांति नाहिं किछु पेखा ॥१३८३॥
किछु किछु प्रेम कियो तुम माता । पिता देखि देखि अनल उलपाता ॥१३८४॥[8]
माता प्रेम किछू नाहिं कीन्हा । तन मलीन बस्तर अति हीना ॥१३८५॥

दोहा

राज काज जग सोभा, आनंद मंगल चार ।
सती भवन नाहि भाव, मन भो अति बेकरार ॥९१॥[9]

शिव बचन

तब तुम गई जहां नर नारी । जग्य अरम जंह बेद उचारी ॥१३८६॥
दुर्गो पिंडि के होवे पूजा ।[10] दिन में बचन बुझा तुम दूजा ॥१३८७॥

---

१ (ख) सो म जानति हो सब मरमा ।
२ (ख) (ग) (घ) रही = रहै ।
३ (ख) किमि करि ग्यान कहा चलि कहई ।
४ (ख) (ग) सुर समाज तहां चलि कहई । (घ) सुर समाज तहवां चलि कहई ।
५ (ख) (ग), (घ) अपमान = अभिमान ।
६ (ख) (ग) इमि कारन नाहिं तुम है बो॰एउ ।
७ (ख) कही = कमि कहि ।
८ (ख) (ग), (घ) हीना = हीन्हा ।
९ (ख) बेकरार = बिकार ।
१० (ख) दुर पींड कर होवे पूजा । (ग) दुर पींडि के होवे पूजा ।

दोहा

पड़ी उमा चरनन्ह पर, कहेउ धन्य सिव ग्यान ।
अब असथिर बर पायौ, किमि करि करौं बखान ॥९३॥[1]

चौपाई

सिंग ऊपर एक सिंग बिराजा ।[2] तंह तड़ाग सुंदर एक छाजा ॥१४१९॥
चारि घाट चारि रंग पानी । मधुर मीठ खटा तित आनी ॥१४२०॥
चारिउ दिसा चारि द्रुम छाया । सघन पत्तव तंह सितल बनाया ॥१४२१॥[3]
करि परदच्छिन काग तब आए । असथिर होए के हरि गुन गाए ॥१४२२॥[4]
दच्छिन दिसा थपित जमराऊ । नाना खग बैठे तिन्ह ठाऊ ॥१४२३॥[5]
गए गरुड़ तब खगपति पासा । बिनए कीन्ह बचन परकासा ॥१४२४॥
गई बिरंचि भेव कर मूला ।[6] तिन्ह-तिन्ह बचन कहेउ समतूला ॥१४२५॥[7]
बैठे जहाँ बिरंचि बिधाता । तंहवा जाए कहेउ तिन्ह बाता ॥१४२६॥[8]
कहे बिरंचि तुम किमि कर अहई । सुनत बचन सुख बाढन दहई ॥१४२७॥[9]
तब चलि गयौ सीव के पासा । कागभुसुंडि राम कर दासा ॥१४२८॥
आदि अंत सब कथा सुनवई । छुटि मोह ग्यान तिन्ह होवई ॥१४२९॥[10]
कहे भुसुंडि सुनो खगराई ।[11] जन्म प्रसंग तिन्ह कथा सुनाई ॥१४३०॥[12]

---

१ (क) अब असथिर पायो ।
२ (क) बिराजा = बिराजै । तड़ाग = तड़ाक । छाजा = छाजै ।
३ (क), (ख), (ग) पत्तव = पत्ते ।
४ (क), (ख) असथिर = अस्थिर । (ग) अस्थिर ।
५. (क), (ख), (ग) तिन्ह = तेहि ।
६ (क), (ख) (ग) निम्नलिखित पाठ अधिक है—

बैठ होमें पछिम द्वार पाला । कहे चतुर मुख खगपति राखा ॥
इनके मोह भरम अति भएऊ । इमि कारन तुम्हरे पंह गएऊ ॥
पावन राम बिबिधि जब जाही । ता बिन जाय नाय सिर तारी ॥
तब तुम अवन जाए बोलाया । कहहु कवन कहु मोह सुभाया ॥
सहज कारन मोह तब भईऊ । अति होय निजु भरम सब गएऊ ॥
तब चलि गएउ नारद के पासा । करि परनाम बचन परगासा ॥

७ (क) समतूला = समतूला ।
८ (क) (ख) कहेउ = कहा ।
९ (क) (ख) (ग) बचन = मोह ।
१० स्वीकृत प्रति में 'छूटि जाए मोह' पाठ है ।
११ (क), (ग) खगराई = खगपति गई ।
१२. (क) तिन्ह = तुम ।

निजु निजु कथा सुनेउ सतबानी ।[१] कहे सीव सुनु आदि भवानी ॥१४०६॥

छंद

काम सरूप सोभा अति सुंदर हंस बंस गति जानहीं ।
नीर छीर सम बिलगि बिवरन ध्यान को गुन गावहीं ॥३१॥
रोम रोम तन प्रमी भरत्थल सुमन घटा घन छावहीं ।
सुख सागर भक्ति आगर गर्व इमि जिमि भावहीं ॥३२॥

सोरठा

ध्यान भक्ति निजु हेत, गुन गंभीर इमि जानहीं ।
सीतल परिमल सेत, सपट आमि घन छावहीं ॥१६॥

चौपाई

उमा बचन कहे सुनु स्वामी ।[२] तीनि लोक तुम अंतर्जामी ॥१४०७॥
को है ब्रम्ह कवन है माया । को है ध्यान कहा पर्याया ॥१४०८॥

सिव उवाच

आदि ब्रम्ह है तिरगुन माया । माया अनंत अरू फैलाया ॥१४०९॥[३]
ध्यान सोई जो एक रस रहई । बिमल प्रेम दुर्मति सम बहई ॥१४१०॥[४]
है सत पुन गुप्त करि राखा । जंह तंह बचन बिबिध नहि भाखा॥१४११॥
जब जब सुनहि महा मुनि ग्याता । सब के मोह होए उतपाता ॥१४१२॥
तात मैं परगट नहि कहेऊ । निर्मल नाम निजु हिरदय गहेऊ ॥१४१३॥[५]
जो नहि होए पाऊ मंह भारी । सुनु उमा सत पुरुष की भारी ॥१४१४॥
जब यह पुर्ल अकेला रहई । तब नहि सक्ति संग यह बहई ॥१४१५॥[६]
माया निरंजन कीन्ह प्रसंगा । त्रिगुन तीनि बिबिध भो रंगा ॥१४१६॥
बहुविधि बेद बोला सत बानी ।[७] आदि पुर्ल गति केहु बहु जानी ॥१४१७॥
इमि करि जानि गुप्त मैं रहेऊ । निस दिन जाग युक्ति सत गहेऊ ॥१४१८॥

---

१ (ख), (ग) (घ) सुनेउ = सुनी ।
२. (ख) (ग) (घ) स्वामी = सामी ।
३ (ख) (ग) (घ) माया अनंत तब जग फैलाया ।
४ (ख), (ग), (घ) सम = दुरि ।
५. (ग) कहेऊ = करेऊ । (घ) लहेऊ ।
६. (ख) यह = नाहि ।
७ (घ) बोला = बोले ।

मोहैं धरती पुरुष बनाया । मोह ते करते मन उपजाया ॥१४४९॥[1]
मोहैं क्रिषी खेत किसाना ।[2] सब रूप मोहैं भगवाना ॥१४५०॥
मोहैं मातु पिता सुत नारी । मोह की बेड़ी सकल जग डारी ॥१४५१॥[3]

दोहा

घर महं घर करि देखिए, ग्यान दिपक कहं बारि ।
पांच पचीस सभ साथ हैं, सिव महं सक्ति पियारि ॥९५॥[4]

चौपाई

घर मैं धरनी मंगल चारा । बिबि भौ व्याधि औखध मसि डारा ॥१४५२॥
रति मति कंदर्प दीपक सोभा । घर करि प्रान प्रीति अति लोभा ॥१४५३॥
प्रकला मौन प्रतिमा पत होई । मूकि मूकि स्वास प्रान कहु कोई ॥१४५४॥
पात फूल रस बिबिध सुगंधा । भेवों दुर्म सता लपटि तन बंधा ॥१४५५॥[5]
दुख सरस सुख भ्रमि कर जाना । भेवों रति स्वान अमी लपटाना ॥१४५६॥[6]
मूढ़ न जानहिं यह भव मर्मा । स्वार्थ स्वाद लोह सतकर्मा ॥१४५७॥[7]
जीव सकल सभ सुखद बिरागी ।[8] भेखज अति गुन ग्यान न जागी ॥१४५८॥[9]
काम क्रोध लोभ भौ मर्मा ।[10] का भव भेख दिगंबर कर्मा ॥१४५९॥
मोर पच्छ सुंदर अति नीका । यहि कर जीवन ग्यान बिनु फीका ॥१४६०॥
जीव चराचर जत है भारी । पसुमत ग्यान मोह मद जारी ॥१४६१॥
हिरदय सुन ना पुन्य परतापू ।[11] जप तप संग भक्ति गुन जापू ॥१४६२॥
बिधि अच्छर पढ़ि पंडित मर्मा ।[12] जप तप संजम पाखंड कर्मा ॥१४६३॥
अपने उलटि आपु नाहिं जाना । करि परिपंच बिसय रस साना ॥१४६४॥

---

१ (ख) मोह ते = मोहै ।
२. क्रिषी = कृषि ।
३ (ख) (ग), (घ) बेड़ी = बेरी ।
४ (ख) सभ साथ हैं = सभ संग हैं ।
५ (ख) तन = बहु ।
६ (ख) (ग), (घ) अमी = जिमी ।
७ (ख) (ग) (घ) स्वार्थ = स्वोर्थ । स्वाद = स्वोद ।
८ (ख) सुखद = सुखदा ।
९ (ख) भेखज निर्गुन ग्यान न जागी । (ग) भेखज अति गुन ग्यान न जागी ।
१० (ख), (ग) (घ) भौ = सभ ।
११ (ख), (ग) न = ना ।
१२. (ख) बिधि = बिबिधि ।

जौं ससिमिर चित सैन पर रहिहौं । राम चरित निजु कथा सुनइहौ ॥१४३१॥
कहे गरुर सुनो हरि संता । तुम दरसन फल महा अनंता ॥१४३२॥[1]
संत दरस गुन सुन्दर समाजू । मानद मगन वीरपराजू ॥१४३३॥
जौं लगि मोह भरम नहि जाई । तौं लगि कथा सुनो चित लाई ॥१४३४॥

दोहा

लोचन स्रवन हिदय पद, सदा रहौं कर जोरि ।
बिमल प्रेम पद माखिए, बिनय बचन सुनि मोरि ॥६४॥

चौपाई

कहे भुसुंडि सुनो सत बानी । मोह बिकल फिरई जनि ग्यानी ॥१४३५॥
माया मोह बिष ग्यान रहीसा । भक्ति बिबेक पान पद ईसा ॥१४३६॥
मोह पदारथ सब जग होता । महा महा मुनि मोह न जीता ॥१४३७॥
मोह तड़ाग कूप जल जैसे ।[2] भरि भरि पीवहीं अमरित ऐसे ॥१४३८॥
जल बिनु जिवे न मोह बिराता ।[3] मातु पिता सुत सागर राता ॥१४३९॥
मोहैं भाजम भो ग्रिहनारी ।[4] मोह बिना किमि ग्यान बिचारी ॥१४४०॥

सुमु हिवचन

माह बाटिका फूल फल न्यारी । मन है भंवर सुगंध सुधारी ॥१४४१॥
मोह अनल अकल ग्रिह जारी । फिरि फिरि भवन करे उजियारी ॥१४४२॥
इमि करि मोह सकल जग लागा । जरिगो सहर बहुरि फिरि मागा ॥१४४३॥
पावक बिना पाक किमि करई । इमि करि मोह निरंतर रहई ॥१४४४॥
मोहैं दुर्म फल खग को बासा । माहैं सरिता जल मीन निवासा ॥१४४५॥[5]
मोहैं भ्रमरकोस ग्रिग मन लागा । ऐसो माह जक्त सब जागा ॥१४४६॥[6]
मोह डोराका एक सग जोरी । बंधन जक्त मोह की डोरी ॥१४४७॥[7]
मोहैं गुरु औ सिष्य का मेला । मोह बिना किमि का कर चेला ॥१४४८॥[8]

---

१ (ग) (घ) (ख) तुम = तुह ।
२ (ख) तड़ाग = तड़ाक ।
३ (ख) मोह = मीन ।
४ (क) मोहै = मोह है । (ख) (घ) रहित ।
५ रहीकृत प्रति में 'दुर्म फल पद लाग' और 'सरिता जल मीन' पाठ है ।
६ (ख) (घ) रूप = मद । जक्त = जगत । लागा = लागा ।
७ (क) डोरी = डेरी । डोराका = बंधन (संभवतः सुधारक से) ।
८ (क), (ग), (घ) किमि = कछु ।

दोहा

संत दरस गुन सुखद अति, हृदय कंवल परकास ।
जो पगु पड़े प्रयाग सम, सुरसरि जस पद पास ॥१७॥[1]

छंद

संत घर सगुन ध्यान को गति यह मंजन मैलि छोड़ावहीं ।[2]
दरस परस मन भरम भाजे यह जब हरि कथा परकासहीं ॥३३॥[3]
आनंद मंगल रंग रहित सम सुघर संत गुन गावहीं ।
सुनत स्रवन हिय लोचन विकसे भंवर भाव रस पावहीं ॥३४॥[4]

सोरठा

सुनहुँ न खगपति प्रीति, बिना भक्ति भव ना तरे ।
जेहि सरिता जेहि सीत, जिमि कुरंग भरमत फिरे ॥१७॥

चौपाई

सिसु मुख सीस कीन्ह बिधमाता । स्रवन सुनत लोचन भरि राता ॥१४८१॥[5]
जाकर मिटै करम जग जाला । सनकादिक सिव संभु मराला ॥१४८२॥
प्रगट भानु उदयगिरि जबहीं ।[6] तिमिर नासि रजनी गो तबहीं ॥१४८३॥
लोचन कंज तिमि सब छूटा । बिगसा भाव प्रेमरस लूटा ॥१४८४॥
कवि कंठ रसना गुन ग्याता ।[7] सज्जन सिख मोख मनि राता ॥१४८५॥
जेहि मनि मंदिर दिपक नहिं बरई । जब रवि उगे तारा का करई ॥१४८६॥
तुम्ह हरिजन मैं दासन्ह दासा । सत्ती त्रिया मिटा जस प्यासा ॥१४८७॥[8]
बिमल ग्यान घन घटा समीरा । बरसत बूंद अखंडित नीरा ॥१४८८॥
सुमन सुगंध अमी झरि परई ।[9] जोसे प्यास संभु नहि भरई ॥१४८९॥[10]

---

१ (ख) (ग), (घ) पगे = परत ।
२ (ख), (ग) (घ) संत दरस गुन ज्ञान की गति ।
३ (ख) (ग) (घ) दरस = दरसत । परस = परसत । प्रकासही = पसारही ।
४ (ख) (ग) (घ) बिगसेरो भंवर भाव रस पावहीं ।
५. (ख) सो मुनि स्रवन लोचन जब ग्याता । (ग) (घ) सो मुनि स्रवन लोचन भरि राता ।
६ (ख), (घ) उदयगिरि = उदैगिरि ।
७ (ख) (ग) कवि कंठ राम-नाम गुन ग्याता । (घ) कवि कवि कंठ रसना गुन ग्याता ।
८ (ख), (ग) (घ) प्यासा = पासा ।
९ (ख) अमी = अमित ।
१ (ख) (ग) (घ) जोसे = जोसे ।

आतम दरस राम पद हीता । निरकेवल निरमे निहचीता ॥१४६५॥[1]

दोहा

जल थल सप्त पताल महि, जक्त जीवन नर सुर ।
दसरथ तनय राम रंग, त्रिमल सदा भरिपूर ॥६६॥

चौपाइ

गुर बिनु भव नहिं भंजनिहारा । सत तरनी भव सिंधु उबारा ॥१४६६॥[2]
सुनो भा खगपति तेहु पछताऊ । ब्रह्म जीव माया बिच भाऊ ॥१४६७॥
उह निरबंध मारे नहिं मरई ।[3] सप्त पतान सकल सम ढरई ॥१४६८॥
परमातम है ब्रह्म पुराना । खोजत सुरनर मुनिभर्म भुलाना ॥१४६९॥[4]
आतम अनंत सरूप संचारो ।[5] आप बीच फिरि सैल संसारी ॥१४७०॥
अनचर चर भो अचल महि चेता ।[6] राम रूप प्रतिमा सम तेता ॥१४७१॥
यह द्रिस्टांत द्रिस्टि में ऐसा ।[7] ज्या जल उपल पाला है तैसा ॥१४७२॥[8]
पाला पवन जब खेत उडाई । जल रंग मिलै पवन बिसराई ॥१४७३॥[9]
ऐसो राम सकल घट व्यापा । पाप पुन्य भर के नहिं तापा ॥१४७४॥
यह बिसुकर्ता त्रिगुन बनाया । व्यापिक ब्रह्म निगम नित गाया ॥१४७५॥
तेसि भव भर्म सो भमी भनीता । राम नाम पद बिमल पुनीता ॥१४७६॥
बिनु हरि भक्ति हरे नहिं सोगा । तर्क कथा करि करिए जोगा ॥१४७७॥[10]
पद प्रयाग सो हरि पद नौका । तीर्थ बर्त भक्ती बिनु फीका ॥१४७८॥
जो पगु संत दरस कहु धरई । कोटि पुन्य अघ पातक हरई ॥१४७९॥
जेहि मंदिर मनि संत बिराजे ।[11] कोटि तीर्थ पद पंकज द्राजे ॥१४८०॥

---

१ (क) (ग) (घ) निहचीता = नाहीचिंता ।
२ (घ) सत तरनी गुर सन कराता ।
३ (क) (ग), (घ) उह = वोए ।
४ (ख) (ग) (घ) खोजत सुर नर सभे भुलाना ।
५ (क) (ख) आतम सकल सरूप संचारी ।
६ (ख) चेता = चेती ।
७ (ख) ऐसा = वैसा ।
८ (ख) (ग) उपल = ऊपर । (क) पाला = पता । (ख) (ग), (घ) रवीदन ।
९ (ग), (घ) मिलै = मिला ।
१० (क) (ग), (घ) तर्क = तप । (ग) (घ) करि = के ।
११ (ग) बिराजे = बिराजा । द्राजे = दाजा ।

महादेव बर देवघर रहेऊ । अति पवित्र तंह मीसि गुम गएऊ ॥१५०६॥[1]
जप तप ध्यान मंदिल में करेऊ । चंदन पुहुप रगरि तंह धरेऊ ॥१५०७॥
मनसा ध्यान रहौं लौलीन्हा । आए गुरु आदर नहिं कीन्हा ॥१५०८॥
कोपि के सीव साप तब दीन्हा । मार्ग भर्स्ट सुमि तै सठ कीन्हा ॥१५०९॥[2]
पति प्रसादि जब तम सुम पैहो । भरमि भरमि चौरासी जैहो ॥१५१०॥

दोहा

साप भयो तन विकल अति, ध्यान ग्यान बिसराए ।
भएउ विकल भर्म उपजेउ, करुना अति तन आए ॥११॥[3]

छन्द

सेंमु सर्व सहाए सिरपर दयानिधि सुनि लीजिए ।
अग्यान बालक जानु मिथ्यु नहिं क्रोध छेमा सम कीजिए ॥३५॥
कीन्ह असतुति निसि बासर दास, तुम बर दीजिए ।
भई बानी अकास धुनि सुनि साप अनुग्रह कीजिए ॥३६॥

सोरठा

साप मिथ्या नाहिं मोर, किछु दिन गए उबारिहौं ।
चौरासी के ओर, सु बर नर तन पाइहै ॥१८॥

चौपाई

किछु दिन बीते काल तन भएऊ ।[4] तन छूटे चौरासिहिं गएऊ ॥१५११॥
जंह तंह जनम चेतनि बिध ग्याना । गुरु के बचन पद पंकज ध्याना ॥१५१२॥[5]
चौरासी में दुख अति व्यापेउ । महा पाप तास तन तापेउ ॥१५१३॥
जैसे बछल तन चेनु बनाई । होत पुरान तब बेद बनाई ॥१५१४॥[6]
इमि कर जनम बिता चौरासी । काल कर्म बिन कटि जाए फांसी ॥१५१५॥
अंतिम जनम फिरि भौ परसंगा । भव सु बर तन पाओ अंगा ॥१५१६॥
किछु दिन बालक सो तन रहेउ । महा प्रबोध मत मरम जो भएउ ॥१५१७॥
दुआदस बरस बिता लरिकाई । फिरि मिनु ग्यान चेतनि होए भाई ॥१५१८॥

---

१ (ख), (घ) (ङ) अति पवित्र तहां सिधि भएऊ ।
२. (ख) मार्ग भ्रष्ट सठ तब कीन्हा । (ग) मारग भ्रष्ट सठ तै कीन्हा । (घ) मारग भ्रष्ट सठ तै कीन्हा ।
३ 'भएउ बिकल तन भर्म' स्वीकृत प्रति में ।
(ख) (ग) (घ) तन = तब ।
(ख), (ग), (घ) बछल = बछरा ।
(ख) बनाई = सुनाई ।

कथा प्रीति मन निर्मल भेषा । जँह तँह जस यस बचन प्रसंगा ॥१४६०॥
सुनो विहगपति तुम गुन ग्याता । भयेउ मोह मन माया बिगाता ॥१४६१॥[1]
ग्यानि घिरत भौ मनल प्रकासा । भाजि कामु भागु जम त्रासा ॥१४६२॥[2]
मन मंजीठि रंग सम गएऊ । उमल दसा हंस गति भएऊ ॥१४६३॥[3]
नीर छीर बिवरन्हु तुम जाना । कारि पीचि कवि सुधी समाना ॥१४६४॥
रोम रोम भौ पद परकासा ।[4] त्रिविधि ताप मिटा तन त्रासा ॥१४६५॥
पारस परिमल पारस गुन पासा ।[5] भौ चंदन तन बास सुबासा ॥१४६६॥

दोहा

तुम्हँ सदा गुर ग्यान है, मैं किंकर निजु दास ।
जेवों मरनी जल सालिया, मोह्र न भावत पास ॥६८॥

गरुर बचन

पच्छिनी कथा सुनन सम भइऊ । हार्दु दयाल किन्त सम कहेऊ ॥१४९७॥

काग बचन

प्रथम देह जब नर के पाई । संतन्ह संग सदा गुन गाई ॥१४९८॥
सुत बित नारि भौ संपति नाना । दान पुन्य तीर्थ असनाना ॥१४९९॥
भरमत फिरें बहुरि गिह भाई । मुख उदास मन किछु न सोहाई ॥१५००॥

काग बचन

धरम चरित्त जहां किछु सुनेऊ । पाप पुन्य तँह एको न गुनऊ ॥१५०१॥
बिना संत गुन मिले न ग्याना । जप तप मख पढ़ि बेद पुराना ॥१५०२॥
गिह तेजि दूरंतर गएऊ ।[6] गुर उपदेस तहां मोहि भएऊ ॥१५०३॥
गुर दयाल मोहि जीव उपासी । मत्र दीन्ह सुमिरो अविनासी ॥१५०४॥
निस दिन प्रेम रहै चित राता । गुर के बचन भयो निजु ग्याता ॥१५०५॥[8]

---

१ (ख) भयेरी मोह माया बिराता ।
२ (ख), (ग) मग = माया ।
३ (ग) उमल दसा हंस गुन भएउ ।
४ रोम रोम पद भव परस परगास । (ग) रोम रोम पद भव परगासा । (घ) रोम रोम भौ पद परदेसा ।
५ (क) पासा = भासा (ग) (घ) स्वीरत ।
६ (ख), (ग), (घ) तेजि = छाडि ।
७ (ख) (ग), (घ) मोहि = मोर । सिख = सिख दे ।
८ (घ) निजु = तन ।

सदा जपो निगु बासर सोई ।[१] सिव सम हित दूजा नहिं कोई ॥१५३८॥

दोहा

सोमस बचन बिचारि के, कहा बिमल निगु ग्यान ।
माया ब्रह्म बिबेक करि, पावै पद निर्बान ॥१०१॥

सोमस बचन

आदि अनादि पुर्ब जो अहई । सो सुमिरे भव कबहिं न परई ॥१५३९॥
निगुन नाम निअच्छर नीका । सदा बिमल रस भेद का टीका ॥१५४०॥
होवै मुक्ति अमर पद पावै । सतगुर मिलै सत सब्द बतावै ॥१५४१॥
तब मैं बोले बचन म्रिदु बानी । सदा दयाल तुम्ह अन्तर्जामी ॥१५४२॥[२]

काग बचन

यह सुनि बचन भर्म मोहि लागा । बिना सरूप किमि मन अनुरागा ॥१५४३॥
जाके सबन मन नाहिं बानी । सब गुन रहित सो ब्रह्म बखानी ॥१५४४॥

चौपाई

सगुन सरूप मैं खोजो भाई । करहु दया मोहि देहु देखाई ॥१५४५॥
जाकर पद निसदिन अनुरागा । रहौं असोच प्रेम प्रिय पागा ॥१५४६॥
आवै जाए माया कर रूपा । होए पतन फिर भरे सरूपा ॥१५४७॥

सोमस बचन

बहुत कल्प जुग बैठे देखा । आदि अन्त द्रिस्टि मंह पेखा ॥१५४८॥
जीवन मुक्ति है सब से न्यारा । आदि ब्रम्ह है बिमल सुधारा ॥१५४९॥
सिव सनकादि आदि नहिं जाना । सो मैं तुम्ह सों कहा बखाना ॥१५५०॥
सुनहू आदि अंत परसंगा । जेहि सुनि मोह सकल होए भंगा ॥१५५१॥

चौपाई

जेहि सुमिरे अघनासक मोखे ।[३] सिव सनकादि आदि कहु सोचे ॥१५५२॥

दोहा

जोग जाप तप ध्यान करि, नाना भेख बनाए ।
भरमत फिरेउ भवन मैं, फिर फिर जाए नसाए ॥१०२॥

काग बचन

तब मैं बचन जो बोलेउ बिचारी ।[४] सगुन सरूप है अति उजियारी ॥१५५३॥

---

१ (क) (ख), (ग) निगु = निगु ।
२. (क), (ख) (ग) तुम्ह = तुह ।
३ (क), (ख) (ग) जेहि = जाहि ।
४ (ख) (ग), (घ) बोलेउ = बोला ।

जंह जंह ग्रंथ पढ़ै कोइ ग्याता । सुनत स्रवन बहुत चित राता ॥१५१९॥
जंह जंह सुनेउ भक्ति सिव महई । तहवां जाए चरन चित गहई ॥१५२०॥[1]
फिरि गुर मिले दीन्ह उपदेसा । जपहिं सो सिव सिव बचन दिनेसा ॥१५२१॥
मैं चंचल गुर बिनमनि ऐसा । बिकसेउ लोचन भंवर ऐसा ॥१५२२॥[2]
अमिय घालि सीतल तन लागा । कुमति नास दुर्मति सभ भागा ॥१५२३॥

दोहा

भव जल लहरि उतंग अति, गुर तरनी करि पार ।
चन्हरि कर गहि सेवहीं, कर करता करुआर ॥१००॥

काग बचन

संत मत सुनो जस बानी । बिकसेउ कमल अमित रससानी ॥१५२४॥
अति प्रिय लागेउ भेख भगवाना । सादर करौं सदा गुर ग्याना ॥१५२५॥
नित नित प्रेम भया अनुरागा । जगा ग्यान दुर्मति दुरि भागा ॥१५२६॥
निकसे ग्रिह से अति अनुरागी । भेंटहिं मुनि पद पंकज लागी ॥१५२७॥
करहिं गुस्टि निजु ग्यान बिचारी । बादि बिबादि भक्ति निजु धारी ॥१५२८॥
लोमस सुनेउ महा मुनि ग्याता । हिरदय प्रेम प्रीति अति राता ॥१५२९॥[3]
भयो दरस तब कीन्ह प्रनामा । परदच्छिन करि कीन्ह बिस्रामा ॥१५३०॥[4]

चौपाई

निर्गुन बैन बोलहिं सत बानी ।[5] कहहिं ग्रंथ किछु कथा बखानी ॥१५३१॥[6]
जब मैं देखा महामुनि ग्याता ।[7] कीन्ह अनुसार बोले किछु बाता ॥१५३२॥
सिव अबिनासि दुजा नहि कोई । प्रगट कीन्ह सब कथा समोई ॥१५३३॥
इन्ह कर भेद सदा हम जाना । दीन्हो उपदेस प्रेम गुर ग्याना ॥१५३४॥[8]
सिव हरि राम चरित्र निक लागा । सो मम हिरदय चरन पद पागा ॥१५३५॥
नवधा भक्ति राम गुन ग्याना । सोई सरूप सदा सुख जाना ॥१५३६॥
संत दरस जो तीरथ धर्मा । दान पुन्य सोई सत कर्मा ॥१५३७॥

---

१ (ख), (ग), (घ) तहवां = ताहां ताहां ।
२ (ख) बिकसेउ = बिरमेउ । स्वीकृत प्रति में 'लोचन मम भंवर ऐसा' पाठ है ।
३ (ख) कीन्ह अनुसार प्रेम चित राता ।
४ (ग), (घ) करि = कै ।
५ (ख) (ग), (घ) बैन = बचन ।
६ (ग), (घ) कहहिं = कहै ।
७ (ग) जब मैं देखा मुनि महा ज्ञाता ।
८ दीन्ह उपदेस चरन गुर ज्ञाना ।

चौपाई

काग सरूप सुख मोहि निक लगा। बोलेउ प्रेम करि अति अनुरागा ॥१५६७॥
पगु मगु चलत पीरा अति भएऊ।[1] अब भी पंख अस किमि सहेऊ ॥१५६८॥
खग के संग निजु हरि गुन गएहों।[2] अमर होए अमित फल पएहों ॥१५६९॥
तुम्ह रिखि परिमल पारस टीका।[3] हम कुकाठ भौ चंदन नीका ॥१५७०॥

लोमस वचन

सगुन सरूप तोहि अति भायो।[4] सोई राम प्रगट जग आयो ॥१५७१॥
नग्र अयोध्या दसरथ राई।[5] जन्म लीन्ह तंह त्रिभुवन राई ॥१५७२॥[6]
काँपित जीवन ताहि कर जाना।[7] कीन्ह समाधि जुग जुग परमाना ॥१५७३॥[8]
जब जब जग में जनमे आई। हमसे दरस करहिं रघुराई ॥१५७४॥
तब तब ग्यान कहेउ परसंगा।[9] जेहि सुनि मोह सकल होए भंगा ॥१५७५॥[10]
तब उन्हि बात अचंभो लाई। तब हम मुद्रा दीन्ह देखाई ॥१५७६॥
जब जब जन्म लीन्ह रघुनाथा।[11] गनि गनि मुद्रा राखेउ साथा ॥१५७७॥[12]
तब परतीति उन्हें दिल आई।[13] रिखि के वचन सदा गुन गाई ॥१५७८॥[14]
करौं समाधि जीवन जग थोरा। ताते नाम लोमस रिखि मोरा ॥१५७९॥

दोहा

जाहु अवधपुर बेगि तुम्ह, तेजहु संसय भय भीर।[15]
सत वचन मह मानिहो, दरसन होए रघुबीर ॥१०४॥[16]

---

१ (ख) पगु मगु = मगु पगु।
२ (घ) गएहों = गयहों।
३ (क), (ख), (घ) रिखि = मुनि।
४ (ख), (ग) (घ) सगुन = सरगुन। (ख) भायो = भयो (घ) आएयो।
५. (ख), (ग), नग्र = नगर।
६ (घ) राई = राई।
७ (घ) कर = कह।
८ (ग), (ग) परमाना = प्रमाना।
९ (ख) (ग) कहेउ = कहो। (घ) कहेयो।
१० (ग) (घ) जेहि = जे।
११ (ग) (घ) जब जब = जो जो।
१२. (ख) मुद्रा = मुदरा। (ख) (ग) (घ) राखेउ = राखो।
१३ (ख) (ग), (घ) उन्हें = उन्हें।
१४ (ख) (ग), (घ) के = कै।
१५. (ख), (ग) तुम्ह = तुह। (ख) संसय = संसै।
१६ (घ) इकम।

हम निर्गुन कर जानु न मर्मा । भक्ति भाव जानों निगु धर्मा ॥१५५४॥[1]
तपसी मुनि श्री देखेउ संता । राम नाम सुनि ह्रिदय भनंसा ॥१५५५॥[2]
निगम निरुपनि यह जग करई । राम नाम गुन दुजा न सहई ॥१५५६॥
एहेऊ सिव श्री शक्ति समेसा ।[3] हरि पद ह्रिदय गनी गुन वेसा ॥१५५७॥

चौपाई

सो मुनि लोमस क्रोध भसि भएऊ ।[4] मनस समान वचन तेहि कहेऊ ॥१५५८॥[5]
तैं बड़ काग कुबुधि कर मूला ।[6] ममता बसि तुम्हे तन फूला ॥१५५९॥
होए मराल मर्म सो जाना । लघुपतनक का ग्यान बखाना ॥१५६०॥[7]
सतगुर वचन नाहि जब माना । बैठि बिरछ पर काग कराना ॥१५६१॥
नर के देह भएउ तब कागा ।[8] चले प्रनाम करि सुउ पति लागा ॥१५६२॥
रिसि क क्रोध सितल तन भएऊ ।[9] बोलि म्रिदु वचन बोलावन लएऊ ॥१५६३॥[10]
रिसि तब दया कीन्ह बहु भांती । नर के देह सुन्दर धरु कांती ॥१५६४॥
फिरि मैं तुम्ह कहं ग्यान बुझहों ।[11] निगु मैं क्या मैं तुम्हें सुनैहों ॥१५६५॥[12]
येहि जइए तह दास सरूपा ।[13] मेटि मर्जाद कम अभ भूपा ॥१५६६॥

दोहा

भवन अरधि दीपक बिना, चोर सहु के चीन्ह ।[14]
ह्रिदय सून बिनु ग्यान रव, चित बिनु धाखी हीन ॥१०३॥[15]

---

१ (क) भक्ति भाव जानिहि सत धरमा ।
२ (क) (ग), (घ) सुनि = मुनि ।
३ (च) चल्यो सिव श्री सती समेता ।
४ (क) भसि = भो ।
५ (ख), (ग), (घ) तेहि = तब ।
६ (घ) कर = का ।
७ (क) (ग) (घ) जाना = जाने । (ग) बखाना = बखाने । (घ) लघुपतनक = लघुपतभी ।
८ (ख) नर के = नर कए । (ख), (ग), (घ) भएउ = भयो ।
९ (घ) तन = तब ।
१० (ख) (ग) म्रिदु = मिठु ।
११ (घ) मैं = हम । तुम्हें = तुम । (घ) फिरि = फेरि ।
१२ (घ) क्या = कथा ।
१३ (घ), (ग), (घ) जइए = जाई । तह = तहाँ ।
१४ (घ) (ग), (घ) के = जिमि । (घ) चोर = ज्योर ।
१५ (घ), (ख) ह्रिदय = ह्रिदया ।

गरुर गर्व कंदर्प मदमाता ।[1] काग कपूत मीच मन राता ॥१६१४॥[2]
तिमि गो गरुर संत मत भएऊ ।[3] कउवा कर्म तेजि हंस भएऊ ॥१६१५॥[4]
मति मराल है नर की बेही ।[5] बिचरत ध्यान सुमति मिलि लेही ॥१६१६॥
मीच प्रसंग कर्म की रेखा ।[6] इमि भौ मलिता ध्यान मम देखा ॥१६१७॥
उभय बीच ध्यान सत कहेऊ । संत बिवेक परम पद पएऊ ॥१६१८॥[7]
परिच राम सो मम कहिहौं । इमि करि संत ध्यान नितु गहिहौं ॥१६१९॥[8]
इह वाम कोइ कर्म न पावे । मा ते भेद विदित जग गावे ॥१६२०॥
ऐसन मोह काग सम भएऊ । उभय पखी मंह सम फिरि भएऊ ॥१६२१॥
गया कहीं नहिं ठावहिं मर्मा ।[9] यह किछु इ द्वादश कर कर्मा ॥१६२२॥[10]
सम ब्रम्हंड देखा फिरि आई । अनंत कला मन भेद न पाई ॥१६२३॥
महा महा मुनि भौ बड़ ग्याता ।[11] मर्म काल हम्ह सम पर राता ॥१६२४॥[12]
एक दुइ होए तब कहि समुझाई ।[13] अक माता किछु कहि नहिं जाई ॥१६२५॥[14]
पढ़ि परख पर घूमन लागा । उलटी बुधि भुला मर्म कागा ॥१६२६॥
आपु भुला फिरि भोरि भुलाया ।[15] पड़ा लपेट संपति भो माया ॥१६२७॥[16]
आडू योग मैं इमि मत फिरई । बुधि सम खसे फहम नहिं रहई ॥१६२८॥
अखंड खंड करि भट नर टारा । बिनु सतगुर को निरखि निहारा ॥१६२९॥[17]

---

१ (क) गर्व = गरब । (ग), (घ) गब । (क) कंदर्प = कंदरप । (घ) कंदप । (च) कंदेव ।
२ (क), (घ), (च) काम कुबुधि मीच मन राता ।
३ (घ), भएऊ = भेऊ ।
४ (घ) कर्म = क्रम ।
५ (ग) की = के । (क) नर = न ।
६ (क), (ग) उभय बीच ध्यान सत कहेऊ ।
७ (क) (ख) (घ) परम = प्रेम । (ग) बिवेक = बिवेकी ।
८ (क), (ग) (घ) १६१७ संख्यक चोपाई का पाठभाव है ।
९. (क) कहीं = कहाँ ।
१० (क) किछु = सम ।
११ (ख), (ग), (घ) महा = माहा ।
१२ (क) मर्म = मरम । हम्ह = हम्ही ।
१३ (क), (घ) दुइ = दोए । (घ) तब = तो ।
१४ (क) (ग), (घ) अगम भेदा कछु कहा न जाए ।
१५. (ख), (घ) भोरि = भवरि ।
१६ (ख) (ग), (घ) पड़ा = परे ।
१७ (ख), (ग), निरखि = निरखि ।

चौपाई

चले तुरत सुनो खगराया। देखेउ दरस राम पद पाया ॥१५८०॥[1]
नित यहाँ रहो निकट चलि आई।[2] पूछन चले सो जिनि जिमि धाई ॥१५८१॥[3]
रहों लोभाए दरस प्रिय लागा।[4] निस दिन करो विषक विरागा ॥१५८२॥
भय मति मोह सकस तन भएऊ।[5] रिसिके वचन मिथ्या मोहि भएऊ ॥१५८३॥
फिरि फिरि ऐन मंजोर में आई। धरि प्रसाद तब लीनहिं बनाई ॥१५८४॥[6]
लीन्ह चोंच भरि तुरतहि भागा। राम के हाथ पीछे तब लागा ॥१५८५॥[7]
फिरे यह इन्द्रलोक ब्रम्हंडा।[8] सप्त पताल पुहुमी नव खंडा ॥१५८६॥
जब मैं देखेउ निकट देखाई।[9] मुँदेउ पलक सभय चलि धाई ॥१५८७॥[10]
खोलेउ मुख वचन जब खूला।[11] तब मैं पैठि गएउ समतूला ॥१५८८॥[12]
देखेउ खंड ब्रम्हंड सब भारी। कोटिन्ह ब्रम्हा वेद विचारी ॥१५८९॥
कोटिन्ह रुद्र और सीव भवानी। सेष महेस संख मुनि बानी ॥१५९०॥
एक एक कल्प रहेउ ब्रम्हंडा।[13] राम चरित तंह देखेउ अखंडा ॥१५९१॥[14]
तब मैं तुरंत बाहर चलि आएउ।[15] उभय पहर मंह चरित देखाएउ ॥१५९२॥[16]
बालक रूप देखा तेहि भाई। यह विरतंत कथा रघुराई ॥१५९३॥[17]

---

१ (क), (ग), (घ) देखेउ = देखेयो।
२. (क), (घ) यहां = यहां। (ग) आइ = आई। अतिरिक्त पाठ—सुखदाई वचन। (घ) लाग सुखदाई वचन।
३ (ख) जिनि जिमि = जुगि जुगि।
४ (क), (ग), (घ) रहों = रहेयो।
५. (ग), (घ) भएउ = भेउ।
६ (क) लीनेहिं = लएउहिं। (ग) लेहु।
७ (ख) के = कए। (ग) क।
८ (क), (ग), (घ) यह = जो।
९ (क), (ग) देखेउ = देखो।
१० (क), (ग) मुँदेउ = मुँदेयो। (घ) मुँदे। (क), (ग) भयच चलि = भयवपुर।
११ (ख) (ग), (घ) जब = तब।
१२. (क) गए = गयो। ए = गयो।
१३ (ख) रहेउ = बीता।
१४ (क), (ग), (घ) तंह = सब।
१५. (ख), (ग) तब मैं निकसि बाहर चलि आएऊ।
१६ (ग), (घ), उभै घरी मैं चरित दुखैऊ। (घ) उभै घरी मंह चरित देखएऊ।
१७ (क), (ग), (घ) विरतंत = विरतंतु। (ख) विरतंतु।

तीनि लोक निरंजन राई। राम रूप औ किसन कन्हाई ॥१६४२॥[1]
सत पुरुष खस कबहिं न करई। माया निरंजन सब सुधि हरई ॥१६४३॥

दोहा

भव जल पानी मीन जिव, महा भर्म भव जाल।
तीनि लोक फिरि आवहीं, सीस पटकि धरि काल ॥१०८॥

छंद

कहौं बिबिधि प्रकास ग्यान गमी येहि बिरला जन कोइ जानहीं।[2]
कर्महि बिबरन ब्रह्म औ माया इमि गुर ग्यानहिं मानहीं ॥३९॥[3]
भएउ सो हंस बंस गमी सत गुर अनेत सुधि बिसरावहीं।[4]
छूटेउ कर्म कलि भर्म नाहीं पिक मराल होए आवहीं ॥४०॥[5]

सोरठा

द्रुम लता बहु भाँति, सतगुर मत नहिं जानहीं।
रहे बिबिधि मत माति, मुनि सब कथेउ ग्रंथ मति ॥२०॥

चौपाई

कहे मनस मन मता समीरा। पाप पुन्य दूर दोए गीरा ॥१६४४॥[6]
तामें मंथन यह जग करई।[7] दुइ सरिता जग इमि कर बहई ॥१६४५॥[8]
निगम नदी दोए रवि के दासा।[9] तामें बढ़ेउ अनेकन्हि साखा ॥१६४६॥[10]
कहि कहि कवि सब बहुत बनाई। नाला नदी से फुटि फुटि जाई ॥१६४७॥[11]
संत मंत कोई बिरला जाने।[12] सदा समीप सोइ पद माने ॥१६४८॥[13]

---

१ (क), (ख) (ग) औ = है।
२ (क) जानहीं = जानही। (ग) जानहीं।
३ (क) (ख) (ग) बिबरन = बिबेक। (क) ग्यान न मानहीं।
४ (क) भएउ = भयो। (ग) भौ। (घ) भयो।
५ (क) (ख) छूटेउ = छूटेगो। (ग) मराल = मराल।
६ (ख) दोए = दुइ।
७ (ग) तामें = जामें।
८ (क), (ग) (घ) सरिता = सरिता। (घ) कर = करि।
९ (क) (ख), (ग) दोए = दुइ। रवि के = रवि।
१० (ख), बढ़ेउ = बढ़े। (ग), (घ) बढ़ेगो। (क), (ग), (घ) अनेकन्हि = अनेकन्हि।
११ (ग), (घ) नाला = नारा।
१२ (क) संत मंत कोइ बिरला जन जाने।
१३ (क) (ग), (घ) सोइ = सो इमि।

दोहा

अनंत मन फिरि एक है, एक अनंत संसार।[1]
दसटि के आपु बिचारिए, एक रहा ततुसार ॥१०७॥[2]

चौपाई

मानुष मन जब फिरे फिरंगा। मन द्रिस्टि दिस धारे रंगा ॥१६३०॥[3]
पछिमक मान पूरब जनु अहई।[4] उत्तर कहँ दछिनाएन कहई ॥१६३१॥[5]
यह अपरस यह अगम अगूहा। इ द्रस्टांत कहु औत न बूहा ॥१६३२॥[6]
देखु द्रिस्टांत द्रिस्टि महँ आवे।[7] बसि राजा के नाच नचावे ॥१६३३॥[8]
कीन्ह असमेधि जग्य बड़ साजा।[9] इमि करि गर्व भूले तब राजा ॥१६३४॥
करौं संपूरन जग्य बनाई।[10] इ द्रसोक मैं सेठ धाहाई ॥१६३५॥
आए बावन जानु ना मर्मा। इमि करि भूलि भवन मैं मर्मा ॥१६३६॥[11]
बावन रूप बावन यह रहई।[12] तीनि लोक पगु इमि कर करई ॥१६३७॥[13]
महा मोह के मर्म न जाना।[14] यह सम निरगुनि कीन्ह भगवाना ॥१६३८॥[15]
ऐसन कीन्ह भम कर साजा।[16] तो फिरि पीठि न पाइन्हि राजा ॥१६३९॥
घटा बढ़ा नाहिं पांव पसारा। तीनि लोक अर्धमो धारा ॥१६४०॥
यह निरधार करे नर अबहीं।[17] सतगुर ग्यान होवे तिन्हु तबहीं ॥१६४१॥[18]

---

१ (ख) (ग), (घ) फिरि = फेरि। (ग) संसार = संचार। (घ) सो एकसे अनन्त संसार।
२ (ख), (ग), (घ) ततु = तत्।
३ (ख), (घ) धेरे = धारे।
४ (ग), (घ) पूरबक मान पछिम जनु कहई।
५ (घ) १६२६ को भी यह पंक्ति प्रचलित है।
६ (ख), (घ) कह = के। (घ) के।
७ (ख) (ग) देखु = देखो। (घ) मंह = में। (ख), (ग), (घ) आवे = आवै।
८ (ख), (ग), (घ) नचावे = नचावै।
९ (ग) (घ) असमेधि = असुमेध। (ख) असमेधि = असुमेध।
१० (घ) करब = करु।
११ (ख), (घ) भूलि = भूली।
१२ (ख), (घ) यह = पोर। (ग) पोर।
१३ (ख), (ग) (घ) कर = करी। करइ = करइ।
१४ (ख), (ग), (घ) महा = माहा। (ग) (घ) क = किमि (घ) की।
१५ (ख), (घ) निरगुनि = निरगुनि।
१६ (ख), (ग), (घ) कर = की।
१७ (ख), (ग), (घ) नर = न। (घ) अबहीं = तबहीं।
१८ (घ) १६१६ पंक्ति का अप्रमाण है।

सगुन निर्गुन कर यह फल लेखा ।[1] सतगुर मत बिग्सा धन पेखा ॥१६५९॥
निर्गुन नाम है पूर्ण निनारा । सगुन सकल जिव करो बिचारा ॥१६६०॥
जाते तम तिमिरि सब नासे ।[2] भानु कला छवि इमि कर भासे ॥१६६१॥[3]
ऐसे ग्यान कर्म कलि नासा । भएउ संपूरन प्रेम प्रकासा ॥१६६२॥
प्रान पिंड जेहि होए न भीना ।[4] ऐसो सत्त पुरुष कहं चीन्हा ॥१६६३॥
निर्गुन सगुन यह आकर कहई । करे बिबेक ध्यान गुन लहई ॥१६६४॥[5]
सीप संग सतगुर जस परखा ।[6] मोती मनी जानि जिव परखा ॥१६६५॥[7]
जहं उपजे तंह मोल न लहई । जाए दुरंतर गुन सब कहई ॥१६६६॥[8]
मान सरोवर धन्य गुन कहई ।[9] जेहि जमी सत सदा सुख लहई ॥१६६७॥[10]
दुरि भौ पुरुब निकट करि लिवा । ममिता बसि सदा सन बिधा ॥१६६८॥[11]

सतगुर बचन

जैसे भंवर कंवल में रहई । संत सदा गुन इमि कर कहई ॥१६६९॥[12]

दोहा

सतगुर भान मिसाल सम, कमल भया संसार ।
बिकसे भंवर आनन्द चाखे इमि करि करो बिचार ॥११०॥[13]

सेवक बचन[14]

तुम कहं सतगुर इमि कर जाना । जैसो दिनेस छवि कला बखाना ॥१६७०॥[15]

---

१. (ख), (ग) (घ) लेखा = पेखा ।
२ (ख) (ग), (घ) तिमिरि = त्रिमिरि ।
३. (ख), (ग) (घ) भानु = भान । (ख) (ग), (घ) भानु = भान ।
४ (ख) (ग) होए न भीना = होत ना भी`हा ।
५ (ख), (घ) गुन = मत ।
६ (ख), (ग), (घ) सीप = सरप ।
७ (ख) परखा = पराखा ।
८ (ख) जाए = जाई ।
९. (घ) सरोवर = सरवर । (ख), (ग) (घ) धन्य = धन ।
१० (ख), (ग) (घ) जमी = जिमी ।
११ (ख) (ग) (घ) बीधा = बिधा । स्पष्टता के लिए (क) पाठ को लिया गया है ।
१२ (ख) जैसे = जएसे ।
१३ (ख) कमल = कंवल । संसार = ससार । बिकसे = बिगसे । (ग) कंवल । बिगसे ।
(घ) भान = भेरा । संसार = ससार । भंवर = भंवरा ।
१४ (ख), (ग) में यह पाठ नहीं है । (घ) में इसके स्थान पर 'शुभाशाह बचन' पाठ है ।
१५. (ख), (ग) कहं = के । (घ) तुम = तुम्ह । कला = काल ।

तप के तेज फूला फुलवारी ।[1] एक दुर्म लागा फल पारी ॥१६४९॥[2]
गुरु संग्रह दुइ क्रिया करई ।[3] इमि कारन भवसागर परई ॥१६५०॥[4]
धर्म काम चित निस दिन रहेऊ ।[5] मोच्छ धर्म मम गति सहऊ ॥१६५१॥[6]
साधु दरस इमि त अधिकारी । अटल ग्यान निजु मुक्ति बिचारी ॥१६५२॥[7]
नाम निमल जो कमे बिरागा ।[8] भएउ मराल तेजि मति कागा ॥१६५३॥
संचित जल पै नीतर रहई ।[9] बिवरन बिलगि संत मत कहई ॥१६५४॥
नीर छीर सम प्रीत समेता ।[10] बक जानहि तीनहुं कहु सैता ॥१६५५॥[11]
माया ग्यान भो बुधि परकासा ।[12] बिना ग्यान गुन सम किछु नासा ॥१६५६॥[13]
सगुन निगुन इमि करो बखाना ।[14] जैसो जल उपल बिलगि किमि जाना ॥१६५७॥[15]

दोहा

सैंधु लहरि अंबस है, किमि तरनी होए पार ।[16]
निगुन नाम जहाज है गुन गहि खीचनिहार ॥१०६॥[17]

चौपाई

एक पल छिति रच्छा करई ।[18] परे हेम जमी पर पलई ॥१६५८॥[19]

---

१ (प) फूला = फूली, (प) फूलै ।
२ (क) दुर्म एक लाग्य फल भारी ।
३ (क) यह पंक्ति अपठित है ।
४ (प) साग(= सम ।
५ (ग) धर्म = धरम । (ग), (प) निस दिन = निसदिन ।
६ (क) धर्म = धरम ।
७ (क) मुक्ति = मुकुति ।
८ (क) निर्मल = निरमल । (ग) (प) निमल ।
९ (प) संचित जल पै इमि नीतर रहई ।
१० (क) नीर छीर जल बरनि समेता ।
११ (ग) बक जानहि तीनहु कप हेता । (ग) (प) बक = बक ।
१२ (प) (प) परकासा = प्रकासा । (ग) परगासा ।
१३ (ग), (प) किछु = कछु ।
१४ (क) सगुन = सरगुन । (ग) निर्गुन ।
१५ (क) (ग) उपल = ऊपर ।
१६ (क) (क) सैंधु लहरि जस गुन है । (क) सिंधु लहरि यह सगुन है ।
१७ (ग), (प) खीच = खैंचन ।
१८ (क), (क) एक पल ग्यापा बिरली करइ ।
१९ (ग) (प) (प) जमी = जिमी ।

माँजेउ मकुर साफ भौ ऐना। बिमल निमल पद भोसत नैना ॥१६८५॥[1]
मजन गुरु पद लोचन विकसा। भासर मधुर मनोहर प्रिगसा ॥१६८६॥[2]
चारि चतुर्दल उघ प्रकासा। अलि साधक मन पत्र प्रकासा ॥१६८७॥
कूप तड़ाग वाटिका घट है। सीचि सुधा सम सो घट घट है ॥१६८८॥
तामें एक फल अजब अनूपा। बिना बीज है सब्द सरूपा ॥१६८९॥
इमि करि वा फल पावे सोई। जब सतगुरु पद प्रापित होई ॥१६९०॥
साधु असाधु कलि कुमति बिहाई। भौ निकलंक कालु फिरि जाई ॥१६९१॥
परिमल पारस कुर्म में लागा। भयो सुगंध इमि संत सुभागा ॥१६९२॥[3]
जहाँ रहे तहँ जग में दीसे। भौ गुन ध्यान नाम मनि ईसे ॥१६९३॥[4]

दोहा

दरिया दरसन मकुर है, ता मह कला प्रकास।
भौ ते गुन यह रहित है मिलि गयो प्रेम सुबास ॥११२॥[5]

चौपाई

तुम सतगुरु मम दास तुम्हारा। सब विधि कीन्ह मोर उपकारा ॥१६९४॥[6]
सुनेउ बैन मम अम्रित सानी। महा त्रिखा सन मिलि गौ पानी ॥१६९५॥
महा सुगम सितल पद पएउ। मम त्रिखा अस बिनु मिटि गएउ ॥१६९६॥[7]
विनय करौं दोनों कर जोरी। सुनो स्रवन अलपमति मोरी ॥१६९७॥[8]
अब तुम्ह दर्स पुर्ब के पाई। स्रवन सरूप मम कथा सुनाई ॥१६९८॥
गुन जौं पूछहुँ तौ कहो मनंता। सो सरूप किमि भाखौं संता ॥१६९९॥[9]
निरालेप माया महँ लेपा। जीवन भक्ति गुन मतीत अलेपा ॥१७००॥[10]

---

१ (ख) ऐना = अएना।
२ (ख), (ग) (घ) विकसा = प्रिगसा।
३ (ख) परिमल = भो परिमल। (ग) भयो परिमल। (घ) भैंयो परिमल; 'पारस' और 'में' नहीं है। इमि संत सुभागा = प्रेम रस लागा।
४ (ग) (घ) मनि = मन।
५ (ख) भौ ते = भव तेमि। गुन यह रहित = गुन रहित।
६ (ख) तुम = तुमह। इस चौपाई के पूर्व 'सेवक वचन' का उल्लेख। (ग) सेवक वचन। (घ) में शुभ्रपाद वचन।
७ (ख) त्रिखा = त्रिखी। पहाचित प्रमपरा।
८ (घ) सुनो = सुनहुँ।
९ (ख) इस चौपाई के पूर्व 'दरिया वचन'। (ग), (घ) सतगुरु वचन'।
१० (ख) (ग) (घ) भक्ति = मुक्ति। (ग), (घ) मुक्ति।

जल में पल में सम जग रहई । मनि है त्रिमल ब्रम्ह पर सहई ॥१६७१॥[1]
मुक्ति धारि है सम स मीका । सतगुर ग्यान समन्हि ते टीका ॥१६७२॥[2]
ग्यान वसुर है धारिठ मोती । सूसि सेल जरि निमल वाती ॥१६७३॥[3]
सुधा ब्रम्ह है मनभो म्याला । उभ ग्यान मुक्ति मसधाना ॥१६७४॥[4]
सक्ति संसय नहिं तामें मास । सदा प्रगट भ्रम पातक नास ॥१६७५॥
सम प्रसन्न मन संत बिरागा । पद पंकज मन जानु प्रयागा ॥१६७६॥[5]
नित मल मजन दरस मेंह करहू । तजि वासन अम्रित रस भरहू ॥१६७७॥[6]
नाम बिमल जल वह सुधारा । कूप कुमति मन ठेसु बिकारा ॥१६७८॥[7]
वह दरिया वारिज किमि कहई । को है भंमर बास किमि सहई ॥१६७९॥[8]
दरिया दिल कमल बिच फूला । मन है भंवर बास समतूला ॥१६८०॥[9]
सेंधु में सरिता सम मिलि जाई । किमि उलंघि होए पार न पाई ॥१६८१॥[10]

दोहा

पार कहे सो पार है, वार कहे सो वार ।
वार पार सम देखिए, दरिया शील विचार ॥१११॥[11]

चौपाई

चंद जैसो मग घन में भएऊ । इमि करि मोह घटा मन छएऊ ॥१६८२॥[12]
प्रबल माया भति ग्यान छपाना । मकुर धोख मुरचा लपटाना ॥१६८३॥[13]
उलटि समीर जैसो कीन्ह पयाना । मेटि गो मोह घटा छितराना ॥१६८४॥[14]

---

१ (ख) पर = वर ।
२ (घ) ते = के ।
३ (ग) जरि = बरि ।
४ (ख) (ग), (घ) है = भई ।
५ (क) बिरोग । (ख) बिरोगा = बिरागा । (घ) पाठ स्वीकृत ।
६ (ख) नित = निति । मह = मन । तेजि = तोजि । (घ) मिलि ।
७ (ख), (ग) (घ) बिकारा = बेकारा ।
८ (ख) (ग), (घ) वह = कौर ।
९ इस चौ॰ के प्रारंभ में—(ग) में 'सतगुर वचन' तथा (घ) में 'दरिया वचन' का शब्द है ।
१० (ख) में इस चौपाई की पूर्व अर्द्धाली नहीं है ।
११ (ख) पार = वार । वार कहे सो वार है ।
१२ (ख) घर्ई = परेउ ।
१३ (ख), (ग), (घ) प्रति में उल्लिखित पाठ स्वीकृत ।
१४ (घ) जैसे = जो । (ग), (घ) जा ।

पारस परसे कंचन होई । सो कुधातु कहि सके ना कोई ॥१७१६॥[1]
रहे परसंग संत भौ ऐसे । संघु सीप मुकुता मनि जैसे ॥१७१७॥[2]

दोहा

गुरु पद पदुम मन भँवर करु, आनँद मगन मूल ।
लै लपटि रहा बिमल रस, काटि कर्म कलि सूल ॥११४॥

छंद

भव भर्म भंजन पाप रंजन संजन जन सुख पावहीं ।
चरन कंज में मंजन तन कट त्रिबिधि ताप नसावहीं ॥४१॥
बिमल मलकत पलक पेखो अलख नाम लखावहीं ।
जीवन मुक्ति जो जिंद जग में दरस दरिया पावहीं ॥४२॥

---

१ (ख) सके = सकए ।
२ (ख), (ग) (घ) [illegible] सीप = जैसे सीप । मुकुता मनि = मनि मुकुता ।
विशेष विवृति—(क) में छंद के प्रथम चरण में 'संजन' को 'सज्जन' प्रयुक्त किया गया है ।
तृतीय चरण में 'पलक' को 'पलक' ।
पुस्तक (ख) में २री पंक्ति निम्न प्रकार है— जैसे सीप मनि मुकुता जैसे ।'
पुस्तक (ख) की प्रतिलिपि में निम्नलिखित पंक्तियाँ अधिक देखी जाती हैं—जिनका पुस्तक (क) की मूल हस्तलिपि में कोई उल्लेख नहीं है—

दोहा

"सिवातीसुत सिक सीप है, क्या रहे जलहीन ।
एको पलक नाहिं बिछुरो गुन मति होय ना भीन ॥

चौपाई

ताहा कहु में सम कोई नाहीं । देखि दिस्टि नर मनि कहु भाहीं ॥
ऐसन संत सुबुधि सुजाना । पवन पंथ न हीरा हुई जाना ॥
जैसे दुर्ब नंद परिमल देना । रतरित चंदन मिल सीतल चैना ॥
संत सुगंध सीतल सम बानी । बिकसित कली भँवर रस-सानी ॥
रत भँग जब इमि कर ऐसे । कहीं सात संग अनि जैसे ॥
मानन एक बिबिधि बहु बानी । कहीं छिन मधु मदिरा बानी ॥
रहै सुसंग संगति नाई जाना । जौं जानी मेल चंद पहचाना ॥
जैसे मक्षिका सुत लिहै बनाई । छकि स्वाद मद सुख पाई ॥
इमि करि निरहि संत कर बाना । चत बहु मसरि मरोरत हाना ॥
बड़ी बरत चौरासिहीं जैहौ । पतिहा सुन तन किमि कर रहैहौ ॥
कलप कोटि भव भरमे पाई । बिनु गुर ज्ञान नाम नाहिं पाई ॥
गुर बिनु छरे ना दीजुग देवा । राम करहि पुनि सुमि की सेवा ।"

सतगुर बचन[1]

जौं मग जग मैं देखि मनसा । अकथ सरुप महिमा गुरु सता ॥१७०१॥[2]

सेस सहस्र मुख बिनय बिचारी । नहिं गुन महिमा इमि करि हारी ॥१७०२॥[3]

ब्रम्हा बिस्नु महेश त्रिपुरारी । आदि गनेस गुन ग्यान बिचारी ॥१७०३॥[4]

बिहस्पति मुख महिमा जो कहेऊ । आदि ब्यास बेद मत सहऊ ॥१७०४॥[5]

कहेउ संत गुन महिमा केता । प्रीति सदा गुन प्रेम समता ॥१७०५॥[6]

दोहा

जस थल सस पताल सही किमि करि करौं बखान ।
ज्यों प्रतिबिम घट देखिए आपु अवेस समान ॥११३॥

सेवक बचन[7]

तब सिस कहेउ धन्य गुरु ग्याता । धरउ चरन पद-पंकज राता ॥१७०६॥

सत दरस गुन सम त नीका । जैसा मस्तक त्रिय मनि का टीका ॥१७०७॥[8]

तहं दीपक के कौने कामा । कोटि तिर्थ भरमे का धामा ॥१७०८॥[9]

संत निकट घट देखु उघारी । तामे चरित्र अनक संवारी ॥१७०९॥[10]

चच्छु बिहून देखे नहिं नना । बहिरा से कोटि कहे जो बैना ॥१७१०॥[11]

ना उन्हि सुना मधुर नहिं देखा । इमि करि बचन झूठ करि लेखा ॥१७११॥[12]

सत बचन धनि जानहु मिथ्या । आपु सोच नहिं सचन्न पछिमथ्या ॥१७१२॥

परमारथ है गंध सुबासा । स्वाथ आपु तन निकट निवासा ॥१७१३॥

परमारथ जैसो पर कहू दीजै । मथ से काढ़ि मुक्ति नहिं दीजे ॥१७१४॥[13]

बूझत मब अस लीन्ह बिचारी । सतगुर को गुन इमि अधिकारी ॥१७१५॥

---

१ (क) (ग) (घ) इसका पाठ नहीं है।
२ (घ) देखि = देखिए।
३ (क) देख = देख।
४ (ग) (घ) बिस्नु = बिष्नु। गुन = गुर।
५. (ख) जो = मे। कहेऊ = रहेऊ। (ग), (घ) रहेऊ।
६ (ख), (ग) (घ) संत गुन = संत मत गुन।
७ (ख) (ग) (घ) यह पाठ नहीं है।
८ (ख), (ग), (घ) मनि का पाठ रवीहन।
९. (क) कौन = कवने। (ग) कौने = कवन है।
१० (ख), (ग) चरित्र = चित्र।
११ (घ) कहे = कहा।
१२. (ख) बचन = बदन। (ग), (घ) बैन।
१३ (ख) मथ = मए।

पलक तोसा जिमिया धरि राखा ।[1] नित नै भक्ति चौसहिं सत भाखा ॥१७२४॥
गुन समूह ऐगुन देहि डारी । भए मराल निर छीर सुधारी ॥१७२५॥
विविधि फूल जैसे अलि त्यागे । कंज पुंज बास रस पागे ॥१७२६॥
विमल ध्यान निजु प्रेम समेता ।[2] सदा सुवास परिमल निजु हेता ॥१७२७॥
तेजि भरम सब ध्यान बिचारी । इमि करि संत सदा अधिकारी ॥१७२८॥
जैसे दिनमनि दिन है ऊँचा ।[3] इमि करि जानु भक्त सम नीचा ॥१७२९॥

अर्जुन वचन[4]

किस्न नाम की पुर्व है कोई ।[5] कौन नाम निजु संत समोई ॥१७३०॥
जाते अटल मुक्ति गुर ध्याता ।[6] भव में भरमि कबहिं नहिं आता ॥१७३१॥[7]
संसय सागर बुरि सब डारी । कहो ध्यान निजु अब बिचारी ॥१७३२॥

सिरी किस्न उवाच

बिमल ध्यान निजु संत है स्रोता । गोप प्रगट निजु कथे निरोता ॥१७३३॥
हम तिरगुन मन हमहिं ममंता । हम निजु ब्रह्म सुमिरि सब संता ॥१७३४॥
जब जब जन्म भक्त मंह होई । त्रिगुन लिला धरि लखे न कोई ॥१७३५॥

दोहा

निरालेप निरभय पद, संत सदा सुख हीत ।
भय भंजन भगवान हौं, दनुज दैत कंह भीत ॥११६॥[8]

चौपाई

निगम नेति गावहि सुर ध्याता । अपत भजन नाम मम राता ॥१७३६॥[9]
सो मम देखि भक्त सम भूला ।[10] महा मोह पास सम तूला ॥१७३७॥
संत दुखित सुनि धरेउ सरीरा । भंजेउ दैत मेटेउ भय भीरा ॥१७३८॥
हमहिं बिसंभर हम जगदीसा । हमहिं किस्ना भूमा वसुदीसा ॥१७३९॥

---

१ (घ) अतिरिक्त पाठ—त्रिगुन वचन । (ग), (घ) जिमिया = जिम्या ।
२. (ख), (ग), (घ) ध्यान = नाम ।
३ (ख), (घ) जैसे दिनप गुन सदा है ऊँचा । भक्त = भगत ।
४ (घ) युधिष्ठिर वचन ।
५. (घ) नाम = नाम है ।
६ (ग) गुर = गुन ।
७ (ख), (ग) (घ) आता = पाता ।
८ (घ) हौं = है ।
९. (घ) राता = ताता ।
१० (घ) भक्त = भगत । (ग), (घ) भगत ।

सोरठा

धन्य धुम सतगुर ग्यान, सेवक धन्य पुकारहीं ।
दीन्ह मुक्ति का दान सुख सागर भी रहित है ॥२१॥

चौपाई

सतगुर दरस संत सुख होता । कारेउ अम्रित पत्र पुनीता ॥१७१८॥
पियत प्रेम दुरि मोह निरंता । बिमल ग्यान मन एक अनंता ॥१७१९॥
साधु संघति सम कुमति बिहाई । सुनि गुन ग्यान अम्रित फल पाई ॥१७२०॥
संत समाज सन्त सुख राघू । भक्ति महातम सिर पर छाघू ॥१७२१॥
इमि करि जग मैं संत सुजाना । जैंवो जल पुरइनि लेप न माना ॥१७२२॥
गुन लेहिं बीचि ऐगुन देहिं डारी । जैंवो मराल निर छीर सुधारी ॥१७२३॥
साधु असाधु एक तन देखा । गुन होए बिलगि नाम सत रेखा ॥१७२४॥
धन्य ग्राम संत जन ग्याता । रहे निकट सुने सत बाता ॥१७२५॥
जलज जोंक उपजे जल साथा । रुधिर पीवि जिमि यह गुन गाथा ॥१७२६॥
इमि करि रहे सदा एक साथा । मुख है सबन नन है माथा ॥१७२७॥
पसुमत ग्याम ताहि मंह जानी । जे नहिं संत दरस मंह मानी ॥१७२८॥
सुरसरि जल कुभाजन भरई । जसा काटि मदिरा तंह मरई ॥१७२९॥
मति कपूत मव बिलि का मूला ।[1] यह प्रसंग कुमति का सूला ॥१७३०॥[2]

दोहा

सुंदर नर तन पाएके, भक्ति न कीन्ह बिचारि ।[3]
भए क्रिमी बिनु नैन को, बास बिगिधि संवारि ॥११५॥[4]

चौपाई

मनुम किरन कथा कछु कहिए ।[5] इमि करि भक्ति ग्यान निजु लहिए ॥१७३१॥[6]
बिनय कीन्ह चरन बहु मांनी ।[7] कहो संत प्रसंत प्रजाती ॥१७३२॥[8]
का पद पाए भएउ अति ऊचा ।[9] देखहिं द्रिस्टि समस्त सम नीचा ॥१७३३॥

---

१ (क), (ग), (घ) कपूत = पुनीत ।
२ (क), (घ) का मूला = सम मूला । (ग) सम मूला ।
३ (ख) (घ) सुन्दर तन नर पाएके ।
४ (ख) (घ) भए = भयो । (घ) भे । क्रिमी = क्रीम । (घ) कीम्र ।
५ (क) (घ) किरन = बिगुन । (ग), (घ) कछु = किछु । (ख), (ग), (घ) कहिए = कहि है ।
६ (घ) निजु = किछु । (ख), (ग) लहिए = लहि है । (क) लहे है ।
७ (ख) (ग), (घ) बिनय = बिनै ।
८ (ग) (घ) कहो = कोई । (ख) (ग), (घ) प्रजाती = गुजाती ।
९ (ख), (ग), (घ) भएउ = भए ।

सोइ अंस धरि निगुन सरीरा।[१] अनंत कला मन अहै समीरा ॥१७६३॥[२]
सगुन सरुप अहै निर्गुन निरंता। मम सुमिरौं तेहि प्रेम समेता ॥१७६४॥
कोइ कोइ अहै गुर ध्यानी ध्याता। वा पद प्रापित मर्म न राता ॥१७६५॥
जाके रूप ना जाके रेखा।[३] जो गुन रहित सो कसे देखा ॥१७६६॥[४]
जंह से द्रिस्टि तहाँ से धावे।[५] बिनु देखे कहु कहाँ समावे ॥१७६७॥[६]
अविनासी गुन विनसै नाहीं। सदा चैतन्य ब्रम्ह सम माहीं ॥१७६८॥[७]
इमि करि पुर्ख नाम ते भीना। जथो प्रतिबिम घट परगट दीन्हा ॥१७६९॥[८]
घट फूटे फेरि आए समाई। तब प्रतिबिम खोजे नहिं पाई ॥१७७०॥
निगुन निग्रच्छर इमि करि अहई।[९] कमल उते पद प्रापित अहई ॥१७७१॥
देखहिं भारि तंह अतिस अनंता। सो मुनि ध्यान ध्याव सुनु संता ॥१७७२॥

दोहा

निरगुन भरि निर्वान है, दिब्य द्रिस्टि करु प्रीति।
तें मैं तंह ना देखिए उसी मर्म की भीति ॥११८॥

चौपाई

अछय असोक पुर्ख सत अहई। अजर अमर गुन इमि करि लहई ॥१७७३॥
तुम मम भक्त सदा गुन ध्याता।[१०] तुम्ह से प्रेम कहौं सत बाता ॥१७७४॥[११]
सदा सुखद जग हम के नीका। भक्ति असी मैं साचर टीका ॥१७७५॥
तामो निकट निपट मोर वासा।[१२]जो जन सुमिरहिं नाम सुवासा ॥१७७६॥
सो जन दुखित महादुख पायो।[१३]संत द्रोह सुनि ताहि नसायो ॥१७७७॥[१४]

---

१ (ख) निगुन = निरगुन।
२ (ग) मन = मनि।
३ (ग) (घ) इस पंक्ति के ऊपर 'अर्जुन वचन' उल्लिखित है।
४ (ख) कैसे = कोइसे। (ग) कहसे।
५ (ग) से = तहि।
६ (घ) समावे = बतावे।
७ (ग) (घ) चैतन्य = चेतनि।
८ (ख) (ग) (घ) प्रतिबिंम = प्रतिबिंबु।
९ (घ) इस स्थल पर 'श्रीकृष्ण वचन' का उल्लेख है।
१० (ख) (ग) (घ) भक्त = भगत।
११ (ग) से = सो।
१२ (ग) (घ) ताते निपट निकट मोर बासा।
१३ (घ) दुखित = दुखी।
१४ (ग) नसायो = नसावे।

हम निकलंकी बावन रूपा । हम धरनी धर धरा सरूपा ॥१७५०॥[1]
हमहिं गोवर्धन कर गहि लीन्हा ।[2] हम गोपी संग क्रीडा कीन्हा ॥१७५१॥
हम जगपालक सब कंह पाला । गौ गोपाल हम नंद के लाला ॥१७५२॥
हमहिं रमापति संत सनाथा । पठि पताल नाग कंह नाथा ॥१७५३॥
हम केसो धरि कंसहिं मारा ।[3] वसुदेव देवकिहिं बंध उधारा ॥१७५४॥[4]
राधे रुकमिनि रीन कहाई । गोप सखा संग गाए चराई ॥१७५५॥
मातु जसोदा मर्म न पाई ।[5] बिष्ठ छूटा भौ सर समनाई ॥१७५६॥[6]
हम रमिता रमि रहत निरंता ।[7] निगम निहारि मिले नहिं अंता ॥१७५७॥
आनंद मेगन जग मैं होई ।[8] तब मैं गुप्त लखे नहिं कोई ॥१७५८॥[9]

अर्जुन वचन[10]

कहुं ध्यान तुम ठाकर मांक । सुमिरन भजन प्रेम निजु ठांक ॥१७५९॥
अंतर्यामि दीपक धरि पेखा । हो तुम कर्ता दुजा हम दखा ॥१७६०॥[11]

दोहा

विनय कीन्ह करजोरि के, सुनो सबन चित लाए ।
संत से अंतर पर्दा किमि, मोहिं जनि देहु दुराए ॥११७॥[12]

तब हरि बिहँसि बोले कछु मीता । तुम से कहौं ध्यान का टीका ॥१७६१॥[13]

सिरी क्रिस्न उवाच[14]

ठाकर सेवक हम चलि आई । सोइ सदा संत पुरा कहाई ॥१७६२॥[15]

---

१ (क) प्यारा; (क) प्रति का पाठ उपेक्षित । (ख), (ग), (घ) धरा ।
२. (ख), (ग), (घ) हमहिं = हम ।
३ (ख) केसो = कृष्ण ।
४ (ख) (ग), (घ) बंध = बंद ।
५. (ख) मर्म = मरम ।
६ (ख) समनाइ = समनाई ।
७ (ख) हम = हमहिं ।
८ (ख) (घ) मैं = मह ।
९. (ख), (ग) (घ) मैं = हम ।
१० (ख) युधिष्ठिर वचन ।
११ (ख), (घ) हम = नाहिं । (घ) हो न तुम करता दुजा हमी देखा ।
१२ (ख), (ग) अन्तर = अंत ।
१३ (ख) (ग), (घ) का = कर ।
१४ (ख) (घ) उवाच = वचन ।
१५ (ख), (ग), (घ) कहाइ = कहाइ ।

गुर बिनु जप तप ध्यान न करई।[1] भए भंजन सत गुर पद गहई ॥१७९३॥
भव तरनी गुर ध्यान सनीपा। दया दीपक मन तेज मनीपा ॥१७९४॥[2]
प्रति प्रवीन लीन पद पावे।[3] दर्पन दया सुखद गुन गावे ॥१७९५॥[4]
पीछे केस करे मख घाता।[5] तदपि हेतु छोड़े नाहि माता ॥१७९६॥
ऐसे प्रेम संतन्ह सुख दीजे।[6] मम बालक कंह रच्छा कीजे ॥१७९७॥[7]
गुन ऐगुन की खोज न कीजे। दास पंक लिखि कर गाहि लीजे ॥१७९८॥[8]

दोहा

अर्जुन अर्थ विचारिके, सिरीकिस्न से कीन्ह।[9]
भव भए कोन ब्यापिहैं, नाम अटल गुर दीन्ह ॥१२०॥

छंद

किस्न भाखेउ ध्यान गीता अर्थ राखेउ चित्त यही।
गुर ग्यान ध्यान जो विमल झलकत पलक पेखेउ सो सही ॥४३॥[10]
अर्थ सुनेऊ उर्ध सुनेऊ सब्द घुमि सुनि गुर कही।
देखि दर्सन परसु अनुपा झलकत मोती मनि मही ॥४४॥

सोरठा

गुर बिनु होहि न ध्यान, ध्यान न होवे भक्ति बिनु।
करि देखि अनुमान दया अवे चित में बसे ॥२२॥

सेवक वचन[11]

तब सिष कहेउ सुनो गुर ग्याता। कहेउ ध्यान प्रेम निजु बाता ॥१७९९॥[12]
कौन नाम गुन किमि कर सहिए। जाते अमनस कबहि न बहिए ॥१८००॥

---

१ (ग) ध्यान = ध्यान। अन्यत्र 'ध' के स्थान में 'घ' लिखित है।
२. (ग) मन = मनी।
३ (ग) लीन = कीन्ह।
४ (ख) दर्पन = दरपन।
५. (ख) पीछे = पाछी। (ग) पैपे।
६ (ग) प्रेम = प्रभु।
७ (ग) रच्छा = रछय।
८ (ग) दास पंक कर गहि लिखि लीपे।
९ (ग) प्रति का पाठ स्वीकृत तथा (क) प्रति का पाठ उपेक्षित।
१० (ग) पेखेउ = पेखो।
११ (ग) अर्जुन वचन।
१२. (ग) कहेउ = कहो।

जो छिप करहिं संत के हाँसी । तेहि छिप लहहीं जम के फाँसी ॥१७७८॥[1]
मह मिथ्या जनि जाने कोई । दुर्योधन सम राज बिगोई ॥१७७९॥[2]
अंकुर बीज का फागुन महई ।[3]साधि असाधि यह किमि करि कहई ॥१७८०॥[4]
मीन मानु मद्दे काग कपूता । स्वादिक स्वारथ मातम भूता ॥१७८१॥[5]
भरमि भवन में होहिं अनीता ।[6] करहिं पाठ पुरान औ गीता ॥१७८२॥
ऐगुन संग्रह गुन देहि डारी । जग मँह सिद्ध कहहीं नर नारी ॥१७८३॥
अति पुनीत पावन कुल माला ।[7] किम अचार बिजय रस साना ॥१७८४॥
भेख सुमेरु देखत निक लागा ।[8] अमर हंस भितर है कागा ॥१७८५॥

दोहा

काग कर्म कुबुधि धनि, नाहि हंस की जाति ।
खाए कुलु भक्त प्रीति करि, बैठु पिकन्ह की पाँति ॥११६॥

चौपाई

अंकुर अच्छ संत गुर ग्यानी ।[9] बोलहिं बिमलरस अभिअ सानी ॥१७८६॥
अएउ मराल गुन सम मति नीका । गुर पद पंकज मस्तक टीका ॥१७८७॥
पर दुख देखि कबो नाहिं हरषै । दया समत अमोघन बरषै ॥१७८८॥
अति प्रसन्न पद सो जन भुगुता । पाप पुन्य कबहूँ नहिं भुगुता ॥१७८९॥[10]
अस महिमा गुन साधु बखाना । निरलेप है पद निर्बाना ॥१७९०॥
अगुन धरा चरन चित लाई ।[11] धन्य धन्य निजु बचन सुनाई ॥१७९१॥[12]
गुर परमेश्वर गुर गुन ग्याता ।[13] मम तुम्ह दास चरन चित राता ॥१७९२॥

---

१ (ग), (घ) हरि = हांहि ।
२ (ख) (घ) दुर्योधन = सिरजोधन । (ग) सुरजोधन ।
३ (ख), (घ) अतिरिक्त पाठ—बिनय बचन करौ कर जोरी । ईश्वर बरनत मेटहु खोरी ।
(ख), (घ) का = के ।
४ (घ) कथन करि हरई ।
५ (ख) (ग) (घ) स्वादिक = स्वोदिक । स्वारथ = स्वोरथ ।
६ (ग), (घ) भरमि = भर्मि ।
७ (ख), (ग) (घ) माला = बाला ।
८ (घ) देखत = देख ।
९ (ख) (ग) (घ) अच्छ = अछै ।
१० (ग) में १७८८ चौ० से १८०२ चौ० तक का पाठ १८[illegible] चौपाई के बाद है ।
११ (घ) चरन = रतन ।
१२ (घ) धन्य हरौ मम बचन सुनाए ।
१३ (घ) परमेश्वर = परमेसर ।

रहनि गहनि यह रहो निरंता ।[1] होय मुक्ति सुनो सत संता ॥१८१६॥
चारि मुद्रा चारित्र मांती ।[2] उनमुनि मुद्रा मनि पहु पांती ॥१८१७॥
निरअच्छर अच्छर भुमि पावै ।[3] गुप्त प्रगट तंह द्रिस्टि लगावै ॥१८१८॥
काया मध्य भरि देखे अनंता । एक सो एक बिमल गुन संता ॥१८१९॥[4]
इमि करि सदा रहे जग मांहीं । जैसो पुरइनि पर जल न रहाहीं ॥१८२०॥
जल में रहे पै जल ते भीना ।[5] इमि करि संत जक्त में बीना ॥१८२१॥[6]
जाके सतगुर मिले यों ग्याता ।[7] कबे ना काल करे उतपाता ॥१८२२॥[8]
सोजहु मुक्ति देजहु कुल साथा । सब बिधि आनंद मंगल काजा ॥१८२३॥
मातु पिता सुत बंधु औ भ्राता ।[9] जंह जंह जनमे सब कुल नाता ॥१८२४॥[10]
पसुकुल जनमे पसुकुल होई ।[11] नर मग जन्म पदारथ खोई ॥१८२५॥[12]

दोहा

जनम पदारथ पाए के, सतगुर पद ते भीन ।
अघडर सुलभ सब व्यापिया, जम नीच कह लीन ॥१२२॥[13]

दरिया साहब वचन

नर होए दास नारी होए मीना । संग्रह करे बिखय रस भीना ॥१८२६॥[14]
साकठ सुकट कीमती ऐसा । खर भव जन्म स्वान मति जैसा ॥१८२७॥[15]
इस्त्री पुर्ख को दुइ मत चलई । चारि बरन कुली अवतरई ॥१८२८॥

---

१ (क) यह = जो । (ग) (घ) निहु ।
२. (घ) चारित्र = चारु ।
३ (घ) भुमि पावै = भुमि तहां पावै ।
४ (ग) सो = से ।
५. (घ) पै = सो ।
६ (घ) (ग) जक्त = जगत । (क) जगत । (क), (ग) (घ) में = मंह ।
७ (ख) में चौ० सं १८२१ से १८२८ तक का पाठ १८३० संख्यक चौ० के बाद है ।
८ (क) कबे = कबहिं । (घ) कबे ।
९ (ग) मातु = माता । (ख) बंधु भ्रात । (ग) बंधो भ्राता ।
१० (ग) (घ) सबै कुल नाता । (घ) सबै कुल ताता ।
११ (क) पसुकुल जनमे = पसु में जनमे ।
१२ (क), (घ) नर के जनमे पदारथ खोई ॥
१३ (ख) (ग) (घ) सुलभ = सूल । (क) भीन = भीनह । लीन = लीनह ।
१४ (घ) भीना = लीन्हा ।
१५. (ख) (ग) स्वान = स्वोन । (घ) ग्यान ।

होए मुक्ति संत कर संगा। कुमति काल नहिं ब्यापेउ अंगा ॥१८०१॥[1]
दुख दारुन जम जाल बिकारा। नस्ट जाहिं नहिं जम के द्वारा ॥१८०२॥[2]
कहो गुन ग्यान प्रेम सत बानी। जेहि ते लंघिए भवजल पानी ॥१८०३॥[3]
जाते हंस बिगोए न जाई। सतगुर चरन सुधा सम पाई ॥१८०४॥
जीव सक्ति रहे एक साथा। किमि करि जग में होहिं सनाथा ॥१८०५॥
कहो सत्त पर्दा जनि राखो।[4] होसे मुक्ति सोइ सत भाखो ॥१८०६॥
जाते कस्ट मिटे चौरासी।[5] काल फंद ग्रिव कटि जाए फांसी ॥१८०७॥
मानुख जन्म दुर्लभ जग भाई।[6] बड़े भाग मुक्ति फल लहई ॥१८०८॥[7]
भरमि भवन चौरासिहिं राता। जग में ग्यान मिले गुर ग्याता ॥१८०९॥
सब तेजि करो भक्ति निजु धर्मा। पाप पुन्य नहिं ब्यापे कर्मा ॥१८१०॥
बड़े पुन्य सत गुर पद पावे।[8] जाके सुर नर मुनि सब गावे ॥१८११॥[9]

सेवक वचन

अब मोरे मन उपजा प्रेमा। तिर्थ बरत त्यागो सब नेमा ॥१८१२॥[10]
जो तुम कहो सोई चित धरिहों। सत बचन मिथ्या नहिं करिहों ॥१८१३॥

दोहा

सतगुर बचन दिनेस सम, बिकसेउ लोचन प्रेम।
भिंगा भाव रस चाखहिं, तेजि सकल भ्रम नेम ॥१२१॥

दरिया साहब वचन[11]

कहो बचन सुनो निजु दासा। बिकसेउ कमल औौर सुरत वासा ॥१८१४॥[12]
पदुम पत्र में सुरति लगावहु। निर्मल नाम अमित फल पावहु ॥१८१५॥

---

१ (ख) ब्यापेउ = ब्यापै।
२ (ग) बिकारा = बेकारा।
३ (ख) (ग) जेहिते लंघिए = जाहिते लांघी।
४ (ख) राखो = राखी। भाखो = भाखी।
५ (ख), (ग) (घ) मिटे = मेटै।
६ (ख) भाई = पाई।
७ (घ), (ग) लहई = लई।
८ (ग) पुन्य = पुन्न। पावे = पावै।
९ (ग) (ग) (घ) गावे = गावै।
१० (घ) तिर्थ = तीरथ।
११ (ख) निजुन बचन। (घ) सतगुर बचन।
१२ (ख), (ग), (घ) बिकसेउ = बिगसे।

भला भला सतगुर पद पाया ।[1] आदि अंत सब कथा सुनाया ॥१८४३॥
भक्ति ध्यान औ जोग बिरागा ।[2] हिरदय बिबेक प्रेम निजु पागा ॥१८४४॥
संसय सागर गएउ बिहाई ।[3] निजु गहि नाम प्रेम लौ लाई ॥१८४५॥
परमारथ सुनि लागत नीका ।[4] मम निजु दास तुम्हें कर टीका ॥१८४६॥
पानि जोरि के विनय बिचारी ।[5] सुनो स्रवन दे बचन हमारी ॥१८४७॥[6]

सेवक बचन

नारि पुर्ष एकै मत भाषा । सो मैं सुनी हिरदय महं राखा ॥१८४८॥
नारि पुर्ष नहिं एक मत चलई । सो तुम्हरे घर किमि कर रहई ॥१८४९॥
सो तुम्ह ध्यान कहो समुझाई । सो नर कैसन करे उपाई ॥१८५०॥[7]

सतगुर उवाच

भक्ति भाव जब नाहीं करई । करो त्याग ध्यान मत रहई ॥१८५१॥
कनहरि एक दुइ तरनी जैसे । बूडि मुर्याहि भव सागर ऐसे ॥१८५२॥
छोड़ि घाट अघघट के चलई । परे भँवर कनहरि का करई ॥१८५३॥
छोड़े संग्रह होए रहे एका । सोवर काल कबे नहिं टीका ॥१८५४॥
लंगोट बंध चंद तंह बरसे । बिमल प्रेम अमी घन बरिसे ॥१८५५॥[8]
मैन समान जग मनहि जो भावे । जहाँ रहे तंह सब को भावे ॥१८५६॥[9]
स्वर्ग नर्क के संसय जाई । पूरन ब्रम्ह सदा सुखदाई ॥१८५७॥

दोहा

भक्ति ध्यान का यह मत, सुनो स्रवन चित लाए ।[10]
भाव भक्ति यह ध्यानरस, बिवरन किया बनाए ॥१२४॥

चौपाई[11]

चरन कमल पद पंकज सेहो । महामोह दुख कबहिं न पैहो ॥१८५८॥

---

१ (ख) पद = गुर ।
२ (ख) भक्ति = भगति ।
३ (ख), (ग), (घ) गएउ = गयो ।
४ (ख) (ग) (घ) प्रति का पाठ स्वीकृत ।
५ (घ) पान जोरि करी बिनय बिचारी । (ख) के = करि । (ग) कै ।
६ (घ) सुनहु स्रवन दे बचन हमारी ।
७ (ख), (घ) (ग) करे = करी ।
८ (ख) (घ) बरिसे = बरिसै ।
९ (ख), (ग), (घ) को = कंह ।
१० (घ) चित लाए = चितलाए । किया = कियो ।
११ (घ) अतिरिक्त पाठ = गुरुवाच बचन ।

नर के जन्म हेस अवतारा ।[1] सदा लिए संग गैसे सिकारा ॥१८२९॥[2]
सतगुर बचन मिथ्या जनि मानहु । महा कठिन दुख दारुन सानहु ॥१८३०॥
नारि पुरुष जो एक मत होई । जुग जुग राज करेगा सोई ॥१८३१॥[3]
एके पान परवाना जाने । दास दासी निजु ज्ञान बखाने ॥१८३२॥
गुर पद पंकज गहे पुनीता । सदा सुगंध संत मत हीता ॥१८३३॥
चरन कमल निजु प्रेम समेता । विधिनि मर्म मव छुए न प्रेता ॥१८३४॥
ब्रम्ह संपूरन मव निर्लेपा । भाड़ भटक नहिं जस मिन लेपा ॥१८३५॥
पगु मगु मंगन सदा संग सोहे । विवेक विचारि चारु चित चाहे ॥१८३६॥[4]
चित चौरा चौमुख है बाती ।[5] हिदय प्रेम प्रिय सिस्नू सुपाती ॥१८३७॥
मनबन चीन तहाँ सम देखे । सोभत जागत द्रिस्टि मैं पेखे ॥१८३८॥
तीनि अवस्या सम चह होई ।[6] जागत सपना सुसुपति सोई ॥१८३९॥[7]
तुलि तेल चरि निर्मल नीका ।[8] सब सरूप नर बेद का टीका ॥१८४०॥[9]

दोहा

एके मन एके दसा, हिदय होए अनुराग ।
कहें दरिया नर निजु पुरु, मिटे कर्म का दाग ॥१२३॥[1]

सेवक बचन

तब सीस कहेउ गुर ज्ञानी ।[10] मिला बिमल रस अम्रित सानी ॥१८४१॥
जन्म जन्म के मिटे कलपना ।[11] सुख सागर मैं दुख सम सपना ॥१८४२॥[12]

---

१ (क), (ख) नरके = नारके । हेस = ईसवराः अहेर या अहेरी (शिकारी) ।
२. (ख) गैसे = गैलही ।
३ (ख) करेगा = करएगा ।
४ (ख) विवेक = विवेक । (ख) विचारि = विचार ।
५. (ग) चौरा = चौतरा । (ख) पंक्ति—असत्य—हिदे प्रेम प्रिया सिसु पाती ।
चित चउतरा चउमुख बाती ॥
६ (ख) (ग) चारि अवस्था सम चह होई ।
७ (ख) जागत = जाग्रित ।
८. (ख), (ग), (घ) तुरि तेल चारि निरमल नीका ।
९ (घ) सर्व संपूरन बेद का टीका ।
१० (ख) (ग) मिटे = मेटे । (घ) मेटा ।
११ (ख) (ग), (घ) तब सिष कहेउ धन्य गुर ज्ञानी ।
१२. (घ) के मिटे = के मिटा । (ग) का मेटा । (घ) के मेटा ।
१३ (घ) दुख सागर में दुख नहिं कलपना ।

काल बिभंजन भेलिहि भंजन संजन जन की कीकरमी ।
दरिया बिस देखि बिचारि कहा जिमि सासि सुझे जस हो भरनी ॥४७॥

सोरठा

देखो तरनी जस माह, नाम बिमल गुन रहित है ।[1]
समुझि पकड़िए बाहु, भव महँ बूड़े जहाज यह ॥२३॥

दोहा

संमत अठारह से तैंतिस, गए पुरुष के पास ।[2]
जो जन समुझि बिचारिहैं, मिटि जाए जमत्रास ॥
भादो बदी चौथि दिन, गवन कियो सत लोक ।
जो जन सब्द बिबेकिया, मेटि जाए सब शोक ॥

यह दास्ती सन २७८ साल मो ग्रंथ 'ग्यान रतन' लिखल संपूरन भया, बार बुध के, महीना नाम पूस, सुक्ल पच्छ तीथ २१, प्रगने मझउआ, जिले मोतिहारी, तपा बहास मौजे धनरार मजार मठ पर लिखल संपूरन (भया) हुआ ।

सरकार साहाबाद, भोजपुर प्रगने दनवारी, तपे बीसी मौजे धरकंधा तख्त चौरा में मकान समुझ लेना दरिया साहब का मकान मसथान गादी दसखत कमलदास फकीर, दरियासाहब के दस्त से साहब रामचरन दासजी के आगे सेवक फकीर होहि या ना होहिंगे सभी को सतनाम पहुँचे ।

दस्त चोरि के आगे यह ग्रंथ दरियापंथी सेवक फकीर छोड़ि दोसरा बाम्हन मति रखे, मति लिखे, का हिंदू का मुसलमान का कोई भेख सभ को सौगंध है ।

---

१ (ख), (ग) (घ) नाम बिमल गुन पिहित है ।
२. (घ) गुर है मर्म जनि राखु, मिलि शब्द निज सार ।
दृढ़ित बचन बिचारिया, उतरि जाए भव पार ॥

आनंद मंगल पूरन कामा। अक्षय विश्व मिला सुखधामा ॥१८५९॥
धन्य भाग तुम जग में आए। पंथ चलाए जीव मुकुताए ॥१८६०॥
खोजि थकित भए तीनिउ देवा। हठ निग्रह करि लावहिं सेवा ॥१८६१॥[1]
तीन्हुं लख पूर्व माहि धामा। धन्य भाग सत पंथ बखाना ॥१८६२॥[2]
गुर बिनु भव जल मिटे न पिला।[3] महे प्रेम नाम मैंनीला ॥१८६३॥[4]
जैसे सिला मिटी जल जूडा।[5] पिये अमी मद कबहिं न बूडा ॥१८६४॥
संसय सागर कबहिं न ब्यापे। पाप पुन्य कबहीं नहिं थापे ॥१८६५॥[6]
मन मनि मुकुता अति छवि नीका। पाए जगत मंहगे मोल थीका ॥१८६६॥[7]
संत सिद्ध सुदिस्टि निजु बानी। स्रवन सुने नर बहुत बखानी ॥१८६७॥
सुमन घटा जनु बगिमु सुगंधा।[8] सब ब्याधि छन दुख सम रंधा ॥१८६८॥
ऐसन विमल विरोध विरागा।[9] कोटि कर्म कटि जाए सुभागा ॥१८६९॥
जैसे कदली बने कपूरा।[10] विमल ब्रम्ह भया भरिपूरा ॥१८७०॥
निराधार निर्लेप निरंता।[11] संत मंत निजु पहनि गहंता ॥१८७१॥

दोहा

सतगुर चरन विमल पद, गहि लीन्हो निजुनाम।[12]
भक्ति भाव द्रिढ ध्यान करि, जाए अमर पुरधाम ॥१२५॥

छंद[13]

हो सुख सागर सभ गुन आगर निगम अति छम बरनो।
पल पल में सप्त पताल मैं जैबो न्मिस दिन है धरनो ॥४२॥[14]

---

१ (ख), (ग), (घ) लावहिं = लावन्ह।
२. (ख), (ग) धन्य = धंन। (घ) धन्न।
३ (ख) (ग), (घ) मिटे = मेटे।
४ (ख), (ग), (घ) मैंनीला = मन मीला।
५. (ख) जस सिला मिटे जल जुड़ा। (ग) मिटी = मेटा। (घ) मेटे।
६ (ख), (घ) पुन्य = पुन्य। (ग) पुन।
७ (ख) पाए जगत मह महंगे मोल मीका। (घ) पाइ जगत महंगे मोल थीका।
८. (घ) प्रति का पाठ स्वीकृत।
९ (ख), (ग) (घ) प्रति का पाठ स्वीकृत।
१० (ख), (ग), (घ) जैसे केरली बन एक पुरा।
११ (क) मूल प्रति में 'निरोध निर्लेप निरंता' पाठ है। (ख), (ग), (घ) निराधार निर्लेप निरंता।
१२ (घ) लीन्हो = लीनै।
१३. (ख) सतनाम छंद सतनाम। (ग) छंद नाराद। (घ) छंद छंद सतनाम छंद छंद।
१४ (ग), (घ), (घ) पल पल में = पल में पल में।

गुरु पीर का कसम मानना। आगे संतन्ह जन से मिनती मोर। छूटल अच्छर मेव सब जोर। जो देखा सा लिखा।[1]

---

१ (ख) ग्रंथ ग्यान रतन ईपूरन सम्वत सन सावन सुदी रोज बुध समापत साल ग्रंथ ईपूरन महल मौजे धरीकपुर में लछमन दास के मठ पर लिखत सीतापारी दास पर कबीर दरिया साहब का दस्त है साहब बिरंची दास सरकार शाहाबाद भोजपुर परगने दनवारी तपे बीठी मौजे धरकंधा दस्त मुकरिर साहब का दस्त दस्खत थे परवाना आगे जो कोई सेवक या फकीर हुआ है सब होएगा तो सब को सतनाम पहुँचे सतनाम शब्द साधुन से बिनती मेरी। छूटल अच्छर मैं सब जोरी। सतनाम सतनाम सतनाम।

(ग) ग्रंथ सपूरन लिखल महल ग्यान सतगुर दरिया साहब को मालूम हो लिखल मन बिसुन दास दरिया साहब के फकीर मरना दस्त था साहब दयाराम साहब का सतनाम पहुँचे दस्त जोरी मया जेठ कबीर साहब व तेवारा सतनाम पहुँचे बरन हुरके दोहा के घट नाम है परमालिक तेवारा पर साहब का दया दर मिति अगहन सुदी पंचम सुभ दिन बुधके पूरन ग्रंथ महल गंगाराज जिला सारी मिर्जापुर बनरसाला सन् १२५६ साल सै मै दस्तखत बाद बिसुन दास।

(घ) (च) प्रति में अन्त में, दोहों का कोई उल्लेख नहीं है।

ग्रंथ-समाप्ति का अंश इस प्रकार है—

॥ अथ ईपूरन ग्यान रतन ॥

ईसन १८३४ साल

समय नाम फागुन बिसुन पच्छ बार सोमार के रोज तैयार हुआ, अथ मजुमा होहर गुर देवाल बरह देवल के मुकाम पर, दस्खत श्री दास कबीर दरिया साहब का सरकार, भोजपुर प्रगने दनवारी तपे बीठी, मौजे धरकंधा श्री दस्त दरिया साहब का मजुम्हि ठाना, दी प्रवास लिये नाम को लिर सुना सब से सबै हमार मिनति सतनाम।

जो देखा सो लिखा, भूल चूक माफ।

संगत दास सीस दिया।
सतगुर का सन्देसा॥
मगर दास प्रथ दीन्ह।
ग्रंथ ग्यान मति सुभ॥
बहार दास करी ईसह।

ज्ञानस्वरोदय

चौपाई

अजर नाम गुन सत करतारा। धन साहब तुम्ह सिरजनिहारा ॥९॥
धन साहब तुम्ह अवगुन करनी। अविगति महिमा सकौं न बरनी ॥१०॥[1]
बिधि सिव सेस सारदा करहीं। नाम अमोल मोल बतावहीं ॥११॥
असी लाख पैगंमर आवा। बेकीमत कर अंत न पावा ॥१२॥
धन सतगुर भवनिधि कड़हारा। आए जग जिव करहिं उबारा ॥१३॥[2]
नन बिहुन नहिं कवन बेवासा। नाम भानु सत कोटि प्रकासा ॥१४॥[3]
सो साहब भौ सतगुर मोरा। गौ दोविधा भौ नन अंजोरा ॥१५॥
आपुहिं हुकुम दीन्ह मोहि जानी। दरिया ग्यान सरोद बखानी ॥१६॥

साखी

उरलोचन मगु देखिए हाजिर हाल हुजूर।
प्रगट प्रताप नाम कर प्रेम भक्ति बिनु दूर ॥३॥

चौपाई

चिन्हहु न सतगुर देखि पराहू। का मद माया बिर्स रस खाहू ॥१७॥[4]
एहु संसार माया कलवारी। मदै मताए भरम करि डारी ॥१८॥
खोजहु सतगुर प्रेम समोई। उज्जल दास हंस गुन होई ॥१९॥[5]
मुरुवा मुकुर छिनिक कर नीके। तजि सब कपट साफ कर हीके ॥२०॥[6]
नाम निसान देखु निजु पलके। जगमग जोति झलामल झलके ॥२१॥
उर अंदर जब होए उजियारा। बरै जोति दिल निरमल सारा ॥२२॥
मति कर जोर जुलुम जगमाहीं। निज स्वारथ रत एहु मत माहीं ॥२३॥
मूले जीव बधन जनि करहू। बोल कुबोल जानि परिहरहू ॥२४॥[7]

साखी

जस पियार जिव आपनो, तस जिव सभै पियार।
जानहिं संत सुबुद्धि जन, जाके बिमल बिचार ॥४॥[8]

(ख) प्रति—
१ बतावहीं = घरहीं।
२ जग = जगत।
३ हस्तलिपियों में क्रम-व्यत्यय।
४ 'चीन्हु न सतगुर देख पराहू।'
५. दास = दसा।
६ नीके = नीके। हियके = हीके।
७ बधन = बध। बोल कुबोल = बोएल कु बोएल।
८ सभै = सबहि।

सतनाम

ग्रंथ ज्ञान सरोदै मातल दरिया साहब
बंदीछोर हंस उबारन सतगुर नाम निसान सही[1]

साखी

दरिया अगम गंभीर है, ज्ञान रतन की खानि।
जो जन मीवै जौहरी, सोई सब्द पहचानि॥
सुरत भे[2] महिमा अगम चारो वेद का मूल।[2]
कहौं सरोदै ज्ञान एह, कंवल मानसर फूल॥१॥[3]

चौपाई

एक अस्टदस कीन्ह बखानी। तब सरोद कहं किस अनुमानी॥१॥[4]
ज्ञान सरोदै कहेउ कबीरा। अपर साधु निज ज्ञान गंभीरा॥२॥
साहब मम अंतर गति जानी। बोले विहंसि मधुर म्रिदु बानी॥३॥
दरिया करहु सरोद उचारा। हंस बंस गमि करहिं विचारा॥४॥
आदी अन्त मध्य तुम जानी। निरगुन सरगुन सत सहिदानी[5]॥५॥
बाहर भीतर देहु देखाई। जिन दिढ होए भक्ति मन लाई॥६॥
करै विचार बुझि जन सोई। जा तें आवागवन न होई॥७॥
कीन्हे सतगुर सोहि मुकुताई। सोग आए जिव काल न खाई॥८॥

साखी

अंतरगति मम जानिकै, करता आएस दीन्ह।
ज्ञान सरोदै ग्रंथ मम, तबहि अरंभन कीन्ह॥२॥

(क) प्रति—
१ ग्रंथ ज्ञान सरोदे मातल दरिया साहब मुक्ति के दाता हंस उबारन।
२. सुरत = सुरुम। चारो वेद का = चारि वेद को।
३ कहौं = कहैं। कंवल = कमल।
४ कीन्ह = कहा।
५. सत = सो सत।

का माया मद पियहु दुलामी । तेजि अम्रित विस भषवहु जानी ॥३९॥[1]
पियहु नाम मद प्रसस करारा । रहहु मस्त जस्पन्हि मतवारा ॥४०॥

साखी

एह भव सोग संतापमा, निकसि सितावी भाए ।[2]
माया कोट अति कठिन है, भव जनि कव फैलाए ॥६॥

चौपाई

एह भव सेंधुर जल सम भाई । भंवर तरंग धार कठिनाई ॥४१॥
जिवहिं बोहाए चकोह घुमावै । बिना जहाज पार किमि पावै ॥४२॥
तिर्गुन त्रिविध धार अति बाँकी । बूड़ि मुए भव सम पौराकी ॥४३॥
नाम जहाज सुकित कनहारा । चढ़हिं संतजन उतरहिं पारा ॥४४॥[3]
करहु मान सरवर तुम बासा । मोती मुक्ति सीप गुन वासा ॥४५॥
दरव होत हित फिरहिं उदासी । एह माया कहु का कर दासी ॥४६॥
माया काहु कर भई न होनी । नेक नाम गुन रहि गौ खोनी ॥४७॥[4]
नेक नाम जग जो तुम चहहू । जोर जुलुम सभ ए परिहरहू ॥४८॥[5]

साखी

वदी जालिमा जोर करै एह काफर को काम ।[6]
नेक मरद करता रहै, जानै ग्रसह कलाम ॥७॥

चौपाई

खास खोदाए नबी सें बरनी । धिग जीवन जग जालिम करनी ॥४९॥
पिवै सराब खून करि खाई । नासति नबी देहु तेहि जाई ॥५०॥[7]
वेदै किल्ल गविा महं कहेऊ । बिरला करि बिवेक सो लहेऊ ॥५१॥
निज मुख क्रिस्न सो कहा बखानी । जीवदया गीता महं जानी ॥५२॥
सो तेजि पंडित दुस्ता पाठा । भषा सकल जग भवपट पाटा ॥५३॥

(घ) प्रति—

१ जद् = जानी ।

२ संतापमा = संताप मडू ।

३ कनहारा = कँडहारा ।

४ कर = की । गौ = गई ।

५. चहहू = चहहु, सभ ए = सब ये ।

६ जोर = जो ।

७ = नसति । अर्थ—लानत ।

सोरठा

मुकुर महल नहिं होए, ग्सि पसमा कहूं साफ कम ।[१]
सम घट एकै सोए, महल मेहरमो होए रहो ॥१॥

चौपाई

निज जिव सम सम जिव जग माहीं। जानहिं साधु ध्यान जेहि पाहीं ॥२५॥
मति कद खून पिवै जनि दाऊ। गर्व गरूरि दूरि करि डारू ॥२६॥
मोह माया मद तेजहु बिकारा। करहु भक्ति सतगुर गुन सारा ॥२७॥[२]
क्यों तें चहसि मदिप संग आसा। आय पिवो मदमय बिनु कासा ॥२८॥[३]
लेहु प्रेम करि ढारि पिलावों। प्रीति रीति करि पियहिं मिलावो ॥२९॥[४]
मंजन जलनिधि संगम गंगा। सत सुक्रित को उठा तरंगा ॥३०॥
कर असनान विमल मन होई। धारु दया दिल दीपक सोई ॥३१॥[५]
कवतक दोजक आंच से डरहू। मरम से मिस्ति भरोसा करहू ॥३२॥[६]

साखी

बिनु मासूक की प्रास का, एहू दोजक की आंच ।[७]
मिल्ति रहना महबूब से, सोइ भिस्ति है सांच ॥५॥

चौपाई

नबी महंमद दीन पैगमर। काहु खूब समझा दिल अंदर ॥३३॥[८]
गुजर गरीबी बुजरुग होई। फाका फकर फकीरा सोई ॥३४॥
राज किया दुख काहु न दीन्हा। लेकर करंद जबह नहिं कीन्हा ॥३५॥[९]
खून परात्र मना सम किएऊ। पहिलहिं इबराहिम से भएऊ ॥३६॥
तेहि कुल जन्म लीन्ह उन्हि भाई। निजु कर बिसमिल कीन्ह न भाई ॥३७॥
जौ तुम्ह उमत महंमद अहहू। मानहु वचन दीन में रहहू ॥३८॥

(ख) प्रति—
१ महल = मैलि।
२. भक्ति = भगति।
३ क्यों = कौ।
४ रीति = मीति।
५. दिल दीपक = दीपक दिल।
६ भरोसा = भरोसा।
७ आस का = आस की।
८ समुझा = समुझो।
९ करंद = करद।

हाग तुम्हारा सुमन बगीचा। मूसा तुम्ह आपन दिल ईंचा ॥६७॥[१]
नव बहार है बाग तुम्हारा। भरम करम मैं भूलि बिसारा ॥६८॥
अब सतगुर पद परसहु भाई। दया द्रिस्टि करि देहि लखाई ॥६९॥
इयार मिलन की सो फुलवारी। बरसै देखहु द्रिस्टि पसारी ॥७०॥[२]
मुलाकात कर तेग परहारू। सोग दुआ हमि मारि निकारू ॥७१॥[३]
पियहु अघाए नाम मदमारा। मिट माया मद मक्क सुमारा ॥७२॥[४]

सास्त्री

चुपै चुपै दिन काटिए, चुप रहो सहि सोए।[५]
ता तर आसन कीजिए, (जो) पेड़ पावरो होय ॥१०॥

चौपाई

होहु बेहोस मस्त मतवारा। छूटि जाए जग सब परिवारा ॥७३॥[६]
माया बिलग की सोग न आवै। आस मिलन की माया न भावै ॥७४॥
एह भव जरा मरन को देसा। छोड़ि देहु जिव कठिन कलेसा ॥७५॥
मधे सिन्ध अमलोक मिनारा। तेहि विहंग तें दुर्म के डारा ॥७६॥[७]
भवसागर मैं परा भुलाई। चेतहु तबहि भला है भाई ॥७७॥[८]
का सुख एह मुरदा के गाऊ। मरि मरि जनम होए बेहि ठाँऊ ॥७८॥
जो ना अघटघट नामहि आना। एह भव सुख निसु सपन समाना ॥७९॥[९]
कहै दरिया रहु सतगुर सरना। अवसि एक दिन आखिर मरना ॥८०॥

सास्त्री

प्रेम पियाला पाए कै, तन मन डारहु वारि।[१०]
होहु बहोस जग सं रहो ध्यान सगोर बिचारि ॥११॥

(घ) प्रति—
१ हार = हरा। तुम्हार = तुम्हारा। बगैचा = बगीचा। मूसा = मूसे। तुम्ह = तुम। दिल =
२. (ख), इयार = यार, सी = को।
३ दुआ हमि = दुहाई।
४ मदमारा = मदमारी। सुमारा = सुमारी।
५ चुप रहो सहि सोए = चुपी रहिए सोए।
६ होहु = होहि। जग = भव।
७ दुम की = दुर्म के।
८ परा = परहु।
९. निसु सपन = निस सपन।
१० पाए कै = पीए कै।

जीव बधन महू पाप अतिभारी । पंडित जानु न कहै बिचारी ॥५४॥[1]
जिवन जनम धिग पंडित केरा । भागहु सतगुर सरन सवेरा ॥५५॥
जौं तोहि सून सांच मन भावा । करहु सून हम तुमहिं बतावा ॥५६॥[2]

साखी

ग्यान खरग दिढ़ कर गहो, कामादिक भट मारि ।
पांच पचीसहि जीति कै, करम भरम सम झारि ॥८॥[3]

सोरठा

जौं चाहसि मदपान रहहु बेहोस भव सोग स ।[4]
तेजि पाखंड अभिमान, नाम अमल मतवार रहो ॥२॥[5]

चौपाई

जौं तुम्ह नाम अमल सुख चहहू । मीले तब सतगुर पद गहहू ॥५७॥[6]
प्रेम प्रीति सै देहि पियाई । करै कैफ दिल रोसन भाई ॥५८॥
दिन दिन अधिक मस्त सरसारा । रहै सो कलप कोटि मतवारा ॥५९॥
महाप्रसी की डर महि आवै । जा कहं सतगुर ढारि पिलावै ॥६०॥
मठहि साधु संत जेहि भारी । इयार मिलन की सो फुलवारी ॥६१॥[7]
पुनहि फूल अधिक रुचि जाही । दास भाव करि बटहु तहां ॥६२॥
साकी सतगुर प्रेम पियाला । जो तेहि लाएक तेहि तस ढाला ॥६३॥
नाम ग्यान मद देहि मताई । कैफ सें दिल अंजोर भै भाई ॥६४॥

साखी

छत्र फिरै सिर मनि भरे, झलकै मोती सेत ।
कहे दरिया दरसन सही, गुर ग्यानी चित चेत ॥९॥[8]

चौपाई

नाहि वाटिका मै तै माली । भूलि परा भव भरम कुचाली ॥६५॥[9]
तेहि वन घर तें महसि पखेरू । इहा आए भ्रम कर बेरू ॥६६॥[10]

(ख) प्रति—

१ बधन महू पाप = बध महापाप ।
२. हस्तलिखित प्रति (क) में 'तुम्हीं' पाठ है ।
३ मारि = मार । झारि = झार ।
४ भव = भौ ।
५. रहो = हो ।
६ तुम्ह = तुम सुख = सुखि । मीले तब = मिलै तबहिं ।
७ इयार = यार ।
८ गुर ग्यानी भी चित चेत = गुर ग्यानी का हेत । हस्तलिखित (क) मूल प्रति में यों अंकित है ।
९. भै = भर ।
१० तेहि वनघर तें = तै तहि वन का ।

चौपाई

असल बंदगी साधुनि आना। ध्यार मिसन की बाग अमाना ॥९७॥[1]
सांच बंदगी संतन्हि केरा। मस्त सो मगन गगन मंह डेरा ॥९८॥[2]
तहां आए बैठहु तुम भाई। आसिक प्रेम चुर्नहि जेहि ठांई ॥९९॥[3]
पहिले दिल से खदी बिसारो। गरव गरूरि दूरि करिडारो ॥१००॥
मरना सो पहिले मरि रहहू। असली जो हव जौं तुम चहहू ॥१०१॥[4]
जीमत ही मुरदा होए रहना। अवसि तुमहि तब पारा कहना ॥१०२॥[5]
जेहि विधि पारा मरै न मारा। असकन्न मौत सो करै विचारा ॥१०३॥
कहै फिरिस्तन्हि से अस बरनी। पारा जीव हुआ करि करनी ॥१०४॥

साखी

निकट जाय जमराज नहीं सिर धुनि धुनि पछताय।[6]
बुंद सिंधु में मिलि रहा, कवन सके बिलगाय ॥१४॥

चौपाई

पांच पचीस तीमु कर रीती। मन कहं मउ टि सबन्हि कहं जीती॥१०५॥[7]
अनलहक जोए कहै पुकारी। है तेहि आएल सो अधिकारी ॥१०६॥
कहै जो यह मैं हीं भगवाना। सो तेहि कहै ना सालुक माना ॥१०७॥[8]
अगिनि में जाए काठ जो परई। जरि के अगिनि होए सो रहई ॥१०८॥
भएउ अपग सो लाल अंगोरा। कहै आगि में अगिनि अंजोरा ॥१०९॥
जो अब काठ कहै तब भाई। चीन्है कवन काठ तेहि भाई ॥११०॥[9]
कवनो जल समुद्र मे परई। दूजा नाम नाहिं कोइ धरई ॥१११॥[10]
सम कोइ जान सिंधु अपारा। सो जल को बिलगावनिहारा ॥११२॥

(ब) प्रति—

१ साधुनि = साधुन्ह। ध्यार = यार।
२ मंह = में।
३ तुम = तुम्ह। प्रेम = पूरा।
४ सो = से। हव जौ = हर है जौ।
५ जीमत = जीयत। होए = है।
६ धुनि धुनि = धुनि धुनि।
७ तीमु = तीनिउ।
८ सालुक = सालुख।
९ तब = तेहि।
१० समुद्र = समुद्र।

चौपाई

दमि रसूल संत कहि दीन्हा । एह जहान पैदा हम कीन्हा ॥८१॥
करै बंदगी सम दिन मेरा । सुनहु दोस्त सम उमता मोरा ॥८२॥[1]
लिखा नबी कोरान में आएत । मेरी उमत करे हकलाएत ॥८३॥
करहु बंदगी असल करारा । सो सेजि का तुम्ह मकर पसारा ॥८४॥
अलफी गुदरी सेली कारी । पीर कहावहु दरद बिसारी ॥८५॥
माला कंठी तिलक बनाव । बुत पूजै कोइ संख बजावै ॥८६॥
माला पाखंड भेख सवारा । गुरु कहावहु एहि संसारा ॥८७॥[2]
गरब गुमान करै मगरूरी । ए नहिं होइहैं बंदगी पूरी ॥८८॥[3]

साखी

सरिअत तरिकत मारफत, कहैं हकीकत जानि ।
दरद राखै दरवेस है करै भिस्ति पहचानि ॥१२॥

चौपाई

मकर बंदगी धाइ सबेरा । नहिं राजी भई साहब मेरा ॥८९॥[4]
एहि बंदगी से नाहिं बड़ाई । हरगिज भिस्ति मिलै नहिं भाई ॥९०॥
दोजख मांच सहो अति भारी । मकर बंदगी देहु बिसारी ॥९१॥[5]
पाखंड सै प्रभु मिलै न काहू । कहौं सुभाव सांच पतियाहू ॥९२॥
बरबस पाखंड करहु बनाई । दरद हरहु सब अगत गवाँई ॥९३॥
पाखंड करम सबै बिसरावहु । सुनहु न स्रवन टेरि बहु लावहु ॥९४॥[6]
गाफिल भई काल में सेरा । का दै राखु निवालु सबेरा ॥९५॥[7]
मकर बंदगी करि खुम होई । छोड़ि दे मकर फकर है सोई ॥९६॥

साखी

दरवेसा दिल दरद है, दरवेसा दरवेस ।
दरवेसा दिल सबुर है, दरवसा नहिं भेस ॥१३॥[8]

(ख) प्रति—
१ उमता = उमंत ।
२ कहावहु = कहावहिं ।
३ ए नहिं = एहि नाहिं ।
४ भई = होय ।
५ सहो = सहै ।
६ करम = मकर । टेरि बहु लावहु = टारि बहलावहु ।
७ गाफिल = गाफल । मैं = मई । सेरा = छेरे । सबेरा = सबेरे ।
८ भेस = भेष ।

दिल ऐना होए साफ तुम्हारा । दिन दिन अधिक जोति उजियारा ॥१२६॥
ऐना सिकिलि साफ जो करहू । तो एहि मगु पगु मोहकम धरहू ॥१२७॥
तन मन से जिन्हि साकलि कराई । सहि संकट होए साफ सफाई ॥१२८॥[1]

साखी

पहिले गुर सक्कर हुआ चीनी मिसरी कीन्ह ।
मिसरी से जब कंद हुआ, एहि सोहागिनि चीन्ह ॥१७॥[2]

चौपाई

जैसे बीज जमीन मैं परई । खाक मिलै खाक सिर धरई॥१२९॥[3]
किछु दिन बीते सो अंकुराना । महलि छूटा भूसा बिलगाना ॥१३०॥
बीज साफ होए भएउ निनारा । बीज एक से भएउ हजारा ॥१३१॥
ऐसी सिकिलि जाहि बनि आई । फेरि मुरचा नहि लाग भाई ॥१३२॥
जाम एक जमसेद बनावा । ऐना साह सिकंदर पावा ॥१३३॥
है दूनो कर एक परमाऊ । कहौ सो ताकर सुनहु सुभाऊ ॥१३४॥[4]
आगे धरि जब देखै कोई । कुछ सत जोजन दरस होई ॥१३५॥[5]
होए साफ दिल निकट निगाना । कहो सिकंदर को वह ऐना ॥१३६॥[6]

साखी

कहाँ जाम जमसेद है कहाँ सिकंदर ऐन ।
दिल चसमा सर्व ऊपरे, अविगति सूझ नैन ॥१८॥[7]

चौपाई

अंजन कही आंखि कर भाई । दीदा जासो होए सफाई ॥१३७॥[8]
दिल घर दीप ग्यान कर लेसा । हस्त राखु दिल बदी सकेला ॥१३८॥
भाखा एक नाम सत धरहू । तामें दोविधा सम परिहरहू ॥१३९॥[9]

(ख) प्रति—

१ साकलि = सिकिलि । एवीइत (क) प्रति में 'संकट' पाठ है।
२. जब कंद हुआ = तब कंद भो ।
३ जमीन में = मिली मई । खाक मिलै = खाक में मिलै ।
४ दूनो = दुनहु । कहौ = कहा ।
५. जब देखै = देखै जो ।
६ निगाना = नगीना । ऐना = आईना ।
७ सब = सम ।
८ कहौ = कहा । जासो = जेहिबिधि ।
९ तन = चित । ता में = ते मैं ।

साखी

सिष निकट नहिं आवहु करि सियार से प्रीति ॥[1]
साधु सिष मत सरस है, सियो मतंगहि मीत ॥१५॥

चौपाई

कहा भेद एह गहिर गभीरा । ग्यान करार अमल रंग हीरा ॥११३॥
गुप्त भेद से जेहि गमि होई । सो जानै एह अवरि ना कोई ॥११४॥[2]
देखहु कोरान पुरान बिचारी । सभ घट असह ब्रम्ह उजियारी ॥११५॥[3]
वह मोखक्लि एह पारख केरा । पारब्रम्ह सभ घट घट डेरा ॥११६॥
ऐसो कली अनूपम सोई । बड़ा कस्ट करि चूनै कोई ॥११७॥[4]
गरब गुमान भरा जिन डेरा । तिन्हु ना सभ घट असह बसेरा ॥११८॥[5]
मुरचा जाहि मुकुर में लागा । प्रतिमा देखि ना परै अभागा ॥११९॥[6]
जैसे भानु तेज परकासा । नैन हीन नहिं देखै तमासा ॥१२०॥[7]

साखी

है मगु साफ बराबरे, माड़ो लोचन माहि ।
नयन दोस मगु भानु कह, अपने सूझत नाहि ॥१६॥[8]

चौपाई

माहि सुरुज अघरन्हि देखलाव । नहिं मगु अंधरन्हि चलन चलावै ॥१२१॥
दगा कीन्ह परनाम गरूरी । जीव द्रोह भी गरब गरूरी ॥१२२॥[9]
हुगमा हिन्सि कामादिक जेता । मांसि माड दिल मुरचा तेता ॥१२३॥[10]
ब्रम्ह साफ जसे पुर्व तारा । पार परद में छपा पसारा ॥१२४॥[11]
संत सिकिलिगर सोझो भाई । मुरचा सिकिलि करो तुम भाई ॥१२५॥[12]

(ख) प्रति—

१ से = सो ।
२. गुप्त भेद = पीर भेद ।
३ ब्रम्ह = बरल ।
४ चूनै कोइ = चुनै सो कोइ ।
५. गुमान = गुरर ।
६ अभागा = गुमागा ।
७ परकासा = परमासा ।
८ बराबरे = बरोबरै । भानु कह = मगुन कह (?)।
९. परनाम = बरनाम । की = कर ।
१० हुगमा = हगा ।
११ साफ = सोच । पार परद में = परा परद में । छपा = पसा ।
१२. सोझो भाई = सोझु भाई । करो = करु ।

नासिका पवन तत्तु से भएऊ । गंध सुगंध बास तंह पएऊ ॥१५५॥[1]
प्रिथी तत्तु कर मुख भो भाई । भोजन भंषवन ताकर भाई ॥१५६॥
रसना लिंग नार तत्तु अहई । मैथुन कर्म स्वाद सो लहई ॥१५७॥
तत्तु अकास स स्रवन बनावा । सब्द कुसब्द सुने तंह पावा ॥१५८॥
चित में अगिनि नाभ में पवना । कहै सो लखहु जौहर है बचना ॥१५९॥[2]
प्रीपी हिरदै नीर तत्तु माला । तत्तु अकास सांस में बासा ॥१६०॥[3]

साखी

कान नाक मुख आंखि तु ती, पांचो मुद्रा साथ ।
गोचरि खेचरि भोचरी, चचरी उनमुनि साथ ॥२१॥[4]

चौपाई

तत्तु एक तेहि पांच प्रक्रीती । सबहिं साधु जन ताकर प्रीती ॥१६१॥
अस्ति मेद रोम त्तुचा नारी । प्रिथि तत्तु रोपा पांच सुवारी ॥१६२॥[5]
रक्त बीज पित लार पसीना । नीर तत्तु से भएउ नवीना ॥१६३॥
आलस त्रिखा नींद मुख तेजा । अगिनि तत्तु से पांच सहेजा ॥१६४॥[6]
चलन ध्यान बल सकुच बिवादा । पवन तत्तु से हिस मरजादा ॥१६५॥[7]
लोभ मोह संका डर लाजा । तत्तु अकास कर सकल समाजा ॥१६६॥
रजगुन अगिनि तमोगुन बाऊ । सतगुन प्रिथिमी नीर सुभाऊ ॥१६७॥
अधिक पांच से भएउ पचीसा । तिन गुन मिली तीस तैंतीसा ॥१६८॥

साखी

पांच तत्तु की कोठरी, ता में बास पंजाल ।
जीव तहां बासा करै निपट नगीचै काल ॥२२॥[8]

चौपाई

आंखि नाक जिभ्या त्वचु कान । पांचो इन्द्री ज्ञान प्रमाना ॥१६९॥[9]

(क) प्रति—
१ तंह = तिहि ।
२. कहै सो लखहु जौहर है बचना = कहांसो लखहु जहां रहु बचना ।
३ प्रीपी = प्रिथिमी ।
४ (ख) प्रतिका पाठ चचरी = स्वीकृत । (क) में 'अघोरी' है ।
५. त्तुचा = त्वचु । प्रिथि तत्तु रोपा पांच सुवारी = प्रिथी तत्तु से पांच सुवारी ।
६ आलस । (ख) प्रति का पाठ स्वीकृत । (क) में आलस = अलसा ।
७ ध्यान = गमन । तत्तु से हिस = तत्तु कर एहि । (क) प्रति में 'तत्तु' और 'सेहिस' बीच कर अधिक है ।
८. नगीचै = नगीचहिं ।
९. त्वचु = तुचु ।

प्रेम स्तुती वाती करु नीके। सत चीन्हि स यारहु हियके ॥१४०॥[१]
निज दिल दीपक रोसन करई। सोइ घुधा ननन्हि मनुसरई ॥१४१॥
लोचन बिमल होए मन तोरा। प्रघपट मैटै होए प्रजोरा ॥१४२॥
है सहमा में धुन एह भाई। सो विनु सतगुर नहिं कोइ पाई ॥१४३॥
सरग नरक की सुधि बिसरावै। जियतहि मरै तब थमि भावै ॥१४४॥[२]

साखी

एक ब्रम्ह सभे घट, जंह देखो तंह एक।
हिर्दै कंवल उजियार भो, कह सरोद बिबेक ॥१६॥[३]

चौपाई

इगला पिंगला सुखमन नारी। बूम्झहु ताकर भेद बिचारी ॥१४५॥
इगला बाम चंद कर पासा। पिंगला दहिन भानु परगासा ॥१४६॥[४]
ताके मद्ध सुखमना ग्रहई। चल सो दूनो सुर में लहई ॥१४७॥
पांच तत्तु तह करै परकासा। प्रगिनि बाउ छिति नीर प्रकासा ॥१४८॥[५]
प्रगिनि तत्तु सुर ऊपर ग्रहई। श्रोधन चालि पवन कर ग्रहई ॥१४९॥[६]
प्रीथी सोई चरै प्रकोरा। नीचे ग्रहै नीर तत्तु जोरा ॥१५०॥[७]
छिन बाम छिन दहिन बासा। दुनो सुर चलै सो तत्तु प्रकासा ॥१५१॥
पांचो तत्तु चल सुर माहीं। पारख ग्रहै साधु जन पाहीं ॥१५२॥

साखी

प्रगिनि स्याम हरियर पवन, प्रिथी पीत रंग होए।
प्रप्त नीर माकास तत्तु, सेत बरन है सोए ॥२०॥

चौपाई

पांच तत्तु कर इन्द्री पांचा। मएउ मगन एह मानहु सांचा ॥१५३॥
प्रगिनि तत्तु से नैन प्रकासा। लोभ मोह तंह करै निवासा ॥१५४॥

(ख) प्रति—
१ सत चीन्हि से यारहु हियके = सत चिन्हिगो से यारहु ही के।
२. सहमा = सुहमा। नहिं कोइ = कातु न।
३ एक = एकै। देखो = देत। कह = करहु।
४ बाम = माम। पासा = बासा।
५. बाउ = पवन।
६ चालि = चाल।
७ चरै = चरी।

साखी

थिर कारज को चंद है चर कारज को भानु।
तत्तु के पारख पाए के, जग कारज करि जानु ॥२४॥[1]

चौपाई

भूसन बसन विवाह विधाना। औखध प्रासी जोग ध्रुव ध्याना ॥१८५॥[2]
ध्रुव सिसे घर महल बनाव। बाग बाटिका कूप खोदावे ॥१८६॥
गढ़पति होए सो गढ़ में जाई। बोवै मनाव किसान बनाई ॥१८७॥
बामें सुर में सकल्प संवारा। एह सब थिर कारज संसारा ॥१८८॥[3]
चर कारज कछु कहौ बखानी। दहिने सुर में एह सब जानी ॥१८९॥[4]
देन लेन औ भोजन करई। बिद्या पढ़ वही सिखि धरई ॥१९०॥[5]
हित अनहित चाहे तंह जाई। सुपी कर कछु मांड़ माई ॥१९१॥[6]
वाहन मोल लेह हथियारा। जोग नेहान न्याए अनुसारा ॥१९२॥[7]

साखी

पूरब उत्तर जाइए दहिने सुर परवेस।
बामें सुर कर जात्रा दच्छिन पच्छिम देस ॥[8]
जो सुर चलै पगु सोइ पहिले राखु संभारि।
तीनि डेग है भानु के चंदा के पगु चारि ॥२५॥

चौपाई

प्रिथिमी नीर तत्तु दुइ अहई। थिर कारज दुई सम लहई ॥१९३॥
सुकल पच्छ मधुमास सोहावा। किस्न पच्छ सम प्रीति बितावा ॥१९४॥
प्रातहि परिवा कर विचारा। चले पवन सुर तत्तु निहारा ॥१९५॥[9]
सो चंदा में प्रिथमी रहई। संमत सास नीक सन होई ॥१९६॥[1]

(ख) प्रति—

१ कारज को भानु = कारज कहे भानु। तत्तु के = तत्तु को। कारज करि = काज करि। स्वीकृत मूलप्रति में "जगत" है।

२. प्रासी = प्रीमि।

३ सकल्प = सुकल्प। संसारा = संवारा।

४ कहौ = कहा। सुर में एह = सुर एह।

५ देन लेन = लेन देन।

६ मांड़ = मांगे।

७ वाहन = पाहन। न्याए = न्याव।

८ दच्छिन = दच्छिम।

९ प्रातहि परिवा = परिवा प्रातहि।

१ रहई = रहइ। सन = सो।

कर गुद लिंग पांच मुख होई। पांचो इन्द्री करम समोई ॥१७०॥[1]
एहु दस इन्द्री कर परकारा। बूझै पंडित करै बिचारा ॥१७१॥
मन एकादस सम को राजा। जो जीतै सो साधु समाजा ॥१७२॥[2]
पांच पचीस सभै बस होई। मन इन्द्री कहं जीतै सोई ॥१७३॥[3]
सो मन रहु ब्रम्हा के पासा। सो मन सिव संग कर बिलासा ॥१७४॥
सो मन राम क्रिस्न संग रहेऊ। सुर नर मुनि कोई पार न लहेऊ ॥१७५॥[4]
सो मन चारो बेद बिस्तारा। सो मन व्यास ग्रंथ अनुसारा ॥१७६॥[5]

साखी

सो मन तीनों लोक मैं, काहु पग नहिं चीन्ह।
धन साहब सतु गुर धनी, मोहिं लखाए जो दीन्ह ॥२३॥[6]

चौपाई

चंद सूर कर करहु बिधाना। दहिनै बामे सुर अनुमाना ॥१७७॥[7]
एक मास पख दुई समोई। क्रिस्न पच्छ सूरज कर होई ॥१७८॥
परिवा दूजि तीजि लगि भानू। तिथि चंदा भानू तिथि जानू ॥१७९॥[8]
सुक्ल पच्छ चंदा कर बासा। तिथी तिथी लगि चंद प्रकासा ॥१८०॥
तिथी सुरज तिथी है चंदा। एहि बिधि सुर दुवो बरहि अनंदा ॥१८१॥[9]
सोम बार गुरु बुध सुक जानी। चंदा को दिन चारि बखानी ॥१८२॥[10]
रवि सनि मंगल तीनू बारा। सूरज के दिन करहु बिचारा ॥१८३॥
थिर कारज हुई जग माहीं। चर सूरज थिर चंदा पाहीं ॥१८४॥[11]

(ख) प्रति—
१ कर गुद लिंग पांच मुख = कर पगु लिंग गुदा मुख।
२ सम को = समकर।
३ सभै = सबै।
४ (क) प्रति में 'लहेऊ' की जगह 'पैऊ' पाठ है।
५ चारो = चारि।
६ जो = जिन्ह।
७ चंद सूर कर काहु बिधाना = चंद सुरज कर सुनहु बिधाना।
८ तिथि चंद भानु तिथि जानू = त्री तिथि चन्द भानु त्री जानू।
९ तिथि सुरज तिथी है चंदा = त्रीथी सूर त्रीथी है चंदा। बिधि सुर दुवो = बिधि दूवो।
१० को = के।
११ थिर कारज = थिर चर कारज।

सोरठ

कोइ कहई मत जाय, सुखमनि के परसंग में ।
ग्यान ध्यान सो खाइ, जगत काज कंह हानि है ॥४॥[1]

चौपाई

ब्रिछिक सिंघ ब्रिख मकर पुनीता । चारिउ रासि चंदा कर हीता ॥२०९॥[2]
करक मेख कुंभ अरु तुला । चारिउ रासि भानु कर मूला ॥२१०॥
कन्या मीन मिथुन धन चारी । संक्रट माध सुखमना प्रचारी ॥२११॥[3]
क्रिस्न पच्छ परिवा कंह भानू । प्रातहिं चल साम किछु जानू ॥२१२॥
सुकल पच्छ परिवा कंह चंदा । भोरे बहै सो परम अनंदा ॥२१३॥[4]
मास एक पख दूई अहई । अनमिल चल हानि कछु अहई ॥२१४॥[5]
प्रातहिं परिवा सुखमन जाना । सो पख हानि कलह अनुमाना ॥२१५॥
मध साधु जन मे बिचारी । ग्यान गमी जब भए उजियारी ॥२१६॥[6]

साखी

का इंगला का पिंगला, कवने सुर कंह होए ।
कहते सुर पूछै कोई, पुछ ताकर सुर सोए ॥२८॥[7]

सोरठा

कारज पूरन होए, पूछ पूरन जो रही ।
सुर पूछो कंह जो होए आपन पूछ तासु कर ॥५॥[8]

चौपाई

यह सरोद बहुत बिस्तारा । ग्यानी जन निजु करहिं बिचारा ॥२१७॥
प्रबल गेह सुर कहा बखानी । थोरे में समुझ कोइ ग्यानी ॥२१८॥[9]
प्रात जाम पिंगला परगासा । तीनि बरस में काया बिनासा ॥२१९॥[1]

(ख) प्रति—
१ कहइ = कही ।
२. मकर = कुंभ ।
३ (क) प्रति में 'संक्रट' है । प्रचारी = बिचारी ।
४ भोरे = भोरहिं ।
५ कछु अहई = कछु सहई ।
६ जब भए = जा कहँ ।
७ कवन = कवनो ।
८ जो होए = कोन । तासु = तासु ।
९. भोर = भोरहिं ।
१ पिंगला = पिंगल ।

नीर चलै सो इगला माहीं। उतिम सम्बत सो चलि जाहीं ॥१९७॥[1]
नीर भवनि पिंगला परगासा। एक मधिम है साखु भासा ॥१९८॥[2]
भगिनि वाउ तसु दहिने पूरा। पर प्रकास जस होए न पूरा ॥१९९॥[3]
वसु प्रकास चलै सुर दोऊ। अंन न उपजै दुरभिछ होऊ ॥२००॥[4]

साखी

सम्बत भरि को फल कही, जेहि तसु भेद लखाए।[5]
प्रगट कहा सरोद में, ग्यान रंग समुझाए ॥२६॥

सोरठा

गरभवती जो कोए भोचक पूछै आनि जो।
दहिने बटा होए, बामे सुर कन्या कही ॥३॥

चौपाई

जो पूछै तापर सुर सोई। चलत कुसल छेम सब होई ॥२०१॥
भनमिल स्वास न मिल ठिकाना। तहां हानि किछु निरचै जाना ॥२०२॥[6]
पूरन दोउ कर दोउ सुर बहई। सुमुत होए सरोदै कहई ॥२०३॥[7]
जो प्रसंग कछु पूछ कोई। करो विचार स्वास मैं सोई ॥२०४॥[8]
चंदा चलत जो पूछ भाई। लगन वार तिथि जोग सोहाई ॥२०५॥
बाम सोहे ऊंचे होइ कहई। जानहु सुफल काज सो भई ॥२०६॥[9]
नीचे पूछै दहिने भोरा। सुर दहिन कोई पूछ तोरा ॥२०७॥[10]
लगन वार तिथि जोग ठिकाना। सुभ कारज निरचै परवाना ॥२०८॥

साखी

जोग लगन तिथि वार पछ, मिल सपूरन काज।
इन्ह में कुछ एको न मिल, तस तस मधिम काज ॥२७॥[11]

(ख) प्रति—

१ माहीं = माही।
२. एक मधिम = इक मधिम।
३ होए = होवै।
४ दोऊ = दोइ। होऊ = होइ।
५. लखाए = देखत।
६ स्वास = स्वंस।
७ सुमुत = दुर मुत।
८ स्वास = स्वांस।
९ सोहे = सो।
१० पूछै = पीछे।
११ इन्ह में = सो पूरन। मैं = मह। एको न = एक ना।

पवन प्रकास तत्त सो होई। पवन से अगिनि तत्त भौ सोई ॥२३६॥[1]
पावक सें जल भयो प्रकासा। जल सें प्रिथी तत्तु सुनु दासा ॥२३७॥[2]
प्रेम मगन सें सभै वेवाई। बिनु देखे कोइ नहिं पतियाई ॥२३८॥[3]
जैसे कछुआ मती समाना। आपु में आपु देखि मनमाना ॥२३९॥[4]
इसिक प्रेम घन जीवन धारा। साहब सतगुर भए हमारा ॥२४०॥[5]
नरक सरग के सुधि बिसराई। तन मन वारि सभै कछु पाई ॥२४१॥[6]

साखी

वेवाहा के मिलन सें नैन भया खुसिहाल।
दिल मन मस्त मतवाल हुआ, गूंगा गहिर रिसाल ॥११॥[7]

चौपाई

एहि भव सोग सभै बिसराई। कामिनि कनक न करै फैलाई ॥२४२॥[8]
तब मैं आपु आपु में देखा। समुझि परा मोहि ग्यान बिसेखा ॥२४३॥[9]
मैं फरजंद पूर्न सतकेरा। रोसन दिल चिराग है मेरा ॥२४४॥[10]
जस मैं तस तुम देखु बिचारी। सूझै ना बिन दीपक अंधियारी ॥२४५॥[11]
केहि कारन भूला तुम रहहू। एहि भव सोग महा दुख सहहू ॥२४६॥[12]
देखिहि नजरि करी अनुमाना। सीसा आकर युगल जहाना ॥२४७॥[13]
बादसाह सो साहब मेरा। दुनिया दीन दुनहुं त हि केरा ॥२४८॥[14]
तन तुम्हार जिन्हि सकल बनावा। दुइ जहान जग सुभग सोहावा ॥२४९॥[15]

(क) प्रति—

१ तत्तु सो = तत्तु से।
२. भयो = भौ।
३ प्रेम = परम। कोइ नहिं = कोउ नहिं।
४ मती = मटी। मनमाना = रिझमाना।
५. धारा = धारा; भए = भयउ।
६ सरग के = सरग को।
७ मन मस्त मतवाल = मन मतवाला। रिसाल = रसाल।
८ नि करै = ना कर।
९ ग्यान = गयान।
१० पूर्न = पूरन।
११ तुम = तैं।
१२. महा दुख = बड़ा दुख।
१३ देखिहि नजरि करी अनुमाना = देख लिए कर निज अनुमाना।
१४ सो = गोइ। दीन दुनहुं = दीन दुनों।
१५. जग = सम।

बासर सुखुना सो सुर कहई । सुमत चलत काया सो रहई ॥२२०॥[1]
उदै भानु जो होए पचधारा । सो जीवन षटमास विचारा ॥२२१॥[2]
रजनि चंद बासर होए सूरा । एहि विधि उगैं मास एक पूरा ॥२२२॥
जिवन मास षट कहहुं विचारी । भेद सरोदै लेहु निरुआरी ॥२२३॥
मास एक सुर पिंगला वहई । पख दुइ दिन कर जीवन कहई ॥२२४॥

साखी

गंगा जमुना सरसुती तीनो परिगो रेत ।
मुख सें स्वासा चलत है अविनासी ना हेत ॥२९॥[3]

चौपाइ

चंदा निसिदिन होए परकासा । दिवस चारि रहएहि विधि बासा ॥२२५॥
दिन सहस्र मैं काया बिगोई । बचन सरोद मिथा न होई ॥२२६॥[4]
जस जस चंदा जग अधिकाना । तस तस काल निकट नियराना ॥२२७॥
बासर चित उदै होए चंदा । तबहिं काया परा जमफंदा ॥२२८॥[5]
एक याम सुखमना प्रकासा । निस्चैं जानहु काया विनासा ॥२२९॥
रजनी पिंगला बहैं सुधारा । बासर इंगला करु पसारा ॥२३०॥
हंस गवन कहु दरस जोगा । काया सुखी तन बाधु न रोगा ॥२३१॥[6]
ध्रुव मंडल नहिं दरसैं भाई । दू पख ऊपर काया नसाई ॥२३२॥[7]
पवन साधना जोगा करई । अंतहु काया पतन होए मरई ॥२३३॥

साखी

काया पतन समभी भई, रुधिर रंग को भंग ।
जरा मरन को दस है, सौनिधि विषम तरंग ॥३०॥[8]

चौपाई

पांच तत्तु एह जेहि विधि भएऊ । भेद सरोद कहि समुझएऊ ॥२३४॥
तत्त, प्रकास समन्हि के मूला । ताको पांच तत्त, समतूला ॥२३५॥[9]

(ख) प्रति—
१ सो = तब।
२. जो = जब।
३ सरसुती = सोवती। तीनो = तीनिउ। अविनासी ना = काया विनसन।
४ सरोदै = सरोद।
५. चित उदै = चीत घटे।
६ कहु दरसै = को दुरि। जोगा = संजोगा। बाधु = व्याधु।
७ मंडल = दंडल। दू = दुइ।
८. रंग = चीर।
९. समन्हि के = सबन्हि को।

जागत रहहु सो दिन है भाई। सोवत रहहु सो निसि भौ भाई ॥२६२॥[1]
खुसदिल तेरा सो भयो बिहाना। दिल में सोग साँझ सो जाना ॥२६३॥[2]
सरग नरक दुइ देखु बिचारी। सुख है सरग नरक दुख भारी ॥२६४॥[3]
जो नहिं रोग सोग दुख सहहीं। एह तेजि सरग भिस्त कहं चहई ॥२६५॥[4]

साखी

दिल समुद्र मन सोग है, सुख बिबेक समीर।
मै जल ऊपर बीचिया, बरिसे मनन्हि नीर ॥३४॥[5]

चौपाई

बिरह बिबेक सो बरखा होई। बिहसहु दामिनि दमकै सोई ॥२६६॥
हुसहु उठाए सो घन घहराना। उद अस्त भरि सब कोइ जाना ॥२६७॥[6]
जो पल स्वास चलत तन माहीं। दिन पख मास बरख जुग जाहीं ॥२६८॥[7]
जब जीवहिं जमराज सतावै। तबहिं काल भी प्रल बनाव ॥२६९॥
धन धन साहब सिरजनिहारा। सुन्न एक जस सिष्टि सँवारा ॥२७०॥
दुनो जहान काया जिन्हि कीन्हा। तामें एह सम उपमा दीन्हा ॥२७१॥[8]
काबा किबिला सम दिलु हेरा। मूल महंमद दिल है डेरा ॥२७२॥[9]
जिभ्या नैन नासिका काना। प्रथम काया संग चारि प्रमाना ॥२७३॥

साखी

एहि किताब बिचारि क कहै बोली कोइ जानि।
तौरेते भांजील है, जंम जमूर फुरकानि ॥३५॥[10]

चौपाई

एहि नबी कर चारि हमारा। मोमिन असल पीर है चारा ॥२७४॥[11]

(ब) प्रति—
१ सोवत रहहु = सोय रहहु। निसि = निस।
२ भयो = भएउ।
३ दुइ देखु = दो देखु।
४ सहहीं = सहई।
५ सुख = सुख। बीचिया = बीचिय।
६ कोइ = कछु।
७ स्वास = सांस।
८ तामें = ता मौ।
९ मूल = सुमुख।
१० एहि किताब बिचारि है = एही किताबे चारि हैं। भांजील = अंजील। रसीदन्य प्रति में 'जो जंम' पाठ है।
११ चारि हमारा = चारो यारा। पीर है = पीर एह।

साखी

गहिर भेद एह कहत है, जीव कवारथ होत।
बुझहु बिवेक बिचारि क, अब जनि रहहु अचेत ॥३२॥[1]

चौपाई

तन सरवर है जुगल पहाना। दहिने बामे भाति दुइ जामा ॥२५०॥[2]
दुइ कर दुइ पग पल्लो पाँती। माया सघन नन बहु मोती ॥२५१॥[3]
ए मुख दसन कपोल उरेहा। इमि दुइ भातिन्हि सम्वस देहा ॥२५२॥
दुइ पहाड़ एहि भाति बिसाला। तामें असयम सगग पनाला ॥२५३॥
पद पताल सीस असमाना। मधि भवसागर भवनि समाना ॥२५४॥
माटि मासु गरुव सो नीरा। नदी नार रग सकल सरीरा ॥२५५॥
दिल दरयाव सिंधु अनुमानी। गिरवर तन में असथिर आनी ॥२५६॥[4]
रोम बार तन ऊपर सारा। वन उपवन बाटिका संबारा ॥२५७॥

साखी

दरिया भेदहि जानिए, एह तो काया ब्रह्मंड।
सात गिरह नव टूक तन, सात दीप नव खंड ॥३३॥

सोरठा

काया मध्याना भारि, गज भेद दिल जानिए।
ग्यान सरोद बिचारि, ग्यानी होए सो गुन गहु ॥४॥

चौपाई

सून समान नासिका अहई। भावन पास स्वास जंह रहई ॥२५८॥[5]
मेरुर तराजू मीह बनावा। तेहि दुइ पलरा नन लगावा ॥२५९॥[6]
दुइ दम चाँद सुरुज निति चलहीं। तारागन लिलाट में रहहीं ॥२६०॥[7]
सर्व मसाल भन्मणि तब भावे। बुझे भेद जो गमि करि पावै ॥२६१॥[8]

(क) प्रति—
१ बीच = बिचहि।
२ सरवर = सरवस।
३ माया = मासा।
४ असथिर = अस्थिर।
५ सून = सुत। स्वास = साँस।
६ मीह = मौह।
७ दुइ = दोउ। लिलाट = लिलार।
८ सब मसाल = सबमल। इसी पृष्ठ (ख) प्रति में 'सर्व मसाल होय मशालि' पाठ है।

साखी

खास आपने मुख कहा नबी से भलह बिचार।
भुजरूगा भावम जाति है, जीव चराचर मझार ॥३७॥[1]

चौपाई

मुश्कि जोग मानुस तन माहीं। कस्तूरी गुन बिस तोहि पाहीं ॥२९०॥
ग्रकिल घोजीर साथ करि दीन्हा। दरस दीदार आँखि बुझ कीन्हा ॥२९१॥
नाम उचारम जिभ्या संवारी। सुनन नाम गुन स्रवन सुधारी ॥२९२॥[2]
घ्रानि नासिका भजब सोहावा। पचासी पवन एह पांचो पावा ॥२९३॥[3]
हर हिदीस में नबी बखाना। हाफिज फाजिल होए सो जाना ॥२९४॥[4]
पाक मोम दिल बंदा तेरा। कहा भलह असर हम मेरा ॥२९५॥[5]
बहुत सब्द नबी तुम पावा। दिल तुम्हार रब के मन भावा ॥२९६॥[6]
एह सुनि जब तुम्ह होहु सेयाना। तुरत करहु मीसाफ भमाना ॥२९७॥[7]

साखी

काम क्रोध मद लोभ जत गरब गरूरी मारि।
बिमल प्रेम मनि मानिक, राखहु दिल उजियारि ॥३८॥

चौपाई

बादसाह राब सुनो कहाना। तासों मिलि रहु सबहिं मिलाना ॥२९८॥[8]
का भुसनी सग रहहु भुलाई। ग्यानी जन के दुख नहिं भाई ॥२९९॥[9]
सिंह कर सोनारि से प्रीती। मरद करैं हिअरन्हि से प्रीती ॥३००॥[10]
अपन मान मरजाद गंवाई। मस कुसंग करि अपजस पाई ॥३०१॥
सिंघ ठवनि रहु सिंघनि पासा। मरद मरद संग मजलिस बासा ॥३०२॥[11]

(क) प्रति—

१ अपने = अपनी।

२ जिम्या = जीभ।

३ पचासी पवन एह पाँचो पावा' = पीब दीप मनि पाँचहु पावा।

४ हर हदीस = है हिदीस। मि = में। हाफिज।

५ भलह = भलाह। असर है मेरा = असर हम मेरा।

६ बहुत सब्द नबी = बहुत सौंच परबी।

७ जब तुम्ह = जो तुम्हैं। मीसाफ = सिंख पाक।

८ (क) रचीहत प्रति में 'बादसाह सो राब' पाठ है।

९ भुसनी = भूसन्हि। जन कै = जनहरै।

१० सोनारि से = सोनारि। संग हिअरन्हि से प्रीती = हिअरन्हि से रीती।

११ रचीहत (क) प्रति में 'सिंघनि के पासा' पाठ है।

एहि सरोस्व चारो जानी। एहि बलोफा चारि बखानी ॥२७५॥
एहि फिरिस्ता चारि कहाया। एहि चारि खमा सम लाया ॥२७६॥[1]
एहि चारि चारो मंस सोहावा। खाक बाउ भो भातस भावा ॥२७७॥[2]
एही चारि बेद पहचानो। रुग जुग साम प्रथरबन आनो ॥२७८॥[3]
एहि चतुरमुख ब्रम्हा होई। एहि चारि मुद्रा है सोई ॥२७९॥[4]
पावक अवनि पवन भो पानी। चारि तत्त एहि कहु आनी ॥२८०॥
एहि चारि है चारो कोना। एहि में खाक एहि में साना ॥२८१॥

साखी

दरिया तन से ना जुदा, सब किछु तन के माहि।
जोग जुगित करि पाइए, बिना जुगित किछु नाहि ॥२६॥[5]

चौपाई

जो कोइ जुक्ति जोग में भावै। दीदमदीद देखि सो पावै ॥२८२॥[6]
तीनि लोक गुन तन के माहीं। दूसर संत मिला काहु नाहीं ॥२८३॥[7]
मन कारीगर सिरजि सवारी। मानुस तन सम ऊपर सारी ॥२८४॥[8]
तुहु सरोद तोह साहब केरा। अलख ब्रम्ह गुन भेद बसेरा ॥२८५॥[9]
तुमहि सुभग अंकुर हुए भाई। तोहि में साहब सुरति दराई ॥२८६॥[10]
से पंछी तेहि अमर अमाना। सब करत इह आए भुलाना ॥२८७॥[11]
गाफिल भानि परो केहि हेतू। देखि आपु होए आपु सचेतू ॥२८८॥[12]
तेजहु गाफिलत सहहु बड़ाई। भो जनि एहि भव रहहु भुलाई ॥२८९॥[13]

(ख) प्रति—
१ खंमा = खम्हा।
२ भो = एह।
३ रुग = रिग।
४ ई ह = होइ।
५ ना = नहि। जोग जुग्ति = जुगति जोग। किछु = कछु।
६ दीदमदीद = दीद बर्दीद।
७ तनके माहीं = तनका माहीं।
८ सँवारी = सँवारा। सारी = सारा।
९ तोह = तुम।
१० हुए = हो।
११ से = ते।
१२ परो = परइ देखि = देखु
१३ भो = अब।

एक ब्रह्म सकल घटवासी । वेद कितेब दुनो परगासी ॥३१७॥
धेनु अनेक बरन बिन बानी । छीर सेत एक रंग बखानी ॥३१८॥
जो कोइ सुन अचंभो करई । बिरछ एक सभ मेवा फरई ॥३१९॥
कत मीठा कत खटा कसैला । कत करुआ तीता कत मैला ॥३२०॥
कत विष कत अम्रित सम होई । देखहु करि बिचार जग सोई ॥३२१॥

साखी

जैसे स्वाती बुंद से, कत उपजै संसार ।
बिलग बिलग सभ जानिए, गुन कीमत बिस्तार ॥४१॥

चौपाई

सीप सिंधु मैं मोती भएऊ । गजमस्तक गजमुक्ता पएऊ ॥३२२॥
केरली कपूर सुगंध कहावै । बेनी बंसलोचन होए सो भाव ॥३२३॥[1]
अहिमुख विष गरल मैं आई । एहि बिधि सकल जीव समुझाई ॥३२४॥[2]
एक बुंद से सभ संसारा । भव चौरासी सब्द पसारा ॥३२५॥[3]
स्वाती अमर पुर्स बिनु भूला । इह आए भव सभ कोइ भूला ॥३२६॥[4]
जहां तहां ढूंढ सभ कोई । आपु से आपु सुझ नहिं सोई ॥३२७॥[5]
जैसे म्रिगमद है म्रिगपासा । आपुन ढूंढै ढूंढ़त घासा ॥३२८॥[6]
आगे पीछे दौरि सो जाई । कंह से आनि बासना आई ॥३२९॥[7]

साखी

है घुमनोई पास में, जानि पैर नहिं सोई ।
भरम लग भटकत फिरै तिरथ बरत सभ कोई ॥४२॥[8]

(अ) प्रति—
१ कहावै = इहावा । सो भावै = भावा ।
२. मैं = मो ।
३ से सभ = सै सब । भवो = भयउ ।
४ पुर्स = पुरुष । भूला = भूला ।
५. आपु से आपु = आपु मैं आपु ।
६ ढूंढै = चीन्है ।
७ आगे पीछे = आगे पीछे । कहां से = कंह से ।
८ भरमत = भरमा ।

प्रेम पंथ पर तन मन वारा । प्यार मिलन कर राह संवारा ॥३०३॥[1]
जब होए प्रगट प्रेम दिल माहीं । तब मगु पूछहु सतगुरु पाहीं ॥३०४॥
सोइ देखावहि सकल ठेकाना । भानु में भानु मकान ठेकाना ॥३०५॥[2]

साखी

जैसे मनमथ किछु कही, सुन काहु से कोए ।
भानु कबहि दरस नहीं, जानै चाहत सोए ॥३६॥[3]

चौपाई

किमि करि पावै ठवर ठेकाना । मनमथ अगह थाह कोइ आना ॥३०६॥[4]
रहबर मिला सो पहुंचे भाई । जिन्हि देखा सो देहि दिखाई ॥३०७॥
जैसे बीज जमीन मो परई । समै सजीव पाए अकुरई ॥३०८॥[5]
जो कोइ मदत न कर सहाई । निहफल जाए फर्म नहिं भाई ॥३०९॥[6]
तेहि विधि प्रेम हिए में होई । बिनु सतगुरु फल लहै न कोई ॥३१०॥
प्रथम प्रेम मगु माहुम पाऊ । प्यार मिलन कर खोजहु ठाऊ ॥३११॥[7]
पहिले सतगुरु सो करु प्रीती । सत बचन मानहु परतीती ॥३१२॥
इसिक प्रेम पंथ बंधि कठिनाई । ठग बटपार लग बहु भाई ॥३१३॥[8]

साखी

दरिया डर मत राहिसे, ग्यानवान सोहि पास ।
मन्त बेबाहा साहु का, ठग बटपारन्हि नास ॥
एक भरोसा एक बल एक आस बिस्वास ।
एक भरोसा नाम का, जाचत तुलसीदास ॥४०॥

चौपाई

सुन्हु तुलसी कर एह साखी । पतिबरता एक पति चित राखी ॥३१४॥
यह जग वेस्या बहुत भतारी । एक भक्ति करु तन मन वारी ॥३१५॥
एक नाम आसा चित धरहू । दूजा दोविधा सब परिहरहू ॥३१६॥

(क) प्रति—

१ वारा = वारी । प्यार = यार । मिलन कर राह संवारा = मिलन की राह संवारी ।
२ मकान ठेकाना = मकान ठिकाना ।
३ मनमथ = मनमो । देखै = देखा । जानै चाहत = जान चाहत । इसके (क) प्रति में 'चाहत है सोए' पाठ है ।
४ अगह = अथ ।
५ जमिन मो = जिमी में । सजीव = सजायम ।
६ जो कोइ = जो कोइ ।
७ खोजहु = खोजहम । प्यार = यार ।

दरियानामा पारसी, पहिलहिं कहा किताब।
सो गुन कहा सरोद में, गहिर ध्यान गरकाब ॥४३॥[1]

[ग्रंथ ध्यान सरोद सम्पूरन जो आदर्स मो देखा सो लिखा ग्रंथ लिखल तइयार भेल सावन सुकल पछ तिथी एकादसी रोज भोमबार के सवा पहर दिन उठे लिखल भेल सकल दरियापंथी साधु औ अपर साधुसंत औ[2] गुरजन उनको सतनाम सतनाम पहुँचे तारीख २६ सावन रोज मंगल सन १२६६ साल फसली।]

(ब) प्रति—
१ पहिलहिं = पहिले।
२ 'साधु औ अपर साधुस त औ' = 'साधु स त और'।

अमर सगा काया में महिमहल के पार।
सुरति ठौर करि बेतिए, ज्यों मकरी मह तार ॥४२॥[1]

चौपाई

जो तुम्ह निज आपन घर चहहू। आपु में आपु देखि मिलि रहहू ॥३३०॥[2]
जियतहि मुकुति होए तब साचा। मुए चौरासी करिहै नाचा ॥३३१॥[3]
तब नहिं यार मिलन संजोगा। एहि मय चौरासी परसंगा ॥३३२॥[4]
जम से निकलि परहु मएशाना। बदी बुराई तेजहु जहाना ॥३३३॥[5]
सम तोहि पास जुदा कछु नाहीं। बचन सगोद क्रिया न आही ॥३३४॥[6]
साहब भेद सरोद बतावा। गोप गुप्त कहं प्रगट जनावा ॥३३५॥[7]
पाप पुन्य आसा बिसराई। अजपा सोहं सुन्नी समाई ॥३३६॥[8]
जाति बरन कुल देह कर नाता। मुए परा झरि तरिवर पाता ॥३३७॥
काया माया सकल पसारा। विलग बिहरि होए रहहु निनारा ॥३३८॥[9]
सुभग मनाहर सु दरलाई। महिमा नाम किछु कहि नहिं जाइ ॥३३९॥[10]

साखी

दरिया दिल दरियाव है, अगम अपार बेअंत।
सम में है तोहि में सर्भ, जानु मरम कोइ संत॥

(ख) प्रति—

१ अमर = अंमर। काया में = कायाय में।
ठौर = ठौर। करि = करैं। मह = महि।
पाठविन्न : ४१वें दोहे के बाद—
प्रेम भाया भवि सुख है सुन्दर साजन एल।
ज्यों मकरी महि तार गहि, छूटे परा अपेल॥
२. तुम्ह निज आपन = तुम निजु आपुन। देखि = देखु।
३ में = समरथा।
४ इयार = = यार। मय = भी परसंगा = बह नोषण।
५. परहु = रहहु।
६ बचन सगोद क्रिया न आही = मानुख तन अनूप अग मोही।
७ गोप गुप्त कंह = गोप सुरति कहि।
८ बिसराई = बिसराइ। समाई = समाइ।
९ 'सम सकल' मूल पाठ है।
१० ३३९वीं चौपाई के स्थान पर—
सत महिमा कछु कहि नहि जाइ। सुभग मनोहर सुन्दराई॥
महिमा नाम ना कछु कहि जाई। सुनहु संत हिरदे चित लाई॥

भक्ति हेतु

फनि मनि धनि जिमि धरत उतारी ।[1] धरत धरा दिटि द्रिस्टि ना मारी ॥६॥
फेरि माहि एक पलक बिसवासा ।[2] कीन्ह उठाय धरम मुख ग्रासा ॥७॥[3]
ज्यों पतंग मुख मोरत ना टारी ।[4] सन्मुख द्रिस्टि दीपक मंह जारी ॥८॥
साहस मारि करे पिय पासा ।[6] अगिनि जरे नहि तन के त्रासा ॥९॥[7]
सनमुख छोड़ि पिया संग जाई ।[8] नाम मिरतक ऐसे चित लाई ॥१०॥[9]
चंद चकोर चेहि माहीं पीठी । ग्यान सुरति रातहि दिन दीठी ॥११॥
अकरम करम जो करम कटाई । ग्यान छुरी रचि पचि मांहि लाई ॥१२॥

साखी

ग्यान छुरी निस्चै गहो, काटि करम कलि पाप ।
सत सरन सतगुर सेवा, मटे कलि मल ताप ॥२॥[10]

चौपाई

साधु असाधु बिलोकहि संगा ।[11] सीतल बरन उरध सुख गंगा ॥१३॥
दया अंकुर चित भक्ति बिरागा । पुलकित प्रेम पुनीतम बागा ॥१४॥
आवे सुरति ग्यान लव लावै ।[12] अंकुर भक्ति बिरह बिलगावै ॥१५॥
दया धरे चित करे बिबसा ।[13] गुरु गमि ग्यान रहे चित पेसा ॥१६॥[14]
बिनु चित दया धरम नहि मोक्षा । बिनु सत संग मेटे नहि धोखा ॥१७॥[15]

---

१ (क) मनि = मन ।
२. (ख) मूल प्रति में पलक ।
३ (क) (घ) धरम = धर्म ।
४ (क) (ख), (ग) (घ) ना = न ।
५ (घ) दीपक = दीप ।
६ (क) (घ) करे = करै ।
७ (क) तनके = तनिको ।
८. (क) (ख) (घ) सनमुख = सनमुख । (घ) सन्मुख = सनमुख ।
९. (क) चित लाई = चित पाई ।
१० (क), (ख) (घ) मैरे = मैरै ।
११ (क) बिलोकहि = बिलोकही ।
१२ (घ) लव = लै ।
१३ (क) (घ) धरे = धरै । (क) (घ) करे = करै ।
१४ (क), (ख), (घ) रहे = रहै ।
१५. (घ) मेटे = मेटै । (क) मेटे = मिटै ।

सतनाम

भक्ति हेतु *

सत सुकित साहब ग्रंथ भक्ति हेतु भाखल
दरिया साहब मुक्ति के दाता अगम ग्यान ।[1]

साखी

ग्यान भक्ति निजु सार है, सुनो स्रवन चितलाए ।[2]
बिकि बिकि बिग्यान एह[3] ब्रह्म अनूप दरसाए ॥१॥

चौपाई

भक्ति हेतु है ग्यान के मूला ।[4] बिगसित कमल सहस दल फूला ॥१॥[5]
सत सरल प्रीति लए लावै ।[6] निर्गुन निरखि बिमल जस गावै ॥२॥
गहे टेक सतनाम सनीपा ।[7] दुर्मति दुरि दिल कमल अनूपा ॥३॥[8]
कमल भँवर जैसो बास सुबासा ।[9] रहत रहित रस करत बिलासा ॥४॥
बाहर भए बिसमि बिहराही । फिरि फिरि बास बसटि लपटाही ॥५॥[10]

---

१ (क) सतनाम ग्रंथ भक्ति हेतु भाखल दरिया साहब सतगुर देव बखान मुक्तिदाता नाम मिलल । सही ।
(ख) सतनाम ग्रंथ भक्ति हेतु भाखल दरिया साहब मुक्ति का दाता सतपर्थ ।
(ग) सतनाम ग्रंथ भक्ति हेतु भाखल दरिया साहब सतगुर देव बखान । सतनाम ।
(घ) सतनाम ग्रंथ भक्ति हेतु भाखल दरिया साहब सतनाम ।

२. (घ) सुनो = सुन ।

३ (ख) एह = है ।

४ (घ) है = एह ।

५. (ख) कमल = कवल ।

६ (क) लए = लय ।

७ (घ) टेक = टग ।

८ (क) कमल = कँवल ।

९. (क) (ग) (घ) कमल = कँवल ।

१० (क) (ग) फिरि फिरि = फेरि फेरि ।

* प्रस्तुत पोथी की चार प्रतियाँ प्राप्त हैं । इनमें (क) प्रति को प्रस्तुत पाठ का आधार माना गया। इन चार प्रतियों के क्रमशः (क), (ख) (ग) और (घ) संकेत हैं । —सं०

हारिल टेक लकरि पर राखै ।[1] ऐसी प्रीति अमित रस चाखै ।।३०।।[2]
ज्यों चुमक पारस गासी पावै ।[3] छोड़ि कठिन निकट चलि आव ।।३१।।

साखी

प्रीति करो सतनाम से,[4] सेवि सकल भर्म भाव ।
मिथ्या जन्म जग जातु है[5] फिरि धिग ऐसो भाव ।।४।।[6]

चौपाई

मिथ्या जीव गए जम के द्वारा । जन्म जन्म भरमे संसारा ।।३२।।[7]
मरकट मुठी ज्यों चना को ग्याना । त्यों त्यों अधिक काल नियराना ।।३३।।[8]
ज्यों ज्यों वृद्ध होत तन छीना ।[9] त्यों त्यों माया विषै रस भीना ।।३४।।[10]
थकित चरन चखु चंखु ना सूझै ।[11] विषम बान उर अंतर रूझै ।।३५।।[12]
सर जोरि काल निकट नियराना । त्रितक पंथ सम भीतर समाना ।।३६।।
पकरि प्रान के कस्ट अति दीन्हा ।[13] तपत सिला पर सावन कीन्हा ।।३७।।
धरहि झुलावहि फेरि देहि डारी । बहुत कस्ट देहि तेही मारी ।।३८।।[14]
तहां कोई नहि राखनिहारा ।[15] जम जीव बांधि नरक महं डारा ।।३९।।[16]
निर्गुन नाह से प्रीति ना लाई ।[17] भागत करहि ना भजन उपाई ।।४०।।[18]

---

१ (क) (ख) राखै = राखा ।
२ (क), (ख) चाखै = चाखा ।
३ (क) चुमक = चुम्बक ।
४ (क) से = सो ।
५ (क) (ख) (ग) जातु है = जात है ।
६ (क) (ख), (ग) फेरि धिग ऐसो न भाव ।
७ (क) भरमे = भरमै । (क) संवसारा = संसारा ।
८ (क) (ख) (ग) त्यों = तेवों ।
९ (ख) (ग) ज्यों = जेवों ।
१० (क) (ख), (ग) त्यों = तेवों ।
११ (ग) चंखु = चखु ।
१२ (क), (ख) (ग) रूझै = मरूझै ।
१३ (क) के = कह ।
१४ (ख) तेहि = ताहि । (क), (ख) मारी = मारा ।
१५ (क) तहां कोइ = ता कह कोइ ।
१६ (क) महि = म ।
१७ (क) से = से ।
१८ (क), (ग) ना भजन = भजन ।

सीतल परिमल बास सुबासा। निकट बिरच्छ सम तेहि नवासा ॥१८॥
परिमल पारस लामे भागा।[1] मेटा कर्म काठ को नागा ॥१९॥[2]
संत निकट सुभ बचन बेलासा। सुनत स्रवन धुनि ब्रह्म नवासा ॥२०॥
सोलस दल कमल बिगसाना।[3] पुहुप बास भवरा लपटाना ॥२१॥[4]
सतगुर मिले सभ सोक मेटाई।[5] न्या करहि फेरि देहि देखाई ॥२२॥
मुक्ति पदारथ मन समधारी। रहत रहित रस ध्यान बिचारी ॥२३॥

साखी

निर्मल ध्यान विचारहु, भक्ति करहु लव लाए।[6]
सत सरन सतगुर सेवा, आवागमन मेटाय॥३॥[7]

चौपाइ

ज्यों सतसंग सदा चित राखै।[8] प्रेम सुधा अमिय रस चाखै ॥२४॥
संत सुधा रस करै बिनाई।[9] ज्या मराल नीर छीर बिलगाई ॥२५॥[10]
छोड़ि छीर नीर को पिवई।[11]नाम निरख ऐस चित धरई ॥२६॥
साक्षि जल में भीतर रहई। बिवरन बिलगि सो इमि कर कहई ॥२७॥[12]
करहु विवेक विचारहु ग्यानी।[13]जीवन जनम सुधा रस बानी ॥२८॥
तेजे अचेत चत लव लावै।[14]ज्यों हारिल लकरी निरमावै ॥२९॥[15]

---

१ (क) लामे = लम्भै। (ग) लामे = लागई।
२. (क) मेटा = मेटे।
३ (क) (ख) (ग) कमल = कवल।
४ (क), (ख) (ग) (घ) बासा = बास।
५ (घ) मिलै = मिलै। (ग) सभ = सब।
६ (क) लव = लो।
७ (क) मेटाए = मिटाए।
८ (क), (ग) ज्यों = जो।
९. (क) करै = करही। (ख) (ग) करै = करे।
१० (ख), (ग) ज्यों = जैस।
११ (ग) को = कैसो।
१२ (ख) (ग) सो इमिकर = इमि कर।
१३ (ग) विवेक = विबेक। (ग) विचारहु = विचारहु।
१४ (क) (ग) तेजे = तेजि। (ख) लव = लो।
१५. (ग) ज्यों = जो।

दोहा

परमारथ के कारने[1], संत जो करहिं पुकार।[2]
नाम सुनत बिति लागहीं[3], ताके वार ना पार ॥१॥[4]

चौपाई

परमारथ सुनो चित लाई।[5] जिस अंदर के दुरमति जाई ॥५२॥[6]
कहैं दरिया सुनु संत सुजाना।[7] भक्ति हेतु सुमिरो निजु ग्याना ॥५३॥[8]
बरता जगत जुक्ति से रहना।[9] आपन सत्त आपु में गहना ॥५४॥
अपने निर्मल होखु किनारा। ज्यों जल पुरइनि रहत निनारा ॥५५॥[10]
पुरइनि पानी तासु नहिं लागी।[11] ऐसे जन जगता से बागी ॥५६॥[12]
कहैं दरिया गहो सत्त संभारी।[13] काम क्रोध त्रिसुना सम जारी ॥५७॥[14]
कामिनी कनक से रहो निनारा।[15] निगु न नाह जीव करहिं उबारा ॥५८॥[16]
जहां सत्त तहां चोर ना लाई।[17] सोओ सत्त कीन्ह निरमाई ॥५९॥[18]

साखी

सत्त पुर्ष निर्वान हंही, चौथा लोक नेवास।
तीनि लोक पीछे हुआ[19], ग्यान कीन्ह परगास ॥६॥

---

१ (ख) कारने = कारनै।
२ (ख) पुकार = सपुकार।
३ (क) (ख), (ग) लागहीं = लागै।
४ (ख) ताके = ताको।
५ (क) सुनो = सुनु।
६ (ख) के = कै।
७ (ख) कहै = कहै।
८ (ग), (घ) सुमिरो = सुमिरहु।
९ (ख) (घ) जुक्ति = जुगुति। (क) से = सै।
१० (ख) (ग), (घ) रहत = रहै। (क), (ख) (ग) (घ) किनारा = निनारा। यही स्वीकृत।
११ (ख) पुरइनि = पुरनी। (क) (ख) नहिं = ना।
१२ (क) से = सै।
१३ (ग) कहैं = कहै।
१४ (ख), (घ) त्रिसुना = त्रिसुना।
१५ (क) से = सै।
१६ (ख) (ग) (घ) नाह = नाम। (क), (ख) करहि = करहिं। (ग), (घ) करहि = करहिं।
१७ (क) ना = न।
१८ (घ) सोओ = सोअहु।
१९ (क) (ख) (ग) पीछे = पीछे।

सतगुर गुर नाहीं पहचाना ।[1] नाहीं संत सेवा लपटाना ॥४१॥
नाहीं दाया दद दिल आना । पर आतम नाहीं पहचाना ॥४२॥[2]

साखी

सो गए नरक की खानि में,[3] जो अस करे उपाए ।[4]
जन्म कोटि भरमत फिरे मुरछि मुरछि पछताए ॥५॥

चौपाई

मिग मद माति आपु पै खोवै ।[5] काल हाथ जिव जनम बिगोवै ॥४३॥
नाभि फाटि कस्तूरी आना । एक देखि मद एक देवाना ॥४४॥
केहरि प्रतिमा देखि भुलाना । कूदि परा पीछे पछताना ॥४५॥[6]
आगे करब भक्ति निज कर्मा ।[7] परा अचानक जानु न मर्मा ॥४६॥[8]
बेस्या मांझहि दीन्हो दाना ।[9] बेस्या रमी रहे लपटाना ॥४७॥[10]
ना गुर सेवा ना सत पहचाना ।[11] ना परमात्म दिल मैं आना ॥४८॥[12]
करहिं गुमान अति ऐंठे बैना ।[13] संत द्रोह कंहा सुख चैना ॥४९॥
संत द्रोह जानि जिन्हि कीन्हा । बांधे काल नर्क तेहि दीन्हा ॥५०॥[14]
नरक खानि परे जीव आई ।[15] करहिं कल्पना कोटि उपाई ॥५१॥

---

१ (क), (ख) (ग) नाहीं = नाहि ।
२ (क) (ख) (ग), (घ) नाहीं = नाहीं । यही पाठ शुद्ध है ।
३ (क) में = मैं ।
४ (क) (ख) (ग) करे = करै ।
५. (क) आपु = अपने । (ग), (ख) आपु = आपन । (घ) आपु = अपन ।
६ (क), (ख) पीछे = पीछे ।
७ (क), (ख) कर्मा = करमा ।
८ (ख), (ग) मर्मा = मरमा ।
९. (क) (ख), (ग), (घ) मांझहि = मांझहि ।
१० (क) (ख) (ग) रहे = रहा ।
११ (क) ना = नहि ।
१२. (क ना = नहि । (घ) आना = आना ।
१३ (क) ऐंठे = ऐंठा ।
१४ (ख), (ग) नर्क = नरक ।
१५ (क) (ख), (ग), (घ) परे = परा ।

मुरली टेरि गगन में आवै ।[1] बोलनिहार सो एह बजावै ॥७१॥[2]
जौं लगि काम काबू महि आव ।[3] तब लगि मुरलि ना टेरि सुनावै ॥७२॥[4]
सोऽहंग सुरति सुन्य महं पेख ।[5] अजपा मूल द्रिष्टि महं देख ॥७३॥
अविगति रूप अरघ महं राख । पुहुप वास अम्रित रस भाखै ॥७४॥
सुरति सोऽहंग मूल मे जाई ।[6] दरसन देखि कमल बिगसाई ॥७५॥[7]
बिनु सतगुर को भेद बताव । गुप्त नाम एह प्रगट देखाव ॥७६॥
जिव के मूल नाम जो पावै । काल फांस के दूरि बोहावै ॥७७॥
काल फास जबहीं से जावै ।[8] ध्यान खरग से ताहि देखावे ॥७८॥[9]

साखी

ग्यान खरग दिढ कै गहो,[10] सतगुर चरन नेवास ।
सीस पटकि जम जाइहे,[11] छप लोक मैं बास ॥८॥

चौपाई

तेजहु कल्पना दुरमति दूरी । जीवन चोर काहे मुख मोरी ॥७९॥[12]
जीवन चोर संसै मंह भूला ।[13] नाम समीप रहो समतूला ॥८०॥
गहे बिस्वास जो आस पुराव ।[14] पपिहा बूंद स्वाति झरि लावै ॥८१॥
पीवै बूंद जो सुरति लगाई ।[15] नाम निरखि ऐसे पद पाई ॥८२॥

---

१ (क) टेरि = टेर ।
२. (क) (ख) (ग) (घ) एह = इहह ।
३ (क) (ख) (ग) जौं = जब ।
४ (क) तब = तौ ।
५. (क), (ख) (घ) सुन्य = सुन ।
६ (क), (ख) (ग) (घ) सोऽहंग = सोऽहंगम ।
७ (क) कमल = कंवल ।
८ (क) से = सै ।
९ (क) से = सै । (घ) सेई
१० (क) (घ) के = कै ।
११ (क) (ख), (ग) (घ) जाइहे = जाइहैं ।
१२. (क) काहे = काहे । (ग) मोरी = मूरी ।
१३ (क) (घ) संसै = संसै ।
१४ (क) (ख) (घ) गहे = गहै ।
१५. (क) पीवै = पीवि । (क) जो = ज्यों ।

चौपाई

सत सत सब करे पुकारा।[1] सत चीन्ह सो उतरे पारा ॥६०॥[2]
सत चीन्हा कसो गुर ग्यानी। सत सब्द छप लोक की बानी ॥६१॥
बिनु सतगुर नहिं सत पहचानी। बिनु पद परचे कवनि गति ठानी ॥६२॥
मनमत ग्यान कथे संवसारा।[3] रूप न रंग ना रंग करारा ॥६३॥[4]
जाके पिंड न जाके नएना।[5] पिंड प्रान नाहिं मुख बएना ॥६४॥[6]
जाके रूप ना जाके रेखा। अंधरे मांति कवहिं नाहिं देखा ॥६५॥[7]
सुनो संत यह करो बिचारा।[8] सत्त पुरुष वोए सभते न्यारा ॥६६॥
जाके पिंड प्रान है छाया। तिनहीं सब जगत निरमाया ॥६७॥
वोए सब कर्हि निरास बनाई।[9] ऐसो सतपुरुष हहि भाई ॥६८॥
अजर काया सिर छत्र बिराजे।[10] अनहद बाजा कोटिन्ह बाजे ॥६९॥[11]

साखी

सत पुरुष वोए अजर हहीं,[12] मरे जिव नाहिं जाए।
कहैं दरिया ऐसक मिले,[13] जोतिहिं जोति समाए ॥७॥[14]

चौपाई

ऐसक सुरति चंद ज्यों सूरा।[15] मनके पदुम गगन भरि पूरा ॥७०॥[16]

---

१ (ग) सब = सद। (क) करे = करा। (ग) (घ) करे = करैं।
२. (क) (ख) (घ) उतरे = उतरै।
३ (क) (ख) (घ) कथे = कथै।
४ (ग) रूप न रेख = रूपरेखा।
५. (ग) नएना = नैना।
६ (क), (ख) (ग) (घ) बएना = बैना।
७ (क) स धरे = स धरै।
८ (क), (ग) (ग) सुनो = सुनहु। (ग) यह = इमि।
९. (ग) सब = सद।
१० (क) (ख) (घ) बिराजे = बिराजै।
११ (क) (घ) कोटिन्ह = कोटिन्हि। (क), (ख) (घ) बाजे = बाजै
१२. (ग) वोर = चोर।
१३ (क) (ख) (घ) मिले = मिलै।
१४ (ख) तो = ठो। (ग) ता = तब।
१५. (घ) (घ) ज्यों = चंद।
१६ (क) (ख) मनके = मन के।

[सकुच मीन पारस कही,[1] मोती परसै सोए ।[2]
चारि परस गुरु मुक्त है,[3] बूझे बिरला कोए ॥११॥[4]]

गज मुकुता बिरला कही[5] कुअस बहु संबसार ।[6]
केहि पारस से ऊपजे,[7] पंडित करहु बिचार ॥१२॥

चौपाई

गज मुकुता मस्तक जेहि होई । मस्त गएंद कहाव सोई ॥६०॥
घु गल चिरिया तेहि अवसर आई ।[8] मस्तक पारस दीन्ह लगाई ॥६१॥
उपजै मुकुता निर्मल सारा ।[9] है कोइ पंडित करे बिचारा ॥६२॥[10]
सतगुर ग्यान बुझहु तिनु सोई ।[11] बिनु पारस मुकुता नहि होई ॥६३॥
मूल सोहंगम शब्द है सारा । सतगुर सोइ जो हंस उबारा ॥६४॥
जाके पारस मूल ठेकाना । दीवि द्रिस्टि जो गहे निसाना ॥६५॥[12]
सोहंग सुरति सुन्य महं पेख ।[13] मोती झरी गगन महं देखै ॥६६॥
सोई सतगुर खोजो ग्यानी ।[14] मनमत ग्यान देखो बड़ प्रानी ॥६७॥[15]
तन के नाश जो बहुत बेसावै । पंच अगिनि मैं तनहि जरावै ॥६८॥[16]

---

१ (क) सकुच = सकुची ।
२ (ग) (घ) परसै = परसै ।
३ (क) गुरु = दीप ।
४ (ख) (ग) (घ) बूझे = बुझै । यह दोहा प्रक्षिप्त है । अतः कोष्ठक में ।
५ (क) कही = कोई ।
६ (क), (ग) संबसार = संसार ।
७ (क) (ख) (ग) (घ) ऊपजे = उपजै ।
८ (क) (ग), (घ) अतिरिक्त पाठ—स्वाती मांहि बरसन जब लागा ।
मस्तक गुरु को आप लुभाना ॥
९ (क), (ख) (घ) सारो = सापजे ।
१० (क), (घ) करे = करै ।
११ (घ) बुझहु = बुझो ।
१२ (क), (घ) गहे = गहै ।
१३ (क) (ख) (ग), (घ) सुन्य = सुन ।
१४ (क) (ग) खोजो = खोजहु ।
१५ (क), (ग) देखो = देखहु ।
१६ (ग) अगिनि मैं = अग्नि ।

बरिसे बुंद गगन असमाना ।[1] जल में सीप सुरति जो ठाना ॥८३॥
सेवाति सीप की एही प्रीती । सुपट खोलि मिले बुंद से रीती ॥८४॥[2]
बुंद समान निर्मल मोती ।[3] निर्मल ध्यान धरे जंह जोती ॥८५॥[4]
सीप के पास पुरुषनिहारा ।[5] पूजे मास जो रहे करारा ॥८६॥[6]

साखी

सकुच मीन पारस कही[7] मोती परसे आए ।
धारि परस तुइ मुख महं बूझे विरला कोए ॥९॥

चौपाई

अवरि संत सम सीप समाना ।[8] सतगुर पारस मूल ठेकाना ॥८७॥
पारस परसे मोती होई ।[9] कहे दरिया सतगुर है सोई ॥८८॥
सीप बेना थिर रहे समाना ।[10] सेवाती गुर जो आए तुलाना ॥८९॥[11]

साखी

बिनु पारस मोती नहीं,[12] सेवाती गुर है ध्यान ।
सीप पारस जबहीं मिले,[13] तब मोती होए समान ॥१०॥

---

१ (क) (ख) (घ) बरिसे = बरिसै ।
२ (क) (घ) मिले = मिलै । (क) (ख) (ग) (घ) से = सें ।
३ (ख), (घ) निर्मल = निरमल ।
४ (क), (घ) धरे = धरै ।
५ (ख) (घ) सीप के पास = सीप पास ।
६ (क) (ख), (घ) पूजे = पूजै । (क) (ख) (घ) रहे = रहै ।
७ (क) (ख) (ग) (घ) में यह साखी यहां नहीं है । इसका पाठ ११ संख्या चौपाई के बाद है ।
८ (ग) सम = सब ।
९ (क), (ख) (घ) परसे = परसै ।
१० (ग) रहे = रहै ।
११ (ग) जो = जवों ।
१२ (क) नाहिं = नहीं ।
१३ (क) जबहीं मिले = जब मिलै । (ग) जबहीं मिले = जब मिलै । (ख) मिले = मिलै ।

महरि ओगाए गमी जो साई। मंथहु गहिर रहै ठहराई ॥११०॥[1]

साखी

कहैं दरिया निजु सार है, गहिर ग्यान निजु भेद।
उलटि मूल मंह देखिए,[2] ब्रह्म मनूप निखेद ॥१४॥

चौपाई

सत को ग्यान दुस्ट के भाव।[3] कुमति रहै उर निस दिन दावै ॥१११॥[4]
खोवहिं कोट बिख कै भूला।[5] अवसर परे भया तिरसूला ॥११२॥[6]
अवसर परे पीछे पछताई।[7] बिखि बोल तेहिं बिखि लपटाई ॥११३॥[8]
संत के बिखि अम्रित होए आई।[9] उलटि बिखी फेरि बिखिहिं समाई ॥११४॥[10]
संत द्रोह करे मूढ़ गंवारा।[11] अपने हाथ आपु पगु मारा ॥११५॥
मारहिं पगु पीछे पछताई।[12] मेटे कुमति जब सुमति समाई ॥११६॥[13]
सुमहि करहु निजु संत के सेवा। सकल मही का पूजहु देवा ॥११७॥
धन्य सो ग्राम जंहा संत के बासा।[14] जंहा साहब मिति सेहि नेवासा ॥११८॥[15]

---

१ (क), (ख) रहै = रहै।
२. (क) (ग), (घ) देखिए = देखिऐ।
३ (क) (ग) के = को। (घ) के = कर।
४ (क), (ख) (घ) रहै = रहै।
५. (क) खोवहि = खोही।
६ (ग) परै = परा।
७ (क), (ख) (घ) परे = परै। क), (घ) पीछे = पीछै।
८ (क) बिखि = बिख।
९. (घ) बिखि = बिख।
१० (क) फेरि = फेर। (क) बिखिहि = बिखहि।
११ (क), (ख) (घ) करे = करै।
१२. (क) पीछे = पीछे। (क) पछताई = पछताई।
१३ (क) मेटे = मेटु। (ख), (घ) मेटे = मेटै। (क) (ख) (ग), (घ) जब = तब।
१४ (क), (ख) (ग), (घ) धन्य = धन।
१५. (क) मिति = मित।

ऊरध मूल भूले दिन राती ।[1] जल के निकट सएन बहु माती ॥ ९९॥
पए पीवहिं फल करहिं अहारा । सगा फिरे तन रहे उपारा ॥१००॥[2]
प्रगट भभूति भरी मुख छारा ।[3] काम क्रोध निस दिन बेपारा ॥१०१॥
त्रिगत्रिगुना मद माया ना त्यागे ।[4] अंतहु कपट बिषै रस लागे ॥१०२॥[5]
पाखंड कर्म करहिं सम जानी ।[6] ताते जीवन जनम भव हानी ॥१०३॥[7]

साखी

उलटि मूल कहं सींचिए, तौ फरे फूले सोहाए ।[8]
सुरति सबहीं देया (देवा बसें) बसे,[9] दुरमति सब दुरि जाए ॥१३॥[10]

चौपाइ

जौं लगि सुरति सांच नहिं मावे ।[11] तौ लगि भक्ति ना दास कहावे ॥१०४॥[12]
बांधहिं भेख कपट नहिं छूटा । कठिन काल तन भीतर लूटा ॥१०५॥
बांधहिं भेख तिलक सब माला । सींगी सेली बहुत रिसाला ॥१०६॥
दाढ़ी भेख व्याधा ज्यों कीन्हा ।[13] बांधहिं भेख बिषय रस भीन्हा ॥१०७॥
सतगुरु ग्यान है अगम अपारा । ज्यों दरिया जल रहे न्यारा ॥१०८॥[14]
उलटि लहरि फेरि ताहि समाई । जग के लहरि जोगावहु भाई ॥१०९॥[15]

---

१ (क) (घ) भूले = भुले ।
२ (क) फिरे = फिरहि । (ख), (ग) फिरे = फिरै । (क) (ख), (घ) रहे = रहै ।
३ (क) भभूति = भभूत ।
४ (ग) (घ) त्रिगुना = तिगुना (क) त्यागे = त्यागा । (ग) (घ) त्यागे = त्यागै ।
५ (क) लागे = लागा (ख) (ग) (घ) लागे = लागै ।
६ (ख) (ग) कर्म = करम ।
७ (क) ताते = तातै । (ख) (ग) भव = भौ ।
८ (क) तौ फूले फरे सोहाए' । (ख) 'तो फरे फूले सोहाए (ग) तब फल फूले सोहाए' । (घ) 'फरै फूलै सोहाए' ।
९ (ग) (घ) देया बसे = देवबसे ।
१० (क) (ग) दुरमति = तो दुरमति । (ख) दुरमति = तब दुरमति ।
११ (क), (ख) (घ) जौं = जब । (ग) जौं = जो ।
१२ (ख) लगि = लगि ।
१३ (क) (ग), (ग), (घ) दाढ़ी = दाढ़ी । (क) व्याधा = व्याधे । (क) (ग), (घ) ज्यों = जो ।
१४ (घ) ज्यों = जौं । (क) (ख), (घ) रहे = रहै ।
१५ (ख) के = कै ।

छोड़ि कर्म निहकर्म कहावै । जाति अजाति नाम सो पावै ॥१२७॥
वह धरे सम जाति अजाती ।[1] दोसनिहार दोसे बहु भाती ॥१२८॥[2]
दोसनिहार सबे मंह दोस ।[3] एके ब्रम्ह सम घट होस ॥१२९॥[4]
दरपन फूटा कोटि पचासा ।[5] दरसन एक सम मंह वासा ॥१३०॥[6]
एक दरस दिस सम माही ।[7] हिंदु तुर्क दोविधा चित नाहीं ॥१३१॥
पुर्ख एक समन्हि ते न्यारा ।[8] जाको तेज बरत संसारा ॥१३२॥[9]
ताके अंस जीव सम अहई ।[10] दोसनिहार दोसे घट कहई ॥१३३॥[11]
ग्यानी होए सो करे विचारा ।[12] ब्रम्ह एक है पुर्ख निनारा ॥१३४॥

साखी

एक ब्रम्ह सभे घट,[13] देखो सब्द बिचारि ।[14]
सब्द पुराएन ना करों[15] कहीं सभे परचारि ॥१७॥[16]

चौपाई

खून करे मद मासु जो खाई ।[17] चौरासी जिव जन्म जाई ॥१३५॥[18]

---

१ (क) (ख) धरे = धरै । (क) सम = सब ।
२ (क) (ख), (घ) दोसे = दोसै ।
३ (ग) सबे = सबै । (क) (ख) (ग) (घ) दोसे = दोसै ।
४ (ख) (घ) एके = एकै । (क) सबे = सभे । (ग) सभे = सबै । (क) (घ) मह = मर्द ।
५ (क) फूटा = फूटे ।
६ (क) सभे = समन्हि । (क) मंह = मे ।
७ (ख) (ग) एकै = एके । (क), (घ) दरस = दरसन । (ग) सम = सब ।
८ (ग) समन्हि = सभनी । (क) ते = तै ।
९ (क) (ख) (ग) (घ) जाको = ताके । (क) बरत = भरत । (ख), (ग), (घ) संसारा = हंसपारा ।
१० (ख) (ग) (घ) ताके = ताथे । (ग) मम = सब ।
११ (क), (घ) दोसे = दोसै ।
१२ (क) (घ) करे = करै ।
१३ (क), (घ) एक = एकै । (ख) (ग) एक = एकै । (क) सभे = सभै । (ग) सभे = सकल ।
१४ (घ) बिचारि = बिचार ।
१५ (क) करो = करौ ।
१६ (क) कहो = कहीं । (ग) परचारि = परचार ।
१७ (क) (ख) करे = करै ।
१८ (घ) (ग) जन्मी = जन्मे ।

साखी

घन सी प्राम धोए ठांव है, जहा भजन निर्वान।[1]
मलयागिर के बास में[2], बेधेवो काठ प्रजान ॥११॥[3]

चौपाई

सुसदोई चहु ओर नेवासा। संत निकट निजु करहु बेलासा ॥११९॥[4]
सत साहब सामरथ सुजाना। दुरमति दुरि होए साहब ध्याना ॥१२०॥[5]
पारस मिले तो कंचन होई।[6] तामा बाके कहे ना कोई ॥१२१॥[7]
हाट बिके फेरि मंहगे मोला।[8] तनिक कपूर नहिं तजविज तोला ॥१२२॥[9]
ऐसो पारस सत समाना।[10] संत साहब कह एक जाना ॥१२३॥[11]
तिल पेरे फेरि तेल कहाव।[12] फूल पारस फुलेल सोहाव ॥१२४॥
पारस फूल से कर्म कटावें। नाम सजीवन पारस पावे ॥१२५॥

साखी

जाति पांति नाहिं पूछिए[13] पूछहु निर्मल ग्यान।[14]
संत के जाति मजाति है[15], जिन्हि पायो पद निर्वान ॥१६॥[16]

चौपाई

सेवाती बुंद केदलि मे भाव।[17] पारस पाए कपूर कहावें ॥१२६॥

---

१ (ख) भजन = पुर्छ।
२. (ग) (घ) मलया = मलैया। (क) गिर = गिरि।
३ (ग) बेधेवो = बेधव।
४ (क) करहु = करो।
५. (ख) साहब = साहेब।
६ (क), (ख) मिल = मिले। (क) तो = तो। (ग) तो = तब।
७ (क) बाके = बाको। (क) कहे = कहे।
८ (क) (ख), (घ) बिके = बिके। (क) फेरि = फेर।
९. (क) कपूर = कपर। (ख) तोला = तोला।
१० (क) ऐसो = ऐसे।
११ (क) कह = के। (ग) (घ) कह = के। (ग) एके = एक।
१२. (ख), (ग) तिल = तिन्ह। (क) (ख) (घ) पर = पेरे। (क) फेरि = फेर।
१३ (क), (ग), (घ) पूछिए = पूँछिये। (ख) पूँछए = पूछु।
१४ (ख) पूछहु = पूछु।
१५. (क) (ख) (ग) (घ) के = की।
१६ (क) जिन्हि = जिन्ह।
१७ (ग) मे = मंह।

जब लगि जीव दरद नहिं आव ।[१] तब लगि नाम दरस नहिं पावै ॥१४५॥
समुझहु संतहि भेद निर्वाना ।[२] निरकेवल निरलेप पद ग्याना ॥१४६॥

साखी

जीवदया दिल में धरो, भक्ति करो व्रत नेम ।
कहैं दरिया दुर्मति तेजो, चरन कंवल पद प्रेम ॥१९॥[३]

चौपाई

बिना प्रेम नहिं भक्ति विसेखा । होए प्रेम एह गुरगमि पेखा ॥१४७॥
प्रेम हि प्रेम मिल निजु बना ।[४] ज्यों जल कमल रहो सुख घना ॥१४८॥[५]
ऐसो प्रेम प्रीति गहि लाव ।[६] नाम सजीवनि ता सुख पावै ॥१४९॥[७]
प्रेम प्रीति गहि गाठि लगावैं । करे भक्ति निजु प्रेम सो पाव ॥१५०॥[८]
करहु प्रेम पद पंकज ध्यानी । जीवन थोर तेजहु बहु बानी ॥१५१॥
जीवन थोर माया मद लोभा । देखि कुसुम रंग ता चित चोभा ॥१५२॥
चित्र विचित्र रचो चित्रसारी ।[९] नट नागरि पट बत है तारी ॥१५३॥
बेस्या मांड करहिं सतकाला । भूले गुमान सो मद मतवाला ॥१५४॥[१०]
संत सेवा नहिं गुर गमि ग्याना ।[११] अंतर अंधपट रही भुलाना ॥१५५॥[१२]

साखी

चारि पदारथ पाएके[१३] क्यों ना भजो सतनाम ।[१४]
साईं द्रोह जस सेवका, कहँ पावै बिसराम ॥२०॥

(ग) जर = जी ।
२ (क) (ग) समुझहु = समुझो । (क) (ख) संतहि = सत पद । (ग) संतहिं = संत ।
३ (ग) कंवल = कमल ।
४ (ख) मिलै = मिला । (ग) मिलै = मिलै ।
५ (क) (ग) (घ) रहा = रहै । (क) (ख) (ग) कमल = कंवल ।
६ (क), (घ) ऐसो = ऐसे ।
७ (क), (ख), (घ) सजीवनि = सजीवन ।
८ (ख) भक्ति निजु प्रेम = भगती प्रेम ।
९ (ख) (ग) विचित्र = वैचित्र ।
१० (ख), (ग) भुले = भुलै ।
११ (क) नहिं = नहीं ।
१२ (क) अंतहु अंध पर रहा भुलाना । (ख) 'अन्तर अंध पट रहै भुलाना । (ग) अंध पट रहा भुलाना । (घ) अंतहु अंध पट रहै भुलाना ।'
१३ (क) (ग) पाएके = पाएकै । (ख) (ग) पाएके = पाइके ।
१४ (क) भजो = भजे । (ख) भजो = भजै ।

धूम करै धून सो पावै ।[1] बोएल क बोएल ताहि भरमावै ॥१३६॥[2]
बोएल बिना कोइ जाए ना पावै । कर्म डड परि ताहि भरमावै ॥१३७॥[3]

साखी

कहँ दरिया नाहि बांचिहीं[4], बिनु दीए कम डड ।[5]
कहाँ भागि जीव जाइहो[6], सात दीप नव खंड ॥१८॥

चौपाई

तीनि लोक जाकरि ठकुराई । बोएल दीन्ह तीनहु जग पाई ॥१३८॥[7]
पहिले बोएल आपन देही ।[8] जड जीवन्ह को एक लिखि लेही ॥१३९॥[9]
राम किस्त बोएल जग दीन्हा । जाकर बोएल ताहि लिखि लीन्हा ॥१४०॥[10]
राम किस्त सें कवन कहावै ।[11] करे धूम बोएल सो पावै ॥१४१॥
जीव के दरद बुझहु रे भाई । दरदमंद के दरद समाई ॥१४२॥[12]
जो यह दया दरद दिल माने ।[13] दरदमंद सो जगत बखाने ॥१४३॥[14]
एकै ब्रम्ह सबै घट सूझै ।[15] ग्यानी होए सन्त एह बूझै ॥१४४॥

---

१ (ख), (ग) करै = करे ।
२ (ग) बोएल = बोल ।
३ (ग) केरि = किरि ।
४ (ख), (ग) (घ) बांचिही = बाचिहो । (क) बांचिही = बाचिहो ।
५. (क) बिनु = बिना ।
६ (क) जाइहो = जाइये ।
७ (क) (ग) तीनहु = तीन्हु ।
८ (क) आपने देही = आपन दीन्हा । (क) (ग), (ग) आपन = आपनी । (घ) आपनं = आपनी ।
९. (क), (ग) लेही = दीन्हा ।
१० (क), (ख) (ग) जाकर = ताकर ।
११ (ग) (घ), सें = से ।
१२. (क), (ख), (ग), (घ) दंद = दंद ।
१३ (क), (ग) 'जो यह दया दरद दिल आना ।' (क) (ग) 'जो यह दया दरद दिल आनै ।'
१४ (क) (ख) (ग) (घ) दरद मंद = दरद मंद । (ग) सो = से । (क) (ख) बखाने = बखाना ।
१५. (क) सभै = सबै ।

चौपाई

माया रूप बलि छरै बनाई ।[1] माया ते जग मुनि मुनि खाई ॥१६५॥
माया रूप कंस बध कीन्हा । एह भेद बिरला केहु चीन्हा ॥१६६॥
आवै जाए जगत उपजावै । मन माया फेरि जोति समावै ॥१६७॥[2]
मन के रंग बिरला केहु जाना । जाके सुरति साँच है ध्याना ॥१६८॥
एह मन चंचल चतुर है चोरा । मन सुरीद है मनहि कठोरा ॥१६९॥[3]
मन बुधि बल कथै एह ग्याना । मन अनंत रूप धरे बखाना ॥१७०॥
एह मन काम क्रोध सुख भोगा । मन जोगी है मन है रोगा ॥१७१॥[4]
मन ही त्रिगुन धरे एह छन्दा ।[5] सुर नर मुनि परे मन के फंदा ॥१७२॥[6]
एह मन आवै एह मन जाई ।[7] एह मन एह जग जिव सभ खाई॥१७३॥[8]
ब्रह्मा बिस्नु एह मन अंसा ।[9] मनहीं रावन भए बिधंसा ॥१७४॥

दोहा

कंचन कोट लंका बनो[10] जारि कीन्ह धुरि धाम ।
धोरे मह जनि मातहु[11], भजन करहु सतनाम ॥११॥[12]

चौपाई

राजा प्रिथु प्रिथिमी सभ लीन्हा । असि बल जोर सभी बसि कीन्हा ॥१७५॥[13]
धर धराव सभै रजधानी ।[14] सभ मिलि गए नरक की खानी ॥१७६

---

१ (क) (ग) (घ) छरै = छरो ।
२ (क) फेरि = फेर । (ग) फेरि = फिरि ।
३ (ख), (ग) (घ) सुरीद = सोरीद ।
४ (ख) है = यह । (घ) जोगी है मन = जोगी मन ।
५ (ख) (क) ही = ई । (घ) मनहीं = मन ।
६ (ख) (घ) परे = परै ।
७ (ख) जाई = जावै ।
८ (ख) खाइ = खावै ।
९ (ख) बिस्नु = बिसुन । (क) (ख), (ग) (घ) एह = हरी ।
१० (ख) कोट = कोटि । (क) बनो = बनी ।
११ (घ) धोरे = धोरै । (क) (ख), (ग), (घ) मह = मर ।
१२ (क), (ख) (घ) करहु = करो ।
१३ (क) बसि = बस ।
१४ (ग) सभै = सबै । (क) (ख) रजधानी = रजधानी ।

चौपाई

बिसै बिकार तेजहु अहं प्रानी ।[1] सुमिरहु नाम अनूपम बानी ॥१५६॥[2]
एह माया बहु केहु की चेरी ।[3] सुर नर सभ बांधेसो घेरी ॥१५७॥[4]
सुर नर मुनि अब तपे सन्यासी ।[5] मन माया बिच डारे फांसी ॥१५८॥[6]
कंचन कोट सका बहु भांती ।[7] चित्र बिचित्र रचो बहु कांती ॥१५९॥[8]
चित्र बिचित्र सभ कनक उरेहा ।[9] पल में गई भया सभ खेहा ॥१६०॥[10]
सीता मोहनी रही भवानी । रावन हरि अपने गिह आनी ॥१६१॥[11]
मन माया नाहि चीन्हे गवारा ।[12] काल कठिन चाहे सभ मारा ॥१६२॥[13]
मन की बाजी सभै बधावै ।[14] बाजीगर का भेद न पावै ॥१६३॥
बाजीगर ज्यों खिसि न आवै ।[15] बिष बाघ के पानि देखावै ॥१६४॥[16]

दोहा

बाजीगर की गेसि एह[17], कहे कवन पतिआए ।[18]
कहें दरिया मन सभै नचावै[19], बूझि परे पछताए ॥

---

१ (क), (ख), (ग), (घ) बिकार = बेकार ।
२. (क) सुमिरहु = सुमरहु ।
३ (क) (ख) बहु = बह ।
४ (क) बधिसो = बधित ।
५ (क) अब = औ । (ख) अब = अउर । (ख) तपे = तपै ।
६ (क) (घ) डारे = डारै । (ख) डारे – डारेसो । (ग) डारे = डारेव ।
७ (घ) कोट = कोटि ।
८ (ख) (ग), (घ) बिचित्र = बेचत्र ।
९ (ख), (ग) (घ) बिचित्र = बेचित्र ।
१० (ग) सभ = सब ।
११ (घ) गिह = गिहि ।
१२ (क), (ख) (घ) चिन्हे = चिन्है ।
१३ (क) (ख) (ग) चाहे = चाहै ।
१४ (क) (घ) सभै = सभे ।
१५ (ख) (घ) ज्यों = ज्यो ।
१६ (घ) पानि = पान ।
१७ (क) (ख) एह = एहह । (क) (ख), (घ) गेसि = पेखि ।
१८ (क) कहे = कहो ।
१९. (ग) सभै = सबै ।

सत्त पुर्ष समन्हि से न्यारा।[1] चौथा लोक जंह रंग करारा ॥१८७॥[2]

दोहा

चौथ लोक सभ ऊपरे,[3] जहां पुरुष निर्वान।
उदित कला परगास है,[4] करो भजन निजु ध्यान ॥१३॥

चौपाई

सत्त पुर्ष इहि अजर अकेला।[5] सत्त सुकित उनहीं महं मेला ॥१८८॥[6]
बूम्हहु ग्यानी करहु विवेका। नाम निरखि यह गुर गमि पेखा ॥१८९॥
सत्तनाम निजु अगम अपारा। निर्मल नाम है निगुन सारा ॥१९०॥
नाम पिअक्षन अभिअ बानी।[7] बूम्हहु संत सत्त सहिदानी ॥१९१॥[8]
जेहि दिन नहिं मंडल नहिं तारा।[9] तेहि दिन ब्रम्ह न वेद विचारा ॥१९२॥[10]
तेहि दिन कर्म धर्म नहिं जानी।[11] तेहि दिन जीव सक्ति नहिं ग्यानी ॥१९३॥[12]
तेहि दिन नीर ना बहे बतासा।[13] तेहि दिन इंद्र ना मेघ परगासा ॥१९४॥[14]
तेहि दिन बिस्न ना दस अवतारा।[15] तेहि दिन कम ना धर्म पसारा ॥१९५॥
तेहि दिन पुर्ष चोप रहे निनारा। निरखम लिए चंवर सिर ढारा ॥१९६॥[16]
एहहीं संग हुकुम नहिं टारा। सुनहु संत यह करहु बिचारा ॥१९७॥[17]

---

१ (ख) समन्हि = समनि।
२ (ख) (ग), (घ) चौथा = चौथ। (घ) जहां = तहां।
३ (ख) ऊपरे = ऊपरै।
४ (घ) कला = कला।
५ (क) (घ) इहि = है।
६ (क) (ख) (ग) (घ) उनहीं = उन्हहीं।
७ (क) पिअक्षन = पेअक्षन।
८ (क) 'बुझो संत एह सत सहिदानी। (ग) बूम्हहु = बूझो।
९ (घ) पाठ 'नहिं' के स्थान में 'नाहिं'—अस्वीकृत।
१० (क) ब्रम्हो = ब्रम्हा। (ग), (घ) ब्रम्हो = ब्रम्है।
११ (ख) जानी = जाना।
१२ (ग) ग्यानी = ग्याना।
१३ (क) (ख) बहे = बहै।
१४ (क) ना = न।
१५ (क) बिस्न = बिस्नु। (ख) बिस्न = बिशुन। (घ) अवतारा = औतारा।
१६ (क) (ख), (ग), (घ) लिए = लिये।
१७ (क) यह = एह।

चौपाई

जर जराव सभे मति कीन्हा । बिना भजन किछु संग न लीन्हा ॥१७७॥
मन की ममिता सभे बहावै ।[1] बिना भजन कछु काम न आवै ॥१७८॥[2]
सैंग सना धुरजोधन ठाना ।[3] छन मह परम सभे बिलाना ॥१७९॥[4]
भगत पच्छ सदा उन्हि राखा ।[5] निर्मल ग्यान नेर यह भाखा ॥१८०॥
बड़ो पर्न राखा उन्हि जानी ।[6] धुरजोधन के नर्जाहि निसानी ॥१८१॥[7]
राए जुधिस्ठिल क्रिस्न पियारा । राखिन्ह प्रन तेहि भक्ति बिचारा ॥१८२॥[8]

दोहा

राखेवो प्रन तेहि जानिके[9] किन्हो भक्ति प्रतिपाल ।
अपने पच्छ के कारन, काटो जम के जाल ॥१२॥[10]

चौपाई

संत महिमा किछु कहि नहिं जाई ।[11] जिन्हि जिन्हि भजन नाम लव लाई ॥१८३॥[12]
नाम निरखि जिन्हि करहिं बिबेखा । सत्तनाम निरखै न्हिं देखा ॥१८४॥
राए निरंजन निरहंकारा ।[13] तीनि लोक ताको पैसारा ॥१८५॥[14]
ब्रम्हा बिस्न महेसर देवा ।[15] सभ मिलि करहिं जोति के सेवा ॥१८६॥[16]

---

१ (क), (ख) (घ) सभे = सभै । (ग) सभे = सबै ।
२. (क) काम न आवै = संग न आवै ।
३ (क) सैना = सैन । (ख), (ग) धुरजोधन = दिरजोधन ।
४ (क) (ख) परम = परसै । (घ) को सभै = सबै ।
५ (क) (घ) भगत = भक्ति ।
६ (क) बड़ो = पैंडो । (ख) बड़ो = पंडो । बड़ो = पंड ।
७ (क) (ग) धुरजोधन = दिरजोधन । (क) के = की । (ख), (घ) के = कै । (क) (ग) (घ) नरही = मारही ।
८ (क) (ग) राखिन्ह = राखिन्हि । (ग) (घ) बिचारा = बेचारा ।
९ (क) (ख) (घ) राखेवो = राखो । (ग) राखेवो = राखेव । (क), (घ) जानिके = जानिकै ।
१० (क) किन्हो = कान्हे ।
११ (क) नाहि = नहि । (ग) नाहि = न (घ) नाहि = ना । (घ) कही = कहा ।
१२ (ग) लव = लो ।
१३ (क) निरंजन निरहंकारा = निरंजन है निरंकारा ।
१४ (घ) पैसारा = पसारा ।
१५ (क) महेसर = महेसरर ।
१६ (क), (ग), (घ) कै = के ।

अगम पुरुष सोए सभ ते न्यारा ।[1] तेहि सुमिरे जीव होए उबारा ॥२०८॥[2]
ताके सोअहु पंडित ग्यानी । सत्तपुरुष सोए हहि निर्बानी ॥२०९॥
ब्रम्ह जिन्हहु ब्रम्हा को जाया । जिन्हहु आदि अंत जिन्हि निर्माया ॥२१०॥
ताही चिन्हे बिनु कहवाँ अरुझो ।[3] कवन ठौर जंह जाए समरुझो ॥२११॥[4]
ब्रम्ह लोक सोता है भाई । इन्द्र लोक तहाँ काल समाई ॥२१२॥

साखी

कहैं दरिया सोए अमर है[5] सतलोक महं बास ।[6]
तहवाँ काल ना आवहीं बहु बिधि करहिं बेलास ॥२२॥[7]

चौपाई

एक ब्रम्ह ते ब्रम्ह भो चारी ।[8] चारि बरन ते जक्त पैसारी ॥२१३॥[9]
एके ब्रह्म सभ घट छाया ।[10] ब्रम्ह देह सुभ कहे पाया ॥२१४॥[11]
एके पिंड एके है प्राना ।[12] एके मुख रसना है कामा ॥२१५॥[13]
एके हाथ पांव है पेटा ।[14] तुह करता कैसे तुह भेटा ॥२१६॥[15]

---

१ (क) अगम = अम । (ख) सभते = सते ।
२. (क) (ख) (ग) (घ) तेहि = ताहि ।
३ (क), (ख), (ग) चिन्हे = चिन्है । (ख) (घ) अरुझो = कैहो ।
४ (ख), (घ) समरुझो = समैहो ।
५. (क) (ग) (घ) है = हरी ।
६ (क) (ख) (ग), (घ मंह = मे ।
७ (घ) करहिं = करत ।
८ (क), (ख), (ग) (घ) एक = ऐक । (घ) ब्रम्ह = बर्म ।
(क) (घ), (ङ) भो = भव ।
९ (क) ते = ते । (क), (ख), (ग), (घ) जक्त = जगत ।
१० (घ) सभै = सकल ।
११ (क), (ख) कैहे = कैहै । (ग) कैहे = कहसे ।
१२. (ख), (घ) एके = एकै । (क), (ग) एके = एकै
१३ (ख) एके मुख = एकै है मुख ।
१४ (घ) में 'पांव' है अस्वीकृत ।
१५. (क) कैसे = कैसे । (ख) कैसे = कइसे । (ग) कैसे = कइसे । (क) (ग), (घ) तुह = तुम्ह ।

सत पुर्वं सोए अगम अपारा।[1] सतलोक जहाँ तख्त सवारा ॥१९८॥

साखी

पीछे सब पैदा कियो,[2] मन माया एक संग।[3]
कहूँ दरिया निर्माएउ,[4] प्रेम प्रीति बहु रंग ॥२१॥

चौपाई

कुम जोति ते कन्या भएऊ।[5] ताते निर्गुन रूप होए ठएऊ ॥१९९॥[6]
ब्रह्मा बिस्न महेसर जोगी। तीनि कन्या तीनिउ रस भोगी ॥२००॥
रजगुन तमगुन तामस कीन्हा। तेज बेद बिर्ग रस भीन्हा ॥२०१॥[7]
त्रिगुन फंद रचा संबसारा। जम जाल का कीन्ह पसारा ॥२०२॥[8]
जोग जाप यह जग मैं दीन्हा।[9] मन्त्र गाइत्री ब्रम्है कीन्हा ॥२०३॥
गाइत्री कन्या महे भवानी।[10] ताको जाप मुक्ति फल ठानी ॥२०४॥[11]
गाइत्री स्रापित भवनहि भर्मी।[12] ताते आए जगत महँ जन्मी ॥२०५॥[13]
आपन मुक्ति न पाव बिचारी।[14] सो कैसे जन जन्म उबारी ॥२०६॥[15]
नारी ध्यान सन करहिं समाधी।[16] जड़ महिं जानहिं अगम अगाधी ॥२०७॥

---

१ (ग) रूपम = रूपते। (घ) अपारा = न्यारा।
२ (ख) कियो = किया।
३ (क), (ख) (ग), (घ) एकसंग = एकरंग।
४ (क) निर्माएउ = निरमायो। (ख), (ग) निर्माएउ = निरमाएयो। (घ) निर्माएउ = निरमायो।
५ (क) कुर्म = कुरम (ग) कुर्म = कुरम। (क) (ग) ते = से।
६ (क) ताते = तातें। (क) (ख) (घ) होए = भौर। (ग) होए = भए। (घ) ठएऊ = ठेऊ।
७ (क), (ग), (घ) बिर्ग = बिरग। (ग) बिर्ग = बिर्ग।
८ (क) (घ) जाल = जालिम।
९ (क) मैं = मै।
१० (क) गाइत्री = गायत्री। (क), (ग) महे = मही।
११ (क), (ख), (ग), (घ) ताको = ताके। (ख) (ग) मुक्ति = मुउनि।
१२ (क), (ग), (घ) भवनहि = भवमें।
१३ (क) ताते = तातें।
१४ (ख), (घ) आपन = आपनी। (क) (ख), (ग), (घ) पावे = पावै।
१५ (क), (घ) उबारी = उबारी।
१६ (ग) सन = सब। (ख) करहिं = करें।

काम क्रोध निसदिन चित राखै। मदग्रह लाइ ठगौरी भाखै ॥२३०॥[1]
करम अनेक करावहिं आगी। ब्रम्ह न चीन्है सो अग्यानी ॥२३१॥[2]

साखी

ब्रम्हन सो जो ब्रम्हहि चीन्है,[3] करै भक्ति लवलीन।[4]
कहैं दरिया सोइ बाचिहैं[5] पंडित परम अधीन ॥२३॥[6]

चौपाई

सरब मासु खाइ अग्यानी। करहीं जीव अमार बखानी ॥२३२॥[7]
घात मैं मारहिं सो बगध्यानी।[8] रहै बिसै रस लीन सो प्रानी ॥२३३॥[9]
ताहि बिसै रस करहिं बखानी।[10] अंतहु बूड़ि मरे बिनु पानी ॥२३४॥[11]
दया नाहीं दिल करहिं बिसेखा।[12] ग्यान निसेध नहीं चित पेखा ॥२३५॥[13]
मद गुन कोध तिलक अनुमाला। पढ़ि पोथी सभ करहिं गुमाना ॥२३६॥
एहि बिधि मरहिं बोलहिं बहु बानी।[14] संत द्रोह निस दिन दिल आनी ॥२३७॥

साखी

संत द्रोह नहिं करिए पंडित,[15] देखहु सब्द अमोल।[16]
कहैं दरिया दुर्मति तेजो,[17] साहब अमर अडोल ॥२४॥

---

१ (क) मद = मो। (क) (ख) (घ) लाइ = लेइ।
२. (ख) चीन्है = चीन्हहि।
३ (क) सो = सोइ।
४ (क) (घ) करै = करै। (ख) (ग) (घ) लव = लौ।
५ (क) (ख) (ग) (घ) सोइ = सो। (क) बाचिहैं = बाचिहैं। बाचिहैं = बाचिहो।
६ (क) (ख) पंडित परम अधीन = पंडित प्रेम अधीन।
७ (क) जीव = जीसु। (क) (ख) (ग) (घ) अमार = अचार।
८ (क) (ग) बध = बधु।
९. (ग) रहै = रहे। (ख) लीन = लीनह।
१० (ख) (ग) करहिं = करहीं।
११ (क) मरे = मरै। (ग) मरे = मुए।
१२. (क) करहि = करै।
१३ (क) (ख) (ग) (घ) नहिं = नाहि।
१४ (क) (ख), (ग), (घ) मरहि = परहि।
१५. (ख) (ग) (घ) नहिं = नाहि।
१६ (ख), (ग) देखहु = देखो।
१७ ( ) (ख) (ग) दुर्मति = दौतिया।

एके ओइमि सभे जनमाया ।[1] तुम ना कहौ कवन दे भाया ॥२१७॥[2]
को हिंदू को तुरुक कहाई । एके ब्रम्ह मोसम्मम भाई ॥२१८॥[3]
मटी एक बरतन बहुतेरा ।[4] असल ब्रम्ह तेहि भीतर बेरा ॥२१९॥
हिंदू तुरुक दुई भरमाई ।[5] एके कर्त्ता काहे ठहराई ॥२२०॥[6]
एके कर्त्ता स्रिस्टि पसारा ।[7] एके जोति करे उजियारा ॥२२१॥[8]
पांच तत्त एके परगासा ।[9] छव दरसन तहं सोहि नेवासा ॥२२२॥
ब्राम्हन बेद भने परपंची । झूठी बात कहे सब रंची ॥२२३॥[10]
होम जग्य सब आहुति करावहि ।[11] बकरा खसी जीव मगावहि ॥२२४॥
अपने खाहि फेरि अवरि खिआवहि ।[12] सास्तर पोथी गीता सुनावहि ॥२२५॥[13]
हंडी हाड़ खट करम अचारा ।[14] बिस्या से कबहीं नहि न्यारा ॥२२६॥[15]
संध्या गाइत्री ध्यान लगावहि ।[16] सुरती न मिसुना पर धावहि ॥२२७॥[17]
चंचल चोर असुर पाखंडा ।[18] काल लिए सिर ऊपर डंडा ॥२२८॥
कहें दरिया सत्त सब्द न चीन्हे ।[19] काम क्रोध ममिता रस भीन्हे ॥२२९॥[20]

---

१ (ख), (घ) एके = एकै । (क) जनमाया = जन आया ।
२ (ग) तुम = तुम्ह । (क) ना = नै ।
३ (ख), (घ) एके ब्रम्ह = एक तो ब्रम्ह ।
४ (ख) मटी एक = माटी एक ।
५. (क) दुई भरमाई = दुइ सब भरमाया ।
६ (क) ठहराई = ठहराया ।
७ (ग) स्रिस्टि = सब स्रिस्टि ।
८ (ख), (घ) एके = एकै । (क) (ख) (घ) करे = करै ।
९. (ख) (घ) एके = एकै ।
१० (क), (ख) कहे = कहै । (ग) सब = सभ ।
११ (घ) आहुति = आरति ।
१२. (घ) फेरि = फिरि ।
१३ (क) (ख), (घ) सास्तर = सस्त्र ।
१४ (क) (ख) (ग) (घ) हंडी = हांडी ।
१५. (क) से = सै ।
१६ (क) गाइत्री = गायत्री । (क) (घ) लगावहि = लगावै ।
१७ (ख), (घ) पै = सेइ । (क) (घ) धावहि = धावै ।
१८ (घ) पखंडा = पैखंडा ।
१९ (क) (ख) (ग), (घ) चीन्हे = चीन्है ।
२० (क), (ख) (ग), (घ) भीन्हे = भीन्है ।

साहब अगम जो दीन्ह देखाई ।[1] अगम रूप दरसन हम पाई ॥२४९॥
अधर जोति सेत सम छाया ।[2] परिमल बास सोभा सम धाया ॥२५०॥[3]
देखि अर्ध अंह सेत निसाना । जहं मोर चमकि घटा घहराना ॥२५१॥
निर्भै जिंदा अगम चलि आए ।[4] अगम लीला केहु भेद ना पाए ॥२५२॥[5]

दोहा

चरन परो बहु भांति से,[6] निर्बंधन निर्भै ग्यान ।[7]
प्रेम प्रीति के कारने, आए पुर्स अमान ॥१५॥[8]

चौपाई

दयानिधी अस बोले बिचारी ।[9] तुम्ह कारन इहवां पगु धारी ॥२५३॥[10]
तुम्ह कारन हम जग में आए ।[11] प्रगट रूप हम तुमहिं देखाए ॥२५४॥[12]
अजर लोक सब छोड़ि आए । दीप दीप जहां पुहुप बिछाए ॥२५५॥
तुह सुकित हहु अंस हमारा ।[13] तुम्ह कारन इहवां पगु धारा ॥२५६॥[14]
दयानिधी अस बोले बानी ।[15] सुनी बचन गदगद चित आनी ॥२५७॥
लगी सुरति ज्यों चंद चकोरा ।[16] लागी द्रिस्टि प्रेम रस बोरा ॥२५८॥

---

१ (ख) साहब = साहेब ।
२ (ग) सम = सब ।
३ (ग) सम = सब ।
४ (ख) निर्भै = निर्भै ।
५ (क), (ग), (घ) ना = न ।
६ (क) से = सो ।
७ (क) निर्बंधन = निरबंधन । (क) निर्भै = निरभै ।
८ (क) (ख) (ग) (घ) आए = आऐ ।
९ (ग), (घ) बोले = बोले । (ख), (ग) बिचारी = बिचारा ।
१० (ख) (ग) तुम्ह = तुम । (ख) (ग) धारी = धारा ।
११ (ग), (घ) तुम्ह = तुम ।
१२ (क) (घ) तुमहिं = तुम्हहिं । (ख) देखाए = देखिए ।
१३ (क) तुह = तुम्ह । (ग) तुह = तुम ।
१४ (ख) (ग) तुम्ह = तुम । (घ) तुम्ह = तुह ।
१५ (ख) बोले = बोलहिं । (घ) बोले = बोले ।
१६ (क) (ख), (ग) लगी = लागी । (ख) ज्यों = जैसे । (ग) ज्यों = जैसे । (घ) ज्यों = जेपे ।

चौपाई

अजर लोक से साहब आए।[1] अगम लीला केहु भेद ना पाए ॥२३८॥[2]
आपुहि उदित धरा है काला। आपुहि पुरुष अमरि सन चेला ॥२३९॥
आपु परगट जग में चलि आए।[3] सकलो दोखिया दूरि धोहाए ॥२४०॥
जिद रूप होए पुरुष पुराना।[4] अजर लीला होए पथ निसाना ॥२४१॥[5]
सत वचन निरखै निर्वाना।[6] श्रीमुख वचन लिखा निजु ग्याना ॥२४२॥[7]
सत कहा बूझै कोइ ग्यानी।[8] साहब कहा सत सहिदानी ॥२४३॥
अगम लीला होए भेद निआरा। साहब आए इहाँ पगु धारा ॥२४४॥[9]
सहर धरकंधा व परवाना। तहवाँ साहब आए सुजाना ॥२४५॥[10]

दोहा

सहर धरकंधा व कीन्हो, भाव भजन निर्बान।[11]
सत पुरुष चलि आएवो[12] लीला अगम निमान ॥१४॥

चौपाई

दयार्मत दया बहु कीन्हा।[13] दया करी तब दरसन दीन्हा ॥२४६॥
देखि दरसन जिव बहुत अनन्दा।[14] बिगसित कमल मेटा दुख दंदा ॥२४७॥[15]
माया आए चरन जो कीन्हा।[16] सीतल अंग प्रेम रस भीन्हा ॥२४८॥[17]

---

१ (क) से = है।
२. (क), (ख), (ग), (घ) ना = न।
३ (क) (ख) (ग) (घ) आपु = आपुही।
४ (क) (ख) (ग) (घ) जिद = जिदा।
५. (क), (ख) (ग) (घ) पर्थ = परथ।
६ (ख) निरखै = निरषै। (क) (ख), (ग) निर्वान = निरबाना।
७ (घ) श्री = सिर।
८ (क) कहा = कह।
९. (ख) (घ) इहाँ = इहवाँ।
१० (घ) तहाँ।
११ (क), (ख), (ग) निर्बान = निरबान।
१२. (क) आएवो = आएउ। (ख) आएवो = आए।
१३ (क), (ख) (ग) (घ) दया मत = दयार्मत। (ख) (ग) बहु = अति।
१४ (ग) दरसन = दरस।
१५. (क) कमल = कंवल।
१६ (क) माया = माथ। (ग) माया = मथा।
१७ (ग) भीन्हा = भीना।

करहि सलाम अरज सब साई ।[1] छपलोक के कथा सुनाई ॥२६८॥[2]
छपलोक के कवन सुभाऊ ।[3] कवन बेलास सहर के ठाऊ ॥२६९॥[4]
सहर अमर जंह सभे बेलासा ।[5] पुहुप बेवान है अगर सुवासा ॥२७०॥[6]
अम्रित झरि चहुं ओर ते आवै ।[7] चाखै प्रान बहुत सुख पावै ॥२७१॥[8]
दयादीप जंह पलंग सुवासा । बैठे जिव सभ करहि बेलासा ॥२७२॥[9]

दोहा

सोंधा अगर परिमल की झरिहै, सुनहु संत सुजान ।[10]
जुग जुग अमर होए रहा, प्रेम प्रीति निर्वान ॥१७॥[11]

चौपाई

दयानिधी जंह बोले बिचारी ।[12] अरज कीन्ह सब सुरति संभारी ॥२७३॥
काया अजर देखा निर्वाना । निगुन कवन रंग सहिदाना ॥२७४॥[13]
कवन सरूप अमरपुर गाऊं । कवन रंग रहे तेहि ठाऊं ॥२७५॥[14]
करता अजर अमर तुह मूला । प्रान पिंड रहै समतूला ॥२७६॥
अडोल न डोलहिं जुग जुग रहहीं ।[15] जिदा रूप भेव यह कहहीं ॥२७७॥[16]
तब साहब अस बोले बैना ।[17] सुनत सबन सीतल भौ मैना ॥२७८॥[18]

---

१ (ग), (घ) सब साई = सो साई ।
२ (क) (ग) कै = के ।
३ (क), (ख), (ग) कै = के ।
४ (ख), (ग), (घ) कै = के ।
५ (क) (ग) सभे = सभै । (ग) सभे = सबै ।
६ (क) बेवान = बैवान ।
७ (क) ते = से । (ग), (घ) ते = से । (ख) चहुं ओर से = चहुंदिसे ।
८ (क), (घ) प्रान = हंस ।
९ (क) जीव = हंस ।
१० (क), (घ) सुनहु = सुनो ।
११ (क) प्रीति = प्रीत ।
१२ (ख), (घ) बोले – बोलै ।
१३ (क) रंग = रूप ।
१४ (क) कवन = कवन । (क) (ग) (घ) रहे = रहै ।
१५ (घ) न = ना । (ख) (ग), (घ) रहहीं = रहुहीं ।
१६ (ख), (ग) (घ) कहहीं = कहुहीं ।
१७ (ख) साहब = साहेब । (ख) बोले = बोलै । (घ) बोले = बोलहीं ।
१८ (ग) भौ = भव ।

हौं सेवक निजु दास तुम्हारा।[1] राखो हुकुम शिर धरो करारा ॥२५९॥[2]

दोहा

राखो वचन कर जोरिके,[3] सुना स्रवन चित लाए।
दयानिधि सुख दर्सन में,[4] दुर्मति सभ दुरि जाए ॥१६॥[5]

चौपाई

दयानिधी अस कहा बुझाई।[6] करहु भक्ति निजु प्रेम लगाई ॥२६०॥[7]
अवल अकूफ सुनो निर्वाना।[8] जिन के कंठी अवल समाना ॥२६१॥[9]
अवल अकूफ करहु तुम्ह दासा।[10] देखत जम नहिं उपजी त्रासा ॥२६२॥[11]
मूल अकह है ऐनक सारा।[12] चहुओर दीसे रंग करारा ॥२६३॥[13]
अदब करहिं चरन सिर नाई। अजर लोक सम कहिं समुझाई ॥२६४॥
छापा सभहिं गहो चितलाई।[14] तन छूटे छपलोक समाई ॥२६५॥[15]
सहज जोग निजु धर्म है सारा।[16] छापा सनदि मोहर टकसारा ॥२६६॥
जाके छापा मूल निसाना।[17] सो जीव जाए छपलोक समाना ॥२६७॥[18]

---

१ (ख) हौं = हो। (ग) हौं सेवक जुग जुग तुमारा। (घ) तुम्हारा = तुमारा। (घ) तुम्हारा = तोहारा।
२. हुकुम = हुक्म (क) धरो = धरौ।
३ (क) (ख) जोरिके = जोरिकै।
४ (क) (ख), (घ) सुख = सुख। (ग) सुख = सुद। (क) में = मैं।
५ (ग) सभ = सब।
६ (क) (ख) (घ) बुझाइ = समुझाई।
७ (ख) (घ) भक्ति = भगति।
८ (क), (ख) निर्वाना = निरवाना।
९ (क) के = की।
१० (क) (ख) तुम्ह = तुम। (ख), (घ) तुम्ह = तुँह।
११ (क) नहिं = के। (ख), (ग) (घ) नहिं = के। (क) उपजी = उपजिहै। (ग), (घ) उपजी = उपजिहि।
१२. (क) अकह = अंक।
१३ (क) दिसे = दिरसै। (घ) दिसे = दिसै।
१४ (ख) गहो = गहे।
१५. (क), (ख) (ग) छूटे = छूटै।
१६ (ग) निजु = निज।
१७ (क) निसाना = ठेकाना।
१८ (घ) समाना = समाना।

सरग नरक के त्रास ना मरैऊ ।[1] जुग जुग दास साहब चित गहेऊ ॥२८८॥[2]
तब साहब अस बोले बानी ।[3] तुह मुक्ति हहु निमस ग्यानी ॥२८९॥[4]
तोहरे नजीक जम नहिं जाई ।[5] से उड़ो छपलोक समाई ॥२९०॥[6]
तुम्ह कंह का कर एह संसारा ।[7] असल बचन यह अजर हमारा ॥२९१॥
दरिया सुनहु बचन हमारा । तोहरे छाप चलहि संसारा ॥२९२॥[8]

साखी

तुम्ह कंह दीन्हो छापा मोहर[9], सतनाम टकसार ।[10]
तोहरि बांहि जो जिव आवहीं, लेह उतारौं पार ॥१९॥[11]

चौपाई

तोहरी बांहि जो जिव आवहीं ।[12] सत्त शब्द परवाना पावहीं ॥२९३॥[13]
करे तत्तु प्रेम सत लाई ।[14] तन छूटे छपलोक समाई ॥२९४॥[15]
धन भाग एह जीवन हमारा । साहब बोले बचन करारा ॥२९५॥[16]
दिल में भरम कीन्ह एक बानी । अंतरजामी अंतरगति जानी ॥२९६॥[17]

---

१ (क), (ख) (ग) कै = के । (क), (घ) ना = न ।
२ (ख) साहब = साहेब ।
३ (ख) साहब = साहेब । (घ) अस = असल । (ख), (घ) बोले = बोलै ।
४ (ख), (ग) तुह = तुम । (घ) निमस = निरमल ।
५. (ख) तोहरे = तुम्हरे । (ग) तोहरे = तुम्हारे । (ख), (ग), नजीक = नजीक । (ख) जम = जमहु । (ग) नाहिं = न ।
६ (क) से = है । (ख) से = सेह ।
७ (घ) तुम्ह = तुम । (क) (ख), (ग) कंह = के । (घ) कंह = कै । (क) (ख) (घ) (घ) एह = एहि । (ख), (घ) संसारा = संसारा ।
८ (क) चलहि = चलिहै । (ख), (ग) (घ) चलहिं = चलिहि । (ख), (ग), (घ) संसारा = संसारा ।
९ (घ) तुम्ह = तुम । (ख) (ग) छापा = छापा ।
१० हस्तलेख (क) प्रति में 'टकसार' के बदले 'सारकसार' है । ।
११ (घ) लेह = ले ।
१२. (क) (घ) आवहीं = आवे ।
१३ (क) (घ) पावहीं = पावे ।
१४ (क) (घ) कर = करे । (ख) (ग) (घ) लाई = लावे ।
१५ (क), (ग) (ग) छूटे = छूटै । (क), (ख) (घ), (ग) समाई = समावै ।
१६ (ग) (घ) बोले = बोलै ।
१७ (ख) जानी = जाना ।

एक निर्गुन बोलता है भाई। ग्यानी जन बूझा अरथाई ॥२७९॥[1]
दोसर निर्गुन पवन कहावै।[2] वहै अगम कोइ अत ना पाव ॥२८०॥[3]
तीसर निर्गुन है निरकाग।[4] जाके मजे सकल संवसारा ॥२८१॥[5]
चौथा निर्गुन अचल है भाई।[6] जहवां अजरा जोति बराई ॥२८२॥[7]
सेत सिंगासन सेत सभ ठाऊं।[8] सेते दीप अमरपुर गाऊं ॥२८३॥[9]

दोहा

सुनहु सुकित बचन एह जुग जुग अमर बेलास।
सेत सेत सभ हाए रहा[10] तखित कन्या परगास ॥१८॥[11]

चौपाई

धन साहेब बोले सतबानी।[12] निर्गुन सर्गुन की सहिदानी ॥२८४॥[13]
तखित कन्या अजर के ज्या।[14] सुरति साथ अमरि भरि देखा ॥२८५॥[15]
तुह साहेब हम नाम तोहारा।[16] दरसन दखि मो मन्ह उनिमारा ॥२८६॥[17]
दुरमति दिल के दुरि सभ गएऊ।[18] चरन कंवल अबहीं चित दएऊ ॥२८७॥[19]

---

१ (ग) बूझे = बूझहु। (घ) बूझै = बूझै।
२. (क) दोसर = दोसरै। (घ) दोसर = दूसर।
३ (क) वहै = वहै। (क) कोन = काइ। (क), (ख), (घ) ना = न।
४ (क) तीसर = तसरै।
५. (क) मजे = मजै। (क) संवसारा = संसारा।
६ (घ) चौथा = चउथा।
७ स्वीकृत 'क' प्रति में 'अगम' पाठ।
८ (क) (ग) सिंगासन = सिंघासन।
९ (क), (ग) सेते = सेत। (घ) सेते = सेती।
१० (क) होए = हो।
११ (ख) परगास = प्रकास।
१२. (ख) साहेब = साहेब (ख) (घ) बोले = बोले।
१३ (घ) निर्गुन = निरगुन। (ग) सर्गुन = सरगुन।
१४ (घ) कन्या = कान्या।
१५. (क) सुरति = सुकित।
१६ (ख) (घ) तुह = तुम। (घ) साहेब = साहेब। (क) तोहारा = तोम्हारा। (ग) तोहारा = तुम्हारा।
१७ (क), (घ) मो = मदो।
१८ (क) (घ) के = कै।
१९. (घ) कंवल = कमल। (ख) (ग) (घ) दएऊ = दैऊ।

सरग नरक के आस ना धरेऊ।[1] जुग जुग दास साहब चित गहेऊ ॥२८८॥[2]
तब साहब अस बोले बानी।[3] तुह मुक्ति हस निमल ग्यानी ॥२८९॥[4]
तोहरे नजीक यम नहिं आई।[5] स तो छत्तलोक समाई ॥२९०॥[6]
तुम्ह कंह का कर एह सारा।[7] असल बचन यह अजर हमारा ॥२९१॥
दरिया सुनहु बचन हमारा। तोहर ध्यान धनहिं सतारा ॥२९२॥[8]

साखी

तुम्ह कंह दीन्हा आसा मोहर[9] सतनाम टकसार।[10]
तोहरि बाहि जा जिव पावहीं सेइ उतारों पार ॥१६॥[11]

चौपाई

तोहरि बाहि जो जिव पावहीं।[12] तस यम नरकाना पावहीं ॥२९३॥[13]
कर तसु प्रेम सब साई।[14] तन छूटे छत्तलोक समाई ॥२९४॥[15]
धन भाग एह जीवन हमारा। साहब बोले बचन उचारा ॥२९५॥[16]
दिल में परख कीन्ह एक बानी। अंतरजामी अन्तरगति जानी ॥२९६॥[17]

---

१ (क), (ख) (ग) के = के। (क) (ग) ना = न।
२ (ख) साहब = साहेब।
३ (ख) साहब = साहेब। (ग) अस = अइसन। (ख), (ग) बोले = बोलै।
४ (ख), (ग) तुह = तुम। (ग) निर्मल = निरमल।
५ (ख) तोहरे = तुम्हरे। (ग) तोहर = तुम्हारे। (ख) (ग), नजीक = नजीच। (ख) यम = जम्ह। (ग) नाहि = न।
६ (क) है = है। ख) है = हइ।
७ (ग) तुम्ह = तुम। (क), (ख), (ग) कंह = के। (ग) कंह = है। (क) (ख) (ग) (घ) एह = यहि। (ख), (घ) ईसारा = ईसहारा।
८ (क) धनहिं = धनिहै। (ख) (ग) (घ) धनहिं = धनिहिं। (ख) (क), (ग) ईसारा = ईसहारा।
९ (ग) तुम्ह = तुम। (ख) (ग) आसा = आस।
१० हस्तलेख (ख) प्रति में 'टकसार' के बदले 'सतकसार' है।
११ (क) सइ = है।
१२ (क) (ख) पावहीं = पावै।
१३ (क) (ख) पावहीं = पावै।
१४ (क), (ख) करे = करै। (ख) (ग) (घ) साइ = साई।
१५ (क), (ख) (ग) छूटे = छूटै। (क), (ख) (ग) (घ) समाइ = समावै।
१६ (ख) (ग) बोले = बोलै।
१७ (ख) बानी = बाणी।

अरज कीन्ह चरन सिरनाई। साहब सुनवो द्रिस्टि लगाई ॥२९७॥[1]
कवनी जुगुति जम जिव तरई।[2] कवने नाम काल डरई ॥२९८॥[3]
तब साहब अस बोले बानी।[4] सतनाम छापा सहिदानी ॥२९९॥[5]
सत सुक्रित से प्रेम बढाव।[6] करे सुरति प्रेम सोइ पावै ॥३००॥[7]
गिरही माह जुक्ति से रहना।[8] निसदिन नाम प्रेम में गहना ॥३०१॥[9]
बेबाहा के देइ दोहाई।[10] सुनत काल तब दूरि पराई ॥३०२॥
निस्चै गहे डगमग नहिं होई।[11] एक बरत सतनाम है सोई ॥३०३॥
अरज कीन्ह जो तंसु लगाई।[12] धन साहब सामर्थ सहाई ॥३०४॥[13]

दोहा

धन साहब सामर्थ है,[14] जिन्ह अजर अमान।
दयावंत दायानिधी प्रेम प्रीति निरबान ॥२०॥

चौपाई

धन साहब तुम्ह अगम अपारा।[15] सब विधि करता सिर्जनिहारा ॥३०५॥[16]
तुव गति लीला लखि नहिं आवै।[17] बड़ा भाग दर्सन जो पावै ॥३०६॥[18]

---

१ (ख) साहब = साहेब। (क) सुनवो = सुनो। (ख), (ग) (घ) सुनवो = सुना।
२. (ग) कवने = कौनी। (घ) कवने = कवन। (क), (घ) जुगुति = जुगति। (क), (ख), (घ) जन्म = जम। (ग) जन्म = जगत।
३ (क) कवने = कवनी। (घ) कवने = कवन।
४ (ख) साहब = साहेब। (ग) अस = असल। (ग) (घ) बोले = बोले।
५. (ख), (ग) (घ) छापा = छपा।
६ (क) से = से।
७ (क) (घ) करे = करे।
८ (क) से = से।
९ (क) नाम प्रेम = प्रेम नाम। (क) मे = मो।
१० (घ) के = कै।
११ (क) (ग) गहे = गहै। (क) नाहि = नहि।
१२. (घ) तंसु = तसु।
१३ (ख) साहब = साहेब। (क), (ग), (घ) सामर्थ = सामरथ।
१४ (क) (घ) है = हरी।
१५. (ख) साहब = साहेब। (क) (घ) तुम्ह = तुम। (ग) (घ) तुम्ह = तुह।
१६ (घ) सब = सब। (क) सिर्जनि = सिरजनि।
१७ (क) (ख) (ग), (घ) तुव = तुह।
१८ (क), (ख) (ग), (घ) दर्सन = दरसन।

ब्रह्मा बिस्नु महेसर देवा । जुग जुग खोजो न पाइन्हि भेवा ।।३०७।।[1]
सांच भक्ति बिनु मन से राजी ।[2] प्रेम सुरति बिस्वै सिर छाजी ।।३०८।।[3]
जहाँ सांच तहाँ साहब बासा ।[4] सांच सुरति बिनु खोहि नेवासा ।।३०९।।[5]
दयानिधी अस बोले बिचारा ।[6] दरिया दास तुम अंस हमारा ।।३१०।।[7]
हँसि के साहब बोले बानी ।[8] का मांगहु देउ सब जानी ।।३११।।
हाथी घोड़ा सब समाजा ।[9] फेरो छत्र करौं सब काजा ।।३१२।।[10]
सांच बचन बोलहु बिनु बना । जासे तुम्ह पावहु सुख चैना ।।३१३।।[11]

दोहा

दयानिधी सुनि लीजिए, सांच कहौ सिर नाए ।[12]
मैं हाथी नहि माँगिहौं[13], जुग जुग बास सहाए ।।२१।।

चौपाई

माया मम तौ सभे नचाव ।[14] सीस पटकि के जिव पंहुडाव ।।३१४।।[15]
धरम्हि मरे सब भूपति राजा ।[16] भक्ति भाव नहि एको काजा ।।३१५।।
भए ग्यान नहि आवे हाथा ।[17] सीस पटकि चल जम साथा ।।३१६।।[18]

---

१ (क) जुग जुग खोजिन्ह पाइ नै भेवा । (ख) जुग जुग खोजि ना पाइन्ह भेवा । (ग) (घ) जुग जुग खोजिन्ह न पाइन्हि भेवा ।
२. (क) सांच = साधु । (ग) बिनु = बिन । (ख) (ग) (घ) से = के ।
३ स्वीकृत (ग) प्रति में 'सुर्ति' पाठ है । वहाँ (क) (ख), (ग), (घ) प्रतियों का पाठ 'सुरति' स्वीकृत ।
४ (ख), साहब = साहेब ।
५. (क) बिनु = बिनि ।
६ (ग) बोले = बोलै । (क) बिचारा = बिचारी ।
७ (क) (घ) तुम = तुम । (क) हमारा = हमारी ।
८ (ख) साहब = साहेब । (ख), (ग) बोले = बोलै ।
९ (क) (ख) घोड़ा = घोरा ।
१० (क) फेरो = फेरौ । (क) करौं = करौ ।
११ (ग) तुम्ह = तुम ।
१२ (क) कहौ = कहो ।
१३ (क) नहि माँगिहौ = माँगो नहीं ।
१४ (घ) माया मम = मम माया । (ग) तौ = तब । (क) (ख) (ग), (घ) सभे = सभी ।
१५. (ख), (घ) पंहुडावै = पहुँचावै ।
१६ (घ) मरे = मरै । (ग) सब = सब ।
१७ (क) नहि = न ।
१८ (ख), (घ) चलै = चलै ।

परज कीन्ह चरन सिरनाई। साहब सुनयो द्रिस्टि लगाई ॥२९७॥[1]
ल्मनी सुगुति चन्म जिव तरई।[2] कमने नाम काप एह करई ॥२९८॥[3]
न साहब धस मोमे मानो।[4] सतनाम खाना सहिदानी ॥२९९॥[5]
उत सुकित से प्रेम बढाव।[6] करे सुरति प्रेम साह पावैं ॥३००॥[7]
येही माह सुकि मै रहना।[8] निसन्नि नाम प्रेम मै गहना ॥३०१॥[9]
विाहा के देइ दीहाई।[10] सुनत काल तब दूरि पराई ॥३०२॥
निर्चे गहे डगमग नहि होई।[11] एक सरल सतनाम है सोई ॥३०३॥
परज कीह जो तंतु मगाई।[12] धन साहब सामथ बहाई ॥३०४॥[13]

दोहा

धन साहब सामर्थ है,[14] जिन्ह अजर अमान।
दयावंत दायानिधी प्रेम प्रीति निरवान ॥२०॥

चौपाई

धन साहब तुम्ह अगम अपारा।[15] सम विधि करना सिरजनिहारा ॥३०५॥[16]
तुव गति लीला लखि नहि आव।[17] बड़ा भाग दर्सन जो पावै ॥३०६॥[18]

---

१ (ख) साहब = साहेब। (क) सुनेयो = सुनो। (ख), (ग) (घ) सुनयो = सुना।
२. (ग) कमने = कौनी। (ख) कमने = कवन। (क), (ग) सुगुति = सुमित। (क) (ख), (घ) चन्म = चय। (ग) चन्म = चगन।
३ (क) कमने = कवनी। (ग) कमने = कवन।
४ (ख) साहब = साहेब। (ग) धस = असुन। (ग) (घ) मोमे = मोने।
५. (ख), (ग) (घ) खाना = खना।
६ (क) से = सें।
७ (क) (घ) करे = करे।
८ (क) मै = मैं।
९. (क) नाम प्रेम = प्रेम नाम। (क) मै = मो।
१० (घ) के = कै।
११ (क) (ख) गहे = गहै। (क) नहि = नहिं।
१२. (घ) तंतु = तत्।
१३ (ख) साहब = साहेब। (क), (ग) (घ) सामर्थ = सामरथ।
१४ (क) (घ) है = हरी।
१५. (ख) साहब = साहेब। (क) (घ) तुम्ह = तुम। (ग) (घ) तुम्ह = तुह।
१६ (ग) सम = सब। (क) सिरजनि = सिरजनि।
१७ (क) (ख), (ग), (घ) तुव = तुह।
१८ (क), (ख) (ग), (घ) दरस = दरसन।

ना मांगों ना पावों जाई।[1] जो भेजहु सो तुमहि बड़ाई ॥३२५॥[2]
जो दफा संग जमा कीजै।[3] मन कपरा इन्ह सभ कंह दीजै ॥३२६॥[4]
जाति पाँति कुल नाहि बड़ाई।[5] अवल करों जिव जग मुक्ताई ॥३२७॥[6]
साहब सुख दिल बहुत बखानी।[7] तुह सुकित छुट सत सहिदानी ॥३२८॥[8]
सहिदान तुम्ह मनसफनारा।[9] करहु बख्शाही दीन करारा ॥३२९॥[10]
मसल बख्शाही दीन के दीन्हा। सत बचन निस्चै लिखि लीन्हा ॥३३०॥

दोहा

सतरहु सहिजवा दीप मह[11], सभै तबीन तोहार।[12]
छापा एहि बताइहो[13], बोले बचन करार ॥२३॥[14]

चौपाई

मन कपरा तुम देहि भेजाई।[15] जो दाफा सामिल होए जाई ॥३३१॥[16]
जो जिव लागे तुम्ह के नामी।[17] ताकी मेटो नरक की खानी ॥३३२॥[18]
ताहि लेइ छपलोक बसाओ। पुहुप पलंग पर देहि बैसाओ ॥३३३॥[19]
सुख सागर बसा दीप तोहारा। बैठे हंस सुख रंग करारा ॥३३४॥

---

१ (घ) ना = नाहि। (ख) ना = न। (ग) ना = नहि।
२ (क) (ग) भेजहु = भेजो। (ख) तुमहि = तुम्हरी। (घ) तुमहि = तुमरी। (ग) तुमहि = तुहर।
३ (क), (ख) (ग) जमा = जामा।
४ (घ) सभ = सब।
५ (क), (ग) नाहि = नहि।
६ (ग), (घ) जिव जग = जग जीव।
७ (ख) अतिरिक्त पाठ—'साहब बचन'। (ख) साहब = साहेब।
८ (क) (ग) तुह = तुम। (ख) (घ) तुह = तुम्ह।
९ (क) (ख), (ग) तुम्ह = तुम।
१० (क) बख्शाही = बादशाही।
११ (क) (ख), (ग) (घ) सतरहु = सतरह। सम्भवत: (ख) प्रति में 'दीप दीप मह' पाठ है। यहाँ 'क' प्रति का पाठ 'दीप मह'।
१२ (क), (ख), (घ) तबीन = ताबीन।
१३ (क) (ख) (ग) (घ) छापा = छपा।
१४ (ख) बोले = बोलो।
१५ (क) (ख) (ग) (घ) देहि = देवें।
१६ (घ) दाफा = दफा।
१७ (क) (ख), (घ) लागे = लागी। (क), (घ) तुम्ह = तुम। (क) (घ) के = का।
१८ (क) मेटो = मेटे। (क), (घ) नरक = नर्क।
१९ (क), (ख), (ग) (घ) ताहि = तेहि। (ख) बैसाओ = बिठाओ।

मन माना गुरु नर मुनि मोहे ।[1] साधन कारन शिष सब जोहे ॥२१७॥[2]
गुरु नर मुनि भी सब सन्यासी ।[3] मन माया शिष डारे फांसी ॥२१८॥[4]
नाना भांति मोहनि सब भावें । बांधे बेरी सबै नचावै ॥२१९॥[5]
नाना गांठि जतन करि राखै ।[6] पाखंड भेख ध्यान सब भाखै ॥२२०॥[7]
साधन कारन मान सब लागे ।[8] रही मान कबहि नहि त्यागे ॥२२१॥[9]

दोहा

(ऐसो) गुरु ठगोरी जगत महं[10], दिध्या दीन्ह सब ठांव ॥[11]
गुरु शिष्य सब बूड़ि मरे[12], कहां बसे निज गांव ॥२२॥[13]

चौपाई

मायानिधि हम दास गोसांय ।[14] कहौं वचन सुनो एक वाय ॥२२२॥[15]
त्यागौं मान नाना कर ध्याना ।[16] मदन करौं तेरौं जपमाला ॥२२३॥[17]
जिव्हा इंद्री स्वाद सब मारौं ।[18] कामिनि कनक न हाथ पसारौं ॥२२४॥[19]

---

१ (क) मन माना = मनमाना है । (ख), (ग) (घ), (ङ) मोहे = मोहै ।
२ (ग) सब = सब । (क), (ख), (ग) जोहे = जोहै ।
३ (क) (ख), (ग) (ङ) सभे = सबै ।
४ (क) (ख) डारे = डारै ।
५ (क) (ख) भावें = भावै । (ख) नचावै = नचावैं । (ग) (घ), (ङ) सब = सबै ।
६ (क) (ख) (ग) राखै = रहै ।
७ (ग) सब = सब ।
८ (ग) मन = सब ।
९ (क) (ख) (ग) (घ) त्यागे = त्यागै ।
१० (क) ऐसो = ऐसे । (ख), (ग) ठगोरी = ठगउरी । (क) महं = में । (ख), (घ), (ङ) महं = में ।
११ (क) दिध्या = दीक्षा । (ख) दीन्ह = दीन्हि ।
१२ (क) मरे = मरै । (ग) (घ) मरे = मरै ।
१३ (क) (ख) बसे = बसै ।
१४ (घ) गोसांय = गुसांय ।
१५ (क) कहौं = कहो ।
१६ (क) त्यागौं = त्यागो ।
१७ (क) करौं = करो । (क) तेरौं = तजो ।
१८ (क) मारौं = मारो ।
१९ (क) न = ना ।

ना मांगों ना आवों जाई ।[1] जो भेजहु सो तुमहिं सहाई ॥३२५॥[2]
जो दफा संग अमा कीजै ।[3] मन कपरा इन्ह सभ कंह दीजै ॥३२६॥[4]
जाति पांति कुल नाहि बड़ाई ।[5] भवन करों जिव जग मुकुताई ॥३२७॥[6]
साहब सुत रिस बहुत बखानी ।[7] तुह सुकित हहु सत सहिदानी ॥३२८॥[8]
सहिजादा तुम्ह मनसफदारा ।[9] करहु बखाही दीन करारा ॥३२९॥[10]
मसम बखाही दीन कै दीन्हा । सत वचन लिख्यै लिखि लीन्हा ॥३३०॥

दोहा

सतरहु सहिजदा दीप महु[11], सभै तवीन तोहार ।[12]
छापा एहि चलाइहो[13], बोले बचन करार ॥२३॥[14]

चौपाई

मन कपरा हम देहि भेजाई ।[15] जो दाफा सामिल होए जाई ॥३३१॥[16]
जो जिव लागे तुम्ह के बानी ।[17] ताकी मेटो नरक की खानी ॥३३२॥[18]
ताहि लेइ छपलोक बसावो । पुहुप पलंग पर तेहि बैसावो ॥३३३॥[19]
सुख सागर बसा दीप तोहारा । बैठे हंस सुख रंग करारा ॥३३४॥

---

१ (घ) ना = नाहि । (ख) ना = न । (ग) ना = नहि ।
२ (क) (ख) भेजहु = भेजो । (ख) तुमहिं = तुम्हरी । (ग) तुमहि = तुमरी । (घ) तुमहिं = तुहर ।
३ (क), (ख) (ग) अमा = आमा ।
४ (घ) इन्ह = इन ।
५ (क), (ग) नाहि = नहि ।
६ (ग), (घ) जिव जग = जग जीव ।
७ (ख) अतिरिक्त पाठ—'साहब वचन' । (ख) साहब = साहेब ।
८ (क) (ग) तुह = तुम । (ख) (घ) तुह = तुम्ह ।
९ (क) (ख) (ग) तुम्ह = तुम ।
१० (क) बखाही = बारबाही ।
११ (क) (ख), (ग), (घ) सतरहु = सतरह । स्वीकृत (क) प्रति में 'दीप दीप महु' पाठ है । यहाँ 'क' प्रति का पाठ दीप महु ।
१२ (क), (ख) (घ) तवीन = तावीन ।
१३ (क) (ख) (ग) (घ) छापा = छपा ।
१४ (ख) बोले = बोलो ।
१५ (क) (ख), (ग) (घ) देहि = देवें ।
१६ (ग) दाफा = दफा ।
१७ (क) (ख), (घ) लागे = लागी । (क) (ग) तुम्ह = तुम । (क) (घ) के = कर
१८ (क) मेटो = मेटो । (क), (घ) नरक = नर्क ।
१९ (क), (ख), (ग) (घ) ताहि = तेहि । (क) बैसावो = बिठावो ।

पुहुप पवन करहिं सुख चैना।[1] अति बेसास सुख प्रगट बना ॥३३५॥[2]
तहाँ न राव न रंक की बानी।[3] एकै रूप नाम सम मानी ॥३३६॥[4]
चाँद सुरुज नहिं करहिं निमेरा।[5] एकै रूप रहित सह फेरा ॥३३७॥
पवन संचार तहाँ नहिं आई।[6] अघ बास सत सन छाई ॥३३८॥

दोहा

प्रकसन सुख सहर में[7], हंस करहिं सुख राज।
आवागमन रहित भयो, अटल अमर सम काज ॥२३॥[8]

चौपाई

दयानिधि दाया बहु कीन्हा। जा छिन दिल में सो सब दीन्हा ॥३३९॥[9]
साहिब कहाँ कहाँ निजु बना।[10] बेदमति (अगम) देखा निजु नना ॥३४०॥[11]
बेदमति किछु बरनि ना जाई।[12] ग्यानी थकि थकि अंत ना पाई ॥३४१॥[13]
चारि बेद कथहिं बिस्तारा। थकि थकि नाहीं पाइन्ह पारा ॥३४२॥[14]
सेस सहस मुख कहो जो माना।[15] ताकर आदि वह नहिं जाना ॥३४३॥[16]
हारि हारि सब बोलहिं बानी।[17] नाहीं रेख रूप सहिदानी ॥३४४॥
फिरि पटतर कछु बोलहिं बानी।[18] टेनी रूप जोति सहिदानी ॥३४५॥

---

१ (क), (ग) पुहुप पवन नर करहीं सुखचैना।
२ (ख) सुख = सुख।
३ (क) (ख), (ग), (घ) राव न रंक = राव रंक।
४ (घ) सम = सब।
५ (क), (ग) सुरुज = सुर्ज। (ख) सुरुज = सुरज।
६ (क) नहिं = नहि।
७ (क), (ग) प्रकसन = प्रेसन। (क) में = मे।
८ (क) (ख), (ग), (घ) काज = कारज। (ग) सम = सब।
९ (घ) किछु = कछु। (ख) में = मै।
१० (क) बेदमति = निरत। (क) कहाँ = कहाँ। (क), (ग) कहाँ = कहीं।
११ (क), (ख), (घ) बेदमति देखा निजु नैना।
१२ (घ) किछु = कछु। (क), (ख) ना = न।
१३ (क) (ख) (ग), (घ) ना = न
१४ (ख) (ग), (घ) पाइन्ह = पाइन्हि।
१५ (क) सेस सहस मुख कथि जो माना। (ख) (ग), (घ) सेस सहस मुख कथि जो माना।
१६ (क) कहा = कही।
१७ (क) सब = सब।
१८ (क), (ख), (ग) (घ) फिरि = फेरि।

जाकर आदि अंत सम रचना ।[1] ताके टेमी अस बोलहिं बचना ॥३४६॥[2]

दोहा

चाँद सूर्ज तरेगन[3], एता जिव बिस्तार ।
ताके रुम रेखा महँ[4], विधि द्रिस्टि उजिआर ॥२५॥

चौपाई[5]

ग्यानी सो जो धारा बूझै । आदि अंत अगम सभ सूझै ॥३४७॥
पारब्रह्म जाके सम भाखै । अमर काया महिं जुग जुग राखै ॥३४८॥[6]
ग्यानी होए सो करै बिचार ।[7] पारब्रह्म है अपरंपार ॥३४९॥[8]
निर्मल काया चोए पुर्ख पुराना ।[9] संत समुझि के करहु बखाना ॥३५०॥[10]
कवने जोग जुगुति से पाव ।[11] कवन ध्यान सौं निसिदिन लावै ॥३५१॥[12]
कवन भजन मुख टेरि सुनावै । कवन सुरति सतलोक सिधावै ॥३५२॥
कवन बरत करै जिव आली ।[13] जासे मेटे नरक की खानी ॥३५३॥[14]
जाते मुक्ति पदारथ पावै । एहि संसार बहुरि नहिं आवै ॥३५४॥[15]
सुनहु संत मैं करौं बखाना ।[16] समुझहु भेद यह निर्मल ग्याना ॥३५५॥
केतनो कस्ट जो तन महँ देई ।[17] मन मत ध्यान कतनी गहि लेई ॥३५६॥

---

१ (ग) रुम = रुप ।
२ (घ) बचना = बखाना ।
३ (ख), (ग) (घ) सूर्ज = सुरज । (क) तरेगन = तरैगन ।
४ (क) रेखा = रेख ।
५ (क) स्वीकृत प्रति में 'चौपाई' अनुल्लिखित ।
६ (क), (ख) (ग) महिं = सो ।
७ (क) (ख), (ग) करै = करी ।
८ (क), (ख), (ग) (घ) है = हवि ।
९ (क) ३४९—३५० चौपाइयों के बीच अतिरिक्त पाठ—दरिया भाष । (क) (ख) चोए = यह । (ग) चोए = ऊ ।
१० (क), (ख) के = कै ।
११ (ग) कवने = कवन । (क) से = से ।
१२ (ख) (ग), (घ) सौं = से ।
१३ (क) (ख), (ग) करै = करी ।
१४ (क) मेटे = मिटै । (ख) (ग) मेटे = मेटै । (घ) मेटे = मेट ।
१५ (ख) (ग) (घ) संसार = संसार ।
१६ (ग) सुनहु = सुनो । (क) (घ) मैं = मह । (ङ) करौं = करो
१७ (क) (ख) (ग) (घ) केतनो = कतनो । (क) (ख) (ग) महँ = के ।

पुहुप पलंग करहिं सुख सैना ।[1] अति बेलास सुख अभिरत बैना ॥३३५॥[2]
तहां न राव न रंक की बानी ।[3] एकै रूप रासि सम जानी ॥३३६॥[4]
चांद सुरुज नहिं करहिं निमेरा ।[5] एकै रूप उदित भइ फेरा ॥३३७॥
पवन संचार उहां नहिं जाई ।[6] अम बास सेत सम छाई ॥३३८॥

दोहा

ऐहसन सुख सहर में[7] हुस करहिं सुख राज ।
आवागवन रहित भयो अटल अमर सम काज ॥२३॥[8]

चौपाई

दायानिधि दाया बहु कीन्हा । जो किछु दिल में सो सभ दीन्हा ॥३३९॥[9]
तीफित कहां कहाँ निधु बना ।[10] बे कीमति (अगम) देखा नितु नना ॥३४०॥[11]
बेकीमति किछु बरनि ना जाई ।[12] ग्यानी कथि कथि अंत ना पाई ॥३४१॥[13]
चारि बेद कथहिं बिस्तारा । कथि कथि नाहीं पाइन्ह पारा ॥३४२॥[14]
सेष सहस्र मुख कही जो भाना ।[15] ताकर भाव सेहु नहिं जाना ॥३४३॥[16]
हारि हारि सभ बोलहिं बानी ।[17] नाहीं रेख रूप सहिदानी ॥३४४॥
फिरि पटतर कस बोलहिं बानी ।[18] टेमी रूप जोति सहिदानी ॥३४५॥

---

१ (क), (घ) पुहुप पलंग पर करहीं सुखसैना ।
२ (ख) सुख = सुख ।
३ (क) (ख), (ग), (घ) राव न रंक = राव रंक ।
४ (घ) सम = सई ।
५ (क) (ग) सुरुज = सुर्ज । (घ) सुरुज = सुरज ।
६ (क) नहिं = नहि ।
७ (क) (घ) ऐहसन = ऐसन । (क) में = मे ।
८ (क) (ख), (ग), (घ) अटल = अचल । (घ) सम = सुख ।
९ (ग) किछु = कछु । (क) में = मै ।
१० (क) तीफित = सिफत । (क) कहां = काहां । (क), (घ) कहाँ = कहीं ।
११ (क), (ख), (घ) बेकीमति देखा नितु नैना ।
१२ (ग) किछु = कछु । (क), (ख) ना = न ।
१३ (क), (ख) (ग), (घ) ना = न
१४ (ख) (ग), (घ) पाइन्ह = पावहिं ।
१५ (क) सेष सहस मुख कथि जो भानी । (ख) (ग), (घ) सेष सहस मुख कथि जो भाना ।
१६ (क) जाना = जानी ।
१७ (घ) सभ = सब ।
१८ (क), (ख), (ग) (घ) फिरि = फेरि ।

बिना भक्ति कछु काम न आवै ।[1] जन्म जन्म ऐसे बहुडावै ॥३६८॥
के सिरिजा एह तन मन आना ।[3] सिफ्ति करहु निसदिन बिरसाना ॥३६९॥[4]
तन के छूटे टपर करि लीजै ।[5] प्रेम भगति निस्वै दिल दीजै ॥३७०॥[6]
निर्मल ध्यान बूझहु चित लाई ।[7] जाते आवागवन मेटाई ॥३७१॥[8]
करहु भक्ति मर्म सभ झारी ।[9] करम काम निस्वै सभ झारी ॥३७२॥[10]
माया मोह बधु सुत नारी । काटहु बेरि सभ जगत पुकारी ॥३७३॥
माया बिदेह हाथ नहिं आवै । सीस पटकि के समए नसावै ॥३७४॥[11]
जैसे दरपन माह देखावै ।[12] बिरला जन कोइ पारख पावै ॥३७५॥
जैसे चित्र लिखे बहु भांती ।[13] देखत हित लागे बहु पांती ॥३७६॥[14]
महे बिदेह हाथ नहिं आवै ।[15] लालच करिके सभे तरसावै ॥३७७॥[16]
कीन्हहु सत सुकित चित लाई । (जिन्हि) मुकुति पदारथ भेद बताई ॥३७८॥[17]
जिन्हि एह जिव के मूल बताई । तासो प्रेम सुरति लव लाई ॥३७९॥[18]

दोहा

ताके खोजहु ध्यानी, जो सभ के हहि मूल ।
डार पात सभ छोड़िके[19], गहो फेड़ असमूल ॥२७॥

---

१ (क) (ख), (ग) कछु = किछु ।
२ (क) ऐसे = ऐसे । (ख), (ग) ऐसे = अइसे ।
३ (क) (ग) के सिरिजा = के सिर्जा ।
४ (क) (ख) (ग), (घ) बिरसाना = बखाना ।
५ (क) (ग) तनके छूटे = तन छूटे ।
६ (ग) निस्वै = निस्चे ।
७ (क), (ग) बूझहु = बुझो ।
८ (क) जाते = जाती ।
९ (ग) सभ = सब ।
१० (घ) सभ = सब ।
११ (क) के = कै । (क), (ख) (ग) समए = समै । (घ) समए = समै ।
१२ (क) जैसे = जैसे । (ख) (ग) जैसे = जइसे ।
१३ (क) (ख) (ग) जैसे = ज्यों । (घ) जैसे = जो । (क), (ख), (ग) (घ) लिखे = लिखै ।
१४ (क), (ख), लागे = लाग । (ग) लागे = लगे । (घ) लागे = लगै ।
१५ (क), (ख) महे = मही ।
१६ (क), (ख) करिके = करिकै । (क), (ख) (ग), (घ) सभे = सभी ।
१७ (क) (ख) (ग) (घ) (जिन्हि) मुकुति = जिन्हि यह ।
१८ (ख) तासो = तासों । (ख), (ग) तासो = तासे ।
१९ (घ) सभ = सब ।

सहज सुरति मूल से लावै ।[1] ऊअत बइठस द्रिस्टि ठहरावै ॥३५७॥[2]
सहज धुन सुमिरे सो ग्यानी ।[3] प्रेम प्रीति मूल पर ठानी ॥३५८॥
काया बिनाए कहां से राखै ।[4] जोगी जोग काया से भाखै ॥३५९॥[5]
काया अजर केहु की ठहराना ।[6] जोगी जती सब माटी समाना ॥३६०॥[7]
हठ निग्रह जोग संकर (जो) ठाना ।[8] चंतहु काया माहिं ठहराना ॥३६१॥
गोरख जोग काया जो साधा ।[9] हठ निग्रह के आसन बाधा ॥३६२॥[10]
निद्रा साधि पवन जो पीवै ।[11] सो तौ जुग जुग कबहिं न जीवै ॥३६३॥[12]
केते जोगी हठ निग्रह कीन्हा । रज बीद होखे फेरि दीन्हा ॥३६४॥[13]
जो जोइनी मह जनमे भाई ।[14] अजर काया कहु केहु की भाई ॥३६५॥[15]
काया पतन सब की होए जाई । महा महा मुनि गए नसाई ॥३६६॥

साखी

काया पतन सब की भई (सुम) आए गए कइ बार ।[16]
एक अजर सत पुर्ष हहीं, सोई रंग करार ॥२६॥

चौपाई

कहहु भक्ति जीवन है थोरा । मानहु सब्द कहा सुन मोरा ॥३६७॥[17]

---

१ (क), (घ) है = सब ।
२ (ख), (घ) बइठ्ठ = बइठठ ।
३ (क) (ख) धुन = धुन्य । (क) (ख) सुमिरे = सुमिरै ।
४ (क) से = हैं ।
५ (क) (ख), (घ) से = सै ।
६ (क) केहकी = केहि के ।
७ (घ) माटी = मीटी ।
८ (क) जोग = जो । (क) संकर (जो) ठाना = संकर ठाना ।
९ (क) जो = सै ।
१० (क) (ख) (घ) के = कै । (ग) के = करि । (क) आसन = जोग आसन ।
११ (ख) साधि = सधि ।
१२ (क), (ख) (ग) (घ) तौ = तो । (ख) न = नाहीं ।
१३ (क), (ख), (ग) (घ) होखे = होखै । (ख) फेरि = फिरि ।
१४ (क) निम्नलिखित पाठभेद है—
अजर काया कहु केहि की भाई । काया पतन सब की होए जाई ॥
(ख) जो जोइनी = जो जो जाइनी । (घ) मह = में । (ख) जनमे = जन्मे ।
१५ (क) केहु = केही ।
१६ (क), (घ) सुम = सुम्ह । (ख) (ग) कइ = कै ।
१७ (क), (ख), (ग), (घ) सुन = सुनु ।

काया मध द्रिस्टि सब लावै ।[1] गगम सुरति अगम के धावै ॥३१२॥[2]
ब्रम्ह विचार होए उजिआरा । बरे जोति तहं निर्मल तारा ॥३१३॥[3]

दोहा

भंवर गोफा के चीन्हिके[4], बरे कमल उजिआर ।[5]
कहे दरिया ग्यानी होवे[6], (तो) राखे द्रिस्टि करार ॥२८॥

चौपाई

जनम दुरलभ नहिं बारमबारा ।[7] करहु भक्ति निजु नाम पिआरा ॥३१४॥[8]
सतगुर सेवा करो पहचानी ।[9] सुजस गहो जस निर्मल बानी ॥३१५॥[10]
पारस करिके सेवा ठाने ।[11] सांच सब्द मुकुति को जाने ॥३१६॥[12]
चोर साहु चीन्हे चित लाई ।[13] सेवा करे सुरति सब लाई ॥३१७॥[14]
बंदीछोर तुह बंध छोड़ावहु ।[15] आए जगत में जीव मुकुतावहु ॥३१८॥[16]
दयावंत तुम्ह होहु दयाला ।[17] काटहु जम फांस जम जाला ॥३१९॥[18]

---

१ (क) (ख), (ग) मध = मधर ।
२. (क) गगम = आगे । (क) के = कै ।
३ (क) (ख), (ग) बरे = बरै ।
४ (क), (ग) चीन्हिके = चीन्हिए । (ख) चीन्हिके = चीन्हिके ।
५. (ख), (ग) बरे = बरै । (क) कमल = कवल ।
६ (क) (ख), (ग), (घ) होवे = होवै ।
७ (क), (ख), (ग) जनम = जन्म । (क), (ग), (घ) दुरलभ = दुर्लभ ।
(ख) दुरलभ = दुलभ ।
८ (ख) (घ) भक्ति = भगति ।
९. (क) करो = करहु ।
१० (घ) निर्मल = निरमल ।
११ (क), (ख) करिके = करिकै (क) (ख) (घ) ठाने = ठानै ।
१२. (क) (ख), (ग) जाने = जानै ।
१३ (क) चोर साहु के करो निनाई । (ख) चोर साहु का करै निनाई । (ग) चोर साहु चीन्हे चितलाई (घ) चोर साहु के करो निनाई ।
१४ (क) (घ) करे = करै ।
१५. (क) (घ) अतिरिक्त पाठ—बंदी छोर तुम्ह जीव देयाला । संतन्हि केर करो प्रतिपाला ॥
(ग) बंदी छोर तुह जीव दयाला । सतन्ह केर करो प्रतिपाला ॥
१६ (घ) में = मह ।
१७ (ख) तुम्ह = तुह । (ग) तुम्ह = तुम । (क) (ख), (घ) दयाला = देयाला ।
१८ (ग) जम जाला = जंजाला ।

चौपाई

अधम मधिम उत्तिम मूला ।[1] पाखंड कर्म काल सम सूला ॥२८०॥
छव दर्सन छानवैं पखंडा ।[2] तामे जगत भूला नव खंडा ॥२८१॥[3]
छव गुर छव घर छव उपदेसा ।[4] गुर घर एक भेद विसवासा ॥२८२॥[5]
पाखंड छानवे क्रोध जनऊ ।[6] पाखंड कर्म पूजहिं सब देऊ ॥२८३॥[7]
अगिनि पवन पानी परगासा । चांद सुरुज धरती निजु आसा ॥२८४॥[8]
छव दर्सन जगत सब लागे ।[9] पाखंड कर्म समन्हि मिलि आगे ॥२८५॥[10]
छव गुर छव दर्सन सब गावैं ।[11] अगम भेद विरला कोइ पावैं ॥२८६॥
अगम भेद बूझहु रे ग्यानी ।[12] छव के तेजु गहु मुकुति की खानी ॥२८७॥[13]
ई सब अगम पुरुख को छाया ।[14] जुक्ति मुक्ति सब जगत बनाया ॥२८८॥[15]
जोगी जागे जोग बखाना ।[16] पाखंड कर्म सब पढ़हिं पुराना ॥२८९॥[17]
जुक्ति जाने तौ जोगी होई ।[18] चेतनि अम्ह सदा है सोई ॥२९०॥[19]
तन समारि जुक्ति जो राधै ।[20] मन के पीन्हि मूल के साधै ॥२९१॥[21]

---

१ सोरठ (क) प्रति में 'चौपाइ' अनुल्लिखित ।
२ (क) छानवै = छैमानवै ।
३ (क) ताभे = तामे ।
४ (क) गुर = गुरु ।
५. (क) (ग) भेद = भेव ।
६ (क) छानवै = छयानवै । (ख) छानवै = छूटे । (ग), (घ) छानवै = छानवे ।
७ (घ) सब = सभ ।
८. (क) (घ) सुरुज = सुर्ज ।
९. (क) (घ), (ग) लागे = लागे ।
१० (क) समन्हि = सभे । (ख) (घ) समन्हि = सभै ।
११ (क) पाठ में 'सब कोई गावै' है ।
१२. (क) (ग) बूझहु = बूझो ।
१३ (क) छव तजि गहहु मुक्ति की खानी । (ख) (घ) तेजु = तेजि ।
१४ (घ) सब = सभ । (क) (ख), (ग) (घ) पुरुख = पुर्ष ।
१५ (घ) सब = सभ ।
१६ (क), (ख) जागे = जागै ।
१७ (घ) सब = सभ । (क), (घ) पढ़हिं = पढ़ै ।
१८ (क) (ख) (ग) जाने = जानै । (ग) तौ = तब ।
१९. (घ) है = हए ।
२० (ग) राधै = राधे ।
२१ (क) (ख) (घ), (ग) का पाठ 'मन के चीन्हि' स्वीकृत ।

पहिले पुर्ष तब पीछे नारी ।[1] भई जोति तब जगत पसारी ॥४०९॥[2]
पहिले अक्षर तब क्हे में आवे ।[3] होए ग्यान तब जग समुझाव ॥४१०॥

साखी

अक्षर मूल निजु नाम है, जोग जुक्ति परवान ।[4]
चेतनि रहे जीव जानिके[5], मरतो जमके मान ॥३०॥[6]

चौपाई

जो जीव करे नाम कए आसा ।[7] ताके काल ना डारे फासा ॥४११॥[8]
क्यों डारे तौ सेत दोहाई ।[9] जतन करो जिव जम नहिं खाई ॥४१२॥[10]
धन साहब तुह क्रिपानिधाना ।[11] आदि अंत तुहई परवाना ॥४१३॥[12]
देखा मूल डार सभ छाया ।[13] आदि अंत तुह सभ बनाया ॥४१४॥[14]
तुम्हते जमी तुम्हते असमाना ।[15] तुम्हते हद बेहद परवाना ॥४१५॥[16]
तुम्हते चांद सुर्ज अवतारा ।[17] तुम्हते जिव एह जगत पसारा ॥४१६॥[18]

---

१ (क) पहिले = पहिली । (क) पीछे = पीछै ।
२ (ग) तब = भव ।
३ (क) पहिले कह तब अक्षर मे आवै ।
४ (ग) जुक्ति = जुगति ।
५ (क) रहे = रहो । (ख) रहे = रहै ।
६ (ख) (ग) के = के ।
७ (ख) चौपाई के प्रारंभ में अतिरिक्त पाठ—दरिया वचन । साहेब वचन । (क), (ख) (ग) अतिरिक्त पाठ—चौपाई । (क) (ख), (ग) करे = करै । (क) कए = को । (ख) (ग) कए = के । (ग) कए = के ।
८ (क) ताके = ताको । (क) ना = नै । (ग) ना = न । (ग) ताके काल डारे नहिं फांसा ।
९ (क) क्यों = को । (ग) क्यों = कैसी । (क) (ख), (ग) डारे = डारै । (ख) (ग) तौ = तब । (क) सेत = सेव । (ख) सेत = सेतो ।
१ (ख) जम = जम्ह ।
११ (ख) साहब = साहेब । (ख) (ग) तुह = तुम ।
१२ (क) (ख) (ग) तुहई = तुम्हही । (क) तुहई = तुमही ।
१३ (क) डार = डार पात ।
१४ (ग) तुह = तुम ।
१५ (क) ते = तै । (ग) तुम्ह = तुम ।
१६ (ग) तुम्ह = तुम ।
१७ (ग) तुम्ह = तुम ।
१८ (ग) तुह = तुम । (क) तै = तै ।

जमुदीप है काल सनेही ।[1] कठिन काम ब्यापत है देही ॥४००॥[2]
रहे समीर काल सम पासा ।[3] देह भयानक जीव कह त्रासा ॥४०१॥[4]
घट घट खोलै सभे डोलावै ।[5] बाजीगर ज्यों हुकुम चलावै ॥४०२॥
ऐसन सुरति अचेत कै लावै ।[6] अवरि कहन कै अवरि कहावै ॥४०३॥[7]

दोहा

ऐसन जाली जगत मैं[8], डारे फांस अनंत ।[9]
धर्मदास तुम दरस मैं[10], तोरो जम कै दंत ॥२१॥[11]

चौपाई

तब साहब अस बोले बानी ।[12] कहौं भेद सुनो तुम्ह ग्यानी ॥४०४॥[13]
कहौं भेद की करि देखरावो ।[14] आवै सरन ताहि मुकुतावो ॥४०५॥[15]
सभ पर अमल हमारा अहई ।[16] देखत काल कुपित होए रहई ॥४०६॥[17]
आदि अंत हमहीं हहि मूला । अवरि डार हमहीं असथूला ॥४०७॥
पहिले मूल तब पीछे डारा ।[18] भया मूल तब डारहु पसारा ॥४०८॥

---

१ (ख) सनेही = सनैही ।
२. (क) ब्यापत है देही = ब्यापै देही । (ख) ब्यापत है देही = तन ब्यापै देही । (ग) ब्यापत है देही = तन ब्यापत देही । (घ) ब्यापत है देही = ब्यापै देही ।
३ (क) (ख) (घ) रहे = रहै ।
४ (क) (ग) कह = के । (ख) कह = कै । (घ) कह = अस जीव के ।
५. (क) (ख), (घ) सभे = सभै । (ग) सभ = सुधै ।
६ (क) कै = करि ।
७ (क) के = कै ।
८ (क), (ख) मैं = मै ।
९. (क) डारयो फंद अनंत । (ग) डारे = डारै ।
१० (क) (ग) (घ) तुम = तुंह ।
११ (ग) तोरो = तोरहु । (क) कै = को । (ख) के = कै ।
१२. (ख) साहब = साहेब । (ग) (घ) बोले = बोलै ।
१३ (क) कहौं = कहो । (ख) सुनो तुम्ह = सुन तुम्ह ।
१४ (क) कहौं = कहौ ।
१५. (क) आवै सरन सो ताहि मुकुतायो । (ख), (घ) आवै सर्न तेही मुकुतावो । (ग) आवै सरन मे ताहि मुकुतायो ।
१६ (घ) सभ = सब । (क) हमारा = हमारो । (क) अहई = रहइ ।
१७ (क), (ख), (ग) कुपित = कंपित ।
१८ (क) पहिले = पहिलै । (क) पीछे = पीछै ।

करहिं कोलाहल बहुबिधि बानी ।[1] झलकहिं लाल जवाहिर खानी ॥४३०॥[2]
नखसिख सोभा अद्भुत बनाई । निरखत नैन रूप छबि छाई ॥४३१॥[3]
बंदि मगन भए हंस सभ सोभा ।[4] तहां न काम क्रोध मद लोभा ॥४३२॥[5]
चौकी वाला निकट बोलाई ।[6] मंगल रूप कामिनि सभ गाई ॥४३३॥
छापा सनदि देखहिं देहि संगा ।[7] सतगुर छापा असल निजु रंगा ॥४३४॥
चौकी वाला बोले बानी ।[8] जाहु हंस जहवां निजु खानी ॥४३५॥[9]
आगे सहज दीप सो देखा । झलकत पदुम भवर कै रेखा ॥४३६॥[10]
बैसे हंस अर्ध की छाया ।[11] सोभा अगर डाक सम धाया ॥४३७॥[12]
अमित पावन तहां बनाया । अधिक रूप विधि ताहां आया ॥४३८॥
चमके जोति होए उजियारा ।[13] अमित चाखहिं हंस पियारा ॥४३९॥
देखा कौतुक आगे चलि भएऊ ।[14] पुहुप दीप जहवां निरमएऊ ॥४४०॥[15]
पुहुप दीप हंसन्हि कै बासा ।[16] बहुबिधि हंसा करहिं बिलासा ॥४४१॥[17]
पुहुप बेवान छत्र सिर छाजै ।[18] बैठे हंस बहुत सुख राजै ॥४४२॥[19]

---

१ (क) कोलाहल = कुतीहल । (ख) (ग) (घ) कोलाहल = कोताहल ।
२ (क) झलकहिं = झलकै । (घ) झलकहिं = झलके ।
३ (ग) निरखत = देखत । (क) (घ) नैन रूप = रूप नयन ।
४ (क) भए = भौ । (ग) सभ = सब ।
५ (ख) न = ना ।
६ (ख) चौकी = चउकी ।
७ (क) (ख), (ग) (घ) देखि = दीठि ।
८ (घ) चौकी = चउकी । (क), (ख) बोले = बोलै ।
९ (ग) जहवां = जहां ।
१० (ग) कै = के ।
११ (क) बैसे = बैठ । (घ) बैसे = बइठे । (क) (ख) (ग) (घ) अर्ध = अर्घ ।
१२ (घ) सम = सब ।
१३ (क) (ख) चमके = चमकै ।
१४ (क) (ख) (ग), (घ) देखा = देखि । (ख) (घ) कौतुक = कउतुक ।
१५ (घ) जहवां = जहां । (क) (ख), (ग), (घ) निरमएऊ = निर्मएऊ ।
१६ (क), (घ) कै = के ।
१७ (क), (ख) (ग) (घ) बिलासा = बेलासा ।
१८ (क) बेवान = बैवान ।
१९ (ग) बैठे = बइठे । (घ) बैठे = बइठे ।

धन साहब तुह सिरजनिहारा ।[1] करौं अरज सुनो एक बारा ॥४१७॥[2]
जबहीं हंस ध्यान के पावै ।[3] कमनी सुरति सहर के धावै ॥४१८॥[4]
सुनहु संत मैं करौं बखाना ।[5] मूल सब्द है अगम निसाना ॥४१९॥
मूल अक्षर सत है आपा । देखत काल सुरतहि कांपा ॥४२०॥
अमरलोक तीनि लोक ते न्यारा । बुझै भेद जो हंस हमारा ॥४२१॥[6]
उत्तर दिस एक पोथी अहई । चले हंस सुरति करि सहई ॥४२२॥[7]
धरे तेज अति होए उजियारा ।[8] सुमुखि ना लावी काल बेचारा ॥४२३॥[9]
जमुदीप से आगे गएऊ ।[10] झिलमिलि दीप देखत तब भएऊ ॥४२४॥
आगे सरवर अगम गंभीरा । गए हंस ताही के तीरा ॥४२५॥

दोहा

गए हंस सरवर के तीर, निर्मल जल एक रंग ।
झलकत मोती सेत सम, उछलत हरित तरंग ॥३१॥[11]

चौपाई

मान सरोवर मोती खानी ।[12] चुगहिं हंस बोलहिं बहु बानी ॥४२६॥
आगे सिम है पाएर दीपा । निरञ्जन चौकी रहे समीपा ॥४२७॥[13]
पसा हंस तहवां जो जाई ।[14] देखत रूप छवि बरनि न जाई ॥४२८॥[15]
कामिनि सिर सोभित सम संगा ।[16] मानहु सूर्य किरिनि को रंगा ॥४२९॥

---

१ (घ) तुह = तुम । (घ) धन तुह साहब सिर्जनिहारा ।
२ (क) करौं = करौ ।
३ (क), (ख), (ग) (घ) ध्यान = पावन । (क) (ख) के = कै ।
४ (क), (ग) कमनी = कमल । (क के धावै = कै धावै ।
५ (क) करो = करौ ।
६ (क), (ख) (घ) बुझै = बुझै ।
७ (क) चले = चलै ।
८ (क) (ग) धरे = धरै ।
९ (क) (ख), (ग), (घ) लावी = लावहि ।
१० (क) से = है ।
११ (क), (ख), (ग) (घ) उछलत हरित तरंग = उछलत लहरि तरंग ।
१२ (ख) मानसरोवर = मानसरोवर ।
१३ (घ) चौकी = चउकी । (क) (ख) (घ) रहे = रहै ।
१४ (क) पसा = पसै । (घ) पसा = पसै ।
१५ (क), (ख) (ग) (घ) पाठ स्वीकृत ।
१६ (ख) सोभित सम संगा = सोभित संगा ।

चौपाई

अमरपुर तखत के ठाँऊ ।[1] छत्र फिरे कोटिन्ह सिर नाऊँ ॥४४९॥[2]
गए हंस साहब के पासा ।[3] करि सलाम तहँ लेहिं नेवासा ॥४५०॥[4]
तखत सेत सेत सभ छाया ।[5] जहँ ओर बास सुबास सभ भाया ॥४५१॥[6]
अमर अमर सहर्षा होए भाई । आवागवन के सबै मेटाई ॥४५२॥[7]
सांच जाने सो पहुँचे पासा ।[8] मेटि जाए जग जम के त्रासा ॥४५३॥[9]

दोहा

ऐसन सुख सहर में,[10] जो कोइ बूझे आए ।[11]
सतनाम के जानवे,[12] असथिर बैठे जाए ॥३४॥[13]

चौपाई

निर्मल ध्यान बूझहु चित लाई ।[14] तेजहु दुरमति दुरि सभ जाई ॥४५४॥[15]
दुरमति ते ब्रम्ह भौ छीना ।[16] बंधो सँधार जस करे मलीना ॥४५५॥[17]
निमल जल धोवों बहे सुधारा ।[18] ऐसो ध्यान मथहु निजु सारा ॥४५६॥[19]

---

१ (क) के = कै ।
२ (क) फिरे = फिरै । (क) कोटिन्ह = कोटिन्हि ।
३ (ख) साहब = साहेब ।
४ (क) तहँ = तहाँ ।
५ (ग) सभ = सब ।
६ (क) (ग) सभ = सब ।
७ (क) (ग) (घ) के = के ।
८ (क) (ख) (ग) जान = जाने । (क), (ख) (ग) पहुँचे = पहुँचै ।
९ (क) (ग) के = कै ।
१० (ख) (ग) ऐसन = अइसन । (क) में = मैं ।
११ (क) (ख), (ग) बूझे = बुझै ।
१२ (क) (ख) जानवे = जानवै ।
१३ (क) बैठे = बैठी । (ग) बैठे = बइठे ।
१४ (क), (ग) निर्मल = निरमल । (क) (ग) बूझहु = बूझौ ।
१५ (क) (ग) (घ) दुरमति = दुर्मति । (ग) सभ = सब ।
१६ (क), (ग) (घ) दुरमति = दुर्मति । (क) ते = तै । (ख) ते = से । (ख), (ग) भव = भौ ।
१७ (क) सँधार = सेधनार । (क) करे = करै ।
१८ (क) (ख) बहे = बहै । (ग) बहे = बहुत ।
१९ (क), (ख) (ग) (घ) मथहु = माथहु ।

दोहा

देखहिं हंसा प्रेम से[1], सेइ बइसावहिं पास ।[2]
पल बिलंब एहु कीजिए[3], पूछहिं बास सुबास ॥३२॥[4]

चौपाई

अम्रित पोखन पिवहिं अघाई । सोरह भान पुनी छवि छाई ॥४४३॥[5]
आगे हंस गौन जो कीन्हा ।[6] दयादीप तहां मगु दीन्हा ॥४४४॥[7]
कोटि कला तहं होए उजियारा । बैठे हंस सबै सुख सारा ॥४४५॥[8]
पलंग बिछाए सोभन्हि के पासा ।[9] अबिगति भंवर डोलै चहुं पासा ॥४४६॥[10]
पल पल बंदहिं ठाकुर पाऊ । जिन्हि संवारहिं सब्द सुभाऊ ॥४४७॥[11]
बैठे हंस हंसन्हि के पासा ।[12] अम्रित पोखन पाउ सुबासा ॥४४८॥[13]

दोहा

अबिगति रूप अपार है, को बरनै तेहि ठांव ।[14]
सत सब्द पहचानिहें,[15] सोइ बसहिं निजु गांव ॥३३॥[16]

---

१ (ख) हंसा = हंस । (क) से = सो ।
२ (क) सेइ बैठावहि पास । (ख) से पासवहि पास । (ग) से बैठावहि पास । (घ) सेइ पासवहि पास ।
३ (क), (ख) बिलंब = बिलम्ब । (ख) (घ) कीजिए = करिए ।
४ (क), (ख), (ग) पूछहिं = पुछहीं ।
५ (ग) भान = भानु ।
६ (क) (ख), (ग) (घ) गौन = गवन ।
७ (क), (ख), (ग) तहां = तहवां ।
८ (ग) बैठे = बइठे । (घ) सबै = सबै ।
९ (क) सोभन्हि कै = सोभनि के । (ग) सोभन्हि कै = सोभन्ह के । (क) (ख), (ग) (घ) बासा = पासा ।
१० (क), (ख) भंवर = भौंर । (क) डोलै = डोलहिं ।
११ (ख), (ग), (घ) संवारहिं = संवारहिं ।
१२ (ग), (घ) बैठे = बइठे । (क) हंसन्हि = हंसनि ।
१३ (क) अम्रित = अमिरित ।
१४ (क) बरनै = बरनै । (ख) बरनै = बरनै । (क) ठांव = ठाव ।
१५ (क) पहचानिहें = पहचानै । (ख) पहचानिहें = पहचानिहैं । (ग), (घ) पहचानिहें = पहचानिहै ।
१६ (घ) सोइ = सो ।

पहिले सांच तब होए उजियारा । सांच सब्द धरे जग सारा ॥४६७॥[1]
सांचो चांद सूर्ज ध्रुवतारा ।[2] रहनी बेकस होए उजियारा ॥४६८॥
सांच समुद्र सदा भरिपूरा । ऐसो सांच संत होए सूरा ॥४६९॥
कहे दरिया ऐसो सांच सफाई । कवन मलीन करे तेहि भाई ॥४७०॥[3]
सांच सीस सांचो सो लागा ।[4] कहें दरिया कोइ संत सुभागा ॥४७१॥[5]
सांचा सुमति कुमति के मारे ।[6] रहे सांच कुमति दुरि डारे ॥४७२॥[7]
होए सुबुधि कुबुधि के नासा ।[8] काल कुबुधि न आवै पासा ॥४७३॥[9]
गूंगा होए मीठा सो पावे ।[10] आपु चख फेरि अवरि चखावै ॥४७४॥[11]

दोहा

पछी सुआ रोगी हुआ, बिनु बैरी हुआ बंद ।[12]
करु सेवा सतगुर की,[13] काटि कर्म निर्द्वंद ॥३६॥[14]

चौपाई

करु सेवा सत संगति सरना । मेटे जग में जरा मरना ॥४७५॥[15]
ज्यों मीसे सतसंग सुभागा ।[16] होए बिबेक भक्ति (भाव) बएरागा ॥४७६॥[17]

---

१ (क) धरे = धरै ।
२ (ख) (ग) (घ) सूर्ज = सूरज ।
३ (क) (ख), (ग), (घ) प्रतियों में पठित 'मलीन' पाठ स्वीकृत । स्वीकृत प्रति में 'मिले न' पाठ है ।
४ (क) (ख) सांच = सांचो । (ख) सांचो = सांचा । (ग), (घ) सो = से ।
५ (क) कोइ = सो । (ख), (घ) कोइ = कोई ।
६ (क), (ख), (ग), (घ) सुमति = सुमत । (क) (ख) के = कै । (क) (ख), (घ) मारे = मारै ।
७ (क) (ख) (घ) रहे = रहै । (ख) कुमति = कुरमति । (घ) कुमति = कुरमित । (क) डारे = डारै ।
८ (क), (ख) के = कै ।
९ (क) (ख), (ग) (घ) न = ना ।
१० (क) गूंगा = गौंगा ।
११ (ख) (ग) फेरि = फिरि
१२ (क) बेरी = बैरी ।
१३ (ग) की = को ।
१४ (ख), (ग) कर्म = करम । (क) निर्द्वंद = नीदंद ।
१५ (क) में पठित अर्द्धाली 'मेटै जग में जरा अरु मरना' स्वीकृत । स्वीकृत (ख) प्रति में 'मेटे जगत में जरा मरना' मुद्रित पाठ है ।
१६ (क) ज्यों = ज्यों । (क) (घ) मीसे = मिसै ।
१७ (ख), (घ) बएरागा = बैरागा ।

पहिले ग्यान तब पाछे मुक्ती ।[१] पाछे जोग है पहिले मुक्ती ॥४५७॥[२]
पहिले कनक तब गहना होई ।[३] पेन्हि सिंगार कामिनि रहे सोई ॥४५८॥[४]
पहिले सेज तब पीछे सएना ।[५] उठी प्रात मुख मीजै नएना ॥४५९॥[६]
पहिले भूख तब पीछे खाव ।[७] पहिल राग तब पीछे गाव ॥४६०॥[८]
पहिले पुहुप तब भंवरा धाव ।[९] पहिले फूल बास तब पावै ॥४६१॥[१०]
पहिले जल पृथुमी में धाव ।[११] होए अंकुर बीज जनमाव ॥४६२॥[१२]
पहिले मकस्द तब कहे में धाव ।[१३] होए ग्यान तब जग समुझावै ॥४६३॥
पहिले क्रिमि तब कोसा होई । अपने आपु बनावै सोई ॥४६४॥
तैसे ब्रम्ह माया के कीन्हा । महल बनाए रहे रंग भीन्हा ॥४६५॥[१४]

दोहा

आपन ब्रम्ह बिचारि के[१५] मजहु सो निर्मल ग्यान ।[१६]
पहिले अपने दास होए,[१७] पीछे संत सुजान ॥३५॥[१८]

चौपाई

पहिले भक्ति प्रेम की बानी ।[१९] करे सुरति मिलै तेहि ग्यानी ॥४६६॥[२०]

---

१ (क) पहिले = पहिले ।
२ (घ) पाछे = पीछे । (क) पहिले = पहिले ।
३ (क) पहिले = पहिले ।
४ (क), (ख) (ग) (घ) रहे = रहु ।
५ (क) (ग) (घ) पीछे = पीछे । (क), (ख) (घ) सएना = सैना ।
६ (क) मीजै = मीजैउ । (क) (ख) (ग) नएना = नैना ।
७ (क), (ग) पीछे = पीछै ।
८ (क) पहिले = पहिले । (क), (ग) पीछे = पीछे । (घ) पीछे = पीछै ।
९ (क) पहिले = पहिले ।
१० (क) पहिले = पहिले ।
११ (क) पहिले = पहिले । (क) (ग) (घ) में = पर ।
१२ (क) (घ) बीज = तब बीज ।
१३ (क) पहिले मकस्द तब मकस्द में आवै ।
१४ (क) (ख) रहे = होए । (ख) रहे = रहै । (घ) भीन्हा = भीना ।
१५ (क) (ख) बिचारि के = बिचारि कै ।
१६ (क) मजहु = मजो । (क) निर्मल = निरमल ।
१७ (क) पहिले = पहिले ।
१८ (क) पीछे = तब पीछे ।
१९ (क) पहिले = पहिले ।
२० (क) (घ) करे = करै । (क) (ग) (घ) मिलै = मिलै ।

जो कोइ पढ़ै विवेक करी, सुनै सर्वम चित लाए ।
सो चित भ्रम से बाचिहे, सतनाम गुन गाए ॥३९॥
समत अठारह सै तैंतीस, गयो पुरुष के पास ।
जो जन सब्द विवेकिया मेटि जाए जमत्रास ॥४०॥
माघो बदी चौथ दिन, गवन कियो सतलोक ।
जो जन समुझि बिचारही, मेटै सकल सम सोक ॥४१॥
हीरामनि निजदास है, सब दासन्ह को दास ।
सतगुर सो परचे भई, बिगसा प्रेम प्रगास ॥४२॥

(ग) ग्रन्थ संपूरन भक्ति हेतु साखी ४९ चौपाई : कमा : चार सै (७०४७४) सन् १२८६ साल जिरल पख कातिक रोज बुध के तैयार हुआ मनपुरा मठ पर लिखा पढ़ना सब्जे सिद्धि दस्खत हीरादास के । [४७४ संख्या अनुसंधान का विषय है] ।

(घ) संमत १८४२ साल सभै नाम जेठ बदी नमी के ग्रंथ तयार भइल मकान पर धरकंधा चौरा के धाम [illegible] भोजपुर परगने [illegible] मौजे धरकंधा तरत दरिया साहब का ये मकाम समुझि लेना दसखत अमरदास दास फकीर दरिया साहब का जाने जो सरकार मे जिहरत फकीर हुए है सो होंइगे सो सब से मतलाम पंडित जन से बिनती मोरि टूटल अक्षर जोरे जोरि ।

नदी मिलै सलिता में आई ।[1] खारो जल संघति सो पाई ॥४७७॥[2]
पारस मूल सब्द जो पावै ।[3] चकमक चित्त चुमुकि सो लावै ॥४७८॥[4]

दोहा

मंन पवना का साधिऐ,[5] साधो सब्दहि सार ।[6]
मूल प्रकह् में गमि करो,[7] मोती चना पसार ॥३७॥
दरिया अगम गंभीर है,[8] लाल रतन की खानि ।
जो मीलै जन जौहरी, लेहि सब्द पहचानि ॥३८॥

ग्रथ संपूरन भक्ति हेतु महल सो सही भाखल दरिया साहब मिसल महल दिन सोमार के दसखत जैरामदास मोकरामदास जो देखा सो लिखा मम दोस ना दीए तु सब साधुन के सत्तनाम ।[9]

---

१ (घ) मैं = मई ।
२. (ख) (ग) (घ) सो = से ।
३ (घ) जो = चो । (ख) जो = से ।
४ (क) सो = चित ।
५. (१), (घ) का = के । (क) (ख), (ग) साधिऐ = साधिए ।
(घ) अतिरिक्त पाठ—
हीरामनि निहु दास है सब दासनि को दास ।
सतगुर से परचै भई, मिलता प्रेम प्रगास ॥
स्पष्टत्व प्रति में इस दोहे से ग्रन्थ की समाप्ति हुई है ।
६ (घ) सार = बार ।
७ (घ) प्रकह = प्रकट ।
८ (क), (ख) (ग) (घ) प्रतियों में साखी-संख्या ३४ से ३३ तक की पंक्तियाँ ग्रंथ के अन्त में हैं ।
९. (क) ग्रथ भक्ति हेतु सम्पूरन जो अक्षर सभो देखा सो लिखा साधु संगत सीख सो मीनती मोरी चुक्त अक्षर मात्राहीन पढ़ब सब जोरि ग्रथ भगति हेतु लिखल तइयार भेल सावन सुदी सतमी रोज सुकर बेर भरत दिन होते अक्षन दरिया पंथी साधु को सीख को सतनाम सतनाम पहुँचे तारीख १२ सावन सन् १२६६ साल फसली ।
(ख) ग्रंथ संपूरन भक्ति हेतु हुआ इग्यारिसाली संवत १८६२ साल मिति भादो सुदि ता० चौथी ४ वार बुध के ग्रथ लीखल तेयार हुआ महुकपुर मे भाले का मकान पर दसखत फिरंगमरदाम दरिया साहेब के फकीर दसतखे साहेब बखतदासजी शाहाबाद भोजपुर परगने धमारी तपे बीसी मौजे धरकंधा तखत चौरा दरिया साहब का समुझि सेवा साहब के सातनाम कोर्निसि सभ गुन अदब अदाब सें तखत चौरा पर सलाम कोर्निसि अदब अदाब सें सब सतगुरु से के सतनाम सतनाम सतनाम ।

ब्रह्मविवेक

दूरि कहाँ तो कहि नहिं जाई ।[1] सुरतिवंत के निकट है भाई ॥१०॥[2]
निकट रहे सो लखि नहिं पावै ।[3] अगम ध्यान गमी सो पावै ॥११॥
सत्त पुरुष निःअच्छ निरबाना । निःकेवल निरलेप है ध्याना ॥१२॥[4]
बिना विवेक भेद नहिं पावै । करे विवेक परख चित लावै ॥१३॥[5]

साखी

सतगुरु सत्त सुगंध रस, परिमल पारस सार ।
तन की तपत सब दुरि मिटे[6] जग जिव होए निनार ॥२॥[7]

चौपाई

अम्रित नाम भुवन निमेरा ।[8] बिना विवेक भेख बहुतेरा ॥१४॥
सत सुक्रित जो करे बखानी ।[9] खुले सुपट पुहुप की खानी ॥१५॥[10]
चेतो जस कमल भँवर रस लोभा । रहे समीप जाए चित चोभा ॥१६॥[11]
भँवर नाम कोए करे न पारा ।[12] मध्य निःअच्छ कोए पुरुष निनारा ॥१७॥
अम्रित सुधा प्रेम रस पाई । मन मोतिक के मूल भुलाई ॥१८॥[13]
दुर्मति देखि सुमति रस बैना । निरगुन निरखि नाम सुख चैना ॥१९॥[14]
रूप रेख उदित उजियारा । अम्रित झरे सो निर्गुन सारा ॥२०॥
खुले कमल त्रिपुटि महँ देखा ।[15] अगम रूप एह भेद बिसेखा ॥२१॥

---

१ (क) 'दूर कहाँ तो कहि नहिं जाई ।' (ग) तो = तौ ।
२ (ख) वंत = मंत ।
३ (क), (ख), (ग) रहे = रहै ।
४ (ख) है = मह ।
५ (क) (ख), (ग) करे = करै ।
६ (क) 'तन की तपत दुरि सब मेटै ।' (ख) 'तन की तपत मेटै सब ।' (ग) 'तन की तपत सब दुरि मेटै ।'
७ (ख) होए = रही ।
८ (ग) निमेरा = निबेरा ।
९ (क) (ग) करे = करै ।
१० (क) (ख) (ग) खुले = खुलै । (ग) (घ) खानी = ग्रानी ।
११ (ग) जाए = ताहि ।
१२ (ग) करे = करै ।
१३ (ग) के = कहि ।
१४ (क) निरखि = निरखेव ।
१५ (क) 'खुले त्रिपुटि कमल में देखा' । (ख) (ग) खुले = [redacted] । (ग) (घ) महँ = में ।

सत्तनाम

अथ ब्रह्म विवेक मासल दरिया साहब

साखी[1]

ब्रह्म विवेक ग्यान एह, स्रोता सुमति सुधार ।[2]
ग्यानी समुझि विचारहीं, उतरहिं भौ जल पार ॥१॥[3]

चौपाई[4]

आदि अंत मधी रचि राखा ।[5] सुमति सार ग्यान एहु भाखा ॥१॥
जल अरु धरती पवन अरु पानी । आदि अंत है सत्त सहिदानी ॥२॥[6]
पूरन ब्रह्म पुरान बखाना ।[7] सिव सनकादि आदि नहिं जाना ॥३॥[8]
पुर्ष पुरान सोए हहि अबिनासी । जाको काया काल नहिं ग्रासी ॥४॥[9]
ताकी ब्रह्म है पिंड पुराना ।[10] उदित कला जग रची निसाना ॥५॥
एक निरंजन करहिं बिचारा ।[11] चतुरानन सो पाव न पारा ॥६॥
सत कहा झूठ जनि जान । सतगुर सत्त खोजि मनमान ॥७॥[12]
ह्रिदय कमल यह नाम समीपा ।[13] अगम गमी हुए कमल अनूपा ॥८॥
अहै बेअंत बेचीमति करारा । जिंदा नाम है अमर पिआरा ॥९॥

---

१ (क) सत्तनाम अथ ब्रह्म विवेक मासल दरिया साहब मुक्तिदाता सतधर्म सतगुर बंदी छोर हंस उबारन नाम निसान मही साखी । (ग) सत्तनाम—बेबाहा साहब प्रकटित दरिया साहब मरण ब्रह्म विवेक मासल साखी । (घ) सत्तनाम—अथ ब्रह्म विवेक मासल दरिया साहब मुकुति के दाता हंस उबारन साखी ।

२. (क) सुधार = सार ।

३ (क), (घ) भौ = भव ।

४ (ग) में अपठित है ।

५. (क) मधी = मध ।

६ (क) (घ) अंत है = अंत ।

७ (क), (घ) बखाना = बखानी ।

८. (क) (घ) जाना = जानी ।

९. (क) ग्रासी = गासी ।

१० (घ) (घ) ताकी = ताके ।

११ (क) (ग) (घ) करहि = करै ।

१२. (क) (घ) सतगुर खोजि सत मन मानी ।

१३ (क) यह = एहे ।

कर्म अनेक कपट का मूला । अटपट ग्यान डिंभ धरि फूला ॥३२॥[1]
जौं लगि सुच्छम भेद नहिं जाना ।[2] पंडित पढ़िके गरभ भुलाना ॥३३॥[3]

साखी

सुच्छम भेद निजु ग्यान है,[4] चारि वेद को मूल ।[5]
कहैं दरिया मगु साफ है, पंडित ताहि न सूल ॥४॥

चौपाई

पढ़े गुने कछु करि ले साजा । खोजु मुकुति लेजु पाखंड काजा ॥३४॥
पाखंड भगति जीव के नासा ।[6] आए जीव काल के ग्रासा ॥३५॥
जौं लगि सत्त संदेस न पावै ।[7] तौं लगि जीव लोक नहिं आवै ॥३६॥
जब लागि सतगुर मिलै न ग्यानी । तब लागि कमल न बिगसे बानी ॥३७॥
सूर्ज तेज कमल में आवै ।[8] दरसन देखि कमल बिगसावै ॥३८॥
कहैं दरिया कछु सब्द बिबेका । अस्टदल कमल सुरति निजु देखा ॥३९॥[9]
सत्त सुक्रित एह मुकुति बखाना ।[10] संत समुझि के सुरति समाना ॥४०॥[11]
सहज जोग निजु सब्द बिबेका । निरच्छर नाम सुरति सत देखा ॥४१॥[12]
बिगसे कमल जो अम्रित बानी ।[13] खुले सुघट पुहुप की खानी ॥४२॥[14]
अखंडित ब्रह्म ग्यान नहिं डोला ।[15] जोग जुगुति सब खंड जो खोला ॥४३॥[16]

---

१ (ख) डिंभ = डिंभि ।
२. (क) नहिं = ना ।
३ (क) (ख) पढ़ि पंडित का गर्भ भुलाना । (क) (ग) (घ) गर्भ = पर्भ ।
४ (क) ग्यान = सार ।
५. (क), (ख), (घ) को = का ।
६ (ख) (घ) के = कर ।
७ (क) संदेस = सब्द ।
८ (ख), (घ) सूर्ज = सुरज । (क) (घ) में = मह ।
९. (क) सुरति निजु = सुरति सत ।
१० (क) (ख) बखाना = बखानी ।
११ (क), (ख) समाना = समानी ।
१२ (क) सत = मह ।
१३ (क) जो = से ।
१४ (क) सुघट = सुघाट ।
१५. (क) ग्यान = स्वामी ।
१६ (क) खंडजो = कहहि ।

ताके कहे बेचून चउगूना ।[1] रूप रेख नहिं अहै नमूना ॥२२॥[2]
नर के रूप जो नख सिख दीन्हा ।[3] एता रूप जगत रचि लीन्हा ॥२३॥

साखी

जल थल धरती पवन अरु पानी,[4] चांद सूरज निशु वास ।
ताके रूप रेखा सब कहहीं,[5] पूर्ब के कर्यहि निरास ॥२॥[6]

चौपाई

भये निरास आस कहा पावै । बिना ठवर कहां ठवर बतावै ॥२४॥
भरमि भरमि फिरि भवजल आवै ।[7] बिनु सतगुर कोइ मुकुति न पावै ॥२५॥[8]
चारि बरन मुख धरिहैं देहा । मारि मारि तन करिहैं लेहा ॥२६॥[9]
बहुत कष्ट तन सहहीं भारी ।[10] फेरि फेरि देहि गर्भ महं डारी ॥२७॥[11]
कर्यहि के गरभे होए बिनासा ।[12] फिरि फिरि जन्म काम के आसा ॥२८॥[13]
तीरथ बरत सब करे बखानी ।[14] जीव के दरद बुझे नहिं प्रानी ॥२९॥[15]
गुर नहिं कीन्हो करी बिबेका । बिना बिबेक कहु कौने लेखा ॥३०॥[16]
देह चिन्हि गुर कर्यहि बखानी ।[17] भीतर भूरि भरम की खानी ॥३१॥[18]

---

१ (क), (ग), (घ) चउगूना = चौगूना ।
२ (क) नहिं = ना ।
३ (क) जो = जे । (ग) 'नर के रूप नख सिख जा दीन्हा ।'
४ (क) पवन अरु पानी = पवन है । (ग) पवन अरु पानी = पवन अवर पानी ।
५ (क) 'ताके रेख रूप है ।' (ग) 'ता केर रूप रेखा है । (घ) सब = सम ।
६ (ग) 'पुरुष कर्ये निराश । (घ) पुर्ब के कर्ये निरास ।'
७ (घ) फिरि = फेरि ।
८ (क) 'बिनु सतगुर को मुक्ति बतावै ।'
९ (क) (ग), (घ) धरिहैं = धरिहै ।
१० (क), (ग) (घ) सहहीं = सहिहैं ।
११ (क) देहि = देत ।
१२ (क), (ग) गरभे = गरभ ।
१३ (ग) जन्म = जन्म होए ।
१४ (क) (ग) करे = करै ।
१५ (ग) के = कै । (घ) क = कर । (क) (ग) (घ) बुझे = बुझै ।
१६ (क), (ग), (घ) कौन = कवन ।
१७ (क) देह चीन्हि = चीन्हि ।
१८ (क), (ग) (घ) भूरि = भरी ।

सहज सोक छस सोक सो पावै ।[१] पुहुप पलग पर सेव बछाव ॥५५॥[२]
तहां किसान करे नहिं खेती ।[३] भोजन पोसन पावहिं सेती ॥५६॥
तहां न बीमि सेह कलसेसा । चांद सूर्य नाहिं पोही वेसा ॥५७॥
तहां ना बाए मनस परगासा । तहां ना नास कुबुधि के पासा ॥५८॥
तहां ना होखे सोग संतापा ।[४] पूरन प्रान तहां मापे मापा ॥५९॥[५]
मनि कैलास तहां सीतल पानी ।[६] माथ सरू पुहुप के खानी ॥६०॥[७]

साखी

सो मगु परबत पार है, सत सुमिरत है सार ।[८]
कहें दरिया सतगुरु मिले, होखे मुकुति करार ॥५॥

चौपाई

पश्चिम पुरब काल कै मूला ।[९] उत्तर सरव कंवलदल फूला ॥६१॥
उत्तर मधे बिन्ध है सारा ।[१०] बुझे भेद जो हंस हमारा ॥६२॥[११]
करे गमी मूल कहं देसा ।[१२] सेत सदा तहवां गमि पेसा ॥६३॥[१३]
छापा सनदि गोप करि राखा ।[१४] जोग जुगुति मन्त्रित रस चाखा ॥६४॥
देवा देह त्रिगुन है फंदा ।[१५] तेहि मनितर है निरदंदा ॥६५॥[१६]
सतनाम सब को सिरताजा ।[१७] मावी मत मधी है छापा ॥६६॥[१८]

---

१ (क) (ग) सहज सोक = सहज खेम ।
२ (क), (ग) सेव = सेव । (घ) सेव = सेज ।
३ (क) (ग), (घ) करे = करै ।
४ (ग) होखे = होए ।
५ (ग), (घ) मापे = मापहि ।
६ (घ) सीतल = सीतलि ।
७ (क) पुहुप = सोभा । (क) (ग) (घ) के = की । (क), (ग), (घ) खानी = खानी ।
८ (क) (घ) सत सुमिरत = सत सुरति ।
९ (घ) पश्चिम पुरब = पूरब पश्चिम । (क) कै = के । (ग) कै = का । (घ) कै = कर ।
१० (घ) बिन्ध = बिरीछ ।
११ (क) जो = को ।
१२ (क) कह = के ।
१३ (घ) तहवां = तहां ।
१४ (घ) गोप करि = गुप्त कै ।
१५ (क) त्रिगुन है = है त्रिगुन । (ग) (घ) त्रिगुन है = त्रिगुन फंदा ।
१६ (ग) मनितर = मनंतर ।
१७ (क) (ग), (घ) समझे = समझो ।
१८ (क) मधी = मध । (ग) मधी = मध्य ।

द्रिस्टि देखि के करे विचारा ।[1] ग्यानी समुझि के उतरहिं पारा ॥४४॥[2]

सास्री

जो दिल दया दरद बसे, लगे सुरति सर ताहि ।[3]
पुहुप बास सुगंध रस,[4] तिसे बकार न माहि ॥५॥[5]

चौपाई

जो नर देखिहि पाखंड कम्मा ।[6] पाखंड तेजि करहिं निजु धरम्मा ॥४५॥[7]
जो जन सुरति सनमुख राखा । अम्रित नाम प्रेम रस चाखा ॥४६॥
करे विचार सतसंग विवेका ।[8] निगुन तेजि नाम सत देखा ॥४७॥
सो जन सीतल सब्द बखाना । तेजि बिखै रस अम्रित पाना ॥४८॥
सो जन माया दखि बिलाव ।[9] जो मथनी महि घीत बिलोवै ॥४९॥[10]
सुमन बचन सुगंध नेवासा ।[11] सो जन बसहिं दयानिधि पासा ॥५०॥
सतगुर बचन करहिं परवाना । रहहिं विवेक भेद रस ग्याना ॥५१॥[12]
कर भगति सब कर्म बिगोई ।[13] पर आतम दया दरद जेहि होई ॥५२॥
जिभ्या स्वाद इंद्री रस माता ।[14] तेजे भोग कर्म सब काता ॥५३॥[15]
निसदिन जोग जुगुति सत बानी । सहजहिं मेटे नरक की खानी ॥५४॥

---

१ (क), (ग), (घ) देखिहे = देखिहै ।
२. (क) (घ) उतरहिं पारा = होए निनारा ।
३ (क) बसे = बसै । लगे = लागही । (ग) लागै सुमति सर ताहि । (घ) बसे सुमति सर ताहि ।
४ (ग) पुहुप सुमेध सुबास रस ।
५. (घ), (ङ) बेकार = बिकार ।
६. (क), (घ) नर = जन ।
७ (क), (घ) करहिं = करै ।
८ (ग) करे बिचार = करहि बिचार ।
९. (क), (ग) (घ) सो जन = जो जन ।
१० (घ) जो = ज्यों ।
११ (क), (ग), (घ) नेवासा = सुबासा ।
१२. (क) रहहिं = करहिं ।
१३ (क) (ग) करे = करै । (क) (ग) (घ) सब = सभ ।
१४ (क) स्वाद इंद्री = स्वाद जो इंद्री ।
१५ (क) (घ) तेजे = तेजै । (ग) तेजे = तेती । (क) भोग = भर्म । (क) (ग), (घ) सब = सभ ।

जौं लगि चंदन रगरि ना लावै । कैसे परपित अंग चढ़ावै ॥८२॥
जौ लगि हीरा ना हने निनाई ।[1] खरा खोटा कछु कैसे बुझाई ॥८३॥[2]
जौं लगि चांदी ताव ना दीजै । तौं लगि मोल जगत ना लीजै ॥८४॥[3]
कहैं दरिया निजु सब्द है धारा । छुटि गौ तिमिरि भयो उजियारा ॥८५॥[4]
मोती पारख सब कोइ जाना ।[5] हीरा पारख सब जगत बखाना ॥८६॥[6]
कंचन पारख करे बनाई ।[7] चांदी पारख सब जग भाई ॥८७॥
अवरि नग सब करे बखाना । जवाहर जाहिर सब जग जाना ॥८८॥
सतगुर पारख बिरले केहु जाना । जाके सुरति सांच है ग्याना ॥८९॥
सत्त रहनि सत करे बनाई । मुकुति महातम जो जन पाई ॥९०॥
सो हीरा है अमल करारा । अनबधित जग में उजियारा ॥९१॥
ताके संसे काल न आवै ।[8] अगम निगम मूल गमि पावै ॥९२॥
हरि भगवन्हि जो ग्यान बखाना ।[9] त्रिगुन फंद तेहु नहि जाना ॥९३॥[10]
मन बंदहि फिरि निरहि जाई ।[11] सत करता मन के ठकुराई ॥९४॥[12]
मनही जोलता ब्रह्म बखाना । मनहीं मन सुमिरन जग ठाना ॥९५॥[13]
सत पुर्स जोए मारुहि भइई ।[14] दूजे माया निरंजन कहई ॥९६॥[15]
तीजे जोलता ब्रह्म बिचारा । सुक्खित अंस सकल ससारा ॥९७॥[16]

---

१ (क) ना हने = हने ना । (क) (ग) (घ) निनाई = निहाई ।
२ (ख), (ग) (घ) खोटा = खोटा ।
३ (क), (ग) (घ) ना = नहिं ।
४ (क) (ख) गौ = जाए ।
५. (क) (ग) (घ) सब = सम ।
६ (क), (ग) (घ) सब = सम ।
७ (क) (ग) करे = करै ।
८ (ग) ताके = ताक ।
९. (ग) ग्यान = भक्ति ।
१० (क) तेहु = केहु । (घ) तेहु = तिन्हु ।
११ (क) 'मन बंदहि फेरि निरहि जाई ।' (ग) 'मन निरहि पुनि बंदहि जाई ।'
१२. (घ) मनके = मन के ।
१३ (क) (ख) मनही = मनही के । (घ) मनही = मनही कै ।
१४ (ग) मारुहि = मारे ।
१५. (क) दूजे = दूजा । (ख) दूजे = दूजो ।
१६ (ख) संसारा = सबसारा । (घ) संसारा = सौसारा ।

सोई सत्त गहो चित लाई ।[1] सत्त नाम निजु प्रेम बढ़ाई ॥६७॥
गुरू गुरू मैं भेद बिचारा । सतगुर खोज करहु निरधारा ॥६८॥[2]
तुलसी तारक मंत्र बखाना । राम तारक से सुमिरन ठाना ॥६९॥
झांझर गुर बहिर है जैसा ।[3] पाखंड कर्म सबन्हि मिलि खेला ॥७०॥
जो मुख मंत्रे लिखि ले पावै । सो सुमिरन वे सीख सिखावै ॥७१॥
यह तो भेद अगम है मूला । सत्त गहे सो होए अनभूला ॥७२॥
यह तो मुख रसने नहिं कहिया ।[4] गहै सत्त परगट होए रहिया ॥७३॥[5]
यह तो झगरि है दुख बेहुंदा । होए साफ देवै सब धंदा ॥७४॥[6]
झूठा पाखंड सब मिलि नचिया ।[7] पाखंड कर्म जीव कहा बचिया ॥७५॥
झूठा जोग जुगुति नहिं जाना । जोग जुगुति बिना कैसे माना ॥७६॥[8]
झूठा बद ब्याधि नहिं चीन्हा ।[9] अबरी औखध औरि कहि दीन्हा ॥७७॥[10]

दोहा

सोइ दरद सोइ दारू, मिले हकीम जो आए ।[11]
हर दम दारू नाम है, सतगुर दियो दिखाए ॥७॥

चौपाई

आते नफा नुकसान करि डारे ।[12] साफ नूर द्रिस्टि नहिं डारे ॥७८॥[13]
रूप घट कबहीं नहिं खोलै । ध्यान रतन जुगुति जग खोलै ॥७९॥
जौं लगि महल की खबरि न पावै ।[14] कौन टहल कहु कासे लावै ॥८०॥
जौं लगि पुहुप गुथे नहिं माली । तौं लगि हार कएसे पिव डारी ॥८१॥

---

१ (ग) गहो = गहहु ।
२ (क), (ग), (घ) करहु = करी ।
३ (क) बहिर = बधिर ।
४ (क) कहिया = कहिये ।
५ (क) रहिया = रहिये ।
६ (ग) देवै = देवि । (क) (ग), (घ) सब = सम ।
७ (ग) सब – सबन्हि ।
८ (क) 'झूठ जुक्ति बिना कहु कैसे माना ।' (ग) जुक्ति बिना कहु कैसे माना ।'
९ (ग) बैद = बेद ।
१० (घ) 'अबकरि अबरि अबरि कहि दीन्हा ।'
११ (घ) मिले हकीम = हकीम मिले । (क), (ख) (घ) जो = जो ।
१२ (क) आते = आसी ।
१३ (क) डारे = डारै ।
१४ (क) जौ = जब ।

चौपाई

यह तो भेद सबन्हि से न्यारा ।[1] सत्त रहनि है अचल करारा ॥१०७॥[2]
जो चाही निजु मुकुति करारा ।[3] तो मानो सत शब्द हमारा ॥१०८॥[4]
सत शब्द मुख अम्रित बानी । महा अनूप प्रेम पद ग्यानी ॥१०९॥
सुमिर नाम चित्त गहि सोई ।[5] बेद पढ़े का पंडित होई ॥११०॥
सास्तर गीता ग्यान अग्यावै । जीव के दया दरद नहि आवै ॥१११॥[6]
संध्या तरपन करहिं बखाना ।[7] अम्रित तेजि विषै रस पाना ॥११२॥[8]
मुमना पितर के सेवा ठानै । वेई जस पितरपच्छ मानै ॥११३॥
मंजन संजम करे निति नेमा ।[9] छोड़ि भगति चचल से प्रेमा ॥११४॥
मुर्दहि मांस बजावहिं घंटा ।[10] जौ बाजीगर खेवरहीं बटा ॥११५॥[11]
ऐसो पाखंड करे बनाई ।[12] बाउर लोग सम करै बड़ाई ॥११६॥[13]
अंत कहां देखहु सो न्याना ।[14] आदि कहो ब्रह्मा परवाना ॥११७॥[15]
ब्रह्मा पुरुष जोति से जाई ।[16] पुर्ष कवन कहो समुझाई ॥११८॥[17]
निजु गहि मर्म मम कहो बुझाई ।[18] आदि अंत सब देहु देखाई ॥११९॥

---

१ (क), (घ) से = तो । (ख) से = सें । (घ) से = सै ।
२ (क) (घ) है = यह ।
३ (घ), (ख) चाही = चाहै ।
४ (क), (ग) मानो = मानै ।
५. (क) सुमिरहु नाम प्रेम चित लाई ।
६ (क) (ख) (ग) के = कै ।
७ (क), (घ), (ख) करहिं = करै ।
८ (क) पाना = छाना ।
९ (क) (घ) प्रति का 'मंजन' पाठ स्वीकृत ।
१० (क) (घ), (ख) मांस = मांखि ।
११ (क) (ग), (घ) खेवरही = खेलहिं ।
१२. (क) करे बनाई = सम करै बनाई ।
१३ (क) सम करै बनाई ।
१४ (ग) कहां देखहु = कहां सो देखहु ।
१५. (ग) आदि अंबर हम को है परवाना ।
१६ (घ) 'महाभारत' का उल्लेख है । (क) 'ब्रह्मा पुरुषहिं माता से जाई ।
१७ (ख) पुर्ष = पुरुष ।
१८ (क) (घ) मम कही = सम कहो । (ख) मम कहो = कहो ।

दोहा

सत असत चीन्हे नाहीं, मन बांधे परतीत ।[1]
करामाति कायल करे[2], से बाजीगर जीत ॥८॥[3]

चौपाई[4]

करामाति सो सब भ्रमाना ।[5] नाटक देखि सब जगत भुलाना ॥९८॥[6]
बाजीगर इक तमासा कीन्हा । सब की बुधि भरम करि लीन्हा ॥९९॥[7]
नाटक भेदमा सबै देखावै ।[8] कहो मुकुति काहे नहिं पावै ॥१००॥[9]
सो बाजी हरिभगत भ्रमाना ।[10] इष्ट पूजि सुमिरहिं सब ग्याना ॥१०१॥[11]
गुरु देखाए ऐंठि भ्रम भाखा । पाखंड कर्म सकल रचि राखा ॥१०२॥
पीथि सीथि के इष्ट जो राखै ।[12] भैरो भूत जोग जा साखै ॥१०३॥[13]
ताकी मुकुति कबहिं नहि होई । जम जन्म महंडावै सोई ॥१०४॥
खसम छोड़ि भवरि सग लागै ।[14] उलटी चाल ग्यान सो पागै ॥१०५॥
भ्रमित विधि सब करे समीरा ।[15] उलटी चाल चलत नहिं धीरा ॥१०६॥

दोहा

जाने भैरो भूत यह, इष्ट पीर की साधि ।[16]
ताकी मुकुति कबहिं नहिं,[17] जम जिव करी उपाधि ॥११॥[18]

---

१ (क) (घ) बधि = बांधे ।
२ (क) कायल = कायल । (क), (ग), (घ) करे = करै ।
३ (क) से = है ।
४ (ग) पाठभाव ।
५. (क), (ग) सबै = सभै । (घ) सबै = सभी ।
६ (क) (ग), (घ) सब = सम ।
७ (क) की = कर ।
८ (ग) सबै = समहि । (क) (घ) सबै = सभे । (क) देखावै = देखरावै ।
९. (क), (ग), (घ) पाठ स्वीकृत ।
१० भ्रमना = भक्ति ।
११ (क) (ग) (घ) सब = सम ।
१२. (ग) के = को ।
१३ (क), (ग), (घ) जो = सम । (क) राखै = राखा । (क) साखै = साखा ।
१४ (ग) 'भवर के लागै ।' (क) 'भवरि कह त दि ।' (घ) 'ऊभरि के लागै ।'
१५. (क) १ १ संख्यक चौपाइ अपठित है ।
१६ (ग) पीर की = पीर कै ।
१७ (घ) कबहिं = कबै ।
१८. (क), (ग) (घ) करि = करै ।

फूल भागे धरि कीन्ह समाधी । निसु बासर ध्यान रहे वो साधी ॥१३०॥
बहुत समाधि कीन्ह जो जोगा ।[1] खटा मिठा तेजा रस भोगा ॥१३१॥
आंखि मूँदि के करहिं समाधी ।[2] आसन पवन जोग जो साधी ॥१३२॥[3]
धरहिं ध्यान अस करहिं बिसेखा ।[4] सपने कबहिं पुरुष नहिं देखा ॥१३३॥
करि करि जोग कस्ट तन आवै । पुरुष दरस कबहीं नहिं पावै ॥१३४॥
तुरकहिं पाखंड करम जो कीन्हा । तासे पुरुष दरस नहिं दीन्हा ॥१३५॥[5]

दोहा

कीन्हि पुरुष कुर्म के कीन्हा[6], रचा भवानी आनि ।
ताके खोजहि ब्रह्मा[7] रहा हारि जिव मानि ॥११॥[8]

चौपाई

बहुत दिवस बीति जब गएऊ ।[9] आदि भवानी खोजत भएऊ ॥१३६॥[10]
आदि भवानी बोलि बिचारी । गायत्री से अस कहा पुकारी ॥१३७॥
जाहु गायत्री ब्रह्मा के पासा ।[11] जाइ वचन करिहो परगासा ॥१३८॥[12]
ब्रह्मा से वचन कहहिं समुझाई ।[13] चलो तुरंत तुम्हे बोलि बोलाई ॥१३९॥[14]

गायत्री वचन[15]

जाइ गायत्री ब्रह्मा के ठाऊँ ।[16] बोली वचन कहा जो माऊ ॥१४०॥

---

१ (ग) जो = के ।
२ (क) (ग) के = कै ।
३ (क) आसन = ऐसन ।
४ (ख) धरहिं ध्यान = धरि धरि ध्यान ।
५ (ख) दरस = दरसन ।
६ (ग) कुर्म = कूरम ।
७ (ग) ब्रह्मा = परमहा ।
८ (क) (ग) रहा = रहे ।
९ (ख) 'क्षेपिकोपाख्य' उल्लिखित है । (क) (ग) गएऊ = गैऊ ।
१० (क) (ग) भएऊ = भैऊ
११ (ग) ब्रह्मा के पासा = ब्रह्मा पासा ।
१२ (क) (ख) (ग) करिहो = करिहो ।
१३ (क) (ग) से = सै । (क) कहहिं = कहिहैं । (ग) (घ) कहहिं = कहिहो ।
१४ (क) तुरंत = तुरित । (ग) तुरंत = तुर्त । (क) तुम्हे = तुम्ह । (ग) तुम्हे = तुम्है ।
१५ (क) (ग) में अपठित है ।
१६ (ग) ब्रह्मा के ठाऊँ = ब्रह्मा ठाऊँ ।

को है पुर्ष का करि तुम मारी ।[१] कहु माता ते मरम बिचारी ॥१२०॥[२]
तब तो हम तुम अवरि न कोई ।[३] तुमहीं पुत्र हमहिं हहिं ओई ॥१२१॥[४]
बिना पुर्ष कहु कएसन नाऊ ।[५] पूछिहे कहाँ बताउब ठाऊ ॥१२२॥

दोहा[६]

कहे जोति सुनु ब्रह्मा[७], तुम जेठो पुत्र हमार ।[८]
पिता खोज कहाँ खोजहु[९], हम से यह संसार ॥१०॥[१०]

चौपाई

कहे ब्रह्मा सुनु मातु भवानी ।[११] पिता खोज करब हम जानी ॥१२३॥[१२]
पुर्ष दरस देखब हम आखी ।[१३] तुमसे बचन बोलब एह साखी ॥१२४॥[१४]
करि परनाम जो चले तुरंता ।[१५] परबत ब्यार जहाँ एकंता ॥१२५॥[१६]
तहाँ जाए मसोकहिं ध्याना ।[१७] करहिं तपेस्या जोग जो आना ॥१२६॥[१८]
करों ध्यान समाधि लगाई । होइहें पुर्ष मिलिहें मोहि भाई ॥१२७॥[१९]
तुरंतहि मनमत उपजा भाऊ । पाखंड करम काल के नांऊ ॥१२८॥[२०]
ऐसो पाखंड कियो बनाई । पपस फूल औ चन्न चढ़ाई ॥१२९॥[२१]

---

१ (क), (ग) (घ) तुम = तुम्ह ।
२ (ग) 'कहु माता पितु मर्म बिचारी ।'
३ (घ) 'जोतिबोवाच' पठित है ।
४ (ग) (घ) हमहिं हहिं = हमही हैं ।
५ (घ) 'ब्रह्मोवाच' का उल्लेख है । (क), (ग) कएसन = कैसन । (घ) कएसन = कइसन ।
६ (घ) 'जोतिबोवाच' अलिखित है ।
७ (ग) कहे जोति ब्रह्मा ।
८ (ग) जेठ । (क) (घ) तुम = तुम्ह ।
९. (क) कहाँ = का ।
१० (ग) हमते = हम सो ।
११ (क) (ग) कहै ब्रह्मा सुनु माता भवानी ।
१२. (क) (ग), (घ) पाठ स्वीकृत ।
१३ (क) देखब = देखा । (ग) हम = पितु ।
१४ (घ) बोलब = बोलो ।
१५. (ग) जो चले तुरंता = तब चला तुरंता ।
१६ (क) 'ब्यारि तहाँ ए कंता ।
१७ (क) मसोकहिं = मसकोन्हि ।
१८ (घ) करहिं = करी । (क) जो आना = जो ठाना ।
१९. (ग) मिलिहैं मोहि भाइ = दरस दीहें भाइ ॥
२० (क), (ग) काल के नांऊ = काल कर नांऊ ।
२१ (घ) चन्न = चन्नन ।

कहे गायत्री बोलब हम साखी ।[1] पुर्स परस देखा निज आंखी ॥१४८॥
सुनि के ब्रह्मा भए उदासा ।[2] बेगि चले जोती के पासा ॥१४९॥[3]
जहां बठि रहि आदि भवानी ।[4] करि प्रनाम प्रेम की बानी ॥१५०॥[5]

जोती वचन[6]

हँसि के बचन जो बोलि सुरंसा ।[7] कहो दरस पुर्स के अंसा ॥१५१॥[8]

ब्रह्मा वचन[9]

तब ब्रह्मा अस बोले बानी ।[10] कहो भेद गायत्री जानी ॥१५२॥

गायत्री वचन[11]

बोली गायत्री बचन विचारा ।[12] सत्त पुर्स देखा करतारा ॥१५३॥[13]

जोती वचन[14]

सुनु गायत्री झूठ मैं बोली ।[15] दीन्हो स्राप भर्मित तें डोली ॥१५४॥[16]

गायत्री वचन[17]

कौन कर्म कीन्ह हम पापा ।[18] जो तुम्ह हमके दीन्हो स्रापा ॥१५५॥[19]

---

१ (क) 'गायत्री बोलबे साखी' ।
२ (क) के = कै । (ग) भए = भया ।
३ (क) (ग) चले = चलो ।
४ (क) रहि = रहै ।
५ (ग) (घ) प्रनाम = परनाम ।
६ (क), (ग) में अपठित है ।
७ (क) के = कै ।
८ (क) (घ) के = कै । (ग) के = को ।
९ (क) (घ) में अपठित है ।
१० (ग) बोले = बोलै ।
११ (क) (घ) में पाठ नहीं है ।
१२ (क) गाइत्री = गायत्री ।
१३ (घ) पुर्स = पुरुष ।
१४ (क) (ख) अपठित है ।
१५ (क) (ग) (घ) झूठ मैं = झूठ तैं ।
१६ (क) 'दीन्ह स्राप भ्रमत डोली' । (घ) 'दीन्ह सराप भर्मित तै डोली' । (ग) 'दीन्ह स्राप भरमित तै डोली' ।
१७ (क) (ग) अपठित है ।
१८ (क) 'कवन कर्म हम कीन्हो पापा । (ग) कवन कर्म हम कीन्हेवों पापा ।' (घ) 'कवन करम कीन्हों हम पापा ।
१९ (क) 'जो तुम्ह दीन्हो हम कहँ स्रापा ।' (घ) हमके = हम कँह ।

चलो बेगि जोति के पासा ।[1] कह्यो वचन तुम्ह सुनो सन्देसा ॥१४१॥[2]
तुम्हें बोलावन हम को माई । जोति संदेस सुनो चित लाइ ॥१४२॥[3]
तुम्ह बिनु होत है जग्य असाधी ।[4] चला तुरंत तुम्ह छोड़ो समाधी ॥१४३॥[5]

ब्रह्मा वचन[6]

कोपि के ब्रह्मा बोले बानी ।[7] तै गायत्री सदा अग्यानी ॥१४४॥[8]
बिना दरस कस्से सिद्ध आई ।[9] पिता खोज करन हम धाइ ॥१४५॥[10]
अब तो तन में लागो लासा ।[11] बिना दरस कहु कइसन कामा ॥१४६॥[12]

गायत्री वचन[13]

दोहा

कहु गायत्री सुनु ब्रह्मा[14] मानहु कहा हमार ।[15]
पिता दरस कहा पाइहो[16], माता दरस है सार ॥१२॥[17]

ब्रह्मा वचन[18]

चौपाई

पूछे बोलय कवन जो बानी ।[19] कवन भेद कहुव सहिदानी ॥१४७॥[20]

---

१ (ग) चलो = चलहु ।
२ (ख) 'चलो वचन सुनो सँदेसा ।'
३ (ग) संदेस सुनो = सन्देस सुनहु । (क), (ग) (घ) चित लाई = चित लाइ ।
४ (क) होत है = होतु है ।
५ (ग) चलो = चलहु । (क) तुरंत = तुरित । (ख) छोड़ो = छेड़ो । (ग) छोड़ो = छोड़हु ।
६ (क) (ख) में यह अपठित है ।
७ (क), (ग) के = कै ।
८ (क), (ग) तै = तै ।
९ (ग) सिद्ध = सिद्धि ।
१० (ग) करन = करण ।
११ (ख) तो = तौ ।
१२ (क), (ग) कइसन = कैसन ।
१३ (क), (ग) (घ) में अपठित है ।
१४ (क) कहै = कहै ।
१५ (क) 'मानहु वचन हमार' । (ख) 'तुम मानहु कहा हमार' ।
१६ (क) (घ) पाइहो = पाइहौ ।
१७ (क) (ग) (घ) प्रति का 'माता दरस' पाठ स्वीकृत ।
१८ (क) (ग) में अपठित है ।
१९ (क) (ख) पूछे = पूछै ।
२० (क) कहुव = कहेव ।

धमराए जिव करहिं बिनासा ।[1] बिनु चीन्हे जिव जारहिं फासा ॥१६५॥[2]
जैसे मारे गाए कसाई । बेदरद खून करे जिव जाई ॥१६६॥
आपुहि पहरु चोर है सोई ।[3] ठग ठाकुर जग भूले योई ॥१६७॥[4]
आगि लगाए घर सूते तानी ।[5] कएसे जरत बुतावहिं पानी ॥१६८॥[6]
जाके कारन जोगी जागै ।[7] उलटि सांप संपहेरिमहि लागै ॥१६९॥[8]
जाकर मछ सो करे अहारा ।[9] धीमर जाल मीन कहँ डारा ॥१७०॥[10]
तीनि लोक है जाल पंजाला । बिरला बूझै अविगति काला ॥१७१॥[11]
एके चोर सकल जग बंधे ।[12] बिना तेग कएसे रन मंडे ॥१७२॥
जाति पंचम छीन है भाई ।[13] जब देखे तब करे सराई ॥१७३॥[14]
त्रितक पंच है काल विकारा ।[15] भव भूले जिव करे अहारा ॥१७४॥
जिमि करि कलपे जल बिनु मीना ।[16] भवरी प्रान काल न छीना ॥१७५॥[17]
छल बल बुधि सबकी जो हरई ।[18] विषम बान उर अन्तर दहई ॥१७६॥

---

१ (ग), (घ) (ङ) करहिं = करै ।
२. (क) (ग) (ङ) जारहिं = जारैं ।
३ (क) आपुहि = आपे ।
४ (क) 'ठग ठाकुर जग भूले भाई ।' (ग) (ङ) 'ठग ठाकुर जग भूले योई ।
५. (क) सूते = सूतहि । (ग) सूते = सूतै ।
६ (क) कएसे = कैसे । (ख) कएसे = कैसो । (ग) कएसे = कहसे । (क) बुतावहिं = बोतावहिं ।
(घ) बुतावहिं = बुतावै । (ङ) बुतावहिं = बतावै ।
७ (क) जागै = जागे ।
८ (क) संपहेरिमहि = संपहेरियै ।
९. (क), (घ) करे = करै ।
१० (क) (ग) (ङ) प्रति का 'धीमर' पाठ स्वीकृत ।
११ (ग) बूझै = बूझहि । (घ) काला = कराला ।
१२. (क), (ख), (ग) बंधे = बंधै ।
१३ (क) है = करे ।
१४ (ग) (घ) जो = ज्यों । (क) (ग) (ङ) देखे = देखै । (ग), (ङ) तब = त्यों । (क) (ग), (ङ) करे = करै ।
१५. (क) (ग) (ङ) विकारा = बेकारा ।
१६ (क) जैसे कलपे जल बिनु मीना । (ग) 'ज्यों जिव कलपे जल बिनु मीना ।' (ङ) 'जिमि करि कलपेचो ।'
१७ (क) 'भवरिक प्रानहि काले छीना ।'
१८ (क) सबकी जो हरई = सभे के हरई ।' (ग) (ङ) छल = छल ।

सतगुर वचन[1]

बोल्यक बोएल तुम्हे तन मागे ।[2] आकर कर्म सोइ संग लागे ॥१५६॥[3]
त्रिमदेवा त्रियमंत जो भाखा ।[4] त्रिविधि ग्यान जगत मंह राखा ॥१५७॥[5]
सतर मंतर नाटक जोगा । सास्तर बेद कथा रस भोगा ॥१५८॥[6]

बिस्नो वचन[7]

बिस्नो बोलै ब्रह्मा से बानी ।[8] आदि पुर्ख निर्गुन तुम जानी ॥१५९॥
तब ब्रह्मा मत बोले बचना ।[9] हाथ पांव नाहीं मुख रसना ॥१६०॥
सब ते मौन बोए रहे निरकारा ।[10] अति बिरकल नहि रूप अकारा ॥१६१॥
जेठ जुगादि समै तुम्ह जाना ।[11] तुम्ह ब्रह्मा मो अविगति ग्याना ॥१६२॥[12]

दोहा

मनकी प्रतिमा देखिके[13], मानेबो बीत करार ।[14]
एह मंत्र त्रिम देव का, करेबो सकल पसार ॥१३॥

चौपाई

गुरु सिस्टि के ब्रह्मा भूलै । बिसम सरोवर सब मिलि झूलै ॥१६३॥
जोगी जती यहो मत ठएऊ । अगम ग्यान भेद नहि पएऊ ॥१६४॥

---

१ (क), (ग) अपठित है ।
२. (ग) तुम्हे तन मागे = तुहे की माग्य ।
३ (ग) लागे = लाग्य ।
४ (क), (ग) त्रिम देव = त्रिदेवा ।
५. (ग), (घ) मंह = मे ।
६ (क) कथा = गहा ।
७. (क) (ग) अपठित है ।
८ (क), (ग), (घ) बिस्नो = बिस्नु ।
९. (क) बोलै = बोले । (ग) 'तब ब्रह्मा बोला अस बचना ।'
१० (क) 'सबते मौन रहे निरकारा ।' (ग) 'सबते मौन रहे निरकारा । (घ) 'सबते मौन्य रहे निरकारा ।'
११ (क) (ग) (घ) समै = समै । (क), (ग) (घ) तुम्हे = तुम्ह । (क) जाना = जानी ।
१२ (क), (ग) मो = हु (घ) नो = हो । (क) ग्याना = ग्यानी ।
१३. (क), (ग) देखिके = देखिकै ।
१४ (घ) मानेबो = मानी ।

अजर काया जिन्हि जुग जुग रासा ।[1] असल नाम ताही को भासा ॥१८९॥[2]
क नहिं विनसहिं मरन न आरा ।[3] हाथ पाँव मुख वचन पिआरा ॥१९०॥
सोई सत्त अजर करतारा ।[4] सत्तनाम है असल करारा ॥१९१॥
बरनौं अजर लोक परवाना । जहाँ बैठे सब हंस सुजाना ॥१९२॥[5]
जहवाँ झलके अमरा जोती । सेत मंडल झलके निजु मोती ॥१९३॥
अजर लोक उदित उजियारा । जहाँ पुर्ष है मर्द करतारा ॥१९४॥[6]
जहाँ पलंग है पुहुप बिछाया ।[7] झरे गुलाब मुख अम्रित पाया ॥१९५॥[8]
छत्र मनोहर सब सिर छाया ।[9] झिगसे पुहुप लोक सब धामा ॥१९६॥[10]
अमर कहा हंस जहाँ पाई ।[11] बोलहिं वचन सुगंध सोहाई ॥१९७॥
अमर बस्तर मइलि न होई ।[12] टूटे फाटे कबहिं नहिं सोई ॥१९८॥[13]
धोबी धोए ना करे पखारा ।[14] निस दिन सेत उदित उजिआरा ॥१९९॥[15]

दोहा

असल पदुम परकास है[16] तहाँ जिमी नाहिं छोर ।[17]
अविगति अगम अपार है, तीनि लोक के छोर ॥१५॥

---

१ (ग) जिन्हि = जो ।
२ (क) (ग) (घ) का प्रति का पाठ असत्य स्वीकृत ।
३ (क) (घ) क = खोए । (क) (ग) मरन = मरै ।
४ (क), (ग) (घ) मर्द = अजर । यही पाठ स्वीकृत ।
५ (क) (घ) (घ) सब = सम ।
६ (घ) 'जहवाँ पुरुष अर्द्ध करतारा ।' (क) जहाँ = जहवाँ ।
७ (घ) जहाँ = जहवाँ ।
८ (क) (घ) मर्द = मरै ।
९ (क), (घ), (घ) सब = सम ।
१० (क) (ग) झिगसे = झिगसे । (क) घ), (घ) सब = सम ।
११ (क), (ग), (घ) कहा = कावाँ ।
१२ (क) न = नि । (घ) न = ना । (घ) न = नाहिं ।
१३ (क), (ग) टूटे = टूटै । (क) (ग) फाटे = फाटै । (घ) कबहिं = कबहु ।
(क) नाहिं = ना ।
१४ (ग), (घ) धोए = धोवै । (घ) ना = न । (क) करे = करहिं । (ग) करे = करै ।
१५ (क) उदित = सदा ।
१६ (क) (घ), (घ) असल = असँख । (क) प्रकास = परगास ।
१७ (क) जिमि = जामिनि ।

दोहा

विषम सरोवर नाम जल, धरि धरि आवे काम ।[1]
सुख सागर जिव छोड़ि कै[2], पड़ु मनुवा के जाल ॥१४॥

चौपाई

मनुवा जाल सकल जिव फांसा ।[3] पकरि प्रान काम न रांचा ॥१७७॥[4]
कोटि जतन कै बांधे गांठी ।[5] पकरि प्रान के सेज है काठी ॥१७८॥
मानहु सत्त सब्द हम भाखा । चीन्हहु मुक्ति जो जिव राखा ॥१७९॥
चीन्हहु तेहि कर प्रतिपाला ।[6] सत्त मुक्ति है ग्यान बिसाला ॥१८०॥[7]
सतलोक से हम चलि आई ।[8] सत्त कथा जो कहा सुनाई ॥१८१॥
दुइ परवत जल बहु अपारा । तेहि बिच सीढ़ी सत करतारा ॥१८२॥
वेद कितेब दुइ फंद पसारा ।[9] तेहि फंदा महं जीव बेचारा ॥१८३॥
धोखा देइ जीव सब राखा ।[10] करम भरम भेद जो भाखा ॥१८४॥
कहैं दरिया बिन्दु निर्मल बानी ।[11] जाते मेटै नरक की खानी ॥१८५॥[12]
जग में बस है नाम परवाना । मेटहि सकल दुख जम कै ताना ॥१८६॥[13]
नाम विमल सत करे बखानी ।[14] ब्रह्मा विस्नु से पावे जानी ॥१८७॥[15]
उपजे बिनसे अजर ना कहिया ।[16] मरि मरि देह विनसि फिरि रहिया ॥१८८॥[17]

---

१ (क) (ग) (घ) 'दे दे आरे काम ।'
२ (ख) छोड़ि कै = छोड़ि दै ।
३ (क) जिव = जग । (ख) (ग), (घ) फांसा = फंद ।
४ (क) न = नै । (ख) (ग) (घ) रांचा = रे । ।
५ (क) बांध = बांधे । (ग) बांधि = बांधिहि । (घ) बांध = बांधन ।
६ (क) 'चीन्हहु तेहि जो करै प्रतिपाला । (ग) चीन्हहु तहां करहि प्रतिपाला ।
७ (क) बिसाला = रिसाला ।
८ (क) (ग), (घ) से = सी ।
९ (घ) दुइ = दोए ।
१० (क), (ग) (घ) सब = सभ ।
११ (ग) कहैं = कह । (क) बिन्दु = बिन्दो ।
१२ (क), (ग), (घ) प्रति का पाठ 'मेटै' सर्वमान्य । (ख) प्रति में 'मेट' पाठ ।
१३ (ग) (घ) मेटहि = मेटै । (क) ताना = बाना ।
१४ (क) 'नाम बिमल करै बखानी । (ग) 'नाम बिलोहक करहु बखानी ।'
१५ (ग) बिस्न = बिसुन । (ग) जाने = जानी ।
१६ (क) 'उपजै बिनसै अजर ना कहिये ।' (ग) उपजी बिनसे अजर ना कहिया । (घ) 'उपजे बिनसे अजर न कहिया ।'
१७ (क) (ख) फिरि = फेरि । (ख) रहिया = रहिये ।

चौपाई

ब्रह्म लोक ब्रह्मा जो कीन्हा ।[1] बिस्नु लोक बिस्नु रचि लीन्हा ॥२११॥[2]
सीवलोक सिव का असथाना । एहि विध अमरि लोक परवाना ॥२१२॥[3]
सिव लिंग परबत है भाई । तहां धाम जो रचा बनाई ॥२१३॥
एता लोक नाहिं बिस्तारा ।[4] रचो धाम तहां मंदिल सवारा ॥२१४॥[5]
यह सब किरतम कियो बनाई ।[6] तहवां अमल काल का भाई ॥२१५॥[7]
यह किर्तम बिरला कोइ जाना । तहां पवन है जिमी जमाना ॥२१६॥
तहवां चांद सूर्ज दिन राती ।[8] जग मग तारा उगे बहु भांती ॥२१७॥[9]
तहां न पलंग है पुहुप बिछाया । तहां न फूल मंदिल है छाया ॥२१८॥
तहां छत्र नाहिं पुहुप बेवाना ।[10] तहां चौंर नहिं अविगति बाना ॥२१९॥[11]
तहां पिउत्व ना अम्रित चाखै ।[12] मन सुवन तहां नहिं भाखै ॥२२०॥
अमर काया तहां हंस नहिं पावै ।[13] फिरि भरमे चौरासी आवै ॥२२१॥[14]
तीनि लोक है काल के हाथा ।[15] धरि धरि ठोंके सबके माथा ॥२२२॥[16]
परवा एक निरंजन डारा ।[17] तीनि लोक भौ मन करतारा ॥२२३॥[18]

---

१ (क) ब्रह्मा = ब्रह्मै ।
२. (ख) बिस्नु = बिसुन ।
३ (ग) सिव = सिव ।
४ (क) (ख) नाहिं = नाहे ।
५. (ख) तहां = तम ।
६ (क) (ख) (घ) सब = सम ।
७ (ख) (घ) तहां = तहवां । (क) का = के । (ग) का = के । (घ) का = को ।
८. (ग) सूर्ज = सूरज ।
९. (क) तारा = तारा । (क) (ग) उगे = उगे ।
१० (ख) 'तहां छत्र नहिं पुहुप बेवाना ।'
११ (क) तहां = तहवां । (क) (ग), (घ) चौंर = चंवर । (क) बाना = बाना ।
१२ (क) (ग), (घ) तहां न पीउत्व न अम्रित चाखै ।'
१३ (क), (घ) अमर = अमर । (क) नहिं = ना ।
१४ (क), (ख) फिरि = फेरि । (क), (ख) (घ) भरमे = भरमी । (क), (ख) (घ) चौरासी = चौरासिहि । (क) आवै = आवै ।
१५. (ग) के = कै ।
१६ (क) धरि धरि = धै धै । (क) (ख) ठोंके = ठोकै । (ग) सबके = सबकै । (घ) सबके = सबके ।
१७ (क) एक = डारि ।
१८. (क) भौ = मैं । (ख) भौ = भयो । (क) मन करतारा = भौ करतारा ।

चौपाई

अविगति चौर ढरे सिर लागा ।[1] अविगति पुहुप पलंग है लागा ॥२००॥[2]
अविगति अम्रित सब कोइ चाखै ।[3] पल पल सुरति प्रेम रस राखै ॥२०१॥
सुख सागर है अविगति बानी ।[4] जो जिव जाए होए निरबानी ॥२०२॥[5]
जो जिव बाल समुझहि मान ।[6] सोई लोक पैयाना ठान ॥२०३॥
हिरदए सुख बोले सतबानी ।[7] पिवै प्रेम तहां अविगति ज्ञानी ॥२०४॥[8]
मनहिं मिलाए तजे सब धोखा । सील संतोख अगम गमि पखा ॥२०५॥
तेजे भोग रस रोग बिकारा ।[9] जोग जुगति रस रहै न्यारा ॥२०६॥[10]
पहिले सत तब मूल दिढावै ।[11] बिना भक्ति मूल नहिं पावै ॥२०७॥
जीव के पूंजि नाम गहि राखै ।[12] ब्रह्म दिढाए अम्रित रस चाखै ॥२०८॥[13]
दिव्य द्रिस्टि मगन है डोरी । प्रेम प्रीति अमित रस बोरी ॥२०९॥
संपूरन कला ब्रह्म उजियारा । तम की तपन मेटा भ्रम भारा ॥२१०॥[14]

दोहा

कहँ दरिया बूझहु गमी,[15] भेद ब्रह्म निजु ग्यान ।
अगम अमी कथ ग्यान मैं,[16] पूरो पद निरबान ॥१६॥

---

१ (क) (ग) चौर = चंवर । (क) (ख) ढरे = झमकि । (ग) ढुरे = ढरै ।
२ (क) (ग), (घ) 'अविगति पलंग पुहुप है लागा ।'
३ (क), (ग), (घ) सब = सम ।
४ (क) अविगति = सुख की । (ग) अविगति = सुख है । (क) (ग) (घ) बानी = बानी ।
५ (क), (घ) जाए = जाहि । होए = होहि ।
६ (क) 'जो जीव को जन समुझहि मानै ।' (ग) 'जो जीव सत सब्द मह मानै ।'
७ (ग) हिरदए = हिरदया । (क), (ग), (घ) बोले = बोलै ।
८ (ग), (घ) पिवै = पावै ।
९ (क), (ग) (घ) बिकारा = बेकारा ।
१० (ग) जुगति = जुगुति ।
११ (क) पहिले = पहिलै ।
१२ (ग), (घ) के = कै । (ग) राखै = राखी ।
१३ (ग) चाखै = चाखो ।
१४ (ग) मेटा = मेटै ।
१५ (क) (ग) 'कहँ दरिया पद बूझहु ।' (ग) 'कहँ दरिया हर बूझहु ग्यानी ।'
१६ (क) (ग), (घ) मैं = है ।

स्वन सिखावहिं भोग बेलासा ।[1] एहि करता रे मदव तमासा ॥२३३॥[2]
जनक रिसी घर रही कुमारी ।[3] रजा सुयमर जग परचारी ॥२३४॥
धरा धनुख तहाँ बड़ा कठोरा ।[4] एके मोहनी जगत बटोरा ॥२३५॥[5]
रिसीराज तहवाँ चलि गएऊ ।[6] जनक सुयमर जहवाँ ठएऊ ॥२३६॥[7]
बिस्वामित्र को मन बिचारा । रामचन्द्र तहवाँ पगु डारा ॥२३७॥[8]
रिसि के संग जनकपुर गएऊ ।[9] जनक सुयंमर देखत भएऊ ॥२३८॥

दोहा

देखहिं कौतुक नर नारि सब[10] कोमल राजकुमार ।[11]
सीता उठि झरोखे झाकहीं सुंदर प्रम पिआर ॥१८॥[12]

चौपाई

मोहनी बान राम कंह लागा । भए बिकल मनमत होए जागा ॥२३९॥[13]
रंगभूमि धनुख जहाँ राखा । तोरा धनुख तब जए जए भाखा ॥२४०॥[14]
गावहिं मंगल सब नर नारी ।[15] कीन्ह ब्याह सब जग परचारी ॥२४१॥[16]
त्रिभुवन जाके सम कोइ जाना ।[17] सो मोहनी के हाथ बिकाना ॥२४२॥[18]

---

१ (क) (ग) बेलासा = बिलासा ।
२. (क) रे = के (ग) रे = कै । (घ) रे = कए ।
३ (ग) घर = गिहि ।
४ (ग) धरा = धारा ।
५. (घ) एके = एकै ।
६ (क) (ग) (घ) राज = राजा ।
७ (क) ठएऊ = रहेऊ ।
८ (क) डारा = डारी ।
९. (घ) गएऊ = भएऊ ।
१० (क) नर नारि सब = नर औ नारी । (ग) नर नारि सब = नर नारि सम । (घ) नर नारि सब = नर नारी ।
११ (ग) कोमल = कमल । (क) राज = राय । (क) कुमार = कुमारि ।
१२. (क) सुंदर = सुंदरि । (क) पिआर = पिआरि ।
१३ (क) 'भे बिकल होए मनमत जागा ।'
१४ (क), (ग), (घ) जए जए = जै जै ।
१५. (क) (ग) (घ) सब = सम ।
१६ (क) ब्याह = बिवाह । (क) (ग), (घ) सब = सम ।
१७ (ग) (घ) कोइ = जस ।
१८ (ग) के = कै ।

वेद किताब यहाँ से आना ।[1] आगे गमी ध्यान नहिं जाना ॥२२४॥[2]
छपलोक सहि कीन्ह पयाना ।[3] एह भेद बिरला केहु जाना ॥२२५॥[4]
छपलोक सहि हम चलि आइ ।[5] जमूदीप जिव बन्द छोड़ाई ॥२२६॥
सत पुर्ष फिरि आज्ञहि आए ।[6] निजु भेद सब हमहिं सुनाए ॥२२७॥[7]
घाँटि अंत सबै परवाना ।[8] सोक बरन कथा सब ग्याना ॥२२८॥[9]
सब जीव छपलोक की जानी ।[10] बूझहु सत सब्द मह बानी ॥२२९॥[11]

दोहा

सतगुरु मालिक जीव के[12] देखहु निरमल ग्यान ।
कहँ दरिया धोखा तजो[13] देखहु सत निसान ॥१७॥[14]

चौपाई

रामजन्म दसरथ गिह भइऊ ।[15] ताको गुरु बसिष्ठ जो रहेऊ ॥२३०॥
राम नाम सो मन बखाना ।[16] विविध बिधि सुमिरहिं सब ग्याना ॥२३१॥[17]
सातिक तामस एह सब माहीं ।[18] राज काज रिधि मन महं राखै ॥२३२॥[19]

---

१ (क) यहाँ = एतना । (क), (ग) से = सै । (ग) से = सेंहि ।
२ (क) आना = आया ।
३ (क), (ग) सहि = सै । (ग) सहि = सेंहि ।
४ (ग) केहु = कोइ ।
५ (क) (ख) सहि = से ।
६ (क) आए = आइ ।
७ (क) सुनाए = देखाइ ।
८ (क), (ग) (ख) सबै = सबै ।
९ (क) 'सब्दै सोक कथा समुझाना' ।
१० (क) (ख) छप = सत । (ग) सब = सबै ।
११ (क), (ग) बूझहु = बूझै । (ग) 'बूझहु संत सब्द सहिदानी ।'
१२ (क) (ग) जीव के = जीव कै ।
१३ (क), (ग) तजो = तजहु ।
१४ (क) देखहु = निरखहु ।
१५ (क), (ग), (ख) भइऊ = भैऊ ।
१६ (ख) राम नाम = राम राम । (क) बखाना = विचारा ।
१७ (क) सब ग्याना = समुझाए । (ग) सब ग्याना = ग्याना । (ख) सब ग्याना = मन ग्याना ।
१८ (क) (ग) (घ) सब = सभ ।
१९ (क) काज रिधि = काज सब रिधि । (क) (ग) (घ) महं = में ।

सिया राम लछन संग भाई । तीनिउ प्रान जंगल मंह जाई ॥२५३॥[1]
चत्रकुटी जो तहां सभारा । कन्द मूल सब कीन्ह अहारा ॥२५४॥[2]
करहिं तपस्या संग लिए नारी ।[3] रहहिं जंगल दुख सहहीं भारी ॥२५५॥[4]
मन ने एक परपंच लगाई ।[5] माया मिरगा तहां चलि आई ॥२५६॥
कनक रूप चंचल है चोरा । देखा राम जो धनुख टंकोरा ॥२५७॥[6]
छन महं निकट दूरि चलि आई । पीछे राम लगे तब धाई ॥२५८॥[7]
आगे तौ जंगल जहां भारी ।[8] कोह काफ जहवां अंधियारी ॥२५९॥

सीता वचन[9]

रोवहिं सीय बहुत बिललाई । लछन जाए देखहुं तुम भाई ॥२६०॥[10]
की तौ बाघ सिंघ ने मारा ।[11] की मिर्गा नहिं हत्यो भुआरा ॥२६१॥[12]

लछुमन वचन[13]

लछन विचारहिं मन पछताइ ।[14] दुई दुख मोही ब्यापेयो भाई ॥२६२॥[15]
इहां रहो सीता दुख माना ।[16] सोचहिं मचरि बिचारहिं ग्याना ॥२६३॥[17]

---

१ (क), (ख) तीनिउ = तीनो । (क) (ख) (घ) प्रान = प्रानि । (क) मंह = कै । (ग) (घ) मंह = के ।
२ (क), (घ) सब = सम । (ख) सब = सत ।
३ (क) (ख) (घ) तपस्या = तपेस्या ।
४ (क) रहहिं = रहै । (क) सहहीं = सहेसी ।
५. (क) ने = नै ।
६ (ग) देखा = देखी ।
७ (क) पीछे = पीछैं । (क) लगे = लगा । (ख) लगे = लागे ।
८ (क), (ग), (घ) तौ = भए ।
९. (क), (ख) (घ) अपठित है ।
१० (ग) लछन = लछुमन । (ग), जाए = जाइ । (ग) देखहुं = देखो ।
११ (क) (ख) की तौ = की तो ।
१२. (क), (ग) (घ) हत्यो = हतेयो ।
१३ (क) (ग) (घ) में अपठित है ।
१४ (ख) लछन = लछुमन । (क) पछताई = पछताइ ।
१५. (क) ब्यापेयो = ब्यापत । (ख) ब्यापेयी = बियापेयी ।
१६ (क) रहो = रहो । (क) सीता = सीया ।
१७ (क), (ग), (घ) मचरि = सुमी ।

तीनि लोक जाके परवाना ।[1] ता सिर काले कीन्ह पयाना ॥२४३॥[2]

दोहा

तीनि लोक के ठाकुर[3], भूमि परा भ्रम ग्यान ।[4]
जो मोहनी सुरनर मुनि हारथ[5], सो न परा पहचान ॥१६॥

चौपाई

मन चरित्र उन्हहुं नहिं जाना ।[6] जा ठाकुर तिनि लोक बखाना ॥२४४॥[7]
एक निरंजन सब कोइ गावै ।[8] अविगति की गति पार न पावै ॥२४५॥
जो ठाकुर करता है रामा । ताके भोग कवन हुए कामा ॥२४६॥[9]
ताके राज काज का सोगा । ताके नारि पुत्र का भोगा ॥२४७॥[10]
मोहनी माया पुरुष कि चित लीन्हा । हारी ठगौरी ते नहिं चीन्हा ॥२४८॥[11]
सीता मचली प्रिहि से आए ।[12] राज काज सब मंत्र सुनाए ॥२४९॥[13]
अविगति की गति जानि न भएऊ ।[14] राज छोड़ाए जंगल क गएऊ ॥२५०॥[15]
सीता उडिके संग जो लागी ।[16] काम दशा लीन्हो सिर मांगी ॥२५१॥[17]
रोवहिं कलपहि सोग सतापा ।[18] कवन कर्म कीन्हो विधि पापा ॥२५२॥

---

१ (ग) जाके = जाकै ।
२. (ग) काले = कालै ।
३ (ग) के = कै । (घ) के = कए ।
४ (क) 'भूलि परे भ्रमजाल' । (ग) 'भूलि परा भो ग्यान' ।
५. (क) हरिय = हरै । (ग) हरेय = हरियो ।
६ (क) मन चरित्र = मन के चरित्र ।
७ (क) (ग) तिनि लोक = तिहुं लोक ।
८ (क) (ग), (घ) । सब = सभ । (क) कोइ = जन ।
९. (क) (ग) हुए = है ।
१० (ग) पुत्र = पुरुष ।
११ (क), (ग) ते = तेहि ।
१२. (क), (ग) से = सें । (घ) से = ते ।
१३ (क), (घ) सब = सभ । (ग) सब मंत्र = सभ मंत्र ।
१४ (क) जानि = जानै ।
१५. (क), (ग), (घ) छोड़ाए = छोड़ि । (क) क = कै ।
१६ (क) उडिके = उडिकै । (घ) उडिके = उडि ।
१७ (क), (घ) लीन्हो = लीन्ह ।
१८ (घ) रोवहिं = रोवहिं ।

बाहर भीतर खोजहिं भाई । रोवहिं राम लखन दुनो भाई ॥२७५॥[1]
रोवत खोजत भया बिहाना ।[2] खोजत बन जहाँ सकल निशाना ॥२७६॥[3]
आगे होए गमी जो कीन्हा । सीता तौ रावन हरि लीन्हा ॥२७७॥[4]

दोहा

इहाँ राम उहा रावना[5] बाजी रचो बनाए ।[6]
मन परिपंच जानेवो नहीं[7], मीरे रन में आए ॥२१॥[8]

चौपाई

राम किया रावन सकचूना ।[9] भया गर्व नहिं रहा नमूला ॥२७८॥[10]
तीनों भुवन राम को राजा ।[11] संग सिया लिए भया अकाजा ॥२७९॥[12]
करे विवेक विचारे कोई ।[13] सत्त सब्द बूझे नर सोई ॥२८०॥[14]
नारी संग होवे रस भोगा ।[15] भक्ति भाव होवे नहिं जोगा ॥२८१॥[16]
नारी रूप है संग बिकारा ।[17] जानि के पाव अगिनि में जारा ॥२८२॥[18]

---

१ (क) दुनो = दोउ ।
२ (ग) भया = भयो । (घ) भया = भएउ । (क) पंक्ति-व्यत्यय—
'खोजहिं जानकि सकल निशाना रोवत खोजत भयो बिहाना' ।
३ (घ) खोजत = खोजा ।
४ (क) तौ = तो । (ग) तौ = तब ।
५ (क) इहाँ = इत (ग) उहाँ = ओह ।
६ (घ) रचो = रची ।
७ (क) परिपंच = प्रपंच । (ख) जानेवो नहीं = जाने नाहीं । (ग) जानेवो नहीं = जाने नहीं ।
८ (क) में = मँह । (ग) में = मँह ।
९ (क), (ग) सकचूना = सकुचाना ।
१० (क) नमूला = अनुमाना ।
११ (क) (ख), (ग) तीनि भुवन के राम को राजा ।
१२ (क) लिए = के ।
१३ (क) (ख) करे = करै । (क) (ग) विचारे = विचारै ।
१४ (क) बूझे = बूझै । (ग) (घ) बूझे = बूझहु । (क) (ग) विचारे = विचारै ।
१५ (क), (ख) होवे = होवै । (ग) होवे = होए ।
१६ (क), (घ) होवे नहिं जोगा = नहिं होवै जोगा ।
१७ (क) (ख) (ग) बिकारा = बेकारा ।
१८ (क) (ग), (घ) जानिके = जानिकै । (क) में = मैं । (ग) में = मँह ।

यह परिपंच लखन ने जाना ।[1] सोने म्रिगा नहिं ब्रह्म समाना ॥२६४॥[2]
सोने म्रिगा वोसे नहिं चलई ।[3] माया रूप वेह एह धरई ॥२६५॥

दोहा

सत के रेखा खंइचि के[4] , सिय सौंपा तेहि आनि ।[5]
जौं लगि राम पलटि हम आवहिं[6] , सीय वचन लेहु मानि ॥२०॥

चौपाई

छल बल बुधि कोई जो करई । रेखा से बाहर नहिं टरई ॥२६६॥
सत के रेखा बैठु विचारी ।[7] बाहर पांव तनिक नहिं डारी ॥२६७॥
लखन का सत जिव बसे सरीरा ।[8] सब परिपंच जानु मति धीरा ॥२६८॥[9]
लखन गए राम के पासा ।[10] इहवां रावन कीन्ह तमासा ॥२६९॥[11]
गेरुआ वस्तर भेस जो कीन्हा । आए सीता कंह आसिस दीन्हा ॥२७०॥[12]
रावनो रूप सीता नहिं चीन्हा ।[13] लखन कहा कछु गमि ना कीन्हा ॥२७१॥[14]
नारीचोर परिपंच जो कीन्हा ।[15] बुधि के बल सीता हरि लीन्हा ॥२७२॥
लंकापति लंका के गयऊ ।[16] पलटि राम सिहि खोजत भयऊ ॥२७३॥
पनकुटी देखा अंधियारा ।[17] खोजहि चहुं दिसि करहिं पुकारा ॥२७४॥[18]

---

१. (घ) लखन = लछमन । (क) ने = नहि । (ग) मैं = मै ।
२. (क) के = का । (क) नहिं = नहि ।
३. (क), (ग) (घ) सोने म्रिगा = सोने का म्रिगा । (ग) वोसे = वोसै ।
४. (ग) खंइचि के = खैंचिके ।
५. (क) सौंपा = सौंपी । (ग) सौंपा = सौंपि ।
६. (घ) राम पलटि = लवटि ।
७. (घ) के = कै । (ग) रेखा = रेखै । (ग) बैठु = बैठी ।
८. (घ) लखन = लछमन । (ग) सत जिव = सत ।
९. (क), (घ) सब = सम ।
१०. (ग) लखन = लछमन ।
११. (क) इहवां = इहां । (क) (ग रावन कीन्ह = रावन खल कीन्ह ।
१२. (घ) कंह = के ।
१३. (क) रावनो = रावनौ ।
१४. (ग) लखन = लछन । (ग) (घ) कछु = किछु ।
१५. (क) नारीचोर = नारी चोराए ।
१६. (क) के = कै । (ग) के = कंह ।
१७. (घ) देखा = देखहि ।
१८. (घ) देखा = देखे ।

जौं लगि सतगुर मिलै न दाता ।[1] तौं लगि काल करै उतपाता ॥२९३॥[2]
खोजहु सतगुर जो जिव बाँचै । नाहिं तौ काल सदा सिर नाचै ॥२९४॥
नाहिं तौ जम्ह के हाथ बिकाना ।[3] खोजहु सतगुर निर्मल ग्याना ॥२९५॥
चीन्हे बिना सुर नर मुनि गएऊ । मन परपंच जानि नहिं भएऊ ॥२९६॥
रिखि जो जाए तपस्या कीन्हा ।[4] बिम्बि द्रिस्टि माहीं चित दीन्हा ॥२९७॥
कुदिस्टि नारि तासु चित लागा ।[5] मछोदरि बसि काम जो जागा ॥२९८॥
सो रिखि काल के हाथ बिकाना । ता करि छिप्ति जो करै बखाना ॥२९९॥[6]
जो इस्त्री ग्रहि राखिन्ह जोगा ।[7] सो जन छल बस कीन्हो भोगा ॥३००॥[8]
तासु नारि सो भए जो ब्यासा ।[9] कीन्हो बेद ग्यान परगासा ॥३०१॥
ताके सब ब्रह्मा करि भाखै ।[10] सोई बेद जगत सब राखै ॥३०२॥
पाखंड करि के ग्यान सुनावै ।[11] सकल जोग जुगुति नहिं पावै ॥३०३॥
सत बिबेक बिरला केहु भएऊ ।[12] सोइ मता मुनि ग्यानिन्ह ठएऊ ॥३०४॥[13]
सो मगु चलत सुगम सब भागै ।[14] ममता ग्यान जोग रस पागै ॥३०५॥
ब्यासपुत्र सुकदेव जो भएऊ । जोग जुक्ति ध्यान मत ठएऊ ॥३०६॥
ब्रह्म बिबेक भगति उन्हि जाना । एकै ब्रह्म द्रिस्टि मँह माना ॥३०७॥[15]

---

१ (क) न = नहिं । (क) (घ) मिलै = मिलै ।
२ (क), (घ) (ङ) करै = करै ।
३ (ग) तौ = त । (क), (ग), (ङ) जम्ह = जम ।
४ (क) जो = जो । (क) (ग) (ङ) तपस्या = तपेस्या ।
५ (क) तासु = तासो ।
६ (क) जो करै = जब करै । (ङ) पंक्ति-व्यत्यय—
ता करि छिप्ति करै बखाना ।
सो रिखि जम के हाथ बिकाना ॥
७ (क) राखिन्ह = राखै । (घ) राखिन्ह = राखिन्हि ।
८ (क), (ग) (ङ) जन = मन ।
९ (क) तासु = तासि । (क) सो भए जो = सो भयो । (घ) सो भए जो = सो भैउ जो । (ङ) सो भए जो = सो भएयो ।
१० (क) 'ताके सम कोइ ब्रह्मा करि भाखै ।' (घ) 'ता कह सम ब्रह्मा कै भाखै ।' (ङ) 'ताके सम ब्रह्मा करि भाखै ।'
११ (क), (घ) करि कै = करि कै ।
१२ (क) केहु = कै । (घ), (ङ) केहु = कोइ ।
१३ (घ) सोइ = सो । (क), (ग) (ङ) ग्यानिन्ह = ग्यानी ।
१४ (क) (ग) (ङ) सब = सम ।
१५ (क) एकै = एक । (ग) एकै = एकै । (क) मँह = मैं । (घ) मँह = में । (ङ) मँह = मँह ।

अनल तूल के होए परसंगा ।[1] पल में जारि करे सब भंगा ॥२८३॥[2]
जापर द्रिस्टि मारो की लागी ।[3] सीतल तन अगिनी होए जागी ॥२८४॥[4]
जैसे हँडिया अदहन दीजै ।[5] आगि लगाए गर्म करि लीजै ॥२८५॥[6]
आगी आन वाफ को आवै ।[7] कामिनि सग काम जो मार्व ॥२८६॥
होए परसंग जहाँ तप मलीना ।[8] जैसे छीर खटाई मीना ॥२८७॥[9]
जैसे घून काठ में लीन्हा ।[10] सब रस लेइ छाडि को दीन्हा ॥२८८॥
निति निति हीरा झारे जो कोई ।[11] झारत झारत घुनि घुनि लेई ॥२८९॥
तैसे ब्रह्म भया जो छीना ।[12] गया तप जिव भया मलीना ॥२९०॥[13]
बिना काम तप नाहीं जागी ।[14] जोगी जुगुति जतन से पागी ॥२९१॥[15]

दोहा

कहैं दरिया समुझहु ग्यानी[16] जोग जुगुति निजु ग्यान ।
मानहु सब्द हमारा[17] जो जिव रहे अमान ॥२२॥[18]

चौपाई

जुगुति बिना सब जोग बौराना ।[19] जौं लगि जुगुति ग्यान नहि जाना ॥२९२॥

---

१ (क) तूल के = तुले के । (ग) तूल के = तूल का ।
२ (क) में = मई । (क), (ग) (घ) करे = करै ।
३ (क) जापर = जहाँ पर ।
४ (ग) तन = तेम ।
५ (घ) जैसे = जइसे ।
६ (घ) गर्म = गरम ।
७ (क) (घ) आगी आन = लागी आन । (घ) आगी आन = लागी आगि ।
८ (क) 'होए परसंग तहां करे मलीना ।' (ग) 'होए प्रसंग जो तप मलीना ।'
९ (क) (ग), (घ) खटाई = खटाइ ।
१० (क), (ग), (घ) जैसे घून काठ का लीन्हा ।
११ (क) हीरा झारे जो कोई = हीरा झारै कोई । (ग) हीरा झारे जो कोइ = हीरा झारै जन कम कोइ । (घ) हीरा झारे जो कोई = हीरा झारै जो कोई ।
१२ (क) तैसे = तेहिसो । (घ) [illegible] = तइसे ।
१३ (क) जिव = जो ।
१४ (क) जागै = जागे । (ग) जागे = जागी ।
१५ (क) पागे = पागे । (ग) पागै = पागी । (क) (ग) से = सो ।
१६ (ग) समुझहु = सुनु । (ग) ग्यानी = ग्यान ।
१७ (क) हमारा = हमार ।
१८ (क) जो = जौ ।
१९ (क) 'जुगुति बिना जोगी बौराना ।'

मनसा पूत तहाँ से गएऊ ।[1] इन्द्र समाज जहाँ सब रहेऊ ॥३२०॥
इन्द्र ऊठि के आसन दीन्हा ।[3] बहुत भाँति सो आदर कीन्हा ॥३२१॥[4]
तब रिखि ऐसन बोलि बिचारी ।[5] नाच देखा बहु सुंदर नारी ॥३२२॥[6]
सब अरमथि के बेगि बोलाई ।[7] सग समाज तहाँ चलि आई ॥३२३॥
उलटा पलटा कीन्हों साजा ।[8] रिखि के मन में लागी लाजा ॥३२४॥[9]
काम रूप उर में बसि आई । रिखि के मन में क्रोध लगाई ॥३२५॥[10]
काल रूप रिखि माहीं चीन्हा ।[11] ताके रिखी स्राप जो दीन्हा ॥३२६॥[12]
तीन तुरंगिनि निसु होए नारी ।[13] सवा लाख जिव घात सुधारी ॥३२७॥[14]
कीन्ह तपस्या तन मन धारी ।[15] सो कौतुक का देखी नारी ॥३२८॥
अंत छोड़ि बुधि करे महारा ।[16] ता सिर काल खेले बरिआरा ॥३२९॥[17]

दोहा

देखहु कौतुक सब मिलि[18] मनमथ भाव अनंग ।[19]
सत शब्द चिन्हे बिना काल करे जिव भंग ॥२४॥

---

१ (क) से = ते ।
२ (क) 'इन्द्र समाज जहाँ सब रहेऊ' । (ग) 'इन्द्र सभा जहवाँ सब रहेऊ' । (घ) 'इन्द्र समाज जहवाँ सब रहेऊ' ।
३ (ग) 'इन्दर उठि आसन दीन्हा' ।
४ (क) (ग) (घ) सो = क ।
५ (क) (ग) (घ) बोलि = बोले ।
६ (ग) देखा = देखी ।
७ (क) (घ) अरमथि के = अरमथि कै । (ग) अरमथि के = अरमथि कहँ । (अप्सरी)
८ (क) (घ) कीन्हो = कीन्हो ।
९ (क) (ग) (घ) मन में = मन महँ ।
१० (क) (ग) (घ) मन में = मन महँ ।
११ (ग) काल रिखि माहीं चीन्हा ।
१२ (ग) स्राप = सराप ।
१३ (क) निसु = सो ।
१४ (क), (ग), (घ) सुधारी = सुधारी ।
१५ (क) (ग) (घ) तपस्या = तपेस्या ।
१६ (क), (ग) (घ) बुधि = बुधि । बुधि स्वीकृत ।
१७ (क) खाल = काले ।
१८ (क) (ग), (घ) सब = सम ।
१९ (ग) मनमथ = मंमथ । (क) भाव = भो ।

उलटि पास नहिं कहे समुझाई ।[1] ऐसो ब्रह्म ग्यान उन्हि पाई ॥३०८॥
भए सिद्ध जो ब्रह्म पुनीता ।[2] सास्तर बेद पढ़ा नहिं गीता ॥३०९॥[3]
ब्रह्म सरूप ग्यान उन्हि जाना ।[4] जोगी सो जो मन पहचाना ॥३१०॥

दोहा

मन परखे बिनु जोगी[5], हारे मोहनि मारि ।[6]
कहैं दरिया परगट देखो, सत्त सब्द निरुआरि ॥२३॥

चौपाई

राम रिखी दुर्बासा रहेऊ । जहवा जन्म त्रिस्न के भएऊ ॥३११॥[7]
कीन्हो जोग जो आसम चारा ।[8] कंद मूल दुधि कीन्ह अहारा ॥३१२॥
आसन बाधि के जोग समाधी ।[9] जोग जुक्ति रहे तन साधी ॥३१३॥[10]
निरकार के सुमिरहिं ग्याना ।[11] रच्छक भच्छक नहिं पहचाना ॥३१४॥
कवन पुरुस करे प्रतिपाला ।[12] कवन मारे बान बिसाला ॥३१५॥[13]
को मालिक को सरजनिहारा ।[14] ग्यान गमी नहिं कीन्ह बिचारा ॥३१६॥
मन हंकार तपस्या किएऊ ।[15] ब्रह्मा एक निरंजन ठएऊ ॥३१७॥
मनसा ध्रुव जो तन में लागा । इंद्री काम रसना रस पागा ॥३१८॥
नासा चक्षु चाहि रस भोगा ।[16] पांचो इंद्री सटरस रोगा ॥३१९॥[17]

---

१ (ग) नहिं = के । (क) कहे = कहै । (घ) कहे = कहा । (क), (ग), (घ) समुझाई = बुझाई ।
२ (क), (ग) भए = भया । (घ) भए = भयो । (ग) ब्रह्म = ग्यान ।
३ (क) सास्तर = सास्तिर ।
४ (क) 'ब्रह्म निरंजन ग्यान समाना ।' (ग) 'ब्रह्म संपूरन ग्यान उन्हि जाना ।'
५ (क), (ग), (घ) परखे = परखै ।
६ (क), (ग) हारे = हारै ।
७ (घ) त्रिस्न = बिस्नु । (क), (ग) (घ) के = कै ।
८ (क) 'कीन्हो जोग आतम कह चारा । (ग) (घ) कीन्हो जोग आतमा चारा ॥
९ (क) 'आसन बाँधि जोग जो साधी ।' (ग)—'आसन बाँधि कियो जोग समाधी ।'
१० (घ) 'जोग जुगुति रहै सो साधी ।'
११ (घ) के = कै ।
१२ (क) (ग) (घ) करे = करै ।
१३ (घ) कवन मारे = कवन जो मारे ।
१४ (ग) को = की ।
१५ (क) (ग), (घ) तपस्या = तपेस्या ।
१६ (क) (ग), (घ) चाहि रस = चाहै रस ।
१७ (ग) पांचो = पाँच ।

करे भगति निजु प्रेम सुधारा ।[1] ताको भेद उतारहिं पारा ॥३४४॥[2]
सत्त नाम भाखो माहि भाखै ।[3] सत्त सुरति निरखै चित राखै ॥३४५॥[4]

दोहा

कहँ दरिया सिर ताज है, सब विधि पूरन राम ।[5]
ताते भेद उतारही, सुफल होत सब काम ॥२५॥

चौपाई

संत होइ संतोष में आवै । सील संतोष प्रेम रस पावै ॥३४६॥
साहब सत्त जो हमहिं देखावा ।[6] अगम ग्यान कहि जग समुझावा ॥३४७॥[7]
सत्त ग्यान कथा यह बानी । समुझहु संत प्रेम रस खानी ॥३४८॥[8]
जो कोइ सब्दहि करे बिबेका । सत्त नाम ग्यान गमि पेखा ॥३४९॥
सत्त कहा धोखा मति मान ।[9] एहु भेद सतगुर सब जान ॥३५०॥
करता कीतम कहउँ बिचारा । सत्त पुरुष इन्ह सबते न्यारा ॥३५१॥
दुआपर जन्म क्रिस्न के भएऊ ।[10] राम क्रिस्न दोए एकै रहेऊ ॥३५२॥[11]
एक ब्रह्म दुइ धरा सरीरा ।[12] अगम ग्यान कह्यो मति धीरा ॥३५३॥
बासुदेव के ग्रिहि जन्मे आई ।[13] नंद सुत जो जाए कहाई ॥३५४॥[14]
कंस निकंदन मरदन मूवा । अनंत रूप बिसंभर पूता ॥३५५॥
संत के संत दुस्ट के दूरा ।[15] तप सितल तन धरा सरीरा ॥३५६॥[16]

१ (क) (ग) करे = करै ।
२ (घ) ताको = ताकौं ।
३ (घ) सत्तनाम = सतनाम ।
४ (क) (ग) सत सुरति निरखै चित राखै ।
५ (क) (ग) राम = काम । (क), (ग) (घ) सब = सम ।
६ (क) देखावा = देखावै । (घ) देखावा = देखाया ।
७ (क) समुझावा = समुझावै । (ग) समुझावा = समुझाया ।
८ (क) 'समुझहु प्रेम तत रस खानी ।' (ग) (घ) समुझहु = समुझहिं ।
९ (क) कहा = कहाँ ।
१० (घ) क्रिस्न के = क्रिस्न कर ।
११ (ग) राम क्रिस्न = राम किस्न ।
१२ (घ) एक = एकै ।
१३ (घ) बासुदेव के ग्रिहि = बासुदेव ग्रिहि । (ग) (घ) जन्मे = जन्मेओ ।
१४ (क) 'नन्द के सुत जो जाए कहाई ।' (घ) 'नंदसुत तब जाए कहाई ।'
१५ (ग) दुस्टे = दुस्टै ।
१६ (क) 'तप सिला तन धरै सरीरा ।' (ग) 'तपत सिली तन धरे सरीरा ।' (घ) 'तपत सि तन धरा सरीरा ।'

चौपाई

ामिनि काम खेले परचंडा ।[1] सात दीप कहिए नव खंडा ॥३३०॥
ोगी जोग बहुत जो कीन्हा । कामिनि काल बाँधि जिव लीन्हा ॥३३१॥
ब चीन्हे सत सब्द की बानी । मंडे लोहा बचे सो प्रानी ॥३३२॥[2]
ब्द लागि रन करे सुधारा ।[3] काटे काल कुबुधि कए धारा ॥३३३॥[4]
ाए हिरमर निरमल ग्याना । कहो जंम के काह बखाना ॥३३४॥[5]
ान्हि गहा सतगुर परवाना । जग में परगट उन्ति प्रमाना ॥३३५॥[6]
त साहब करहीं प्रतिपाला । काटहि काल कुबुधि के जाला ॥३३६॥[7]
ाके लेह अपने ग्रिहि राखा ।[8] सत्त सब्द निरने हम भाखा ॥३३७॥
ोव माने तब करहु विचारा ।[9] ताके लेह उतारो पारा ॥३३८॥[10]
ोटि जन्म के कागज कीरा ।[11] नाहि कस्ट काल कै पीरा ॥३३९॥[12]
त नाम सामर्थ हहि भाई । तासो काल सदा डर खाई ॥३४०॥[13]
तपुर्स से करे ना जोरा ।[14] भरे तेज तब करे निहोरा ॥३४१॥[15]
ानुस वान नहि देखा हाथा । कोपहि काल ठेठावहि माथा ॥३४२॥
ो जन हुकुम सत्त के राखै ।[16] तासो काल ओर नाहि भाखै ॥३४३॥[17]

---

१ (क), (ग) खेले = खेलै ।
२ (क) मंडे = मंडै । (क), (ग) बचे = बाँचै ।
३ (क), (ग) (घ) करे = करै ।
४ (क) काटे = काटै । (क) (ग) कुबुधि कए = कुबुधि के
५ (क) कहो जम के काह बोलाना । (ग) 'कहो ना जम कै काहा बउराना' ।
६ (क) (ग) (घ) प्रमाना = मिलाना ।
७ (ग) के = को ।
८ (ग) ग्रिहि = पंह । (ग) ताके लेह = ताकहं लेह ।
९ (क), (ग), (घ माने = मानै । (ग) तब = त । (ग) तब = तो । (घ) करहु = करो ।
१० (ग) 'ताकहं लेह उतारहि पारा' ।
११ (ग) के = कै । (क) (ग) कागज = कापर ।
१२ (क) कै = को (ग) । कै = के । (घ) कै = कर ।
१३ (क) तासो = तासौ ।
१४ (क) (ग) से = सै । (क, ग) करे = करै ।
१५ (क) भरे = भरै । (ग) भरे = भरहि । (क) (ग) करे करै ।
१६ (क) (ग) कै = के ।
१७ (ग) तासो = तासै ।

कुवरी लेइ अपने ग्रिहि आई ।[1] सो करता की किर्तम भाई ॥३७२॥

साखी

सत्त पुर्ष पासंड नहीं यह किर्तम को नाम ।
छल बल बुधि के मारे, सोइ क्रिस्न सोइ राम ॥२६॥[2]

चौपाई

सत्त पुरुष मत करो बिचारा । सतगुर सब्द करहु निरुआरा ॥३७३॥[3]
जाके दरस जीव कष्ट होई ।[4] सत्त सब्द बिचारे सोई ॥३७४॥[5]
पाछे क्रिस्न मनसा जो कीन्हा ।[6] छल बल से रुकुमिनि के लीन्हा ॥३७५॥[7]
सतभामा रुकुमिनि जो रानी ।[8] कीन्ह ब्याह स्वादिक सब जानी ॥३७६॥[9]
तिन्हके गर्भ जो रहा संजोगा । भया पुत्र जाने सब लोगा ॥३७७॥[10]
बिना बीज नहिं होए संजोगा । नारी पुर्ष करे रस भोगा ॥३७८॥[11]
रुधिर नीर होए एक सगा ।[12]परे बीज तब उपजे अंगा ॥३७९॥[13]
ताके मधुतामन्न सम भास । कामिनि काम सदा चित रास ॥३८०॥[14]
बिना स्वाद का भोग बखाना ।[15]षटरस भोजन रसना जाना ॥३८१॥
बिना काम कामिनि का नेहा ।[16]बिना बीज किमि उपज देहा ॥३८२॥[17]

---

१ (ग) कुवरी = कवरिही ।
२ (ग) क्रिस्न = क्रिश्न ।
३ (ग) सत्त सब्द करहु निरुआरा ।'
४ (क) कष्ट = कंह ।
५. (क), (ग) (घ) बिचारे = बिचारै ।
६ (क), (घ) पाछे = पाछै ।
७ (क) के = कह । (ग) के = हरि ।
८ (क) सतिभामा रुकुमिनि जो नारी । (ग) सतभाम औ रुकुमिनि रानी । (घ) सतभाम रुकुमिनि जो रानी ।
९. (क) 'कीन्ह बिआह सम कम पटानी । (ग) (घ) कीन्ह ब्याह सम स्वादिक जानी ।
१० (क), (ग) (घ) सब = सम ।
११ (क) (ग), (घ) करे = करै ।
१२ (क) होए = होवै ।
१३ (क) परे = परै । (क) उपजे = उपजै । (ग) परै बीज उपजै तब अंगा ।
१४ (क) (ग) 'कामिनि हेत सदा चितलावै' ।
१५. (क) का = को । (घ) भोग = काम ।
१६ (क) 'बिना काम कामिनि नहि नेहा ।' (ग) बिना काम का कामिनि का नेहा ।' (घ) बिना काम का कामिनि नेहा ।
१७ (ग) 'बिना बीज का उपजै देहा ।'

अनंत रूप जो ब्रह्म कहावै । मनमत भाव सबन्हि के भावै ॥३५७॥[1]
जोगी अति सब ध्यान लगावै । सो गोरस रस घर घर खावै ॥३५८॥[2]
बाल सरूप नंद घर डोलै ।[3] मधुरी बानी रंग रस बोलै ॥३५९॥[4]
बाल सरूप फिरि भया सेआना ।[5] ब्रिंदाबन रस रंग जो ठाना ॥३६०॥[6]
मुख मुरली लिए आपु बजावै । पर जुवतिन्हि से प्रेम बढ़ावै ॥३६१॥[7]
जमुना जल छेके जो घाटा ।[8] लेइ दान छोड़ै सब बाटा ॥३६२॥[9]
दही दूध सब खाए चोराई ।[10] माखन महि खाये नहि माई ॥३६३॥
सो ठाकुर को चोर कहावै । चोरी करि अपने घिहि आवै ॥३६४॥[11]
रहै निरंतर सब घर चोलै ।[12] बाल गोपाल लिए संग डोलै ॥३६५॥
भीजै पीठि पेन्हावै सारी । रहै राधे बसि कुंजबिहारी ॥३६६॥[13]
नारद बैठे करहि बिचारा । मन चरित्र प्रभु के निरुआरा ॥३६७॥[14]
कंस हंकार गर्ब जो कीन्हा । मन चरित्र उन्हहु नहि चीन्हा ॥३६८॥
देवता दैत के करनी भीना । जैसन करनी सो फल लीन्हा ॥३६९॥
कंस दैत रहै परचंडा ।[15] मारेओ नाथ भया सतखंडा ॥३७०॥[16]
माहि मारि कुबरी के लीन्हा ।[17] क्रिस्न चरित्र बिरला केहु चीन्हा ॥३७१॥[18]

---

१ (क) भाव = रूप । (ख), (ग), (घ) सबन्हि के = सबन्हि कर ।
२. (क), (ग), (घ) रस = घर ।
३ (ग) डोलै = डोला ।
४ (ग) बोलै = बोला ।
५. (क), (ग) बाल सरूप = बालरूप ।
६ (ग) रस रंग = रंग रस ।
७. (क) 'पर जुवती से प्रेम बढ़ावै ।' (ग) से प्रेम = से प्रेम रंग ।
८ (ग), (घ) जो = से ।
९. (क) छोड़ै = रोकै । (ख), (ग), (घ) सब = सम ।
१० (क) खाए = खाइ ।
११ (क) चोरि करिकै अपने घर आवै । (ग) आवै = आवैं ।
१२. (क), (ग) (घ) सब = सम ।
१३ (क) रहै = रहै । (ग), (घ) रहै = रहु ।
१४ (क) प्रभु के = केहु केहु । (ग) निरुआरा = नेरुआरा ।
१५. (ग) रहै = रहा ।
१६ (क) भया = करै ।
१७. (क), (ग) (घ) मारि = तारि ।
१८. (ग) क्रिस्न = किसुन ।

चौपाई[1]

क्रोध नाम केहु का हए भाई ।[2] कवन क्रोध से सब नसाई ॥४०४॥
सत्त सब्द कहबे निरुआरी ।[3] झारी लोहा कहब परचारी ॥४०५॥[4]
सत सब्द जो उलटै भाई ।[5] तोरब मान कहब समुझाई ॥४०६॥
संतनिका सुनब नहिं काना ।[6] मरदब मान कि छोड़ब ठेकाना ॥४०७॥
नेकी कारन कहब बुझाई । जाते काल कुबुधि नहिं खाई ॥४०८॥[7]
काम अगावन नारि जो भाई । ध्यान द्रिष्टि से दूरि नसाई ॥४०९॥
वाके नाम क्रोध नहिं भाई । ध्यान लोहा मंडे चित लाई ॥४१०॥
बुझा बेबुझा देव नहिं लापा ।[8] छोड़ समासब मन के दापा ॥४११॥[9]
निसाफ देखिके बोलब बानी ।[10] एहि में दोख न लागे ग्यानी ॥४१२॥
सत में काहु न लागै पापा ।[11] सतनाम ताको परतापा ॥४१३॥
क्रोध ब्रह्म बसे जो पासा । कबहिं के कवन करे तमासा ॥४१४॥
कबहिं के डगमग बोल बानी । सामरथ आपु बचावहिं ग्यानी ॥४१५॥[12]
मन के सुमिरहिं तपसी जोगी । मनसा बुत कर रस भोगी ॥४१६॥
मन के लागे करे बिनासा ।[13] सुर नर मुनि सिव डारे फांसा ॥४१७॥
सिधी रिधि जो मन के भागी । मनमत ध्यान जोग जो जाग ॥४१८॥
बस्ती छोड़ि जंगल के गएऊ । जोगमाता तहाँ जो ठएऊ ॥४१९॥[14]
कंद मूल जो कीन्ह अहारा ।[15] एता कष्ट जो तन के जारा ॥४२०॥[16]

---

१ (घ) अपठित ।
२ (क) केहु का हए = केहि कहिये । (ग) केहु का हए = केहि कहा है ।
३ (क) कहबे निरुआरी = कहब निरुआरी । (घ) सत सब्द एह करो बिचारी ।
४ (घ) झारी लोहा करो निरुआरी ।
५ (घ) सत = सत्त ।
६ (घ) संत = सत्त ।
७ (क) काल = जीव ।
८ (क) (ग) बुझा बेबुझा = बोझा बे बोझा । (क) (ग) देव = देह । (घ) लापा = सरापा ।
९ (क) समासब = सम्हारब । (ग) समासब = समारब । (क), (ग) के = कै ।
१० (क) बोलब = बोलै ।
११ (क) में = मह । (क) न लागै = लागै नहिं । (ख) न लागे = लागु न । (ग) न लागे = ना लागहिं ।
१२ (क), (ग), (घ) ग्यानी = बानी ।
१३ (क) के लागे करे = के लागे सब करे । (ग) के लागे करे = कै लागै करे ।
१४ (क) (ग) (घ) तहाँ = तहवाँ ।
१५ (क) जो = सम । (ग) जो = जस ।
१६ (घ) जो = करो ।

ब्रिज छोड़ि द्वारिका गएऊ । नंद कलपि अपने ग्रिहि रहेऊ ॥३८३॥
जाए द्वारिका मंदिल संवारी । कीन्ह भोग सब सुन्दरि नारी ॥३८४॥
कंचन मंदिल जो तहां सवारा । उपजत विनसत लागु न वारा ॥३८५॥
दुर्वासा स्राप परा तेहि माई । जादो खपी मरे सब भाई ॥३८६॥
पद्मिला मोएल जानिके दीन्हा । कालरूप ब्याधा जो कीन्हा ॥३८७॥
मारा ब्याधा बान बिसाला ।[1] निकरा तन में दुख जो सासा ॥३८८॥[2]
निकला प्रान जो तन के त्यागा । दुर्वासा स्राप किस्न कंह लागा ॥३८९॥

साखी

छप्पन कोटि जादो गए, काल कुबुधि के पास ।
उपजि बिनसि मरि जात है, धर्मराए के बास ॥२७॥

चौपाई

एक तन छूटै भक्ति विवेखा । सो जिव परे साहब के लेखा ॥३९०॥
जो जन भक्ती तन मन लागा । सत्त सब्द से जो अनुरागा ॥३९१॥
ताकर जीवन जन्म सुधारा । जो निजु मान सब्द हमारा ॥३९२॥
सत चरन निजु करे नेवासा । ताके त्रिविधि ना व्यापै पासा ॥३९३॥
सतनाम में रहे समाई । चीन्हे काल कुबुधि के भाई ॥३९४॥
सामरथ हमके कहा बुझाई । चीन्हो सत जिव बाचे भाई ॥३९५॥
सत सुवास अम्रित रस भास ।[3] सजीवनि नाम सुरति तहं रास ॥३९६॥[4]
उदकल अगिनि जल पावन दीन्हा । प्रान पिंड तहवां रचि लीन्हा ॥३९७॥
जठर अगिनि तहवां उदगारा । जल पवन तेहि भीतर सारा ॥३९८॥
ता बिच नाल कमल को धारा । ऊपर मूल हेठ डाहु पसारा ॥३९९॥
तामें पवन संचार करई । अस्टदल कमल फूल तहां रहई ॥४००॥
कमल बीच उनमुनी दुआरा । संचरे जोति होए उजियारा ॥४०१॥
करे विवेक ग्यान जो पावै । भंवर जो फांसी पाटे आवै ॥४०२॥
सब चीन्हें सब चोरा त्यागै ।[5] सत्त बिचारि सोइ निजु पागै ॥४०३॥

साखी

क्रोध अगिनि छेमा करो, सीतल परिमल बास ।
भिरगा आपु बूझै नहीं बूझन फीरे घास ॥२८॥[6]

---

१ (ग) (घ) ब्याधा = ब्याधे ।
२. (क) निकरा = निकसत । (क) (ग) (घ) जो = धनि ।
३ (घ) अम्रित = अमिरित ।
४ (क), (ग) (घ) सजीवनि = सजीवन ।
५. (क) (ग) (घ) सब = सभ ।
६ (क) (ग) फीरे = फिरै ।

चिन्हहु ध्यान निजु सब्द हमारा । जो चाहो निजु मुक्ति करारा ॥४३४॥[1]
गौतम रिखी विगुरचे जानी ।[2] नाधि कास जिन कीन्हो हानी ॥४३५॥[3]
बिसम बान उर गहि के मारे ।[4] सत्त सब्द बिनु कवने तारे ॥४३६॥[5]
पंडु के पंडुता भया जो रोगा ।[6] ता सु मारि पाप से भोगा ॥४३७॥[7]
कीन्हो कर्म जो कुंता नारी ।[8] एक नारी है पांच भतारी ॥४३८॥
पांचो पांडो पाप से भएऊ । कुंतिन के कन्या सब कहेऊ ॥४३९॥[9]
पांच भतारी द्रोपति भएऊ । पांचो जने के सेवा ठएऊ ॥४४०॥[10]
देखो सब मिलि करो विचारा ।[11] एक नारी है पांच भतारा ॥४४१॥[12]
काकर पुत्र कवन है नारी ।[13] पाप पिता है एक महतारी ॥४४२॥[14]
ऐसन कौतुक सभ मिलि जानै ।[15] ताके सब कन्या कै मानै ॥४४३॥[16]
एक एक राग सबन्हि कहु दीन्हा ।[17] बहुत जतन कै बेदहि चीन्हा ॥४४४॥
पंडित बेदहि सब केहु बूझा ।[18] रसना इन्द्री सब रस सूझा ॥४४५॥[19]

---

१ (ग) च्यौ चाहहु । (क) जो चाहहु ।
२ (क) (ग) (घ) विगुरचे = विगुरचै ।
३ (क) (घ) नाधि कास जिन कीन्हो हानी । (ग) नाधि कास करै बिअहानी ।
४ (क) उर गहि के = उर गहि । (क) मारे = मारे ।
५ (क) तारे = तारे ।
६ (ग) भया = भैव ।
७ (क) (घ) पाप से भोगा = पांच रस भोगा । (ग) पाप से भोगा = पंच संग भोग ।
८ (क) कीन्हो = कीन्ह ।
९ (क) (ग), (घ) कुंतिन के = कुंता के ।
१० (क), (ग) (घ) जने = पंडो ।
११ (ग) देखो = देखहु । (ग) (घ) विचारा = विचारी ।
१२ (ग), (घ) भतारा = भतारी ।
१३ (क) काकर = केकर । (ग) कवन = कवरि
१४ (क) 'पांच पिता एकै महतारी ।
१५ (क) सभ मिलि = सभ कोइ । (ग) सभ मिलि = सभ केहु । (क) (ग) जानै = जाना ।
१६ (क) मानै = माना । (ग) मानै = मानौ ।
१७ (क) कहु = के । (ग) 'एक एक राग कहु सभ कंह दीन्हा' । (घ) 'एक एक राग इन्हि सभ कंह दीन्हा ।'
१८ (क) सब केहु बूझा = सभ कोइ बोझा । (ग) केहु = कोइ ।
१९ (क) सब = सभै ।

मोहनी एक जो कीन्ह सिंगारा । नख सिख सुंदरि रूप संवारा ॥४२१॥[1]
लीन्ही मेवा फल दुइ धारी ।[2] चली दगावन रिखि के नारी ॥४२२॥
फल लेई रिखि आगे दीन्हा ।[3] मोहनि रूप होए बसि कीन्हा ॥४२३॥
करे डंडवत बोल बानी । मन परपंच रिखी नाहि जानी ॥४२४॥
बोले रिखि तब छोडा मवना । कहवा तें तुम्ह कीन्हो गवना ॥४२५॥
फल लेई रिखि मुखि में दीन्हा ।[4] बहुत प्रेम करि पावन लीन्हा ॥४२६॥[5]
तब रिखि ऐसन बोल बिचारी । कहवां फल फूले फुलवारी ॥४२७॥[6]
मई वाटिका मन्दिल हमारा । तहां मेवा सब भांति संवारा ॥४२८॥[7]
रिखी तपस्या पूरन कीन्हा । इन्द्र सेवा हमें कह दीन्हा ॥४२९॥[8]
चले तुरत कामिनि के धामा ।[9] जहा वाटिका सब सुखकामा ॥४३०॥

साखी

सो रिखि लूटा काल न, भया कामिनि परसंग ।[10]
सत सब्द चीन्हें बिना, काल करे जिव भंग ॥२६॥[11]

चौपाई

मन की भाई काम बिगारे । जीव भेद परले तर डारे ॥४३१॥[12]
माया छोड़ि मोहनी संग लागे ।[13] मोहनी छोड़ि माया संग लागे ॥४३२॥[14]
मोहनी माया होए परसंगा ।[15] सबहि के काल करे जिव भंगा ॥४३३॥

---

१ (ग) सुन्दरि रूप = सुन्दर रूप ।
२ (ग) ली न्ही = लीन्हो ।
३ (क), (ग) 'फल लै रिखिके आगे दीन्हा । (घ) फल के लैइ रिखि आगे दीन्ही ।
४ (ग) रिखि मुखि में = रिखि तब मुख में ।
५. (क) (ग) प्रेम = प्रीति ।
६ (क) फल = फूल । (ग) फल = फरे । (क) फूले = फूला ।
७ (क) तहां = तहवां । (क) सब भांति = सब भांति ।
८ (घ) इ दर हम सेवा कहि दीन्हा ।
९. (ग) के = कै ।
१० (क) (ग) (घ) भया = भौ ।
११ (क) (घ) करे = करै ।
१२. (क) (ग) (घ) बिगारे = बिगारै । (क) (ग) परले = परलै ।
१३ (घ) माया छोडि मोहनी लागे ।
१४ (घ) मोहनी माया छोडा सब लागे ।
१५. (घ) मोहनी माया हुई परसंगा ।

कहीं मकर कहिं बंग पुकारा ।[1] कहिं आरति कहिं संख सुधारा ॥४५७॥
कहिं तसबिह कहिं माला डाला ।[2] कहिं भमकी कहिं मोहि दोसाला ॥४५८॥[3]
दिल में दरद रासो न्दरवेसा ।[4] बेदरदी सो कहा संदेसा ॥४५९॥[5]
मोमना सो जो मर्महि बिचारा ।[6] हक हराम करे निरुआरा ॥४६०॥[7]
खून खराब कबहिं नहिं करई ।[8] नेकी बंदगी निस दिन धरई ॥४६१॥[9]
पाक होए पाक में भीना । असल अलाह ताहि को चीन्हा ॥४६२॥[10]
बेबाहा जो नाम बखाना । बकीमति सिफ्ति मो जाना ॥४६३॥
असल नाम पाक है सोई ।[11]बेबाहा नाम सत्त है सोई ॥४६४॥
गोसा गमी दुन्हू के त्यागी ।[12]हुनोज जिकिर दिल अंदर पागै ॥४६५॥
खून खराब दुनो से न्यारा । सो दरवेस अलाह का प्यारा ॥४६६॥
खून खराब एहि महँ भूला ।[13]दोजक द्वार जीव सो भूला ॥४६७॥[14]
पकरि जीव खून करि खाई । सो सिताब दोजख के जाई ॥४६८॥[15]
हुकुम साहं का नाहीं माना । पढ़ी कोरान का सिफ्ति बखाना ॥४६९॥[16]
मुख से सिफ्ति बहुत जो जाना ।[17]दिल में दरद कबहिं नहिं आना ॥४७०॥[18]

---

१ (ख) कहीं = करी । (क) पुकारा = पुकारे ।
२. (क), (ख) (घ) तसबिह = तसबी ।
३ (क), (ग) (घ) मोहि = मोहै ।
४ (क), रासो = रासै ।
५. (क), (घ) बेदरदी सो कही संदेसा ।
६ (क), (ग), (घ) जा सो = जा मो ।
७ (क), (ग), (घ) करे = करै ।
८ (क) कबहि = करे ।
९. (क) (ग), (घ) का पाठ स्वीकृत ।
१० (क) को = है ।
११ (क) (ख) सोई = सोई । (ग) पंक्ति-व्यत्यय है—'बेबाहा नाम सत्त है सोई । असल नाम पाक है सोई ॥
१२. (क) (घ) दुनहु = दुनो ।
१३ (क) महं = में ।
१४ (ग) द्वार = दुआर ।
१५. (क) के = कै ।
१६ (ख) सिफ्ति = सीफत ।
१७ (क) से = सो । (ख), (ग) से = से ।
१८ कबहि = करे ।

स्वादिक पढ़हिं भगति नहिं जाना ।[1] ताके काल करे पिसमाना ॥४४६॥[2]
रिखी मुनी सब रहु अरुझाई ।[3] मन की प्रतिमा भगति न भाई ॥४४७॥[4]
पारा रिखि पारा जो जारा ।[5] काम कला जिव कीन्ह संघारा ॥४४८॥
गनिका रूप दीति जो कीन्हा ।[6] ता संग काम करता लीन्हा ॥४४९॥[7]
ता संग भोग जो कीन्ह वेसासा । गया तप आनो जिव नासा ॥४५०॥

साखी

सब्द हमारा मानहु करो विवेक विचारि ।[8]
सत सब्द महं चीन्हहु[9] उतरहु भौ जल पार ॥३०॥
जो हजरत सो हरि है (कोए) गीता पढ़ा कोरान ।[10]
कोए कहे मलेछ है (कोए) करु हिन्दुन को ग्यान ॥३१॥[11]

चौपाई

दुइ काजी दुनो मिलि सामा ।[12] कहिं हिंदू कहिं तुरुक कहाया ॥४५१॥
कहिं निमाज कहिं पूजा करावै ।[13] कहिं तीरथ कहिं बरत रिझावै ॥४५२॥
कहिं आदम कहिं ब्रम्हा होई । कहिं पंडित कहिं काजी सोई ॥४५३॥
कहिं कोरान कहिं पढ़े पुराना ।[14] कहीं पीर कहिं गुरु का ग्याना ॥४५४॥[15]
कहिं मुर्गा कहिं छगी मरावै । कहिं मोरिर ततबीर दिखावै ॥४५५॥[16]
कहिं पंतर सिफरा लिखि दीन्हा । कहिं मारो कहिं मरो कीन्हा ॥४५६॥

---

१ (क) (घ) भगति = भेद ।
२ (ग) ताके = ता कैह । (क), (ग) (घ) पिसमाना = पिसिमाना ।
३ (क) रहु अरुझाइ = रहे हमै अरुझाइ । (घ) रहे अरुझाइ = रहे सभै अरुझाने ।
(घ) रिखी मुनी = रिखि सब मुनि ।
४ (क) भाइ = भाइ । (घ) भाइ = आला ।
५ (क) पारा = पारस ।
६ (घ) 'गनिका दिव्यरूप जो कीन्हा ।
७ (क), (ग), (घ) का पाठ स्वीकृत । 'ख' प्रति में 'संग कैरता' ।
८ (घ) करो = करहु ।
९ (घ) चीन्हहु = चीन्हवै ।
१० (क) पढ़ा = कहा । (ग) पढ़ा = कहै ।
११ (घ) कोए = कोइ ।
१२ (घ) सामा = समाया ।
१३ (क) (ग) (घ) पूजा = पूजा ।
१४ (क) पढ़े = पढ़ा । (घ) पढ़े = पढ़ै ।
१५ (क) का = कै ।
१६ (क) कहिं ततबीर मुरीद दिखावै ।

सतपुर्स के पुत्र जो अहई । सततरि जुग सेवा जो करई ॥४८०॥[1]
कीन्ह सेवा पुर्स के आग ।[2] बहुते जुग जोग जो लागै ॥४८१॥[3]
तब पुर्स अस बोले बानी ।[4] निरंजन सेवा बहुत बखानी ॥४८२॥
पुर्स कहा मागहु कछु दीजै ।[5] सत्त बचन माथा नाए लीजै ॥४८३॥
तीनि लोक यह हम कंह दीजै ।[6] जहवां छूट असासन कीजै ॥४८४॥
तीनि लोक का रचना कीन्हा ।[7] पुहुमी सर्ग पताल जो लीन्हा ॥४८५॥[8]
परदा डारि आपु होए बैठा । आपुहि तीनि लोक मंह ऐंठा ॥४८६॥
जाकर जिव यह सकल पसारा ।[9] सत्त पुर्स से धोखा करारा ॥४८७॥[10]
छपलोक छपाए जो दीन्हा । तीनि देव परिपंच जो कीन्हा ॥४८८॥
उपजे बिनसे इहवहिं डारै । इहवहिं लेइ फिरि इहवहिं मारै ॥४८९॥
केते जुग तीनि जब गएऊ । दयावंत के दरद जो भएऊ ॥४९०॥
निरंजन हम से हुकुम जो लीन्हा । तीनि लोक के ठाकुर कीन्हा ॥४९१॥
परदा डारि निरंजन राखा । मूल छोडि दूके सब साखा ॥४९२॥
तब पुर्स सुकित के कीन्हा ।[11] आपन अंस रची जो लीन्हा ॥४९३॥
सुकित आए लेहु अवतारा ।[12] जमूदीप के मधि बिस्तारा ॥४९४॥[13]
सत्त पुर्स से बचन जो लीन्हा । आए पयाना जग में कीन्हा ॥४९५॥[14]
जमूदीप जो जम क देसा ।[15] तहवां सत्त जो कहा संदेसा ॥४९६॥[16]

---

१ (ग) करई = कहई ।
२ (ग) कीन्ह सेवा = सेवा कीन्ह । (ग) पुर्स = पुरुष । (क), (ख) (घ) लागै = लागे ।
३ (घ) (ख) लागै = लागे ।
४ (क) तब पुर्स = सतपुर्स ।
५ (क) कछु = किछु ।
६ (ख) तीनि लोक = लोक तीनि । (ग) कंह = के ।
७ (ख) का = कै ।
८ (ग) पताल = पताली ।
९ (ग) अतिरिक्त पाठ— सतपुर्स से हुकुम जो लीन्हा । आए पयाना जग में कीन्हा ।।
१० (क) (ग) सै = से ।
११ (क) तब = तबहि । (ग) तब = तब सतपुरुष ।
१२ (ग) आए = आइ ।
१३ (ग) मधि = मध्य ।
१४ (ख) आए = आई ।
१५ (ग) जम = जाम । (क) (ख) क = का । (घ) क = के ।
१६ (ग) तहवां कहा जो सत्त संदेसा ।

मैथुन औगुन करे नखाना ।[1] पढ़ी कोरान नाहिं पहचाना ॥४७१॥

साखी

असल अलाह खोए पाक है, सफा सफा उजिआर ।
हाथ पांव मुख सीस है[2] रसना दीदअम्बार ॥३२॥[3]

चौपाई

नकी बदी हुक्म सो पावै । दरवेस के मिस्कि बतावै ॥४७२॥[4]
केते पैमर भए जहाना ।[5] मरो मुए सब मिटी समाना ॥४७३॥[6]
मंजिल अगम मरम नहिं पावैं ।[7] करें खून दोजख के जावें ॥४७४॥[8]
पढ़े किताब करें अएनानी ।[9] पिवैं सराब खून खाए बखानी ॥४७५॥

साखी

तीनि लोक निरंजन, डारी ठगौरी मारि ।[10]
जो जीव आए लोक से, ताहि भरम करि डारि ॥३३॥

चौपाई

जो जिव चेते करें अचेता ।[11] अपन ग्यान से करे सचेता ॥४७६॥[12]
अपनी ओर सदा से राखै ।[13] रजगुन तमगुन तामस भाखै ॥४७७॥
दुर्ग दानि है घोर अंधारा ।[14] तीनि लोक ठगौरी डारा ॥४७८॥[15]
काके हुकुम से पुहुमी कीन्हा । कौन हुकुम तिनि लोक जो लीन्हा ॥४७९॥[16]

---

१ (क), (घ), (ङ) औगुन करे = औगुन को कर ।
२ (क) सीस = सीर ।
३ (ग) दार = डार ।
४ (घ) मिस्कि = मिस्ल ।
५ (क) (घ) (ङ) पैमर = पैगंमर ।
६ (क) मुए = मुवा । (ग) मिटी = मटी ।
७ (क) मंजिल = मंजलिस । (घ) (ङ) मंजलिसि ।
८ (क) (ग) करे = करैं ।
९ (क) (घ) करे = करैं ।
१० (क) (ङ) ठगौरी = ठगउरी ।
११ (क) (ग) करे = करैं ।
१२ (क) (घ) करे = करैं ।
१३ (क) अपनी ओर = अपन ओर । (क) से = से । (घ) से = कर
१४ (क) (घ) (ङ) दुर्ग = दुरग ।
१५ (क) (ङ) ठगौरी = ठगउरी ।
१६ (क) कौन = काके ।

सामर्थ नाम है बंदी छोरा। बांधे जीव जो नरक अघोरा ॥५१४॥
सतनाम सत पुर्ख जो कहिया।[1] अजर काया सो जुग जुग रहिया ॥५१५॥

साखी

जुग जुग हम चलि आएउ, ग्यान जो कहा बखानि।
जो बूझ निमल होवै, मेटे नरक की खानि ॥३२॥
ब्रह्म विवेक ग्यान एह, पढ़े गुने चित लाए।[2]
मुकुति पदारथ पाइहैं[3], सदा रहैं सुख पाए ॥३३॥

× × × ×

ग्रंथ संपूरन[4] ब्रह्म विवेक यह

सत पुरुष मुकित दरिया साहेब के कोटिनि सलाम।
जो कोई सिर झुका सिर नमाहै सो सबसे सतनाम।

संमत सन् १२८६ साल में तैयार हुआ दसखत हीरादास के समुझि लेना समेनाम मासिन महीना सिल्ल पक्ष एकादसी रोज सोमार पटने जिला मौजे मनपुरा का मठ पर हुआ तैयार सो सही ॥

---

१ (क), (ख) सतपुर्ख = पुर्ख।
२ (क), (ख) पढ़े = पढ़ै।
३ (ग) पाइ है = पावए।
४ (क) ग्रंथ सम्पूरन ब्रह्म विवेक जो अक्षर समो देखा सो लिखा साधु संतपुर जन जन सो मिनती मोरी चूरक अक्षर मातातीन पढ़ब सम जोरी ग्रंथ ब्रह्म विवेक लिखल तैयार भेल मासो सुदी एकादसी रोज कुन परगाना बेला दुपहर दिन पहले छमबार भेल तारीख २६ मासो सन् १२६६ साल आसकी।
(ख) ग्रंथ ब्रह्म विवेक समपूरन जो देखा सो लिखा दसखत ब्रह्मचारी मस फकीर दरियापंथ मौ- मौजे देकुली मठपर मुकिया साहेब सिरंजीलाल जी के।
(ग) ग्रंथ ब्रह्म विवेक संपूरन भयल मासल दरिया साहब मुकित नाम दिनदेयाल जोग जीत समर्थ हंस उबारन साहब के मौजम साहाबाद मौजपुर परगने बक्सरी तपे धौसी मौजे धरकंधा साहब के उबार समुझि लेना चए परगाना धरकंधा फक साहब दरिया के संमत १८१२ साल सभे नाम मिति कार्तिक सुदी अंजोरी दूज के दिन सोमार के लिखल भइल दसखत छोटराम दास फकीर दरिया साहब के आगे फकीर सेवक होए भा होवेंगे सम जो छन भा (१) जेत चूक सिखा मसा दिनमनिक्स का मठ पर भयो संतजन जन से मिनती मोरि चूरक अक्षर लेहब जोरि। सतनाम।

प्रथमहिं सत जुग में चलि आए ।[1] सुक्रित नाम जो इहाँ कहाए ॥४९७॥
सतजुग में सत सब्द बखाना । सत लोक का कहो ठेकाना ॥४९८॥
जोग संताएन नाम कहाया । सतनाम कहि ग्यानहिं दाया ॥४९९॥
जुगजुग भेद ग्यान कहि दीन्हा । जो चीन्हे आपन करि लीन्हा ॥५००॥

साखी

करुनामे के रूप धरि, मुनीन्द्र आए कहाइया ।
जोगजीत है नाम,[2] जग में ग्यान दिढाइया ॥१४॥[3]

चौपाई

कलउ कबीर कासी प्रगटाना । नाम संताएन पंथ बखाना ॥५०१॥
सत सुक्रित का धरुवो सरीरा । निर्मल ग्यान कथि कहेवो कबीरा ॥५०२॥[4]
चला पंथ जग महँ उजियारा ।[5] सतनाम एहु सब ते न्यारा ॥५०३॥
धर्मराए काहु करि झारा । एको जीवन होहिं सुधारा ॥५०४॥[6]
सत रहनी संतोस जो छूटा । सो जिव धर्मराए ने लूटा ॥५०५॥
खट दरसन को भेख जो कीन्हा । असल ग्यान सतनाम हि चीन्हा ॥५०६॥
फिरि कलऊ महँ धरा सरीरा । अगम ग्यान असल रत हीरा ॥५०७॥
सतनाम का कीन्ह बिचारा । दरिया नाम से पंथ सुधारा ॥५०८॥
कर बिबेक जो सब्द हमारा ।[7] सो जिव बचे नरक के धारा ॥५०९॥[8]
भया टकसार जो ग्यान बखाना ।[9] बूझै भेद जो निरमल ग्याना ॥५१०॥[10]
दयानंद जो नाम बखाना । दीन दयाल है क्रिपा निधाना ॥५११॥
बेवाहा नाम है सदा सहाई । सतनाम गहो चितलाई ॥५१२॥
बेवस्था नाम निरकेवल भेंटा । छूटै जरा मरन भय मेटा ॥५१३॥[11]

---

१ (क) प्रथमहिं = प्रथमी । (ग) प्रथमहिं = प्रथमे ।
२ (क) नाम = नाम एह । (घ) नाम = नाम तब ।
३ (घ) रूप = रूपत ।
४ (क), (ग) (घ) कहेवो = कहा ।
५ (क) (घ) महँ = में (ग) महँ = महा ।
६ (ग), (घ) होहिं = होहिं (क) होहिं = होए
७ (क) कर = करै ।
८ (क) (ग), (घ) बचे = बाँचे ।
९ (ग) भया = भाया ।
१० (क), (ग), (घ) भेद = मर्म । (ग), (घ) जो = सो ।
११ (घ) भय = डर ।

ग्यानमूल

साखी

सोए साहब अतिस अपार है, तिगु न गुन से पार ॥
उपजि विनसि रहि जास सब,[१] सोए तो रंग करार ॥२॥

चौपाई

राग रोग सोग सब भागा ।[२] नीर्भ ऊँभ सक्ति सुख पागा ॥११॥
प्रिय मंदिल महं एह सुख भऊ ।[३] अंतकाल दुख दारुन विएऊ ॥१२॥[४]
झूठ सो मीठ साँच गुन तीता ।[५] सिद्ध भये ब्याधी तन कीता ॥१३॥
सतगुर संत मेंठ के काया । तन छूटे पहुँचे निज धामा ॥१४॥[६]
फरे बिलास पुहुप की खानी ।[७] पुहुप बिवान अम्रित रस सानी ॥१५॥[८]
कहे विवक बिचारहु ग्यानी ।[९] सार सब्द है अम्रित बानी ॥१६॥
छपलोक सहर गुलजारा । साहब बचन मम कीन्ह बिचारा ॥१७॥[१०]
है एह साँच झूठ जनि जाने । झूठ बुझे तोहि कम्ह धरि ताने ॥१८॥[११]
छपलोक से मम चलि अएऊ । पीछे साहब दरस मोहि विएऊ ॥१९॥[१२]
बिंदा रूप गुन गहिर गंभीरा । बयार्वस निर्मल गुन धीरा ॥२०॥
प्रेम सुधा रस बोलहि बानी । लागी झरि अम्रित रस सानी ॥२१॥
हम से सुनी बचन मस कहेऊ ।[१३]सहिजादा निर्मल गुन गहेऊ ॥२२॥

साखी

छपलोक है सहर हमारा, जम्बूदीप पगु धारि ।
तुम कारन यहाँ आइया, बोले बचन बिचारि ॥३॥[१४]

---

१ (क) (ग) सब = सम ।
२. (क) (ग) सब = सम ।
३ (क) (ग) मंह = मैं ।
४ (क), (ग) विएऊ = दईऊ ।
५. (क) (ग) झूठ सो मीठ = झूठ मीठ ।
६ (क) पहुँचे = पहुचै, (ग) पहुँचे = पहुँचा ।
७ (क) (ग) फरे = फरी । (क) बिलास = बेलास ।
८ (ख) (ग) बिवान = बेवान ।
९. (क) (ग) कहे = कहेउ ।
१ (क), (ग) मम = मैं ।
११ (क) (ग) कम्ह = कम ।
१२ (क) (ग) मोहि = मम ।
१३ (क) (ग) मस = हमि ।
१४ (क), (ग) बोले = बोली ।

सतनाम

अथ ग्यानमूल मासल दरियासाहब

मुक्ति साहब सतनाम[1]

साखी

सतयग सर्ब ऊपरे, सखा पत्र सम जीव ।[2]
जल थल सभ में ब्यापिया, सांच सुधारस पीव ॥१॥

चौपाई

आदि अंत के ऊपर मूला । डार पात विविधि जग फूला ॥१॥
ब्रह्म बिस्नु ये होत न कबहीं । सार सब्द कहत हो अबही ॥२॥
आदि भवानी मेदनी माया । वाके बीच सभो गुन गाया ॥३॥[3]
एहि धरनी कवि केते भएऊ ।[4] आदि अंत के पार न कहेऊ ॥४॥[5]
भेख अलेख भगत बैरागी । तिगुन गुन मे सभ केहु लागी ॥५॥
पार कहे फिरि वार बखाना । है उन्ह ब्रह्म अलेप अमाना ॥६॥[6]
सक्ति माया है सभके पासा । भोजन भाव अ नींदी आसा ॥७॥[7]
ब्रम्ह अखंड खंडित नहि कहई ।[8] सो जिंदा जग जाहिर अहई ॥८॥
उन्हके कबहि सक्ति नहि छाया ।[9] जो जन सुमिरहि होहि सनाथा ॥९॥
(जोए)जोइनी संकट कबहिं ना आव ।[10] एह भेद बिरला कोइ पावे ॥१०॥[11]

---

१ (ख) सतनाम—केपता साहेब मेथीमति मर्थ मूल ग्यान मासल दरियासाहेब गरीबनेवाज बंदिछोर-साखी । (ग) सतनाम—नाम निशान मुक्त दरियासाहब अथ मासल ग्यान मूल सत बरन नाम निशान हंस उबारन-साखी नाम ।

२. (ख) सखा पत्र सम जीव = सखा पत्र समीव । (ग) सखा पत्र सम जीव = शाखा पत्र सब जीव ॥

३ (ग) वाके = वाके ।

४ (ख), (ग) एहि = एह ।

५ (ख) कहेऊ = कहेऊ ॥

६ (ग) उन्ह = वह ।

७ (ख) अ नींदी आसा = औ नींदि पराशा । (ग) भोजन न भाव सम नींदी आसा ।

८ (ख) बोए ब्रह्म अखंडित खंडित नाहि कहइ । (ग) बीए ब्रह्म अखंडित नहि कहइ ।

९ (ख) कबहि = कबे ।

१० (ख) जोए = जोए ।

११ (ख) (ग) कोइ = जन ।

इमि करि चलि तुम्हरे पंह अएऊ । बहुते धका तुम्ह तन सहेऊ ॥३८॥[1]
मकुफ दीन्ह तुम्ह के बहु भांती ।[2] राजि करो देखो दिन राती ॥३९॥
निमेरा करी निगम मंह साखा ।[3] गढ़ि में मास समन्हि कह बांधा ॥४०॥[4]
मस्ती हजार फौद चलि आई । गढ़ी ढाहि सम गद मिलाई ॥४१॥[5]

साखी

कारन कीन्हो तुमसे, गिर्द परा चहुं घेरि ।
बान गुब छूटा हुआ, कहा बचन तुम टेरि ॥१॥[6]

चौपाई

तब्ब पठाए इहां तुम्हें गाता । चलिहै पथ तुमारे साथा ॥४२॥[7]
मद्दे अगम तुम्ह जिव के राखो । इमादि बचन आगे निज भाखो ॥४३॥[8]
अमरलोक जहां हंस बिराजै । छत्र मनोहर बहु बिधि छाजै ॥४४॥
अमित झरि में पावहु भांती ।[9] लागी झरि बरिसे चहुं पांती ॥४५॥
उहां किसान खेती नहिं करई ।[10] भरि भरि पिये सदा सुख लहई ॥४६॥[11]
हद पर अघ रस देख बेवाई । अया लोक कस्मीर कहाई ॥४७॥[12]
महे मेवा की बहु बिधि आनी ।[13] है सुगंध गुल फूल बखानी ॥४८॥[14]
बारह कोस सहर बोए रहेऊ ।[15] मला हद लोग साथ सम कहेऊ ॥४९॥
बहुत गुलाब अतर तहां भएऊ । अति सुगंध साधु गुन लहेऊ ॥५०॥[16]
जन्म भया फिरि मरि मरि गएऊ । कंथा पिब अमर नहिं रहेऊ ॥५१॥

---

१ (ख) (ग) तन = तन में ।
२. (ख) दीन्ह = दीन ।
३ (ख) निमेरा = किमेरा ।
४ (ख) (घ) में = भौ ।
५. (ग) ढाहि = ढहाए ।
६ (ख) (घ) तुन = तुम्ह ।
७ (ग) तुमार = तुम्हारे ।
८ (ख), (घ) इमादि = आदी ।
९. (ख) (घ) पावहु भांती = पावहु बिधि भांती ।
१० (ख) करई = करही (ग) लहई = लहही ।
११ (ख), (ग) पिये = पिवै । (ख) लहई = लहही ।
१२. (ख) अया लोक = आया लोक ।
१३ (ख) महे = मही ।
१४ (ख) (घ) गुल फूल = फूल गुल ।
१५. (ख), (ग) बोए = बए ।
१६ (ग) लहेऊ = लहेउ ।

चौपाई

सोरह सक्त दीपका सेज्या । करम भाए सुकृत की रछ्या ॥२३॥
प्रथमहि झिलिमिलि दीप बसि भएऊ ।[1] भगति भाव मेरो गुन गएऊ ॥२४॥
कहे सच सांच झूठ नहि बाधा ।[2] बहुत सुगंध सोम रस माधा ॥२५॥[3]
ऐसन देखा दीप कर भाऊ । त्रिविधि अनंद हंस गुन गाऊ ॥२६॥
दीप दीप सभ देखा जाई । बसे अवस जहा हंस पठाई ॥२७॥
तुम्हरी समदि सभो गुन गावै ।[4] एहि छापा दूजा नहि भावै ॥२८॥
प्रगट नाहि गुंगा तहां रहेऊ । हंसन्हि देखि बहुत सुख लहेऊ ॥२९॥[5]
गुपुतभाव हंसन्हि मंह देखा । फेरि सुरति आगे कहं पेखा ॥३०॥[6]
जंमूदीप कहं देखा आई । मन मो आस कछु कहा ना जाई ॥३१॥[7]

साखी

घर घर साहब होएके बहु त्रिधि महल बनाए ।
भक्ति भाव न देखिए, बेस्या को गुन गाए ॥४॥

चौपाई

कहे राम फिर घर के मारे ।[8] मीन मासु सौं मुख मंह डारे ॥३२॥[9]
आतमराम सभ संसिस अहुई । जीव बंधन यह निसदिन चहुई ॥३३॥[10]
देवता दइत नाहि बिलगाना । पंडित जीव एक सम जाना ॥३४॥[11]
हम को कहा कौन को माना ।[12] राए निरंजन बद बखाना ॥३५॥
पंडित मूर्ख का एक सम भएऊ । जिव क घात पाप सिर लएऊ ॥३६॥[13]
बेद पढ़ा पर भेद न जाना । भेद सतगुर संग रहा समाना ॥३७॥[14]

---

१ (ख), (ग) दीप बसि भएऊ = दीप में भएऊ ।
२ (ख) (ग) सच = सम ।
३ (ख) (ग) सोमरस = प्रेमरस ।
४ (ख) (ग) सभो = सभै ।
५ (ख), (ग) रहेऊ = भएऊ ।
६ (ख), (ग) फेरि = फिरि । मंह = के ।
७ (ख) कछु = कुछ ।
८ (ख) (ग) घर = घरि ।
९ (ख), (ग) मंह = में ।
१० (ख), (ग) चहुई = देहुई ।
११ (ख) (ग) जीव = जीवि । एक = एकै । सम जाना = सम जाना ।
१२ (ख), (ग) कौन = कवन ।
१३ (ख) (ग) लएऊ = लहेऊ ।
१४ (ख) भेद सतगुर = भे—— ।

दूर सहिवाया महि हमारा । बसो बिचारि ग्यान उपकारा ॥६३॥[1]
चंचल मन एह थिर करि लीजै । गुपुत भाव अम्रित रस पीजै ॥६४॥[2]
रहनि गहनि है सब्द अमोला । वन बिचारि हंस सो बोला ॥६५॥
जीवन मरन हुए या तन बेहा । करो प्रेम सतगुर से नेहा ॥६६॥
ज्ञान हजूरहिं कहि समुझाया ।[3] अक्षुरल मेलत ताहि भुलाया ॥६७॥[4]
हुकुम बिसारे सो कम जाती ।[5] हुकुम जो होए दिन अव राती ॥६८॥[6]
बिना हुकुम पग कतहि न दीजै ।[7] कोटिनिसि किए प्रेम नहिं छीजै ॥६९॥
हंस वसा भुन सेत सोहावै ।[8] सेते अमरपुर दुखा नहिं भावै ॥७०॥[9]
गुन गमीर गुन सम मति धीरा । नैन झलके मनि जनु हीरा ॥७१॥

साखी

पटतर दीन्हो मनि के, मनि बरोबरि नाहि ।
मामे मकुर साफ होव दीयम[10] मम पकरिवो तुम बाहि ॥८॥[11]

चौपाई

बाह बोल सतगुर कनहरिया । खेइ उतारहिं क्हूर है दरिया ॥७२॥[12]
दरिया वारे पारे अहई । दरिया बीच अगत यह कहई ॥७३॥
दरिया में लाल जवाहिर अहई । मरजिउआ एह बुधि के गहई ॥७४॥[13]
खेइ निकासि बाहर फेरि देखा ।[14] संत संत समझि मिलि पेखा ॥७५॥
दरिया नाम साहब का अहई । बेसुमार कथा किमि कहई ॥७६॥
साहब दरिया मम दास कहाई । बिगसा कमल अमीरस पाई ॥७७॥

---

१ (ख) बिचारि = बिबिचारि ।
२ (ख) अम्रित = अमी ।
३ (ख) (ग) हजूरहिं = हजूरे ।
४ (ख) (ग) मेलत = ओल ।
५ (ख) (ग) जाती = जाती । (ख) (ग) पाठ स्वीकृत ।
६ (ख) (ग) होए दिन = होए एह दिन ।
७ (ख) (ग) पग = पगु ।
८ (ख) (ग) वसा = वसा ।
९ (ख) अमर = अमरपुर ।
१० (क), (ख) मामे = मामै । (ख) (ग) होव = हुवा ।
११ (ख) (ग) मम पकरी हु इ बाँहि ।
१२ (ख) उतारहिं = उतारो । (ग) उतारहिं = उतारी ।
१३ (ख) मरजिया एह बुधि के गहई । (ग) मरजीया यह बुधि कै गहई ।
१४ (ख), (ग) खेइ = खे ।

साखी

अवनी अमर दोनौं का कहिए, विनसि कबहिं नहिं जाए ।
जो आया सो खपि गया, बहुरि जन्म फेरि पाए ॥६॥[1]

चौपाई

अवनि सिरिजि सम जीव बनाया ।[2] अम रस भेद तुम्हें समुझाया ॥५२॥
हम अंडोल महिं जगमग भएऊ । केता जुग कल्प बिति गएऊ ॥५३॥[3]
आवमी नाएव उलटि के पेखी । अविगति अगम तहां एह देखी ॥५४॥
बाहर भीतर भरि अमर अनूपा ।[4] पूछें बोले रहे एह चूपा ॥५५॥
अगम निगम भेद कहि ल्एिऊ । गूंगा होए अम्रित रस पिएऊ ॥५६॥
साखी बात बके जनि एता ।[5] पूछें बोले प्रेम निजु हेता ॥५७॥
डोले जग महं जंह तंह जाई ।[6] अकुफ हमार कहे समुझाई ॥५८॥[7]
चुनि चुनि हंसा लेत निकारी । कुबुधि काल सम दूरी डारी ॥५९॥[8]
तुमसे भेद कहा सम नीका ।[9] बिमल बिरोग ध्यान का टीका ॥६०॥
तुम कह चीन्हि सब्द पहचान ।[10] अमर लोक पेमाना ठानें ॥६१॥

साखी

सब जल में सब काग है,[11] अब बग बाउर अब ।[12]
मीन मासु कह खासु है, दू दूत बाकी गंध ॥७॥

चौपाई

साहब आए अगम फेरि भएऊ ।[13] कहा गोए जाहि हृदय मैं रहेऊ ॥६२॥[14]

---

१ (ख) (ग) फेरि = फिरि ।
२ (ग) सम = सब ।
३ (ख) (ग) कल्प = कलाप ।
४ (ख) (ग) अमर = अमरा ।
५ (ग) बके = बकउ ।
६ (ख (ग) महं = मैं ।
७ (ग) कहे = कहै ।
८ (ग) कुबुधि काल है दुरि करि डारी । (ग) काम कुबुधि सब दुरि करि ॥
९ (ख), (ग) तुमसे = तुम्ह से ।
१० (ख) तुम कह = तुम्हैं ।
११ (ख) (ग) सब = सो ।
१२ (ग) अब बग = सो बक । बाउर = बउर । (ग) बक बाउर है अंध ।
१३ (ख) (ग) फेरि = फिरि ।
१४ (ख) मैं = मंह । (ग) कहा जाहि हिरय मंह रहेऊ ।

साखी

करहा कर कंह बींधिया[1], बोझ बड़ा घर दूर ।
सबही कस न सँभारेहू[2], जब ग्रहम परासेवो सूर ॥१०॥[3]

चौपाई

साहिबावा मम कहा बिचारी । चलो पंथ ग्यान निरुआरी ॥९२॥
रफा समेत भक्ति निजु हेता । ग्यान सनीप प्रेम निजु एता ॥९३॥
अपने बोधि ध्यान कंह बोधे ।[4] करि दिवि द्रिस्टि गगन में सोधे ॥९४॥
सूछुम छैमा होए परमीना । इमि करि साधु जगत में बीना ॥९५॥
जग मब मीन चंचल है भाऊ ।[5] चंचल लोचन चहुँ दिसि धाऊ ॥९६॥[6]
द्रिस्टि भीतर सब द्रिस्टि समोवै ।[7] लागी झरी अमी रस पोवै ॥९७॥
इमि करि हंस होए उजिआरा । ममिता मन सबै मेटि डारा ॥९८॥[8]
सांच गोसैंमहि कछु नहि भीखा ।[9] अमी प्रेम रस लेजि दे मीचा ॥९९॥
लघु बहु बल बेकारा भइई ।[10] टूटि गौ हार गाचन फिरि चहुई ॥१००॥[11]
प्रेम सुधा गहि निर्मल गायो ।[12] काम क्रोध कंह इमि करि नाचो ॥१०१॥[13]
सब्द संमी न्हि ग्यान हमारा ।[14] तुमसे कहि दिन्ह वारमबारा ॥१०२॥

साखी

सहिबावा सुनि लीजिए, हस बंस सुखराज ।
ग्यान विरह एह दीजिए क्योंहि न होत अकाज ॥११॥

---

१ (क) करहा कहाँ कर बींधिया । (ग) बींधिया = बींधिया ।
२ (क) सबही कस न समारेहु । (ग) सब नाही कस न समारेहु ।
३ (क) परासेवो = प्रसेवो ।
४ (क) (ग) बोधे = बोधो । सोधे = सोधो ।
५ (क) (ग) मब = मँव ।
६ (ग) धाऊ = धाऊ ।
७ (क) (ग) सब = तब । (क) समोवै = समोऐ । (क) पोवै = पोऐ ।
८ (क), (ग) सबै = सभी ।
९ (क), (ग) गोसैंमहि = पीसाई ।
१० (क) (ग) बैल बेकारा = बचन बिकारा ।
११ (क) (ग) गाचन फिरि चहुई = गाच फिरि चहुई ।
१२ (क) (ग) सुधा = भध्य ।
१३ (क) (ग) करि = कर ।
१४ (क) (ग) सब्द = छेमा । (क), (ग) संमी = सांमी ।

भीतर हंस वस एह सहेऊ । बाहर भाम सबै केहु कहेऊ ॥७८॥
बहुबिधि बासन गढ़े कुम्भारा ।[१] ठोंकि ठोंकि बाहर करि डारा ॥७९॥[२]
धाम नर सम मोल मंगाए । कहीं सुगंध बासना माए ॥८०॥
कहीं रस गोरस भरि लीन्हा । तामे दधी घीत जो कीन्हा ॥८१॥

साखी

कहीं कंचन मानिक भरा[३] कहीं तमा है रूप ।
चौदन धाम बनाइया, राव रंक सब भूप ॥९॥[४]

चौपाई

कहि मदिरा मदपी भरि लीन्हा ।[५] सोई धोए बसना कीन्हा ॥८२॥[६]
कसाई करम रुधिर भरि लिएऊ । चरमकार मासु गिधि लिएऊ ॥८३॥[७]
ऐसे तन रचा बहु मांझी । भीतर बाग मुकुर की जानी ॥८४॥
कहीं मोति मनि मानिक छाया ।[८] कहीं रोर यह सोग लगाया ॥८५॥
तीनि सै साठि बधन तेहि लागा । तामे हंस कहीं भव भागा ॥८६॥[९]
एहि विधि भरमहि भव में आई ।[१०] मारि चरन दुइ सीघ बनाई ॥८७॥
भाठनि सकट में फिरि फिरि जावै ।[११] साधु संघाति कबहिं नहि पावै ॥८८॥
पसुभत ग्याम ताहि भरि बाघ । भाँसि छपाए कोल्हु में नाघ ॥८९॥
कहीं रहट म गिद फिरावै । कहि बनियाँ बहु बोझ धरावै ॥९०॥[१२]
परा चकोह चाक में घूमा ।[१३] मीड़ि बाघ कहि भए गो दूमा ॥९१॥[१४]

---

१ (ख), (ग) गढ़ै कोंहारा ।
२. (ग) करि = कए ।
३ (ख), (ग) भरा = भरी ।
४ (ख) भव = भो ।
५. (ख) मदपी = मद्दिम ।
६ (ख) (ग) बसना = ब सुभा ।
७ (ग) चरमकार = चरमकरम ।
८ (ग) कहिं मानिक मोती मनि छाया ।
९. (ग) भव = भरगो ।
१० (ख), (ग) भव = भवन ।
११ (ख) (ग) जावै = धावै ।
१२ (ग) (ग) बोझा = बोझ ।
१३ (ख) चाक में = चाक भरि ।
१४ (ग) भए = भइ ।

कमिऊ करा मरम मिभरामा ।[1] केस सेत भव भगति न जाना ॥११८॥[2]
भारू पन ऐसे विति गएऊ ।[3] काल दंड सिर ऊपर भएऊ ॥११६॥
अबहूं चेत चेतमि चित लाई । दयावंत गुन कहा ना जाई ॥१२०॥
मीन मासु त्यागु रस भोगा ।[4] सतगुर प्रेम सुमिरु निजु जोगा ॥१२१॥[5]
मानुस जन्म दुर्लभ है नीका । तेमहूं भरम स्याम गुन फीका ॥१२२॥

साखी

साधु भोजन नहि मवन में, नहिं सतगुर मे प्रीति ।
सागर का जल अंचवन,[6] मारून चाहत नीति ॥१३॥

चौपाई

लाल रतन गरभाव कबीरा । पुरन ब्रम्ह गुन गहिर गमीरा ॥१२३॥[7]
धर्मदास हंस उजिआरा । नीर छीर बिवरन करि डारा ॥१२४॥
दुई भाग छीर मह भहई ।[8] एक भाग जल भीतर कहई ॥१२५॥[9]
छीर से नीर जो लीन्ह निकारी ।[10] बिलगि भयो सम बुद्धि बेकारी ॥१२६॥[11]
दरिया विस सबको मह भहई । दरपन दरस सदा सुख लहई ॥१२७॥[12]
धारि पारे देखु बिचारी ।[13] वारिध वारि गुन है अधिकारी ॥१२८॥
बिना जहाज किमि हावे पारा ।[14] बेवाहा गुन पदचन्हिहारा ॥१२६॥[15]
खारो दरिया जल भल भहई । दीप दीप गुन परगट कहई ॥१३०॥

---

१ (ख) (ग) कमिऊ = कक्कऊ ।
२. (ख) (घ) सेत = छिन । (ख) (ग) भव = भौ ।
३ (ख) (घ) भारू = भारे ।
४ (ख) (घ) त्यागु = त्यागे ।
५. (ख), (घ) प्रेम = चरन ।
६ (ख) (ग) का जल = को जल ।
७ (ग) गमीरा = गम्भीरा ।
८. (ख) (ग) भहई = भई ।
९. (ख), (घ) जल = जल । (ख), (ग) कहई = रहई ।
१० (ख) (घ) से = सो ।
११ (घ) प्रति का पाठ स्वीकृत ।
१२ (ख) (ग) दरस = दरसन ।
१३ देखु = देखहु ।
१४ (ख) (ग) हावे = होवे ।
१५. (ख), (घ) पदचन्हिहारा = पैचन्हिहारा ।

चौपाई

साहि अमर अब अस्ती दासा ।[1] तुमसे कीन्ह ग्यान परगासा ॥१०३॥
निरंकार अकारन अहई ।[2] सगुन बिनसि गुन किमि करि कहई ॥१०४॥[3]
निर्गुन गुन है निर्गुन निरासा । निरालेप गुन धरनी पासा ॥१०५॥
अहै असोग राग नहिं रोगा । बिमल बिरोग साप नहि सोगा ॥१०६॥
एक त्यागे एक संग्रह नीका । सक्ति के संग रंग है फीका ॥१०७॥
नीच नीच पाछे मरि गएऊ । प्रेम सुधा सुख सागर पएऊ ॥१०८॥
जाकर गुन तस कीन्ह बखाना । बेबाहा नाम अमित सम जाना ॥१ ९॥
बेबाहा नाम है अजर अमाना । को कवि कहै भेद को जाना ॥११०॥[4]
महि मंडल अब ससि है पूरा ।[5] जगत ईस छबि है भरिपूरा ॥१११॥
चारि करी गुन जोग बखाना । पचए अविगति पुरुख अमाना ॥११२॥[6]

साखी

अविगति पुरुष अमान है, श्री देवता तिनि मूल ।[7]
अगम निगम बिचारि के, तहवाँ पाप न पून ॥१०॥

चौपाई

पाप करे दुख दारुन सहई ।[8] पून करे आद्या गुन अहई ॥११३॥[9]
सर्ग नरक कर दुख सुख दाता ।[10] दुख है नरक सोइ उतपाता ॥११४॥
चारी जुग तन करहिं जोगा ।[11] दुख सुख संपति बिपति बियोगा ॥११५॥
ब्याप तब सतजुग जुग अहई ।[12] त्रेता कुमाल मगन मन सहई ॥११६॥
द्वापर तस्न तब तब भएऊ । कामिनि कनक सोभा तब भएऊ ॥११७॥[13]

---

१ (ग) साहि = साह ।
२. (ग) निरंकार = निराकार ।
३. (ख), (ग) करि = कर ।
४ (ख) कहै = कहे । (ग) कहै = कहें । (ख) (ग) को = को ।
५. (ख) अब = जो ।
६ (ख), (ग) अविगति = अविगति ।
७ (ख), (ग) श्रीदेवता = त्रीदेवा ।
८ (ख) (ग) करे = करै ।
९. (ख), (ग) आद्या = रहस्या ।
१० (ख) (ग) कर = कह ।
११ (ख) (ग) चारि = चारु ।
१२. (ख), (ग) तब = तो । (ख), (ग) सतजुग = जुग सद ।
१३ (ख) (ग) भएऊ = रहेउ ।

चौपाई

सांच मेटे झूठ मेटो जाई ।[1] बेवाहा यह अदल चलाई ॥१४३॥
देखा मम सभ द्रिस्टि पसारी ।[2] माया प्रिय बंधु सुत नारी ॥१४४॥
यह फकीर आगे सभ भएऊ । थ थापना हमी करि दिएऊ ॥१४५॥[3]
जाकर हद बेहद असमाना । जाको जिव सब सकल महाना ॥१४६॥[4]
तिन्हहिं मकूफ दिया हमें आई ।[5] बरसन देखि अम्रित फल पाई ॥१४७॥
तिन्हहिं तख्त बख्त यह दिएऊ ।[6] दयावंत दया बहु किएऊ ॥१४८॥
मन कपरा का बकसिस कीन्हा ।[7] दया तुमार न होए मलीन्हा ॥१४९॥[8]
दुख सुख मह सुमिरे अति नीका ।[9] अवरि बात जाने सब फीका ॥१५०॥[10]
निंदा अस्तुति जो कोइ करई । धोबी धोए मइलि ना रहई ॥१५१॥
गांव ठांव को कवन बड़ाई । हमके छोड़ि कहाँ केरि जाई ॥१५२॥[11]
कुल कुटुम बंधु परिवारा ।[12] करे भगति सोई निजु सारा ॥१५३॥[13]

साखी

कुल कुटुम सब मिटिहैं निमिहिं यह संसार ।[14]
सब्द हमारा जनि छोड़ो,[15] उतरहु भवजल पार ॥१६॥

---

१ (ख) इस स्थल पर निम्नलिखित अतिरिक्त पाठ है—अरतालीस बैठ वह मसनद दिया । आप समानि इन्द्र बइ किया । (ग) बैठ अरतालीस मसनद दीन्हा । आप समाने इन्द्र बई कीन्हा ॥
२. (ख) (ग) मम = मै ।
३ (ख), (घ) थापना = थपना । (ख) (ग) दिएऊ = दियऊ । (ख), (घ) करि = कर ।
४ (ख) जाको = जाका । (ग) जाके = जाकर । (ख), (घ) महाना = महाता ।
५ (ख) तिन्हहिं = तिन्ह ।
६ (ख) तख्त = तख्त ।
७ (ख) (घ) बकसिस = बकसिसि ।
८ (ख), (ग) तुमार = तोहार ।
९. (ख) (ग) दुख सुख मे सुमिरे नीका ।
१० (ख) (घ) जाने = जानै ।
११ (ख) (ग) केरि = फिरि ।
१२. (ख) (ग) कुटुम औ बंधु ।
१३ (ख) (घ) करे = करै ।
१४ (ख) मिटि है यह संसार । (घ) मीटि यह संसार ।
१५. (ख), (घ) छोड़ो = छोड़हु ।

उडिगन गगन रहै बिस्तारा ।[1] गनि नहिं सके बेद अधिकारा ॥१३१॥[2]
सब्द सार गह्यो बहु भाती ।[3] अनंत काल सभ आति अजाती ॥१३२॥[4]

साखी

बालापन ते साहब भजै, जग ते रहे उदास ।
नाम देव चंदन भए, सीतल सब्द नेवास ॥१४॥

चौपाई

जहां तहां मैं देखा बिचारी । त्यागे न भोग भाग सुख नागे ॥१३३॥[5]
भव भव कछुक गया दिन सारा । मूले गर्ब मूल गवारा ॥१३४॥[6]
दुइ सहिजादा मम मिह रहेऊ ।[7] भए चेतनि चित गुन इमि कहेऊ ॥१३५॥
तीरे दफा ताहि के भाखा ।[8] ग्यान बिचारि एक मन राखा ॥१३६॥
साह फकर फरजंद हमारा ।[9] भए दास गुन ग्यान बिचारा ॥१३७॥
लघु भव दिर्घ दुनो है भाई ।[10] समुझि ग्यान गुन कहा बुझाई ॥१३८॥
बस्तीदास छोटा यह भाई ।[11]छापा सनदि मूल सो गहई ॥१३९॥
दफा हमार सभै सिर नावै । भदव भदाव भगति गुन गावै ॥१४०॥
ताहि परवाना हुकुम जो दीन्हा ।[12]लिखा हमार होए नाहिं भीन्हा ॥१४१॥
छापा सनदि ग्यान परवाना । करे भगति सभ सत सुनाना ॥१४२॥[13]

साखी

दुइ सहिजादा आनिके,[14]सौंपा दिया हम साथ ।[15]
आगे पीछे जो करे,[16]सोइ बचन है काथ ॥१५॥

---

१ (ख) उडिगन गगन = उडिगगन ।
२ (ख, (ग) सके = सकै ।
३ (ख) (ग) सब्द सार = सार सब्द ।
४ (ख) अनंतकाल = अनंतकला ।
५ (ग) त्यागे = त्यागै ।
६ (ग) गर्ब मूल = गर्ब सो मूल ।
७ (ख) मिह = मिहि ।
८ (ख), (ग) के = कैह ।
९ (ख) (ग) फरजंद = फकीर ।
१० (ख) (ग) लघ = लो । (ख) है = भाई ।
११ (ख), (ग) दास = दासी ।
१२. (ख), (ग) ताहि = तेहि ।
१३ (ख) करे = करै ।
१४ (ख), (ग) दुइ = दोए ।
१५ (ख) (ग) साथ = लिखि ।
१६ (ख), (ग) करे = करै ।

साहिबजादा के आगे धरई ।[1] बहुविधि आनन्द मंगल करई ॥१६८॥
होए बरकमि बास सुबासा ।[2] साहब आनि मोहि चहुं पासा ॥१६९॥
भाव भगति एही विधि करई ।[3] सुख दसा गुन निर्मल रहई ॥१७०॥
दरिस रोम मंह यह गुन नीका ।[4] साहब कहेवो भगति का टीका ॥१७१॥[5]
तन मन धन साहब का अहई । जीवन धीर गुन सब्दहिं गहई ॥१७२॥
सो हंसा छपलोकही जावै ।[6] बहुरि न भवजल धाका पावै ॥१७३॥

साखी

सोइ हंस गुनसार है, जिन्हि मानहिं कहा हमार ।
सब्द तेग एह गहिके उतरहिं भवजल पार ॥१८॥[7]

चौपाई

साधु महिमा यह सेस बखाना । चौए महेस नारद मुनि जाना ॥१७४॥[8]
साधु के महिमा का जो कहई ।[9] कहा ब्यास सुखदेव सुख लहई ॥१७५॥
जाति पाति कछुवो नहिं अहई ।[10] बड़ा सोइ साहब गुन गहई ॥१७६॥[11]
सुपच से कह कवन है नीचा । बामेवो घंट सम से भौ ऊंचा ॥१७७॥[12]
किस्तु आपु परदच्छिन कीन्हा । धन धन साधु अमर पद दीन्हा ॥१७८॥
साधु सोइ जो दुरमति खोवै ।[13] साध रहे अघ पातक धोवै ॥१७९॥[14]
साधु सोइ कंवला जस माहीं । संग रहे जल परसत नाहीं ॥१८०॥[15]
एहि बिधि रहे फिरे संसारा ।[16] ग्यान बिचारि करे उपकारा ॥१८१॥

---

१ (ख), (ग) के = कै ।
२ (ख) (ग) का पाठ स्वीकृत । 'क' प्रति में बरकमि ।
३ (ख) (ग) एही = एह ।
४ (ख) मंह = मोह ।
५ (ख), (ग) कहेवो = कहा ।
६ (ख) (ग) छपलोकहि = छपलोके ।
७ (ख) उतरहिं = उतरै । (ग) उतरहिं = उतरे ।
८ (ख) चौए महेस = चौ महेस ।
९ (ख) साधु के = साधु कै ।
१० (ख) (ग) कछुवो = किछुवो ।
११ (ख) साहब = साहेब ।
१२ (ख) बामा घंट सम भै गौ नीचा । (ग बामे घंट सम भैगो नीचा ।
१३ (ग) दुरमति = दुरमति के
१४ (ख) पातक = पाप ।
१५ (ख) संग = संगहि ।
१६ (ग) रहे = रहै । (ग) एहि बिधि फिरै रहै संसार ।

चौपाई

सिखा हमार लागे अति तीता ।[1] जाके भगति सोइ जन हीता ॥१५४॥
दस छोड़ि सुगना उड़ि गएऊ ।[2] मास तिते तहवाँ चलि भएऊ ॥१५५॥[3]
भव सुगना तुम करो उपासा । बहुरि गए सेमर के पासा ॥१५६॥
चोंच के मारे सुआ उड़ि गएऊ । मुरछि गए तावर तन भएऊ ॥१५७॥[4]
लाल फूल बिसवास लोभेऊ ।[5] उड़ि गए मारा भवन नहिं रहेऊ ॥१५८॥
सो घन घोर हाकिमे लीन्हा ।[6] लागी आगि भसम करि दीन्हा ॥१५९॥
देह छेरि नाहिं माया मरी । ई नहिं बसि भइ काहु केरी ॥१६०॥
सरनहु लाहु सतगुर के भवा ।[7] महल में टहल पावे निजु मेवा ॥१६१॥
मरि भव गया पिछे पछतावे । फेरि नहिं बहुरि माया में आवे ॥१६२॥[8]
भरमित फिरे भवन मंह केता ।[9] चारि चरन धरि पसु होए एता ॥१६३॥

साखी

गुरु मंह सबस दीजिए, तन मन अरपेवो सीस ।[10]
गुर महिमा गुरदेव है, गुर साहब जगदीस ॥१७॥

चौपाई

सोइ गुर ग्यान जो भरम उबारे । तरनि बैठि पार लेइ डारे ॥१६४॥[11]
जब परसाद सुरति मंह आवे । बहु भातिन्ह एह जुगुति बनावे ॥१६५॥
सकर लोहरी भव दधि भेवा ।[12] भगति भाव से लावहि सेवा ॥१६६॥[13]
दापर कपरा सेत मोहारी । पान ओरि के दिन हमारी ॥१६७॥[14]

---

१ (ख), (ग) लागे = लागी ।
२ (ख), (ग) का पाठ स्वीकृत ।
३ (ख) मास = एक मास ।
४ (ख), (ग) मुरछि गये तावरि तन भएऊ ।
५ (ख), (ग) लाल फूल बिस्वासे भएऊ ।
६ (ख) हाकिमे = हाकिम ने ।
७ (ख), (ग) के = का ।
८ (ख), (ग) फेरि = फिरि ।
९ (ख), (ग) मंह = में ।
१० (ख) (ग) सीस = सीम । सीम' स्वीकृत ।
११ (ख) (ग) लेइ = ले ।
१२ (ख) सकर = संकर । (ख) (ग) भव =
१३ (ख), (ग) लावहि = लावै ।
१४ (ग) दिनै = दिने ।

चौपाई

साधु मंदिल गुन तीरथ धामा ।[1] धूरि धूप करिए बिसरामा ॥१९४॥[2]
साधु पारस हमि मेसन छेनी ।[3] पद पंकज सुरसरी त्रिबेनी ॥१९५॥[4]
साधु धरमि खेम छमछेमा ।[5] पदुम प्रगास बारि नहिं लेपा ॥१९६॥[6]
सांच सुमति मति ग्यान बिरागा । मति मराल फिरि होए न कागा ॥१९७॥[7]
इमि करि साधु जगत मंह डोल ।[8] पूछे बिन कछु बात न बोलें ॥१९८॥[9]
भेख बनाए ब्याधा सर जोरा । सभुत भरम है भितर कठोरा ॥१९९॥
किरिरिख करम काम महिं सोधा । क्रोध हंकार मरहिं बड़ बोधा ॥२००॥
देन लेन करि मस मंह लावै ।[10] भीतरि हकार भुषा मुख भावै ॥२०१॥
बिस का मुर्धा खोट प्रभागा ।[11] ग्यान बिराग सुमति में जागा ॥२०२॥
इमि करि साधु सर्ब गुन मखेऊ ।[12] आस में एक महन कंह भएऊ ॥२०३॥[13]

साखी

कपट काटि कंठा कटो[14] काटु कुबुधि बमठाट ।
सतगुर बोस न भीजिए जम रोकेगा बाट ॥२१॥[15]

चौपाई

खोन्ग मोटा बाट न सुमेंऊ ।[16] कपट काट मब ऐसेउ रहेऊ ॥२०४॥[17]
होहु संतमंत ग्यान समोभो । कठिन काल पीड़ जनि रोबो ॥२०५॥

---

१ (ग) तीरथ = तीर्थ ।
२ (ख) 'धूरि धूरि करिये बिसरामा' । (ग) धूरि धूरि करिये बिसरामा' ।
३ (ख) (ग) मेसन छेनी = लोह पर छेनी ।
४ (घ) त्रिबेनी = तिरबेनी ।
५ (ख) 'साधु सर्व गुन खेम छमछेमा ।' (ग) 'साधु धरम गुन खेम छमछेमा ।
६ (ख) (ग) प्रगास = परगास ।
७ (ख) (ग) 'मतिमराल फिरि होहि न कागा ।'
८ (ख), (ग) मंह = में ।
९ (ख) (ग) पूछे = पूछै । (ख) कछु = किछु ।
१० (ग) लेना देना करि मस मंह लावै' । (घ) देना लेना करि मस मंह लावै' ।
११ (ख) (घ) मुर्धा = मुरधा ।
१२ (ख), (ग) सर्ब = सरब ।
१३ (ख), (ग) में = मंह (ख) (ग) कंह = के ।
१४ (ख) (ग) कटो = कटेगी ।
१५ (ख) (घ) रोकेगा = रोकैगा ।
१६ (ख), (ग) न = नाहि ।
१७ (ख) (ग) 'सो ऐसे मस्मेऊ ।

साधु दरस पद पंकज गहई । महा पाप दुख दारुन दहई ॥१८२॥
कोटि तीर्थ साधुन के पासा ।[1] भजन करे आए जम त्रासा ॥१८३॥[2]

साखी

कारज से कारन कठिन, गए जीव के साथ ।[3]
कारन ते रावन गए, सीस भुजा दस माथ ॥१९॥

चौपाइ

साधु से कारन कोइ जनि करई । महा पाप दुख दारुन सहई ॥१८४॥
महापाप जम सासन करई । एहि विधि जाए चौरासी परई ॥१८५॥
साधु सोइ निर्मल गुनसारा । वारे द्रिस्टि करे उजिआरा ॥१८६॥[4]
ज्यौं मराल मन कबहि न मैला ।[5] मन पव ग्यान तोल में तौला ॥१८७॥[6]
कड़ी कमान खिंचे दिनराती । तेहि नहिं काल करे उतपाती ॥१८८॥[7]
ताके पास कामिनि नहिं आई । मस्त हाल देखि दूरि पराई ॥१८९॥
भांग अफीम पान नहिं खाई । झरे अमी चाखै सब लाई ॥१९०॥[8]
एही रहनि सुनो हो संता । तेजहु मन मत भाव अनंता ॥१९१॥
एक रस रहे एक गुन गावै ।[9] साधु लच्छन परगट तहां पावै ॥१९२॥[1]
परिमल पारस ब्रिच्छ है केता । जहां कुकाठ चंदन भव एता ॥१९३॥[11]

साखी

नाचे गावै ताल बजाव [12]भरे भरम का मोट ।[13]
कहें दरिआ नहिं पदहि समाना [14]है हीरा पै चोट ॥२०॥[15]

---

१ (ख), (ग) साधुन = सद्गुरु ।
२. (ख) करे = करै । (ग) भजन = भंजन ।
३ (ख) (ग) गए = गया ।
४ (ख), (ग) वारे = वारै । करे = करै ।
५ (ख), (ग) मैला = मइला ।
६ (ख) तोला = तखला । (ग) पव = पौ ।
७ (ख) (ग) करे = करै ।
८ (ख) (ग) झरे = झरै ।
९ (ख) (ग) रहे = रहै । (ख) एक गुन = एकै गुन ।
१० (ख), (ग) परगट = प्रगट ।
११ (ख) (ग) एता = ऐसा ।
१२ (ख) (ग) नाचे = नाचै ।
१३ (ख) (ग) भरे = भरै ।
१४ (ख) (ग) कहैं दरिआ नहि पदहि समाना—रहीहल ।
१५. (ख) पै = पर ।

एहि बिधि भए गरब गुन गामी । बिसरि गए नहिं मन्त्रित धामी ॥२२०॥[1]
मनमत मालि बके बहु बाता ।[2] साधु संत के निकट न जाता ॥२२१॥[3]
निन्हिं साधु फिरि भ्रम मे बांधा ।[4] बहुबिधि बंधन नहिं धरि साधा ॥२२२॥[5]
बिसरि गए जगदीस गोसाईं । नत सिख जिन्हि सब काल सगाई ॥२२३॥[6]

साखी

बिसरि गए चित चातुरे[7] मीत बिसारेहुं जानि ।[8]
जहां से नेह लगाइया, जमपुर होइहैं हानि ॥२३॥[9]

चौपाई

कटि पटुका दुइ ओवरि कीन्हा ।[10] बांधि पिजरें मगना दीन्हा ॥२२४॥[11]
कांध कंधा शरीवर बोरी ।[12] सोभे लिलाट चंदन की खोरी ॥२२५॥[13]
नैनहिं काजर कारिख कीन्हा । भए मगन सब मन नहिं चीन्हा ॥२२६॥
जोग की मासिर सेहरा साधा । करि परिपंच कंगन बहु बांधा ॥२२७॥[14]
लीन्ह लिआए मंदिल के मएऊ ।[15] आनंद मंगल सब मिलि भएऊ ॥२२८॥[16]
टेढ़ि चाल मन बन भवेसा ।[17] साधु नगद से कीन्ह वलेसा ॥२२९॥
लागि पढ़ावन सुनु पिअ मोरा । हमरो बचन करहु जनि भोरा ॥२३०॥
गुरु होए सीख सिखावन लागी ।[18] मति करि प्रेम काम रस पागी ॥२३१॥

---

१ (ख), (ग) भए = भवा । (ख) मन्त्रित धामी = धामी ।
२ (ख) मालि = माल । (ग) मालि = मात ।
३ (ख), (ग) संत साधु के निकट न जाता ।
४ (ख), (ग) फिरि = फिर ।
५. (ख) (ग) नहिं = नाहिं ।
६ (ख) (ग) जिन्हि चल सब लाइ ।
७ (ख), (ग) गए = गया । (ख) चातुरे = चातुरी ।
८ (ग) बिसारेहु = बिसरायहु ।
९ (ख), (ग) होइहैं = होइहहिं । (ख), (ग) हानि = हारि ।
१० (ख) (ग) करि पटुका ओवरि दुइ कीन्हा ।
११ (ख), (ग) दीन्हा = लीन्हा ।
१२ (ख) (ग) वर = बरवी ।
१३ (ग) लिलाट = लिलार ।
१४ (ख) कंगन = कंगम (ग) कंगम = कंगन ।
१५. (ग) मएऊ = भएऊ ।
१६ (ख) (ग) भएऊ = भएउ ।
१७ (ख), (ग) बन = बो ।
१८. (ख), (ग) गुरु = गुरु ।

निरमल छिर मय महुगें मोमा ।[1] धीर नीर नहिं मघ घट डोला ॥२०६॥
नीर सुखे सन्धर दुरि भागा ।[2] तरुन त्रिते भव काम विकारा ॥२०७॥[3]
मरमत फिरे मरम नहिं पाना ।[4] जरा मरन भय भाए निमराना ॥२०८॥
सुत बित नारि जो कहे हमारा । दया विवक न करे विचारा ॥२०९॥
पल पल छन छन घटने लागा । ग्यान बिराग विवेक ना जागा ॥२१०॥
एहि बिधि केते गए जम द्वारा । सार सब्द सुनि लागु विकारा ॥२११॥
ऐगुन सब बिधि गुन कछु नाहीं । तरनी दृटि परा भव माहीं ॥२१२॥
केवट मनारी खेवनिहारा । पर पखोह विविधि बहुधारा ॥२१३॥

साखी

झूठो मीठो लागहीं[5] साचो तीतो लात ।[6]
घोरे पवन में डोलत है, जों पीपर को पात ॥२२॥[7]

चौपाई

दस मास भव थमा बनएऊ ।[8] तीनि सैं साठि फिरावैं लएऊ ॥२१४॥[9]
मारो ग्रिह एक मदन बनावा ।[10] दोए मास एहु ता विच लावा ॥२१५॥[11]
नासा स्रवन दसन तहां सोमा । रसना षटरस बीजन लोभा ॥२१६॥
तेहि नीच हुइ मुखा बनामा ।[12] तामे कर दस सखा लगाया ॥२१७॥
महां कुमत चरन पसु पाया ।[13] डोलत फिरत भवन में माया ॥२१८॥[14]
बाल कुमाल तरुनपन भएऊ । झूठ सांच बहु बाद बनाएऊ ॥२१९॥

---

१ (क), (ख) छिर मय = मिर भी ।
२. (ग) भागा = भागी ।
३ (क), (ग) मय = भी । (ग) विकारा = विकारी ।
४ (ख), (ग) फिरे = फिरै ।
५. (क) (ग) लागही = लागई ।
६ (क), (ग) तीतो = तीतो । यही पाठ स्वीकृत ।
७ (क) (ग) जों = जो ।
८. (क) (ग) थमा = थम ।
९. (ग) प्रति का पाठ स्वीकृत । 'क' में 'लैऊ' ।
१० (क), (ग) मारो = तासो । (ग) मारो = तासो ।
११ (क) ता = तेहि । (ग) दोए मास तेहि बिच लाया ।
१२. (क), (ग) तेहि = ताहि । (क), (ग) हुइ = दोए ।
१३ (क) कुमत = कुप ।
१४ (क) डोलत फिरत = डोलने फिरने ।

साखी

जएसे लता द्रुम में, अरुझि रहा फुल पात ।
एहि बिधि माया जगत में, बैर किया गुन गात ॥२५॥

चौपाई

कामिनि कनक लता लपटाना । अरुझल सरुझहि संत सुजाना ॥२४६॥[1]
जो महि मंडल परे भुलाई ।[2] निकलि जाहि जैव फनि मनि पाई ॥२४७॥[3]
उपजी मनि भयो बिलि के मासा ।[4] भै गो परिमल कस्ट सुवासा ॥२४८॥
माया डगर जो डगमग नाहीं ।[5] चढ़ि गया गगन डोरि तहाँ नाहीं ॥२४९॥[6]
चली सुरति निरति रहु नीचे । सार नाम पद नाहिं तहाँ मीचे ॥२५०॥
नीच ऊँच पद पावहिं संता । नीच से ऊच सुपथ गुनवंता ॥२५१॥[7]
साधु के महिमा कहि नहिं जाई ।[8] जैसे सेंधु अस थाह ना पाई ॥२५२॥
जैस रवि ससि सबते ऊचा ।[9] अवरि जीव जगत सब नीचा ॥२५३॥
चार निगम साधु गुन गाई । सेस सहस फनि चरित सुनाई ॥२५४॥
ग्यानि ग्रंथ थाके मुनि केता । साधु महिमा है सेंधु समेता ॥२५५॥

साखी

जल बिनु कमल न सोभही,[10] मान सरोवर हंस ।[11]
साधु जन असाधु घर, तब सोभे कुल बंस ॥२६॥[12]

चौपाई

जाति पाँति सब तेजे बड़ाई ।[13] भया थिर सुता समो थिर नाई ॥२५६।

१ (ग) अरुझहि = अरुझल ।
२. (ख) परे = परै ।
३ (ख), (ग) जैव = जौ ।
४ (ख), (ग) भयो = भौ ।
५. (क) पाठ 'नाहीं' अस्वीकृत ।
६ (क) पाठ 'नहिं' अस्वीकृत ।
७ (ख), (ग) से = जो । (ग) गुनवन्ता = [illegible] । (क) पाठ अस्वीकृत ।
८. (ख), (ग) के = कै ।
९. (ख), (ग) ते = से ।
१०. [illegible] (ग) कमल = कंवल । (ख), (ग) सोभहि = सोभै ।
११. [illegible] = सरोवर ।
१२. [illegible] = सबै । (ख), (ग) सोभे = सोभै ।
१३. [illegible] । (ख), (ग) तेजे = तेजै ।

माते बहु विधि सब मनहीता । मातु बचन मुनि लागत फीका ॥२३२॥[1]
ऐगुन गुन नहिं करै बिचारा । बिन गुन ग्यान बुडा मझधारा ॥२३३॥[2]
जो मम कहा त्रिरता केहु किएऊ ।[3] बिनु गुन ग्यान केवट किमि लहऊ ॥२३४॥

साखी

दया धर्म विवेक नहिं, कौल क्रिया सब भोर ।
मातु पिता नहिं गुरु भय्या, बाधि गए जिमि चोर ॥८४॥

चौपाई

कनक बेरि सब जिप पशु हारी ।[4] मोतिन्हि माग गुथि बहुविधि नारी ॥२३५॥[5]
बांधे मुए बधुआ महिं आना । हाड़ चाम सम खाल उठाना ॥२३६॥
छूटा गज बाज सब साथी । जम ने पकरि नाक धरि नाथी ॥२३७॥
मानु साधि यह करो बिचारा । जैसन कर्म तहां ले डारा ॥२३८॥[6]
नेह की बरि समो पशु हारी ।[7] जसन धन तस दीन्हो नारी ॥२३९॥
बाजीगर जैस बांधु बंधाई ।[8] नाचहिं मरकट डारे जाई ॥२४०॥[9]
ग्यान होए तब करै बिचारा । बिनु गुरु ग्यान परा मझधारा ॥२४१॥[10]
उलटा बेरि नारि पशु हारी ।[11] बाधे रहो करा रखवारी ॥२४२॥
रग महल मानो पिंजरा भएऊ । मुनिमन्हि पकरि ताहि में नऊ ॥२४३॥[12]
लाल निकासि बाहर करि लीन्हा ।[13] फंदफंद करहि राति भो दीन्हा ॥२४४॥
छूटा बचन साधु तब भएऊ । उल्लसित प्रेम मगन मन रहऊ ॥२४५॥[14]

---

१ (ख), (ग) मातु बचन लागी सम तीता ।
२. (ख), (ग) बिना = बिनु ।
३ (ख), (ग) कहा = कहेउ ।
४ (ख) सब = सम । (ख) हारी = हारी ।
५. (ख) मोतिन्हि = मोतिन्ह ।
६ (ख) (ग) कर्म = करम ।
७ (ख) हारी = हारी ।
८ (ख), (ग) जैस = जौ ।
९. (ख) (ग) डार = डारे ।
१० (ख) (ग) 'बिना ग्यान बूड़ा मझधारा ।
११ (ग) उलटा = उलटि ।
१२. (ख), (ग) में = मई ।
१३ (ख), (ग) निकासि = निकारि ।
१४ (ख) उल्लसि [illegible] = उल्लसित । (ग) प्रफुलित = प्रफुल्लित ।

साखी

चएसे सता कुर्म में अरुझि रहा फुल पात ।
एहि बिधि माया जगत में, कैद किया गुन गात ॥२५॥

चौपाई

कामिनि कनक मता लपटाना । अम्फुरत सम्फुरहि संत सुजाना ॥२४६॥[1]
जो महि मवल परे भुलाई ।[2] निकलि जाहि जेंव फनि मनि पाई ॥२४७॥[3]
उपजी मनि भयो बिखि के नासा ।[4] भ गो परिमल फस्ट सुबासा ॥२४८॥
पाया डगर जो डगमग नाहीं ।[5] चढ़ि गया गगन डोरि तहां माहीं ॥२४९॥[6]
चली सुरति निरति रहु नीचे । सार भाग पद नाहिं तहां मीचे ॥२५०॥
नीच ऊंच पद पावहि संता । मीच से ऊच सुपच गुनवंता ॥२५१॥[7]
साधु के महिमा कहि नहि जाई ।[8] जसे सेंधु जल थाह ना पाई ॥२५२॥
जैसे रवि ससि सनते ऊंचा ।[9] मवरि जीव जगत सब नीचा ॥२५३॥
जाके निगम साधु गुन गाई । सेस सहस्र फनि चरित सुनाई ॥२५४॥
भाखि मंत जाके मुनि केता । साधु महिमा है सेंधु समेता ॥२५५॥

साखी

जल बिनु कमल न सोमही[10] मान सरोवर हंस ।[11]
साधु जन्म असाधु घर, तब सोभे कुल बंस ॥२६॥[12]

चौपाई

जाति पांति सब तेजे बड़ाई ।[13] भया सिर सुला सभो सिर नाई ॥२५६॥

---

१ (ग) सम्फुरहि = सम्फुरत ।
२. (ख) परे = परै ।
३ (ख) (ग) जेंव = जौं ।
४ (ख), (ग) भयो = भौ ।
५. (क) पाठ 'नाहीं' अस्वीकृत ।
६ (क) पाठ 'महि' अस्वीकृत ।
७ (ख) (ग) से = सो । (ग) गुनवन्ता = गुनवंता । (क) पाठ अस्वीकृत ।
८. (ख) (ग) के = कै ।
९ (ख) (ग) ते = से ।
१० (ख), (ग) कमल = कँवल । (ख), (ग) सोमहि = सोमै ।
११ (ख) सरोवर = सरोइर ।
१२ (ख), (ग) तब = तबै । (ख), (ग) सोभे = सोभै ।
१३ (ख), (ग) सब = सभ । (ख), (ग) तेजे = तेजै ।

सक्ति संग रंग सम त्यागा ।[१] जस रंग मिलि गौ ग्यान मा बागा ॥२५७॥[२]
उतिम मधिम का यही बिचारा ।[३] सिरे अमा का भक्ति पियारा ॥२५८॥[४]
माया भक्ति बरोबरि जाना । ग्यान अलग सुनु सत सुजाना ॥२५९॥[५]
जो दफा महु आवहि आनी । तासो नर्म केहु जनि मानी ॥२६०॥[६]
मन पानी सब एके होई ।[७] हिंदु तुरुक दूजा नहि कोई ॥२६१॥[८]
हिंदु तुरुक सब जीव हमारा ।[९] समुझि सार भाखा टकसारा ॥२६२॥
सिरे नाम जो है सिर मूला । आपा सनदि तुम्हहुं के मूला ॥२६३॥
परसाद बनाए तेतु से माखा ।[१०] साहिजादा के आगे राखा ॥२६४॥[११]
कोनिसि करि के मंगल चारा ।[१२] एहि बिधि जीए के होए उबारा ॥२६५॥[१३]

साखी

एके मन एके पत्ता,[१४] एके सब्द है सार ।[१५]
कहैं दरिया मन भाखिया गुन गहि होवे पार ॥२७॥[१६]

चौपाई

अवतार हमार सोम एहु जानी । इन्हि बाते धोखा मति मानो ॥२६६॥[१७]
हद बेहद से आगे अहई । सो साहब गुन कहवाँ कहई ॥२६७॥

---

१ (ग) त्यागा = त्यागे ।
२. (ग) बागा = बागे ।
३ (ख) उतिम = उत्तम ।
४ (ख), (ग) अमा = आमा ।
५. (ग) अलग = अलह ।
६ (ख) (ग) नर्म = भर्म ।
७ (ख) (ग) मन पानी = मनरंगा । (ख) (ग) सब = सम (ख) (ग) एके = एकै ।
८ (ख), (ग) तुर्क = तुरुक ।
९. (ख), (ग) तुर्क = तुरुक (ख) (ग) सब = सम ।
१० (ख) (ग) तपुते = तेतु अह । (क) पाठ अस्पष्ट ।
११ (ख) के = केहि ।
१२. (ख) करिके = कैके । (ग) करिके = करए ।
१३ (ख) (ग) जीए = जीव । (ग), (ख) के = कै ।
१४ (ख), (ग) एके = एकै ।
१५. (ख) (ग) एके = एकै ।
१६ (ख) (ग) होवे = होवै ।
१७ (ख), (ग) बाते = बातो ।

साँच कह्यो लिखि कागज कोरे ।[1] सो साहब आए प्रिहि मोरे ॥२६८॥[2]
अगम निगम सब कहि समुझाई ।[3] वेवाहा कीमति देखाई ॥२६९॥
सन्तागीर एह अदब दखाया ।[4] साहब साहब एह खबर आया ॥२७०॥[5]
मग्रूफ करे मुकुति फल पावै ।[6] चौरासी कबहीं नाहिं आवै ॥२७१॥
अन कसरा सब उन्हके हाथा ।[7] ग्याम सते से होए समाथा ॥२७२॥
साहिआबा एह महे हमारा ।[8] मससफ दिया कहा टकसारा ॥२७३॥
ए दोए फर्जंद जो महे हमारा ।[9] इन्ह के दीन्ह छपा टकसारा ॥२७४॥
वफा हमार समुझ गुन गहो ।[10] बवाहा दरिया चित लहो ॥२७५॥[11]

साखी

सिरे वफा इन्हे जानिय अदब अदाव सिर नाए ।
वफा हमार एह मानियै,[12] मकुफ कहा समुझाए ॥२८॥

चौपाई

साहब अब छपमोक बतऊ ।[13] कोर्निसि करि अर्ज मम लएऊ ॥२७६॥[14]
एह मनवा उहा है कि नाहीं । सोइ वचन कहिय मम पाही ॥२७७॥
एह मनवा उहां कबहि न होइ । बहुत मीठा अम्रित रस पोखे ॥२७८॥
अमर फूल अब भमर दोसचा ।[15] फिरि नहिं उलटि फेरि बाहि पैसा ॥२७९॥[16]
पतंगे पुहुप छत्र सिर छावै ।[17] एहि विधि हंस सदा सुख राजै ॥२८०॥

---

१ (ग) कोरे = कोरै ।
२ (ग) प्रिहि = प्रिह । मोरे = मोरै ।
३ (ख) सब = सम ।
४ (ख), (ग) एह = जग ।
५. (ख) (ग) 'सो साहेब यह हम पर आया' ।
६ (ख) (ग) करे = करै ।
७ (ख), (ग) सब = मम ।
८ (ख) (ग) महे = महै ।
९. (ग) ए = एइ । (ख) (ग) फर्जंद = फरजंद । (ख) (ग) महे = महै ।
१० (ख) (ग) समुझि = समुझ । (ग) गैहो = गएहो ।
११ (ख) (ग) लैहो = लएहो ।
१२. (ख) (ग) मानियै = मानियै ।
१३ (ग) साहब अब = अब साहब ।
१४ (ग) अर्ज = अरज ।
१५ (ख) अब = और । (ग) अब = भी ।
१६ (ग) बाहि = नहिं ।
१७ (ग) पतंगे = पतंग ।

सखि संग रंग सभ त्यागा ।[1] अस रंग मिलि गौ ग्यान ना जागा ॥२५७॥[2]
उतिम मधिम का यही बिचारा ।[3] सिरे जमा का भक्ति पियारा ॥२५८॥[4]
माया भक्ति बरोबरि जाना । ग्यान अगम सुनु संत सुजाना ॥२५९॥[5]
जो दरवा महं भावहिं आनी । तासा नर्म केहु जनि मानी ॥२६०॥[6]
मन पानी सब एके होई ।[7] हिंदु तुर्क दूजा नहिं कोई ॥२६१॥[8]
हिंदु तुर्क सब जीव हमारा ।[9] समुझि सार माला टकसारा ॥२६२॥
सिरे धाम जो है सिर झूला । छापा सनदि दुनहुं के मूला ॥२६३॥
परवार बनाए तेतु से माथा ।[10]साहिजादा क पाये राथा ॥२६४॥[11]
कोर्निसि करि के मंगल चारा ।[12]एहि बिधि जीए के होए उबारा ॥२६५॥[13]

साखी

एके मन एके दसा,[14]एके सब्द है सार ।[15]
कहँ दरिया मन मानिया गुन गहि होस्ते पार ॥२७॥[16]

चौपाई

अवतार हमार सांच एह जानो । इन्हि बात धोखा मति मानो ॥२६६॥[17]
हद बेहद से भाग बड़ाई । सो साहब गुन कहवां कहई ॥२६७॥

---

१ (ख) त्यागा = त्यागै ।
२. (ग) जागा = जागै ।
३ (ख) उतिम = उत्तम ।
४ (ख), (ग) जमा = जामा ।
५. (ग) सुजान = सुजान ।
६ (ख) (ग) नर्म = मर्म ।
७ (ख), (ग) मन पानी = मनदेसा । (ख), (ग) सब = सम (ख), (ग) एके = एकै ।
८ (ख), (ग) तुर्क = तुरुक ।
९. (ख) (ग) तुर्क = तुरुक (ख) (ग) सब = सम ।
१० (ख) (ग) समुझि = तनु यह । (ख) पाठ परवर्तन ।
११ (ख) के = केहि ।
१२. (ख) करिके = कैके । (ग) करिके = कए ।
१३. (ख), (ग) जीए = जीव । (ख), (ग) के = कै ।
१४ (ख), (ग) एके = एकै ।
१५. (ख) (ग) एके = एकै ।
१६ (ख), (ग) होस्ते = होसी ।
१७ (ख) (ग), बातो = बाती ।

कंचन पर्लंग तहां से डारा ।[1] हीरा मानिक है उजियारा ॥२९३॥
बेगम अंबर[2] सहेली केता ।[3] कोमिसि करहिं प्रेम मिलु हेता ॥२९४॥
सोजा खवास चौंर सिर ढारा ।[3] अतर चिराक कीन्ह उजियारा ॥२९५॥
अठारह लाख फौज है एता ।[4] तुर्की ताजी पाएस केता ॥२९६॥[5]
सब मम देखा द्रिस्टि पसारी । इन्हके किमि करि सेउ निकारी ॥२९७॥[6]

साखी

सिरे दफा सुलतान मम, अब कछु करो उपाए ।[7]
इन्ह का सेइ निकासो,[8] सिफित मेरो गुन गाए ॥३०॥

चौपाई

कीन्ह निमेग दिन बहु बीता । जिवा आस्रित हंस कि होता ॥२९८॥[9]
अबदुलह खांन रूपु तब भएऊ । फौज निकासि बाहर सब किएऊ ॥२९९॥
कुदरति आए परा मैदाना । नौबति बहुविधि हने निसाना ॥३००॥[10]
तखत ऊपर मम बठेल आई ।[11]दरसन करहिं लोग सभ भाई ॥३०१॥[12]
वोजीर से सब मिलि बात जनाया ।[13]एक फकीर अकेलमति को आया ॥३०२॥

अमान बचन[14]

झलके दीवस सोभा बहु भांती ।[15]बखत नूर कोइ महि अजाती ॥३०३॥[16]

---

१ (ख) (ग) तहां = तहवां ।
२. (ख) अंबर = कीर ।
३ (ख), (ग) 'खोजा खवास औ सिर चंवर को ढारा ।'
४ (ख) (ग) फौज = फौज ।
५. (ख), (ग) तुर्की = तुरकी ।
६ (ख) (ग) करि सेउ = कर सेउ ।
७ (ख) कछु = किछु ।
८ (ख) निकासो = निकासो (ग) निकासो = निकासेउ ।
९. (ख) (ग) आस्रित हंस = आश्रित रहै (ख) (ग) कि = के ।
१० (ख) (ग) हने = हना ।
११ (ख) (ग) बैठेल = बैठेल ।
१२ (ख) करहि = करै (ग) करहिं = करे । (ग) सभ = सब ।
१३ (ख) (ग) वजीर = वोजीर ।
१४ (ख) (ग) में अपठित है । अर्थ अस्पष्ट ।
१५ (ख) (ग) झलके = झलकै ।
१६ (ख) (ग) बखत = बरवत ।

बहुत विसर ज्ञिनु सोच बनाना । मन रंके सबै भरमाया ॥२८१॥[1]
हस्ती पर ध्यनाक जा कहई । हद में थाएव ज्ञान नाहि महई ॥२८२॥
उत्तर दिसि है तह हमारा ।[2] अमर लोक ज्ञा हम कगारा ॥२८३॥[3]
मैंने कहा कहो तुम दोउ ।[4] जिनके रह प्रेम नाहिं होउ ॥२८४॥[5]
कुदरति मेवा उहवा पाई । जुग जुग के मन छुधा बुताई ॥२८५॥[6]

साखी

उत्तर दिसा पांजी महि पलक करे जनि भोर ।[7]
तहां के हम गवन करे[8] कहा जा मान मोर ॥२६॥[9]

चौपाई

साहब कहा गुन बरनि राजा ।[10] सो मम भेद परगट एह साजा ॥२८६॥
म्याम बाव माव मालस लाया । डिवम माए म मरमत्र बनाया ॥२८७॥[11]
सीना माफ सुच नग दिखावा ।[12] सोना सुन्दर चहुँदिसि छावा ॥२८८॥[13]
गिर महल चहु दिसी बनाया ।[14] चित्र विचित्र कनक चित्र दिखाया ॥२८९॥
तख्त बनाए जहां तहां कीया । हीरा जवाहिर नहिं बिच दीया ॥२९०॥[15]
कहि नाहि जाय तखत के सोभा ।[16] बैठा साहब मनि हमि सोभा ॥२९१॥[17]
भाम खास सुनबोई बेसा । मांजी भालरि झलक मना ॥२९२॥[18]

---

१ रंके = रंगे । (घ) रंके = रंगा ।
२ (ख) दिसि = दिसा । (ग) उत्तरदि दिसा ।
३ (ख) (ग) जहां = तहां ।
४ (ग) (घ) तुम = तुम्ह ।
५ (ख) (ग) जिनके = जिनके । (ख) (घ) रहे = रहै ।
६ (ख), (घ) के = कै । (ग) छुधा = क्षुधा ।
७ (ख), (घ) करे = करै ।
८ (ख) (ग) के = का । (ख) (ग) करे = करैं ।
९. (ख), (ग) मान = मर्म ।
१० (ख) (ग) कहा = कहो । (ग) (घ) गुन = गुनन ।
११ (ख) मार के = बनाए के ।
१२. (ख) (ग) दिखावा = दिखाय ।
१३ (ख), (ग) छावा = छाये ।
१४ (ग) (घ) दिसी = दिस ।
१५ (ख) नहिं = दाहिं । (घ) हीरे = हा ।
१६ (ख) (घ) नाहि जाय = न जाय । (ग) (घ) के = का ।
१७ (ख) (घ) मनि = मन ।
१८ (ख) (ग) झलक = झलकै ।

साखी

मानसरोवर मसाह मे,[1] छपलोक में जाए ।
भव सागर महि देखिये,[2] एहि विधि कहा बुझाए ॥३४॥

चौपाई

यह खोजा जनि जाने कोई ।[3] वचन हमारि दूजा नहि होई ॥३४०॥
बिनु देखे कचे पहचानी ।[4] भेख अलेख मोहु पहचानी ॥३४१॥
तुम्हरा कहा जो माने दासा ।[5] निश्चै होए छपलोक नेवासा ॥३४२॥[6]
साखी सब्द सीखि मुलवावै । जम दारुन तेहि दाव लगावै ॥३४३॥
है छपलोक सोच मम कहेऊ । बिरला नारि विवेक सो लहेऊ ॥३४४॥[7]
छापा सलिल मूल है ग्याना । यह करि देखहि संत सुजाना ॥३४५॥
सोवत जागत नहि बिसरावै ।[8] सदा प्रेम अमित यह पावै ॥३४६॥[9]
मै जाचित हौं जिव सरूपा ।[10] तुमसे कहेउ जो वचन अनूपा ॥३४७॥[11]
है छपलोक छापा पहचान । तुमरी वचन कहा जो मान ॥३४८॥[12]
हंस दसा प्रेम मन लावै । मान सरोवर मोती पावै ॥३४९॥

साखी

तुम सहिजादा मम हो[13] ग्यान जो कहा बिचारि ।
जो निश्चै के जानिहै[14] भव जल जाहि न हारि ॥३५॥

चौपाई

बंगसी फूल है बहुबिधि भांती । ता महं भंवर रहै मद माती ॥३५०॥[15]

---

१ (ख), (ग) मसाह के = मसाए के ।
२ (ख), (ग) देखिये = देखिया ।
३ (ख) (ग) यह खोजा जानै जनि कोई ।
४ (ख) (ग) कचे = कचै ।
५ (ख), (ग) जो माने = मानै जो ।
६ (ख), (ग) होए = है ।
७ (ख) (ग) यह मूल जानै कारन जनि गएऊ ।
८ (ख) (ग) नाहि = नो ।
९ (ख) (ग) यह = यस ।
१० (ख) (ग) मै जाचित हौं = मै हो जाचित ।
११ (ख), (ग) तुमसे = तुम्ह से । (ख), (ग) कहेउ = कहेउ । (ख) (ग) जो वचन = वचन ।
१२ (ख) (ग) पंक्तिव्यत्यय है—तुमरी वचन कहा जो मानै । है छपलोक छापा पहचानै ॥
१३ (ख), (ग) तुम = तुम्ह ।
१४ (ख), (ग) के = कै ।
१५ (ख), (ग) ता महं = तामें । (ख) (ग) भंवर रहै = भंवर रहा ।

बोजीर वचन[1]

बोजीर कहा बादसाह से भाई ।[2] फकर बडा फकीर कोइ भाई ॥३०४॥
सिफ्ति बहुत जो हमें सुनाया । मम वोजिर तुम खबरि जनाया ॥३०५॥[3]
फकर होए चंद तुम्ह से भइई ।[4] दर्सन कीज भला सम कहई ॥३०६॥
उन्हके दोए होए सम नीका ।[5] मबरि खाक जानो सब फीका ॥३०७॥[6]

साखी

तख्तखां पर बैठि के, पहुँचा उहवा जाए ।[7]
संग बोजीर हाजिर रहै,[8] सिफ्ति कीन्ह बनाए ॥११॥

चौपाइ

तख्त राया से नीचे हुजिए ।[9] करि सलाम अदब सो रहिए ॥३०८॥
चहु दिस गिलम दिया बिछाई ।[10] करि सलाम तब बठे जाई ॥३०९॥[11]
नूर सो दीदम गया छपाई । बहुत मदाब उन्ह के दिल माहं ॥३१०॥[12]

साहब वचन[13]

पूछन लगे कहां ते भाई ।[14]इसिम कान कहो समुझाई ॥३११॥[15]

बादसाह वचन[16]

एक भिस्ति है सबते न्यारा । बलाहा कहो नाम हमारा ॥३१२॥
वाही सहर से हम चलि आई ।[17]यह सब कुदरति मेरी बनाई ॥३१३॥

---

१ (ख) (ग) में अपठित है।
२. (ख) (ग) बोजीर = वोजीर।
३ (ख), (ग) तुम = तुम्हें।
४ (ख) (ग) 'फकीर को बन्द तुम्हें स जो भइइ।'
५. (ग) दोए = हुए।
६ (ख) (ग) मबरि = अबर (ख) (ग) खाक = खाकक।
७ (ख) (ग) पहुँचा = पहुँचे।
८. (ख) (ग) बोजीर = वोजीर।
९. (ग) से = सो (ख) (ग) हुजिए = हुजिऐ। (ख) (ग) रहिए = रहिऐ।
१० (ख) गिलम = गिलरम। (ग) गिलि.म = गिलिम।
११ (ख) बैठे = बैठा।
१२ (ख), (ग) मदाब = अदब।
१३ (ख) (ग) में अपठित है।
१४ (ग) भाई = भाय।
१५. (ग) इसिम = इसिक। (ख) (ग) कान = कवन।
१६ (ख), (ग) में अपठित है।
१७ (ख) (ग) वाही = वाह। (ख) से =, से = सो।

ध्यान विचारि भया निजु दासा । सो गुलाब सतगुर के पासा ॥३६३॥[1]
दयाल यंद सिपाही अहई ।[2] सब्द लागि मह निस दिन गहई ॥३६४॥
खुसिहाल दास फकीर है नीका । रुखा सुखा नहिं जानत फीका ॥३६५॥
मन कपरा कर्यांहि मांहि धोवै ।[3] प्रेम प्रीति दुरमति कर खोवै ॥३६६॥
मुरलीदास दीवान करि लीन्हा ।[4] जो गुन रहा सो परगट कीन्हा ॥३६७॥
जग महं जाए मकूफ चलावै । बहिमा होए के आनि मिलावै ॥३६८॥[5]
इमि करि मै गो मुरलीदासा । एहि विधि आनन्द प्रेम सुवासा ॥३६९॥
साहिजादा होए हमरे पासा । साह फकर औ बस्ती दासा ॥३७०॥

साखी

साहिजादा मम दोए है,[6] मनसफदार हमार ।
सदा अदब सिर राखिये, ऐसी भक्ति करार ॥३७॥

चौपाई[7]

मेहरवान दास मम बालक अहई । मातु के संग सदा यह रहई ॥३७१॥[8]
बाल कुमाल तरुनापन भएऊ । हुमा फकीर सैल के गएऊ ॥३७२॥[9]
करे सैल फिरि घए पर आवै ।[10] मातु के संग सदा गुन गावै ॥३७३॥
जाके ध्यान होए भरिपूरा । सोई अम जगत महं सूरा ॥३७४॥[11]
बिना ध्यान गमी कहां पावै ।[12] ध्यान बिचारि अमरपुर जावै ॥३७५॥
अमर पुर अति बहुत सोहाई । एहि बिधि प्रेम मगन होए जाई ॥३७६॥
है यह सांच झूठ जनि जान ।[13] सो छपलोक पयाना ठानै ॥३७७॥
सिरे आम खिर सुला अहई । ध्यान गमी छपा निजु गहई ॥३७८॥

---

१ (ख) (ग) के = कै ।
२ (ख) दयाल = कुमाल ।
३ (ग) मन कपरा = मन कपरा ।
४ (ख) (ग) दीवान = देवान ।
५ (ग) बहिया आनिके होए मिलावै ।
६ (ख) (ग) है = है ।
७ (ख) में अपठित है ।
८ (ख) मातु के संग = मातु संग । (ख) (ग) यह = यह ।
९ (ख), (ग) हुमा फकीर अवलि कंह गैऊ ।
१० (ख) (ग) करे = करै । (ख), (ग) सैल = सइलि ।
११ (ख) (ग) महं = में ।
१२ (ख) (ग) कहां = कहवां ।
१३ (ख) (ग) है यह = यहै । (ख) (ग) जानै = जाना । (ख), (ग) ठानै = ठाना ।

याही फूल में जन्म गँवावै । वाके छोड़ि कतहिं नहिं जावै ॥३५१॥[1]
अनन्त फूल फूला सब झारी ।[2] बिनु सींचे सब सदा पसारी ॥३५२॥[3]
कुसुम परकास बिरला केहु देखा ।[4] अविगति कही अर्थ कै रेखा ॥३५३॥[5]
ऐसन फूल है सब नर नारी ।[6] भक्ति बिसारि बंधन भ्रम भारी ॥३५४॥
साहब छोड़ावहिं तब यह छूटे ।[7] नाहिं तो काल सकल जिव लूटे ॥३५५॥[8]
मारे धारे देह अवतारा ।[9] मन के आस बंधन बहु बारा ॥३५६॥[10]
जैसे मरकट बाँधि नचावै । घर घर काल तमासा लावै ॥३५७॥
काहे बिसारेहु फूल अनूपा । एहि बिधि भरमेउ सब बड़ भूपा ॥३५८॥
यह फूल सुवेम फेरि मगि जावै । सदा सजीवनि सोइ गुन गावै ॥३५९॥[11]
भ्रमर अमान जरे नहिं कबहीं ।[12] यह सत वर्ण सगुन सबहीं ॥३६०॥[13]

साखी

भाए सनवर्ग सर्व ऊपर,[14] गुंजिगा भ्रमर अमान ।
जीव मुकुतावहिं जगत में, कृम के बना बखान ॥२३॥

चौपाई

फूल गुलाब है बहु बिधि लीला ।[15] भवर हुआ महंगे मोल कीला ॥३६१॥
वाकी नगरि जो बहुत सोहाई ।[16] शीतल चंदन बरषि बड़ाई ॥३६२॥

---

१ (ख) (ग) पंक्ति-व्यतिक्रम है—वाके छोड़ि कतहिं नहिं जावै । याही फूल में जन्म गँवावै ।
२ (ग) फूला = फूल है । (ख), (ग) सब = सम ।
३ (ख), (ग) सब = सम ।
४ (ख), ग) बिरला = बिरल ।
५ (ग) कै = के ।
६ (ख), (ग) ऐसन फूल सब है नर नारी ।
७ (ख) (ग) छोड़ावहिं = छोड़ावै ।
८ (ग) लूटे = लूटा ।
९ (ख) (ग) मरे धरे = मारे धारे ।
१० (ख) (ग) मन क = मनहिं ।
११ (ख), (ग) सजीवनि = सजीवन । (ख) (ग) सोइ = सो ।
१२ (ख) (ग) जर = जरै ।
१३ (ख) (ग) यह सतवर्ण सग गुन सबही ।
१४ (ख), (ग) ऊपरे = ऊपरै ।
१५ (ख) (ग) गुलाब = गुल ।
१६ (ख) (ग) नगरि जो = नगरि ।

नाम तुम्हारै बहुत दुखारी ।[१] दया करहु मम पातक भारी ॥३९१॥[२]
दुख मेटहु तुम सुख के दाता ।[३] आठ भगति प्रेम रंग राता ॥३९२॥[४]
गरीबनेवाज है नाम तुम्हारा ।[५] दया करहु मम सेधु सवारा ॥३९३॥[६]

साखी

सोइ सोहागिनि प्रेम रस, करे पिया से नेह ।[७]
जागत सोवत बिचारहु, नहिं तौ मुए या तन देह ॥३९॥

चौपाई

राएमतो कुल सब कह त्यागी । भगति बिचारि ध्यान महं लागी ॥३९४॥[८]
त्यागा कुल कुटुम सब जाती ।[९] सतगुर चरन प्रेम रस माती ॥३९५॥
हुकुम हमार एह सदा जोगावै ।[१०] बिना हुकुम कतहीं नाहिं जावै ॥३९६॥
ध्यान हमार सदा एह जोहै ।[११] ऐसी भगति प्रेम रस सोहै ॥३९७॥
सो कुलभागिर कुल में नीका । गैब बिहाए अवरि सम फीका ॥३९८॥[१२]
साहु फकर के दासी भइई ।[१३] पतिबरता होए निसदिन रहई ॥३९९॥
अपना पिया के हुकुम जो गावै ।[१४] अवरि बात कछुवो नहिं भावै ॥४००॥[१५]
एहि भगति बाए निज करि जाना ।[१६] अपने चित में कीन्ह मसमाना ॥४०१॥
अपने हजूर चरन पावन कीन्हा । बचन हमारि होए नाहिं भीन्हा ॥४०२॥[१७]

---

१ (ख), (ग) तुम्हारै = तुम्ह है ।
२ (ख) (ग) करहु = करो ।
३ (ख), (ग) दुख = दुःख । (ख) (ग) के = क ।
४ (ख) (ग) रंग = रत ।
५ (ख), (ग) तुम्हारा = तुम्हारा ।
६ (ख) (ग) करहु = करो । (ख) (ग) सवारा = के पारा ।
७ (ख) (ग) करे = करै ।
८ (ख) (ग) महं = में ।
९ (ख), (ग) त्यागा = त्यागी ।
१० (ख) (ग) हमार = हमारि ।
११ (ख), (ग) हमार = हमरा ।
१२ (ख), (ग) गैब = गयो ।
१३ (ख) (ग) फकर दासी = फकर के दासी । यही पाठ स्वीकृत ।
१४ (ख), (ग) के = कै ।
१५ (ख), (ग) कछुवो = किछुवो ।
१६ (ख), (ग) निज = निजु ।
१७ (ख), (ग) हमारि = हमार ।

सनदि हमारि करे पहचानी ।[1] झूठ तेजि भजिल रस सानी ॥३७६॥[2]
किमि करि कहौं विविधि विस्तारी । सबकी सनदि हजूरहि डारी ॥३८०॥[3]
जो जन दफा हमारा भइई । सब सेवक साहब का कहई ॥३८१॥[4]
भूखे भयति ख्याल नहि भावै । आतम मारि त्रिफल होइ जावै ॥३८२॥[5]

साखी

यही भल सुनि लीजियै कोर्निसि करि सिर नाए ।
मन कपरा कहु दीजियै हमि तेरो गुन गाए ॥३८॥[6]

चौपाई[7]

सोइ सोहागिनि पिया रंग राती । सोइ सोहागिनि कुल माहि जाती ॥३८३॥
सोइ सोहागिनि पिया पहचानै । तन मन वारि भगति सिखु ठानै ॥३८४॥
कपरा सत सुगंध सोहाई ।[8] लाल पियर के नगीच न आई ॥३८५॥[9]
भई जुगल हमि पिया के साथा ।[10] आनंद मंगल सदा सनाथा ॥३८६॥
सोहागिनि पिया हुकुम जो गावै ।[11] निस दिन सेवा खसुम के लावै ॥३८७॥[12]
अभरन दूरि किया कांचु की पोती ।[13] सब सखियन्हि मैं निर्मलि मोती ॥३८८॥[14]
पिया के चरन सदा हमि सोवै ।[15] रहै सनीप प्रय पातस मोवै ॥३८९॥
साहिजादी है भवरा मेरी ।[16] मेहर कीजै कहा तर जोगी ॥३९०॥

---

१ (ख), (ग) करे = करै ।
२. (ख), (ग) तेजि = तेजी ।
३ (ख) हजूरहि = हजूरे (ग) हजूरहि = हजूरै ।
४ (ख), (ग) सेव = सभे ।
५ (ख) मारि = मारि ।
६ (ख), (ग) तेरो = तेहरी ।
७ (ख) (ग) में अपठित है ।
८ (ग) कपरा = कपरा ।
९ (ख) (ग) लाल पिया = लालपियर । यही पाठ स्वीकृत ।
१ (ख) (ग) जुगल हमि पिया = जुगलपिया ।
११ (ख) (ग) पिया = सो पिया ।
१२ (ख), (ग) खसुम = खसम । (ख), के = कै ।
१३ (ख), (ग) अभरन = आभरन । यही पाठ स्वीकृत ।
१४ (ख), (ग) मैं = मह । (ख) (ग) निर्मली = निर्मल ।
१५ (ख) (ग) के = कै । (ग) हमि = ई ।
१६ (ख), (ग) साहिजादी = साहजादे । (ग) भवरा = भवरी । (ग), (ग) मेरी = मोरी ।

ग्यान मान अंग सलिल मैं सोभा । भया अमोल पुर्न सग सोभा ॥४१४॥[1]
वारिज धारि जिमि रहे अलेपा ।[2] रहे निकट इमि जल महं लेपा ॥४१५॥[3]
ज्यों जल मीन मीन हुए एता ।[4] निकस गया कछु देखु न सेता ॥४१६॥

साखी

जग असमान जस मीन रहे[5] ए दुगो बाट अकंप ।[6]
आवत जात न देखिये,[7] दिन दिवाकर रंप ॥४२॥

चौपाई

ग्यान गमी बूझो पहचाना । भया अमर मन जास पुराना ॥४१७॥
मन की संधी घट घट मैं रहई । मो मैं तुम मैं जग मैं अहई ॥४१८॥[8]
गहि कै मूल द्रिस्टि मैं पेखै ।[9] है अनन्त एक तब देखै ॥४१९॥
नहिं तहां सुरे रंप तहां होई । उपमा जीत पवन सब सोई ॥४२०॥
पसमे कोमल धारि जो गएऊ । उदे होए अस्त फिरि भएऊ ॥४२१॥[10]
आवत मन के देखै न कोई । घट मैं पइठे परगट होई ॥४२२॥[11]
मन धीरसमर मन जगदीसा ।[12] मन अवतार धरि मन है ईसा ॥४२३॥
यह मन कौन कौन मन्माना ।[13] सनकादिक ब्रम्हादिक माना ॥४२४॥
मन सामर्थ समर जो कीन्हा । दैतन्हि मारि राज छोरि लीन्हा ॥४२५॥
जाके निर्गुन बेद यह कहई । सगुन सरूप देह धरि अहई ॥४२६॥

---

१ (ख), (ग) भया अमोल = भया मोल ।
२ (ख), (ग) रहे = रहै ।
३ (ख), (ग) रहे = रहै ।
४ (ख), (ग) एता = एवा । यही पाठ स्वीकृत ।
५ (ख), (ग) जग असमान मीन जल में रहै ।
६ (ख), (ग) दुगो = दुगी । (ग) ए = इमि ।
७ (ख) (ग) देखिये = देखिया ।
८ (ख) (ग) तुम = तुम्ह ।
९ (ख), (ग) पेखै = पेखै ।
१० (ख), (ग) फिरि = फिरि ।
११ (ग) पइठे = पइठी ।
१२ (ख) मन = मनै ।
१३ (ख), (ग) कौन कौन = को को ।

जा हम कहा लिखा सोइ दासा ।[1] मस्ती नाम गुन परगासा ॥४०३॥[2]
जो हंस कहा सोइ गुन ग्याना ।[3] मातर जुगल प्रेम रस राता ॥४०४॥
शहिजादा कहु बकसिस मैऊ ।[4] दुनो गुन मिलि ग्यान गुन गैऊ ॥४०५॥[5]
मजहब हमार मजूफ है नीका । सक्ति संग आनु सब फीका ॥४०६॥

सास्री

थोरी उमिर तर्क किया[6] साहब निबाहहि भोर ।[7]
होए फर्जंद साहब के आगे कबहि न करियै भोर ॥४०॥[8]
ग्यान संपूरन प्रेम रस देखत ग्रन्थ प्रमान ।
मति मराल सुगम मग इमि पै करत न पान ॥४१॥

चौपाई

जल है ग्यान बुधी है माया ।[9] इमि है छीर धर्म है दाया ॥४०७॥
छीर नीर संमिलित सब अहई ।[10] जल के बीचि छीर नहि लहई ॥४०८॥
सोइ हंस कुल बंस कहावै । छीर नीर इमि निवरन लावै ॥४०९॥[11]
भक्ति सक्ति दुवो संमिलित अहई । दुवा जुगल त्रिलगि किमि कहई ॥४१०॥
ग्यान अलग है मलित अमाना । सक्ति भक्ति अग है पग्माना ॥४११॥[12]
ग्यान के मगु पगु धरै न कोई ।[13] तर्क तेज विहीन मति होई ॥४१२॥
घरे पगु डगमग नाहि होई ।[14] ब्रह्म संपूरन मन सब धोई ॥४१३॥[15]

---

१ (ख) (ग) सोइ = इमि ।
२ (ख), (ग) परगासा = परकासा ।
३ (ख), (ग) 'जो हम कहा लिखा गुन ग्याना' ।
४ (ख) (ग) बकसिस = बकसिसि ।
५ (ख) (ग) गुने = बने ।
६ (ख), (ग) उमिर = उमिरि ।
७ (ख) साहब = साहेब ।
८ (ग) करियै = करिए ।
९. (ख), (ग) जल है ग्यान बुधि है माया ।
१० (ग) नीर छीर सम संमिलित अहइ ।
११ (ख) (ग) छीरनीर = नीर छीर ।
१२. (ख) (ग) अग है = अगाध ।
१३ (ख) के = कै । (ख), (ग) मगु पगु = पगु मगु ।
१४ (ख) (ग) धरे = धरै ।
१५ (ख) (ग) सब = सम ।

साखी

रवि को छवि एह छीत पर, यह निगुन को भाव ।
छवि स रवि नहिं होत है निर्गुन सगुन को राव ॥४३॥
यह घट पट जब खुलत है[1] छटकत छवि तब जाए ।
सो छवि उलटि न आवहीं, फेरि महि घन्नि समाए ॥४४॥

ग्रंथ सपूरन ग्यान मूल हुआ। जमा चौपाई ४२६ । साखी जमा ४४ । जमा के सब ४७० ॥ सन् १२६१ साल दसखत हीरानाम फकीर मन मनपुरा के जिला पटना मुकाम भगत के दरवाजा पर हुआ नेमार सो सही ॥[2]

---

१ (घ), (ग) में यह साखी अपठित है ।
२. (घ) संमत १८६४ ॥।
मने मास कातिक बदी एकादसी वार दिन मंगल का रोज ग्रंथ ग्यानमूल संपूरन हुआ । दसखत मुकुंद दास फकीर साकिमारे फकर शाह की दरिया साहेब का जगह धरकंधा ॥
(ग) ग्रंथ सपुरन भइल ग्यानमूल इत्यादि सारती संमत १८ सै ६६ वैशाख सन् १२५० फसली समे नाम कातिक बदी १० रोज सोमार के लिखल संपूरन भइल सहाबाद भोजपुर परगने दनवारी तपे चौबी मौजे धरकंधा दसखत दरिया साहेब का समुझि लना । भइल इकरार सतनाम दसखत प्रताप दास फकीर मुकिम दरिया साहेब के मदर गुलाम सब फकीर सेवक है सो सब के सतनाम पहुंचे बहुत प्रेम से बसनपुर मुकाम कादु मीनाकाजीव (?) जिला संपूरन ग्रन्थ भइल दसखत परताप दास फकीर पै दरस साहब जिव चरन दास जी के गुलाम आये हैं ग्रन्थ दरियापंथी सेवक फकीर पंथ दोसरा कोइ मति रात का हिंदु का तुरक हिंदु के गुरु के मौर्दम गुरु के पीर के सौभंप देत है ।

सतनाम